राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला

राजस्थान-राज्य द्वारा प्रकाशित

सामान्यत अखिल भारतीय तथा विशेषत राजस्थानदेशीय पुरातनकालीन
संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश, हिन्दी, राजस्थानी आदि भाषानिबद्ध
विविध वाङ्मयप्रकाशिनी विशिष्ट-ग्रन्थावली

प्रधान सम्पादक

फतहसिंह, एम० ए०, डी० लिट्०
निदेशक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर

ग्रन्थाङ्क ११३

द्वितीय भाग

[तथा ग्रन्थकार की अन्य लघु कृतियाँ]

प्रकाशक

राजस्थान-राज्याज्ञानुसार

निदेशक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान

जोधपुर (राजस्थान)

१९६९ ई०

वि० सं० २०२६ भारत राष्ट्रीय शकाब्द १८९१

मुद्रक : जगदीशचन्द्र स्वर्णकार, अजन्ता प्रिन्टर्स, जोधपुर.

प्रधान सम्पादकीय

देवीचरित का द्वितीय भाग प्रस्तुत है। जैसा कि सम्पादक महोदय ने अपनी भूमिका में लिखा है, यह ग्रन्थ किसी एक सम्प्रदाय का नही अपितु सभी का समन्वय करता हुआ आधुनिक विज्ञान के इस तथ्य की पुष्टि करता है कि नानारूपात्मक जगत् के मूल में वस्तुतः एक ही प्रकृति है। इसी को भारतीय-साहित्य मे माया, देवी, जगदम्बा आदि नाम देकर काव्यात्मक रूप दिया गया है। यही आगमो की शक्ति है, इसी की 'वाक्' नाम से वैदिक-साहित्य मे स्तुति की गई है और इसी को पुराणो के समान सिन्धु-मुद्रालेखो मे भी उमा, परा सा, इद्रा आदि कहा गया है। देवी की कल्पना शुद्धरूपेण वैदिक है, मार्शल तथा उनका अनुसरण करके अनेक अन्य विद्वानो ने देवी-पूजा को अवैदिक और अनार्य कहकर जो भ्रम फैलाया है उसका निराकरण मैंने अपनी सिन्धु-सभ्यता-सम्बन्धी लेखो और भाषणो मे प्रायः किया है। जो पाठक इस विषय में रुचि रखते हो उनसे निवेदन है कि वे प्रतिष्ठान की त्रैमासिक 'स्वाहा' में निरन्तर प्रकाशित होने वाले लेखो को पढ़े।

मैं विद्वान् सम्पादक को हार्दिक धन्यवाद देता हूँ, जिन्होने अपने स्वास्थ्य की उपेक्षा करके भी इस श्रम-साध्य कार्य को किया। उन्होने इस महाग्रन्थ के मूल मे स्थित दार्शनिक-परम्परा की जो सक्षिप्त रूप में अभिव्यक्ति की है वह विशेष रूप से सराहनीय है। अन्त मे, मैं अपने सम्पादन तथा प्रकाशन विभागो के सर्वश्री लक्ष्मीनारायण गोस्वामी, म० विनयसागर तथा गिरधरवल्लभ दाधीच को धन्यवाद देता हूँ, जिन्होने अनेक कठिनाइयो के होते हुए भी पुस्तक को यथासम्भव शीघ्र ही प्रकाशित कर दिया है। देवीचरितकार बुधसिहजी की कुछ लघु कृतियाँ उनके पौत्र श्री माधोसिह के सौजन्य से प्राप्त हुई हैं जो ग्रन्थ के अन्त मे उन्ही के द्वारा सम्पादित होकर परिशिष्ट के रूप मे प्रकाशित हो रही है। इसलिए मैं श्री माधोसिह का हृदय से आभारी हूँ।

—फतहसिह

दिनाक १०-७-६९

भूमिका

देवीचरित के प्रथम भाग मे प्रथम चार स्कध प्रकाशित किये गये थे, किन्तु फिर भी वह भाग चारसौ से अधिक पृष्ठो का हो गया। इस द्वितीय भाग मे पाँचवें स्कध से बारहवें स्कध तक प्रकाशित किये जा रहे हैं और इसमे लगभग साढे छह सौ पृष्ठ होंगे। यदि सम्पूर्ण देवीचरित अखण्डित-रूप मे प्रकाशित होता, तो ग्यारहसौ पृष्ठो के एक ही ग्रथ की जहाँ अपनी कुछ विशिष्टता होती वहाँ पाठको की दृष्टि से वह कुछ असुविधाजनक हो सकता था। अस्तु, देवीचरित का यह द्वितीय भाग पाठको के समक्ष प्रस्तुत है।

प्रथम भाग में प्रकाशित भूमिका मे यह सकेत किया जा चुका है कि कथा-प्रवाह को बनाये रखने के लिए देवीभागवत के छन्दोबद्ध-भाषा मे भाषान्तरकार कविवर बुद्धसिंह चारण ने यथास्थान काट-छाँट और हेर-फेर किये हैं। क्रम को यथावत् बनाये रखकर इतने विशाल-ग्रथ को भाषान्तरित करने में ऐसा होना स्वाभाविक है। इस प्रकार का भाषान्तर भावानुवाद की कोटि मे आता है।

द्वादश-स्कधीय देवीचरित मे अनेक आख्यान और उपाख्यान आये हैं। प्रथम खण्ड की भूमिका मे केवल उन्ही स्थलो का विवरण दिया गया था जिनमें दानवी-प्रवृत्तियो के भीषण रूप धारण करने पर सत्रस्त देवताओ के संकट-निवारण के लिए जगत्-जननी को प्रत्यक्ष होना पडा। अन्य आख्यान अनेकानेक उन मानवी-प्रवृत्तियो से सम्बन्धित हैं जिनकी क्रिया और प्रतिक्रिया विभिन्न प्रकार के शुभाशुभ-कर्मो में व्यक्त होती है। कर्मों का फल भी होता ही है, और तदनुसार बहुधा जन्म होता है क्रियाओ और प्रतिक्रियाओ की उस श्रृङ्खला का जिसका अन्त ही दिखाई नही देता, नहुष, च्यवन ऋषि, हरिश्चन्द्र आदि के आख्यान इस तथ्य के प्रमाण हैं।

देवीचरित समन्वयात्मक ग्रथ होते हुए भी केवल अपने नाम के कारण कुछ ऐसा आभास दे सकता है कि यह सम्प्रदाय-विशेष का ग्रथ है। आज के युग मे, जब सम्प्रदाय-शब्द का उच्चारण-मात्र जन-मानस पर एक अस्पष्ट किन्तु घातक, विध्वंसक, लोकभक्षक दानव का चित्र उपस्थित कर देता है और

विशेषतया जब राजनैतिक वादो की दलदल मे सर्वसाधारण की बुद्धि ग्रसित, स्तम्भित और विमूढ-सी हो गई है, तो इस ग्रथ को शाक्त-सम्प्रदाय का समझ कर कुछ लोग इसकी उपेक्षा कर सकते है। परन्तु ऐसा समझना और करना भ्रम-जन्य है।

जिस देवी अथवा महामाया-भगवती की आराधना का इस ग्रंथ मे प्रतिपादन है उसे मूल-प्रकृति के नाम से भी इस ग्रथ मे सम्बोधित किया गया है। प्रकृति-शब्द की यथास्थान जो व्युत्पत्ति दी गई है उससे स्पष्ट है कि यह शब्द सृष्टि के पूर्व की साम्यस्थिति का द्योतक है। त्रिगुणात्मिका होने के कारण वह जगत् की जननी है। सतत चेतन-शक्ति-सयुक्त होने के कारण वह परमात्म-स्वरूपिणी है। वह मानव के भीतर है और बाहर भी, वह मूलत एक होते हुए भी नानारूपिणी तथा अजेय है। इसी बात को स्पष्ट करने के लिए नारद-विष्णु आख्यान आया है। मनुष्य स्वय इस सृष्टि का एक अंग है। बुद्धि का अधिक प्रस्फुटन होने मात्र से उसकी सत्ता इस सृष्टि की सत्ता से पृथक् नही हो जाती। मन, बुद्धि, चित्त और अहकार—जिन्हे अत करण-चतुष्टय की सज्ञा दी गई है—उसी प्रकार सृष्टि के नियमो के अधीन है जैसे देह के अन्य अवयव अथवा बाह्य-जगत् की अन्यान्य घटनाएँ। जो लोग प्रकृति पर विजय की चर्चा करते हैं वे सम्भवत: अनजाने मे भ्रमात्मक-शब्दावली का प्रयोग करते है। सभी आकर्षणो से विमुख होकर जब अनुसन्धानकर्ता योगयुक्त चित्त से अपनी विशिष्ट प्रयोगशाला में तपोरत होता है, तो प्राकृतिक-नियमो के रूप मे विश्वरूपिणी भगवती के रहस्यो का उद्घाटन करता है और फिर विभिन्न क्षेत्रो मे अपने व्यवहार को इस प्रकार ढालता है कि प्राकृतिक-प्रवाह उसकी अभीष्ट सिद्धि में सहायक बनें। प्रकृति की प्रतिकूलता मे तो विनाश ही है। प्रकृति अजेय है। माया अजेय है।

मनोयोग के अभाव मे न विश्वरूपिणी भगवती की आराधना सम्भव है और न उसके अर्थात् प्रकृति के रहस्यो का उद्घाटन। ऐसे जन्मजात मनोयोगी विरले ही होते हैं जो किसी दिशा-विशेष में रहस्योद्घाटन का श्रीगणेश करने में सफल हो पाते हैं। एक बार मार्ग-दर्शन मिलने पर तो न्यूनाधिक मनोयोगवाले व्यक्ति भी अनेक सफलताओ को प्राप्त कर जाते हैं। किन्तु ऐसे महापुरुषो के जीवन मे भी ऐसे क्षण आ जाते है जब मद अथवा अहकार, ईर्ष्या अथवा द्वेष के

कारण उनका मनोयोग भङ्ग हो जाता है और उनकी तप-प्रसूत-शक्ति विध्वसक दिशा धारण कर लेती है। मानस-जगत् के रहस्य वाह्य-जगत् के रहस्यो से कही अधिक गूढ है। वहाँ माया की अजेयता स्वयसिद्ध है।

आज के मानसिक तनाव के युग मे मानसिक-शान्ति और सतुलन की सबसे अधिक आवश्यकता है जिससे सघर्षमय, विक्षुब्ध, वासनोद्दीपक-वातावरण-रूपी अधकार मे, व्यक्ति काल्पनिक भयो से मुक्त होकर, विवेकमणि के प्रकाश मे अपनी जीवन-यात्रा-अविचल गति से पूर्ण कर सके। इस दिव्य-स्वरूप तेजोमय मणि से अपने अतस् को प्रकाशित कर एव श्रद्धा का सम्बल लेकर जब व्यक्ति जीवन मे अग्रसर होता है, तो उस अत प्रसूत सुख के सहारे जो क्षुद्र सफलताओ और विफलताओ से अतीत है, आगे बढ़ता ही जाता है। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए परमात्मस्वरूपिणी भगवती की आराधना की उसी प्रकार और उतनी ही आवश्यकता है जिस प्रकार जितनी विश्वस्वरूपिणी भगवती की आराधना की।

भावना-परिष्कार, मनोयोग और अतस् की साम्यस्थिति प्राप्त करने एव उन्हे अप्रतिहत बनाये रखने के लिए श्रद्धानुसार किसी न किसी प्रकार की आराधना अपेक्षित है। देवीचरित मे विभिन्न प्रकार की साकार और निराकार साधनाओ का विवरण है, उनसे साधकगण अपनी-अपनी रुचि के अनुसार प्रेरणा ले सकते हैं। देवीभागवत समन्वयात्मक ग्रंथ है और यह दृष्टि देवीचरित मे भी अक्षुण्ण रही है। कृष्ण, राधा, रुद्र, राम, तुलसी, शालग्राम आदि का विस्तृत विवरण इसका प्रमाण है। साधकगण अपनी-अपनी मन स्थिति के अनुसार चयन कर सकते हैं।

रुद्राक्ष, तुलसी और भस्म का विस्तृत विवरण, श्रद्धा से अधिक सम्बन्ध रखते हुए भी आधि और व्याधि के विनाश करने मे इनकी जिस उपयोगिता की ओर देवीचरित मे सकेत किया गया है, वह अधिक विस्तृत प्रयोग की अपेक्षा करता है।

कृष्ण की रासलीला का विशद विवरण प्रतीक-रूपक है। समष्टि मे व्यष्टि-लीला का निक्षेप है। राधा का उपालम्भ तो इसे पूरी तरह स्पष्ट कर देता है। भावना-जगत् और भौतिक-जगत् की घटनाएँ परस्पर सम्बद्ध ही नही, वे मूलरूप मे समानरूपिणी भी हैं। प्रभा, शान्ति, शोभा, क्षमा आदि नाम्नी

गोपियाँ निराकार-गुणो के साकार और स्थूल रूप है। राधा के क्रोधित होने पर उनका द्रवीभूत होकर सरिता का रूप धारण करना अथवा अमूर्त रूप मे परिणत होना, विशेषतया सृष्टि-प्रकरण के सदर्भ मे, इस बात की ओर सकेत करता है कि भौतिक-जगत् और भावना-जगत् की एकात्मकता है। भौतिक-जगत् की विभिन्न प्रकार की शक्ति-तरगो का रूपान्तर और प्रति-रूपांन्तर सम्भव होने पर ही टेलीविजन आदि का आविष्कार सम्भव हुआ है। मानव के अतर्जगत् के अनुशोधको ने एक दूसरी प्रकार की प्रणाली का अनुसरण करके पिण्ड और ब्रह्माण्ड की एकात्मता के दर्शन तो किये ही थे, उन्होने योगशास्त्र आदि के रूप मे उस विधि का भी विस्तृत विवरण दिया था जिसका उपयोग करने पर जिज्ञासु उस परम-सत्य के दर्शन स्वयं कर सके। कालान्तर मे अनेक प्रकार की विधियो का अनुसन्धान हुआ तथा साधना की अनेक विधियाँ प्रचलित हुईं, जिनमे से कुछ सुगम थी और कुछ कष्टसाध्य। लक्ष्य एक ही था कि रुचि और क्षमता की विषमताओ के होते हुए भी अतस् और बाह्य में साम्य स्थापित किया जा सके तथा सघर्षमय-जीवन की कटुता का निराकरण होकर उसमे स्निग्धता और सरसता का पुट हो सके।

विश्वरूपिणी भगवती की आराधना से भौतिक-सुख के साधनो में कल्पनातीत वृद्धि भी की जा सकती है और उन्हे सर्वसुलभ भी बनाया जा सकता है, किन्तु अन्त साम्य के अभाव मे भौतिक-साधनो की बाह्य-तरगो को सुख की लहरो मे परिणत नही किया जा सकता। जिन्हे निर्विवाद रूप से सुख का साधन माना जाता है वे ही ईर्ष्या, द्वेष, मद और अहकार के कारण अतर्जगत् को क्षुब्ध करनेवाले उत्पीडक बन जाते हैं। यही कारण है कि भौतिक दृष्टि से शत-सहस्र गुना अधिक सम्पन्न होते हुए भी आज का विश्व अत साम्य की उपेक्षा करने के कारण सर्वनाश के द्वार पर आ खडा हुआ है। विश्वरूपिणी भगवती की आराधना के साथ परमात्म-स्वरूपिणी भगवती की भी आराधना करनी ही होगी।

देवीचरित मे जितनी आराधना-विधियो और यज्ञो का विवरण दिया गया है, उनमे सबसे श्रेष्ठ जप-यज्ञ बतलाया गया है। यह सर्वसाधारण की दृष्टि से सबसे अधिक उपयोगी और सबसे सुगम है। नियमित रूप से जप करने पर चित्त एकाग्र होता है और मनोयोग प्राप्त होता है। मानसिक दुर्बलता,

अस्थिरता, शैथिल्य और दरिद्रता आदि को दूर करने के लिए श्रद्धालु साधक किसी भी बीज-मन्त्र का उपयोग कर सकता है। ये बीज-मन्त्र नवें से बारहवें स्कधो में आये हैं।

काव्य-रस-प्रेमी विभिन्न आख्यानो, युद्ध-विवरणो एवं स्वरूप-चित्रो को पढकर विभिन्न प्रकार के रसो का आनन्द ले सकते हैं। अनुक्रमणिका को देखकर सहज-रूप मे ही ऐसे स्थलो का पता लग सकता है।

इस ग्रन्थ के विभिन्न अगो का अवलोकन करने पर ही यह स्पष्ट हो सकता है कि शान्त, करुण, शृङ्गार, वीर और भयानक रसो का कितना सुन्दर निर्वाह विभिन्न स्थलों पर कवि की सफल लेखनी द्वारा हुआ है। किन्तु इसके लिए कोरे वास्तविकतावाद की कूपमण्डूकत्व-रूपी सकीर्ण मनोवृत्ति से ऊपर उठना पडेगा।

इस ग्रन्थ के सम्पादन मे मैं राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान के अधिकारियो का सामान्य रूप से तथा श्री लक्ष्मीनारायण गोस्वामी का विशेप रूप से आभारी हूँ, जिन्होने अनेक बहुमूल्य सुझाव व सहयोग देकर हमारे कार्य को गौरव प्रदान किया है।

हुक्मचन्द चतुर्वेदी

कविराजा ठा० बुधसिहजी

प्रस्तुत ग्रन्थ की रचना करते हुए

[ग्रन्यकार के प्रपौत्र श्री देवीसिहजी चारण के सौजन्य से प्राप्त]

विषयानुक्रम

पंचम-स्कध

[पृ० १—९९]

छन्द से छन्द तक

षष्ठम-स्कंध

[पृष्ठ १००—१८६]

छन्द से छन्द तक

कन्नौज मे आगमन, नारद का सरोवर मे स्नान हेतु प्रवेश, उनका स्त्री-रूप होना, तट पर पडे वस्त्राभूषणों को धारण करना, तालध्वज राजा से विवाह, सुखद दाम्पत्य-जीवन, पुत्र-पौत्रों का होना, युद्ध मे सभी पुत्रों का हत होना, व्यथित होकर युद्धक्षेत्र मे पहुँचना, वृद्ध ब्राह्मण का मिलना, एक अन्य सरोवर मे पवित्र होने हेतु स्नान, नारद का स्वरूप धारण करना, विष्णु के सम्मुख दर्शन।

विष्णु का तालध्वज राजा को बोध देना, उसका वहाँ से प्रस्थान, पौत्र को राज्य देकर वन मे तप हेतु गमन।

नारद के पूछने पर विष्णु द्वारा स्वप्न, सुषुप्ति आदि अवस्थाओं का दृष्टान्त देकर मायाजनित मोह और भ्रम के सम्बन्ध मे समाधान करना।

नारद का ब्रह्मलोक पहुँच कर ब्रह्मा से सम्पूर्ण वृत्तात कहना, ब्रह्मा द्वारा गुणो की प्रबलता तथा सभी प्राणियों का उनके वशवर्ती होने का ज्ञान देना और यह कहना कि देवी की आराधना से ही परा-शक्ति कृपा करके जीव का भ्रमजाल मिटा सकती है।

सप्तम-स्कंध

[पृष्ठ १८७—२९७]

छन्द से छन्द तक

छन्द से छन्द तक

छद से छद तक

अष्टम-स्कंध

[पृष्ठ २९८—३३७]

छन्द से छन्द तक

छद से छद तक

नवम-स्कंध

[पृष्ठ ३३८—४८९]

छन्द से छन्द तक

दशम-स्कंध

[पृष्ठ ४९०—५०४]

एकादश-स्कंध

[पृष्ठ ५०५—५३२]

द्वादश-स्कंध

[पृष्ठ ५३३ - ५६४]

छद से छंद तक

परिशिष्ट १

परिशिष्ट २

(प्रकीर्ण गीत-संग्रह)

———

बुधसिंह चारण रचित

देवीचरित

द्वितीय भाग

पंचम स्कध

दोहा

सोनक आदिक सूत सौं, कीयौ प्रस्न कर जोर।
परम सयाने ग्याँन पथ, मेटहु ससय मोर ॥१
वासुदेव वसुदेव सुत, आय भये अवतार।
सुत हित जाचे सिंभु कौ, सुनी कथा स्रुत[1] सार ॥२
यातै विस्मय होत उर, मिटै सु कहहु मिलाय।
सुनवे कौं याही समय, अतह वृति[2] अकुलाय ॥३

छद त्रोटक

सुन सूत कही इह सोनक सौ, रचना करुविंद्र[3] इँही रुख सौ।
सोइ व्यास सौं पूछीय वोच सवै, जनमेजय कै प्रति भाखी जवै ॥४
कही राजन सौ इह व्यास कथा, जिह सौ हम भाखत वात जथा।
सव देवन के हरि देव सदा, वस माँनुखी देह गही विपदा ॥५
वरनास्रम धर्म वढावन कौं, पुन पूजनहू गरू पावन कौं।
द्वज भक्तहू पूजन देवन की, सुख दुख्खहु आदक सेवन की ॥६
जन सोक मैं सोक लहे जिनहू, तन हर्ष मे हर्ष गह्यौ तिनहू।
श्रीय सेवनहू सुख सतति कौ, मुद पाय कै वोध गह्यौ मति कौ ॥७
असटावक्र[4] स्राप गँधारीय कौ, निज हास भयौ सव नारीय कौ।
कुल जादव नास भयौ कित कौ, तन त्याग गये हरीहू तित कौ ॥८
कही मानुखी-कर्म न कोन कीयौ, लखकै जग कौ मग क्रस्न लीयौ।
सिव पूजन सँक कहा समुझौ, तुम जाँन अग्याँन ऊपाध तजौ ॥९

---

१ श्रुति, वेद। २ चित्तवृत्ति। ३ जनमेजय। ४ अष्टावक्र।

हित कारन कृस्न है बिस्नु हरी, केऊ वार अराधन ईस[1] करो ।
अज जाँनहु रूप अकार इहै, कमलापत रूप ऊकार कहै ॥१०
गवरीपति रूप मकार गहौ, अर्द्ध मात्र सरूपीय मात अहौ ।
परपाटीय सार विचार पखै, इकतैं अधिके इक जाँन अखै ॥११
अज विस्नु सौ ईस गनौं अधिके, सिव दानीय है रिध के सिधके ।
कहौ कृस्न अराधन मिभु करयौ,सुत कैं हित ताही सौं काज सरयौ ॥१२
अरु रुद्र है मूल निमत्त अखी, सुरजेष्ट[2] हु के वर[3] ह्वै ममखी ।
वँह अस सौ रुद्र[4] भये इतने, जग पुज्जन लायक है जितने ॥१३
सिव मूल-हू- रुद्र की सेवन सैं, भ्रम कौ तजकैं निज भेवन सैं ।
परिआई की रीत सौ पुज्जपनौ, गवरीपति देव अनाद गनौं ॥१४
सवतैं पर[5] देवीय रूप सही, भगवतीय भीम[6] ससीम भई ।
सव सौं सिव ऊत्तम जान सदा, करोयैं नही ससय कोय कदा ॥१५
सव माया अधीन गनौ सुरकौं, अरु माँनव हू फिर आसुर कौं ।
उतपत्त करै व्रहमड अजा, पुन पालन नासन आद प्रजा ॥१६
जग मैं जड जगम जीव जिते, रचना प्रक्रती-क्रत कर्म रते ।
प्रक्रती अहकार ऊपावत[7] है, जड जगम जीव जनावत है ॥१७
विध और हरी हर देव वने, गुन तीनहु सौ उतक्रष्ट गने ।
अहकार विना त्रहु होत इहै, गुन हू कौ सुभाव सु कैसैं गहै ॥१८
धन धाँम त्रीया थित धारन कौं, सुत वधव काज सुधारन कौं ।
कुल वधन कारन नाहिं कदा, सोइ वधन है अहकार सदा ॥१९
इह रूप तैं व्याप रह्यौ उर मैं, सुर मैं नर मैं कहा आसुर मैं ।
हम है करता इह काजहि मैं, तुम सौं हम लेत हैं देत तुमैं ॥२०
वहुधा इह वाँधत वधन तैं, फिर छूटत नाहिंन फदन तैं ।
विन कारन नाहिंन काज वनैं, गढवाय न हेम[8] विना गहनैं ॥२१
अहकार तैं मोहहु होत उदै, विच वधन कैं कहि जीव वँधै ।
जग पालक सोय जनार्दन हू, गुन औ अहकार जुतै गनहू ॥२२
अहकार की धार मे विस्नु इही, ममता-वस वूडत मोह मँही ।
सुख-दुख्खहु भोग घने सहिकैं, वयकुठ को जावत है वहिकैं ॥२३

१ महादेव । २ ब्रह्मा । ३ वर देने के लिए । ४ मूल रुद्र । ५ परे, श्रेष्ठ । ६ महादेव । ७ उत्पन्न करती है । ८ सोना, स्वर्ण ।

मुनिराज सिद्धत महत पनौ, गुनहू क्रम सौं अहकार गनौ।
अहु देवहु वचन वीचि तँही, सोइ प्रकृत कै वस है सब ही ॥२४
कोऊ मदमती इह बात कहै, लिछमीपतिहू अवतार लहै।
वँह आप मतै इहाँ आवत है, जुत आप मतै फिर जावत है ॥२५
वसै येक है वात विचारन की, करीयै मति धारन कारन की।
ग्रभवास[1] समाँन न दुख्ख गनौ, सोइ आयकै ताहि मँही सहनौ ॥२६
क्रम येह सुतत्र न होय करै, मृतलोक[2] मही जनमै रु मरै।
जप जोग्य रु जोगहु जाप जजै, त्रीय अगज आदक सग तजै ॥२७
ग्रभवास तै मुक्त ही हेत गहै, वयकुठ न जाँनत दुख्ख वहै।
प्रकती वस है हरी पावनहू, कछु नाँहिन और कहावनहू ॥२८
विध रुद्र गनौ प्रक्रती वसमै, जिही देव अदेवहु जाहि जुमै।
जड़[3] जगम माँनव आद जिहो, सव हैं प्रक्रती-वस वात सही ॥२९
यहु व्यास कौ भूप सुनी वतीयाँ, सीयराय[4] गई सबकी छतीयाँ।
महिमा महमाय की जाँन मुदै, उरमैं भयौ ग्याँन कौ भाँन उदै ॥३०

दोहा

जोगेस्वरी प्रभाव जुत, व्यास वखाँनी बात।
स्रोतागन स्रोनन सुनत, सवही भये सुनाथ ॥३१
जनमेजय जीय जाँनकै, कही व्यास सौ कथ्थ।
कछु चरित्र देवी कहौं, सुभ गुन ग्याँन समथ्थ ॥३२
व्यास देव सुन विनय कौं, चित चरित्र जुत चाह।
कहनै लागे फिर कथा, अतसय जुक्त उछाह ॥३३

छद त्रोटक

दिती के सुत जाँनहु भ्रात दहूँ, किल रभ करभ हु नाँम कहूँ।
जिह सतती हेत विचार जवै, तप साधन कौ जुग भ्रात तवै ॥३४
तट पचनदी तहाँ तीरथ पै, जहाँ जाय कछू नित मत्र जपै।
कर होम हुतासन सेव करै, घर धीरज आस्रव[5] सत्य धरै ॥३५

---

१ गर्भवास। २ मर्त्यलोक। ३ जड़। ४ शीतल, मोदयुक्त। ५ प्रतिज्ञा।

स्तुत ताहि पुरदर कथ्थ सुनी, घट भीतर वाढेऊ क्षोभ घनी।
वन ग्राह प्रवेस कीयी वन[1] कों, तहाँ जाय करभ गह्यौ नन कौ ॥३६
गन्धवाई की राह न सक्र गही, सुर आसुर वैर विचार सही।
स्तुत ताहि हकीकत रभ सुनी, विपरीत कहा इह बात बनी ॥३७
कर खग्ग लयौ सिर काटन कौ, द्रढ होम के कुड मै दाटन कौ।
तन धार हुतासन देव तँही, गहि हीय दया तरवार गही ॥३८
किह कारन तूं सिर काटत है, उर ग्याँन कहा उतपाटत है।
कर आस्त्रव वायक वेद कहै, लख आतमघात की पाप लहै ॥३९
वर माँगहु जो कछु वचत है, उर कारज जो न उदन्त है।
सुन पावक देव की वात सही, कर जोर हकीकत रभ कही ॥४०
वरदायक ह्वै मम पुत्र बली, थित जीत करै त्रहुलोक थली।
सव देव अदेवन मार सकै, जुध जाचत सत्रुन वृद्ध जकै ॥४१
द्रढ पावक सो वरदाँन दीयौ, हरख्यो[2] सुनकै तहाँ रभ हीयौ।
सुख पायकै वद[3] हुतासन कौ, सुविचार चल्यौ लहि सासन कौं ॥४२
निरखी वन मैं वहु नारन कौ, सुख सतति हेत सुधारन कौ।
वट जिक्षनी थाँन जहाँ विहरै, त्रीय येक न आवन दिष्ट[4]तरे ॥४३
मतवारीय येक लखी महिखी, परचड पराक्रम मैं परखी।
क्रम-जोग तहाँ तिह सग करयौ, वर धीरज बीरज[5] चाह धरयौ ॥
गत तै महिखी तिह गर्भ गह्यौ, रखवारीय कौ दनु सग रह्यौ ॥४४
ग्रभ पूरत केतक औध गई, महिखी गुरवो[6]लख मोद मई।
इक धीरसकध[7] लख्यौ इनकौ, महिखी रति चाहिय ता मन कौ ॥४५
भल दौर परयौ सोइ भेटन कौ, मन रभ चह्यौ सोई मेटन कौ।
रति गाहक माहिख चाय रह्यौ, विढकै तिह रभ वचाय वह्यौ ॥४६
द्रढ धीरसकध कौं मार दई, निकसी रति की पसु चाह नही।
हट स्त्रगन तै तिह रभ हन्यौ, विपरीत इही अवसाँन वन्यौ ॥४७
डर धीरसकध कै भैस डही, सरनै सोई जिक्षन जाय सही।
मिल जिक्ष वचाय रखी महिखी, लही भीत लुलाय तै दीन लखी ॥४८
जिह रभ हुतासन जारन कौ, रच काठ चिता तिह कारन कौ।
धर मृत्यु[8] तहाँ तिह सीस धरयौ, करतै जव आग प्रवेस करयौ ॥४९

१ जल। २ हर्षित हुआ। ३ स्तुति करके। ४ दृष्टि। ५ वीर्य। ६ गर्भवती। ७ भैंसा। ८ शव।

महिखी वह दौरके आप मतै, पति संग जरी सोई मोह प्रतै।
महिपासुर ताही कै पेट मढचौ, कर रूप भयकर सोय कढचौ ॥५०
भट रभ तै मो रतवीज[1] भयौ, दनु सुभ निसुभ कौ सग दयौ।
महिपासुर सोच चल्यौ मनतै, तप साधन कौ अपने तनतै ॥५१
वन स्र ंग सुमेर समीप वस्यौ, कर उग्र तहाँ तन-ताप कस्यौ।
अनुवछ् छर लछ् छ वितीत इतै, चितते कमलासन राह चितै ॥५२
चढ हस पितामह चाह चले, मन वचत दाँनव जाय मिले।
वर मागहु जो कछु वचत है, लख तौ करनी अवलचत[2] है ॥५३
कर जोर तवै दनुंविद्र कही, डर मृत्यु के ताप तै देह दही।
अमरत्य[3] समापहु नाथ अहौ, गन हाथ अनाथ कौ नाथ गहौ ॥५४
दनु उत्तर येह विरच दीयौ, करता इह नाहिंन नेम कीयौ।
जग मैं उपज्यौ सोई जावत है, कथ वेद पुरान कहावत है ॥५५
रवि चद्र नछत्र न एक रहै, अचला फिर अवर देख अहै।
सुन वात पितामह की सवहू, तहाँ दाँनव फेर कही तवहू ॥५६
सुर-आसुर मोहि न मार सकै, तनकौ नर मात्र न मीच तकै।
अवला भय नाँहिन मोहि इतौ, मरनौ हम चाहत आप मतौ ॥५७
वरदाँन दीयौ तवही विधना, सव सिद्ध भई तप की सधना[4]।
सव असुरायन वात सुनी, अभिषेक कीयौ नृप सज्भ-अनी[5] ॥५८
असुरायन राज जग्यौ अचला, कमती तहाँ होगई देव-कला।
जुर दाँनव जीत करी जगती, परचड भयौ महिपेसपती[6] ॥५९
सव दाँनव दौरत स्वारथ मैं, भिरकै नृप जीतत भारथ[7] मै।
दनुंविद्र सवै जग दाव दह्यौ, रच ताहीकै ऊरध छत्र रह्यौ ॥६०
प्रगट्यौ महिषासुर हाक परी, कर सागर सगर सीम करी।
परचारक चिक्षुर सैनपती, जिह जीत करी सवही जगती ॥६१
तिनकै वहु सैनक हाथ तरै, कहै चिक्षुर जाविध काज करै।
असलोम उदर्क महा अधमा, मतमद विड़ाल जुतै मधमा ॥६२
वल वास्कल हू पुन दर्पवली, छित जीत त्रनेत्र अगाध छली।
पुन वधककाल[8] महा प्रवला, कहीयै कहा चातुर जुद्धकला ॥६३

---

१ रक्तवीज। २ व्याकुलता, घवड़ाहट। ३ अमरत्व। ४ साधना। ५ सजी सेना के साथ। ६ महिषासुर। ७ युद्ध। ८ कालबंधक।

ठिक ठौरन ठौरन ठाट ठयौ, भुय मैं दनुविंद्र कौ राज भयौ।
दनुविंद्र सह्यो नृप पोतदीयैं[1] लख सासन सीस चढाय लीयैं ।।६४
कोऊ सासन जास विरुद्ध करै, करकै रन ताहि निपात करै।
मिलकै रन खत्रीय मॉन मलै, तहाँ विप्रन कौ लीय हाथ तलै ।।६५
मख भाग लहै सोई मोद मई, वरदायक माहिख ह्वै विजई।
रच जोर अदेवन राज रसा, दिन देवन की भई दीन दसा ।।६६
वल आसुर देख सलाह वढी, चित जीतन की सुर चाह चढी।
सुरगी[2] सुख भोगहुँ सुदर कौ, पठवौ इक दूत पुरदर कौ ।।६७
कहिहै हम जाविध जाय कहै, गृह कौ तजकै वन राह गहै।
अथवा मम सेवकी आदर कै, पग आय परै उर पाधरकै ।।६८
मम स्त्र गन दारुन मारन तैं, कहु देव वचै इह कारन तैं।
चढ आवहु नातर खेत छली, वल अच्छ्छर[3] के सुरराज वली ।।६९
त्रीयलपट की करनी तितनी, जिह जॉनत हैं हमहू जितनी।
उर पौरुख होय तौ आय अरै, धिक सगर की कर वज्र धरै ।।७०
चित चातुर आतुर दूत चह्यौ, दनु मत्र विचार निदेस दयौ।
भल दूत चल्यौ तजकै भय कौं, लहि कै तहाँ राह सुरालय कौ ।।७१
महिषासुर चाहि कही मतिसौं, परचायकै जाव सचीपत सौं।
सव दूत को कथ्थ पुरद्र सुनी, कछु सोच विचार करी कहनी ।।७२
महिषी पसु-अगज मदमती, कितने दनु आय मिले कुमती।
जिनसौं कर एकत[4] जोर जमा, छित कीन कुलाहल छोड छिमा ।।७३
गहिकें हम धीरज नाँहि गिनी, उर-दर्प भयौ करकै इतनी।
इह दर्प मिटावहु तो उर कौ, सठ जाँनहु नाथ अहूँ स्वर कौ ।।७४
सुख चाह सुरालय की सरसी, दनुविंद्र कौ वात भली दरसी।
मम वज्र की धारन-मारन की, उर सक न स्त्र ग उखारन की ।।७५
अभिमान कहूँ रन कौ उर मैं, चल सत्वर आवहु चत्वर मैं।
मम हूँस[5] वढी रन की मनकौ, सठ चाहत स्त्र ग सरासन कौं ।।७६
विन स्त्र ग भये वनवास वहौ, कहनी हमहू इह जाय कहौ।
जीय चाह चहै जहाँ जाँननकौ, करहू थित थाँनन काँनन कौ ।।७७

१ कर देने वाले, अधीन। २ स्वर्ग का। ३ अप्सराओं। ४ इकत्रित। ५ अभिलाषा, उत्साह।

नद आस्रय जीवन[1] नालन मैं, त्रन खाय रहौ तट तालन मे ।
अवतौ हम दूतहु आवन दै, जीय जॉन अवध्धहु जावन दै ।।७८
उतकी कहनी सुन लीन अहौ, कहनावत हू हम जाय कहौ ।
सुन दूत चल्यौ महिपासुर कौ, कहिनी कहि जोर दहूँ कर कौं ।।७९
नमूची[2] अरि जाँनत राज नही, कछु दुज्जन वात न जात कही ।
दुरवाद कहै मम हौस डुलं, भट वोल प्रचारहु जुद्ध भलै ।।८०
हटकै सव देवन-दर्प हरौ, वननदन मैं सुख सौ विहरौ ।
सुन क्रोध भयौ महिषेस्वर यौ, उझले मनु सात समदर ज्यौ ।।८१
चिनगारीय सोर की रास चढी, वहिकै वडबानल आग वढी ।
दहकी जिम दाव लगै दहनी, वसू वाढ चली प्रलया वहनी ।।८२
स्रुत केहर गाज अवाज सुनी, फिर पूंछ मरोरत जेम फनी ।
घल लालीय नैनन रोख घुट्यौ, अलसावत पूंछ मरोर उठ्यौ ।।८३
वढ आनन तै दुरवाद वक्यौ, धधकै जिम आग इलाव धुक्यौ ।
जिनकै वल अच्छ्छरनार जमा, सवकौ वँह जाँनत आप समा ।।८४
जिह स्याहिक[3] विस्नु छली जगकौ, ठिक ताहि पिछाँनत हूँ ठगकौ ।
हरनाक्ष कौ सूकर होय हन्यौ, विजई फिर वीर नृसघ वन्यौ ।।८५
कीय हाटक कस्यप[4] सौं करनी, वल की छल की कल[5] विसतरनी ।
पित-पुत्र लराय कै आपुस मैं, वहुरै प्रहलाद कीयौ वसमैं ।।८६
नर नाम तै मोकँह भीत नही, वरदान दीयौ विधना विजई ।
दसहूं दिस भेजहु दूतन कौं, परचाय कहै दिती पूतन कौ ।।८७
जुत है दल पै दल जोर जमा, समलै सव आसुर वोल समा ।
सव व्याप्रत[6] मत्रन वात सुनी, कीय काज ज्युँही नृप की कहनी ।।८८
पहुमी असुरायन हाक परी, लहरै जिम फौज वढी लहरी ।
पुन पव्वय धाँम पतालन तै, उमडे घन जेम ऊतालन तै ।।८९

कवित्त

कोऊ कहै उरवसी[7] घ्रताची[8] रभा[9] मिस्रकेसी[10],
पर्मद्वरा[11] कै गाँन स्रौंन सुख पावैगे ।

---

१ जल। २ इन्द्र । ३ सहायक । ४ हिरण्यकश्यप । ५ कला । ६ एकत्रित ।
७ से ११ तक अप्सराओं के नाम ।

सुनी है मु साँचो महमेनी[1] हु मदोतकटा,[2]
लोचन तिलोतमा[3] के रूप ललचावेंगे ॥
नदनविपन वीच कर है विहार नीकी,
रमनी सुरन केरी असुर रमावेंगे।
महिपास्वर भूप धन्य करनी अनूप जाकी,
जाके सग जग कर सीघ्र विजै पावेंगे ॥९०
जग की उमग कर सेना दनु सग सजी,
रग में विरग भयौ देवन के दुख कौ।
विध वरदॉन दीयौ सवकौ अकाज कीयौ,
महिपास्वर जेता नॉम मात्र ही पुरख[4] कौ ॥
सुनी सुरराज कीजै किही विध काज इ ,
दानव-समाज लीयें सब ही कुरख कौ।
लरें विन भाग गयें ह्वै है उपहास मेरौ,
कातर कहायकै दिखाऊँ कहाँ मुख कौ ॥९१

छद मोतीदाँम

बढी सुरराज विखाद वसेस, दीयौ सुर वोलन काज निदेस।
क्रततहु वारुन आद कुवेर, विचारन मत्र मिले तिह वेर ॥९२
कही दिस पालत तैं तहाँ कथ्थ, सचीपत लायक वुद्ध समथ्थ।
पराक्रम मायक रभ कौ पूत, दिखावत भीत पठायकै दूत ॥९३
सुरालय त्याग रहौ वनवास, इहा वँह आय करी अरदास।
न तौ मिल सगर देवहु नीम, भलै दनुविद्र वकारहु भीम ॥९४
कही हम दूत प्रतै कछु कथ्थ, सुनावँह ताकहँ जाय समथ्थ।
सदा इह दुज्जन जात सुभाव, भजै नही नैकहु भीरुक भाव ॥९५
सवै मिल नीक विचार सलाह, नयानय जा विध ह्वै निरवाह।
वलावल विग्रह सध विचार, कुलीनस[5] आगम वधहु क्यार ॥९६
करौ सोई काज महा करतूत, प्रकासोय देवन सौ पुरहूत।
कही पुरहूत सुनी सोइ कथ्थ, तहाँ दिय देवन उत्तर तथ्थ ॥९७

---

१ से ३ तक अप्सराओं के नाम। ४ पुरुष। ५ जल।

जहाँ इक दूत पठावहु जाय, वँहै बल देख कहै इहाँ आय।
बुलाय कै बुद्ध बिचार बिसेख, पुरदर दूत बिदा कीए पेख ॥९८
भले तुम जावहु लावहु भेव, अनीकनि सभयत[1] कीन अदेव।
जहाँ तुम आतुर देखहु जाय, इहाँ समुझाय कहौ हम आय ॥९९
विदा हुय दूत चल्यौ तिह वेर, मिले दल-दाँनव च्यारहु मेर।
निरख्खीय आय कही निझ नैन, विमासत इद्र कहे इह बैन ॥१००
मघाभव आसुर प्रोहित माँन, ज्युंही सुर चित्र सिखडज जाँन।
सबै मिल पूछहु जाहि सलाह, चहै सोई काज करौ चित चाह ॥१०१
बुलायकै देव-गरू तिह बार, सिंघासन आसन दै सुविचार।
कही महिपास्वर की तव कथ्थ, सबै विध लायक नीत-समथ्थ ॥१०२
कहै गरूराज करै हम काज, सबै मुनिराजन के सिरताज।
सुनी गरूदेवन की कथ स्राँन, विसारद नीत सुलोक विधाँन ॥१०३
दीयौ गरू उत्तर देवन देख, विपत्त मैं धीरज नीक विसेख।
जिही विध जाँनहु ईस्वर जीव, सदा अपटाँतर सग सदीव ॥१०४
उपासत जोगीय जोग अभ्यास, करै सोई धीरज तै परकास।
छली मम तीय हरी जव चद, फस्यौ अत चित्तहु दुख के फद ॥१०५
मिली सोई धीरज तै फिर मित्त, सही हम वीतीय जाँनत सत्त।
करौ तुम जुद्ध तथा तुम काँन[2], हमै नही दीसत लाभरु हान ॥१०६
कहै हम-वात न एकहु कोय, जयाजय ईस-अधीनहु जोय[3]।
जहाँ गरूराज कही इह जाँन, नही कुसलात न वात निदाँन ॥१०७
विचारकै वासव बुद्ध विसेख, दीयौ गरूराज कौं उत्तर देख।
गनी परिव्राजक भूखन[4] ग्याँन, सतोखहु विप्रन कौ सुख-दाँन ॥१०८
चहै कोऊ ऐस्वरता कर चाह, तजै नही उद्दम[5] भूखन ताहि।
हीयै कर सगर की फिर हाँम, तज्यौ पुरहूत न साहँस ताँम ॥१०९
गयौ विधलोक पितामह गेह, दहै दुख ताप सदा मम देह।
पितामह देवन के प्रतपाल, भयौ महिषेस्वर जीत भुआल ॥११०
सुरालय जीतन चाहत सोय, महाँवल दूत पठायकै मोहि।
कही तिह आयकै या विध कथ्थ, सँभावहु आयुध सक्र समथ्थ ॥१११

---

१ सुसज्जित की। २ किनारा करो, युद्ध न करो। ३ जो भी हो। ४ सन्यासियों का भूषण। ५ उद्यम।

न तौ सुरलोकहु वाम निवेर, वमौ वनवास करौ मत वेर।
परजन आद कतत पचार[1] वने सरनागत रावरे वार ॥११२
करौ सुर स्याहि अवै करतार, अहो विध आप विनाँ न अधार।
विरचहु देवन सौं कहि वात, ततौ हम मन्न विचारहि तात ॥११३
हलै किवलासहु कौ सिव हेत, वनै जिम जाय कहै कछु व्यूंत।
वलावल विग्रह सव विचार, इहै विध फेर करै उपचार ॥११४
गये दिसपालन कौ लहि गैल, सदा सिव-वास जहाँ ध्रुव[2] सैल।
जहाँ हर-देवन देवन जाय, लखे सव देवन चित्त लगाय ॥११५
अजोनीय[3] नाथ स्वरूप अनाद, निरजन रजन मीगीय नाद।
सुहावन चद्रमनी तन स्वेत, सुसोभत उज्जल भस्म सहेत ॥११६
वसै भुज-वधन ककन व्याल, महेस्वर नील गरै रुडमाल।
लसै फिर काँनन-कुडल लोल, प्रभा प्रतिविवत वीच कपोल ॥११७
वनै विधु वाल सुभाल विसाल, खुली छिव अवर सीधुर-खाल[4]।
उमा सिध[5] सील सती अरधग, गिरीसहु सीस विराजत गग ॥११८
पढै रिख वाचत वेद पुरॉन, गहै स्वर राचत गध्रव गौन।
विपचीय भीन रही जहा वाज, अनूंपम होत मृदंग अवाज ॥११९
अनदत देव लखे छिव ऐन, विचारकै सार कहे विध वैन।
पती महिषेस महावल पूर, सवै सुर जीतन चाहत सूर ॥१२०
अगजित वीर परोक्रम उद्ध, जुहारत देवन सौं सोइ जुद्ध।
दया-निध देवन के सिव देव, भली विध जाँनत सगर भेव ॥१२१
किही गत काज करै इहाँ कोन, जिही उर मंत्र विचारहु जोन।
विचारकै सिंभु कही इह वात, नरायन जाँनत दुष्ट निपात ॥१२२
चलौ हम साथ रमापत चाह, सवै मिल कीजहु जोन सलाह।
गये वयकु ठपुरी हरि-गेह, विलोकीय धूरजटी सुरवेह[6] ॥१२३
निलै पद-पकज पंकज नैन, दिपै कर पकजहू सुख-दैन।
अनूंपम आँनन सोह अपार, महाँप्रभू पावन रूप मुरार ॥१२४
कीयै मकराक्रत कुंडल काँन, अनूंपम आक्रत वाहु अजाँन।
मनी उर कौस्तुभ फूलन-माल, प्रभा तन स्यामल ओठ प्रवाल ॥१२५

१ ललकारा है। २ हिमालय। ३ योनि से जिनका जन्म नहीं हुआ। ४ हाथी का चर्म। ५ सिद्धि। ६ ब्रह्मा।

पीतावर ओढन की दुति-पुंज, मिली घन दाँमन ज्यू छिब मंज ।
अनूंपम सीस किरीट उदोत, जगी मगवग्ग जवाँहर जोत ॥१२६
विराजत लछ्छीय वाँम विभाग, अनूंपम रूप-भरी अनुराग ।
निरंतर पद्म गदा निहसंक, सुसोभत चक्र त्यूँही कर संख ॥१२७
करै जहाँ वेद-धुनी मुनि केक, उचारत अछ्छर गाँन अनेक ।
गिरा-गुन गध्रव किन्नर गाय, रमापत जाचत राग रिझाय ॥१२८
सवै विध रुद्र कही समुझाय, अनाथ के नाथ हू कौ अवगाहि ।
वली महिषासुर लै वरदाँन, करै नही देवन की कछु काँन ॥१२९
सुरालय जीतन चाहत सोय, कीयौ वँह विग्रह चाहत कोय ।
पठाथकै दूत कही पुरहूत, करी रन बीरन की करतूत ॥१३०
न तौ तज देहु तिविष्टप[1] लोक, सहौ वनवास ही के दुख सोक ।
महावरदायक माहिष[2] वीर, पुरदर हीय करी इह पीर ॥१३१
अधोक्षज[3] देवन की अरदास, विचारकै वृंद करी वर दास ।
कही विध रुद्र हरी सुन काँन, प्रचारीय जुद्ध ही काज प्रयान ॥१३२
चढे अरुनानुज[4] पै कर चाह, उदायुध चक्र गह्यौ अवगाह ।
जगी दनु मेचक[5] मेटन जोत, उदै-गिर माँनहु सूर उदोत ॥१३३
विरंचहु डंड-कमंडल वार, हले चढ हंस ही काज हकार ।
हले चढ-संकर संड हरोल, असीरख पाँन भयंकर तोल ॥१३४
गहै उर गाढ विसुद्ध गजंद्र, अनूंपम भूप चढ्यौ जहाँ इंद्र ।
कीयौ कर धारन वज्र कठोर, विडारन दानव कौ वरजोर ॥१३५
सवारीय अंतक घीरसकंध, सँभारीय साहँस जुद्ध समंध ।
गह्यौ कर आयुध चंड गरूर, प्रचंडहु डंड पराक्रम पूर ॥१३६
सिखंडीय-वांहन पौरुख चंड, भयंकर सक्त गही भुजडंड ।
परंजन सूर ज्युही इक पिंग, जुहारन काज निसापत जंग ॥१३७
घनंजय[6] दाँनव सौं कर घेख, प्रभंजन आद चले रन पेख ।
अनी-सभ्र अप्पन-अप्प अधार, धरै कर आयुध पौरुख धार ॥१३८
चले दल-देवन के कर चाह, अदेवन आहव कौं अवगाह ।
परी त्रहुलोकन वीच पुकार, चढी चकडोल घरा दिस च्यार ॥१३९

---

१ देवलोक । २ महिषासुर । ३ विष्णु । ४ गरुड । ५ अंधकार । ६ स्वामीकार्तिकेय ।

अदेवन-देवन की अनखान, नहीं तनत्रान निमर नार।
धरा अगमान ढही रन-धूंम, नगारा गैन-घटा गैंग ग्रम ॥१४०
उभै दिस केतन-पत[1] उकून, भूपं गज-गीढ रहे घट भून।
उभै दिस निघव राग उताप, महाभट चाहत जुध मिलाप ॥१४१
उभै दिस आनक ढोल अवाज, बढै रव भेर नफीरक बाज।
उभै दिस गज्जन सिंधुर येम, तिही रव भद्द बलाहक जेम ॥१४२
उभै दिस उम्मर नेह उडीन, भरो नभ भूधर पंखर कीन।
उभै दिस सेल अनीन अनन्त, दिपै द्रुत बिद्दुत ज्यों दमकन्त ॥१४३
उभै दिस नेमीय घोष प्रचण्ड, दिपै रन क्रुद्ध जहाँ भुजदण्ड।
उभै दिस भेखन[2] हेष[3] अवाज, बढ़े पग कैक मलप्पन राज ॥१४४
उभै दिस वीरन क्रुद्ध उछाह, चले उर आगम आहव चाह।
उभै दिस तुट्टत नीरनि वांन, प्रगजन भक्कीय सेन प्रयांन ॥१४५
उभै दिस तूटत है तरु अग्ग, महांवन नत्थर होवत मग्ग।
उभै दिस धूज धरा अकुलाय, दरारन पव्वय न्रग डुलाय ॥१४६
उभै दिस सागर सत्त[4] उफांन, प्रलै-जल मांनिहु कीन प्रयांन।
उभै दिस उत्तर दक्खन ओर, घुमजीय सैन-घटा घनघोर ॥१४७
उभै दल देव-अदेवन आय, भये मुहमेज जहाँ रन भाग।
उभै दल आयुध लै कर उद्ध, जुरे भट चारु धकारत जुद्ध ॥१४८
उभै दल तीरमदाज असख, प्रहारन लग्गीय गारध पंख।
उभै दल ढालन की कर ओट, चले करवालन मारत चोट ॥१४९
उभै दल भालन सालन अग, परै रुहरालन रग पतग।
उभै दल सूलन हूल अनत, प्रहारन पट्टस[5] मार परत ॥१५०
उभै दल मूसलहू सिल ओर, करै घन मार कुठार कठोर।
इतै दल देवन को पत इद्र, गहै उर गाढ अरोह गजिंद्र ॥१५१
लख्यौ जहाँ चिक्षुर हू गज पेल, भुक्यौ रन भार लयौ भुज भेल।
हने सर चिक्षुर तत्व[6] हकार, पुरदर काट कीये तिंह पार ॥१५२
भुजांतक चिक्षुरकै सर भेद, खुल्यौ तन-वर्म भयौ खल-खेद।
मुरछ्छत होय गिरयौ गज मथ्थ, हन्यौ फिर वज्र जहाँ गहि हथ्थ ॥१५३

१ पताकाओं की पक्तियां। २ भीषण, भयकर। ३ हींस। ४ सप्त, सात। ५ भाला। ६. पांच।

करी कर चोट लगी अकुलाय, भज्यौ रन चिक्षुर भीरुक भाय।
जहाँ रन-वासव की भई जीत, भये भ्रगु-सिख सबै भयभीत ।।१५४
इहै गत चिक्षुर की अवरेख, धिख्यौ महिषेस तहाँ उर घेख।
पुकारीय दाँनव वीर विडाल[1], विदा कीय जुद्ध महाँविकराल ।।१५५
दीयौ असुरेस विचार निदेस, सधारहु आहव जाय सुरेस।
परंजन आद जहाँ इकपिंग, जुहारहु जाय विडारहु जंग ।।१५६
चल्यौ जहाँ सासन सीस चढाय, विडालहु वारन अग्ग वढाय।
निहाँरीय वासव आवत नैन, सजै वहु दाँनव की संग सैन ।।१५७
पुरदर सिंदुर कौ रन पेल, खरौ कीय वीरन कौ चहाँ खेल।
विडाल कौ तिछ्छन वाँन विडार, सचीपत पाँनप अंग सँभार ।।१५८
विडालहू काट तहाँ सर-अ द्र, गरज्जीय आहव पेल गयंद।
पुरदर अग कलंव पचास, जहाँ कर जुद्ध प्रहारीय जास ।।१५६
कटे तहाँ आवत वीच कलंव, जहाँ उर क्रुद्ध धिख्यौ अरिजंभ[2]।
दहूँ सर मारत ताकत दाव, पलट्टत नाँहिन येकऊ पाव ।।१६०
जहाँ सर दिग्घ वहै वरजोर, अनेकन सारमई दहु ओर।
कटै तहाँ येकहु-येक कलंव, प्रकासत ज्वालहु माल प्रलव ।।१६१
तके जहाँ वासव मारत तीर, विडालहु नैन रुकै नँही वीर।
समौ लख पाँनप सक्र सँभार, महाँवल दाँनव कौ सर मार ।।१६२
गदा गहि दाँनव ताक गजिंद्र, प्रहारीय सुडही वीच पुरद्र।
भज्यौ गज चिक्कर ह्वै भयभीत, सवै असुरायन होय सभीत ।।१६३
सवारीय सिंधुर[3] की तज सोय, चढयौ फिर रथ्थ विडाल चछोह।
उभै भट ऊद्ध पराक्रमवाँन, जुरे कर आस्त्रव वाहु अजाँन ।।१६४
उभै भट फौजन के अवतंस, वचावत अप्पन-अप्पन वंस।
उभै भट ककटव्यूढ[4] अभंग, सरासन बाँन प्रहारत संग ।।१६५
उभै भट ताकत दाव अनेक, अहूटत येकन तै नँही येक।
उभै भट जाग वलाय की आग, मिले मुँहमेज जहाँ रन माग ।।१६६
उभै भट संगर पाव अडोल, हीयै अवगाढ अनीन हरोल।
उभै भट हूँस करै जय आस, पराक्रम अप्पन-अप्प प्रकास ।।१६७

---

१ विडालाक्ष (दैत्यों का एक सेनापति)। २ इंद्र। ३ हाथी। ४, वख्तर-धारी, कवचधारी।

उभै भट मत्त करी अनुहार, रुपे मृगराज मनौ मिल रार।
उभै भट वैर विचार अनाद, विवोविव राचत आयुववाद ॥१६८
उभै भट दर्प-भरे जनु उद्ध, जुरे लग पाखन पव्वय-जुद्ध।
मँडे रन वाँनन तै मघवान, विडालहु वाढ़त ज्यौं दलवाँन ॥१६९
जयन कौं वासव-अगज जाँन, अरे रन ताहि कीयौ अगवाँन।
पराक्रम दाँनव कौ तहाँ पेल, भुक्यौ रन वासव कौ[1] भर भेल ॥१७०
उरस्थल काल इलाव की आँच, प्रहारिय दाँनव कै सर पाँच।
जयत के वाँन लगे विप ज्वाल, विडालहु मुर्छत होय विहाल ॥१७१
समौ तक भाज गयौ जव सूत, प्रचारीय जीत पुरंदर-पूत।
सवै मिल देव करै जय सद्द, निहसत दुदभ वाढीय नद्द[2] ॥१७२
गहक्कत किन्नर गध्रव गाँन, अपछ्छर ताडव राचत आँन।
सुनी दल देवन की धुन स्राँन, हीयै दनुविद्र जरचौ लख हाँन ॥१७३
प्रचारीय ताम्र[3] तहाँ वलपूर, सवै विव लायक सगर सूर।
अनी सभ आसुर-सग अभग, भिरचौ रन माँनहु भीम भुजग ॥१७४
भुके सर तिछ्छन ज्यूँ विपभार, विड़ारत येकन येक वकार।
वरख्खत वूँद ज्यूँही सर वृंद, सरोवर वद्दर आय समद ॥१७५
अरे रन वारुन पास ऊठाय, परठ्ठीय मेर सिलोचय पाय।
जहाँ लख वारुन दारुन जुद्ध, कततहू आय जुटे कर क्रुद्ध ॥१७६
परी तहाँ दडहु पास प्रहार, हटै नही दाँनव माँनत हार।
उभै मिल जूटत है इक ओर, ज्यूँही इक ताम्र जुटै वरजोर ॥१७७
खट्टकत खग्गन तै जहाँ खग्ग, अट्टकत[4] मूसल सूल उदग्ग।
पट्टकत येकन कौ गहि पाँन, रट्टकत सिघ वराहर काँन ॥१७८
भट्टकत येकन-येक भपेट, फट्टकत[5] नाहिन लागत फेट।
सट्टकत[6] कायर पथ सँभार, लट्टकत कवरहू धर लार ॥१७९
कट्टकत[7] विद्दत[8] ज्यूँ विक कोह, मट्टकत देहन तै तज मोह।
हट्टकत नाँहिन माँनत हार, भट्टकत नैनन क्रोध भुँहार ॥१८०
भयौ रन सकुल रूप भयाँन, सुरासुर दोवन येक समाँन।
प्रहारीय अंतक डंड प्रचंड, चल्यौ नही दाँनवहू वलचंड ॥१८१

---

१ इन्द्रपुत्र जयत। २ नाद। ३ एक दैत्य सेनापति। ४ अटकना, उलझना। ५ निकट आना। ६ चुपचाप भाग जाना। ७ कड़कना। ८ बिजली।

पहूँचोय वासवहू गहि पाँन, विड़ारीय आसुर कै तन वाँन।
प्रकंपत तीरन वाढीय पीर, धुक्यौ तन आसुरहू तज धीर ॥१८२
मुरच्छ छत तांम्र गिरचौ धर मथ्थ, धिरयौ असुरेस गदा धर हथ्थ।
कहे महिषास्वर इद्र कुवोल, तहाँ रन-वीच गदा कर तोल ॥१८३
भखे तुम वाँयस ज्यों मख भाग, ऋमै जन जाहु भजै रन त्याग।
पुरदर देख चढचौ गज प्रष्ट[1], तहाँ असुरेस गदा गहि तिष्ट ॥१८४
प्रहार करी भुज मूल प्रचार, पुरदर कट्टीय वज्र-प्रहार।
पुरदर अग्र वढचौ गज पेल, झुक्यौ असुरेस त्युँही खग झेल ॥१८५
रुपे दहूँ वीर कुपे विच रार, परै तहाँ अस्त्रन सस्त्र प्रहार।
करी तहाँ सावरी[2] जाल कराल, किते असुरेस भये तिह काल ॥१८६
अचभत होय सुरेस असेस, मुनेस न जाँनत ताहि महेस।
जहाँ तहाँ मारत देवन जाय, दसूँ दिस एक अनेक दिखाय ॥१८७
जहाँ तहाँ ठाँनत वाँनत जग, उडै किरवाँनन तै कट अग।
जहाँ तहाँ घायल घूमत जूह, करै रन सूर वकारत कूह ॥१८८
जहाँ तहाँ कायर भागत जाय, अधीरज होय घने अकुलाय।
जहाँ तहाँ केक कवग्रहु जाग, फिरै मनु खेलत होरीय फाग ॥१८९
जहाँ तहाँ रूठ रहे भट जूट, मँडे रन जभक[3] मल्लका मूठ।
जहाँ तहाँ वाज झपेटन जाँन, परै केऊ फेटन तै तज प्राँन ॥१९०
जहाँ तहाँ देवन दाँनव जाल, लरै वहु भाँत करै चख लाल।
जहाँ तहाँ एकन-एक जुहार, रमै भट जाचत राचत रार ॥१९१
जहाँ तहाँ वीरन के कट झुड, परे केऊ रुडहु मुड प्रचड।
प्रभजन ऊठ धनजय पाय, परजन अतक आद पलाय ॥१९२
दिवाकर और निसाकर देख, पुलस्त हु[4] हार रहे जहाँ पेख।
करी अहु-देवन हूँत पुकार, मिले अज औ त्रपुरार मुरार ॥१९३
रमापत चक्र प्रहारीय रोप, दनू सव कत्रम[5] मेटेऊ दोष।
सोइ असुरेस रह्यौ तन सेस, भयौ तहाँ वीर भयाँनक भेस ॥१९४
लीयौ परघा कर चक्षुर पेल, झुके रन पाँनन आयुध झेल।
अरे उग्र वीरज[6] औ उगरास[7], तके असलोम त्रनेत्र हु तास ॥१९५

---

१ पीठ। २ आसुरी, जादू का। ३ दाढ। ४ कुबेर। ५ कृत्रिम, माया के।
६ दैत्य सेनापति उग्रवीर्य। ७ उग्रास्य।

अरे अधकासुर वास्कल आय, समासम दाँनव को समुदाय।
धरैं कर चाप चढै रथ धाय, अरे मद-अंध सुदेवन आय ॥१९६
कहै मुख वायक क्रद्ध करूर, परैं जहाँ घायक सायक पूर।
मिले अधकासुर दैत्त मदव, रमापत जुद्ध लीयौ मग रुव ॥१९७
दीये सर तत्वहु लिप्त दुरत, तहाँ हरि कट्टीय वीच तुरत।
मिल्यौ जहाँ जग दुरूह मिलाँन, वरख्खत मूसल खग्ग सुवाँन ॥१९८
अरे दहूँ वीर तजै तन-आस, परे तहाँ जुद्ध सु दीह पचास।
पुरदर वास्कलहू भरपूर, कीयौ जिह जुद्धहु क्रुद्ध करूर ॥१९९
ज्युही महिषेस महानट[1] जग, रचे तिह काल अनूपम रग।
कीयौ जिह रीतहु जुद्ध कृतंत, त्रनेता दाँनव सौ लहि तत ॥२००
कुमेर महाहनुहू कर क्रुद्ध, जहाँ इक रीत कीयौ दहु जुद्ध।
परजन जुद्ध कीयौ भरपूर, तहाँ असलोम वजावत तूर ॥२०१
घिरयौ अधकासुरहु तज धीर, गदा हरि-वाहन मारग हीर।
तहाँ हरि चाप प्रतंचन ताँन, वरखन लग्गीय तिछ्छन वाँन ॥२०२
तहाँ सर आसुर कट्टीय तास, प्रभू तन दिन्नेऊ फेर पचास।
वचाय कै बाँन सवै तिह वार, रमापत चक्र प्रहारीय रार ॥२०३
वढ्यौ रन चक्र सौं चक्र वचाय, गरज्जीय दाँनव दर्प गहाय।
तहाँ सुर मोह भये लहि त्रास, विहव्वल होय तज्यौ विसवास ॥२०४
हरख्खत दाँनव त्यौं कर हल्ल, गहै उर गाढ उचारत गल्ल।
हरी तव फेर गदा गहि हथ्थ, महा कर कोप प्रहारीय मथ्थ ॥२०५
परचौ अंधकासुर वीर प्रचंड, विहव्वल होय महावलवंड।
हुई जव अंधक की लख हार, वढ्यौ महिषासुर क्रोध विथार ॥२०६
जुरचौ सोइ आय रमापत जग, उभै सर मारत घाव अभग।
कीयौ तहाँ वाँनन जग कराल, वढै रसवीर महाविकराल ॥२०७
महा कर कोप गदा हरि मार, सक्यौ असुरेस न देह सँभार।
दिती-सुत दीन भए तिह देख, सभै स्वर कातर आतुर सेष ॥२०८
जगी मुरछा सु गई अधजाँम[2], विसारद जुद्ध महा वरीयाँम।
दई हरि कै परिघातन दाझ, मुरछ्छत होय गये महाराज ॥२०९

---

१ महादेव। २ आधा पहर।

तहाँ विनता-सुत आहव त्याग, लीयै हरि दूर गए मग लाग।
पुरदर आद सबै सुरपत, करै रव रोदन हाय करत ।।२१०
तहाँ कर सूल लीयै त्रपुरार, पहूँचीय आय सुनत पुकार।
कीयौ रन दारुन ह्वै प्रतिकूल, तहाँ महिषेस बचाय त्रसूल ।।२११
हनी उर सकर सक्ति हकार, सभै स्वर उच्च सु मोद सुरार।
भए कछु घायल नाँहिन भीम, नृभै हुय जुद्ध दई तहाँ नीम ।।२१२
इतै फिर विस्नु पहूँचिय आय, सदा सुर सकट होत सहाय।
लखे इकठे हरि सकर लार, कीयौ निभ्र रूप महा भयकार ।।२१३
नचावत पुछ्छ सु उच्च निसक, सवै लख देव मनावत सक।
गरज्जत मेघ ज्युंही भर गल्ल, घुमावत श्रगन[1] स्रिगन[2] घल्ल ।।२१४
लख्यौ तहाँ दारुन रूप लुलाय, उभै तहाँ आय जुटे अकुलाय।
करी तहाँ वाँनन-वृष्टि कराल, लरै दहू वीर करै चख लाल ।।२१५
सभ्यौ इत आहव धीरसकध, अगजत दाँनवहू मदअध।
उठाय कै पुछ्छ सौ पव्वय-अस, तक्यौ कुल दाँनव हू अवतस ।।२१६
महाबल विस्नु ही सौ रन मड, कीयौ विच वाँनन सौ सतखड।
रिसायकै चक्र प्रहार रमेस, मुरछ्छत मार कीयौ महिषेस ।।२१७
उठ्यौ कर माँनवरूप अखड, दुरतर धार गदा भुज-दड।
सिलोचय[3] दीसत दिघ्घ सरीर, गरज्जत मेघ सबद गहीर ।।२१८
महाधुन कीनीय सख मुरार, सुखी भये देव दुखी निसचार।
कीयौ फिर दाँनव रूप कराल, बन्यौ पलभक्ष[4] महा विकराल ।।२१९
तक्यौ हरि-वाहन कौं ततकाल, विलूर कै कीन सरीर विहाल।
श्रवै सव अंगन तै रत श्राव, वन्यौ अरुनानुज नाँहि वचाव ।।२२०
घल्यौ हरि के भुज मैं कर घाव, चले हरि चन्द्र लीयै कर चाव।
इतै निभ्र रूप कीयौ असुरेस, विडारीन श्रृगन अग विसेस ।।२२१
भयौ अरुनानुजहू चित भग, इही गत होय रमापति-अग।
महावरदायक जाँन मुरार, हले निभ्र लोक ही कौ हुसीयार ।।२२२
लखे जव विस्नु गए निभ्र लोक, उमापतिहू गत कौ अवलोक।
चले किवलास ही मग्ग चलोह, इतै विच षडहु सभ्र अरोह ।।२२३

---

१ सींग। २ पर्वत-खंड। ३ पर्वत। ४ सिंह।

इही विध चाल गए विध ओक, सवै सुर आस लही गहि सोक ।
भए वलहीन तऊ रन भाय, पुरदर नेक न छडीय पाय ।।२२४

परजन सक्त लियै कर पास, अरे रहे जुद्ध भए न उदास ।
डिगे नही नैक लियै कर-दड, पराक्रम अतक वीर प्रचड ।।२२५

प्रभाकर इदु जहाँ इक पिग, जुरे रहे वायु धनजय जग ।
इतै विच दाँनव को समुदाय, अडवर वाज पहूँचिय आय ।।२२६

जहाँ रच बॉनन तै अति जग, झुके मनु आयकै भीम भुजग ।
रहे रुप दॉनव हू जम-रूप, भिरे भट देख रह्यौ रन भूप ।।२२७

जुरयौ इम देवन दाँनव जुद्ध, करै हथवाह धरै उर क्रुद्ध ।
टँकारत चाप जहाँ इक तार, लरै भट भार करै ललकार ।।२२८

रँगे रस वीर चितै रत रार, हकारत नाँहिन माँनत हार ।
कीयौ महिषेस महा उर क्रोध, जुरयौ धर रूप लुलाय सुजोध ।।२२९

उखारत श्रगन स्त्रिग उठाय, सघारत देवन की समुदाय ।
महाबल देत कँही खुर मार, फिरावत पुछ्छ लगै फटकार ।।२३०

तहाँ सब देवन मॉनीय त्रास, जिताहव जाँन तजी जय आस ।
परी सु पलायन देवन पूर, गए सब भाजकै छड गरूर ।।२३१

लई सब सपत लूट लुलाय, सबै गज वाहन आद सुभाय ।
जहाँ रन दाँनव की भइ जीत, भजे सव देव लजे भयभीत ।।२३२

गयौ सुर सपत लै निझ गेह, मिले दनु वूठीय दूवन मेह ।
वस्यौ सोइ इद्रपुरी कर वास, प्रचारत सासन मोद प्रकास ।।२३३

लयौ पद इद्र को ईस लुलाय, घुमडत वोलत नैन घुलाय ।
ठए सव दाँनव देवन ठौर, छयौ मन मोद ढुरावत चौर ।।२३४

कीयौ सत वछ्छर जुद्ध करूर, मिल्यौ फल जास महा सुख मूर ।
गुहा कीय पव्वय की सुर गेह, दुरंतर दु.ख दहै नित देह ।।२३५

थके सव और उपाय न पाय, सवै मिल देवन की समुदाय ।
चिते कमलासन को कर चाव, अवै इह आखर एक उपाव ।।२३६

गए तव देव पितामह गेह, अरजीय जाय करी तहाँ एह ।
भजै महिषासुर जग्य विभाग, भजे हम डोलत हैं निरभाग ।।२३७

अहो विध सकट मेटहु आज, अवै नही दूसर और इलाज।
करी[1] सुरधेनक[2] हू कलव्रछ्छ[3], लई सव लूट सुरालय लछ्छ[4] ॥२३८
प्रभू विन और सुनै न पुकार, करौ दुख दूर अवै करतार।
जुहार पितामह की करजोर, मया कर सकट मेटहु मोर ॥२३९
कही तव देवन सौ करतार, वनै इह वेर न और विचार।
चलौ मिलकै सिव पै कर चाव, वहाँ कछु जाय करेंगे उपाव ॥२४०
कीयै सग देव गये किवलास, कथा कीय देवन की परकास।
कही मुसकाय कै सिभु कृपाल, पित मह ए तुमरी प्रतपाल ॥२४१
अवैहु निवाजस कीजीयै आप, टरै सव देवन केर संताप।
कही विध सिभु करौ सोइ काज, सुखी सव देवन होय समाज ॥२४२
मिलौ कमलापत सौ कर मत्र, तहाँ कछु वैठ विचारहै तंत्र।
सवै कर सम्मत देव-समाज, करे हरि याद सुधारत काज ॥२४३

दोहा

समत कर विध सकरह, परम मत्र परकास।
गए सवै मिल देवगन, विस्नु जहाँ निभ्र वास ॥२४४

छंद त्रोटक

सुर विस्नु को लोक विलोक सवै, तहाँ जाय दिसोक भये सु तवै।
सुभ सूचक पछ्छन वाँन सुनी, ध्रुव मगलदायक सुछ्छ घुनी ॥२४५
पुर लोचन देवन दीख परचौ, जीय मोद लह्यौ हीय दुख जरचौ।
वन वापीय-कूप अनेक वने, सरता सर पकज सोभ सने ॥२४६
जल मीन कलोल करै जँहवाँ, तर कछ्छप नीर रहे तँहवाँ।
वन वीच जहाँ सुकती विहरै, कल खुल्लक लोल किलोल करै ॥२४७
सुख वोल अजिम्भ[5] सुनावत है, गुन-गान मनोहरि गावत है।
वन भूम अनूपम सोभत है, लख नैनन सौं जीय लोभत है ॥२४८
हरतालीय क्यार उवार हरी, असपत्रका[6] राजत भीर अरी।
करुविंद पवित्र जहाँ कहरै, लगवाय सुगधन की लहरै ॥२४९

---

१ ऐरावत हाथी। २ कामधेनु। ३ कल्पवृक्ष। ४ लक्ष्मी। ५ मेढक। ६ ईख।

कहू वीरण मूल[1] सुवास करै, पर कंटक जाति न दीठ परै।
जहाँ अब कदत्र की पाँत जुरी, सरसै तहाँ चपक वोलसरी ॥२५०
कुजरासन[2] औ वहुपत्र[3] कही, अति छाँह असोक उदम्वर ही।
कहु रोचक मोचक श्रीफल है, गिरमल्लका वृछ्छ सुचित्त गहै ॥२५१
कँहु वजुल[4] मजु विराजत है, भरि भार मधुद्दल[5] भ्राजत है।
त्रयपत्र कुरज ही सोभ तहाँ, कृतमाल अनूपम रूप कहाँ ॥२५२
कँहु साल प्रीयाल मिले सरसै, द्रग त्यो पिचुमद सिवा दरसै।
करकधु पलखक लागे कहाँ, तितडी रु तमाल अनेक तहाँ ॥२५३
कपिकछ्छ अरु जुगपत्र किती, जहाँ जभ वधूक हू और जिती।
कहू पूरक वीज अरू करणा, वर वेण रुजाय जपा वरणा ॥२५४
कणीयार कुरट न जात कही, जहाँ केतक राजत पीत जुही।
केउ फूल गुलाव खिली कलीयाँ, मँडराय रही भ्रमरावलीयाँ ॥२५५
छित छाइय वेल चमेलीय की, जिह देखत ताप मिटै जीय की।
लसै मोगरा और वसत-लता, परछाँहीय देत सुरग पता ॥२५६
कहू मिस्र तरग ही कुदकली, थित राजत मजु निकुज थली।
जग माँहि जिती सुखदा जरीयाँ, लपटाय रही तरु वल्लरीयाँ ॥२५७
नव पल्लव मजर भार नए, ठिक अकुर कोमल गुछ्छ ठए।
मधुरे फल राजत है जिन मैं, परपूरन केक प्रसूनन मैं ॥२५८
वर सीतल मद सुगध वहै, गति सोय प्रभजन चित्त गहै।
किल कोकल मोर झींगोर करै, भल चातक वाँन सु स्रौंन भरै ॥२५९
किल-हस जहाँ नृप-हसन की, बन वाँन जिती खग वसिन की।
प्रभू कीरत सो जग पावन कौ, रट वोलत ताहि रिझावन कौं ॥२६०
प्रभु जाय लखी वयकूठपुरी, द्रग देखत देवन ताप डुरी।
सुख दायक धाँम समाँज तहै, वर वदन माल विराज तहै ॥२६१
उतरग अरोहन आटन की, कहीयै कहा सोह कपाटन की।
जुर खु भीय थभ प्रवालन की, द्रढ मंडत छत्त दिवालन की ॥२६२
कलि चित्र तरग अनेक करै, हिल कचन की मिल चित्त हरै।
पुखराज मनी अरु हीर पने, सोइ वीच विराजत सोभ सने ॥२६३

---

१ खस। २ पीपल। ३ वड, वटवृक्ष। ४ वेंत। ५ महुआ।

जुर ऊछ्छर पालीय जाल्नीय की, अत भीर उतग अटालीय की।
गुलक्यारीय फूल रही गलीयाँ, नहरै विच नीर जहाँ नलीयाँ ।।२६४।२६८
सुचि सुन्दर मिन्दर सोहत है, म्हकत सुगधीय मोहत है।
वहु झालरि चग मृदग बजे, रव घट जहाँ धुनि सख रजै ।।२६५।२६६
गुन गाँन सु गध्रव गावत है, बहु किन्नर वीन वजावत है।
दइवीजन द्वारन द्वारन मैं, बिहरै वहु मुक्त वजारन मैं ।।२६६।२७०
उर चाह वढी अधवेसन मैं, पहुँचे सुर जाय प्रवेसन मैं।
जन सनक सनदन आद जुरे, केउ भक्त इडा हिय उक्त करे ।।२७१
नयनी मृग अछ्छर नाचत है, रव कोकल गाँन सुनावत है।
धर ध्याँन मुनेस्वर बेद धुनी, गहरै स्वर गावत राग गुनी ।।२७२
निभ्र मिदर सुंदर कौं निरखै, वर वार उनद्दहु कौ वरखै।
अति सोहत उज्जल ऊँच अटा, घुमडी मनु वारद छाय घटा ।।२७३
लटकै लड लीलम लालन की, मुकता चिव वदत मालन की।
वहू रत्न जरे अध वीचन मैं, दमकै दुति जाहि दरीचन मैं ।।२७४
जय और विजै जुग नाँम जँहो, मिल हाजर पोल प्रतोलि मँही।
सुचि सोय सँवारीय संचन की, कर मे छरीया लीयै कचन की ।।२७५
कहि देवन आगम जाय क्हो, इह द्वार खरे हम वीर अहो।
इक जाय करी हरि सौं अरजी, महाराज की नीक लखै मुरजी ।।२७६
अध गजन श्रीपति नाथ अहो, सुर रुद्र पितामँह आद कहो।
मन केतन के दुःख मेटन कौ, चल आए प्रभू इहाँ भेटन कौं ।।२७७
अरजी सुनकै सुर आगम को, समुहे चले नाथ समागम को।
प्रभु मिंदर वार पधारत ही, कर जोर नमे सुर कथ्थ कही ।।२७८
जगनाथ अहो जग तारन हौ, अध हारन भक्त उधारन हौ।
सरनागत के सुख सागर हौ, अज दीनन वधु उजागर हौ ।।२७९
सव देवन की विनती सुनतैं, अखिलोक उदत कही उनतैं।
सव वैठीयै देवन आसन पै, मनहू चल मिंदर भासन पै ।।२८०
किह कारन आरत देव कहौ, द्रग दीन लखे किह ताप दहौ।
दहु देवन देवन-देव हु कौ, भली भाँत कह्यौ सुर भेवहु कौं ।।२८१
महिषासुर लीनीय खोस मता, रहै दाँनव सगर पाप रता।
वरदान को पाय प्रचड वली, गहि मारन कौ नहि एक गली ।।२८२

मख भाग लहै, सुर कौ न मिलै, डर तैं सव पव्वय वीच डुले।
सरणागत केहरि हौ सुखदा, दनु मारीयँ देवन कौ दुखदा ॥२८३
समुझाय कही हरिनै सव ही, जुर सगर जाय कीयौ जव ही।
हट लाग लरे तुम हू हमहू, जय नाँहि लही तिनतैं जमहू ॥२८४
जहाँ इद्र कुवेर परजन से, समि सूरज वायु धनजय से।
वहुरै इनतैं नँही और वली, चतुराइय एकन की न चली ॥२८५

दोहा

भरै न पुरसहु मात्र तैं, विध दीनौ वरदान।
जानत हौ सव देवजन, महिप वली अप्रमान ॥२८६
ऐसी कोन त्रीया अवर, जिह मारै तहाँ जाय।
तेज अस सव देव तन, प्रगटै करहु उपाय ॥२८७
तातैं वनहै एक त्रीय, सकट मिटहै सोय।
याद करौ सुरराय[१] कौं, करुणा कर सव्र कोय ॥२८८
कह्यौ विस्नु तैसौ कीयौ, सव देवन कै साथ।
सवकी माया ईश्वरी, सव कँह करण सनाथ ॥२८९
जोत स्वरूपी जगत कौ, रचत चराचर रूप।
सो प्रगटी ताही समय, सुद्ध गुनी स्वय-रूप ॥२९०

छद त्रोटक

विध के तन की जव जोत वढी, दुति रोहित रंग अनूप द्रढी।
सिव कौ सित जोत लखी सव ही, तहाँ तेज भयकर की तव ही ॥२९१
दुति स्याँम रमापत की दरसी, जोइ जोत अपूरव ज्वाल जिसी।
रग चित्र विचत्र पुरंदर की, सुख दायक स्याहिक है सुर की ॥२९२
जमराज परजन जोत जुरी, पति किन्नर की इति त्यो प्रसरी।
दरसी इम आँनहु देवन की, अतकायक रूप अदेवन की ॥२९३
सव वेदन तेज ही की समुदा, प्रगटी इक देवीय ह्वै प्रमुदा।
दस आठ भुजा दनु कौं दहनी, विकराल मनौ प्रलया वहनी ॥२९४

---

१ देवी, सुरों की अधिष्ठात्री।

महा लच्छीय स्वच्छीय रूप महा, कहीयँ तिनकी उपमा जु कहा ।
तिह के प्रति अग रु अग तथा, जिह जाँनहु देवीय रूप जथा ॥२९५
मुख सकर तेज भयकर ही, खल जात सकोप खयकर ही ।
भए अंतक तै कच भार ही से, तडता दुति ज्यो तम तार ही से ॥२९६
प्रगटी दुति तीन हु पावक सै, द्रग क्रस्न सिता रत दावक सै ।
भ्रकुटी प्रगटो दहु भ्रू हु मिरी, सोई सधक तेज हु तैं सुधरी ॥२९७
दुति दीपत यौ तिनकी दरसै, सोई चाप अनंगहु तै सरसै ।
रच स्रौंन[1] प्रभजन जाँन रमा, छत नाभीय-देस सु तेज छिमा ॥२९८
तिह दोलाय काँमहु की दुति सौं, सुभ नासका तेज धनदत सौं ।
रद स्वेत प्रजापत तेज रजै, चिव ओठ प्रवाल सुलाल छजै ॥२९९
दस आठ भुजा सु जनार्दन तैं, भई सोभित चड ऊदडन तै ।
बस तेज तैं अगुरी स्वच्छ वनी, कुछ सोम के तेज तै स्वाँम कनी ॥३००
सब मध्यम अग पुरदंर सौ, सुच सुदर काँम कै मिदर सौं ।
भुंय तेज नितब सुभार भरे, उर जघ परजन तेज अरे ॥३०१
विनता उपमा कवि को वरनै, सुर ताहि कै आय रहै सरनै ।
तन रूप की रास की तेज तनी, सुभ लच्छन सुच्छन हूँ तै सनी ॥३०२
रग स्याँम तथा मुख श्वेत रजै, चख आरुण दारुण रूप दजै ।
जिह ओठ प्रभासत तांम्र जिसा, तल हाथ हु राचत लाल तिसा ॥३०३
कमलापति देवन सौ जु कही, सब आयुध भूषन देहु सही ।
इक गुफत हार अनूपम ए, दुइ अवर खीर-समुद्रद ए ॥३०४
मणि दिव्य प्रभा सिर मडन की, तड़ता दुति ज्यो तम तडन की ।
वीय कुडल ककन यौ वेहुटा, चमकै तिह दीपत जाँन छटा ॥३०५
कट काँचीय नूपर औ कँठला, चिव त्यो कर पल्लव देत छला ।
कमला तन माल सु कजन की, रमनीय सुगधोय रजन की ॥३०६
फिर आयुध च्यार प्रकार ही के, केउ मुक्त अमुक्त प्रहार ही के ।
खलजत्र ही मुक्त सु खडन मैं, मुकता कहि मुक्त सु मडन मैं ॥३०७
कऊमोद की येक गदा करकी, भननाहट सव्द भयकर की ।
फरसो जिह तिच्छन धार फवै, सुभ सस्त्रन अस्त्र अपार सवै ॥३०८

---

[1] कान ।

दीय वकट हू तन धारन कौं, अत गरुड देवै उधारन ताँ।
सुर सूत्रहुधार इते सब ही, तहाँ देव इतेै आगे तब ही ॥३०६
वयजतीय माल अनूप वनी, इट पास त्यो गग हू दिघ धुनी।
इनने फिर वारुन नैं अरपैं, कर हेत जहाँ अर कै वर पैं ॥३१०
वर रत्न अनेकहु वाँनक के, रुच राजत रगत रौनक के।
इक सिंघ दीयौ असवारीय कौं, सब कारज देव गुवारीय कौं ॥३११
हिमवाँन दीये सु लिये हरखे, वह पीठ चढी दुनियाँ वरनैं।
सुख दायक देव समाजन कौं, दुखदाय अदेवन दामन कौं ॥३१२
जिह आराय येक हजार जुरै, परिहार करै नग टूट परै।
वर विस्नु सुदर्सन तै वढ़कै, कीय अर्पत चक्र तिही वढकै ॥३१३
जहाँ सकर दीय त्रसूल जँहो, तप तेज भयकर रुप तँहो।
द्रढ अग्र सतघ्नीय सक्ति दई, गत ज्यो मन की अत वेग गही ॥३१५
भल तिछ्छन वाँनन भार भरयौ, कढ वायु निषंग ही अर्प करयौ।
वर वज्र तथा गज घट वजै, सुरराज दये मन मोद सजै ॥३१६
महिपासुर दाँनव मारन ही, दीय दड कतन सु दारन ही।
कर पात्र कुवेर हू त्यो करकै, भरवे कौं सुरा तिह तै भरकै ॥३१७
कमलासन पुस्प कमंडल ही, जिह जाँनवी नीक भरयौ जल ही।
करवाल दई और ढाल कसी, जिह काल दई अरिकाल जिसी ॥३१८
रसमी दीय सूरज देव रमा, अवलोकत को वरनैं उपमा।
सुर देख अचभत यो सुधरी, कर जोर कै ताहि स्तोत्र करी ॥३१६
तव होय प्रसन यही मुखतैं, दहौ देवन आसुर के दुखतैं।
महिपासुर भीत तजौ मन मैं, रच दुष्ट कौं मारहुँगी रन मैं ॥३२०
कहिकै इह अट्टह-हास कीयौ, हहराय रह्यौं दनुजात हीयौ।
धुनि धुज्जत पव्वय त्यों धरनी, वढ खेह अडवर के वरनी ॥३२१
हल चल्लीय सात समदर हू, कुल दाँनव की भई रात कुहू।
सव देव सुखी भये ता सुनकै, गहगावत कीरत कौ गुन कै ॥३२२
सोइ सव्द महा महिसेस सुन्यौ, धर काँप उठ्यौ फिर सीस धुन्यौ।
उर क्रोध की ज्वाल वढी अत ही, मन विभ्रम छाय डुली मत ही ॥३२३
कुछ लायक नाँहिन देव कही, परचारक जावहु कोन पही।
गहिकै जिह लावहु मो गरजा, पर ताहि करौं पुरजा पुरजा ॥३२४

दसहूँ दिस भेजीय दूतन कौ, वढ क्रोध बुलाय बरूथन कौ।
परचारक देखीय जाय प्रभा, सब सुदर रूप अनूप सुभा ॥३२५
दस आठ भुजा द्रग ज्यो दहनी, रमनीय मनोहर त्यो रहनी।
सब आयुध भूषन अग सजै, भये दूत अचभत भाव भजै ॥३२६
महिषासुर की लखकै मुरजी, इह दूतन आय करी अरजी।
इक नार भुजा दस-आठन की, सब अग सुचग सुघाटन की ॥३२७
नरी किन्नरी आसुरी या सुर की, पर ता पहिचाँन नही परकी।
अरु दीसत अबर बीच अटी, जय जपत देवन-भीर जटी ॥३२८
मन सोचकै आसुर मदमती, परधाँन बुलाय लुलाय पती।
मिल मत्र विचारीय मोद महा, हम लायक है इह नार हहा ॥३२९
तिह जायकै लावहु बेग तँही, रुचता सुनकै मन लाग रही।
अब स्याँम[1] हु दाँम उपायन तै, भल भेद बिचारहु भायन तै ॥३३०
अरु दड रचौ जन आयुध सौ, बिगरै रस जाय न जा बिध सौं।
सुन दूत चल्यौ महिषासुर कौ, अवगाहन चाह बढी उर कौ ॥३३१
तिह जाय कह्यौ तुम को तरुनी, करजोर कहूँ सुख की करनी।
वरदायक माहिष कौं वरीयै, कुल जात्त पवित्र सबै करीयै ॥३३२
महिषासुर दाँनव देवन मैं, सब ताहि रहै नित सेवन मैं।
पटराँनीय होउ तिही प्रमुदा, सब सेवहु सपत की समुदा ॥३३३
चितवौ तुम ,गैल ही सग चलौ, मन मोद कौ लायकै बेग मिलौ।
अथवा वँह आयकै पाँय परै, करजोर कहौ सोई काज करै ॥३३४
सुनकै इह दूत की बात सही, कर धीर रमा मुसकाय कही।
जग जाँनत देवन की जननी, हठ लागकै दाँनव की हननी ॥३३५
महिषासुर भाग लहै मखतै, दुग्ते रहैं देव जँही दुखतै।
पुन आयकै मोहिं पुकार करी, इत आईहूँ मारन काज अरी ॥३३६
इहाँ आयकै दूत करी अरजी, सुख पूरब रूप कथा सरजी।
हीय माँझ बिचार कहै हमहूँ, तिल मात न क्रूर कही तुमहूँ ॥३३७
कछु बातहू क्रूर-मुखा करते, ज्वल नैन की सैनहु तै जरते।
हम दूत कहै -सोइ जाय कहौ, लख पथ पयान कौ वेग लहौ ॥३३८

---

१ साम।

नहिं तो तन निछ्छन वाँनन तैं, पर्जं है विछोह सु प्राँनन तैं।
जमलोक कूं भेजहुँगी जब ही, तुम नगर आय मिल्यो तब ही ॥३३८
वहु रीत प्रबोध कीयो वहुरं, महिपासुर दूत ह नाहिं मुरं।
कर काव्य सु तत्त्व ही वत्त कही, मदमत्त सु जोवन रूप मही ॥३४०
जिनके रथ है दल जोर जमा, समर्थ रन पै दल जोत समा।
धनु-वाँन सु आयुध धारन को, मन मोद वढें अरि मारन को ॥३४१
सुर भाज चले जुर आसुर सौं, वन डोलें फिरें तिन वासुर सौं।
घुमँडे छित दाँनव फौज घनी, जिनतें लरही किम येक जनी ॥३४२
कहाँ कोमल अँगोय नार कही, नर दाँनव की किम मार सही।
मद-मस्त करी जिम माल मलें, रमनी तुहि जाय न रूप रलें ॥३४३
तिनतें हठ त्यागहु नेक तीया, पति दाँनव माँनहु प्रांन-प्रीया।
श्रवना नृप-रूप की वात सुनी, तुहि भेटन चाहत है तरुनी ॥३४४
वलाजाँउँ मैं भूप वुलावत है, उर व्याकुल ह्वै अकुलावत है।
मनमथ्थ के वाँनन मार लीयौ, कहै फेर कहा प्रन सत्य कीयौ ॥३४५
कीय देवीय उत्तर यो कहिकें, गुन चातुर आनुरता गहिकें।
पसु-अगज है असुरेसपनी, मिलगौ पसु मंत्रीय मदमनी ॥३४६
कछु दीखत की तरुनी कहिहौं, पुरसारथ भारथ में पहिहौं।
जीय आस तजो रन आय जुरो, कुसलात मुकाम पताल करो ॥३४७
महिपासुर आय हजूर मही, करजोर हकीकत दूत कही।
सव सुंदर रूप सुहावन में, लखीयें सवही तन लावन में ॥३४८
मद गर्वत जोवन रूप महा, कहियै कहा जाहि जवाव कहा।
सव रीत कही नहिं येक सुनी, गहि वोलत जाव हजार गुनी ॥३४९
कटु वात कही सोई जात कही, सव राज प्रतै सुन लेहु सही।
सरभेई कौ पूत नही समुझै, सरमेइय देख विवाह सझै ॥३५०
दस-आठ भुजा मम दारुन तै, महिपेस वचै जव मारन तै।
कुल दाँनव कौं सव संग करै, सठ जाय मुकाम पताल सरै ॥३५१
वल-दाँन करूँ तुहि देवन कौं, भल जाय कहौ मम भेवन कौं।
रस भग कोयौ नहिं मैं रमनी, सुख साँझ की वात कही रु सुनी ॥३५२
कर मत्र कहौ सोइ काज करै, धर धीरज सासन सीस धरै।
महिपासर दूत सनी मुख सौं, रचना सु वृतत जैही रुख सौ ॥३५३

वयवृद्ध तथा धीय वृद्धन कौ, समुझाय कही नय सिद्धन कौ।
अपनी मति कैं अनुसार अहौ, करीयै सोई नीत विचार कहौ ॥३५४
सुन बात कही महिषासुर की, घबरावहु भूप कहा धुरकी।
पर श्रौन सनै इह जाँन परी, सुर सावरी जालहुँ तै सुधरी ॥३५५

दोहा

विरूपाक्ष इह बात सुन, बोल्यौ वचन विचार।
कहाँ तै आई कौन है, निडर अकेली नार ॥३५६
हठ साहँस त्रीय-जात मँह, जोवन मद बरजोर।
कोमल मुख तातै कहै, क्रुद्धत वचन कठोर ॥३५७
पर कछु नाँहिन सोच पुन, सुर जीते संग्राम।
उनकी माया सावरी, करहैं कैसे काँम ॥३५८
तीन लोक जीते तुमहिं, जाहि दिखावत जोर।
जो तीय तै डर जाहुगे, ह्वै है हास वहोर ॥३५९
हमहूँ कौ दीजै हुकँम, जहाँ नार तहाँ जाँहि।
सगर कर याही समय, मारहुँगौ छिन माँहि ॥३६०
अथवाँ सैन दीजीयै, जाँनन तिय भय जास।
आनहु राज हजूर पँह, पकर कँठ गुन पास ॥३६१
दुरधर दनु उत्तर दीयौ, विरूपाक्ष सुन वैन।
काँमातुर वँह काँमनी, समुझ करत है सैन ॥३६२
तिछ्छन बाँन कटाक्ष तीय, रत मडहिगी रार।
प्राँन हरन वीरज प्रमुख, बोलत विवध बिचार ॥३६३
काँम-शास्त्रवित दूत कोउ, लावै ताहि लुभाय।
करै नही रस भग कहु, स्याँम दाँम समुझाय ॥३६४
ताम्र करी अरजी तबहि, मम सुनीयै महाराज।
भुज अष्टादस भाँमनी, करहै कोऊक अकाज ॥३६५
जाँनहु ताहि न काँमजुत, नही प्रीतजुत नार।
बिग बचन कहत न बनै, नृप समझहु निरधार ॥३६६
कोमल अग कठोर कर, आयुध लीयै अभग।
जाँनत नहिं दनुजात कौ, जाच रही त्रीय जग ॥३६७

कहीयै गत कछु कालक्रन, उलट भई किधुं ओर।
दई करहै सोइ देख है, जिहतं बनत न जोर ॥३६८

मैं देखो निस अजर मंह, सुपन विचारहु सोय।
क्रस्न वसन इक कांमनी, रहि प्रलाप कर रोय ॥३६९

काक गिद्ध शृगाल केउ, रोवत देखे रात।
समाँधाँन करीयै समुझ, परन जाँन उतपात ॥३७०

नरी किन्नरी वँह नही, नही आसुरी-नार।
देवन की माया दुसह, चितवहु नेक विचार ॥३७१

नहि ताकों भय उचत नृप, होनहार सोई होय।
कठन काल गत करम की, किह विध मेटै कोय ॥३७२

छंद मोनीदाम

सुनी नृप मत्रिन की कथ सार, विचछ्छन वायक ताम्र विचार।
कीयौ तिह सामन यौं महिपेस, धरै कछु मोह धरै कछु ध्वेस ॥३७३
सबै विध चातुर तूं समुझाय, बुलायकै लावहु ताहि बुझाय।
चहै वँह वैर किधौ वँह सूत, किधौं वँह देवन की करतूत ॥३७४
सबै विध बुद्ध विसारद सूर, कीये केऊ कारज सोम करूर।
नमै वँह नीक तौ नीक निहार, सबै समुझावहु सार-असार ॥३७५
इतै पर नाँहि चितै मम ओर, जुरै जुध ताहि गहौ वरजोर।
वढ्यौ मग ताम्र सलाह विचार, लीयै बहु है दल पै दल लार ॥३७६
भ्रमी पुहमी भये धुंवर भाँन, इतै फिर गाज उठ्यौ असमाँन।
सुने वहु स्वाँनन स्यारन सद्द, विचारीय साकुन नाँहि विहद्द ॥३७७
गयौ तहाँ दाँनव माँन-गहीर, विसारद बुद्ध महाँ वरवीर।
विलोकीय जाय अनोखीय वाँम, दिपै दस-आठ भुजा गुन दाँम ॥३७८
चढी सिंघ पीठ, वढो जुध चाह, अदेवहु तांम्र दसा अवगाह।
कही रस रीत की वात सकाज, लीयै अत चातुरता तज लाज ॥३७९
वनी जुग जोर उंहा रन वक, धरचौ किह कारन हाथ धनंक।
कटाक्ष के वाँनन नैन कुरग, सँभारहु नार चलौ मम सग ॥३८०
कहाँ कर कज हुतै कमनीय, रचौ सुख सेजहु के रमनीय।
तजौ कर सस्त्र कठोर त्रोयाह, वरौ महिपासुर आसुर व्याह ॥३८१

विलोकत भूप रह्यो तुहि बाट, अहो निस दाहत अग उचाट।
सबै सुख भोग हु सेज सँवार, करी कर जोर घरी कर तार ॥३८२
पती महिसेस पराक्रम पुंज, रची तुव रूप प्रभा मन रज।
अबै तज तर्क वितर्क उदत, करो असुदे हु को निज कथ ॥३८३
भलै ममुभाय कहूँ कहा भेव, डरे डर ताहि फिरे वन देव।
कपा कर छातीय सौं भरकठ, गहो सुख सेज के बाघहु गठ ॥३८४
सुनी यहँ देवीय बान सकोय, जहाँ फिर बोलीय ताम्र सौं जोय।
रच्यौ दनु उत्तर यों सुरराय, सुनो तुम ताम्र कहो समुझाय ॥३८५
बनें महिपा महिषी मिल व्याह, अरे दनु दुष्ट होयें अवगाह।
कहै मम व्याह न सत्वर कॉम, वहै पमजात अहैं अभिरॉम ॥३८६
नही हम देवन की कहूँनार, ब्रहमा रुद्र हु आद विचार।
पती मम ब्रह्म सनातन प्रीत, महाँ सुखदायक है जग मीत ॥३८७
नही जिह रग न रूप न रेख, अनत अगाध अखड अलेख।
अहूँ जग साखीय की अरधग, सदाँ सुख रूप रहूँ तिह सग ॥३८८
महाँ पत त्याग बरूँ महिषेस, इहै अभिलाप तजौ अवसेस।
चले तुम जाहु पतान चछोह, महाँ मति मद तजे किन मोह ॥३८९
परें जन दीपक होय पतग, सबै दनु छार करूँ इक सग।
सुनी तुम देवन की सुरराय, इहै सुन भीर[1] पहूँचीय आय ॥३९०
कीयौं कहि सद्द महा कर कोप, लता मरजाद समदर लोप।
डिगे गिर कूट सुखाय दरार, सबै वहरे हुय जात सुरार ॥३९१
गिरे तीय दाँनव के केऊ गर्भ, सुखी सुन श्रौंन भये सुर सर्ब।
कीयौ तब सिघहु नाद करूर, गये मिट आस उमग गरूर ॥३९२
भज्यौ लख ताम्र महाँ भयभीत, बनी महिपेस सुनी विपरीत।
तजी उर व्याह की चाह तुरत, उठी उर सोक की ज्वाल अनत ॥३९३
दीयौ दनु सासन यौं दरमाय, अमात्त[2] हु नीत विचारहु आय।
कह्यौ नृप सासन को सुन कॉन, विचारन लग्गीय नीत विधाँन ॥३९४
हकीकत पूछत तांम्र कृहत, सबै मिल सोचत कथ्थ करत।
मिले सब दाँनव मंडीय मत, उपाव की दाव विचारहु अत ॥३९५

---

१ सेना का समूह। २ मत्री।

दोहा

विडालाक्ष बोल्यौ वचन, मम सुनीये महाराज।
सरजन तेज तैं सुदरी, बन आई रच व्याज ॥३९६
करी अग्र इह काँमनी, मिलकै देव समाँन।
सुर आसुर सगर समय, होय जीत किधु हाँन ॥३९७
भजवे तैं मरवौ भलौ, रन जुरहै कर रोख।
जीत भयैं मिल है बिजय, मुयें मिलहिगी मोख ॥३९८
दुरमुख तव बोल्यौ दनुज, बिडालाक्ष सुन वात।
कही नीत इह उचतक्रत, तजहु सोक भय तात ॥३९९
बास्कल कीनी बीनती, जास दनुज कर जोर।
करत बात डरपोकनी, मति मैं आवत मोर ॥४००
वरुन इद्र सिव विस्नु कौ, जुद्ध कीये जय जाहि।
कोपवती इक काँमनी, तुमहिं कहा भय ताहि ॥४०१
पुन रन कार मैं पकरहूँ, बीरारस कहि वाँन।
निसचय समुजहु येह नृप, है शृंगार रस हाँन ॥४०२
दुरधर दनु बोल्यौ दुसह, वास्कल कही बिचार।
सुर डरपावत है असुर, साँग सुधार सुधार ॥४०३
अष्टादस हु उखारहूँ, भुजा जुद्ध कर भीत।
नहिं काजै कछु सोच नृप, निमत यहै नय नीत ॥४०४

छंद मोतीदाँम

वढे मिल वास्कल दुरमुख वीर, धिखे उर क्रोध महा रन धीर।
सवै विध वुद्ध विसारद सोय, हते जुग दीप पतग ही होय ॥४०५
गरज्जीय देवीय देव गहीर, वदे कटु वाक्य दहू मिल बीर।
जये जिह देवन कौं वरजोर, महाँवल राजन कौ सिरमौर ॥४०६
धरैं तन मानुध भूषन धार, निसा तोहि सेज रमा वहि नार।
अहो पिक वैनीय नैनीय येन[1], सनौ हम वात करौं सख सैन ॥४०७

---

१ मृग।

वरौ महिषासुर कौ रच व्याह, अभिष्ट हु सिद्ध करौ अवगाह।
कही जगदंव जवै कर कोप, रही हम येक इही पन रोप ॥४०८
सुखी करहूँ सव देवन साथ, हनू महिपासुर कौ निज हाथ।
करें अथवाक पताल कौ कूँच, पलोटकै श्रृग समेट कै पूंछ ॥४०६
जवै वचहै जीय दाँनव जात, नतौ दनुं वस ही होय निपात।
कही इह देवीय की सुन काँन, विहूँ कर क्रोध लीये धनु वाँन ॥४१०
गरज्जीय दाँनव सद्द गहीर, तहाँ झरवूठीय तिछ्छन तीर।
पलट्टीय नाँहिन चंडीय पाव, दीये सर दाँनव कै रच दाव ॥४११
सवै सुर कारज माँनीय सिद्ध, बढ्यौ दनु देवीय जाँन विरुद्ध।
गरज्जत दाँनव देवीय गल्ल, उठे मनु सागर सात उझल्ल ॥४१२
अरयौ रन वास्कल समुह आय, कीयै चख लाल मनो अतकाय।
जम्यौ जहाँ दाँनव देवीय जग, उभै दिस मारत घाव अभग ॥४१३
मँडे तहाँ वाँन वरछ्छीय मार, क्रपालका दड तथा करवाल।
कीयौ तहाँ देवीय क्रोध करूर, प्रतचन ताँनकै काँन प्रपूर ॥४१४
प्रहारीय दाँनव कै सर पाँच, खरौ तहाँ दाँनव हू धनु खाँच।
सभौ लख देवीय कै सर-सात, विडारोय दाँनव वोर विख्यात ॥४१५
लीये सव वाँनन वाँनन झेल, खरयौ रस वीर वन्यौ जहाँ खेल।
दीये दस ताक जहाँ जगदव, कीयै कर क्रोध सु सार कलव ॥४१६
हन्यौ अर्धचद सु वाँन हकार, प्रतचा धन्व परी कट पार।
गदा कर लीनीय सड गरूर, महाँबल दैत उपाध कौ मूर ॥४१७
चल्यौ रन देवीय तै कर चाव, अगजित माहिष कौ उमराव।
मँभारीय हाथ गदा सुरराय, वँही लग बीर परयौ अरराय ॥४१८
अचेतन होय महूरथ येक, भिरयौ फिर जुद्ध भयाँनक भेख।
गदा दीय देवीय कै फिर गात, मुरी नही घाव लगै तिल-मात[1] ॥४१६
वलाय कौ पूत कै ज्वालव धूल, तकी दनु देवीय लै तिरसूल।
प्रहारीय छत्तीस वीच प्रचार, परयौ धर सीस भयौ भव पार ॥४२०
भजे सव पूरब-देव सभीत, भये तव देव सुखी तज भीत।
सवै जयकारक बोलत सद्द, बढ्यौ उर आनन्द आय बिहद्द ॥४२१

---

१ तिल मात्र, किंचित मात्र।

परचौ लख वास्कल कौ गत प्रॉंन, वढ्यौ दुरमुख लीयँ धनुवाँन ।
कसै तन ककट वाहुल क्रूर, निरख्खीय वीर वरम्खत नूर ॥४२२
चढचौ रथ आय भिरचौ कर चाह, अडवर वज्जीय जुद्ध उछाह ।
सभी ध्वनि सख जहाँ सुरराय, टँकारीय चाप प्रतच्च चढाय ॥४२३
भयौ तहाँ सद्द महाँ भयकार, मँडी तहाँ तिछ्छन वाँनन मार ।
किते सर सौ सर देवीय काट, दीये सर दाँनव कै तन दाट ॥४२४
दहूँ दिस मारत ताकत दाव, चलै खग मूसल तोमर चाव ।
प्रहारत सक्त गदा परचड, करै सर मार धरै कऊदड ॥४२५
कीयौ सुरसाय तहाँ अत क्रोध, जुरे तहाँ दाँनव समुह जोध ।
कटै भट अग हटै नहि कोय, रटै मुख मार दटै केऊ रोय ॥४२६
पलट्टत नाहिन आहव पाय, उलट्टत लोटत धाय अघाय ।
अहूटत जूटत हैं भट आँन, परै तन तूटत छूटत प्राँन ॥४२७
कीयौ तहाँ दाँनव जग कराल, खलक्कत नीर ज्यूँही रत खाल ।
करै तहाँ कातर क्रदत कूक, अदोलत दाँनव घोस उलूक ॥४२८
परे केऊ पिजर ह्वै गति प्राँन, मृघादन कोक भखै मुरदाँन ।
रतदुक[1] जवुक लेत अहार, करै मिल सद्द महाँ भयकार ॥४२९
गहक्कत गिद्धन के गन गैन, चहक्कत चिल्ल लहै भख चैन ।
वभक्कत घाव कटे भट भीर, वकै रव मार महाँ वरवीर ॥४३०
झुकै केऊ आय परै रन भूँम, भिरै केऊ आय परै कट भूँम ।
भख्यौ दुरमुख मरोरत भौंह, वक्यौ रन वीच उठाय कै वाँह ॥४३१
अहो चल चडीय जाहु अविष्ट[2], न तौ तुँहि मार करूँ तन नष्ट ।
वचै महिषासुर सौ कर व्याह, सही अब और न येक सलाह ॥४३२
सुनी कथ आसुर की सुरराय, परयौ मृतु आनन दुष्ट पलाय ।
खरौ रहि मारहुँगी रन खेत, सबै दनुजादिक भीर सहेत ॥४३३
सुनी दुरमुख्ख जबै इह श्रोन, विडारन लागीय[3] वाँन विधाँन ।
सवै सर काट तहाँ सुरराय, हने दनु वाँनन धाय अघाय ॥४३४
वढै तहाँ सूरन कै मुख वाँन, परै जहाँ कातर देख पलाँन ।
महाँ सुरराय तहाँ रन मड, कथ्थौ दुरमुख्ख भुजा कऊदड ॥४३५

---

१ कुत्ता । २ दूर । ३ मू० प्र० लगीय ।

तहा सर तत्व दीये रथ तोर, जुरयौ रन पै दल ह्वै वरजोर।
प्रहारीय सिंघ गदा सिर पेख, धिख्यौ तहाँ चडीय कै हीय धेख ॥४३६

तहाँ कढ खग्ग प्रहारीय तथ्य, महाँ खल काटलीयौ तहाँ मथ्थ।
कटै तन तूट परयौ जव कध, इला दुरमुख्ख महा मद अध ॥४३७

वरख्खत पुस्प करै जय वाँन, अभै सुख देव दुखी असुरॉन।
जहाँ भइ चडीय की रन जीत, भये दनुजात महा भयभीत ॥४३८

सवै रिख किन्नर चारन सिद्ध, वितालहु गन्नव आद प्रवुद्ध।
भई तहाँ अवर मैं सुर भीर, गनै गुन डारत पुस्प गहीर ॥४३९

दोहा

वास्कल नँही कीनी विजय, दुरमुख की गति देख।
परयौ तहाँ दुख कूप मैं, मुर्छत ह्वै महिसेख ॥४४०
उभय वीर साहँस अतुल, सुरजेता सग्राम।
सो मारे इक सुंदरी, वीर महाँ बिसराँम ॥४४१
काल करम जात न कही, जाँनी निसचय जोय।
पुन्न पाप निरवल प्रवल, होनी होय सु होय ॥४४२
कही कहा करतव्य है, सव मिल करहु सलाह।
कारज करन विचार कै, किह् विध कीजै काह् ॥४४३
सेनापति महिसेस सो, चिक्षुराक्ष कहि चाह।
दलवल लै जावहु दुसह, तिय गहि लावहु ताहि ॥४४४

छंद मोतीदाँम

उमगीय दाँनव रथ्थ अरोह, कीयै सग ताम्र तहाँ धिक कोह।
लीयै केऊ सग वरुथनी लार, चहूक्कृत सग चले पलचार ॥४४५

चढी रज डम्मर अवर छाय, अडवर वाजत है अकुलाय।
सभी ध्वन सख तवै सुरराय, चडीय चाप प्रतच चढाय ॥४४५

मिले कहि चडीय सौ मुहमेज, सुनौ तीय खेल करौ सुख सेज।
खरौ रन वीरन कौ इह खेल, मिलै हमरौ तुमरौ कहाँ मेल ॥४४७

कहाँ तन तोहि, महाँ सुकमार, सहै किम आयुध तिछ्छन मार।
ञीया तन कोमल ज्यो मखतूल, फवै नही मालती मारत फूल ॥४४८

वनी तीय रूप रच्यौ तन व्याज, लहै हम हाथ उठावत लाज।
जहाँ को तहाँ ई चली तुम जाह, न तौ महिषासुर मानहु नाह ॥४४९

सोई सब देवन कौं नट-साल, मिलौ तिह, डार गरै वरमाल।
कह्यौ तव देवीय दानव क्रूर, सँभार कै वोलहु राख सहूर ॥४५०

महाखल चिक्षुर तू मतिमद, सुझावहु जायकै धीर-सकध।
वकारकै आवहिगौ रन बीच, करूँ तिह मारकै स्रोनत कीच ॥४५१

लहै भग जाय रहै अधलोक, वचै कुल दाँनव होय विसोक।
महाँ मतिमद जो चाहत मीच, विचारकै होहु खरौ रन बीच ॥४५२

सुनी दनु कथ्य कही सुरराय, करी झर वाँनन की वलकाय।
उलटीय मेघ मनौं मँडराय, सँभार कै चाप तहाँ सुरराय ॥४५३

विडारीय वद्धर ज्यों चल वाय, पराक्रम दाँनव मथीय पाय।
गदा गहि दाँनव कै दीय गात, परचौ रथ तूट भयौ धर पात ॥४५४

भई गत चक्षुर की इह भाय, इही लख ताम्र उठ्यौ अकुलाय।
चल्यौ कर चाप लीयैं रन चाह, इहै कहि देवीय हू अवगाह ॥४५५

मरौ तुम नाहक क्यौ मति मद, सझै रन लावहु धीर-सकध।
अजो वँह चाहत जीवन आस, तकैं सिर मीच गरज्जीय तास ॥४५६

मरावत दीनन कौ वँह मेल, कहौ मम आय करै रन केल।
वुरी लग दाँनव कौं सुन वात, हरक्कत ताम्र लीयौ धनु हाथ ॥४५७

तजे सर देवीय पै गुन ताँन, अनेकन छाँन लयौ असमान।
जहाँ सुरराय अरी कर जुद्ध, कीयै चख आरुन दारुन क्रुद्ध ॥४५८

छयौ नभ तिछ्छन वाँन चलाय, उमडीय मेघ घटा जनु आय।
इतै मुरछागत चिक्षुर ऊठ, प्रचारकै ताम्र सँभारीय पूठ ॥४५९

भिरे रन देवीय सौं दहुँ भट्ट, चलावत वाँनन चाप चउट्ठ।
रँगी रत-देह मनौ तमरास, मनौं त्रयपत्र रजै मधुमास ॥४६०

उभै भट मडीय जुद्ध उछाह, वढै रस वीर करै हथवाह।
भये सर देख अचभत भाव, पलट्टत दाँनव नाहिन पाव ॥४६१

तक्यौ लिय ताँम्रहु मूसल हथ्थ, मृघाधिप जाय प्रहरोय मथ्थ।
गरज्जीय दाँनव हू भर गल्ल, इहाँ सुन चडीय क्रोध उभल्ल ॥४६२
प्रहारीय खग्ग सु तिछ् छन पान, परचौ सिर टूट भयौ गत प्राँन।
परचौ लख ताम्र वली परचड, वढ्यौ रन चिक्षुर त्यो बलवड ॥४६३
लीयें खग आय भिरचौ चख-लाल, बन्यौ रन देवीय सौ बिकराल।
जुरी कर चाप लीयें जगतब, कितेकन आसुर मार कलब ॥४६४
दीयौ सर येक परचौ खग दूर, कस्यौ सर दूसर पाँन करूर।
दीये मुर बाँन तिही धनु दाट, कीयौ सिर दूर कलेवर काट ॥४६५
परे धर वीर उभै गत प्राँन, गहकीय गध्रव किन्नर गान।
उमग रिखी-गन सिद्ध अनग, वरख्खीय फूल जहाँ सुर वृद ॥४६६
जिताहव चडीय कौं कर जोर, सबै मिल देव करचौ जय सोर।
परे खल चिक्षुर ताम्र प्रचड, महा भट देवीय सौ रन मड ॥४६७

दोहा

सेनापत चिक्षुर सहित, ताम्र कीयौ तन त्याग।
रभ पूत बिसमत रह्यौ, इह धौं कवन अभाग ॥४६८
महिष ईस क्रुद्धत महा, विडालाक्ष कहि वात।
असलोमा लै जाहु अब, प्रमदा करहु निपात ॥४६९

छद उघोर

वढ वीर धीर विडाल, असलोम बोल उताल।
लीय और दाँनव लार, सभ्भ सेन सस्त्र सँभार ॥४७०
तन कसीय ककट टोप, अत वोर रस तन ओप।
उठ चले विव मद अध, किल मृत्यु वैठी कध ॥४७१
तहाँ जाय देखी ताँम, भुज अष्ट-दस की भाम।
कीय विवध भूगन काय, सव सस्त्र करन सुभाय ॥४७२
असलोम वढ गये अग्ग, तिह विना कीनी तग्ग।
कहि सत्य देवी काँहि, दनु वस देत है दाह ॥४७३
मन रत्न आद मिलाय, जो चहै सो लेजाय।
नव कोमलाँगी नार, सव सजै तन स्रंगार ॥४७४

सुठ कहत हूँ समुझाय, तज देहु सखन ताहि।
रचीयँ न फूलन रार, कर कज तै सुकमार ॥४७५
वर सेवीयँ सुख वाँम, कहा तोहि रन तै कॉम।
विनवौ सुधर्म विचार, रमनीय तजीयँ रार ॥४७६
क्यू करत दनुज अकाज, इह कहहु मोकँहि आज।
सुन कही यो सुरराय, मोहि भक्त जाँनहु माय ॥४७७
रच रहत हूँ रमतीत, नय अनय देखत नीत।
मम लखहु वेद अजाद, अनुरूप माया आद ॥४७८
अवतार मोहि अनत, जुग जुगन लौ परजत।
सुर स्वर्ग लीय महिपेस, मख लहत भाग हमेस ॥४७६
तिह मारहूँ कर त्रास, वढ इही वयर विलास।
वँह दुष्ट पठवत और, ठिक रहत वैठी ठौर ॥४८०
इह मरत वँह अपराध, वल मोहि दोख न वाध।
सव कहहु मिल समुझाय, जुरकै पताल ही जाय ॥४८१
लीय सुरन तै चित लाय, तिह वस्त सोपहुँ ताहि।
प्रहलाद है जिस पास, बस जाहु जहाँ कर वास ॥४८२
असलोम पूछीय येम, तहाँ कही देवी तेम।
वरवीर येह विडाल, हम सुने जैसे हाल ॥४८१
तुम हूँ सुने स्रुत तात, वढ कही देवी वात।
कहौ कौन है करतव्य, सोइ काज कीजै सभ्य ॥४८४
असलोम की सुन येम, तिह दीयौ उत्तर तेम।
इह कही जाय न आज, मतिमद है महाराज ॥४८५
सिर मृत्यु गरजी सोय, करीयै विलव न कोय।
अव छोर कै तन आस, हठ लरहु जुद्ध हुलास ॥४८६
कीय धनुप लै टकार, हरवल्ल बीर हकार।
वढ विडालाक्ष विरुद्ध, असलोम रहि अविरुद्ध ॥४८७
तिह वाँन रिख दीय तिष्ट, वर वीर धीर वलिष्ट।
सर सो कटे सर सात, पुन कीये देवी पात ॥४८८
सर दीये मुर सुरराय, मृतु भयौ दनु मुरझाय।
वस काल देख बिड़ाल, असलोम आय उताल ॥४८६

नय बुद्ध जाँनत नाँहि, किह जाय कहीयै काँहि।
महिपेस मूढ अमाँन, लहि विसद कीजै लाँन ॥४९०
इह वीर ध्रम अवदात, पर जुद्ध होय निपात।
कर लीयौ दनु कोदंड, मद-अंध तहाँ रन-मंड ॥४९१
वहु दीये सर वरसाय, जगतव कट्टीय जाय।
मँहमाय दीय सर मर्म, वपु भेद दारत वर्म ॥४९२
जुत रक्त दीसत जेम, त्रयपत्र फुल्लत तेम।
गरु गदा सार गढत, तहाँ लई हाथ तुरत ॥४९३
रद पीस हिय कर रीस, सो दीय अधाधिप सीस।
करकै अवाधिप क्रुद्ध, जुर परचौ नख रद जुद्ध ॥४९४
कीय हृदय दारत कूर, वपु कर्ज तर्ज विलूर।
पर दनुज सीघ्र पलाय, सिर सिंघ चढ सरसाय ॥४९५
रन गदा हन सुरराय, घट करचौ दाँनव घाय।
सुरराय ताम्र सँभार, सिर दनुज कट्टीय सार ॥४९६
महि गिरचौ दनु रन माहि, लीय जीत देवी लाह।
सुर जयत वोलत सद्द, नभ करत दुंदभ नद्द ॥४९७
कर पुस्प-वृष्टि करत, उर मोद लहत अनत।
जगतव की लख जीत, उर भये देव अभीत ॥४९८

दोहा

वची सैन कछु दाँनवी, मिली जाय महिषेस।
दई वधाई दहुँन की, विव रन मरन विसेस ॥४९९
विडालाक्ष जूझ्यौ विवध, जीत सक्यौ नहिं जुद्ध।
सँमर सँघारचौ सुदरी, कहा कहँ कर क्रुद्ध ॥५००
असलोमा साहस अतुल, खग्ग प्रहारचौ खेत।
भयौ भक्ष पलभक्ष कौ, सव ही अग सहेत ॥५०१
महिप विचारत मनहि मन, सुन दनुजन की सोय।
उर व्याकुल रोवत उठत, होनी होय सु होय ॥५०२
समय वनै जैसौ समुझ, करीयै तैसौ काँम।
मरहूँ अथवा मारहूँ, वरहूँ ताही वाँम ॥५०३

समुझ इहै कहि सूत सौं, तुम करहू रथ त्यार।
भुज अष्टादस भाँमनी, पेखहु ताहि प्रचार ॥५०४

छंद मौंतीदाम

सज्यौ रथ सासन लै नृप सूत, हुई सिर सोभ पताकन हूँत।
भरे बहु अस्त्रन-सस्त्रन भार, सबै रन साझ सुँभार-सुँभार ॥५०५
विछोनाय आसन राचत वेस, अरोहत होवहु श्री असुरेस।
सुनी दनुविद्र कही सोइ सूत, करी तव येक नई करतूत ॥५०६
रिझै लख नार मनोहर रूप, भयौ नर सुंदरहू तन भूप।
अलक्रत आयुध सझ ता[1] अग, अनूपम दूसर जॉन अनग ॥५०७
अनोअन रग पटबर आँन, बनी सिर झीनीय पाग बिधाँन।
तिही रथ आय चढ्यौ हुय त्यार, चले चिरमेहीय[2] जूप हजार ॥५०८
जुरो चिब सेत पताकन जूट, किधौ हिमवॉन कढ्यौ बलकूट।
लीयै चतुरगीय फौजन लूँम, घटा वन जॉन रही नभ घूँम ॥५०९
बढी रज डम्मर जाँन विताँन, भयौ तम सूझत नाँहिन भाँन।
पहूँचीय देवीय कै नृप पास, लीयै कर चाप कलब हुलास ॥५१०
बहू भट ककट धारीय बक, धरै अरी जुद्ध प्रहारन धख।
रही कछु बीच जितै सुरराय, करी धुन सख तहाँ अकुलाय ॥५११
कही दनु जाय इहै चित कॉम, हीयै नेर-नार सबै सुख हॉम।
यथा कुल चातुरता वय येक, सुभाव तथा गुन सील विसेख ॥५१२
इते सम होय जबै रस येक, बनै सुख-सपत जान विवेक।
अहू वर बीर जथा वर बाँम, करौ मम देवीय पूरन काँम ॥५१३
चहै सोई रूप करूँ चित चौज, मिलै सुख साझहु रग मनोज।
लीये मन भूपन देवन लूट, वहै तुम धारहु नार अनूठ ॥५१४
वनौ पट रानीय भोग बिलास, रमावहु सेझ सदा सुखरास।
कहै हम सोय करौ तुम काज, ततौ सुर-वैर करौ सब त्याज ॥५१५
भयौ सरनागत तेरौई भाम, कीयौ मोहि पीड़त बानन काँम।
पराक्रम जानत मोर प्रभाव, डरै सुर येक न पुज्जत डाव[3] ॥५१६

---

१ मू प्र त'। २ गधा। ३ दाव।

ब्रह्मा आद जये हर विस्नु, जये जम श्रीद परजन जिस्नु।
अहो नवअगीय कोमल नार, अभै वर देहु कटाक्ष निहार ।।५१७
सुनी दनु कथ्थ कही सुरराय, नही तुम नीत पिछाँनत न्याय।
नही तुम मोर पिछाँनत नाह, रचै सोइ स्रष्ट चलावत राह ।।५१८
वंही पुरसोतम ऊत्तँम अग, सदाँ सुख पाय रहूँ तिह सग।
भजूँ नही औरक हूँ भरतार, निरजन सग रहूँ निरधार ।।५१९
अचेतन रूप सदा मुहि अग, सचेतन होय अहूँ तिह सग।
सदाँ मुहि देव करै नित सेव, भली विध जानत पूजन भेव ।।५२०
रमाँ मोहि नाँम तथा सुरराय, सदाँ सुर आस्रव-ताहि मिहाय।
दीयौ दुख देवन कौ कर द्रोह, अबै तुहि कारन सिध अरोह ।।५२१
वनी मम आगम की इह वात, हनूँ दनु सगर मैं निभ हाथ।
हीयै तुम जीवन की कछु हाँम, वसौ अधलोक ही लै विसराँम ।।५२२
वदै किह कारन निष्ठुर वाद, परी तोहि ऊपर आय प्रमाद।
सुने पर देवन मैं वच आँन, अवै नही येक उपावहु आँन ।।५२३
कहा समुझावत मो कहि कथ्थ, सबै विध देव सहाय समथ्थ।
अरूपा जाँन अजन्मा ऊह, वनूँ कोइ कारन कायक व्यूँह ।।५२४
कही तोहि आगम की हम कथ्थ, गहौ सोइ नीक पिछाँनहु गथ्थ[1]।
सुनी नृप देवीय की इह स्रॉन, वढ्यौ रन काज लीयै धनु-बाँन ।।५२५
चले तहाँ येखन[2] वाँन चछोह, करी भर जोर हीयै धिख कोह।
सवै विच कट्टीय वानन सार, वढी रन देवीय क्रुद्ध विथार ।।५२६
दुरतर मारत राचत दाव, भयौ जव दारुन जुद्ध प्रभाव।
लखे महिषासुर आसुर लार, वढे सुर देवीय प्रष्ठ विचार ।।५२७
सवै सुर-आसुर येक समाँन, भयौ रन चत्वर रूप भयान।
तहा दनु दुर्धरहू धनु तिष्ठ, करी सर मार सुवाच कलिष्ठ ।।५२८
जगी धिक चडीय कै उर ज्वाल, लखी तिह ओर कीयै चख-चाल।
प्रहारीय तिछ्छन वाँन प्रचड, वकारकै मार लयौ वरवड ।।५२९
अधोगत दुर्धर की अवरेख, त्रनेत्रहु आय जुट्यौ कर तेख।
दीये रिख[3] वान सु देवीय दछ्छ, प्रहारीय देवीय गारध पछ्छ ।।५३०

---

१ गाथा, कथन। २ लोह के। ३ सात।

कटे मर सौ सर ह्वै प्रनकूल, तहा तन दानव मार अनूल।
महाँबल होय त्रनेताय मीच, विहव्वल होय परयौ रन बीच ॥५३१
तहा रन तक्कीय अधक तिष्ट, गदा कर लिन्नीय सार गरिष्ट।
पचानन सीस दई गहि पान, अगजित अधक बाहु अजान ॥५३२
पचानन क्रुद्ध भयौ गहि पिंड, पुनर्भव[1] दारत कीन प्रचड।
गहै तन ताहि करयौ पल[2] ग्राम, इहै लख भूप तजी जय-आस ॥५३३
जुरयौ नृप देवीय सौ जहाँ जग, उभै सर मारत चाप अभग।
विहू सर काटत है अधवीच, करै वढ देवीय दानव कीच ॥५३४
तहाँ असुरेस तक्यौ जगतव, पसारीय नैनन आग प्रलब।
भ्रमाय गदा कर सौ कर भीर, हनी तहाँ देवीय ह्वै हमगीर ॥५३५
लगी तन-चोट परयौ अकुलाय, मुरच्छ्छत माहि ह्वै धर माहि।
मिटी तन-पीर छुट्यौ जव मोह, उठ्यौ फिर किंचत पाय उपोह[3] ॥५३६
गदा कर लिन्नीय मड गरूर, प्रहारीय सिंघ सिखा वलपूर।
भई भुज कटक केहर भेट, चटापट मारीय चड चपेट ॥५३७
तज्यौ नर-रूप भज्यौ तन त्रास, होये फिर बाढीय जुद्ध हुलास।
महाँ छलि मायक त्यो महिपेस, भयौ फिर सिंघ भयानक भेस ॥५३८
भिरयौ पलभच्छ्छ हु तै पलभच्छ्छ, तकी तहाँ देवीय दै सर निच्छ्छ।
तज्यौ निह रूव तहाँ तनकाल, करी फिर मायक जाल कराल ॥५३९
महाँ गिर दिघ्घ जिही मदमस्त, हुयौ महिपासुर दारुन हस्त।
भयकर अजन[4] पव्वय भाँत, डरावन दीसत दीरघ दाँत ॥५४०
भ्रमावत सुड लहै गिर-भार, प्रहारत देवीय सीस प्रचार।
सँभारकै चाप तहाँ सुरराय, चलावत वाँन लयौ नभ छाय ॥५४१
प्रहारत खग्ग जिते वलपूर, चलावत वाँन करै चकचूर।
वढै दनु रोष करै हथ-वाह, अनदन देवीय जुद्ध उछाह ॥५४२
तहाँ फिर सिंघ हकारीय तथ्य, मलप्पत जाय चढ्यौ गज-मथ्थ।
अपूरब दाव वन्यौ तहाँ आय, उतै दनु हस्त इतै वनराय ॥५४३
मँडी तहाँ जभक मल्लक[5] मार, चपेटन फेट दई पलचार।
घने भुज-कटक[6] हू कर घाय, इहाँ दनुविंद्र उठ्यौ अकुलाय ॥५४४

१ नख। २ मास। ३ स्थिरता। ४ काला। ५ दांत। ६ नख।

तज्यौ गज दाँनव रूप तुरंत, भयौ तहाँ सभ्भ अनूपम भंत।
मृघाधिप मार दई रन मंड, पराक्रम मायक काय प्रचंड ।।५४५
सँभारीय खग्ग तही सुरराय, घने तन मारीय तिछ्छन धाय।
रच्यौ तहाँ दारुन जंग दुरूह, जुटे केऊ आँन तहाँ भट-जूह ।।५४६
लख्यौ फिर दारुन रूप लुलाय, डरावत स्रंगन पूँछ डुलाय।
घुमावत पव्वय स्त्रिंगन धल्ल, उडाउत दारुन क्रोध उभल्ल[1] ।।५४७
वक्यौ तव देवीय सौं दुरवाद, पहूँचीय दीरघ नींद प्रमाद।
अहो मदमत्तीय जोवन अंग, भजै जन जाहु करूँ मद भंग ।।५४८
कहा मोहि जाँनत नाँहिन क्रूर, गहै चिव रूप गुमान गरूर।
खरी रहि मारहुँगौ रन-खेत, सँभारकै आयुध होहु सचेत ।।५४९
अहो वलवंतीय देखहूँ आज, सँघारहुँ देवन फेर समाँज।
करी तोहि अग्र वढावन कोह, मतौ कर मारन चाहत मोह ।।५५०
कही तव देवीय क्यौं अकुलाय, अरे मतिमंद कहा भय आहि।
दीये दुख देवन कौ कर द्रोह, महाँमुनिराज कीये भय मोह ।।५५१
करूँ मधुपाँन इंही मम काज, सवै दुख मेटहुँ देव समाज।
अवै कछु स्वाँस रहे अवसेस, खरौ रहि संगर मैं महिषेस ।।५५२
इती कहि कंचनपात्र अनूप, सँवारीय आकृत दिव्य स्वरूप।
कीयौ मधुपाँन जितै तिह काल, गरज्जीय दुष्ट वजावत गाल ।।५५३
करयौ मधुपाँन उठी वलकाय, वभक्कीय माँनहु आग वलाय।
सँभारत राँन उठ्यौ तव सिंघ, किधौं चटका लख भृंग कुलंग[2] ।।५५४
गहै पल चाह गहक्कीय ग्रिद्ध, सवै जय वोलत चारन सिद्ध।
वृंदारक फूल वरख्खत वृंद्र, महाँ मुद माँनीय देव मुनिंद्र ।।५५५
गुनै नभ किन्नर गध्रव गाँन, समौ लख सिंधव राग सुजाँन।
भिस्यौ रन चंडीय सौं दनुभूप, रचावत केक भयंकर रूप ।।५५६
करी वहु ताडत चंडीय काय, वढ्यौ असुराध-पती वलकाय।
कीयौ तव दारुन चंडीय क्रुद्ध, जुरी तहाँ रूप अनुपम जुद्ध ।।५५७
तहाँ लीय चंडीय हाथ त्रसूल, कीयौ दनु ताडत ह्वै प्रतिकूल।
लगी होय चोट परयौ अकुलाय, महाँवल माहिषहू धर माँहि ।।५५८

---

१ मू० प्र० उफ्फल्ल। २ वाज।

जगी मुरछा घटिका जुग जात, लगावत चंडीय के तन-लात।
घनाघन जेम महारव घोर, करै छल-छिद्रन दाव करोर ॥५५६
डरे जहाँ देवन के गन देख, तहाँ उर देवीय कै वढ तेख।
लीयौ कर चक्र कही ललकार, हनूं तोहि आहव बीच हकार ॥५६०
अरे मतिमद खरौ रहि आज, करूँ सिव देवन के सब काज।
सँभारीय मार नुदर्सन सून, बघ्यौ रन आसुरहू सिर धून ॥५६१
तहाँ दनुविंद्र परयौ सिर तूट, किधौ गिर अजन तै कट-कूट।
फिरै रन चत्वर मैं चहुँफेर, घुमैं घट दाँनव घूमर घेर ॥५६२
उडै रत चिंच उतंग उझेल, मनौं नल गैरक जीवन मेल।
भजे अन दाँनव ह्वै भयभीत, पंचानन-पीठ लग्यौ भख प्रीत ॥५६३
खुधातुर आतुर आमख खाय, घने घट दाँनव घाय अघाय।
मुरे दनु नाँहि लहै डर मीच, बसे केऊ जाय पताल के बीच ॥५६४
सबै मनुजाद सुखी भये सत, उजागर माहिप कौं लख अंत।
जुहारीय देव तहाँ करजोर, ठये मन मोद भये इक ठौर ॥५६५

दोहा

कर सतोत्र लागे कहन, इंद्र आद सुर और।
सरराया करकै समर, मेट्यौ सकट मोर ॥५६६

छंद भुजंगी प्रयात

मती सुमृती कीरती जोग माया, उमा पुष्टी रभा सुतुष्टा अजाया।
जया विजया तूँ दया-रूप जोती, अहो मात स्वधा घृती तू उद्योती ॥५६७
प्रमेष्टी रमानाथ त्यौंही कपाली, ऋजै पालना सघरै तेजसाली।
तहाँ त्रैगुनी सक्ति अबा तिहारी, मदाँ येक तू कारना सृष्टि सारी ॥५६८
छिमा काली मेधाविनाँ-मात चडी, इही सक्त कौं कोन राचै अखंडी।
जिते कूर्म बाराह लौं सेष जामैं, धरै धारना सक्ति तूही धरामैं ॥५६९
दीयैं विप्र आहूत जो भुज-दाहा, समर्पै सबै देव कौं रूप स्वाहा।
तुही तोखनी पोखनी सक्त त्राता, महमाय आदेस्वरी आद-माता ॥५७०
तूँ ही जोगनी भोग-दाता तुलज्या, लखै सुद्ध बुद्धि तूँ ही रूप लज्या।
धरा स्वर्ग पाताल कौं वास धारै, सुरी-आसुरी सृष्टि तूँही सँवारै ॥५७१

करै आतताई कहुँ कर्म कैसौ, तुहो मारकै वास दै स्वर्ग तैसौ।
जितै सक्ति तेरी नही भक्ति जोरै, दीयौ[1] हस्त लै मूढ जो कूँप दौरै ॥५७२
सुकर्ती जिते जीव साधै सुविद्या, अकर्ती हीयै होय राचै अविद्या।
उभै रूप तेरे अहो मात अंबा, तुंही सक्त है भक्त की काँमतवा[2] ॥५७३
त्रहू ताप कौं मेटकै जीव तारै, अजा नित्य तू वेद-वाँनो उचारै।
नियता समाधी तुही जोग निंद्रा, महमाय ही[3] ध्याँन ध्यावै मुनिंद्रा ॥५७४
द्रवै वाक वानी सवै वोध-दैनी, नमस्ते रमा मुक्तिहू की निसैनी।
ओउकार मैं अर्धमात्रा अनूपा, 'र' रकार बाँनी तुंही सिद्ध रूपा ॥५७५
महाँ वंध-मुद्रा महा वेध-माता, स्रुती कीरती सुमृती को मुग्याता।
रचै पिंड ब्रहमंड कौं येक राया, करै आक्रती भिन-भिनात काया ॥५७६
वनावै सदा रूप नाना विधान, पराभूत पचातमा पंच-प्राँन।
तुंही धुम्र[4] आकार ह्वै जोत-धारी, कला चचला तिष्ठ द्रष्टात-कारी ॥५७७
भजै भोग मैं जोग की रीत भासै, परं धाँम उद्धर्स आभा प्रकासै।
निराकार आकार सस्थाँन-निष्टा, दमूँ देव इद्री तुँही तत्व-द्रष्टा ॥५७८
करामात-निर्वान तै जुग्म कोटी, सही पाप औ पुन्यहू की सचोटी।
जनै पक्ष ह्वै लक्ष चौरासी जोनी, अछेहा अतीता अगँम अजोनी ॥५७९
रची च्यार खाँनी तै ही राजराँनी, विचारी उचारी करी च्यार बाँनी।
तुही दंत[5] अद्वैत–रूपा त्रवैनी, इला[6] पिंगला सुखमना मध्य ऐनी ॥५८०
लखै रूप तेरी सवै ही लखावै, दीयै जुक्त सौं मुक्ति ससिद्ध दावै।
दीयै अष्टसिद्धी नवैनिद्ध-दाता, विरूपाक्ष श्रीवछ्छ ध्यावै विधाता ॥५८१
धरै तोय-कातार[7] ध्वाँतारि[8] ध्याँन, परा पुर्स तूँ ही प्रकर्ती प्रधाँन।
नमै वाहुदतेय[9] पौलस्त नित्य, भजै दक्ष नासापती लौं प्रभर्त ॥५८२
परा भक्ति तेरी अहो सक्ति पावै, लहै मुक्ति सा जोत ना देर लावै।
परमातमा ब्रह्म-सत्ता पसारी, तहाँ चेतना-सक्ति अवा तिहारी ॥५८३
अरिष्ट मिस्यौ मात तोकौं अराधी, उखारी त्रहूँ–ताप ही की उपाधी।
करी जुद्ध-क्रीडा दयौ मोद कैसौ, जपै जीह तै नाँहि वाख्याँन जैसौ ॥५८४
महाँक्रुद्ध ह्वै दाँनवी फौज मारी, बली महिष की आयु तै ही विडारी।
सुराँराय साँची करी वृद साँनी, नमस्ते नमस्ते नमस्ते भवाँनी ॥५८५

---

१ दीपक। २ कामधेनु। ३ हृदय। ४ धुम्रां। ५ द्वैत। ६ इडा। ७ वरुण। ८ सूर्य। ९ इंद्र।

दोहा

करी प्रससा जोर कर, सब देवन इक सग।
वर दीनौ प्रफुलत वदन, अभय उछाह उमग ॥५८६
विपत परै कहुँ जोग-वस, याद करहु हम आय।
प्रगट पिछाँनहु मोर-पन, सकट करहु सहाय ॥५८७

छद मोतीदाँम

सुखी भये देव सुन्यौ वर स्राँन, अरज्जीय फेर करी कछु आँन।
कीयौ परपच जितौ जग केर, अहो-निस मात ही राखत येर ॥५८८
इहै जग-मात ही कौ उपकार, वढै सब मात ही तैं विसतार।
सहस्रन औगुन ही कर सून[1], दया तऊ मात विचारत दून ॥५८९
इहै भ्रम पुत्र ही कौ अविदात, महाव्रत तीरथ जाँनत मात।
सदाँ इक मात करै नित सेव, भजै इक मातहि कौं निभ भेव ॥५९०
गहै नहि भाव हीयैं गति गूढ, महाँ अघ गाँमीय ते मति मूढ।
सुनी इह देव कही सोइ स्राँन, धरी उर सो भई अंतरध्याँन ॥५९१
सुधा-दध-वीच जहाँ सुख-सार, अखी मनी-दीप सगात आगार।
वसी जहाँ देवीयहू निभ वास, हीयैं वढ देवन केर हुलास ॥५९२
अजुध्या भूप सत्रुघ्न उदार, विभाकर-वसीय नीत विचार।
धरचौ सिर छत्र थप्यौ निज धाँम, मनोरथ पुज्जीय राज मुकाँम ॥५९३
गये सब देव तँही निज गेह, निरतर राज-प्रजा वढ नेह।
वढ्यौ क्रीय-विक्रीय कौ विवहार[2], वढ्यौ नय वृद्धीय नीत विचार ॥५९४
वरख्खत काल ही मैं घन वार, कुटवीय खेत वढावत क्यार।
विधोविध लोरत लावत क्रीह, दुखी जन नाँहि सुखी निस-दीह ॥५९५
गऊ वढ गोमीय[3] सत गवाल, लहै पय खीरज होत निहाल।
नदी सर पूरन सोहत नीर, भरे फुल फूलन मैं तरु भीर ॥५९६
सुनावत चातक कोकल सोर, महाँ मुद नाचत है वन मोर।
ध्रती मति-माँन[4] तहे द्वज-धर्म, करै जिग होम तथा जप-कर्म ॥५९७

---

१ सुवन, पुत्र। २ व्यवहार। ३ गौ का मालिक, गोस्वामी। ४ बुद्धिमान।

भजै नहि छत्रीय भीरुक भाव, सबै भट चारु उदार सुभाव।
सुसीलाय नार पतीव्रत सेव, भजै पति जेम त्रीया निज भेव ॥५९८
करै पितु मात ही की सुत काँन, बढै सुख सपत रीत विधाँन।
नही दुरभिक्ष न ईतीय दु ख, सबै विध सज्जनता जन सु ख ॥५९९
छली चुगली नँही लपट चोर, जहाँ नँही नास्तक दभहु जोर।
करै मख सात्वक रीत करम, प्रहारत प्राँनन जीव परम ॥६००
महीपत माहिप कौ रन मार, सुखी जगतब करी दिस च्यार।
सुनै इह देवीय केर चरित्त, विलावत दारद वाढत वित्त ॥६०१
लीयै फल च्यारहु कौ फिर लम्भ, सदाँ जगतब कौ पूजहु सम्भ।
रची महिषासुर देवीय रार, वखाँनीय बुद्ध कवी सुविचार ॥६०२

दोहा

कथा सुँभ निसुँभ की, वरनत फेर विसेस।
सोनकाद सौं सूत जू, यह दीनौ उपदेस ॥६०३

छंद पद्धरी

पुस्करह धाँम तीरथ पवित्र, तिह महिमा परगट जत्र तत्र।
कर चित्त वीच अभिलाष काँम, निज भ्रात सुंभ निसुभ नाँम ॥६०४
पातालहु तै विद्या प्रनीत, पावन थल देख्यौ अत पुनीत।
धर जोग ध्याँन वैठे सधीर, विध हेत करत तप उग्र वीर ॥६०५
अनसन व्रत साध्यौ तज अहार, धर आसन वैठे निराधार।
इक अयुत अव्द बीतत अखड, पिंजरा रह्यौ अवसेस पिंड ॥६०६
अवतस देव वाचा उदार, चढ हस आय कहि समाचार।
किह हेत करत तुम तप करूर, परसन[1] भये हम प्रेम पूर ॥६०७
वर चाहत जो कछु उभय वीर, परगट सोइ करहू हृदय पीर।
वर कृपा जुक्त देखे विचार, विध वदन कीने वार वार ॥६०८
कर जोर प्रदक्षन उभय कीन, दनु करी अरज कहि वचन दीन।
देवाधदेव दीनन-दयाल, वछ्छल सरनागत वृंद विसाल ॥६०९

---

१ प्रसन्न।

चतुरानन हमरे हृदय चाह, पावन प्रभु सुनीयै पाहि पाहि।
तासत है प्रानी मात्र त्रास, दीरघ निद्रा[1] नही वधै तास ॥६१०
पर्म मम देहु अमरत्व पाय, सकट मैं करीयैं प्रभु सिहाय।
विध कह्यौ तवै साँचौ वृतत, उतपत तन ताकौ नास अंत ॥६११
करतार नियम निरवॉन कीन, नहिं होय विपर्जय विध नवीन।
या महि कछु अतर राख और, वर लेहु सुखद वाचा वहोर ॥६१२
कर जोर अरज तव दनुज कीन, दीजै वर मोकँह जाँन दीन।
सुर असुर मनुज पसु पछ्छु सोय, कर सकै घात नँही पुरख कोय ॥६१३
नारी भय हमरे ह्रुदय नाँहि, अवला जिह जाँनत नाम आहि।
कहि तथा-अस्तु विध गमन कीन, प्रोहित भृगु पूजे पाय पीन ॥६१४
सुभ देख महूरथ भृगु सुहास, हाटक सिघासन जुत हुलास।
अभिसेख कीयौ नृप ता उमग, सव लीयै दनुज समुदाय सग ॥६१५
दस दिसन वढीय तिह राज दौर, छित-पाल सुंभ सिर ढुहत चौर।
भये सुँभ तवै राज्याभिसेस, दनुजाद हरख लहि देस देस ॥६१६
सुन चड-मुड जुग भ्रात सूर, हय गय दल आये मिल हजूर।
द्वै अक्षोहन दल लीयै दूठ[2], इहाँ रक्तवीज आयौ अनूठ ॥६१७
जुध जीत सकै नही, सत्रू जाहि, तातै सु माँनव लहत त्राहि।
छित परै रक्त कन जिते छूट, इतने दनु जागत भिरत ऊठ ॥६१८
वढ चले किते विस्राँम वीर, भइ समिल जहाँ अनगनत भीर।
चतुरगी सेना जुद्ध चाह, रच सीमा सागर रुच राह ॥६१९
नि सक लीयै सेना निसुँभ, जीतन कौ चाल्यौ सत्रु जंभ।
भिर परयौ स्वर्ग सगर भयाँन, सुर असुर वयर वाढ्यौ सुजाँन ॥६२०
पुरहून वज्र कीनौ प्रहार, नि,सुँभ करयौ मुर्छत निहार।
दाँनवी सैन भज चली देख, वीनती करी सुंभहि विसेख ॥६२१
चढ चल्यौ सेन आतुर चलाय, विकराल रूप दारुन वलाय।
सर वृष्ट करी जहाँ सुरन-सीस, अकुलाय भज्यौ गिर्वान ईस[3] ॥६२२
पद इद्र लह्यौ भुज वल प्रचार, विचरत वन नदन हित विहार।
करि[4] काँमधेन कलवृछ्छ कोस, खल जग्य भाग लीने सु खोस ॥६२३

---

१ मृत्यु। २ दुष्ट। ३ इंद्र। ४ ऐरावत, हाथी।

कर इँमृत पान आनद-कार, उर मोद बढत नित-नित अपार।
जम वरुन लये पोलस्त जीत, दावानल द्वजपत जुत अदीत ॥६२४
सुर काज करत आसुर समाज, धर छत्र सुंभ राजाविराज।
सुरदिसापाल आदक सभीत, रत विपत देव भये रक रीत ॥६२५
परवत बन गहवर गुफा पाय, जुग-जुग समाँन निस-दिवस जाय।
अस्थिर निवास नही रहत आँहि, निस रहत तहाँ दिन रहत नाहि ॥६२६
डर धरत न कपत प्रभा ध्वस, सविषाद रहे वछ्छर सहस।
सुर आचारज[1] विनये सखेद, वर विद्या जाँनत मत्र वेद ॥६२७
जप जग्य विचारहु कष्ट जाय, अब कीजै गरू जो कछु उपाय।
वाचस्पति बोले जुत विचार, सब लह्यौ वेद को तत्व सार ॥६२८
वेद के मंत्र हू कौ विधाँन, सव देवन आस्रत सुनहु आँन।
सोइ देव फिरत तुम विपत सग, अब कौन उपासै मत्र अग ॥६२९
पर कीजै उद्दम समय पाय, पुरसारथ तजीयै नहि उपाय।
हथ उद्दम वैठे कहा होय, कीजै उपाय नय-नीत कोय ॥६३०
करता जब ह्वै है साँनुकूल, मेटन दुख उद्दम गनहु मूल।
मेधावी सब ही सुर महान, उद्दम समान नही मत्र आन ॥६३१
तातै इह सुनीयै उचत तात, महिषासुर मार्यौ जुक्त मात।
तुम करी प्रससा वहुर ताहि, जहा दीयौ अभय वरदान जाहि ॥६३२
सुर सकट मैं करहूँ सिहाय, आसुर कौं दैहूँ दड आय।
तातै फिर सुमरन करहु तात, महमाय अजोनी चड-मात ॥६३३
महमाया माया-वीज-मत्र, तहा साधन लगे मूल तत्र।
हिम गिर उतग सिर सथिर[2] होय, सिध वीज-मत्र-जप जपत सोय ॥६३४
पूजन अराधन विव पुनीत, रच ध्यान ग्यान पूर्बानुरीत।
वदन अराधन वार-वार, विध-जुक्त महा-साधन विचार ॥६३५
नित करत वीनती जपत नाम, कीजै अभिप्ट जगतव काम।
है प्रान-स्वामनी भक्त हेत, सानद रूपनी तूं सचेत ॥६३६
तोहि नाम रूप नँहि लहत तत्व, मेधावी ऐसो को महत्व।
जो भक्ति जोग कोऊ करै जीव, सो जाँनै गति तेरी सदीव ॥६३७

---

१ आचार्य, वृहस्पति। २ स्थिर।

पिड कौं रचत तूं पुष्टि रूप, सुमृती[1] धृती तुष्टी तूं स्वरूप।
काती तूं साती क्रीत काय, माया तूं दाया महमाय ॥६३८
सुर-काज करत जोइ नाम सिद्ध, पावन जस तेरौ जग प्रसिद्ध।
सहनता वाक बांनी सुभाव, पावत बल-बुद्धी तुहि पसाव ॥६३९
जग जननि जोग निद्रा सुजांन, पावन प्रवाह प्रकृति प्रधान।
पुत्र कौं मात जो करत पोख, इह तौ परपाटी नित अदोख ॥६४०
जानत हम इतनी रीत जोन, कारन बिन कारज रचत कोन।
सत राजस तामस गुन संवार, विध विन्नु सृष्ट राचै विचार ॥६४१
सघार कपाली करत सोय, कर सकै न तो-बिन काज कोय।
तै रीझ सक्तियां दई तेम, निरवाह करत सोइ सहम नेम ॥६४२
अघ-पूर आतताई अखड, खल माहिप कीनौ खड-खड।
जब दयौ हमहि वरदान जांन, सब सत्य करहु मात आन ॥६४३

दोहा

सब देवन आरत समुझ, निझ वर पालन नेम।
कर करुना देर न करी, प्रगट भई जुत प्रेम ॥६४४

छंद त्रोटक

सुभ लछ्छत[2] लछ्छन[3] की समुदा, परपूरन-रूप महाँ-प्रमुदा।
दुति जोवन की तन मैं दरसै, वर बैनन नैन सुधा वरसै ॥६४५
कर कोमल कजहु तैं कहीयैं, लखीयैं पग की चिव त्यों लहीयैं।
वर पोन-पयोधर खीन-कटी, प्रभुता तन धार मनौं प्रगटी ॥६४६
सुच अवर भीन सु धारन सौ, भरपूर अलकृत भारन सौं।
सिध रूप सिरोमन सील सती, प्रगटी गिर किंदर पारवती ॥६४७
लख ताहि सबै सुर पाय लगे, जीय जांन परी अन भाग जगे।
लख पूरन प्रेम हीयैं लहिकै, गहरै स्वर बोल कृपा गहिकै ॥६४८
किह कारन देव दुखी कहीयै, लख कै मन वचत सो लहीयै।
सब देव करी बिनती सुनकै, गथ गूढ़-विचार हीयैं गुनकै ॥६४९

---

[1] स्मृति। [2] मू० प्र० लछ्छत। [3] मू० प्र० लछ्छन।

हनके महिपेस विपत्त हनी, वरदाँन दीयौ सोई वात वनी।
जुग भ्रात है सुंभ-निसुंभ जिसे, तिह देवन कौं वहु रीत ग्रसे ॥६५०
ग्ररु चंड रू मुंड जुरे ग्रधमा, मिल रक्तहु-बीज महाँ मघमा।
जिह देवन लोक लयौ जननी, हनहू तिह दाँनव की हननी ॥६५१
सुन देवीय देवन की सवही, जीय ग्रास्रव सत्य धरयौ जवही।
कीय देवीय दूसर ग्राप कला, चिव कौसकी दीसत ज्यौं चंपला ॥६५२
सरसात तिही रंग स्याँम संरचौ, धुर ताहीतैं कालका नाँम धरचौ।
सोइ देव-समाज सहायक सी, दनु वंसिन कौं भयदायक सी ॥६५३
द्रढ देवन कौं विसवास दीयौ, करहूँ तव कारज नेम कीयौ।
चढ सिंघ चली इक रंग छटा, घट कालका सोहत स्याँम घटा ॥६५४
भजमाँन[1] विचारत दर्प भरी. पहुँची जुग रूपाय सुंभपुरी।
गहरैं स्वर गावत राग- गरैं, वर वाटका पुस्प जहाँ विहरैं ॥६५५
लखि चंड रू मुंड दहूँ ललना, कहि सुंभहि जाय परो कलना।
सुर-नार लखी नर की समुदा, पहिचाँनत किन्नर की प्रमुदा ॥६५६
सव नैंन लखी केऊ स्रोन सुनी, तनकी दुति ग्रद्भुत या तरुनीं।
सुर-संपति खोस लई सवही, मन भूषन वाहन ग्रादं मही ॥६५७
चिव की ढिग नार जो हाथ चढै, वहु ग्रगन की सहु सोह वढै।
कर चिंतत चंड रू मुंड कही, सव सुंभ विचार कै वात सही ॥६५८
चित चातुर दूत सुग्रीव चह्यौ, लख कै ग्रत ग्रातुर वोल लह्यौ।
समुझाय उदंत कही सवहू, वँह जायकै वेग मिलौ ग्रवहू ॥६५६
समुझाय कै लावहु सुंदर कौं मम सोह चढावहु मंदर कौं।
तव दूत चल्यौ सुख पाय तहाँ, जगतवहि देखीय जाय जहाँ ॥६६०
मुख जाय लख्यौ जग-मोहन कौं, ग्रसवारीय सिंघ-ग्ररोहन कौं।
कर जोर कही ग्रभिमंत्रन कौं, तिह जाय तहाँ निभ्र तंत्रन कौ ॥६६१
जग जेता है भूप सुनौ जिनकी, मृघनैंनीय वात कही मनकी।
सुर थाँनक खोस लये सवही, मन हाटक वाग निकेत मही ॥६६२
हमकौं वरकैं तुमही विहारौ, पट भूषन लै तन मैं पहरौ।
पग-दास करौ ग्रहु-लोक-पती, वर सुंदर भूप करी विनती ॥६६३

---

[1] समर्थ

वरदाँन दियौ हमकौं विधहू, सव तेरे ही काज भये सिधहू ।
डर मृत्तु कौ मोहि न अग दहै, ललना अमरत्व सुहाग लहै ॥६६४
सभकै मन ग्त्त सिंगार सहो, रति गेलन मैं अनुरक्त रहो ।
इतनी नृप सुभ करी अरजी, मम सत्य कही लखकै मुरजी ॥६६५
कमलाक्ष कहौ सोइ जाय कहै, रच होय तौ राज हजूर रहै ।
सव भेद कहाय संदेसन मैं, नृप आयकै रावरे पाय नमैं ॥६६६
सुन दूत की वात इहै सवही, ततकाल जवाव दयौ तवही ।
मुसकाय कह्यौ सुरराय मुखा, सव जाँनत हूँ मति की समुखा ॥६६७
वरदायक सुभ-निसुभ वली, थित खोस करी जिह देव-थली ।
सुभ लछ्छन की गुन रास सही, जग जाँनत सूर उदार जँही ॥६६८
सुभ लछ्छन षोडस दून सभै, रन मैं नर जात अवध्य[1] रजै ।
सुर किन्नर मानव देख सवै, फिर गध्रव राखस आद फवै ॥६६९
हहरै सव ही निस-द्योस हीयै, लख सुभ-निसुंभ कौ नाँम लीयै ।
गुरू कर्म विसारद सूर गुनी, सुभ दक्ष कुलीन सुक्रति सुनी ॥६७०
सुर जीत लये भिर संगर मैं, झपकै पल ना गिर झगर मैं ।
अपनै वल उन्नत जाँन अहौ, करकै वर तो कंह जाय कहौ ॥६७१
अपनी प्रभुता सु वढावन कौं, मनी चाहत हेम मढावन कौं ।
सुनीयै स्रुत दूत उदत सुहो, कर मंत्र इकंत मै जाय कहो ॥६७२
लरकाइ के कौतुक है लखीयाँ, सन्न खेल रही हमहू सखीयाँ ।
तव पैज करी हम सत्य तहाँ, क्रत कारन सो समुझाय कहाँ ॥६७३
जुध देख वलावल जोर जुई, सुख पाय करू भरतार सही ।
हीय हेर इहै मम दर्प हरौ, कर मगल फेर विवाह करौ ॥६७४
इतनी तुम जाय कहौ अवही, समुझाय कही हम तौ सवही ।
सब रीत तूं चातुर दूत सदा, व्रहकै जव जावहु होय विदा ॥६७५

दोहा

सुन देवी की बात सब, दूत कही इह देख ।
कोमल-अगी काँमनी, वातैं करत विसेख ॥६७६

---

१ जिसे मारा न जा सके ।

जो जेता जग जांनीयें, इंद्र आद सुर और।
केसें लरहै भांमिनी, मन में आवत मोर ॥६७७
इंद्र आद सुर औरहू, जम कँह कीने जेर।
समता सुंभ-निसुंभ सौं, करे न वरुन कुवेर ॥६७८
वन-वन डोलत विपत-वस, विवुध जिते वलवांन।
जांनहु और न जगत मैं, सुंभ-निसुंभ समांन ॥६७९
सिवताकी[1] वातें समुझ, रीझहिगौ दनुराव।
तजीयें हठ साहँस त्रीया, समझहु जात सुभाव ॥६८०
दांनविंद्र दारुन दुसह, जांनत हौं वल जास।
करकें सासन क्रुद्ध कर, पकर वुलावहि पास ॥६८१

छंद उघोर

तीय मृदुल कंज तुसार, दनुविंद्र क्रुद्ध दुसार।
कर धरत जव कोडंड, अभिलाख जुद्ध उदंड ॥६८२
विष झार वरखत वांन, जिह भिरत कोनहिं जांन।
तूं जुद्ध जाचत ताहि, अवला कहाँ वल आहि ॥६८३
रन-रोख करहै रार, नही देख सकहै नार।
दोऊ भ्रात तारुन[2] दक्ष, पत येक वरहु सपक्ष ॥६८४
कहै त्रीया वचन कठोर, वँह समय जांनहु और।
स्रंगार-रस सरसाय, सो कहहु प्रथम सुभाय ॥६८५
देवी कह्यौ सुन दूत, कर प्रथम रन करतूत।
जो जीत है वरजोर, वर लेहु ताहि वहोर ॥६८६
पन करयो सिसुता पाय, तजहूँ न कवहूँ ताहि।
दहुँ भ्रात कौं कहि देहु, लर जीत कै वर लेहु ॥६८७
मम सूल को भय मांन, कहु जुद्ध करहै कांन।
तज देहु स्वर्ग तुरत, पाताल जावहु पंथ ॥६८८
इह दूत भ्रम अवदात, वरनें जथारथ वात।
मो सत्य वाचा मांन, नृप जाय कहहु निदांन ॥६८९

---

१ कल्याण करने वाली २ तरुण

सब सोच सार असार, वाचाल दूत विचार।
नृप-पास जाय निरास, इह करी पुन अरदास ॥६६०
कहीयै न नृप सौं कूर, हम उचत नाँहि हजूर।
विनऊं तथा जुत व्याज, अत होय राज-अकाज ॥६६१
दीय हुकम जब नृप दूत, विनती करी लख व्यूँत।
नृप विगत सुनीयै नार, नही निबल बल निरधार ॥६६२
इह कहाँ की उतपत्त, सोइ नाँहि समुझी सत्त।
वर वीर-रस जुत बाँम, है जुद्ध की हीय हाँम ॥६६३
भाख्यौ यथा चटु भाय, सृंगार-रस समुझाय।
द्रिढ रौद्र उत्तर देत, उर-जाँन परत अहेत ॥६६४
वच कहत व्याज विधाँन, सोइ सुनहु नृपत सुजाँन।
विच कही सखीयन वात, वलवंत वीर विख्यात ॥६६५
जिह संग करहूं जुद्ध, अवलोक पौरुख उद्ध।
पस्वात करकै प्यार, भजहू सोई भरतार ॥६६६
सुर-मनुज देखे सर्व, गन किन्नरा गंधर्व।
भय ग्रस्त सुंभ-निसुंभ, खल खेल मैं जय-खंभ ॥६६७
जब इहाँ पहुची जाँन, छिव लखहुँ सो वलवाँन।
मिथ्या न आस्रव मोर, कर लेहु जतन करोर ॥६६८
कीय एम नार कहाव, प्रभू आप परसे पाव।
रस भंग नँहि कीय राज, मम अरज इह महाराज ॥६६९
धर करग आयुध धीठ, पल-भक्ष बैठी पीठ।
द्रग ज्वलत ज्यो दुति दीप, सब लखहु जाय समीप ॥७००
सुन दूत अरजी सुंभ, सविखाद पूछ निसुंभ।
कहि भ्रात कैसौ काँम, वतीयाँ कही सुन वाँम ॥७०१
मन ऊचत आवत मोर, जिह जीतहूं वरजोर।
जुध करहुंगौ मैं जाय, सो जतन करहु सुभाय ॥७०२
निष्ठुर अकेली नार, इह करत मम अपकार।
नही सदन होत निदाँन, अपकार कौ भय आँन ॥७०३
लही क्लीवता पद लाज, सब सुनहै सूर-समाज।
कहि उचित कीजै कौंन, तुम जाय देखहु तौंन ॥७०४

सुन कही जो नृप सुभ, निभ भ्रात जाहि निसुभ।
अरजी करी तिह येम, नही अपुन जावन नेन ॥७०५
धुम्राक्ष भेजहु धीठ, गहि लेय ताहि गरीठ।
विध-जुक्त लगन विचार, निज व्याहू करहू नार ॥७०६
लघु भ्रात कहि चित लाय, लीय धुम्रनयन वुलाय।
सज हुकम तुरत सुनाय, उर अनख नृप अकुलाय ॥७०७
तुम करहु सेन तयार, निग्रहन[1] करहू नार।
सुर-असुर मनुज सहाय, इक नार काली आय ॥७०८
जिह सहित मारहु जोर, इह हुकम है मम और।
रच रहै जो कछु रार, कर कमल तै सुकमार ॥७०९
तुम कौं कहा भय ताहिं, वँह करै आयुध वाह।
तऊ जीयत पकरहु ताँन[2], इह सिद्ध है अवसाँन ॥७१०
सुन धुम्रलोचन सूर, निज वदन वरखत नूर।
वल काय वीर विचार, हलकार सठहजार ॥७११
सज दनुज सेना सथ्थ, तहाँ जाय पहुँचोय तथ्थ।
अभिलाख जुद्ध अराँम, विच जाय देखी वाँम ॥७१२
कीय नमस्कृत तिह काल, रच मधुर वचन रसाल।
त्रहुलोक जेता तूझ, उर रह्यौ विरह अरूझ ॥७१३
दिल चाहि भेज्यौ दूत, समझ्यौ न सूत-कसूत।
हय कीयौ मोद हुलास, इह काज भूप उदास॥ १४
श्रीय गिग[3] वचन सपक्ष, दरसाव जाँनत दक्ष।
जुध दुविध जाँनत जाँन, इक रतज[4] लखीयत आँन ॥७१५
अरि-भाव दूसर येह, ऊछाह जनत अछेह।
प्रीय रतज समर प्रवीन, रति रचत सो रमनीन ॥७१६
कहा वयर भावज काँम, स्त्रीय-जात तै सग्राँम।
नही दूत समझ्यौ नेक, विश्र-जुक्त वात विवेक ॥७१७
हम करत अरजी हार, रति-पतहु कीजै रार।
रच सयन राचहु रंग, जहाँ जीतहूँ तीय जग ॥७१८

---

१ पकड़लो। २ मू प्र. ताँन। ३ व्यंग। ४ कामजन्य।

सोइ कालका वर माख, उर करहु इह अभिलाख।
पति करहु पीड़न पाँन, अत उग्र इह अवसाँन ॥७१९
इम होय हैं दस ईस, वर बात बिसवा बीस।
जब नार जेता जाँन, पति वारहै नित प्राँन ॥७२०
सुन कालका मुसकाय, तहाँ दीयौ उत्तर ताहि।
वहि लख्यौ आवत वीर, सज अस्त्र-सस्त्र सरीर ॥७२१
वाचाल सुन कै बात, अब लखी मति अवदात।
पर पीठमर्द[1] प्रसस, अथवा भ्रूकुसक[2]-अंस ॥७२२
कामार्त सिवनी कोय, गोमायु[3] रति किम गोय।
गो गवय होय न गाँन, ज्यू वसा[4] गर्दभ जाँन ॥७२३
क्यौं बकत बात अलीक, सुन लई तेरी सीख।
मति-मद दीसत मोहि, अब करत काँय उपोह ॥७२४
समझाय सुंभ-निसुंभ, दनुविंद्र छाँडहु दंभ।
जग-मोहनी जीय जाँन, पती आय पीड़न-प्रान[5] ॥७२५
तोहि गात करहै तड, महामाय संगर मंड।
सकुटव कर संघार, प्रतना समेत प्रहार ॥७२६
पथ लेहु तुरत पताल, जब छूटहै जम-जाल।
पर जरीय हिय रिस पाग, दनु कालखंज दवाग ॥७२७
द्रग कढ्यौ क्रस्ना देख, तन वढ्यौ ता छिन तेख।
हन तोहि प्रथम हकार, पलभक्ष बाँन प्रहार ॥७२८
वल गर्वता गहि बाँह, नृप करूँ हाजर नाँहि।
रस भज कौ मुहि रज, कुमलाय लोचन-कज ॥७२९
क्रस्नाँ सुनी धुन काँन, पर जरीय पावक पाँन।
मैं सुनी तुहि मति मंद, छुटकाय कै छल-छंद ॥७३०
सब भाँत वाचा सूर, धिक तोहि पौरख धूर।
निष्ठुर निलाज नटेर, कहा कहत इह कुलटेर ॥७३१
डह[6] पूर गहि कोडंड, छत नहिन तौ दै छंड।
सुन धुम्रलोचन सूर, कर क्रोध ऊठ्यौ क्रूर ॥७३२

१ नाट। २ नट। ३ स्यार। ४ हथिनी। ५ नष्ट करने के लिये। ६ क्रोध।

सर तजे क्रस्ना सीस, रच दाव कर-कर रीस।
इद्रादि देखत उद्ध, जहाँ भयौ सम-सम जुद्ध ॥७३३
क़ोऊ करत घाव कुठार, मिल देत मूसल-मार।
छल करत सक्ति चलाय, गरू गदा खङ्ग गहाय ॥७३४
निह सत दुंदभ नद्द, वढ धाव दाव विहद्द।
पर उठत दनुज प्रपात, घट करत क्रस्ना घात ॥७३५
इत लरत क्रस्ना येक, उत भिरत दनुज अनेक।
जहाँ करत काली जुद्ध, धनु-वाँन ताँनत ऊद्ध ॥७३६
सर दीये तिछ्छन सार, सव भाँत स्रष्ट सँवार।
वालेय[1]-अग विडार, महमाय तव सर मार ॥७३७
चट कीयौ सिंदन[2] चूर, सभ्र और रथ चढ सूर।
भिर परचौ जुद्ध भयाँन, विकराल वरखत वाँन ॥७३८
तहाँ कालका रन तिष्ट, काटे सु वाँन कलिष्ट।
वहु दीये सर वरसाय, घट दनुज सगर घाय ॥७३९
सव लखत देव समर्द, महिमाय कीय अवमर्द।
जहाँ कटे दाँनव-जूह, कल करत हारव कूह ॥७४०
क्रतहस्त काली क्रुद्ध, जिह कीयौ दारुन जुद्ध।
वालेय सर वरसाय, गत प्राँन धरन गिराय ॥७४१
तिह धनुष कट्टीय तथ्थ, रन तोर स्वारथि रथ्थ।
जुध जीत सख वजाय, सुर मोद दीय सरसाय ॥७४२
धर धुम्रलोचन धीर, वढ विरथ आयौ वीर।
कहि कटुक वचन करूर, सभ्र परघ आयुध सूर ॥७४३
क्रस्ना कुरूपा काय, प्राघात मड्डु पाय।
चल वेग परघ चलाय, विकराल आग वलाय ॥७४४
कीय क्रुद्ध रव हुंकार, फनि सहँस जनु फुंकार।
इम जरचौ आसुर-अंग, पर दीप जेम पतग ॥७४५
ध्रुव नाँम लोचन ध्रुम्र, धर ध्रम्र मैं मिल ध्रुंम्र।
द्रग लखत पूरव-देव, भय भीत लहत न भेव ॥७४६

---

१ गधा। २ घोड़ा।

विस्मय विचारत वीर, धर सके नाँहिन धीर।
भज चली प्रतना भूर, सविषाद कातर सूर ॥७४७
जहाँ अवका भई जीत, रन-खेत इह विध रीत।
धुनि सब को धुकार, सुन भये देव सुखार ॥७४८
भयकार लखीयत भूँम, घट रहे घायल घूँम।
बहु परे कालज बुक्क, फिफरह लेत फरक्क ॥७४९
कट परे बुध्यन कीन, छिक आयु धन तन छीन।
वालेय हय गय वीर, सब कटे रवन[1] सरीर ॥७५०
बभकत घाव बिसाल, खलकंत जहाँ रत खाल।
गोमायु पलचर गिद्ध, सीचाँन काक समृद्ध ॥७५१
झुक रहे चिल्लन-झुंड, पल भखत दनुजन पिंड।
बहु नचत भूत-बिताल, तहाँ हसत दै-दै ताल ॥७५२
भज चले दनु इह भाय, वद्दर लगै जिम वाय।
घट भये पूरत घाव, सरसात लोहू स्राव ॥७५३
कहु कटे नासा काँन, अधफटे कऊ अधुराँन।
द्रग फुटे भृगुट-दरार, परकोष्टका[2] पर पार ॥७५४
कऊ कटे प्रष्ठ करक, अकुलात दारत अक।
कट पचसाखा केक, कर-साख-हीन कितेक ॥७५५
सब करत हारव सोर, आये सबै नृप-ओर।
अकुलाय पूछ उदत, भय ग्रसत क्यौं इह भत ॥७५६
रच धुम्रलोचन रार, नहीं पकर लायौ नार।
कहा भयौ कैसौ काँम, तुम कहहु बात तमाँम ॥७५७
बोले सु घायल वीर, सब पीर-युक्त सरीर।
सुन लेहु नृपत सुजाँन, बिहुँ भ्रात तुम बलवाँन ॥७५८
सोइ दिव्य-नारी संग, जुर कालका कीय जग।
छित धुम्रलोचन छार, ह्वै परचौ बस हुंकार ॥७५९
प्रतना प्रहारे प्राँन, बरसायकैं कर बाँन।
हम बचे रन तैं हाय, घट स्रमत ह्वै घन-घाय ॥७६०

१ ऊँट। २ कुहनी।

वँह रही संख वजाय, मद गर्वता मँहमाय।
सुर करत जय-जय सद्द, निहसत दुदभ नद्द ।।७६१
रन लख्यौ जैसौ रूप, भाख्यौ सु तैसौ भूप।
कर मत्र कीजे काज, मन रुचै सोइ महाराज ।।७६२
सुन घायलन सौं सुंभ, निभ भ्रात जाँन निसुभ।
कर वैठ मत्र डकत, अवसांन जाँनहु अत ।।७६३
इह सिघ की असवार, निरदई कैसी नार।
सज कालका कौं सग, जिह कर्यौ ऐसौ जग ।।७६४
सव चमूं दनुज सँघार, मिल धुम्रलोचन मार।
विकराल सख वजाय, सुर मुदत करत सुभाय ।।७६५
विध रुद्र आदक विस्न, जम वाय पावक जिस्नु।
सव करहिं ताहि सिहाय, निरधार जाँनहु न्याय ।।७६६
लरी यैक सैना लार, सभी यैक दुर्ग सँवार।
त्रन वज्र के सम तूल, पुन होत दिन प्रतिकूल ।।७६७
इह जान कछु उतपात, विध-जुक्त कीजै वात।
जो नीक तौ भज जाय, अव कहहु कौन उपाय ।।७६८
सव कही वाचा सुभ, निभ भ्रात जाँन निसुभ।
नृप सुनहु वाँनी नीत, भय पाय होय अभीत ।।७६९
नय वीरता तिह नाम, करीयै न कातर-काँम।
मम सीस है धर मथ्थ, कहीयै न ऐसी कथ्थ ।।७७०
भट भेजीयै जुग भ्रात, वर चड-मुड विख्यात।
जिह काम करहै जग, अत दाव घाव अभग ।।७७१
निज जाहि अवला नाँम, करहै कहा रन काँम।
तिह पकर लावहै तात, नत करहै जुद्ध निपात ।।७७२
हम मुऐ पाछैं हार, नय-नीत करहु निहार।
निसुभ की सुन नीत, भये सुभ भूप अभीत ।।७७३

दोहा

समुझ सोच ताही समय, सासन किय नृप सुभ।
चड-मुड जुग भ्रात चढ, क्षिप्र जाहु जय खभ ।।७७४

काली कौ करहू कदन, पकरहु अथवा पास।
तुम वाकौं लावहु तुरत, रूप रग द्रुति रास ॥७७५
येते पै आवै न वंह, जोर करे कहु जुद्ध।
वाँनन तै प्राँनन विगत, वाकौं भेजहु ऊद्ध ॥७७६

छंद मौतीदाँम

महाँभट दारुन चड रु मुड, कसे कृतहस्त धरे कोडंड।
लयौ नृप सासन पायन लग्ग, उदायुध सूर वढे दहु अग्ग ॥७७७
सजै वहु बीर वरूथनि सग, जिते लघुहस्त विसारद जग।
पहूँचीय देवीय कै तहाँ पास, हीयै अभिमत्रन जुद्ध हुलास ॥७७८
न जाँनत सुभ-निसुभहि नार, रही पग रोप जुहारत रार।
जिताहव देव लये सव जीत, भ्रमे सोइ काँनन ह्वै भयभीत ॥७७९
करी तोहि कारन अग्र कलेस, इहै सब देवन कौ उपदेस।
भरी हम चाहत नाँहिन मित्त, सबै समुझाये कहू सोइ सत्य ॥७८०
भुजा नव दूनन राख भरोस, जथा पलभक्ष तथा उर-जोस।
निराकुस भूपत सुभ-निसुभ, दुरतर तोहि निवारहि दभ ॥७८१
कहै हम सोय करौ तुम काज, वृथा छल-छद न राचहु व्याज।
वृथा इह दर्प सबै विध वाम, वृथा तुम लावहु चित्त-विराँम ॥७८२
अराधन साधहु ईस उदच, प्रभुप्पन भुग्गहु राज-प्रपच।
नही इह निचते[१] काज निसिद्ध, सबै मन बचत कारन सिद्ध ॥७८३
जिते जग माँझ चराचर जीव, द्वधा थिर जगम राच दईव।
कीयौ तन मानव श्री करतार, विसेसन बुद्धि विवेक विचार ॥७८४
जुहारत देवन माँनव-जात, जई असुराधिप देव-जमात।
वुलावत तोहि विचार विवाह, नही कोई दूसर या सम नाह ॥७८५
वरौ तुम जाय करौ मत वेर, फुरै अवसाँन न या विध फेर।
परेखहु दक्ष प्रतक्ष प्रमाँन, असार न चित्त धरौ अनुमान ॥७८६
पराभव देवन कौं परचड, दइ तन विद्र जई रन दंड।
मिले तुहि जीतन चाहत मूढ, ग्रस्यौ चित अतर कारज गूढ ॥७८७

---

१ नीच।

भलीनस निर्जर स्वारथ मीत, प्रधॉन न जाँनहु प्रीत-प्रतीत ।
धुरधर नित्त विसारद धर्म, कहै हम सोय करौ तुम कर्म ।।७८८
हीयै धर विस्तर दाँनव हल्ल, गरज्जीय मेघ ज्यूँही भर गल्ल ।
कही हमकौ सिखवै कहा कथ्थ, सदा हम देव सिहाय समथ्थ ।।७८९
महॉग्रघ-गामीय ते मतिमद, विड्ारीय केतक दाँनव-वृ द ।
हरी हर देव भई कहा हाँन, करै पति ग्रासुर कौ तज कॉन ।।७९०
ग्रहू जग-स्वाँमनि विस्व ग्रधार, नया नय देख रही निरधार ।
करे तुम देवन कौ बहु कष्ट, गहौ नय नीत न पाप गरिष्ट ।।७९१
वनै कुल ग्रासुर नाँहि वचाव, ग्रवै कर देखहु कोट उपाव ।
सँभारहु ग्रायुध कौ इक साथ, इही ध्रम वीरन कौ ग्रवदात ।।७९२
सुने इह देवीय के वच स्रो`न, प्रहारन लागीय[1] बाँनन प्रो`न ।
हरव्वल वीर दये हलकार, कसीसत चाप करै किलकार ।।७९३
इहै लख चडीय क्रोध ऊझल्ल गरज्जीय सिंघ तहाँ भर गल्ल ।
सँभारीय सुख तहाँ सुरराय, करी धुन जुद्ध जुरी ग्रकुलाय ।।७९४
भये भृगु-सि ख तहाँ भयभोन[2], सुनै सुख दाँनीय देवन स्रोन ।
परी तहाँ ग्रस्त्रन-सस्त्र प्रहार, क्रपालका पट्टस क त कुठार ।।७९५
चट्टकत[3] बीर प्रतचन चाप, खट्टकत खग्ग निकारत खाप[4] ।
भयौ रन कातर कौ भयकार, उमडीय बाँनन मेघ ग्रसार ।।७९६
ग्ररे दहु चडीय चड ग्रभग, रचै तहाँ जग ग्रनूँपम रग ।
घले हथ वाह न चूकत घाव, दहै तन दाँनव ज्यूँ वन-दाव ।।७९७
मिले ग्रसुरायन मडल मेल, ग्रगजत बाँनन पान उझेल ।
रही रुप देवीय दारुन-रूँप, उडावत बाँनन-बॉन ग्रनूप ।।७९८
छयौ घन ग्रबर भाँन छिपाय, उडै सलभा किघु ग्रवर ग्राय ।
रचै जहाँ चड भयाँनक रार, हरोलन मु ड दये हलकार ।।७९९
करी बिहु बॉनन-वृष्ट करूर, गहै रस वीर निक्रष्ट गरूर ।
वढी उर देवीय क्रोध वलाय, भयौ मुख-क्रस्त भयाँनक भाय ।।८००
दिपै चख लालीय वीच दहून, प्रभा लख लाजत केल प्रसून ।
भृगुटीय चढ्ढ भयाँनक म्यूह, जुतै भृमरावल घुमर ज्यूँह ।।८०१

---

१ मू प्र लगीय । २ भयभीत । ३ मू प्र. चटकत । ४ म्यान ।

भई तमरास जहाँ थित भाल, कढ़ी निज कालीय रूप कराल।
सुवासन साटीय[१] चर्म सु सिंघ, जिही विध कंचुकि ढाकन जंघ ॥८०२
फव गज-चर्म सु कर्पट फेर, धरै रुंड-माल क्रकाटक[२] घेर।
प्रकासत वापीय सुस्क पिचंड, दिपै गज-गुंड ज्यूँही भुगदंड ॥८०३
लहालह जीह डुलावत लोल, वदै अटहास भयंकर वोल।
खतगहु आयुध हाथ खटंग, प्रहारन दानव अंग प्रनंग ॥८०४
लगी सोई दानव के दल लार, अमेठत हाथ न लेत अहार।
मलै मुख सिंधुर ज्यो हरमथ[३], दबावत जंभ चबावत दंत ॥८०५
क्रमेलक[४] रासभ जांन मकुष्ट[५] गहे हय रास वलाट[६] गरिष्ट।
कलामक[७] जेम भृगू-सिख काय, खिलै रन रास मिलै सोई खाय ॥८०६
इहै गत कालीय की अवरेख, भगै दनु-जूह भयंकर भेख।
महाँभट आसुर चंड रु मुंड, विचारीय मंत्र दुहूँ वलवंड ॥८०७
वचै प्रतना नहि येकहु वीर, भिरे रच मंडल ह्वै भटभीर।
मतौ कर येक जुटे महँमाय, चलावत बाँन लोयौ नभ छाह ॥८०८
खुधा कछु मेट उठी खल खाय, सँभारीय चाप तहाँ सुरराय।
कटे सर तिछ्छन मार कलंव, तहाँ रन-रुठ रही जगतंव ॥८०९
न पुज्जत दाँनव जुद्ध निदाँन, प्रहारीय चक्र तहाँ गहि पाँन।
गरज्जीय दाँनव सद्द गहीर, तकी तहाँ देवीय लै धनु-तीर ॥८१०
ततछिन चक्र कीयौ सत टूक, महा क्रतहस्त प्रक्ष्वेडन मूक।
लखी तहाँ चंडीय चंडहु लच्छ, तहाँ दनु ताक दये सर तिच्छ ॥८११
परचौ मुरछा गहि वीर प्रचंड, महाँभट आय जुटचौ तहाँ मुंड।
वरक्खत चंडीय पै सर-वृष्ट, विसारद जुद्ध विरुद्ध वलष्ट ॥८१२
सिलाका सार लई सुरराय, विडारीय बाँनन ताहि वलाय।
इखू अर्धचंद्र अकार उभल्ल, घने सल दाँनव के तन घल्ल ॥८१३
मुरछ्छत होय परचौ धर मुंड, भिले तहाँ क्रंदत आसुर-झुंड।
परे दहुँ भ्रात जहाँ रन पेख, अनंदत देवन मोद अमेख ॥८१४
इतै फिर चंड उठचौ अकुलाय, गदा कर लिन्नीय गाढ गहाय।
प्रहारीय चंडीय दछ्छन पाँन, वचाय तँही रच बीर बिधाँन ॥८१५

१ साड़ी। २ गरदन। ३ चना। ४ ऊँट। ५ मच्छर। ६ मूँग। ७ चांवल।

गह्यौ तिह चडीय मेट गरूर, जहाँ विच बाँनन पास जहूर।
लखी गत चड भयौ बल-लीन, अटचौ विच पासीय होय अधीन ॥८१६
जगी मुरछागत चड जरूर, सगत्तीय हथ्थ सँभारीय सूर।
चल्यौ तहा कालीय तै रन चाह, बनी नँही येक तँहि हथ वाह ॥८१७
भई गत सोय जहाँ लघु भ्रात, वँधे विहुँ पासीय वीर विख्यात।
कीयौ अदभूत इहै रन काँम, हीयै दनु नाँहि रही फिर हाँम ॥८१८
गहे विच पास दिखावत गात, दहूँ मृदुलोमक[1] जेम दिखात।
कही तहाँ देवीय तै इह कथ्थ, सवै विध कालीय जुद्ध समस्थ ॥८१९
उचारत वाँनीय व्रूँह अमेठ, भली रन जग्य लहौ इह भेट।
कहीं तव देवीय यों मुसकाय, न छडहु कालीय देत अन्याय ॥८२०
कढी महाँकालीय उद्ध क्रपाँन, प्रहारीय कठ भये गति प्राँन।
कटे सिर दोउन के कर क्रोध्र, पीयौ रत कालीय पाय प्रमोद ॥८२१
दीयौ तव सासन देवीय देख, सवै सुर-काज करौ सोई सेख।
महाँभट मारीय चड रु मुंड, प्रहारीय दाँनव सेन प्रचड ॥८२२
मिटचौ दुख देवन कौं सुख मान, वरख्खत पुस्प कहै जय वाँन।
इहै क्रत कालीय कौ अत उद्ध, जयौ जीह रीत कह्यौ सोइ जुद्ध ॥८२३

दोहा

मारचौ चंड रु मुड कौ, सज काली सग्राँम।
जग मैं पुज्जत जाहि कौ, निज चामुंडा नाँम ॥८२४

छद पद्धरी

खल कटे चड अरू मुड खेत, सव भजे असुर वाहन समेत।
पहुचे सु क्षिप्र नृप सुभ पास, उद्राव[2] भीरु जय छोड आस ॥८२५
कट गये देख कहु नाक-काँन, पग कटे कहु क-कहु कटे पाँन।
रत स्रवत घायल लाल रग, प्रतहोरी जीवन ज्याँ पतग ॥८२६
वेदना जुद्ध क्रंदत विसेस, निस्वाँस डार गत अभिनिवेस।
विस्तार कहन लागे वृतत, देवी इक क्रस्ना दावदत ॥८२७

---

१ खरगोश। २ पलायन कर गये।

मिघुर हय सादी जुत समेट, चिरमेही मरुप्रिय गहि चपेट।
भख लये स्वारथो रथी भूर, काली सुकर्म कीनों करूर ॥८२८
वीरासन देखी जुद्ध वीच, कीने सव आसुर मार कीच।
कट कुंजर पिंजर हय करार, वालेय क्रमेलक तन विडार ॥८२९
वहि चली रक्त-धारा विलंद, नहीं वार-पार दीसत नरिंद।
करकर अनु सरकर गोद कीन, जवाल दिखावत तट जमीन ॥८३०
सिंदन जहाँ तैरत इम सुहात, डिंडीर मनहु वुद वुद दिखात।
सिर तुटे अलावू[1]-फल समाँन, वहि रहे अंत ततू विधाँन ॥८३१
कट कालखंज फिफ्फर कहूँक, जिम कच्छ सनायू विध जलूक[2]।
प्रति-जंघा[3] जंघा कट पलाय, लघु दिघ्घ मीन जामहिं लखाय ॥८३२
तर रहे नयन तहाँ जलज तेम, जहाँ गिद्ध वलाका[4] हंस जेम।
कातर भयदायक नदी-कूल, हम भाग चले भय दिसा हूल ॥८३३
मम सुनहु अरज इह महाँराज, कुल दाँनव को ह्वै है अकाज।
कालका-नार दीसत कुढंग, जिह जीत सकै येको न जंग ॥८३४
वल स्याँम[5] उपाय वचाय वंस, परचावहु काली कौ प्रसंस।
देवी तैं जाचहु अभय-दान, पुन रहे सेख जिह वचै प्रांन ॥८३५
सुन अरज पलायन की सधीर, वढ क्रोध सुंभ वोल्यौ सुवीर।
मिल चले भाग डर देख मीच, नन करहु भगोरे वात नीच ॥८३६
हारकै त्रीया आगे हड्डूड, मुख जाय दिखावै कहाँ मूड।
ध्रुव रहिहै जातैं वीर-धर्म, करहैं हम सोई उद्ध कर्म ॥८३७
जय होय पराजय काल जोग, समृथ कौं नाँहिन हरक सोग।
नृप सुंभ दीयौ आतुर निदेस, वुलवाय रक्तवीजहिं विसेस ॥८३८
त्रीय पकर जाय लावहु तुरंत, वँह पौरुख जाँनहुँ आद-अंत।
द्रग देखहु जैसौ करहु दाव, भाव-जुत होय अथवा अभाव ॥८३९
अरजी लख मुरजी करी येह, समुझहु जन भूपत उर सँदेह।
करहूँ मन वंचत तोर काज, मम पौरुख देखहु महाँराज ॥८४०
सज हयदल पयदल सुभट संग, रथ चढ्यौ जाय रस वीर रंग।
वढ चली खेह डम्मर विताँन, भुय अंवर लों सूझै न भाँन ॥८४१

---

१ तूँबा। २ जोंक। ३ पिंडली। ४ वगुला। ५ स्वामी।

आडवर वाजन की अवाज, गरजै जिम सवर मेहु गाज ।
वाहनी रही कछु दूर वाट, ठाढी गिर अवा लख्यौ ठाट ।।८४२
कीय तहाँ सख-वाँनी करूर, प्रतिधुनि तहाँ वाढी दिसन पूर ।
वढ प्रवर अग्ग पूछी सुवात, देवी कहा हमकौ भय दिखात ।।८४३
नहि फटत भुजातर सख-नाद, विसराय देहु दनु वयर-वाद ।
निकृष्ट धुंम्रलोचन नहीज, वरवीर पिछांनहु रक्तवीज ।।८४४
डरपोक न देखे समरदीन, पर काँम परहि मम भुजा पीन ।
नही काँम-सास्त्र तूं पढी नार, समुझत कछु नाँहिन रस सृगार ।।८४५
पारावत पखी लखहु प्यार, नित रहै सग नर और नार ।
पति करहु सुभ त्रीय न्याय पेख, रुद्र विध विस्नु परिआय रेख ।।८४६
देखहु सग नारी त्रहू-देव, भल समुझहु नारी पुरख भेव ।
उत्तर सुन देवी दीयौ येम, निज हृदै बीच सोइ अभयनेम ।।८४७
पन कीनौ सिसुतापन प्रभाव, कर दयौ दूत सग हो कहाव ।
जीतै समर्द सोइ वली जाँन, पुन करहू तातै ग्रहन पाँन ।।८४८
भय आवत तो कँहि जुद्ध भाय, पाताल दनुज जावहु पलाय ।
है हीय मै जो कछु जुद्ध-हाँम, कीजिये वीर अवदात काँम ।।८४९
इह सुनतं आग पर जरेउ अग, अतसय अमर्ष वाढचौ उमग ।
कर लस्तक मुष्टी गहि करार, टकार धनुप भय जुद्ध त्यार ।।८५०
तद्दल क्षुरप्र चल दिग्ध-तीर, भई अतरीक्ष जहाँ इवक भीर ।
देवी सिर छाया सर दिखात, आषाढ मनहु व्रखन अघात ।।८५१
सवहिन, सर छडे येक सग, भयकार भीम मानहु भुजग ।
कोडड अवका ताँन काँन, वाँनन तै काटे असुर वाँन ।।८५२
तन दीये प्रवर तहाँ ताक-ताक, कीय रक्तवीज मुर्छत कजाक ।
मुरछागत देख्यौ जुद्ध माहि, तिह सैनक बोलत त्राहि-त्राहि ।।८५३
क्रदत अवाज सुन सुभ काँन, है रक्तवीज कछु जुद्ध-हाँन ।
दल जाहु वीर काँवाज दूठ, रन राचहु चडी रही रूठ ।।८५४
पाछैन न धरहू नैक पाव, देखहु समर्द ज्यू रचहु दाव ।
विच आये मडल समर वीर, सव अस्त्र-सस्त्र धारक सधीर ।।८५५
घटा-रव देवी करीय घोर, विकराल सख-धुन किय वहोर ।
टकार चाप भइ जद्ध त्यार, दस-दिसन खाय पव्वय दरार ।।८५६

विसतारो काली मुख विसाल, करकस रद जभा जुत कराल ।
पलभक्ष रह्यौ आँनन पसार, अरि भक्षन कौं अतक अगार ॥८५७
कल-कल रव पहुँच्यौ असुर काँन, सज भयौ जुद्ध ह्वै सावधान ।
मुरछागत जाग्यौ टरी मीच, वढ रक्तवीज रन भूँम वीच ॥८५८
देवी सौ ताकत घाव-दाँव, पैं ऋस्ना हटत न येक पाव ।
जहा असुर कदवक रहे जूट, चडी धनु सायक रहे छूट ॥८५९
विध आद सक्तीया कर विचार, पर कर जुत वीसासन पधार ।
मुखच्यार सुखद वाहन मराल, मव हृदय सोह रुद्राक्ष-माल ॥८६०
कर सूत्र कमडल सुभग-काय, सो ब्रह्मानी कहीयत सुभाय ।
वैस्नवी गरुड-वाहन वरिष्ठ, तन स्याम गदाधर चक्र तिष्ठ ॥८६१
भुजच्यार सख अरू पद्म भाय, सिर पीतांवर ओढै सुभाय ।
सकरी तीन लोचन सुसोह, अतसय असर्प सडहि अरोह ॥८६२
सुर सीर्षक आयुध कर मभार, अहि ककन राजत कर अवार ।
भासत प्रदीप्त अधचद्र भाल, मुख स्वेत वरनं गल रु ड-माल ॥८६३
इद्रानी आई गज-अरोह, कर वज्र धरे उर अधिक कोह ।
बहुरत्न अलकृत तन विसाल, अदभूत रूप आई उताल ॥८६४
कात्यायनि वाहन नीलकठ, उरजस्व इधक उर समर अट ।
कर आयुध सक्ती अत करूर, गति चपल विपुल पौरुप गरूर ॥८६५
वाराही वाहन महिष वीर, दाढे कराल जिह रद कुदीर ।
सब भात नारसिंघी समथ्थ, है अधिक अस्त्र जिह करज हथ्थ ॥८६६
जमराज सक्ति जाजुल्य जुद्ध, अत विकट लीयै कर-दड उद्ध ।
कीनै असवारी धीरकध, सुर-सकट मेटन के समध ॥८६७
कऊवेरी उतकट जुद्ध केर, वारुनी पधारी तिही वेर ।
सज अस्त्र-सस्त्र सग लीयै सैन, दनुजात पराभव समर दैन ॥८६८
उर देवी लख वाढ्यौ उछाह, दनुजात विलोकैं जरत दाह ।
सुर-वृ द लखत आनद संग, उर-विजय-आस वाढी उमग ॥८६९
हर आये सुर-कल्याँन हेत, खित जहाँ चडका वीर खेत ।
वीनती करी इह तिही वेर, देवी अब किह विध करत देर ॥८७०
कीजीयै सिद्ध अब अमर काज, सब खेत प्रहारहु दनु-समाज ।
नि सु भ-सु भ कीजै निपात, सुर नर मुनि निरभय करहु साथ ॥८७१

जिग जोग विप्र-क्रम[1] होम जाप, थिर करहु बेद-मुरजाद[2] थाप।
क्रसि-कर्म प्रजा वाँनज्य-कार[3], चर-अचर सुखी ह्वै वरन च्यार ।।८७२
सिव-वचन सुने देवी सुआँन, भइ रौद्ररूप दरसत भयाँन।
प्रतछाया निकसी अत प्रचड, चडाक कलेवर तें जु चड ।।८७३
सत सिवा जेम सोइ करत सद्द, विकराल रूप बाँनी विहद्द।
प्रतिछाया देवी कह्यौ पेख, विधजुक्त नीत बाँनी बिसेख ।।८७४
करहू सिव मेरौ दूतकर्म, मद नृप कहहु समुझाय मर्म।
इद्रासन पावहि देव ईस, धरीयै न धख उर दनुज धीस ।।८७५
सुर लहै भाग मख काज सिद्ध, सब दिसापाल पावै समृद्ध।
जो चाहत दाँनव कुसल जाँन, पाताल मग्ग कीजै प्रयाँन ।।८७६
समुजै न वसीठी न्याय-सध, मारहु काँमातुर नृप मदध।
हम चहत न्याव इह कहत हेत, खावैंहि स्रगाली कीन खेत ।।८७७
नि.सुभ-सुभ जुग भ्रात नाँम, हीय बीच वैहै कछु जुद्ध हाँम।
आयुध गहि सनमुख क्यौं न आय, प्रहरन प्रचार मडै जु पाय ।।८७८
इह सुनी नीत चडी उदत, कहि जाय सवै तहाँ उमा-कत।
हम त्रपुर नास कीनौ हकार, सो भये दूत तेरै सुधार ।।८७९
तज देहु स्वर्ग आसुर तुरत, पाताल सुधारहु नीक पथ।
मारहि न त चडी जुद्ध माहि, कुल भखहि गृद्ध स्रगाल काय ।।८८०
निश्चय इह देवी लह्यौ नेम, आयकै कही हम सुनी येम।
कहि आये सकर इहै कथ्य, समुझाय न्याय-रीतहु समथ्थ ।।८८१
प्रतिछाया देवी नाँम पाय, सिवदूती सोई कहीयत सुभाय।
सिव-वाँनी जाँनी दनुज सुभ, द्रढ आस्रव कीनौं छाय दभ ।।८८२
देवीतें तजहूँ हि द्वेख, रन रचहु वीर परीआय रेख।
सब अस्त्र-सस्त्र धारै सधीर, वीरासन आयौ महाँवीर ।।८८३
कोदड प्रतचा ताँन काँन, वरखा तहाँ कीनी असह[4] बाँन।
कालका गदा लै खग्ग कूंत, अत अप्रल जुद्ध कीनौ अभूत ।।८८४
दानव-कुल खडत समर दाय, खल मिलै जाहि लै पकर खाय।
रन-चतुर ब्रहमाँनी रिसाय, अजुलक कमडल जल उडाय ।।८८५

---

१. ब्राह्मण-कर्म। २ वेद-मर्यादा। ३ व्यापार-कार्य। ४ असंख्य, असह्य।

ग्राहत दनु प्रांनन तज गडूख, मारत जक्ष जिम मूक-मूक।
तहाँ मिवा खरग धारै त्रसूल, भुक रही समर लै सक्ति भूल ॥८८६
उरजस्व मड संडहि अरोह, कर रही जुद्ध उर अधिक कोह।
वैस्नवी रही दाँनव विडार, पर देत गदा चक्री प्रहार ॥८८७
धकपख[1] करत जहाँ जुद्ध घाव, दाँनव कौं मारन समर दाव।
इद्रानी ऐराप(व)त अरोह, दारुन रन दाँनव रचत द्रोह ॥८८८
गहि सुड दत मारत गजिंद्र, दल वज्र प्रहारत दानविंद्र।
वाराही थुथनी जिह विसाल, कर रही जुद्ध दुर्धर कराल ॥८८९
ह्वै जहाँ नारसिंही हरोल, विकराल-रूप तहाँ सद्द बोल।
भुज-कटक सजुग करत भेट, चत्वर रन मारत दनु चपेट ॥८९०
हुकत सिवदूती अट्टहास, गहि चडी दाँनव करत ग्रास।
मँहमाय कँवारी चढ मयूर, कोदंड बाँन छडहि करूर ॥८९१
वारुनि सक्त पौरुख वियार, दारुन रिपु मारत पास डार।
समुदाय सक्ति सगर समथ्थ, कर क्रोध उचारत वीर कथ्य ॥८९२
देवी वहु मारे पूर्व-देव, भाखै को सख्या जाम भेव।
भागी वहु सेना दनुज भीर, पग मडे नाँहिन सही पीर ॥८९३
कहि कातर बाँनी करत कूक, आसुर भये वासुर[2] ज्यों उलूक।
सुन कातर-बाँनी जहाँ सोर, वढ रक्तबीज वाचा वहोर ॥८९४
वर आयुध धारै कवच व्यूड, ह्वै रथारूढ आयौ हडूड।
वरदाँनी-बाँनी कहि विसास, परठये दनुज सव आस-पास ॥८९५
छित परै रक्त जहाँ बूँद छूट, रन रक्तबीज सोई भिरै ऊठ।
सकर वरदायक महासूर, कर कोह जद्ध मडहि करूर ॥८९६
कालका चडका हयन काज, सो आयौ भट लीनै समाज।
वैस्नवी हकारचो जुद्ध वेर, गहि गदा मग्ग रोक्यौ सुघेर ॥८९७
कीय चक्र-मार तहाँ अत करूर, प्रहरन तन लागे घाव पूर।
रत स्रवत जहाँ वहु लाल रग, सज गेरक धारा सलल स्र ग ॥८९८
जहाँ रक्त-बूँद धर परत जाय, सोइ रक्तबीज ऊठत सुभाय।
भिर जुद्ध करत सोई भयाँन, सव रूप रग येकहि समाँन ॥८९९

१ गरुड़। २ दिन।

सब रक्तबीज-मय भई सृष्ट, दीसत बीरासन येक द्रष्ट।
इद्रांनी पँहुची जुद्ध आय, पव मार दई जहाँ मड पाय ॥६००
दारुन ब्रह्मांनी ब्रह्म दड, खल मारत हाँकीय खड-खड।
सकरी तेज ताडत अमूल, हथ कीयौ जाहि तन घाव हूल ॥६०१
कीय क्रोध नारसिंघी करूर, वपु तर्ज कर्ज[1] डारयौ बिलूर।
वाराही जभा रद विडार, सक्ती कऊमारी दिय सँभार ॥६०२
झुक रही सक्तीयाँ झुड झूंम, भयकार इधक रन लखत भूंम।
येक तै रक्तबीज ही अनेक, कर रहे जुद्ध दारुन क्रितेक ॥६०३
सर-वृष्ट करत वद्दर-समाँन, इक रूप भयौ वर आसमाँन।
द्रग जिते रक्तबीज ही दिखात, सब लरत सक्तीयाँ तिनँहि साथ ॥६०४
घट ताही मिल-मिल करत धाय, सरसावत दाँनव त्यूं सिवाय।
जहाँ रक्तबीज लख इधक जग, सविषाद देव विस्मयत सग ॥६०५
मडल रच देवी करत मार, ह्वै रक्तबीज ऊठत हजार।
कालका चडका छिव करूर, है और सक्तीयाँ तऊ हजूर ॥६०६
निक्रष्ट कवै इह होय नास, जय होय पराजय किधौ जास।
सुर चितातुर देखे सकोय, सबही गत देवी लखी सोय ॥६०७
अंबका कही क्रस्ना उचार, विस्तार करहु आनन विचार।
अवकास वीच मुख देहु येम, जिह वीच समावै दनुज जेम ॥६०८
घालहि हम ताकौ अग धाय, सोई रुधर पाँन करहू सुभाय।
कीय काली अबा कह्यौ काज, सब आनन दनु लीनौ समाज ॥६०९
तहाँ सस्त्र-अस्त्र मारे तमाम, काली कौ अद्भुत देख काँम।
वैराट-रूप धारयौ विचार, आँनन विसाल अतक अगार ॥६१०
विसतार करयौ इह विध विसेस, सब लये वीच नही रहे सेस।
आकर्ष स्वास सत्ता उपाय, आँनन विच दाँनव गये आय ॥६११
सक्तीगन लागी समर सग, अत घाव दाव मारत उमग।
आग्नेय परत मुख बीच आय, चडी सोई लीलत इधक चाहि ॥६१२
तब घटयौ पराक्रम दनुज तेम, जब बढी सक्तीयाँ प्रलय जेम।
मूसल कुठार सर लगी मार, सब आसुर कौ कीनौ सँघार ॥६१३

---

१ नख।

वढ करयौ जुद्ध आसुर विसेस, पुज्यौ न दाव आये न पेस।
वाढे सोई क्रत मर रक्तवीज, चंडका भक्ष तै गये छीज ॥६१४
लेलये किते पलभक्ष लील, चोंचन तै लोचत स्वेत चील।
वालेय रवन हय गय विहड, भर फरत गिद्धनी भखत झुंड ॥६१५
घट कटे जूट भट समर घाय, खेंचत विडाल फेरंड खाय।
आतुर केऊ कातर भाज आय, पिंजल[1] विहस्त नृप लगे पाय ॥६१६
अकुलाय समर भाखी उदत, आखन तै देखी आद-अंत।
मारकै रक्तवीज ही मदंध, केऊ दानव के कीय छेद कंध ॥६१७
अवका सग सक्ती अनेक, येकतै पराक्रम इधक येक।
इक प्रथम सिंघ आई अरोह, दाँनव-कुल कीनों असह द्रोह ॥६१८
हन वीर धुम्रलोचन हकार, छित चंड-मुंड की परी छार।
जव रक्तवीज तै भयौ जंग, सुर मिली सक्तीयाँ आय संग ॥६१९
कोऊ हंस चढी कोऊ धीरकंध, चढ गरुड़ दनुजकहि चिंध-चिंध।
आई[2] कोऊक केकी अरोह, सड पै चढी कोऊ मड छोह ॥६२०
गह पूर पीठ वैठी गजिंद्र, देखी हंम सुनीयें दानविंद्र।
नर प्रष्ठ चढी कोऊ लखी नार, प्रेत की प्रष्ठ कोऊ वल प्रचार ॥६२१
छह आनन-आनन कोऊक च्यार, नव दून भुजा नीकै निहार।
कोऊ च्यार भुजा सक्ती करूर, कोऊ अष्ट नयन द्वादस करूर ॥६२२
कोऊ तीन नयन भृगुटी कराल, मदमत्त गरै जिह रुंडमाल।
कर-दंड कमंडल लीयें केक, कर-गदा पद्म आयुध कितेक ॥६२३
कर कस-त्रसूल कर वज्र कीन, पासी कर आयुव सक्ति पीन।
कोऊ जभा आयुव रद कुदार, कंटक-भुज आयुध अंत करार ॥६२४
जग वीच देवता जिती जात, देवीयाँ तिती सगर दिखात।
तामै इक काली दनु अंतत, वाकै न पराक्रम आद-अंत ॥६२५
रन देख्यौ तैसौ कह्यौ रूप, भावै सोई कीजै काज भूप।
कालका देवीयाँ भरी क्रुद्ध, असुरन तै पौरुख लख्यौ उद्ध ॥६२६

दोहा

रक्तवीज माया रचत, सव ही भखे समेट।
काली दनु कीने कवल, पचे सकल विच पेट ॥६२७

---

१ व्याकुल। २ मू प्र. आई सो।

गह्यौ मोद उर देवगन, निहसत दुदभ नद्द।
जय जय बोलत जाहि जस, वरखत सुमन विहद्द ।।६२८
उर व्याकुल फरकत अधर, दाबत फिर-फिर दत।
सुभ नृपत वातै सुनी, चकत होय मन-चिंत ।।६२९
बोल्यौ नृपत विचारकै, जाँनत है मम जीय।
सुर-जेता सग्राम कौ, ताहि वकारत तीय ।।६३०
चड-मुड हन चर्चकी[1], घुम्र-नयन कर ध्वस।
रक्तबीज पीनौं रुधर, प्रहरन भार प्रसस ।।६३१
सवकौ वैर बिसारकै, प्रहरन दैहू प्रष्ट।
सूरबीर सुनहैं समुझ, कहहैं मोर अपक्रष्ट ।।६३२
करी सुरन तै अपक्रीया, जाँनी सकल जिहाँन।
नारी तै रन मे नमूं, होय सकल जस हॉन ।।६३३
सन्निधाँन जाचत समर, ह्वै प्रतिलोम हकार।
काली कौ करहूँ कदन, न्याव इही निरधार ।।६३४
जाँनहु मत-अस मत जनँम, सूर पुरस कुल सोय।
करहूँ नही कातर-करम, होनी होय सु होय ।।६३५
कहि निसुंभ येतौ कहा, सोच करहु नृप सुभ।
गोरगन अस्नगना, दुहुँन उतारहुँ दभ ।।६३६
जुद्ध करन कौं उद्धजन, सैन करहु मम सथ्थ।
तो हित लावहु दिव्य तीय, हन काली कौ हथ्थ ।।६३७

छंन्द त्रोटक

द्रिढ भूप कनिष्ट निदेस दयौ, लग पाँयन सीस चढाय लयौ।
कर वाहुल ककट टोप कसै, तुदत्राँन सँवारीय सार असै ।।६३८
छर[2] खग्ग गही परवार[3] चढी, मय कचन रत्न अमोल मढी।
वड खेटक खग्ग सु पीठ वनी, सोई कचन फूलन सोह सनी ।।६३९
कटि केहर वन्ध कलाप करचौ, भल तिछ्छन वाँनन भार भरचौ।
अग दछ्छन त्यो जमदाढ अरी, जगमग्ग दुपख्ख जराव जरी ।।६४०

---

१ चडी। २ तलवार की मूठ। ३ म्यान।

असु पुत्रीय फेर कटीर अटो, घन जास अमोल लुहार घटी ।
धर धख सरासन कध धरचौ, कल काज निमु भ प्रयान करचौ ।।६४१
मदमत्त चले गज जुथ्थ महा, गिर से उपवाभ्भय[1] सनाभय गहा ।
भरना जल ज्यो तलडाँन भरै, केऊ सु ड उतड वमु थ करै ।।६४२
गुड[2] सभ्भत व्याल कराल गनौं, मजवूत दिये जमदूत मनौं ।
वपु मेचक उज्जल दत वढै, अगवाँन घटा वक जाँन उडै ।।६४३
छव वर्तक[3] की वगरी चमकै, दुति दाँमनि ज्यो प्रतभा दमकै ।
भद के नद ज्यो गल गल्ल भरै, सोई सैन ऊवीत सुमग्ग सरै ।।६४४
खननाहट अदुक[4] पै खनकै, भननाहट भौर ज्युही भनकै ।
दरसै गह नैनन दोलन मैं, कर नागज[5] रग कपोलन मैं ।।६४५
केऊ ईखायदंत परीनन के, जुत रंग-वरंगहु जीतनके ।
केऊ मत्कुन खूनीय त्यो करके, ध्रुव जास उतग वडे घरके ।।६४६
वयपोत[6] किते गति तेज वहै, वयवस्क[7] किते रन मग्ग वहै ।
वयकल्ल[8] किते दल अग्र वढै, चिव हुस्तप देत कलाप चढै ।।६४७
परछाँहि निचूलन छूट पटा, घनकारीय साँमन जाँन घटा ।
रव घट बजे घरीयारन ज्यौं भर प्रष्ट हवहृन भारन सौ ।।६४८
करतै तरु तोर तमग्ग कढै, वपु येक तै येक प्रभिन्न वढै ।
वढ बाज पवीनत[9] पख्खरीया, जर तारीय जीन सजे करीया ।।६४९
मुख जत्रन सार सुधार मुखा, रसमी असवार विचार रुखा ।
धनु कधर जाँन विवाँन धरा, सभराँन ऊडाँनन ऊँच सिरा ।।६५०
रव-वसीय साद्रस प्रोथ रजे, लख काँनन केत की फाँक लजे ।
चल-धावन चचल चातुर यौं, पलटै पग आतुर पातुर ज्यौ ।।६५१
धर पाँव उलट्ट पलट्ट धरै, कुलटा जनु नैन कटाछ्छ करै ।
उभकै पग गात समेत उडै, चकरी जल मीनक ऊद्ध चढै ।।६५२
तडता गत ज्यो तिरछे तरकै, फिर फाल लँगूलन ज्यो फरकै ।
वहु कर्कर पिंगल वर्न वने, घट रग खुँगाह उराह घने ।।६५३

---

१ राजा की सवारी योग्य। २ हाथी की भूल (पाखर)। ३ पीतल। ४ साँकल। ५ सिंदूर। ६ दस वर्ष की आयु के। ७ बीस वर्ष की आयु के। ८ तीस वर्ष की आयु के (वयकल्प)। ९ जीन सभे।

कपला केऊ नीलक रग कढे, चिव देत कुलाह सवार चढे ।
वरुथाँन रुहालक मग्ग वहै, गनि चचल पाटल रंग गहै ॥६५४
केऊ रंग कीयाह सुरुहक के, तन सोन हलाहल रगत के ।
हय राजत केतक रग हरी, सभ सेन तुरगी पथ सरी ॥६५५
धुर धोरत्त चाल सुन्यार धरै, सिखी कक करोडक वभ्र सरै ।
गत केक वलोठ[1] तुरग गहै, वढ धाराय प्लूत अनूठ वहै ॥६५६
अत वेग उतेजत चाल उडै, वर वाज ऊतेरत चाल वढै ।
हय धाराय पच प्रकार हके, तेऊ वाढीय चडीय जुद्ध तके ॥६५७
मयमत्त क्रमेलक भुड मिलै, गत चचल गाजत नद्द गलै ।
भर पिंड प्रचड प्रासाद भती, जट धारीय जगल केर जती ॥६५८
जुग आसन प्रष्ट पवीन जमै, कस अग दुतगन मग्ग क्रमै ।
श्रुथनी लघु स्रौनिन थाटक के, कुलनासन दिघ्घ क्रकाटक[2] के ॥६५९
वपु मिस्रत रग मजीठ वने, घट मेचक रजन रग घने ।
उड़ चालत राँनक माँन अटा, धर गध्रव दीसत जेम घटा ॥६६०
जुवराज[3] के सैनक सग जुरे, भल दीसत लोचन खून भरे ।
केऊ विस्वर चक्रीय सग क्रमे, जिह लायक पीठ सवार जमे ॥६६१
भट ककट-व्यूढ उछाह भरै, जघ-त्राँन तथा सिरत्राँन जरै ।
भुज-त्राँन सुवार नागोद भिरै, केऊ जालका सज्जत अग करै ॥६६२
फरसा-धर प्रासक वीर फवै, सभ साक्तक यष्टक धीर सवै ।
कर खग्ग लीयै कोऊ अग्र क्रमै, जमदाढ क्रपालका स्रौनि जमै ॥६६३
सिल मूसल सूल लीयै सवला, परचड पराक्रम के प्रवला ।
धनु धारीय प्रोथ कटीर धरै, सर येखन लिप्त प्रदीप्त सरै ॥६६४
कृतहस्त विसारद जुद्ध-कला, पच आसन डाव रचै प्रवला ।
पग वाँम तैं दछ्छन अग्र परै, धर द्वैकर अतर वक्र धरै ॥६६५
आलीढ लखौ इह आसन कौ, अरी साभन जुद्ध अभ्यासन कौ ।
इक हाथ के अतर पाँव अरै, सोई राख वराबर जुद्ध सरै ॥६६६
वयसाख सु आसन येह वदै, सोइ वीर विसारद वुद्धि सधै ।
पग दछ्छन तैं जुग हस्त परै, धर वाँम जु पाँव सुवार धरै ॥६६७

१ भुकते मुख से । २ ऊँट । ३ निसुभ ।

इह प्रत्यय लीढ सु आसन यों, इह भेद लहै गरु आगम यों।
समपाद सु आसन येह सुनौ, द्रढ राख बराबर पाव दुनों ॥६६८
पग आड रू दीढ सँवार पहै, कवी मंडल आसन येह कहै।
भल आसन पच प्रकार भजे, सब रीत सरागन की समुझे ॥६६६
कृतहस्त विहगम वेव करैं, धर धीरज मस्तक हस्त वरैं।
गहि वाँन कवाँनन प्रान गही, रन थाँन गयाँनन जाँन रई ॥६७०
वपु पौरुष येक तें येक वढै, मदमत्त महा रस वीर मढै।
वज आनक भेर भयाँनक त्यों, वर वीर वढै मुख वाँनक त्यों ॥६७१
चल प्यादीय फौज चँदोलन मैं, हय-मादीय फौज हरोलन मैं।
रथ वीच दिये जुवराज हु कौं, सज आयुव जुद्ध समाजहु कौ ॥६७२
वढ डम्मर खेह विताँन वन्यौ, सम अवर-मवर मेव सन्यौ।
मग चालत रथ्थ धुजा मुरकी, फिर लोचन वाँम भुजा फुरकी ॥६७३
सुर देखत वद्दर ओट समा, अह काल छई जनु रात अमा।
कर चाप निसुभ टँकार करैं, भग आवत मग्ग उछाह भरै ॥६७४
कहिकै हँस देवीय कालीय कौं, सज सैन लखौ वल सालीय कौं।
सजकै तन मूरख साँगन कीं, मिलकै मृतु आवत माँगन कौं ॥६७५
इह आस की फाँस के वीच अरै, कर चाप लीयैं सर-मार करै।
हन वाँनन कौ अवही करहूँ, करकै जुध देव सुखी करहूँ ॥६७६
कर चाप लीयौ इतनी कहिकै, गुन मस्तक वाँन दये गहिकै।
सिघराँन सँवारन गौन सरची, प्रतना दनु पै धुरराय परची ॥६७७
जल सागर मानहु सैन जमी, कहुँ जोग प्रभजन पोत क्रमी।
घन दाँनव दीसत जेम घटा, चिव देवीय राजत रूप छटा ॥६७८
भर ताल ज्युही रन ताल भरै, करटी[1] मनु वीच विहार करै।
थल आसुर दीसत चक्र घिरै, पर जीवन जाँन बघूल परै ॥६७६
भिर जभक मल्लक सिंघ भखै, तिम देवीय गाहत खग्ग तकै।
केऊ वाँनन मार निपात करै, पर जुथ्थन लुथ्थ पै लुथ्थ परै ॥६८०
कीय सैनक त्रासत जुद्ध-कला, झमकै रन देवीय आग-झला।
भट दाँनव जुद्ध उछाह भिरै, ज्वल दीप पतग ही जेम जरै ॥६८१

---

१ हाथी।

धर धीरज के थिर पाँव धरैं, जिम साखीय व्र द दवाग जरैं।
ललना तहाँ आय निसुभ लखी, रचना अदभूत विचार रुखी ॥६८२
चख हल्लक दीठ लखै तिरछी, वढ दाँनव घाव बहै वरछी।
रसवीर वीभछ्छ भयाँन रटी, व्रती राचत ताडव आर-भटी ॥६८३
पुन रीझकै दाँनव प्राँनन कौ, वरसाय लहै धनु वाँनन कौ।
जीय आस तजी रू निसुभ जुरचौ, धनु ताँन प्रतचन वाँन धरचौ ॥६८४
जगतव कही मुसकाय जहाँ, करकै द्रढ आस्त्रव सत्य कहाँ।
अधलोक प्रयाँन करौ अवही, सवही परवार समेत सही ॥६८५
ऊर्धलोक की आस जो होय अखी, मडहु रन आसुरराय मुखी।
दोऊ रीत अभै-पद देवन कौ, भल चित्त सुनौं मम भेवन कौ ॥६८६
जुवराज उदत सुनी जहँवाँ[1], तमक्यौ तन द्वेष जरचौ तहँवाँ[2]।
गम पायकै खेटक खग्ग गही, जगतव खरी चढ स्रिंघ जँही ॥६८७
दहु के सिर ऊपर दाव दयौ, लख अवका घाव वचाय लयौ।
वढ घाव अपूरब दाँव वन्यौ, हट देवीय ताहि कुठार हन्यौ ॥६८८
लग कधर तौऊ न नैंक लटचौ, जीय आस तजी फिर जुद्ध जुट्यौ।
कर देवीय घटाय नाद करचौ, भयदायक दाँनव स्रौन खरचौ ॥६८९
सुरराय करचौ तहाँ पाँन सुरा, अवमर्द विडारन कौ असुरा।
उर भेपन देव अदेवन सौं, भय जुद्ध तहाँ वहु भेवन सौं ॥६९०
सव झुंड की झु ड उठी सगती, मिल दाँनव मार करै मुगती।
कोऊ दड प्रहार अदेवन कौ, दीय मोद सवै विध देवन कौ ॥६९१
तहाँ वैस्नवी चक्र लीयैं तमकी, चपला जनु स्याँम घटा चमकी।
कहु सक्तीय वज्र प्रहार करै, पव वासव पव्वय जाँन परै ॥६९२
त्रपुरा-रिपु चोट त्रसूल तकै, दल दाँनव आग झला दहकै।
कऊमारीय सक्ति-प्रहार करैं, भुजकट नृसघीय जुद्ध भिरै ॥६९३
जुर सगर सत्ति परजन की भट दाँनव के घट भजन की।
जहाँ रोख वराहीय जुद्ध जुरी, अत जभक मारत सैंन अरी ॥६९४
अकुलाय अदेवन सझ्झ अनी, वढ देवीय ता सम रार वनी।
चल वाँनक-वाँनन भाँन छयौ, वरछाँन क्रपाँनन घाव वह्यौ ॥६९५

---

१ मू. प्र जहांवां। २ मू. प्र. तहांवां।

दहुँ ओर तें हूलन सूल दुरैं, कहुँ चक्रन-चक्रन रार करैं।
स्त्रवला स्त्रवला प्रवला सभ्कैं, उठ आग झला विजुला अजकें ॥९९६
केऊ अस्त्रन-सस्त्रन रार करैं, भल जोगन रक्तन पत्र भरैं।
तन त्राँन तथा सिर त्राँन तुटैं, फरसाँन भुजातर सार फटैं ॥९९७
कोऊ घाव रचैं करवालन सौं, भचकैं केऊ व्यालन-भालन सौं।
भट दाँनव पिंड प्रचंड भिरैं, जहाँ देवीय झुंडन-झुंड जुरैं ॥९९८
तन तंड वयंडन सुंड तुटैं, अरि खंडत मुंडहु रुंड उठैं।
घन जाँन उमंड-घुमंड घुरैं, कल दंड तहाँ रव चंड करैं ॥९९९
भट जूह प्रचारत मूह भिरैं केऊ कातर आरत कूह करैं।
बलसालीय कालीय कोह बढ्यौ, मिल ज्वालीय मालीय रूप मढ्यौ ॥१०००
जहाँ जुद्ध उतालीय चालीय ज्यो, घट देत क्रपालीय घालीय त्यौं।
भुज-दंड विसालीय फौज भखैं, रन तालीय पालीय नाँहि रुकैं ॥१००१
वरसालीय रैंन अमा विहरैं, क्रम ऊद्ध करालीय जुद्ध करैं।
पटकैं कहु सिंधुर सिंधुर पैं, झटकैं रथ त्यो रथ पैं झरपैं ॥१००२
गटकैं केऊ दाँनव मेल गरैं, सटकैं केऊ कातर पथ सरैं।
हटकैं केऊ समुँह वीर हलैं, मटकैं केऊ देह न खेह मिलैं ॥१००३
रटकैं केऊ जुथ्थन-जुथ्थ रुलैं, दटकैं भट दारुन हौंस डुलैं।
ठटकैं गहि आयुध अग्ग ठिलैं, नटकैं जिम नाँचत अंगनि लैं ॥१००४
अटकैं केऊ सम्मुह आवत्त मैं, वटकैं केऊ वैर वढावन मैं।
चटकैं सोई आय गहै चुगटी, भटकैं चख आग चढी भृगुटी ॥१००५
खटकैं खग खप्पर वाढ खिरैं, लटकैं सिर कंधर हूँत लुरैं।
कटकैं कहु कालज की किरकैं, फटकैं कहु फिप्फर हू फरकैं ॥१००६
जमदाढ हु खंजर वाढ जुरैं, केउ कुंजर पिंजर पार करैं।
झरपैं केऊ वाज झपेटन तैं, फिर ताहि प्रहारत फेटन तैं ॥१००७
रथ स्वारथ दारत वाज रथी, मिल घाँन मथाँनन फौज मथी।
भभकैं रव स्रौनत त्यो वभरैं, झरना गिर गैरक जाँन झरैं ॥१००८
कहुँ जोगन झुंडन-झुंड क्रमैं, रच डाकन साकन रास रमैं।
तहाँ भूत वितालन तालन लैं, मुंडसाली जहाँ रुंडमालन लैं ॥१००९
किख कोक मृघादन सद्द करैं, फिर बोलत लोल फिरंड फिरैं।
पल भार लीयैं गल पंखनीयाँ, सरसात चुरैलन सखनीयाँ ॥१०१०

पल ग्रास करै कोऊ स्रोन पीयै, हरकै-करखै वहु मोद हीयै ।
धर पुरव देवन छाय धरा, कट खाल कंकाल कपाल किरा ॥१०११
रन भूंम भयंकर रूप रचो, मिल आसुर कीन रू गौद मची ।
घट घायल दाँनव घूंमत है, झुक केक कवंधहु झूमत है ॥१०१२
कल कालीय फौज नियात करी, पर लोथन ऊपर लोथ परी ।
वल देख घटचौ दनुराव वढचौ, कर अंतक रूप कराल कढचौ ॥१०१३
थित सग्र ऊतंग सु अंग थटै, पच दून हजार भुजा प्रगटै ।
वर आयुध तिछ्छन धारन कै, कर कोह वढचौ रन कारन कै ॥१०१४
अत सद्द भयंकर त्यो उचरचौ, भर पौरुख छायकै आय भिरचौ ।
वर सस्त्रन-अस्त्रन रार वढी, चहुँ ओर वरा चकडोल चढी ॥१०१५
डगमग्गीय अद्रज कूट डुलै, झगमग्ग प्रलै जनु आग झलै ।
मंड देव विवाँन छये मिलकै, घट दाँनव घाव घने घलकै ॥१०१६
कर वाँनन जंग विहाल करचौ, मदमत्त तऊ नहिं जुद्ध मुरचौ ।
अत तिछ्छन सार वहै अनीयै, गिरकौ त्रन मारत ज्यो गनीयै ॥१०१७
वढ आयुध वज्र समाँन वहै, अंग लागत फूल समाँन वँहै ।
वरखा मिल वाँनन की वरसै, सिर पव्वय वूंद ज्युँही सरसै ॥१०१८
गहरै स्वर मेघ ज्युँही गरजै, वपु दाव प्रहारनतै वरजै ।
रचना रन राचत नाँहि रुकचौ, झट देवीय समुह आय झुकचौ ॥१०१९
तहाँ खग्ग मृगाधिप सीस तकी, सोई अवका चोट वचाय सकी ।
कर अवका खग्ग प्रहार करचौ, पर खग्गन-खग्ग सु पार परचौ ॥१०२०
गहि दाँनव गाढ त्रसूल गह्यौ, द्रग देखत ताहि गिराय दयौ ।
लग आग हीयै फिर साँग लई, द्रढ काटकै ताहि गिराय दई ॥१०२१
कल दाँनव वज्र प्रहार करचौ, हटकै रन देवीय ताहि हरचौ ।
सवही भुज आयुध दुष्ट सझचौ, गहराय तहाँ भर सद्द गज्यौ ॥१०२२
अकुलाय कै देवीय जुद्ध अरी, प्रलयाँनल आग मनौ पसरी ।
भुजदंड प्रहारत रोस भरी, झुक अस्त्रन-सस्त्रन मंड झरी ॥१०२३
कर दाँनव दारत जुद्ध क्रमै, रच आर भटी वृति रास रमै ।
कर आसुर काट विहाल कीयौ, लख आँनन व्यूढ पसार लीयौ ॥१०२४
चित चंचल देवीय ओर चल्यौ, द्रढ मंडकै व्रह्मीय दंड दल्यौ ।
तहाँ वैस्नवी चक्र प्रहारत ही, द्रुत दाँनव कै वपु मार दई ॥१०२५

त्रपुरा तहाँ सूलन हूल तकी, जिह लागत दाँनव बुद्धि जकी ।
कर सक्रीय वज्र प्रहार कीयौ, हहराय निसुभ प्रकप हीयौ ॥१०२६
द्रज जभ वराहीय मार दई, भुजकठ नृसिघीय भेद भई ।
दीय मार क्रततीय दडन कौ, खल चड महाँवल खडन कौ ॥१०२७
कऊमारीय सक्त प्रहार करी, ऊतपाटत भौ तहाँ दर्प अरी ।
तहाँ वारुजी और जुरी त्रसरी, कर आयुध लै वहु मार करी ॥१०२८
कीय भार सकत्तीय[1] चद्रकला, झुक वायवी सगर आग झला ।
कढ कालका खग्ग प्रहार कीयौ, हट जुद्धइ भार विदार हीयौ ॥१०२९
सिवदूतीय स्रौंन पीयौ सवही, तन ता निरजीव भयौ तवही ।
भख भैरवी जोगन भोग भयौ, लख डकनी-सखनी खाय लयौ ॥१०३०
लहि सक्तिन मोद गुडेर लये, भल देख अनदत देव भये ।
वरसावत फूल विमाँनन सौं, गहरै स्वर गध्रव गाँवन सौ ॥१०३१
सव देवीय देव रिझाय सही, कर जोर नमे वहु क्रीत कही ।
जगतव चरित्र पवित्र जथा, कवी 'वुद्ध' कही इह जुद्ध-कथा ॥१०३२

दोहा

जूझ्यौ समर निसुभ जहाँ, सैन घटी वहु सूर ।
आये के कातर असुर, हरक नृपत हजूर ॥१०३३
सुभ नृपत पूछी समुझ, वल निसुभ की वात ।
कैसे तज आये कलह, भीरुक तज मम भ्रात ॥१०३४
करी अरज तिन जोर कर, भीरुक पिंजुल भेस ।
कीने व्याकुल चर्चकी, करकै कठन कलेस ॥१०३५
भिर सगर जुत चारु भट, भ्राता राज भुआल ।
सूते दीरघनीद सव, वीरासनहि विचाल ॥१०३६
सुदर रूप स्रगार सझ, भूषन आयुध भार ।
जुद्ध जीत ठाढी जहाँ, सव दाँनव सघार ॥१०३७
जय-जय वोलत देव-जस, देव सवै सुख देत ।
दाँनव-कुल दुख दायनी, कालरात्र तम केत ॥१०३८
नारी इह प्राक्रत नही, ऊतंम सक्त अनूप ।
करत जुद्ध अत क्रूद्ध कर, रचत विवध विध रूप ॥१०३९

[1] मू प्र. सकतीय ।

सुर जीते सग्रांम सभ, दनुज मनुज सह देस।
गनहु विपर्जय काल गत, निसचै इही नरेस ॥१०४०
अवला वस वरती अनिस, सो भई वज्र समॉन।
गूढ इहै कछु काल गत, समुझहु भूप सयाँन ॥१०४१
करन त्रान नभ केनका, सयन रेनका सार।
दीरघनीद निसु भ-दल, पौढे पाव पसार ॥१०४२

कवत (कवित्त)

सत्रू ह्वै अजेय तातै मेल करै संधि गुन,
सत्रू कौ उजारै देस विग्रह मुजाँनीयै।
सत्रू सिर जानौं सोई य न गुन तीजौ जाँन,
आनौ फिर चौथौ गुन आसन बखांनीयै।
दोय सत्रू होय तहाँ येक वोल वध द्विधा,
इहै गुन पचम है नीकै अनुमॉनीयै।
देख कै प्रवल सत्रु औरही कौ आस्रय लै,
आस्रय है खष्टम गुन इहै उर आँनीयै ॥१०४३

दोहा

दुरग कोस बल पूर द्रढ, सो प्रभुत्व इह सक्त।
उर उछाह जुत जीत अरि, इह उछाह विध-युक्त ॥१०४४
सक्त मत्र है तीसरी, जाँनहु नृपत सुजाँन।
लखहु नाम तै लछ्छना[1], इहै सक्त अनुमाँन ॥१०४५
सवल होय तौ स्यॉंम कर, लोभ दाँम ललचाय।
भेद दड जाँनहु भलै, ये गरू च्यार उपाय ॥१०४६
वेस पलट माया विवध, तजै उपेक्षा ताय।
इद्रजाल जप होम अरु, इह त्रय क्षुद्र उपाय ॥१०४७
जाँनहु खट-गुन नीत जुत, तीन सक्त लहि तत।
च्यार उपाय विचार चित, महपत आप महत ॥१०४८

---

१ मू. प्र लछना = लक्षरण।

कवत (कवित्त)

मृघीया त्यो अक्ष खेल लपट त्रोयान सग,
मादक को सेवन कठोर वॉनी कहीयै।
कृपन परायौ धन खोसवे की चाह चित्त,
इहै अर्थ दूसन है खष्टमहु जहियै।
अल्पत कसीर[1] तापै दीरघ हो दड देत,
पारुख कहत तातै नीत रीत गहीयें।
सप्तक विसन इहै अरथ विरोधी जाँन,
राजन समर्थ को निवर्त सदा रहीय ॥१०४६

दोहा

वात कही इह मत्र विव, सवहि रीत समुभाय।
कीजे भूप उपाय कछु, नीत प्रीत जुत न्याय ॥१०५०
काल भयौ अनुकूल जव, जीते देवन जग।
सो विलोम ह्वै सघरत, पेखहु काल प्रसग ॥१०५१
कोट दुरग सज कीजीयै, अथवा तजीयें ऐंन।
कीजे रक्षा देह की, नय उपाय लख नैन ॥१०५२
अवसर्पन[2] की सुन अरज, नरपत दर्प निधाँन।
वोल्यौ विवध विचार-जुत, सव विध न्याय सुजाँन ॥१०५३
सत तेता[3] द्वापुर समय, जानहु कलजुग जोय।
च्यार जुगन की चौकडी, लखै सयानें लोय ॥१०५४
अन्द तिताली लाख अरु, वीस सहस्र विसेस।
जुग च्यारही की जाँनीयै, संख्या इह क्रम सेस ॥१०५५
चिर इकहतर चौकडी, मिलै सक्र फिर मीच।
इंद्र चतुर-दस आव्रटै, ब्राँह्म दिवस इक वीच ॥१०५६
तिन दिवसन गन तीन सै, सख्या साठ सिवाय।
व्रह्मा के दिन को वरख, सवहि कहत समुभाय ॥१०५७

---

१ कसूर। २ समाचार देने वाले। ३ त्रेता।

तिह संख्या तै वरख सत, जीवत ब्रह्मा जाँन।
ब्रह्मा तै दुगने वरख, विस्नू आयु वखाँन ॥१०५८
विस्नू तै दुगने वरख, सकर अवध समस्त।
उतपत ताकौ अत है, गनहु नास भय-ग्रस्त ॥१०५९
अवर धर पावक पवन, ग्रह नछत्र नभ गौंन।
सव कँह वरतत येक सम, कहौ मृत्यु-भय कौन ॥१०६०
धुम्रनयन कौ ध्वसकर, चडमुड हन चड।
रक्तबीज पीनौ रुधर, मिल काली रन मड ॥१०६१
नास्यौ खेत निसुभ कौं, मम भ्राता कुल-मौर।
विसरूँ ऐसे वैर कौ, वँह कातर कोई और ॥१०६२
जै है धन, तन जायगौ, रहै न आसुर राज।
जस तौंहू नहि जायगौ, आखर इही इलाज ॥१०६३

छंद मोती दाँम

इती कहि भूप उठ्यौ अकुलाय, वढ्यौ उर दारुन क्रोध बलाय।
मरोरत मुछ्छ तज्यौ तन-मोह, चबावत दतन ओठ चछोह ॥१०६४
भृगूटीय दिठ्ठ भयाँनक भेस, मनौं प्रलयानल रूप महेस।
प्रचारीय सासन वोल प्रधाँन, धरौ उर काज सवै रजधाँन ॥१०६५
सजौ भट चारु सु अँग सनाह, उदायुध जुद्ध विचार उछाह।
सवै भट सासन सीस चढाय, सभी तव दाँनेव की समुदाय ॥१०६६
समै लख भूप करी वगसीस, विधोविध अस्त्रन-सस्त्र वरीस।
दीये वहु जाचक विप्रन दाँन, वदै वृद मागध सूत विधाँन ॥१०६७
रचे तन अवर कुकम रग, अनूपम मौल[1] बन्यौं ऊतमग।
वँधे विहु बाँहन मैं भुजवध, छई चिव मोतीय मालच छंद ॥१०६८
गही कर वाँम सु चर्म संग्राह, चक्यौ रस वीर करै रन चाह।
तहाँ कर दछ्छन लै तरवार, सुझे तन आयुध केक सँभार ॥१०६९
जुहारकै वृद्ध तहाँ वरजोर, चढ्यौ रथ भूप ढुरावत चौर।
जहाँ चिरमेहीय चचल जोत, कसे वसु[2]-साझ भई कलधौत ॥१०७०

---

१ मुकुट। २ चांदी।

भयाँनक ऑनक वज्जीय भेर घुमडीय सिंधव राग घनेर ।
सभ्भै बहु जूथ बरूथनि संग, अटै असमाँन भुजा ऊतमंग ॥१०७१
दरारन दारत स्रंग डुलाय, प्रलै जल आसुर फौज पुलाय ।
नफीवन हाक वढी जुध नीम, मवै धर चाक चढी दध सीम ॥१०७२
तरक्कत चालत संग तुरंग, द्रवै खुरतालन ज्वालन द्रग ।
चढी रज अंबर भाँन छिपाय, दसू दिस अंधर धुंध दिखाय ॥१०७३
उडै गज केतन भुंड उचूल, भुलै पट रल्लक[1] रोहित भूल ।
किते भट कंकट व्युढ करूर, सभ्भै तन जाल निचोलक सूर ॥१०७४
सभ्भे केऊ सारमई सिर स्रौंन, तहाँ केऊ वीर सभ्भे भुज-त्रौंन ।
किते कर सज्जत कूँत कुठार, धरै अस केतक तिछ्छन धार ॥१०७५
गदा गहि तोमर मंड गरूर, कपालका सक्त त्रसीरख क्रूर ।
कसै कट केतक वाँन कलाप, छकै रन रास लीयें कर चाप ॥१०७६
दुरंतर लच्छ्छत तीरमदाज, अटै मुरवी विसफार अवाज ।
अडंवर वाजत जुद्ध ऊछाह, रुके धर अंबर पव्वय राह ॥१०७७
ललक्कृत सैन वढी रिस लाग, उठै जिम दाह-निकेतन[2] आग ।
प्रहारन चंडीय जुद्ध प्रसंग, सवै पुर रूठ चल्यौ नृप संग ॥१०७८
प्रकंपत दिग्गज सुंभ प्रयाँन, निसारन तुट्टत नीर निवाँन ।
भरक्कृत सेस फनालीय भार, धरक्कृत धूजत पव्वय-धार ॥१०७९
करक्कृत कछ्छप पीठु किराह, बरक्कृत दारत दाढ[3] वराह ।
मनौ जल सागर छोड़ मृजाद, वढ्यौ दल आसुर लाग विषाद ॥१०८०
जहाँ ललकार करै मुख जोध, संघारहिं देवीय कौं रन सोध ।
चलै केऊ चत्वर जुद्ध चपेट, उखारहिं नाहर मुछ्छ्छ अमेट ॥१०८१
कहै इक कालीय के गृह केस, प्रहारहिं कंधर पुज्जहि पेस ।
कहै इक देवन कौ कर दाँव, प्रहारहिं संगर मडहि पाँव ॥१०८२
कहै इक ब्रह्मीय दंड कराल, वकारहिं ताकँह जुद्ध विचाल ।
कहै इक वैस्नवी कौ कर क्रोध, विडारहिं ताकहिं लेय विरोध ॥१०८३
कहै इक है त्रपुरा जुत क्रुद्ध, जँही हम जायँ जुहार है जुद्ध ।
कहै इक सक्तीय वज्र कठोर, जुहारहिं जुद्ध तिही वरजोर ॥१०८४

---

१ घनातआदि । २ धुआ । ३ मू प्र॰ दढ ।

कहै इक दूठ क्रततीय केर, बकारहिं जुद्ध बने जिह बेर।
कहै इक जुद्ध वराहीय क्रूर, प्रचारहै ताहीय कौ वलपूर ॥१०८५
कहै भुजकंट नृसिंघीय कट्ट, बिडारहिं ताकँह बैर विकट्ट।
प्रभजनी वारुनी, श्रीदनी पिंड, खडाननि[1] मार करै तन खंड ॥१०८६
कहै रवि[2] दीसत छिद्र कितेक, विसारद बुद्ध विचार विवेक।
पताकन तूटत है विन पॉन, अवद्दर गाजत है असमाँन ॥१०८७
असाकुन धूमर सजुत आग, निहारेऊ, वृछतुछा फिर नाग।
मिले ऊनमत्त दुखी गुड-मेल, तथा ऊपला विटहू तिल-तेल ॥१०८८
कटे फिर बल्कल ईधन कीच, मिले अय स्रंखल दायक मीच।
मिले फिर तक्र तहाँ तुस माख[3], रजू फिर ओखधहू सिल राख ॥१०८९
निरख्खीय खडत भाजन लाँन, प्रकपन सम्मुह वेग प्रयाँन।
अमगल काठ कपास जू आय, वरख्खीय मेघ जहाँ जुत वाय ॥१०९०
छुटे कच वदन हीन चिनार, निभा[4] मिल गैरक वस्त्रन नार।
पलक्रीय[5] गर्भवती चख पेख, रुदतीय पुस्पवती अवरेख ॥१०९१
खुध्यातुर खट्टन हू खलवाट, निपुसक दतुर के अवनाट।
मिले नर सोग उद्योगीय मग्ग, अपाटव[6] व्याकुल आवत अग्ग ॥१०९२
जटाधर मुडत जोगीय जोय, विना द्वज चर्चक भाल विगोय।
चढे खर विस्वर माहिक चाल, विलेपन अवर क्रस्न विहाल ॥१०९३
सुने स्रुत धीरठ च्यार सवद्द, कुरकर जुद्ध लख्यौ अत क्रुद्ध।
कुलाहल अग्र भयौ फिर कीर, भई द्रग गोचर सारका भीर ॥१०९४
लखी फिर वाँम जु वोलत लाट, कपिंजल दछन बोल कुघाट।
दिवाधक दछन हूकन देत, कपोतहु दछन वोल कुहेत ॥१०९५
करापका वोलीय वाँम किराहि, चहूँदिस पिंगलका चहचाय।
मिली कढ वाँम दिसा मृघमाल, कढे मृदु-लोमक अग्र कुचाल ॥१०९६
कढे फिर वाँम जु गडवी कोक, सवै भयदायक मृत्यु ससोक।
फिरै वखदसक लोल फिरड, झपेटत ग्रीवन चिल्लन झुंड ॥१०९७
विचारत आपुम मैं बतरात, कहै कोऊ घात किधौं कुसलात।
धरै ऊर धेख करै दल धूम, भयंकर जाय लखी रनभूम ॥१०९८

---

१ स्वामी कार्तिक की शक्ति (कौमारी देवी)। २ रवि = सूर्य। ३ उर्द। ४ आभा-रहित। ५ धवल केश वाली। ६ रोगी।

कटे गज जुथ्थन-जुथ्थ कितेक, क्रमेलक झुड परे कट केक।
तुरगम जग परे केऊ तूट, जहाँ खर विस्वर हूरन जूट ॥१०९९
कटे किंह अग्रज भ्रात कनिष्ट, कटे पित पित्रव घोर कलिप्ट।
परे मुरदा-दल पाँनन पाँत, ऊडे गहि गिधंन चिल्लन आँत ॥११००
खसोटत कोक मृगादन खाल, सरीरन ऐंचत स्वाँन स्रगाल।
वभक्कत स्रोनन खालं विख्यात, वहै जल नाल ज्युँही वरसात ॥११०१
कटे भट भूपत देख कुटव, जुहारेऊ क्रोध धिखै जगतंव।
दिपै तन रोहित जीन दकूल, मनौ जग जीवन की दुति मूल ॥११०२
उभै पग कोमल कज अनूप, रजै पदपल्लव पत्त्र रूप।
सुसोभत त्यो पदमूल सु रग, रचै मनु ऊपर जावक रग ॥११०३
वजै कल नूपर भीन अवाज, मँजीरक काँम प्रवेसन माझ।
अनूपम पिडका भ्राजत आप, किधूँ मधुदीप कलव कलाप ॥११०४
महा रमनीय रजै उरूमड, सुसोभत बालक व्याल सुसुंड।
सुसोभत केहर ज्यो कटसध, वनै चलनी फिर उच्चय-वंध ॥११०५
प्रभा गृह राजत दिव्य पिचड, मँडी तिह ऊपर नाभीय मड।
प्रभा जिह काँम सरोवर पेख, रजै तिह ऊद्ध रुमावल रेख ॥११०६
वनी चिव किंकनी ओप विसाल, मनौ गृह काँम के वदन-माल।
पयोधर सोभत हैं जुग पीन, निरतर कचन कुभ नवीन ॥११०७
वनी तिह ऊपर कचुक वेस, मनौ पटके नका सीस-महेस।
दियै भुज ओपम चपक डार, अलक्रत, अगद रूप अगार ॥११०८
वने कर-ककनहू व्रत[१] वेख, प्रकासत पुज प्रभा परवेख।
लसै अगुली यकहूँ अगुलीय, निरस्तुल कचन के कमनीय ॥११०९
मिले वृख अकुस हू अत मजु, प्रकासत हीर-कनी दुति पुजु।
रजै चिव कठ ज्युँही त्रय रेख, अलक्रत मोतीय-माल असेख ॥१११०
विराजत सुन्दर क्रत विसाल, मिली उर जाँन नछत्रन-माल।
मिली तिह ऊपर चिवुक मजु, कली मनु पकज की दुति कूजु ॥११११
वन्यौ तिल ऊरध स्याँम विकास, अस्यौ जनु भौंर सुगध की आस।
लसै रद-वस्त्र[२] अनूपम लाल, प्रभा लख लाजत रग प्रवाल ॥१११२

---

१ गोलाकार २ ओठ।

दिपै रत पत महाँ सुख दैन, मनौ गज मोतिन के छद मैन।
सुसोभत नासका कीर समाँन, अलंक्रत वेसर सज्जत आँन[1] ॥१११३
अनुपम अवक भा अरविंद, छले जग जीव विलोकन छद।
वुहारन ओप वनी चिव वक, धरचौ मधुमारथि जाँन धनक ॥१११४
विराजत सुदर भाल विसाल, लसै तिह ऊपर विंदीय लाल।
वदै निह ओपम वुद्ध विचार, उग्यो अधचद मनौं ध्रुव आर[2] ॥१११५
कपोलन ओपम और कहै न, मनौ दहुँ सद्रस दर्पन मैंन।
छई चिव काँनन कुडल छाँह, मनौ जुग नक्र फिरै जल माँहि ॥१११६
छुटी अलकावल आँनन चद, मनौं दुति भेटत है ग्रह मद[3]।
वरांगहू पाटीय स्यामल वार, किधो मध अवर मग्ग कुमार ॥१११७
फवै सिर गुफत सुदर फूल, झुके मनु आय नछत्रन झूल।
वनी चिव वैनीय गुफत वार, किधौ तरु चदन नाग कुमार ॥१११८
दिपै स्वर कोकिल[4] ज्यो मुख दैन, वदै फिर चातक अमृत वैन।
अनूपम सिजतहू ध्वन और, भनकत सीस सुगवीय भौंर ॥१११९
अनूपम अवर पाट उदोत, जगी जर-तार किनारीय जोत।
निरजनी अजन राजत नैन, अनूपम वदन की चिव ऐंन ॥११२०
अपूरव मूरत रूप अपार, किसोरीय वेस महाँ सुकमार।
ऊदायुध राजत सिंघ अरोह, छयौ उर ऊद्ध पराक्रम छोह ॥११२१
करालीय कालीय द्रष्ट करूर, हरावल सगर सग हजूर।
व्रह्मीय हस चढी वल वृद्ध, पराक्रम वैस्नवी सक्त प्रसिद्ध ॥११२२
त्रलोचनी मोचनी दुष्टन तथ्य, सक्र दनी वज्र लीयै कर सथ्थ।
क्रततनी दड धरै कर क्रुद्ध, कुवेरीय धारन दारुन क्रुद्ध ॥११२३
परजनी गंजनी दाँनव पिंड, पराक्रम वायवी वेग प्रचड।
कुमारीय-सक्ति लियै कर कोह, भ्रुगुटीय दिठ्ठ भयाँनक भौंह ॥११२४
वराहीय ऊद्ध पराक्रम वाँन, नृसिंघीय दारुन क्रुद्ध निधाँन।
धरै सव अस्त्रन-सस्त्रन धेख, विधोविध वाहन आद विसेख ॥११२५
लीयै अप-अप्पन प्रकंत लार, अनी सज सगर ह्वै हुसयार।
ठयौ सव ठौरन ठौरन ठाट, घुमडत देवीय जुथ्थ अघाट ॥११२६

---

१ मुख। २ मगल। ३ शनि। ४ मू प्र कोकल।

विराजत अवका झुंड विचाल, मनो विधु बीच नछत्रन-माल।
सवै स्वर पुज्जत सुद्ध स्वरूप, अलक्कत फूल चढाय अनूप ॥११२७
सवै सुभ लच्छन रास सरीर, भरी सब देवीय की सग भीर।
निरखीय भूप जहाँ नियराय, कही कछु देवीय सों मुसकाय ॥११२८
दिपै सुभ लच्छन स्वच्छ दिखात, विलच्छ छन[1] काम करै कहा बात।
मरालन चालत जे गत मद, मयूर की चालत चाल अमद ॥११२९
सवै तन दीसत की सुकमार, बनी द्रढ सब सु कोन विचार।
सुसोभत धीरज सग सुभाय, अधीरज जुद्र रही अकुलाय ॥११३०
सदा रस सोभत अग सिंगार, रचै रस वीर सदा विच रार।
अनूपम भूखन है अनुराग, विडारत दाँनव होय विराग ॥११३१
हितू रस हास ज्युंही रत हाव, भरी रस रौद्र हीयै किह भाव।
नचै त्रीय कँसकी वृत्त सुनाच, रही मोड आर भटी वृत राच ॥११३२
परी कछु मोकँह तोहि पिछाँन, अनारत भासत भाव अजाँन।
वुहारन आविध चाप वनाय, सधे सर नैनन कों सरसाय ॥११३३
कटाक्षहु मारकै लच्छ कलव, लगावत पौरुख नार प्रलव।
सुगधत तेल-फुलेल सँनाह, त्रीया-गन मभ्भ्य करै तन ताह ॥११३४
मनोरथ रथ्थ करै जग मोह, करै किह कारन धारन कोह।
अपा तज जुद्ध जुरै उमगात, गहै सर चाप उघारत गात ॥११३५
सिखावत जो कछु कालीय सीख, निहारहु ताहि को आक्रत नीक।
सुने फिर चडीय स्रोन सबद्द, सिवा सत जेम करै सोई सद्द ॥११३६
कला तज काँमि करै रन-केल, मिलै फल सग तजै सोई मेल।
उदायुध बैठीय सिंघ अरोह, डरावत जीवन कौं कर द्रोह ॥११३७
कीयौ प्रन जुद्ध अकेलीय काय, सभी सग देवीय क्यौ समुदाय।
उजागर आस्रव तोर अलीक, निहारीय द्रष्ट सवै विध नीक ॥११३८
कीयौ वहु दाँनव वस अकाज, अवै कर जुद्ध स्वयवर आज।
लीयै सब देवीय देवन लार, निहारहु तोहि पराक्रम नार ॥११३९
भुजा मम राखत नैक भरोस, जुहारत जुद्ध धरै उर-जोस।
कही सब दाँनव की सुन कथ्थ, तवै दीय देवीय उत्तर तथ्थ ॥११४०

---

1 मू प्र विलछन।

दिखावत तो होय कौ इक द्वैत, उपासत देव स्वरूप अद्वैत।
भलै स्वर आसुर मैं इह भेद, निहारहु भाव हीयै निरबेद ॥११४१
दहूँ नित आसुर कौ इह दोस, भजै स्वर मोकँह येक भरोस।
लखो सब सक्त भई मम लीन, परेखहु दाँनव राय प्रवीन ॥११४२
कही जगतंब इहै जब कथ्थ, सकत्तीय लीन भई इक सथ्थ।
सनातन रूप रह्यौ सोई सेस, अचभत देख भयौ असुरेस ॥११४३
कही तब देवीयहू फिर कथ्थ, सँपेखहु कारन आद समथ्थ।
मुनीस्वर जोगीय जाँनत मोहि, सुविद्या रूप उपासत सोहि ॥११४४
लखै जग मोमहि मैं जग लीन, महाँ जल सागर ज्यो मन मीन।
निकारत तत सु ऊरननाभ[1], समेटत ताकहँ फेर सताब ॥११४५
परेखहु या विध मोरें प्रपच, रचूँ जग भेद न जामहि रच।
दिवाकर और प्रभा नही दोय, तिही बिघ जाँनत रगहु तोय ॥११४६
अनेकन रूप प्रकासत येक, अहूँ कहुँ धारत रूप अनेक।
कही दनुविंद्र तबै कर कोह, धरै उर-धीरज पै कछु द्रोह ॥११४७
चलाचल पावन तोहि चरत्र, प्रकासत मायक रूप पवित्र।
लखी तोहि रूपवती निज नैन, सभै भट-चार सँघारीय सैन ॥११४८
महाभट चड रु मुड कौ मार, हन्यौ रन धुमर-नैन हकार।
बली फिर रक्तहुबीज कौं घात, भुजा मम फेर हन्यौ निज भ्रात ॥११४९
भई कछु गर्ववती इह भाय, निकारहुँ बैर निहारकै न्याय।
मिटाय कै तौकहँ दर्प महाँन, प्रचारहुँ धारहुँ पीडनपान[2] ॥११५०
दविश्टहु रूप कै तोहीय दभ, सबै विध लायक जाँनहु सुभ।
धरघो तव यो कहि हाथ धनक, प्रहारीय दाँनव गारधपख ॥११५१
मिले दनु मडीय बाँनन मार, उमडीय माँनहु मेघ असार।
जुरी सर रूप अनूपम जग, भ्रमै नभ माँनहु भीम भुजग ॥११५२
मची करवालन भालन-मार, क्रपालका पट्टस दड कुठार।
तहाँ चल अस्त्रन-सस्त्रन तीर, भई सिर देवीय ऊपर भीर ॥११५३
अनी सभ दाँनव सगर आय, उदायुध जुद्ध जुरे अकुलाय।
घने मिल देवीय मारत घाव, धरै सब देख अकेलीय धाव ॥११५४

१-मकड़ी। २ विवाह।

अचभत देख भये सुर आद, वढ्यौ उर अतर घोर विपाद।
हहा रव वोलत डोलत हीय, जहाँ अकुलावत त्रासत जीय ॥११५५
तहाँ लख देवनकौ जुत त्रास, हीयैं कर देवीय जुद्ध हुलास।
सरासन हाथ गह्यौ सर सध, महाँ रिपु दाँनव ताक मदध ॥११५६
प्रहारन लाग महा सर-पुज, भयकर दाँनव के घट भज।
वढी इम देवीय की हथवाह, दहै जिम पौंन लगै त्रन दाह ॥११५७
छयौ उर क्रोध भृगूटीय चढ्ढ, वकारत मारत दाँनव वढ्ढ।
भलपन डाव मृगाधिप मुड, भपेटत वाज मनौं खग-भुंड ॥११५८
रिसानीय उग्र भवाँनीय रार, परी दल दाँनव सीस प्रहार।
मची तहाँ सगर वाँनन मार, परै जिम पव्वय वज्र प्रहार ॥११५९
उमडत दाँनव ज्यूँ घन आय, विखेरत वद्दर ज्यो चल वाय।
जुरै दनु आयकै देवीय जग, परै जिम दीपक आय पतग ॥११६०
जहाँ अदभूत भवाँनीय जग, रचै रसवीर लीयैं ऊच रग।
वृह्मा आद सवै सुर व्रद, असीसत देवीय छाय अनद ॥२१६१
चपेटन मारत सिघ चछोह, दहै खल फेटन तै रच द्रोह।
जुरै भृगुसिख रचै सर जाल, वढै जिम देवीय क्रुद्ध विसाल ॥११६२
मनौ निध-जीवन कौ तज मोह, करीरज[1] पीवनकौ कर कोह।
रिसाँनीय येम भवाँनीय रार, सघारत दाँनव कौं गह सार ॥११६३
उड़ै रथ वाँगन तै कढ अत, तरासत तूल ज्यूँही चढ तत।
परै गज जुथ्थन-जुथ्थ पलाय, नदी जल वाढ करारन न्याय ॥११६४
इतै रन राच भवाँनीय येक, उतै खल जूटत आय अनेक।
उदै गिर सूरज होत उदोत, ज्यूँही गत होत नछत्रन जोत ॥११६५
विलावत दाँनव त्यूँ कर वाद, अखडत देवीय रूप अनाद।
कही तिह मार सकै भट कोय, सवै जग कारन जाँनहु सोय ॥११६६
रची जिन दैतन देवीय रार, परयौ दल है दल पैदल पार।
धिक्यौ असुरेसहु के उर वेख, पराक्रम देवीय भेव परेख ॥११६७
हल्यौ चिरमेहीय चचल हाक, कला जुध कौसल सिभ कजाक।
कहे केऊ वायक फेर करूर, सवै विध लायक सगर सूर ॥११६८

[1] अगस्त्य ऋषि।

वजावत नाँहि विपचीय वाद, निनादत सख भयकर नाद।
अनूपम नारीय कोमल अंग, भ्रमै मम बुद्ध करूँ कहा भग ॥११६९
विचारकै टारत हूँ रथ वाँम, कहूँ सोई और करौ इह काँम।
जुरी चहै मोसन जुद्ध जरूर, कुरूपनी होहु सुभाव करूर ॥११७०
वनावहु मथर दत-नवास, ज्युँही नत दतन-पतन जास।
वनावहु नैनन रूप विलाव, प्रभागत भगुर हू जुग पाव ॥११७१
वनास्रय[1] अगहु रग वहोर, सिवा जिम आँनन वानीय सोर।
खरी जव होवहिगी रन खाँत, मिलै मम हाथन सौ तुहि माँत ॥११७२
सवै कर पकज तै सुकमार, न चाहत काटन कौ हम नार।
सुनी इह दाँनव की कथ स्रौन, करी जगतव सु आहव कौन ॥११७३
कही तव चडीय कालीय काज, सघारहु दाँनव जात समाज।
इहै इक काँमीय है अवसेस, उभै मिल खेत हनौ असुरेस।'११७४
कह्यौ सुन-देवीय कौ कर क्रुद्ध, जुरी दनुविद्र गदा गहि जुद्ध।
भई इत कालीय रूप भयाँन, उतै दनुविद्रहु वाहु अजाँन ॥११७५
रची दहूँ ओर वरावर रार, परी खल ऊपर सस्त्र-प्रहार।
जहाँ मिल देखत देवहु जुद्ध, महाँ मुनीदेव भये मन मुद्ध ॥११७६
गदा गहि सुँभ चल्यौ मगरूर, सँभारकै कालीय कै दीय सूर।
गदा दीय कालीयहू कर गाँन, पराक्रम छाय उठायकै पाँन[2] ॥११७७
तुट्यौ रथ कचन मच सहेत, खुटे चिरमेहीय स्वारथि खेत।
हल्यौ दनुविद्र हु पैदल होय, सँभारकै उच्च गदा कर सोय ॥११७८
इही तिह कालीयकै हीय दौर, जमायकै पाँन भ्रमायकै जोर।
वचायकै कालीय चोट वकार, तहाँ कर तिछ्छन लै तरवार ॥११७९
दई कर वाँम परचौ कट दूर, भुजगँम लोट लगावत भूर।
कटी इक वाँह तऊ कर क्रुद्ध, जुरचौ फिर कालीय सौं दनु जुद्ध ॥११८०
स्रवै रत कधर चिछ्छन छूट, वही गिर किदर वीर वहूट।
उठायकै दछ्छन पाँन अवीह, स आयुध रूठ चल्यौ जिम सीह ॥११८१
घने घट कालीय कै कीय घाव, दुरतर, दाँनवहू रच दाव।
करचौ तव कालीय क्रुद्ध कराल, लयै करवाल कीयै चख लाल ॥११८२

१ काग, कौआ। २ हथ।

पट्टकीय दाँनव पै वल पूर, कट्टकीय माँनहु वीज करूर।
परचौ कट दच्छ्छन पाँन प्रलव, वढ्यौ दनुविंद्र न कीन विलंव ॥११८३
चढ्यौ खल छत्तीय पै रन चाहि, वढी उर कालीय रीस वलाय।
करचौ करवार कौ वार प्रकोप, तुटचो सिर कुंडल सजुत टोप ॥११८४
रुप्यौ रन खेत विना सिर रुड, खिलायकै ख्याल करचौ मत खड।
परचौ पुहमीन भयौ गत प्राँन, मरौ नृप निंभ वली अप्रमाँन ॥११८५
इन्द्रादिक देव वृंदारक और, वजायेऊ दुंदुभी वाज वहोर।
मुनिव्रन विप्रनहूँ तज मोह, सनातन धर्म प्रचारीय सोह ॥११८६
हुतासन पूजनहू जिग होम, भई नव रिद्धीय-रिद्धीय भोम।
नदी नर स्वच्छ निवाँनन नीर, सुगंधत सीतल मद समीर ॥११८७
अनामय ह्वै दसहूदिस ओक, वढे जन जातन होय विसोक।
वचे केऊ दाँनवहू जिह वार, वसे अघलोक मैं भीत निवार ॥११८८
कथा इह पावन देवीय काँन, सुनी जनमेजय भूप सयाँन।
वखाँनीय श्रीमुख व्यास विसेस, अनूपम देवीय कौ उपदेस ॥११८९
सुनै कोऊ पाठ करै सुविचार, पराक्रम पुत्र वढै परवार।
पदारथ चार लहै कर प्रीत, मनोरथ मगल दायक मीत ॥११९०

दोहा

व्यास वखानी वारता, सगर देवी सुंभ।
सुर नर मुनि स्याहिक सदा, जगजाँनी जगतंव ॥११९१
पुन जनमेजय प्रीत पख, विनय कीन श्रीव्यास।
किह आराधी कौन विध, पूजन कहहु प्रकास ॥११९२
सौनकादि कौ सून जू, कहत सुनहु दे काँन।
कुरुपति सौं कथ व्यास कहि, वरनत सहित विधाँन ॥११९३

छंद हंसगती

मन्वंतर स्वारोचिष माहीं, समह तिही नृप सुरथ सुहाही।
परम उदार प्रजा नय पालक, घट विक्रत सत्रुन दल घालक ॥११९४
छत्र-धर्म रत धर्म सयाँनौ, जत गुरु-भक्ति विप्र-कुल जाँनौ।
धनुर्वेद अत चतुर धारना, काँमी कुटलन सुम्रत कारना ॥११९५

करत राज निरभय कोलापुर, धीर वीर नय नीत धुरधर।
वासी परबत मेछ[1] बढे वल, दस-दिस जीतन काज चढे दल ॥११९६
मार-मार तिन दुंद मचायौ, छित मडल मैं विग्रह छायौ।
है-दल पैदल घुमँड हजारन, करत जहाँ-तहाँ जुद्ध अकारन ॥११९७
भयौ कुलाहल चहुँ दिस भारी, राजा चढ्यौ करन रखवारी।
जुद्ध करचौ पुन भयौ पराजय, भाग्यौ पाय मलेछन कौ भय ॥११९८
पाछौ फिर आयौ निज पुरकै, दुरग बीच बैठो सोई दुरकै।
मत्री मिले मलेछन माँही, ताप पाप कौ पाय तहाँ ही ॥११९९
मन ही मन सोचत महाराजा, करचौ मलेछन मोर अकाजा।
मत्री तज्यौ भरोस मिलन सौ, जिह विध चेह विचारचौ जन सौ ॥१२००
मिलकै करैं कैद जो मोही, कहूँ वचाव न दीसै कोई।
ठिक तज लोभी करत ठगाई, सुह्रिद मात-पितु नाँहि सगाई ॥१२०१
विप्र गरू स्वाँमी कहावे वै, दुष्ट लोभ-बस दगा जु देवै।
निगम विचार सुरथ नृप नीती, पुन- मत्रीजन तजी प्रतीती ॥१२०२
घोरै चढ चाल्यौ सोइ घर सौं, देस तज्यौ निज याही डर सौ।
भूप सुरथ सत्रुन भय भीनौं, डेरौ जाय विपन मैं दीनौ ॥१२०३
द्वादस कोस जहाँ तैं दूरा, परम पवित्र सुद्ध मत पूरा।
नाम सुमेधा वसै निरतर, कछु अतर पै ताही कतर ॥१२०४
मुनि आस्रम नृप गयौ महाँना, लहि विसवास चित्त ललचाँना।
निकट नदी बहै निरमल नीरा, सीत मद सोगध समीरा ॥१२०५
मृघ निरवैर बसै जिह माँही, कुजन-पखी केल कराँही।
पढत वेद सिष गिरा सुपावन, सुनीयत काँन ग्याँन सरसाँवन ॥१२०६
होम सुवास रोग मल हरनी, आस्रम छाय रहे उद्धरनी।
धीरज पाय नरिंद्र धुरधर, आस्रम देख अनद भयौ उर ॥१२०७
अस की भूप तजी असवारी, सत-रूप लख भयौ सुखारी।
पाँव गहे मुनके पुन महिपत, महिपति मुनि समुझ्यौ आरत मत ॥१२०८
कीय सतकार मुनी नृप केरौ, विगत ताप जहाँ कीयौ बसेरौ।
कछु दिन रह्यौ लीयं कदराई, राजा देख रह्यौ मुनिराई ॥१२०९

---

१ म्लेच्छ।

मुनि प्रसन्न ह्वै इक दिन महिपत, पूछी नृपत कही कथ्य मुनि-प्रत।
वैरिन राज लीयौ वरीग्राई, मत्री जाय मिले तिन मांई ॥१२१०
जीय विसवास तज्यौ मैं जनकी, धरा गई ग्ररु गोयौ धनकौ।
सुनी वडाई मुनि मैं स्रौनन, कीय ग्रास्त्रय ग्रास्त्रम पुन काँनन ॥१२११
सरन ग्रापकौ लीय सुखकारी, हित कर मेटहु विपन हमारी।
सुन मुनि करयौ नृपत सवोधन, मुनि ग्राश्रम कीय वास मुदित मन ॥१२१२
खोज-खोज फल-फूल ही खावै, वसै विपन ग्ररु दिवस वितावै।
एक दिवस घँरकी सुध ग्राई, ठाट-पाट सूनो ठकुराई ॥१२१३
पुत्र नार सवही परवारा, रह्यौ नहीं कोऊ रखवारा।
सिफा वृक्ष पर वैठौ सोचत, मन ही मन उमास हीय मोचत ॥१२१४
येक वैस्य ग्रायौ इतने मैं, चैन भयौ ताकौं चितने मैं।
ग्रादर कर वैठायौ वाकौं, जीय सौं दुखन जांनकै जाकौं ॥१२१५
वैस्य पाय विसवास वसेक्त, करन लगौ राजा तासौ कथ।
को तुम भ्रात कहाँ तैं ग्राये, पेख तुमहिं हमही सुख पाये ॥१२१६
नाँम समाध वैस्य हम नरपत, सवही धन लीनौ नारी सुत।
निज घर तैं तिन दीयौ निकारी, ग्रौर कौन मोहि देय उवारौ ॥१२१७
ग्रायौ चाल विपन मै येको, विपत पाय ह्वै दुखत विसेको।
वैस्य कही ग्रपनी कथ वीती, पूछी कथा नृपत कर प्रीती ॥१२१८
ग्राप कौन हौं करहु उचारा, वनकौं कैसे वास विचारा।
राजा कह्यौ, सुरथ मैं राजा, सत्रुन खोस्यौ राज-समाजा ॥१२१९
ग्रायौ जीव वचावन ग्रारन, करत वास ग्रारन इह कारन।
भली भई ग्रवतौ सुन भाई, मिल रहिहैं कर विपन मिताई ॥१२२०
तुम हम येक भरम सौं त्रासे, खुस रहिहैं वतरावत खासे।
मुसकल काटहि मरदा-मरदी, दरदी सौं मिलकै दिल दरदी ॥१२२१
बैस्य कह्यौ सुनीय नृप वाता, सुख सौं मन मांनत नही माता।
नारी सुत मोहि करयौ निरादर, उर विसरै नहिं तनकौ ग्रादर ॥१२२२
मो विन डोलहिं कोऊ दिन माँही, रात दिवस इह सोच रहाँही।
द्रग सौं जाय तिनहि कौं देखूं, विनता सुत ग्रवगुन न विसेखूं ॥१२२३
निस दिन चित्त थिरावत नाँही, भयौ भौर की पोत ग्रमाँही।
सुन नृप तवै वैस्य कथ सांची, विधवत वात वैस्य प्रत वाँची ॥१२२४

तेरौ मन जैसै नित तरसै, दीरघ दुख हमहूँ कौं दरसै।
कारन जाय मुनहुँ कौ कहिकै, लखै बिचार ग्याँन कौ लहिकै ॥१२२५
उभय विचार चले मति येकौ, वात पूछवे काज विवेकौ।
उभय जोर कर मुनि कै आगै, लाभ वारता पूछन लागै ॥१२२६
राजा कह्यौ सुनहु मुनिराया, मित्र वैस्य मम घेरयौ माया।
नारी पुत्रन कीयौ निरादर, काँनन मैं आयौ होय कादर ॥१२२७
पुन नही तजत तिनही सौ प्रीती, ह्रिदय करत चिंता नित रीतो।
ऐसै ही हमहूँ वन आये, चित हमरे चिंता दुख छाये ॥१२२८
अपनै उर जाँनत अनुमाँना, सवहि राज-सुख सुपन-समाँना।
वनी रहत निस-दिवस वासना, भूलत तऊ न भाव भासना ॥१२२९
करहु दूर यह भमय कारन, निज हिय कौ अग्याँन निवारन।
नरपति वचन सुने मुनिनाथा, ग्याँन कहन लागे पुन गाथा ॥१२३०
सुनहु नृपत इह रीत सनातन, जग की वंव मोक्ष है जा तन।
इह कारन देखहु हीय-आँखन, मति के मारग सोच मन ही मन ॥१२३१
ब्रह्मा विस्नु महेश्वर वासव, श्रीद वरुन जमराजहु साचव।
देव नाग निसचरहु अदेवा, भल जाँनहु पसु पछ्छन भेवा ॥१२३२
तरु वल्ली आदक जग जेते, इक माया कृत है सब तेते।
गुन सौं उतपत जीव गनाये, वध मोक्ष के पात्र वनाये ॥१२३३
माया जाल वधे सव माँनौ, परमेष्ठी हरिहर पहिचाँनौ।
कौन गनत है मनुजन केरी, महाराजन सुनीयै कथ मेरी ॥१२३४

दोहा

मुनी सुमेधा विमल मति, कहन लगे कछु कथ्थ।
वैस्य समाध सहेत विव, सुनवै लगे सुरथ्थ ॥१२३५

छद उधौर

मुनी[1] सुमेधा महाराज, रुच देख वैस्यहु राज।
इतीहास परम अनूप, भल कहन लागे भूप ॥१२३६

---

१ मुनि।

विध विस्नु ईस विसेस, सब देव आद सुरेस।
बलवती माया बंध, फंस रहे ताही फंद ॥१२३७
विध विस्नु की इक बात, सुन होउ भूप सुनाय।
सित दीप-बीच सिधाय, कीय उग्र तप निज काय ॥१२३८
इक अयुत बीते अब्द, लखै सु तपस्या लब्ध।
हसगहु विद्या हेत, तप करत ग्यांन निकेत ॥१२३९
बीती सु तिनकौ वार, सम विस्नु काज सुधार।
उठ चल्ये इछ्या आप, तब छोरकै तन-ताप ॥१२४०
मिल गये मारग माँहि, अनजांनपन मैं आय।
इत वदन च्यार अनत, भुज च्यारहू भगवत ॥१२४१
पूछी सु इक-इक पेख, परभाव चाव परेख।
कवि[1] कह्यौ हम करतार, सब रचत इह ससार ॥१२४२
जब कह्यौ अच्युत जौन, करतार हम तुम कौन।
वस रजोगुन विलगाय, करतार फेर कहाय ॥१२४३
हम सतोगुन-जुत होय, करता कहै सब कोय।
कहि परसपर इम कथ्थ, सम अटे-देव समथ्थ ॥१२४४
विध विस्नु उरझे वाद, पर गये फद प्रमाद।
नहिं तजत येकहु नेम, जुर रहे असफुट जेम ॥१२४५
वँह भयौ अवसर येक, विच लिंग प्रगट विसेख।
अत तेजवत अनत, अध ऊर्द्ध जाहि न अत ॥१२४६
सित रग आभा सूर, जगमगत तेज जहूर।
सिर भई जबहू सुद्ध, आकास-वांनी उद्ध ॥१२४७
आकास जावहु येक, पाताल येक परेख।
इह चिन्न लावहि अत, मति वडौ सौय महत ॥१२४८
विन अरथ तजीयै वाद, अग्यांन रूप उपाध।
मध्यस्थ हमकौ मांन, परभाव देहु पिछांन ॥१२४९
पाताल लावन पार, चाले तहीं भुजच्यार।
विध चले अबर वाट, उर पाय अमित उचाट ॥१२५०

---

1 ब्रह्मा।

विस्नु चले वहु वार, पायौ नही कछु पार।
दैत्यारि[1] आये दौर, ठहरे सु ताही ठौर ॥१२५१
पहुँचे न विधहू पार, हीय रहे आपौ हार।
अनुताप कर आलोच, पुन परे मन सौं सोच ॥१२५२
केतकी फूलहु कोय, सिव गिरचौ सिर सौं सोय।
मिल गयौ विध कै मेल, झट लियौ ताकौं झेल ॥१२५३
गये जहाँ तक कर गांन, थक आये ताही थाँन।
बोले सु झूठ विचार, पायौ सु लिंग ही पार ॥१२५४
सिव चढचौ लायौ सीस, वर फूल विसवाबीस।
विध सौं कह्यौ हरी वाच, साखी बतावहु साच ॥१२५५
बोले विरंचन वात, है सुमन इह मम हाथ।
उर सत्य कै आधार, बोलहि सु कुसमै विचार ॥१२५६
विध कही इतनी वात, वच बोल कुसम विख्यात।
मैं चढचौ सिव के मथ्थ हर-भक्तहू कै हथ्थ ॥१२५७
लाये सु विध तिह लेह, अज साच जाँनहु येह।
जब कह्यौ विस जवाब, हम कहैं बात हिसाब ॥१२५८
कित होय साखी कोय, जिह कहत लच्छन जोय।
सुन लेहु वेधा काँन, मम सत्य वाचा माँन ॥१२५९
चित होय प्राजल चाल, बिसनी न ह्वै बाचाल।
वादी यथारथ वात, सम द्रष्ट धीरज साथ ॥१२६०
निरवैर कोविद-नीत, परमार्थ सौं हीय प्रीत।
वँह माँननीय उदंत, सब कहत मुनि जन संत ॥१२६१
हम कहत हैं हीय हेर, वृषअंक[2] इक इह वेर।
सोइ माख भरहि समथ्थ उर छोरकै अनरथ्थ ॥१२६२
बोले हरी जिह वार, नभ गिरा भई निरधार।
सुन केतकी मम सीख, इह कहत बात अलीक ॥१२६३
भई पतित अपने भाव, उर हमही पाय अभाव।
बिच लई ताहि विरंच, सुभ काज लाये संच ॥१२६४

---

१ विष्णु। २ शिव-लिंग।

साँची न दीनी साख, मैं तजी तोकौ भाख ।
इह कही सिभु उचार, चाले सु ऑनन च्यार ॥१२६५
लाचार ह्वै गहि लाज, सुन जगत के सिरताज ।
सिर चढत सिव नही सोय, कली केतकी की कोय ॥१२६६
वलवती माया वेग, इम करत जग उदवेग ।
छल करत लोलुप छोह, महाँ ग्यॉनीअन कौं मोह ॥१२६७
विध विस्नु की इह वात, जन मॉनवी कहा जात ।
भ्रम पाय आपौ भूल, भर मोहमैं रहे भूल ॥१२६८
श्रीपती हु स्नेष्ट विसेख, अवतार लेत अनेक ।
तज दया कर-कर त्रास, वध करत दनु विसवास ॥१२६९
महा-प्रक्रत निर्मत मॉन, जड़ जीव जगम जाँन ।
माया रही सोइ मोहि, सिव विस्नु आद सकोय ॥१२७०
वधन रु मोक्ष विख्यात, है भगवती कै हाथ ।
भजोयै सु ताही भाव, कहा कहैं और कहाव ॥१२७१
सुन सुरथ नृपत सयॉन, बोले सु मुनि प्रत वॉन ।
महमाय कौंन मुकाम, अरु रूप कहा अभिरॉम ॥१२७२
उतपत कहाँ तै आद, महि मडता मुरजाद ।
सव देहु मोहिं सुनाय, महमा सु श्रीजगमाय ॥१२७३
वोले सु मुनि तिह वार, नृप सुनहु इह निरधार ।
वँह है अजन्मा आद, इह जगत जाहि उपाध ॥१२७४
कारन हु कारन काज, सव सक्ति रूप समाज ।
विन सक्ति प्राँनी यूढ, मुरझाय होवत मूढ ॥१२७५
नित चेतना जिह नाँम, करता सु पूरन काँम ।
सुर मनुज काज सिहाय, अवतार लेत है आय ॥१२७६
वस काल नाँहि वलिष्ट, वँह सवही जीवन इष्ट ।
अनगनत सक्ति अनूप, म्यासत सु जगमैं भूप ॥१२७७
वपु वीच नाना वेख, वँह सक्ति दीसत येक ।
परवाह जाहि प्रसिद्ध, वँह सदा थिर अविरद्ध ॥१२७८
द्रष्टा सु पुरख दईव, जग द्रस्य रूपी जीव ।
जननी सु माया जाँन, पुन पिंड पोखनि प्राँन ॥१२७९

वनवाय इह व्रहमड, माया सु नाटक मड ।
पऊराँन पुरख पुनीत, पुन करत रजत प्रीत ।।१२७६
लय करत सोइ जग लील, महा वलवती चख-मील ।
माया सु जग की मात, तुम भजहु निस-दिन तात ।।१२८०

दोहा

वेस्य, राज सुन वारता, पूछ्यौ मुंनि प्रति प्रस्न ।
तहाँ माया कौ कहहु तुम, आराधन मति ऊस्न ।।१२८१

छद द्वंअखरी

कहन लगे मुनि सुनकै कथा, जगजननी आराधन जथा ।
मत्र होम विध-जुत महामाया, दायक सुख च्यारहु फल दाया ।।१२८२
प्रथम स्नाँन कर होय पवित्रा, वरन सुक्ल धारै वपु वस्त्रा ।
करे आचमन, विधवत करकै, ध्याँन आद माया उर धरकै ।।१२८३
पूजन धाँम दिव्य कर पोतन, आसन तापै रचै उदोतन ।
वैठे जापै कर विसवासा, हिय सम-द्रष्टि हेत सहुलासा ।।१२८४
तीन आचमन करे सु तवही, साँमग्री पूजन कर सवही ।
प्राँनायाम करै जुत प्रीती, भूत सुद्धि करकै तज भीती ।।१२८५
साँमग्री फिर जल सौं सीचै, प्राँन प्रतष्ठा करे जु पीछे ।
कर सकल्पहु अगन्यास कर, न्याम-मात्रका करे निरतर ।।१२८६
पात्र ताँम्र कौ लहै पवित्रा, चदन घोट वनावै चित्रा ।
जत्र कोन खट लिखै जु जामै, अप्टकोन पूजा हित वामै ।।१२८७
वाहर विधवत जत्र बनावे, मात नवाक्षर मत्र मँडावै ।
आठ दलन मैं आठहुँ अछ्छर, अक्षर अत मध्य धर असथिर ।।१२८८
करै प्रनिष्ठा वेद-मत्र क्रत, हीय देवी सौं आँन परमहित ।
या विध वनै न रीत ऊधारा, निवहै यामलोक्त निरधारा ।।१२८६
मूरत थापन करै धातु मय, भजै मत्र-जुत जतन त्याग भव ।
पूजा करे रूप परमारथ, कर आराधन होय क्रतारथ ।।१२६०
जपै नवाक्षर-अष्टोतर जप, लहि प्रमाद-मति होय न लोलुप ।
ध्याँन सतादि सहित पूजै ध्रुव, होम दसाँस करै असथिर हुव ।।१२६१

ता पाछै दसास कर तरपन, वहुर दसांम जिमावै विप्रन ।
महाकाली[1] महालछ्छी[2] माता, वांनी देवी आद विख्याता ।।१२९२
कहै चरित इनके सुच-कायक, दुरगा पाठ आद सुभदायक ।
ईख[3] मास मधु[4] पख उजीयारा, इह व्रत करै हेत उद्धारा ।।१२९३
अपनौ सुख चाहै जो इछ्या, तौ व्रत धारै सहित तितछ्या ।
सहत सरकरा घिरत समाना, हवन करै तौ होय न हूना ।।१२९४
छ्गल मांस कोऊ छत्रै चढावै, विप्रन अहिंस्या रीत वढावै ।
लाल धतूर पुस्प कौ लावै, विल्ब-पत्र वरताव वमावै ।।१२९५
तिल सरकरा बसावै तौहू, करै कतारथ मान सकोहू ।
निरधन धनी होय निरधारा, पुत्र वढै, वाढै परवारा ।।१२९६
दारद दोख मिटावन दायक, लछमी सदा वढावन लायक ।
करै वरत जो नरपत कोई, हार सत्रु सौं कवहुं न होई ।।१२९७
विद्यारथी लहै पुन विद्या, उर की नासै सकल अविद्या ।
व्रत सुभकरता च्यार वरन कौ, कलुष हरन, मगलह करन कौ ।।१२९८
करै नार-नर व्रत सव कोई, जीय कल्यांन चहै उर जोई ।
मन वंचत पावै सुख मोखा, इह जगजननी-चरत अदोखा ।।१२९९
मिंदर सुंदरता कै मांही, चंद्रोदय ऊपर कर छांही ।
मांडै तहां अनूपम मडल, थापै कलस पूज ताही थल ।।१३००
ताकै ऊपर फेर तहां ही, जत्र सथापत करै वहां ही ।
मूल मत्र पढ जव व्रत मेलै, रुचर पवित्र नीर पुन रेलै ।।१३०१
पुन पुस्पन-माला पधरावै, धूप सुगधी दीप धरावै ।
चडीकौ नईवेद चढावै, देवी की उर-भक्ति दिढावै ।।१३०२
गावै मगल गीत कीत गुन, बहुर वजावै मगल-वाजन ।
कन्या पूजन सहित अनूक्रम, भली रीत सौं करै छांड भ्रम ।।१३०३
आठम तिथ नवमी उजीयारी, ततपर करै हवन की त्यारी ।
कर समाप्त विध वेद करम कृत, है देवी कौ जिही परम हित ।।१३०४
पारांयन दसमी कर पूजन, गरथ[5] दछ्छना देय जु दुजगन[6] ।
नार सुहागन व्रत इह नीकौ, परमारथ पतिव्रत हित पीकौ ।।१३०५

१ मू. प्र माहाकाली । २ मू प्र माहालछ्छी । ३ आश्विन मास । ४ चैत्र मास ।
५ गृहस्थ । ६ द्विजगण, ब्राह्मण ।

विधवा करै मुगत ह्वै वासा, वाढै हीयै मात विसवासा।
नित सुखदायक है नरही कौ, जो मुखदा सव जन के जी कौं ॥१३०६
राजा सुरथ सुनहु इह रीती, पद पकज कर मात प्रतीती।
पूजा करहु अवका पावन, निमचै तन त्रय ताप नसावन ॥१३०७
सत्रुन मिटहि पराक्रम सोहू, तेरौ राज मिलहि पुन तोहू।
पोखहि पुत्र नार परवारा, सुख भोगहु अवचल ससारा ॥१३०८
वैस्य करहु तुम याही व्रत कौ, थिर आदर पैहौ मनि थित कौ।
मित्र नार सुत रहहू मिलकै, चिता तज जावहु घर चलकै ॥१३०९
इह देवी-व्रत पूरै आमा, वसै अत मनीदीप ही वासा।
भक्ती माता करै भाव सौं, दुख सौं छूटै नरक दाव सौ ॥१३१०
सुनी कथा मुन सौं इह स्रांनन, पुन कीय विनय जोर जुग पाँनन।
नदी गग भागीरथ लायौ, छित मडल जाकौ जस छायौ ॥१३११
आप वस अरू जगत उधारौ, निरनय ऐसौ आप निकारौ।
पावन कथा मात-व्रत पावन, निमचय ससय सोक नसावन ॥१३१२
दीयौ सनाय इहै उपदेसा, कटहैं जासौ असह कलेसा।
विधीपूर्वक करे जप विधाँना, मत्र नवाक्षर देहु महाँना ॥१३१३
हुय प्रसन मुनि कर हीय हेतु, सहित वीज पुन ध्याँन समेतू।
नरपत दीनौं मत्र नवाक्षर, वैस समाधहु जाँन वरावर ॥१३१४
मत्र ग्रहन कर चले उभय मिल, थिर कर चित्त गये पावन थल।
वास नदी तट कर्‌यौ विचारे, निरजन वन येकत निहारे ॥१३१५
कर आस्रम आसन तहाँ कीनौ, भाव मात-भक्ती उर भीनौ।
मत्र नवाक्षर जपत मनहि मन, पुन सतोत्र दुरगा नव पावन ॥१३१६
ध्याँन परायन होय धुरधर, कर उपवास रु कसत कलेवर।
वीते मास येक तिह वन मैं, मात विसास हेत जुत मन मैं ॥१३१७
गये निकट इक दिन मतिग्याता, महपत व्यास नमाये माथा।
असथिर होय कुसासन ऊपर, दुरवल गात करत तप दुसतर ॥१३१८
राजा वैस्य देख मुनिराया, जपहु मत्र इह फेर जताया।
फलाहार इक वरख करे फिर, निहचल भक्ती करत निरतर ॥१३१९
येक वरख फल-दलहु अहारा, भये करत तनकौ दै भारा।
सुपनै मैं सोवत सुखदाँनी, भयौ दरस दोऊ साथ भवाँनी ॥१३२०

उर विसवास भयौ जुग[1] आई, मेटहै दुख जरूर मँहमाई।
ध्याँन करत मूरत हीय धारैं, दरस लालसा लगी दुखारैं ॥१३२१
फल तज जल अहार लै दोऊ, सहत सीत आतप तन सोऊ।
वरख येक इह रीत वितायौ, तप सौ नृपत वैस्य मन तायौ ॥१३२२
दीयौ दरस सुपनै मैं देवी, साँच ह्रिदय कर सव त्रिध सेवी।
जाँन दरस दीनौ जगदमा, वपु दुख भाजन तजै विडवा ॥१३२३
इह विचार मति मौ ह्वै आतुर, किहु विध भये न मन मैं कातर।
कुंड वनायो येक त्रकोनूं, दावानल जारयौ मिल दोनूं ॥१३२४
काटन लागे मास कलेवर, आहूती श्रोनत दै ऊपर।
जारन लागे गात जवै ही, तुरत दया कीय मात तवैं ही ॥१३२५
दीय प्रतछ्छ दरसन सुखदायक, वार-वार वोली इह वायक।
माग-माग वर जो मन वचत, कमी न राखहुं तामैं किंचत ॥१३२६
राजा वोल्यौ सुन सुरराया, सत्रु मित्र मिल मोहि सताया।
खोस राज कीय अधिक खवारी[2], निज पुत्रन विछुरे गृह-नारी ॥१३२७
वनमैं वैठौ विपत विताऊँ, पाछौ राज मोह मैं पाऊँ।
इह उर की मेटहु अभिलासा, निज रजधाँनी करूं निवासा ॥१३२८
जव सुनकै वोली जगदवा, वचन मोर राखहु विश्रवा[3]।
सत्र मिटहिं दुख घटहि सुग्याना, सव मिलहैं सुख संपत साता ॥१३२९
अनुवछ्छर इक अयुत अखंडत, महि मुरजाद नीत नय मंडत।
राज करहु सुरपत की रीती, पूरी लावहु ह्रिदय प्रतीती ॥१३३०
वपु त्यागन कर दूसर वारा, ऋतु सूरज-गृह रहहु कुमारा।
मुन्वतर सावर्न महाँना, होवहुगे पुन लखहै जहाँना ॥१३३१
वैस्य कहे देवी फिर वचना राजा सुरथ जेम प्रीय रचना।
वर माँगहु जनि करहु विलवा, अत सतुष्ट भई मैं अवा ॥१३३२
सुनी वैस्य देवी कथ स्रौंनन, उर भक्ती-जुत वोल्यौ आनन।
पुत्र नार वधव परवारा, स्वप्न समाँन भूठ संसारा ॥१३३३
मृघत्रस्ना तद्वत मँहमाया, क्रतम तत्व व्यूह है काया।
करूं भक्ति तोहि छाँड कल्पना, इह जग मैं कोई नाँहि न अपना ॥१३३४

---

१ जागने पर। २ ख्वारी, वरवादी। ३ विस्वास।

ग्यांन देहु तेरे गुन गाऊँ, पद निर्वांन अंत मैं पाऊँ।
इह सुन वैस्य वचन अनुसारा, अमल ग्यान दीय हेत उधारा ॥१३३५
जुगल जनन वर दै छिन जाई, श्रीअंबा निज लोक सिधाई।
लै वरदांन पाँय मुनि लागै, सुरथ वैस्य विव होय सभागै ॥१३३६
उभय रहे कछु दिन सुभ आस्रम, भीत निवार विसार सकल भ्रम।
मत्री प्रजा सकल जन मिलकै, हेरत-हेरत आये हलकै ॥१३३७
अरज करी राजा-प्रत ऐसै, भाग गये वैरी तुम भै[1]सै।
पुरी गेह की तुरत पधारौ, सर्वे राज के काज सुधारौ ॥१३३८
राजा चल्यौ लेय मुनि-रजा, पुरी आय सतोखी प्रजा।
मिल्यौ नार सुत पायौ मोदहु, कीय सागर सीमा चहुँ कोदहु ॥१३३९
पोखे सुत वधव परवारा धराधीस अवचल छत्र धारा।
विचरन लागौ वैस विग्यांनी, निसचल चित्त होय निरवांनी ॥१३४०
कही व्यास जनमेजय कथा, जाँनी महिमा देवी जथा।
पाठ करै कोऊ सुनै प्रवीनूं, ताप जाय तिनके पुन तीनूं ॥१३४१
भक्ति वढै उर आद भवांनी, देवो सब देवन सुखदांनी।
होय प्रसन जननि दुख हरै, इह लोक रु परलोक उद्धरै ॥१३४२

---

१ भय।

बुधसिंह चारण रचित

देवीचरित

द्वितीय भाग

षष्टम स्कध

दोहा

कही व्यास कुरुविंद्र सौ, महमा पावन मात।
सुनी सूत सौ श्रवन सोइ, सौनकादि मुनि साथ ॥१
सौकनादि फिर सूत सौं, प्रश्न करयौ सुख पाय।
सुत त्वष्टा वृत्तासुरहि, इद्र हन्यौ क्यौं आय ॥२
त्वष्टा सुर समुदाय तिह, अगज द्विज मति ऊद्ध।
विस्नु-प्रेरणा वध भयौ, वाढ्यौ केम विरुद्ध ॥३
सवही देव सतोगुनी, माँनव रज गुन मेल।
गनीयत दैत तमोगुनी, इह सिद्धात अपेल ॥४
सुरपत सभ्रव सत्त गुन, सतोगुनी हरि सुद्ध।
वृत्तासुर विसवास कै, कीय छल कस रन क्रुद्ध ॥५
कारन देवी वध करन, सूत कहहु समुभाय।
वली फेनजल सौं बध्यौ, ऐसौ कौन उपाव ॥६

छद उद्गोर

सुनकाद सौं सुन सूत, इह प्रस्न पर्म अभूत।
करुराज पूछी कथ्थ, इह व्यास सहित अरथ्थ ॥७
सोइ कहत हूँ समुझाय, सुन लेहु मुनि समुदाय।
जुध वृतासुर अरु जिस्नु, वचकपनौ कीय विस्नु ॥८
इह पुरानन आख्याँन, परसिद्ध जग पहिचाँन।
पुन करौ तुम इह प्रस्न, अव कहत हूँ मति ऊस्न ॥९
तजीयै सु ससय ताहि, मिल रहे माया माँहि।
मुनि विस्नु अरु मघवाँन, वचे न कोऊ वलवाँन ॥१०
अवतार लै हरि आद, वहु करत रहत विखाद।
दनुजात सौं उर द्रोह, कर कपट छल-वल कोह ॥११

नित करत जुद्ध निकद, इह रीत समुझहु इंद।
जन बँधे माया-जाल, हीय हेरहू इह हाल ॥१२
मम पुत्र इह मम मित्र, कुल एहु येहु कलित्र।
इह धरा इह मम ऐंन, वभ्रव इहै मम बैन ॥१३
उरझाय आपौ आप, सुरझाय नाँहि सँताप।
जग देह धारक जीव, सुख लहत दुखहु सदीव ॥१४
इह लखहु माया ईस, वलवती विसवावीस।
सुर विस्नु आद सकोय, माया रही जग मोय ॥१५
मधु निकदन मघवाँन, त्रिभ काज करत निदाँन।
हित आप तत्पर होय, सिध करत कारज सोय ॥१६
वाढ्यौ विरोध विख्यात, बासव वृतासुर वात।
सुन लेहु स्त्रौंनन सोय, समुझाय कहत सकोय ॥१७
इक देवगन मैं ऊद्ध, पुन तपोवल परसिद्ध।
प्रीय पितामह परवीन परजापती गुन पीन ॥१८
निभ तिही त्वष्टा नाँम, क्रतु भये करता काँम।
सभ द्रोह ऊर सुरपत्त, इक पुत्र कीय उतपत्त ॥१९
वँह नाँम परम अनूप, राख्यौ सु विस्वारूप।
ताकै सु आनन तीन, परचड पौरुख पीन ॥२०
मुख येक विमद महाँन, सोइ पढत वेद सुजाँन।
दूसरै मुख सुख दाँन, पुन करत मदरा-पाँन ॥२१
वर त्रतीय मुख विख्यात, सव दिसा देखत सात।
सोइ असर मुनि मति सुद्ध, सुख भोग त्याग समृद्ध ॥२२
तप करन लागे ताँम, वपु कठन छोर विराँम।
सो महत आतप सीत, आठहू पहर अभीत ॥२३
मुनि देखकै मघवाँन, अदेस वाढ्यौ आँन।
तप भग करन तिनूह, जोरयौ सु अछछर जूह ॥२४
प्रेरे सु तँह मुनि पास, हीय गई धार हुलास।
कीय हाव भाव कटाछ, नाची सु बहु-विध नाच ॥२५
सुर ताल-जुत सगीत, गाये मनोहर गीत।
वीनाद तत वजाय, स्रगार रूप सभाय ॥२६

कीय कथा काँम किलोल, ललचाय लोचन लोल ।
छल करे वहुविध छंद, मति डिगी नाँहि मुनिंद ॥२७
पुरहूत पहुँची पास, अत होय चित्त ऊदास ।
कर जोर वोलो कथ्य, सव रीत मुनि समरथ्थ ॥२८
कीय हाव-भाव कितेक, जहाँ चहै जत्न जितेक ।
गाई सु वहुविध गाँन, सुन मूक बधर समाँन ॥२९
लय जोगमैं हुय लीन, कछु नाँहि चितवन कीन ।
दीनौ न आप दुसार, इह मुनहू कौ उपगार ॥३०
डर गई हम तौ देख, वपु तेज पुज विसेख ।
अव और करहु उपाय, सुरराज काज सुभाय ॥३१
वोली सु अफछर वात, उर इंद्र गन उतपात ।
कीय मतौ मारन काज, लोभी सु तजकै लाज ॥३२
मुनि लयौ आस्रम मग्ग, गहि वज्र पाँन उदग्ग ।
दुति उग्र मुनिवर देख, तहाँ इंद्र वाह्यौ तेख ॥३३
मुन चिते नही मघवाँन, धारना धारै ध्याँन ।
छोर्यौ सुवज्र चछोह, मुनिराज उपज्यो मोह ॥३४
पुन गौंन कीनौं प्राँन, मुनि परे लख मघवाँन ।
जिह देख कीनी जेज, तन तजत नाँहिन तेज ॥३५
विस्मयत भये तिहवार, मृत है क जीव मझार ।
उर लाय परम अँदेस, सोचनैं लागे सुरेस ॥३६
तक्षा वुलाये ताँम, कहि इहै करहू कॉम ।
मुनिराज काटहु मथ्थ, ऊठे जु ह्वै अनरथ्थ ॥३७
उपगार कीजै येह, सुभ काज सहित सनेह ।
सुन कही तक्षा स्याँन, मम वात सुन मघवाँन ॥३८
मुन त्रसर कौ तुम मार, लीय वृह्महथ्या लार ।
चित करी नाँहिन छोभ, लाचार ह्वै वस लोभ ॥३९
अव कहत हमकौं आप, पुन होउ भागी पाप ।
सुख नाँहि कछु स्वारथ्थ, मुनि करै कल्पन मथ्थ् ॥४०
जव दयौ वासव जाव, हित चहत त्रात हिसाव ।
[illegible]

वध पसू करन विधाँन, जानत सु तुमही सुजाँन।
वलीदाँन विसवावीस, सोइ मिलहैं तुमकौ सीस ॥४२
हित जाँन तक्षा हीय, ललचाय परसुध[1] लीय।
मुनि सीस काटे मार, कल भयौ हाहाकार ॥४३
सिर टूट परत समाँन, इक भयौ अचरज आँन।
निकरे सु मुख नीसार, पखेरुआ अनपार ॥४४
जिग ओसधी पीय जास, पढ करत वेद प्रकास।
आनन सु वीच उदोत केऊ नीकरे जु कपोत ॥४५
मुख पीयत जिह मदराह, चटका सु निकरी चाह।
दिस मुखा जाहि दिखात, खरकोन[2] निकरे ख्यात ॥४६
निरमोक निकरत नीत, पुरहूत भइय प्रतीत।
मुन मृतक जाँन महाँन, मुद पाय गये मघवाँन ॥४७
स्रुत मुनी त्वष्टा सोय, हीय रह्यौ विसमय होय।
पुत्र विन अपराध, वज्री करचौ किम वाध ॥४८
मन विकल उपज्यौ मोह, कीय इद्र पै पुन द्रोह।
वोले सु त्वष्ठा वैन, निज देखहूँ वल नैन ॥४९
वध तोहि हित वलवाँन, उपजायहूँ सुत आँन।
त्वष्टा सु अमरख ताछ, सकल्प कीय इह साच ॥५०
विधसौ अथर्वन वेद, खल इद्र हित कीय खेद।
जाजुल्य अगन जगाय, आहूत दीनी आय ॥५१
इम दिवस वीते आठ, पुन करत आहुत पाठ।
इक होम-कुड अभूत, परगट्यौ सु दूसर पूत ॥५२
अत तेजवत अखड, पव्वय समाँन प्रचड।
द्रग देख सुत सुखदाँन, बोले सु त्वष्टा वाँन ॥५३
अहो इद्र सत्रू अनत, वाढौ सु तुम वलवत।
वाढयौ सु तेज विसाल, जनु दुतीय पावक ज्वाल ॥५४
तन दिघ्घ दीसत तेम, है मनहु गिरवर-हेम।
करता सु सत्रुन काल, वपु प्रवल अत विकराल ॥५५

---

१ फरसा। २ तीतर।

पुन बोल पितु जुत प्रेम, नय वेद देखहु नेम।
कर ससकार कृतग्य, तन करन नाँम जु तग्य ॥५६
पितु कहहु तत पश्चात्, वढ करहुँ जैसी वात।
व्रत करत जिह निरवाह, रोकदूँ सूरज-राह ॥५७
खित मेर सहित उखार, वोरूँ क समदर-वार।
कल इद्र वरुन कुवेर, जमराज कौं कर जेर ॥५८
सव देवगनन समेत, खंडन करूँ विच खेत।
तुम तजहु चिंता तात, विसवास माँनहु वात ॥५९
सुत वात सुन पितु स्राँन, वोले सुत्वष्टा वाँन।
तुम वृतन सं हे तात, भए रक्ष करता भ्रात ॥६०
निज वृत्त तुमरौ नाँम, कुल उद्धरन इह काँम।
भये त्रसर तेरौ भ्रात, निध धरम मुनि निस्नात ॥६१
अपराध विन सुरीयद, कीय वज्र मार निकद।
वंह वयर कौ अवगाह, सुन स्रवन मोर मलाह ॥६२
कीय व्रह्महथ्या काँम, वह भयौ रहत ऊदाँम[1]।
मारीयै सुरपत मूढ, गम पायकै मम गूढ ॥६३
सुन पिता सासन स्राँन, वोल्यौ सु अत वलवाँन।
पितु करै आग्या पूत, सिर धरै सोय सपूत ॥६४
मैं आप सुत महाराज, कीय इद्र भ्रात अकाज।
मारूँ न जो रन माँहि, कुल आप उपज्यौ काँहि ॥६५
सुन पिता सुत की स्राँन, ऊद्धरस[2] वाढ्यौ आँन।
दीय कवच सिदन देख, वहु सस्त्र-अस्त्र विसेख ॥६६
पितु करे सुत परनाँम, हीय धार सगर हाँम।
दै विप्रगन कौ दाँन, आसीस लै अप्रमाँन ॥६७
पितु लेय अग्या पूत, हथ करन कौं पुरहूत।
रथ हाँककै लीय राह, वज्रीय-पुर वेवाह ॥६८
असुराद राखस और, दल मिले अगनत दौर।
आसुरी-सैन उमड, चल चलीय चहूँ दिस चड ॥६९

१ निःशक। २ हर्ष।

आतख परेऊ अघात, वसुमती सुनकै वात।
यह सुरन सुनीयै उदत, उर-सोक बढेऊ अनत ॥७०

दोहा

सुरगलोक मैं अपसुगन, होन लगे जिह हेर।
सुर आये सबही समिल, बासव पँह तिह बेर ॥७१

छंद पद्धरी

सब मिल्यौ आय देवन-समाज, बोले बासव सौ छोर व्याज।
है अकसमात कछु होनहार, दुरनिमत दिखावत द्वार-द्वार ॥७२
धूंकार गिद्ध रव घुरघुरात, चिल्लनी स्वेत बहु चहचहात।
पोतकी वैठ तरू पत-पत, चीकू-चीकू चची चीचवत ॥७३
अँसुवा हय गय के झरत अक्ष, विपरीत फूल-फल लहै वृक्ष।
राखसी नार कहुँ रही रोय, निज नैन उल्ल पाँनी निचोय ॥७४
डिग रहे पौन विन ध्वजा दड, खित आय परत ह्वै खड-खड।
कारी तन नारी अत कुरूप, भागहू-भागहू कहत भूप ॥७५
हलचलत सिंधु भूकप होय, सरवरी लखै दिग दाह सोय।
अरू उठत फेकरी मुखा ऊँक, भैकरी राव सौं रही भूंक ॥७६
उल्लूक देत है हूक आय, धाँमन पै वैठत धाय-धाय।
सब कहत देव इह समाचार, है सुरपत निश्चय होनहार ॥७७
अवसर लख करीयै अरज येव, उतपात जतन कछु अवसमेव।
वज्री इत सोचत रहे वात, सब देवन की समुदाय साथ ॥७८
इतनै मैं दूतन कही आय, त्वष्टा सुत आवत ऊरत पाय।
मारचौ तिह बधव वज्रमार, विद्वेस निकारन इही वार ॥७९
परगट कीय त्वष्टा दुतीय पूत, इह वृत्तासुर नाँमी अभूत।
परवताकार वाहू प्रचड, चमकावत आवत खडग चड ॥८०
दूतन की सुनकै देवराज, सजुक्त सभा देवन-समाज।
गरूराज वुलाये महाग्यात, वृत्तासुर त्वष्टा कही वात ॥८१
जव सुरपत की सुन कह्यौ जीव, अन्याय करचौ तुमनै अतीव।
मिल निरपराध मारचौ मुनिंद्र, इह लाग्यौ फल तिह लेहु इद्र ॥८२

वतरात रहे गरु इद्र वात, घर देवन ऊपर वनी घात।
दीने त्वष्टा के सस्त्र दूठ, ऋभू लोक प्रहारन लग्यौ रुठ ॥८३
वृत्तासुर आयौ महावोर, सम मुप्तकाल जैसै मघीर।
गधर्व जिक्ष किन्नर नगेह, अत कोलाहल वाढचौ अछेह ॥८४
मदर तज भागे विपन माँहि, चढ गिर किंदर आपौ छिपाय।
विललावत वंठे देव-वृद्र, इह खवर सुनो गरुराज इद्र ॥८५
जोरन देवन के लगे जूह, मेले दूतन कौं मूंह-मूंह।
वडवासुर पूरवा भग भवेस, नभस्वास वरुन जम अरु निवेस ॥८६
मवकौ कहाव कीय रन समथ, वाहन चढ आवहु अनीवथ।
गरूराज अग्र कर छोर गेह, धनु देवायुध पव कर वरेह ॥८७
ऐरापत ऊपर चढचौ इद्र, दनु वृत्तासुर सौं करन दुद।
थिर अचल जहाँ देवन सुथॉन, मानससर उत्तर किय मिलॉन ॥८८
वृत्तासुर रोक्यौ महॉवीर, सम सयल दिघ्घ दीसत सरीर।
अनगनत सैन सग आसुरीय, विकराल सवै मनु कालवीय ॥८९
जाजुल्य होन तहाँ लग्यो जग, सुर और आसुरी सयन सग।
सर गदा खड्ग सकती त्रमूल, हठ सालन भालन साँग हूल ॥९०
दाँनव-दल आवत दौर-दौर, लूंवत जनु पव्वय अभ्र लौर।
घर धूंम मची चहुँ ओर धूज, गिरवरन किंदरन रही गूंज ॥९१
परहूत वज्र मडी प्रहार, लागे दाँनव की सैन लार।
कीय दड-मार जमराज क्रुद्ध, जूटे दल दाँनव प्रवल जुद्ध ॥९२
कर जुद्ध पुरजन अरु कुबेर, घायल कीय अद्रन वीच घेर।
जिह रीत औरहू देवजात, प्रहरन कर रोकी दनु प्रपात ॥९३
परहूत जुरे त्वष्टा सुपूत, उभयन विरोध वाढचौ अभूत।
दोऊ ओर होत वहु घाव-दाव, पाछे न देत दोऊ ओर पाव ॥९४
अनेक अस्त्र-सस्त्रन ऊमड, चकडोल मेदनी चढी चड।
ऊतपात होन लागे अनेक, देवन दनुजातन वढचौ द्वेख ॥९५
अर रहे जुद्ध वाहन अरोह, माहा मुनिराज लख भयौ मोह।
वीते सत वछ्छर इह विधाँन, सुर असुर वैर वाढचौ समाँन ॥९६
जाजुल्य वृतासुर वढचौ जोर, घन प्रलय जेम रन भयौ घोर।
पुरहूत वरुन जम फिरी पूठ, दल त्वष्टासुत कौ वढचौ दूठ ॥९७

लागे देवन कै दनुज लार, पुन अस्त्र-सस्त्र दीनी प्रहार।
सुध विसरी येक न एक मग, जय आम तजी सव भजे जग ॥९८
भागे सुर ऐसै मति भ्रमाय, पारिंद्र देख मृघ-गन पुलाय।
ऐरापत लीनौ घेर इद्र, आगे वढ त्वष्टा सुत अरिंद्र ॥९९
गज कौ तज चाल्यौ इद्र गैल, सत्वर गत आडे देत सैल।
खोम्यौ ऐरापत जहाँ खेत, जीय माँझ आपनी ममुझ जेत ॥१००
पितु त्वष्टा आयौ जवही पास, हीय वृत्तासुर धारै हुलास।
परनाँम कीयौ पद वद पूत, उर त्वष्टा सुख वाढ्यौ अभूत ॥१०१
वोल्यै पितु सुत सौ देख वाँन, पुन आज भये हम पुत्रवाँन।
करतव्य भयौ सव सफल काज, अवलोक करचौ वासव इलाज ॥१०२
सीयराय दई मम उर सकोय, सुत त्रसुर वैर की आग सोय।
उपचार ओसवी दई येह, दुख माँनस जुरकौ मिटचौ देह ॥१०३
आसक दै सिक्षा देत और, ठिक आस्रम आसन करहु ठौर।
सुरपत सौ रहीयौ सावधाँन, करहू विस्वास न तथा काँन ॥१०४
आराधन व्रह्मा करहु और, निरभय वर माँगहु सुत निहोर।
अविनासी ह्वैकै मति अगार, मिल समर वासव लेहु भार ॥१०५
भ्राता कौ वैर अरु राज-भोग, अव लैन काज करहू उध्वोग।
तपसी सुत मेरो भ्राता तोहि, कछु करयौ नही अप्राध कोहि ॥१०६
तिह करचौ निसूदन सुनहु तात, ईंह इद्र वैर कीय अनाघात ।
ताकौ अव वल लख उरत पाय, सुन इद्र मरन छाती सिराय ॥१०७
सुन पिता-वचन चाल्यौ सपूत, धारकैं इद्र सौं द्वेख धूत।
गिर जाय गधमादन गहीर, तप साधन वैठौ गग तीर ॥१०८
नियम कौं धार विध चरन नेह, दर्भासन पै थिर करी देह।
निसचै व र त्यागौ अन्न नीर, विध ध्याँन परायन भयौ वीर ॥१०९
जप करत मन ही मन जोग जुक्त, विसई सुख हू सौ ह्वै विरक्त।
सुन इद्र वात वाढी सु चित, अवगाह वयर कौ आद अंत ॥११०
विघ्न कौ कारन वासव विसेस, भेजी सु अपछरन दिव्य भेस।
गध्रव मिल किन्नर करे गाँन, वज वीन पखावज मधुर वाँन ॥१११
विद्याधर वहु विध रचे वेख, येक सौ येक अद्भुत अनेक।
नही पलक ऊघरी तऊ नैंन, वोल्यौ नही आनन कोऊ वैन ॥११२

अहि आद दिखाये भय असेख, द्रग नाँहि उघारे काज देख।
सोचन कौं लागौ तब सुरेस, वृत्तासुर वातन सुन विसेस ॥११३
वीते सत वछ्छर करत विघ्न, लय ध्याँन विरचन दरस लग्न।
चढ हस आयकै वदन च्यार, वरलेहु कह्यौ इह वार-वार ॥११४
छोभ कौं त्याग अरु ध्याँन छोर, जग करता वंदे करग जोर।
वृत्तासुर कीनी विनय वीर, सज समर देव जीते सधीर ॥११५
वासव कछु राखत वैरभाव, दुरवुद्ध मोहिपै रचहि दाव।
अयमय सस्त्रन सौं काठ आद, वपु होय सकै नही कवहु वाध ॥११६
दिन प्रतै पराक्रम ,वढै दौर, मोहि अभय देहु सव सुरन-मौर।
कहि तथा-अस्तु विध गमन कीन, परचंड भयौ तहाँ भुजा पीन ॥११७
पितु-चरन आय कीनौं प्रनाँम, करतार करचौ सिद्धि कॉम।
पितु कहहु जथा मैं करहुँ पूत, साँची विध जॉनहु जव ,सपूत ॥११८

दोहा

त्वष्टा सुन वोल्यौ तहाँ, वृत्तासुर के वैन।
विस्वरूप[1] नही वीसरत[2], रहत याद दिन रैन ॥११९
निरपराध मारचौ निलज, मुनि उत्तँम मघवाँन।
तोर भ्रात कौं तात तुम, वैर लेहु वलवाँन ॥१२०

छंद मोतीदाँम

वृतासुर काँन सुनी इह वात, भयौ उर-क्रुद्ध चितार कै भ्रात।
पिता पद-वदन कौं कर पूत, प्रहारन काज चल्यौ पुरहूत ॥१२१
तज्यौ गृह ऊठ जहाँ ततकाल, चढयौ सोइ सिंदन ऊपर चाल।
निहसत संख नगारन-नाद, वढचौ मग वासव हेत विवाद ॥१२२
सिखावन देत सवै विध सैन, हन्यौ मम भ्रात कौं संसय है न।
विसारत येह पिता न विरोध, सधारकै वासव देहु सवोध ॥१२३
लहूँ सुरलोक विभूतीय लाह, दुरतर मो पितु मेटहुँ दाह।
चल्यौ वतरावत लै दल चंड, भिलायकै है दल पैदल झुंड ॥१२४

---

१ पुत्र अंगिरा। २ भूलता।

वृतासुर वात सुनी मघवाँन, वकारकै देवन कौं वलवाँन।
सँभारकै सैन करी सव सज्ज, वढी धुन घोर अडवर वज्ज ॥ १२५
सवारीय है-दल पैंदल संग, इकाइक समुह चाल अभंग।
वनायकै गिद्ध की आक्रत व्यूँह, जमायकै जोर सौ जूहन-जूह ॥१२६
वृतासुर देवन सैन विलोक, थटे दल वाँधकै थोकन-थोक।
करचौ मघवाँनहु दारुन कोप, रुक्यौ वृत आहव मैं पग रोप ॥१२७
मँडी तहाँ वाँन क्रपाँनन मार, कती सकती अरू कूँत कुठार।
उभै दिस मारत येकन-येक, वकारकै येकन-येक विसेख ॥१२८
उभै जय आपनी-आपनी आस, पराक्रम आपकौ आप प्रकास।
इतै सुरराज हू पाव अडग्ग, मिल्यौ वृत वीर दिखावत मग्ग ॥१२९
घिर्‍यौ तहाँ वज्रीय कै उर घेख, विचारकै राज कौ लोभ बिसेख।
वढ्यौ सुर वाहनी वीर वकार, मँडी सतकोटीय[1] की अतमार ॥१३०
ज्युँही सुर औरहु आयुध जोर, घुमडेउ रार प्रहारन घोर।
विड़ारत नैरत आसुर-वृंद, करोरन तूट परे धर कंध ॥१३१
छिके तन घाव गये पग छूट, रहे दल दाँनव पै सुर रूठ।
कुप्यौ वृत देखकै माँनहु काल, विलोककै आपनी सैन विहाल ॥१३२
विचारकै भ्रात कौ वैर विसेस, सधारन कारन जाँन सुरेस।
पिता दीय आयुध कौं गहि पाँन, उपायकै सिद्ध ह्रिदै अवसाँन ॥१३३
सधारन लागेऊ देवन साथ, घनी कर अस्त्रन-सस्त्रन घात।
जुरचौ तहाँ अधर-धुधर जंग, भयौ चल देवन कौ वल भंग ॥१३४
जुरचौ सोइ आयकै वासव जुद्ध, सुकारज पायकै चाहि सनिद्ध।
करे तिह दाव रू घाव कठोर, तरासकै ककट दीनेऊ तोर ॥१३५
हर्‍यौ वल वाँह जहाँ पुरहूत, सध्यौ नही संगर कारक सूत।
गह्यौ सुरराजहु कौ गल गज्ज, मरोरकै दाव लयौ मुँहमज्ज ॥१३६
लख्यौ सुरराज कौं लीलत लाग, भयातुर होय चले सुर भाग।
मिले गरूराज सौं वीनती मंड, उचारीय आहव कथ्थ उछंड ॥१३७
असंभव कीन वृतासुर आज, समेटकै लील लयौ सुरराज।
करौ कोऊ आप उपाय क्रपाल, जिही विध होय निराक्रत जाल ॥१३८

---

[1] वज्र।

मँड्यौ सुर चित्र सिखंडज मत्र, तहाँ कीय तत्व विचारकै तत्र ।
जँमाइय कारन जारन[1] जोर, खुले तिह वारन लाइय खोर ।।१३९
निमार कौं पायकै देवननाथ, समेटकै अग चल्यौ इक साथ ।
मिल्यौ सोइ देवन के दल माँहि, नमे गरूराज सौं मोद मनाहिं ।।१४०
सजे फिर सगर कौ सुरराज, सबै सग लैकर देव-समाॅज ।
विते अनुवच्छछरहू तिहवार, हिसाव की रीत सौ येक हजार ।।१४१
वढ्यौ वृत साहँस वीर विधाॅन, विरचन जाहि दोयौ वरदाँन ।
जई रन जाँनकै वाहु अजाँन, मिटी जय आस चले मघवाँन ।।१४२
भजे सुर औरहू ह्वै भयभीत, वन्यौं दिन जाॅन लयौ विपरीत ।
वृतासुर पाय विजै वरवीर, भई सग औरहू आसुर-भीर ।।१४३
जम्यौ सोई इद्रपुरी कँह जाय, सँभारकै वैभव कौ सरमाय ।
इद्रासन पाय वडौ इधकार, वली वन नदन राच विहार ।।१४४
वसायेऊ काँमदुधा कल-वृच्छ, सवै गन अच्छर केतन स्वच्छ ।
मवारीय ऊच्चस्रवा गज सेत, मुवासन रत्नन-कोस सहेत ।।१४५
पदारथ और करे निज पाँन, थिती सुरलोक वसाय सुथाँन ।
भजै सुख पाय सदा जिग-भाग, उपज्जीत चैन पिता अनुराग ।।१४६
लयौ निज वधव-वैर निकार, पिता पन कीन भयौ सोई पार ।
सवै विध वृत्त कहाय सपूत, प्रचारकै जीत करी पुरहूत ।।१४७
दसूं-दिस वाढेऊ राज कौ दौर, भजे सुर डोलत साँजहू भौर ।
मुनीजन सीख कौं वासव माँन, गयौ कयलासहु कौं कर गौंन ।।१४८
जुहारीय धूरजटी कर जोर, वृतासुर कथ्थ कही सु वहोर ।
सदासिव कीजहु देव सहाय, महाखल दीजहु वृत्त मिटाय ।।१४९
विचारकै सिभु चले तिँहवार, गये सोइ ब्रह्म कै वीच अगार ।
कही करतार सौं देवन कथ्थ, सिहाय कै काज लये तव मथ्थ ।।१५०
मुकारज जाँनकै येक सलाह, रमापत-लोक लई निज राह ।
हरी कर वदन जाय हजूर, प्रकासेऊ देवन कौ दुख पूर ।।१५१
वृतासुर खोस लयौ निज वास, वितावत दु ख फिरै वनवास ।
दया कर देव उवारहु दीन, प्रभू जग-तारन पौरुख पीन ।।१५२

---

१ जावडे, जारण-क्रिया ।

वली दनुराज पताल वसाय, निकटक देवपती कीय न्याय।
रमापति होयकै मोहनी रूप, ग्रनामय ग्रमृत पाँन ग्रनूप ।।१५३
करायेऊ देवन-काज कृपाल, पिछाँनकै वृद करी प्रतपाल।
दुखी लख देव हरी गन दास, विघोविघ बोघ दयौ विसवास ।।१५४
विचारकै वोव रमापति वात, वखाँनत च्यार ऊपाय विख्यात।
पिछाँनहु स्याँम रू दाँम परेख, वतावत भेदहु दड विसेख ।।१५५
कोऊ कछु सज्जन कौ करनीय, कोऊ हित दुष्टन कारन कीय।
सोई वल वुद्ध तथा छल साथ, निहारकै काज करै निसनात ।।१५६
दीयौ वरदाँन जिही विघ देव, इही परभाव सौ वृत्त ग्रजेव[1]।
विना सोइ स्याँम उपाव के वीर, पराभव नाँहिन पावहि पीर ।।१५७
इहै खल जाँनहु जुद्ध ग्रपेल, मिलावहु गधृव देवन मेल।
विसास मैं ग्रावहिगौ जिह वेर, घृना तज मारहिंगे तिह घेर ।।१५८
पिछाँनकै वज्र करै परवेस, इही हम स्याहिक होय ग्रसेस।
विना विसवास दयै वरवीर, धरै नही वृत्त कदाचित धीर ।।१५९
सुनौं सठ सत्रू के साथ सुकाज, कीयै सठता नही होय ग्रकाज।
छले वल वाँमन कौं कर छंद, वसायेऊ जाय पताल मैं वंध ।।१६०
विसास के मोहनी रूप वनाय, दिखायेऊ दैतन कौं छल दाय।
सुघा दीय देव ग्रदेव सुराह, रखी छल की वल की विव राह ।।१६१
वतावहि जो तुम कौं हम वाट, ऊपाव सौं जाविहिं दूर उचाट।
जितै सरनागत होवहु जाय, मनावहु ग्राद भवाँनीय माय ।।१६२
उपावहि मोह जवै हीय ग्रघ, विनासकै कालकौं वाँघ है वघ।
रमापन नीत की माँन रहस, सुपर्वहु ग्रादक नैन सहस ।।१६३

दोहा

गये देवगन मेर गिर, देख सघन वन देस।
निरजन थल पावन निरख, वासव सेसु विसेस ।।१६४
जगदवा हित जाप जप, तप साघन वपु तेम।
करन[2] लगे स्तुति [तवहिं[3]], परा सगत जुत पेम ।।१६५

---

१ ग्रजेय। २ मू. प्र. करने। ३ मू प्र.—शब्द छूटा हुग्रा।

छंद अरध हर-गीतका

सिद्धदा प्रक्रत सातुकी, आधार मात अनाथ की ।
तूँ काँमदा जगतारनी, अघ मेट अधम उधारनी ॥१६६
महमाय दाँनव मोहनी, अनभीत मिंघ-अरोहनी ।
जग जीव अंतर-जाँमनी, ससार साखी स्वाँमनी ॥१६७
आराधनीय अखडनी, मुरजाद वेद ही मडनी ।
परमातमा परमेस्वरी, हित अरथ वदत हर हरी ॥१६८
कल आतताय निकदनी, विस्वेस्वरी सुर-वंदनी ।
जोगिंद्र मुन-जन जाँन कौं, नित देत पद निर्वाँन कौ ॥१६९
आकासवाँनी आद तूँ, निर्गुन गुन निर्वाध तू ।
ससार-ताप नसावनी, परभाव कीरत पावनी ॥१७०
भ्रम भेद बुद्धी भाव कौ, अग्याँन करन अभाव कौ ।
प्रतपाल दीनन पोखनी, नित्या तुँही निर्दोखनी ॥१७१
परमार्थ सत्य प्रकासनी, निज भक्त सकट नासनी ।
रमतीत निञ्चय रूपनी, भगवती जग की भूपनी ॥१७२
करनी सु अड कटाह कौं, प्रज आद स्रष्ट प्रवाह कौं ।
रिखी जोगजन[1] मन रजनी, निस्रेय रूप निरजनी ॥१७३
विरचे न मात विसेखकें, द्रग पुत्र अवगुन देखकें ।
परीआय रीत पिछाँनकें, जन स्याहि करहूँ जाँनकें ॥१७४
सब सुरन आद सुरेस की, करता सु दूर कलेस की ।
महमा सनातन माय की, सुत दीन करन सहाय की ॥१७५
जिग करत अगन जगायकें, लै नाॅम आहुत लायकें ।
स्वाहा समर्पत सुरन कौं, कल्याँन त्रपती करन कौं ॥१७६
तूँ सुधा पित्रन-तोखनी, विस्वास द्रष्ट विलोकनी ।
पुष्टी तुही जग-पालनी, साती हू लाज सँभालनी ॥१७७
काती तुही भव कारना, धृति ध्याँन मति की धारना ।
सुमृती मेधा सरसुती, पद्मा सती तूँ प्रक्रती[2] ॥१७८

१ योगीजन । २ मू. प्र. प्रकती ।

पापिष्ट महिप प्रचड कौ, दीय जुद्ध करकै दड कौ।
निरभीत कीय नारायनी, अतताय असुर ऊधारनी ॥१७९
निभसु सुंभ नसावनी, परवाह कीरत पावनी।
अनेक आसुर उद्धरे, तुव करग कमलन सौ तरे ॥१८०
अव वृतासुर पुन औतरयौ, कुल देव कौ संकट करयौ।
अघ मेट ताहि उवारीयै, मति मूढ खल कौं मारीयै ॥१८१
सब देव मिल कीनी स्तुती, वर सात रस धारै व्रती।
प्रगटी सु करुना पायकै, वपु सुभग वेख[1] वनायकै ॥१८२
भुज पास अकुस प्रभृता, सोइ अभय मुद्रा सजुता।
कमीनय कटकै किंकनी, धारै सु पग नूपुर धुनी ॥१८३
कर-वलय कुडल कांन मैं, अहिवेल दल अधुरांन मैं।
विच भाल रजन विंदली, सोगध पसरत सिंदली ॥१८४
मुसकांन मद अमुल्लरी[2], अत हेत करुना उल्लरी।
नालीक आभा नैन मैं, वरसत सुधारस वैन मैं ॥१८५
स्रगार सोडस सोहनी, उर फूल-माल अरोहनी।
तन लाल तप तपनीय[3] सी, विद्वत सुधाधर वीय सी ॥१८६
वेदात-रस वरसांवनी, स्रुति-ग्यांन गुन सरसांवनी।
अद्वैत-रूपा आद कौं, अग्यांन समन उपाध कौं ॥ १८७
जोगेस्वरी जगजांमनी, गज-मत्त सुदर गांमनी।
सुच रूप सुखद सुभाव सौ, भीनी सु भक्तन भाव सौ ॥१८८
अवलोक देवन आप सौ, तन दीनता जुत ताप सौं।
वोली सु देख विचारकै, ध्रुव आंमना हीय धारकै ॥१८९
तुम कहहु कारज ताहि कौ, अव करू जांन उपाय कौ।
कर जोर सुर विनती करी, इक वृतासुर प्रगटयौ अरी ॥१९०
महमाय ताके मरन कौ, हित करहु मति के हरन कौ।
हम अभय दीजै हेरकै, अव नांहि करहु अवेरकै ॥१९१
महमाय करकै तव मया, जुत हरप वोली जय जया।
सोइ आप भवन सिधायगी, उर देव निश्चय आयगी ॥१९२

१-पोशाक, वेश। २ अमूल्य। ३ सोना।

खल वृतासुर वल खूट है, छल जोग सौं दुख छूट है।
अव स्याँम दाँम उपाव कौ, द्रग देख करहै दाव कौं ॥१६३

दोहा

मिल देवन कीनौ मतौ, मारन कौं वृत मूढ़।
सम्मत कर ताही समय, ग्याँन विचारचौ गूढ ॥१६४
वोले रिखन वुलायकें, विसवासहु वृत वीर।
याही मैं ह्वै है अरथ, पारी मिटंक पीर ॥१६५

छंद उधोर

सुन देवतन सिद्धत, मिल रिखीसुर कर मंत।
गवर्व तपसी ग्यात, सव होय कै इक साथ ॥१६६
गये वृत्त पै कर गॉन, विसवास कै कहि वाँन।
पुरहूत वयर पमाव, द्रढ समर राचत दाव ॥१६७
कल परत नहिं पल कोय, हित विजय चल-चल होय।
तुम करत खल जल तेम, जभारि छन वन जेम ॥१६८
सुख होय करीयै सध, विच वाँन वाँध है वंध।
परवीन त्वष्टा पूत, करीयै न रन करतूत ॥१६९
मघवाँन कौं कर मित निर्वैर रहहु निचिंत।
तुम वैर कै परताप, सव हमहु सहत सँताप ॥२००
तुम सुखी होवहु तात, सुर होय सकल सनाथ।
परचाय विवध प्रकार, विसवास वृत्त विचार ॥२०१
वोल्यौ सु तिह छिन वाँन, मुनिराज सवही महाँन।
मघवाँन लोभी मूल, पथ धर्म सौं प्रतकूल ॥२०२
छल करत केतक छद, मति विकल निर्लज मद।
वासव नही विसवास, रत पाप अवगुन रास[1] ॥२०३
जव दयौ मुनि-जन जाव, हम कहत वात हिसाव।
अचला हु सत्य अधार, ध्रुव रहत स्रष्टी धार ॥२०४

---

१ राशि।

रवि सत्य सौ निज राह त्रिचारंतकै हाकत बाह।
मरजाद सत्य मझार, वारीस सुम्भर वार ॥२०५
कर सत्य कौल करार, निश्चित होऊ निहार।
बिस्वास राखहु बीर, सत्यात्म होय सधीर २०६
वृत आँनकै विसवास. पन येहु कीय परकास।
मुनि और गध्रव मोहि, जुर जतन करहूँ जोय ॥२०७
दिन रात मैं कर दाँव, घालै न इनसौ घाव।
सुस्कोद[1] पथ्थर सौ न, पव काष्ठ अय पहिचाँन ॥२०८
सुन इद्र देवहिं साच, विध वेद सौ कहि बाच।
मुनि सोच करहू मत, सवही सयाँने सत ॥२०९
वृत की सुनी मुनि बात, वुलवाय इद्र विख्यात।
रवि अगन साखी राख, अत सपथ कीय अभिलाख ॥२१०
छल हीन जाँन्यौ चित्त, वृत मित्रता गन वृत्त।
कर कौल बोल करार, निश्चित भये निरधार ॥२११
बिसवास वासव वृत्त, छल तकत धूत चरित्त।
विव विपन नदन वीच, निरवैर रहत नगीच ॥२१२
अरु गंधमादन अद्र, सग रहत तीर समुद्र।
नित करत खेल निसक, वृत्त छौरकै हीय बक ॥२१३
जव परी त्वष्टा जाँन, सुत बोलकै सुस्थाँन।
समुझाय दीनी सीख, पुरहूत मित्र परीख ॥२१४
नित रहत सग निदाँन, है पुत्र तेरी हाँन।
सुत करी पितु सम जास, वृत्त तज्यौ नही विसवास ॥२१५
जाँन्यौं न मघवा जाल, कच आय पकरे काल।
सुत्राँन[2] निस-दिन सग, मिल करत खेल उमग ॥२१६
वृत्त छाँड संका वैर, लागे फिरै नित लैर।
इक दिवस पहुँचे आय, सामद्र तीर सुभाय ॥२१७
देखत अपनी दाय, मन रहे दोऊ विलमाय।
सुचि[3] ओट लीन सुमेर, वरती सु सध्या-वेर ॥२१८

---

१ सूखा-पानी से युक्त। २ इद्र। ३ सूर्य।

वरदाँन कीन विचार, विंध वचन की इहवार।
अह रात नाँहिन येक, वहु काल सौ वितरेक ॥२१९
धारचौ सु हीय मैं ध्यान, मधु निकदन मघवाँन।
अप्रचन्न[1] पहुचे आय, सुत्राँन करन सहाय ॥२२०
इक लख्यौ फेन उतग, तिरआत[2] उदध तरग।
सत कोटि बीच सुरेस, पुन जाय करेऊ प्रवेस ॥२२१
जलफेन वज्र संजोग, अजमाय कीय उद्योग।
धारचौ सु उर मैं ध्यान, श्रीपरासक्ति समाँन ॥२२२
वँह वेर सत्ती अस, प्रवस्यौ सु आय प्रसस।
द्रढ सध भय डिडीर[3], सुत्रॉन जाँन सधीर ॥२२३
पटक्यौ सु गहि कै पाँन, सिर वृत्त कै सूत्राँन।
वृत्त गिरचौ धरनी वीर, सम सयल दिघ्घ सरीर ॥२२४
वर्नना कीन विसेस, सुर पाय लाग सुरेस।
वृत तहाँ नाँम वसाय, सुर मोद दीय समुदाय ॥२२५
वृतवीर मृतक विलोक, श्रीविस्नु गये मालोक।
सुरराज सुरग सिधाय, हन सत्रु कौं हर खाय ॥२२६
सुन वात त्वश्टा सोय, रत वेदना हुग्र रोय।
धारी न हीय मैं धीर, तव गये सागर-तीर ॥२२७
विन जीव पुत्र बिलोक, सुन हेत वाढ्यौ सोक।
कीय पारलोकिक-कर्म, ध्रुव धारना निज धर्म ॥२२८
सुत्रॉन दीनौं श्राप, उर विकल होय अमाप।
मो करी अंगज मीच, निरलाज लोभी नीच ॥२२९
विस्वासघात विसेस, सत त्याग कीन सुरेस।
दुख महा[4] भोगहु दुप्ट, पुरहूत पापी पुप्ट ॥२३०
सो गये अचल सुमेर, वपु करन तप जिह वेर।
सुरलोक सुन कथ श्राप, सब करन लगेउ सँताप ॥२३१
मिल वैठ आपस माँहि, अघ इद्र कौ अवगाहि।
विध वेद नीत विचार, इह कहत कथ्य उचार ॥२३२

१ छिपकर। २. तैरता हुआ। ३. फेन। ४. मू. प्र. माहा

जो देत सम्मत जॉन, मति देत कोऊ विध म्लाँन।
पापी करत जो पक्ष, पुन प्रेरना परतक्ष ।।२३३
होवत सो हाथोहाथ, सब पाप भागी साथ।
मघवाँन पक्ष मिलाय, कीय कलकत हरि-काय ।।२३४
गधर्व किन्नर ग्यात, सग रिखी मुनि साख्यात।
धीरज बिगोयौ धर्म, कर महा[1] अनुचित कर्म ।।२३५
सिस अगन की दै साख, रवि वेद बीचै राख।
अरु सपथ कीन अनेक, विस्वास भाव विसेक ।।२३६
वृत तज्यौ भीत विरोध, सित धर्म मारग सोध।
वध्र कर्यौ तिह विसवास, निज धर्म कारन नास ।।२३७
इह पाप भरता इद्र, छल कर्यौ दुस्तर छद।
त्वष्टा सु सोकत[2] पाय, दीय स्राप महा दुखदाय ।।२३८
भुगतै विनाँ उपभोग, अघ टरै नाँहिन ओघ।
कथ करत देव निकाय, सो सुनत इद्र सुभाय ।।२३९
भयग्रस्त वुद्ध अमात, ज्यो-ज्यो प्रभा मुख जात।
छाई मनौ मिल छाँह, रवि चद पै जनु राह ।।२४०
कीय व्रह्महथ्या क्रूर, नित घटत तातै नूर।
इक दिवस देख उदास, जायवाहनी[3] कहि जास ।।२४१
वन करत नाँहि विहार, नदनहु आद निहार।
नही नदी सर के नीर, सुच करत स्नान सरीर ।।२४२
चढ करी चातुरदत[4], कहुँ नही विचरत कथ।
सुन परत नहिं सुखदाँन, गुन गध्रवन कौ गाँन ।।२४३
अरू सुनत नहिन अवाज, वीनाद ततन वाज।
कहु लखत नहिन कदाच, निज अपछरन कौ नाच ।।२४४
इक कर्यौ वृत्त अहेत, खल मार लीनौं खेत।
चित कौंन उपजी चित, इह कहहु नाथ इकत ।।२४५
जव कह्यौ वासव जाहि, सुन तीया मोर सलाह।
कीय वृह्महथ्या काँम, जीय विकल आठहु जाँम ।।२४६

---

१ मू प्र. माहा। २ शोक। ३ इद्राणी। ४ ऐरावत।

जन करत निंदा जास, तन मोह उपजत त्रास।
मुख कहाँ दिखाऊँ मोर, घट घात उपजी घोर ॥२४७
पीयूख गरल प्रमाँन, पय काँमदुग्धा पाँन।
इम लगत मोकहँ ओर, सुख जिते दुख दसजोर ॥२४८
कही सची आगै कथ्थ, निकस्यौ सु इद्र निरथ्थ।
लीय मानसर[1] की सर्न, वपु रूप कर वेवर्न ॥२४९
वस कमल-नाली वास, अप्रचन्न रूप उदास।
अहि धार सुछ्छम अग, भर पाप ह्वं चित भग ॥२५०
सुरलोक हीन सुरेस, केऊ उपज आय कलेस।
वरखा मिटी घन वार, केऊ सुस्क भये कासार[2] ॥२५१
सूके सु सरता सोत, ऊद विघन होय उद्योत।
लखकै अराजक लोक, मुर रिखी भयेऊ ससोक ॥२५२
कीय नहुक[3] राजा काज, सुरलोक कौ सिरताज।
थिर इद्र आसन थप्प, अरू विभत्र दीनौं अप्प ॥२५३
धरमिष्ठ धीरज धार, सुरलोक कीन सँभार।
कीय हाथ सुरपुर काँम, हीय वढी सुख कौ हाँम ॥२५४
वढ रजोगुन तिह वेर, अग्याँन छाय अवेर।
वन करत कुज विहार, लै अछ्छरन कौ लार ॥२५५
रत काँम क्रीडा रग, सुध भूल विखीया[4] सग।
स्वाभाव विसय सदीव, जग-जाल वाँधत जीव ॥२५६
सेवत ज्युँही सरसाय, उर नहिन कोय अघाय।
गुन सची सुनकै गूढ, मन भयौ लोलुप मूढ ॥२५७
बुलवाय रिखन विचार, अरू कही कथ्थ उचार।
थाप्यौ सु वासव थाँन, अँतरौ राखत आँन ॥२५८
सची करत नाँहिन सेव, दुरभाव राखत देव।
इह करहु सीघ्र उपाय, जयवाहनी समुजाय ॥२५९
मो रहै सेवा माँन, मन जाँन सम मघवाँन।
आवै सु मिलनै आज, कीजै सफल मम काज ॥२६०

---

१ मान सरोवर। २ सरोवर। ३ नहुष। ४ विषय।

दुज रीखी सुनकै देव, भाख्यौ सची कँह भेव।
उर सची होय उदास, बुलवाय गुरू[1] निज वास ॥२६१
हित कही आरत होय, मुरजाद राखहु मोहि।
विस्वास कहि गरू वाँन, सुख रहहु मो सुस्थाँन ॥२६२
जयवाँहनी गृह जीव, पहुँची सु निज हित पीव।
सरनै सु गुरुगृह संध, वाँध्यौ सची परवध ॥२६३

दोहा

सुन्यौं नहुष राजा सकल, बृहस्पती बरतत।
काँमातुर वचत करन, कोप्यौ मनहु कृतत ॥२६४
अनदेवन रिखी आदकौ, कही नहुक नृप कथ्थ।
इद्राँनी कौं दीय अभय, विन विचार बृमपत्त ॥२६५
लयौ विभव सुरलोक कौ, दयौ तुमहिं रिख देव।
इद्राँनी कैसै अलग, सम्मत करै न सेव ॥२६६
समुजावहु गरू कौ सकल, इद्रानी दै आय।
नहिं तौ मारहु न्याव सौ, इह पापी अन्याय ॥२६७

छद पद्धरी

जव रिखन सुरन दीनौ जवाव, हम कहत वात सुनीयें हिसाव।
इद्राँनी पतिव्रत तीया येक, अछ्छरी रूपवती अनेक ॥२६८
तज सची भजहु तुम और तीय, सुचिव्रता येक इह है स्वकीय।
अरू धर्म तज्यौ नही कवहुँ अग, सुरराज करत सोइ सदा सग ॥२६९
वरीआई[2] खडत तिही वृत्त, पुन दोस लगावत बृहसपत्त।
ध्रम की रखवारी करहु धीर, पावहु जन मन मै मृखा पीर ॥२७०
स्रगार हेत रति कहत सुद्ध, वरजोर करै वाढै विरुद्ध।
रस हाँन कार नही करत रीत, प्रीत सौं हीन समझहु विप्रीत ॥२७१
ऊत्तँम सिघासन वैठ आप, पथ धर्म छाँड इह करत पाप।
परनारि करति रति रहत प्रेम, नरक मैं परत श्रुति वेद नेम ॥२७२

---

१ बृहस्पति। २ वल प्रयोग से।

नृप सुनके ऊत्तर दीय निदाँन, सुर सुनहुँ सवही रिखीगन सयाँन ।
गोतम कै मघवा जाय गेह, अनऊचन करचौ जब गाँम येह ॥२७३
निज वृहसपती की हरी नार, चदा मति-मदा कहा विचार ।
जब कँहा गये तुम सवही जाँन, हम सीख देन लगे धर्म-हाँन ॥२७४
पद इद्र करचौ मोकौ पसाव, नारी है मेरी कहौ न्याव ।
वरीआई विनती कर विचार, निश्चै वुलवावहु इद्र-नार ॥२७५
रचना इह सुनकै नहुकराज, सब ऊठ चल्यौ देवन-समाज ।
गरु के तव पहुचे जाय गेह,. उच्चार वीनती सुरन येह ॥२७५
हम देख अराजक स्वर्ग हाल, वासव सिंघासन कीय वहाल ।
दुख देत हमहुँ सोई दुसाय, अन्याय वढी होय मैं उपाय ॥२७६
हम अरज करी केऊ सची हेत, राजा सोई मिन्नन[१] करी देत ।
गरू करहु जतन अब छुटै गैल, मम स्वर्ग निवासी कटै मैल ॥२७७
तुम हमकौं नहि तौ देय ताप, पुरहूत विना कोऊ वढहि पाप ।
विस्वास सुरन दे गुरू विचार, नोन्नन कौं लागे समाचार ॥२७८
जव गरू सची कै निकट जाय, उर सौं विचार नीकै उपाय ।
विध नीत वचन वोले विसेस, निरलाज न माँनत इह नरेस ॥२७९
तातैं परकासहु जाय तत, इद्रानी कहहु ऐसैं उदत ।
जीवैक मरै इह परै जाँन, मिल खोज करै तुम लेहु माँन ॥२८०
सुन मृतक हमारौ त्याग सोक, लैहै सुख दंपत स्वर्गलोक ।
मान्यौ गरू सुनकै सची मत, तव ऊठ चली नृप पैंह तुरत ॥२८१
गरूराज रिखी मिल देव ग्यात, इद्रानी चाली ह्वै अनाथ ।
नृप नहुक जाय पहुँची नजीक, ललचाय वचन कहि धर्म-लीक ॥२८२
नारी कौ सुनीयै धर्म नेम, पति त्याग करै जो इतिय-पेम ।
स्वैरनी कहत ताकौं ससार, ऐसी न करै हम अनाचार ॥२८३
सूत्राँन मरन नही सुन्यौं श्राँन, कर रही नृपत मैं जाहि काँन ।
वँह मरन सुनूं भरतार आप, पुन कछू न हमकौ लगै पाप ॥२८४
हम तुम मिल करहैं तिही हेर, विनस्यौ सुन वासव जिही वेर ।
पति सेवहुँ तुमकौ सहित प्यार, निंदा भय तजकै पुरस नार ॥२८५

---

१ मिला दी ।

खिती जल मैं कीजै जाहि खोज, मिल उभय केल माँनहि मनोज।
जीवत सुन करहूँ जतन जोय, बल-हीन हनहुँ ताकौं बिगोय ॥२८६
निर्भय सुख देवहु मोहि नाथ, हित अरज करत हूँ जोर हाथ।
इद्राँनी सुनकै विनय येह, सुरपुज्य नहुष मेटचौ सँदेह ॥२८७
पुन कह्यौ सचीकौ नृपत पेख, बातें नम[1] बोली जुत विवेक।
सुन नहुप कह्यौ यैसौ सवाल, हीय कौ इद्राँनी जाँन हाल ॥२८८
जलदी तुम खोजहु इद्र जाय, वँह मिलै खबर तौ कहहु आय।
सुन चली सची नृप के सवाल, साहृत सब्द करनै सँभाल ॥२८९
सब देव रिखी-गन लियै साथ, निज लोक पथ लीय रमाँनाथ।
जहाँ जाय जनार्दन हाथ जोर, अस्तुत कर विनती करी और ॥२९०
पुरहूत ब्रह्महथ्या तपाय, जाँनत नहि किह थल दुरचौ जाय।
वासव कौं दीजै हरी वताय, जिह बिना सची की लाज जाय ॥२९१
सुरनाथहु के श्रीनाथ स्याँम, करता मन वचत सफल काँम।
सुन आरत-वाँनी देव साथ, राजीवनयन श्री रमानाथ ॥२९२
विन मिटै ब्रह्म-हथ्या वमेस, सचि नहिन मिलै कबहूँ सुरेस।
जिह हेत करहु असमेध ज्याग[2], सुरपती नार ह्वै हौ सभाग ॥२९३
श्रीजगदवा करहै सहाय, सत्वष्ट[3] होय स्वातक सुभाय।
पुन्य सौं होय वासव पवित्र, कर त्याग भीत भेटहि कलित्र ॥२९४
ऊदविघ्न ब्रह्म-हथ्याद आद, वासव के मिटहै उर विषाद।
इद्राँनी पूजन करै आप, जग-जननी माया मत्र जाप ॥२९५
दुरदसा जाय सब कष्ट दूर, पति आय मिलै पुन प्रेमपूर।
मति हरन होय नृप नहुष मूढ, गति करनी के फल लहै गूढ ॥२९६
सुन रमानाथ के वचन साँन, पुर वृहस्पती[4] कीनौ प्रयाँन।
जिग करन लगे कारन जरूर, दुख ब्रह्म-घात कौं करन दूर ॥२९७
जिग भयौ सपूरन जवही जाँन, ऐसौ उपाव फिर करचौ आँन।
नदि वृक्ष सैल अरू धरा नार, वट करे ब्रह्म-हथ्या विचार ॥२९८
सवकौं भिलाय कर इद्र सुद्ध, इह बृहसपती कीय काज ऊद्ध।
जजुमाँन[5] पुरोहित धर्म जीव, ऊद्धार करचौ पौरुख अतीव ॥२९९

---

१ विनम्र। २ यज्ञ। ३ संतुष्ट। ४ मू. प्र. वृहस्पपती। ५ यजमान।

अरु इद्र गुप्त हुय इहाँ आय, सो गये माँनसर मैं सिधाय ।
जाँनें जब लागे देव जात, बोली गरूहू तें सची बात ।।३००
जभारि मिलै नही करें ज्याग, भये कौन पाप हृथ मोर भाग ।
कछु और बतावहु जतन कोय, मन वचत कारज होय मोहि ।।३०१
गरू कह्यौ सची सौ गूढ ग्याँन, सूत्राँन मिलन चाहत सुजाँन ।
भगवती भजहु नित भक्ति-भाव, पैहौ पति आतुर तिँह पसाव ।।३०२
नृप नहुष कष्ट मिटहै निदाँन, मतिमूढ चहत जो तुहि मिलाँन ।
उपदेस सची सुन गरुऊ धार, येकत देख उत्तँम अगार ।।३०३
आराधन करनै लगी आप, जगदवा पूजन मत्र जाप ।
सव भोग-वस्तु कौ त्याग सग, अतसय तप लागी करन अग ।।३०४
बीते दिन केतक इह विधाँन, जगदव भई सतुष्ट जाँन ।
विधु कोटक सीतल तन विकास, पुन कोट सूररस्मी प्रकास ।।३०५
चँमकत कोट दुति चचलाह, ऋतु काँम पूर्न कोटक कलाह[1] ।
भीनी करुनारस भक्ति-भाव, सामुद्र सात सातुक सुभाव ।।३०६
पद स्वछ्छ उदवर रंग पाँन, सम स्वर्न तृप्त सचर समाँन ।
ऊन्नत उरोज सोभा अमद, मुसकात मनोहर मद-मद ।।३०७
इछ्छन चख अबुज छिमा ऐँन, वतरात सुधा-सम मधुर बैन ।
त्रयनेत्र नासका दीप तेम, जगमगत अलक्त जोत जेम ।।३०८
स्वाँमनी कोट ब्रहमड स्रष्ट, परजत कोट[2] विध जननि पुष्ट ।
अछैछर-स्वरुपनी रूप आद, वाहनी हस वर्जत विषाद ।।३०९
पासाकुस धारै अभय पाँन, पुस्तका वेद च्यारहु प्रमाँन ।
भर रजन विंदी लाल भाल, मोहनी विस्व उर मुक्त-माल ।।३१०
जाँननी ह्रिदय मति-जुक्त जीव, ससार कारनी हित सदीव ।
इद्राँनी दरसन दयौ आय, वरलेहु कहे वाचा वढाय ।।३११
बोली इद्राँनी सुन वहोर, जोतीस्वरूप सौं हाथ जोर ।
पत[3]रहै नहुप सौ मोर पिंड, आखडल[4] पाऊँ सुख अखड ।।३१२
जब आदि भवाँनी कह्यौ जाहि, मैं सग देत दूती मिलाय ।
मानससर जावहु निज मुकाँम, धुर मूरत अचला मोर धाँम ।।३१३

---

१ कलाएँ । २ मू प्र कीट । ३ लज्जा । ४ इंद्र ।

जिह विस्वकाँमनामा जनाय, ससार कहत वाचा सुनाय।
जायकै तहाँ खोजहु जरूर,, पावत है बैठौ दुख -पूर ॥३१४
मिल करहु इद्र सौ सची मत, तेरौ दुख मेटहु मैं तुरत।
मति-हीन करहैंगी नृप मदध, स्वय नारी करनै चहत सध ॥३१५
निज पत तूं चाहत सहित नेम, पुन मिलहै तोही पूर प्रेम।
वदन कर अंबा वार-वार, लैकै दूती कौं सची लार ॥३१६
मानससर गई देवी मुकाँम, कल्याँन आपनौं करन काँम।
दूती प्रवीन दीनौं दिखाय, जोयकै सैन वैनन जताय ॥३१७
इंद्रानी देख्यौ निजर[1] आप, परजरत ब्रह्महथ्या जु पाप।
हँसकै वोल्यौ तऊ सची हेर, वताग्रौ मोहि किहि इही वेर ॥३१८
भोगतहूँ अपने पाप भोग, आधीन ईस जोग रू वियोग।
जव कह्यौ सची थिर करहु जीव, सुरराया स्याहिक है सदीव ॥३१९
आराधन कीनौं मात-आद, पाई पत तोकौं तिह प्रसाद।
दुर गये जवही तुम भये दूर, कलिमल सौ पूरत ह्वै करूर ॥३२०
सुर रिखन मत्र कर सनिधाँन, इद्रासन थप्पौ नहुष आँन।
मो को नित वाधा करत मूढ, पापिष्ठ काँम वस ह्वै पढूढ ॥३२१
नित कहत इद्र हैं हम निदाँन, कैसै तुम अवलाँ करत काँन।
अव कहा करूँ कहीयै उपाय, जासौं नही मेरौ धर्म जाय ॥३२२
जव कह्यौ इद्र हम करत जेम, तेरे दिन काटहु त्रीया तेम।
जव कह्यौ सची हम कहाँ जाय, विन इद्रपुरी वासौ वसाय ॥३२३
सुर-रिखिन वुलावत देत सीख, जयवाहनी लावहु मो नजीक।
वृमपती-काज कीनौं विचार, पति दरस लयौ छल कौ प्रसार ॥३२४
अव भये रहत सोऊ उदास, वलहीन विप्र कैसौ विसास।
नारी कौ अवला कहत नाँम, वस करै जाहि की गनहु वाँम ॥३२५
अवलोक विना स्याहिक अनाथ, हथ लाज करेहि मोहि डार हाँथ।
वसवरती ताकी होय वाँम, समुझहुँ फिर कैसै तोहि स्याँम[2] ॥३२६
कुलटापन लागहि मुँह कलक, सकपकत ह्रिदय निस-दिन ससक।
वपु-धर्म सुद्ध पतिव्रत विगोय, सुख कहा लहूँ तुम कहहु सोय ॥३२७

---

१ नजर, दृष्टि। २ स्वामी।

निज पत्नी रक्षा करहु नाथ, अवलोक बिना स्याहिक अनाथ।
जब कह्यौ सची सौं इद्र जोय, ननकौं बचाव है कठन तोहि ॥३२८
इक सील बिनाँ नाँहिन अधार, सब रीत सील करहै सुवार।
दूसर उपाव हम कहत देख, बिस्वास काल आसत बिसेख ॥३२९
वरदाँन भवाँनी उर विचार, सुभ हेत कहत इही समाचार।
मति-हरन करहि नृप महमाय, यातैं निमक करीयै उपाय ॥३३०
नृप सौं मिल वातै कहहु नीत, परचाय बढावहु ह्रिदय प्रीत।
करकै करार फिर कहहु कथ्य, नहिँ करहु भूप बाचा निरथ्य[1] ॥३३१
सबकी सिरोमनी नार संग, अभिलाख करहु पूरन अनंग।
करकै असवारी रिखन कंध, सिवका पै चढकै हित समध ॥३३२
मो महल पधारहु महाराज, सुरपति सौं इबकौ लहि समाज।
सुरगन रिखीगन की इखी[2] साख, माँनकै अँदेसौ तजूँ माख ॥३३३
पती आय मोहि उर राज प्रीत, रस बढै सवायौ इद्र रीत।
मोहित ह्वै ऐसौ करै मत, ताकौ बिनास जाँनहु तुरत ॥३३४
रिखी स्राप दैहगे नृप रिसाय, इह बिना नाँहि येकौ उपाय।
दपति दुख जावै प्रीया दूर, जातै उपाय करनौं जरूर ॥३३५
वासव की सुनकै सची बात, वह चली नीर नैनन बहात।
धारयौ श्रीअंबा ह्रदय-ध्यांन, परतीत- लाय वाचा प्रमाँन ॥३३६
नृप नहुक राज पहुँची निकेत, हीय सौं विचार बोली सहेत।
महाँराज वीनती सुनहु मोर, तप जाँन परै जग इधक तोर ॥३३७
मेरौ पुन जासौं बढै माँन, साखी मै माँनहु सु प्रमाँन।
चढ सप्तरिखी के कंध चाल, पालखी[3] बैठ आवहु नृपाल ॥३३८
तेज की होय वृद्धी तुमार, सब रीत हमारी है सुधार।
हँसकै तब बोल्यौ नृप नहूक, अधा हीय जैसै दिन उलूक ॥३३९
इद्राँनी हित की कही येह, समुझहु नही जामै कछु संदेह।
आतुर तुम जावहु तोहि ऐन, स्त्रंगार साज पुन रचहु सैन ॥३४०
आवत असवारी कर अनूप, भाँमनी ततौ मै नहुक भूप।
सुन चली सची राजा सवाल, चित खुसी होय निज भवन चाल ॥३४१

---

१ व्यर्थ। २ देखकर। ३ पालकी।

इहाँ रिखन बुलाये नहुक ऐंन, वैधेय[1] कहे अनउचत बैन।
वपु तप सौ लीनौ स्वर्गवास, इंद्र कौ थाँन ऊँचे अवास ॥३४३
सासन मम माँनहु रिखी-समाज, अहमत सौं ह्वैहै नत अनाज।
सासन विचारकै इही सार, औरै न होय कछु अनाचार ॥३४४
इंद्रासन दीनौ प्रथम आप, कैसौ गुन भूलत नही कदाप।
पर इंद्राँनी नही करत पेम, नही भयौ तुमारौ सिद्ध नेम ॥३४५
सिध[2] करहु नेम रिखीवर-समाज, इह विनती मेरी सुनहु आज।
येते पै करहौ अहंकार, समुझौ न कछू जामै सुधार ॥३४६
हट तीया जात मैं इधक होय, संसार वात जाँनत सकोय।
जडता इंद्राँनी परी जाँन, मैं राख्यौ चाहत जाहि माँन ॥३४७
इह वोल कौल कर गई आज, मुनि याँन जोयकै महाँराज।
आरूढ होय मम महल आय, पति भजहुँ हीय सौ मोद पाय ॥३४८
जाँनकै राज-कारज जरूर, ग्याँन कौ भाँन तजकै गरूर।
पालकी वेनु[3] कधा पसाव, करीयै मुनि मेरौ इह कहाव ॥३४९
मुन कुंमज आदक रिखी स्रौंन, माँनकै निदेसन गही मौंन।
सिवका मँगाय स्रंगार साज, संग देवन कौ लैकै समाज ॥३५०
चढ चल्यौ ढुरावत सीस चौंर, आजत प्रभाव जनु तरुन भौंर[4]।
कलमलत ह्रदय उर काँम केल, झलमलत अलंक्रत छरी झेल ॥३५१
इंद्राँनी मिलनै हित उमंग, ऊरध क्रकाटका चढ अनंग।
चटपटी लगी सुख सयन चाह, अटपटी रीत बाढ्यौ ऊछाह ॥३५२
रिखगन कहार नही पढी रीत, नहिं चालन जव[5] सौ मढी नीत।
मुनि सदा काँमगाँमी[6] महंत, स्त्रुति- चलत सनातन चाल संत ॥३५३
नृप सर्प-सर्प वोलत निदेस, मन सहन करत सबही मुनेस।
पतिलोपामुद्रा[7] रिख पुनीत, कीय पाँन उदध जिह अमर क्रीत ॥३५४
लीनौं वातापी जिही लील, पचगयौ पेट जैसे पपील[8]।
छरीया प्रहार पद लात छोर, वच सर्प-सर्प वोल्यौ वहोर ॥३५५
सुनकै अगस्त मुन दीयौ स्राप, अघपूर सर्प तुम होउ आप।
वस स्राप रह्यौ आनन विगार, लागी न वार जाकौं लिगार ॥३५६

---

१ मूर्ख, कार्यसाधक। २ सिद्ध। ३ बाँस। ४ सूर्य। ५ शीघ्रता से। ६ स्वच्छन्द, इच्छानुसार। ७ अगस्त्य। ८ चींटी।

विनती नृप कीनी तिही वेर, अग्यांन करयौ ऐसौ अंवेर।
मिटहै इह कैसै पाप मोर, उद्धार वतावहु नाथ ग्रौर ॥३५७
कुंभज क्रपाल सुन कही कथ्थ, ह्वै है द्वापुर-जुग स्राप हृथ्थ।
इक भूप जुजष्टर मिलहि ग्राप, प्रस्नोतर सुनकै मिटहि पाप ॥३५८
भल स्वर्ग-निवासी होहु भूप, सुखमांन ग्रापनो लहि सरूप।
कुभज की सुनकै तातकाल, वपु धारन कीनौ दिघ्घ व्याल ॥३५९
स्वर्ग सौं गिरयौ सोइ येक सग, भूम पै होय भारी भुजग।
करनी फल पायौ तातकाल, हाथ-कौ-हाथ[1] इह भयौ हाल ॥३६०

दोहा

सुनी गरू वातै सकल, इद्रांनी ग्ररू इद्र।
देव-चिरत देख्यौ द्रगन, मेट्यौ पाप मुनिद्र ॥३६१
गरू इद्रांनी देवगन, सम्मत कर इक साथ।
मांनससर पहुँचे मिलन, सवही होन सनाथ ॥३६२
वासव सौं मिलकै वहुर, हीय ग्रानदत होय।
ग्राये पुन ग्रमरावती, जन सुख वाढ्यौ जोय ॥३६३
इद्रासन पै इद्र कौं, कीय सुरगुरू ग्रभिषेक।
नदन-वन विहरन लगे, सुख उपजाय विमेख ॥३६४
इद्रांनी वासव ऊभय, हिल-मिल वाढ्यौ हेत।
भीत मेट हरखत भये, सुरगुरू सुरन समेत ॥३६५
व्यास कही करूविंद्र सौं, वासव व्रत की वात।
सुनकै वोले पुन समुझ, हरख जोर विव हाथ ॥३६६

छंद द्वैग्रखरी

वोल्यौ नृप जनमेजय वांनी, व्यास सुनहु सुनिवर विग्यांनी।
व्रत वासव की कथा वखांनी, भाखी महिमा मात भवांनी ॥३६७
पर यामैं सदेह प्रकासै, विन पूछै सौ नांहि विनासै।
महातपस्वी जांनहु मघवा, ये तौ दुख भोग्यौ क्यौं ग्रघवा ॥३६८

---

१ ग्रविलंब।

सत वत्सुछर करकै जिग-साधन, बहुर भये हिंसा निरबाधन।
देवन की मिल सॉम्य दसाकौ, जाहर विपत भई अ्रत जाकौ ।।३६९
कारन सहित कथा इह कहीयै, निगम-रीत वाचा निरवहीयै।
ससय मिटै सकल जन स्रोता, उर विचार ह्वै ग्याँन उदोता ।।३७०
सूत कहत सौनक रिख सोई, करहु बिचार ह्रिदै सह कोई।
भूपत पूछा माठर[1] भाखी, सो मैं कहत तोहिं कर साखी ३७१।।
आप्त-रूप तत जॉनन वारे, साधन करम बखाँनन सारे।
त्रविध-गती जाँनहु ताहीकी, जगमैं उतपत है जाहीकी ।।३७२
सचत वरतमाँन[2] है सैसै, जाँनहु पुन प्रारध्व[3] ही जैसै।
जिनकी विगत कहत मैं जाँनौ, परपाटी स्रुती वेद प्रमानौ ।।३७३
सुभ वा असुभ-कर्म सह कोई, सचत[4] बहुत जनम के सोई।
सातुक राजस तामस सोऊ, जाँनहु त्रय प्रकार है जोऊ ।।३७४
जीय भोगत है नीक जबूना, वंह बिन भोगै नहि ह्वै ऊना[5]।
लागे रहत जीव कै लारै, कोट जनम लग मेलक तारै ।।३७५
प्रापत देह करै पुन प्राँनी, वरतमाँन तिह कहै विग्याँनी।
सचत लै कछु काल सँवारै, धारक जीव देह पुन धारै ।।३७५
सो जाँनहु प्रारध्व समाँना, ऊँच नीचहू जिह अनुमाना।
भले बुरे भोगन भोगावै, विन ससय सग देह बिलावै ।।३७७
पूर्वजन्म क्रत कर्म प्रमाँना, सव भोगत है येक समाँना।
सुर वा असुर मनुज तन सवही, क्रम भोगै बिन छुटै न कब्रही ।।३७८
व्रहमा विस्नु रुद्र अरु वासव, श्रीद प्रचेता तथा अर्कसुव[6]।
किन्नर गध्रव देव कितेई, जाँनहु जिक्षन आद जितेई ।।३७९
कर्मन-व्रस . माँनहु सव कोऊ, जामैं अभिप्राय है जोऊ।
कहत सुनौ दै जाही काँना, पहिचाँनहु इह सिद्ध प्रमाना ।।३८०
कर्मस वधन होत कदाचत, होत न देही वव भोग हित।
सुख-दुख कारन कर्म सदाई, जासौ काहू की न जुदाई ।।३८१
जाग्रत कर्म अनेक जनम सौं, काल वेग सौ जाही क्रम सौ।
प्रापत[7] मध्य दसा मैं पावत, वस प्रारध्व ही सो विलगावत ।।३८२

१ व्यासजी। २ वर्त्तमान। ३. प्रारब्ध। ४ सचित। ५ न्यून, कम। ६. यमराज।
७ प्राप्त।

पुन्न पाप जिम भोगत प्रानी, देवनहू गति इही दिखाँनी ।
धरमपूत दोऊ पुन ध्याँनी, सोऊ करत कर्म सुग्याँनी ।।३८३
नर-नारायन जिनकौ नामा, क्रस्न विजय[1] दोऊ पूरन काँमा ।
प्रति पुरान सै जाहि प्रमाना, कहत चिरत[2] पावत कल्याँना ।।३८४
अत विभाव-जामैं अधिकाई, सो समुजहु देवेम सदाई ।
रिखी तज काव्य करत नही रचना, रुद्र छोर पूजन की रचना ।।३८५
देव-अस विन और न देता, विस्नु-अंस विन प्रथीपति वेता ।
वृषा[3] अग्नि जम विस्नु कुवेरा, कहत इते गुन हैं इन केरा ।।३८६
प्रभुता और प्रभाव परेखौ, दूसर कोप पराक्रम देखौ ।
करता लै इन असन काजा, रचनः देह करत है राजा ।।३८७
जो वलवाँन लखौ जग माँही, तीव्रहू भाग्यवाँन है त्याँही ।
भोगवाँन अरू विद्या-भाजन, जैसैहु दाँनवाँन जाँनहु जन ।।३८८
येते हैं सब देवन-असी, पडवहू इह रीत प्रससी ।
वासुदेव देवांस वखाँना, नारायन सम तेज निधाँना ।।३८९
सुख-दुख भाजन सबन सरीरा, भोगत है प्राँनी भव-भीरा ।
देव-अधीन जन्म मृतु दोऊ, सुख्ख-दुख्ख जानहु सग सोऊ ।।३९०
पडव सत्यधर्म परवीना, ह्वैगये प्रथम राज सुख हीना ।
विपदा लही विपन कीय वासा, पुन तिन भुजवल करेऊ प्रकासा ।।३९१
जुद्ध जीत भुव राज जमायौ, राजसूय जिन जग्य रचायौ ।
ह्वं सतुष्ट देव हितकारी, वरकौं लै पुन विपत विसारी ।।३९२
अतकाल पुन होय उदासी, वहुरै भये स्वर्ग के वासी ।
नर अवतार विजयं निरधारा, पौरसेय कीय अधिक पवारा ।।३९३
अतकाल पै साहस ऊँना, जिनहू की गति भई जबूँ ना ।
पुन्य करयौ माँनव-तन पाई, कहाँ गयौ क्रम गति कठनाई ।।३९४
सहजै देव न जाँनत सधौ, मनुज लखै कैसै मति-मदी ।
वासुदेव कारागृह वीचै, प्रथम जनम गोकुल गये पीछै ।।३९५
वसकै ग्यारा[4] वरस विताये, उलटे फिर मथुरापुरि आये ।
कस प्रनास अभय सुख कीनौ, दरसन मात-पिता कौं दीनौ ।।३९६

---

१ अर्जुन । २ चरित्र । ३ इंद्र । ४ ग्यारह ।

कारागृह सौ करेऊ निराक्रक[1], पूरन दीय आनंद जिनहु प्रत।
महीपती कोय मथुरा-मडल, उग्रसेन जैसै आखडल[2] ॥३९७
इतनै काल जबन भय उठचौ, व्रज-मडल कौ वास विछूटचौ।
बसे द्वारका जाय बिसभर, ऊँचे रच ऐंवास[3] अडबर ॥३९८
कुटम सहेत रहे दिन कोऊ, श्राप पाय विप्रन सौ सोऊ।
गये प्रभास क्षेत्र गिरधारी, व्रज-मडल पति कुजविहारी ॥३९९
महा द्वेष इठ आपुस माँही, जूझ्यौ जादव-वस जहाँई।
पुत्र पऊत्र[4] सबही परवारा, छप्पन कोट मिले विच छारा ॥४००
क्रस्न व्याध सर लाग कलेवर, सोऊ पार भये भवसागर।
देव अरू देवेसन देखै, लखीयै मनुज जात किह लेखै ॥४०१
व्यास करी नृप सौ बतरावन, पुन चरित्र जाँनहु अत पावन।
सौनक आद रिखन कौ सोई, कीजै सुन ससय जँन कोई ॥४०२

दोहा

कही व्यास पूरब कथा, कुरूपत सुनकै काँन।
जोर हाथ जुग विनय-जुत, पूछेऊ प्रस्न प्रमान ॥४०३
रोहिनेय हरि अवतरे, अरजुन लीय अवतार।
सब दुष्टन कौं सघरन, भूम उतारन भार ॥४०४
अवनी द्वापुर अत मैं, सुरभी धरचौ सरीर।
ब्रह्मा सौं कीनो विनय, पाप परॉयन पीर ॥४०५
विध कीनी हरी सौं विनय, कमलापति सुन काँन।
अँमर सग लै अवतरे, पीडत मही पिछाँन ॥४०६

छद उधोर

वसुदेव-सुत[5] जुगवीर, सतपडु विजय सधीर।
खित जीत भारथ-खड, दीय दुष्टजन कौ दड ॥४०७
भक्तन निवारी भीत, अतताय हनेऊ अभीत।
आचार्ज[6] भोषम और, वाह लीक द्रुपद वहोर ॥४०८

१ मुक्त। २ इद्र। ३ आवास। ४ पौत्र। ५ पांडु-पुत्र = पाण्डव। ६ द्रोणाचार्य।

वैराट कर्न[1] विनेस, मारयौ सु रन मद्रेस।
दु.जोव सकुनी दुष्ट, नृप करे अनगन नष्ट ॥४०६
भुव कौ उतारयौ भार, सब राजकुल संघार।
श्रीकृस्न कौ रनवास, खोस्यौ नु आवत खास ॥४१०
काली मलेछ किरात, सक हने क्यौंन[2] सँघात।
बस रहे धरनी वास, मडता चड मवास ॥४११
कहा भार टारयौ कृस्न, जगती प्रजेता जिस्नु।
इह दसा कौ अवगाहि, सदेह वढत सिवाहि ॥४१२
सुन व्यास नृप सिद्धत, उत्तर दयौ इह अंत।
वसु काल वरतत वार, प्रज धर्म होत प्रचार ॥४१३
जुग वर्तमाँन ज्यूंहीज, बोवै सु निपजै वीज।
जो धर्म-धारक जीव, सतजुग्ग[3] जन्म सदीव ॥४१४
सुख धर्म अर्थ सुभाय, अवतरत तेता[4] आय।
श्रम अर्थ काँम धरेह, उपजत द्वापर येह ॥४१५
चित अरथ काँम जु चाहि, मिल ऊपजत कलि माहि।
इह काल की गति आद, मति गहत सोइ मुरजाद[5] ॥४१६
रचना न पलटत रीत, नृप येह समुझहु नीत।
वसू धर्म न्यून विसाल, करता सु जानहु काल ॥४१७
सुन व्यास की कथ सार, बोल्यो सु नृपत विचार।
अदेस मेटहु और, मुनि विप्र-कुल के मौर ॥४१८
जे सत्ययुग के जीव, सब धर्म-तत्पर सीव।
सब रहत कौन मुकाँम, करता सु ऊत्तंम काँम ॥४१९
त्रेताहु द्वापर तेम, नित दाँन व्रत जिन नेम।
मुन कहहु सुनकै मत, वेला विधाँन वृतत ॥४२०
जे दुराचारी जीव, कलिकाल संभव क्लीव।
जे देव-निंदक जाल, कहाँ रहत है कतुकाल ॥४२१
विस्तारपूर्वक बात, निच कहहु मुनि निस्नात।
बोले सु व्यास विचार, नृप प्रस्न सुन निरधार ॥४२२

---

१ कर्ण। २ क्यों नहीं। ३ सत्ययुग—मू प्र. सतजुगा। ४ त्रेता। मर्यादा।

ऋतुकाल सुभ करनीन, पुन्यातमा परवीन।
चहु वरन ऊतँम चाल, पथ धर्म कर प्रतपाल ॥४२३

सुभ-कर्म निवहृत सोय, सुरगीय होत सकोय।
जे रजक आदक जात, सत दयावाँन सुग्यात॥४२४

अद्रोह रहकै आप, पाखंड तजकै पाप।
जुर ऊर्धगति कौ जात, सज्जन समागम साथ॥४२५

जुग जिमहु त्रेता जाँन, इह रीत द्वापुर आँन।
सुभ करत करनी सग, पद ऊँच लहृत प्रसग॥४२६

कलिकाल जीव कितेक, जत धर्म-हीन जितेक।
नित करत नरक निवास, उद्धार की तज आस॥४२७

कलिकाल आवत क्रूर, अघ पुन्य सम अक्रूर।
जव होत मानव जात, वेदन वखाँनी वात॥४२८

अरू सत्यजुग कौ आद, बल होत कलजुग वाध।
जव पुंन्य आतम जीव, सोइ जन्म लेत सदीव॥४२९

वँह स्वर्ग सौं भुव आय, प्रगटत सु काल ही पाय।
अरू होत द्वापुर अत, कलिकाल चाल करत॥४३०

जव नरक-वासी जीव, कलिकाल प्रगटत क्लीव।
सुन नृपत काल सुभाव, वसु होत नित वरताव॥४३१

अन्यथा होत न ऊँन, क्रमजोग च्यारहु कूँन।
कलिकाल कठन कराल, पथ असत धर्म प्रचाल॥४३२

जिह रीत राजा जाँन, परजा ज्युँही पहिचाँन।
जो कदाचित क्रम-जोग, पलटै सुभाव प्रीयोग॥४३३

जन सुक्रती ह्वै जोय, कलिकाल साधू कोय।
हरि-भजन सौ कर हेत, सुभ जोग त्याग सहेत॥४३४

कलकाल घोय कलक, निख्याध होय निसक।
अधिकार पावत ऊद्ध, सत करम करता सुद्ध॥४३५

जनमैं सु द्वापर जाय, त्रेताहु सतजुग ताहि।
त्रेताहु सतजुग ताँम, कोऊ दुष्ट करता काँम॥४३६

उपजै सु कलजुग आय, नित ईस घर कौ न्याय।
सव पाप पुन्य सजोग, भोगत सुभासुभ भोग॥४३७

कीनै सु जैसै कर्म, धारत जिही विप्र धर्म।
अनुसार जुग आचार, पुन करत धर्म प्रचार॥४३८

श्रीव्यास लख सु प्रसन्न[1], पुन कर्यौ राजा प्रश्न।
जुग-धर्म देहु जताय, सत-असत कर्म सुभाय॥४३९

जब कह्यौ मुनिवर जोय, सुन लेहु राजा सोय।
प्राँनीन काल प्रभाव, सज्जनहु होत सुभाव॥४४०

द्रष्टात सहित उदंत, मैं कहत हूँ मतिवंत।
पितु तोहि धर्म-प्रवीन, मति भई जाहि मलीन॥४४१

करतूत वस कलिकाल, स्वाभाव पलट सु चाल।
दुज कठ डार दुजीह[2], लोपी मृजादा लीह॥४४२

जो उपज वस जजात, निज धर्म-रत निस्नात।
सो पाप दुस्तर श्राप, वपु तज्यौ करत विलाप॥४४३

पथ धरम करन प्रीयोग, जीय काल जाँन-न जोग।
ऋतुकाल की सुन कथ्य, मैं कहत भूप समथ्थ॥४४४

द्रढ वेद विप्र भूदेव, स्त्रुति परा-भक्ती सेव।
उर सुद्ध हेत ऊधार, करता सु जप ओउंकार॥४४५

गायत्रि इष्ट गरीय, ध्रति ध्याँन चित धरनीय।
जप वीज माया जाँन, गरू-कर्म ग्याता ग्याँन॥४४६

महमाय मंडप मड, आराधनीय अखड।
जिग करत पूजा जाप, त्रय देह मेटत ताप॥४४७

अरू छत्रि सूर उदार, नीतग्य नय[3] निरधार।
निज प्रजा पालन नेम, परमार्थ सौ हीय पेम॥४४८

क्रपी-कर्म वैस क्रतीह, वसू करत उतपत व्रीह।
व्राँनज्य वृद्धि वसाय, गोपाल पोखन गाय॥४४

सब सूद्र जाती सेव, भल रीत जाँनत भेव।
निज जीवका निरवाह, गुन आपने अवगाह॥४५०

इह सत्ययुग आचार, पुहमी सु होत प्रचार।
निस्तार जाँनहु नेम, त्रेताहु द्वापुर तेम॥४५१

---

१ मू. प्र. सुप्रस्न। २ सर्प। ३ न्याय।

ऋतुकाल तैं सुभकर्म, धारना आरीय[1] धर्म।
भौ नूनता[2] कछु भाव, सोई काल पाय सुभाव ।।३५२
जनमे सु राक्षस-जात, अघपूरता ऊतपात।
अवतरे कलजुग आय, कुल विप्र विप्र कहाय ।।३५३
पाखड दभ प्रवीन, वाचाल वेद विहीन।
रत सूद्र सेवा रीत, नही सास्त्रवेता नीत ।।३५४
तज आद कर्म तिकोय, मन मान धर्म मिलोय।
परचाय लाय प्रतीत, विध करत जग विपरीत ।।३५५
करकै खुसामद काज, वित लेत रचकै व्याज[3]।
मुख मिष्ट स्वारथ मीत, नय सीख देत न नीत ।।४५६
सुभ-धर्म आस्रत सत्य, वँह मूल होय अनित्य।
परजा अकर्म प्रभाव, अघ वढत वसु अन्याव ।।४५७
तज धर्म छत्री त्याग, जजु काँम वर्जत ज्याग।
परजाँ मु दै दै पीर, अन्याव लोभ अधीर ।।४५८
जिम वैस्य सुद्रहु जात, विप्रीत-धर्म वसात।
विभचारनी वहु वाँम, पति-व्रत्ति[4] चित ऊपराँम ।।४५९
करता सु काँम कलेस, भरता सु पातक भेस।
आचरन सुद्ध आहार, नही करहि नर अरू नार ।।४६०
आहार सुद्धि अधीन, पुन चित्त सुद्धि प्रवीन।
चित्त सुद्धि धरमाचार, नय नेम इह निरधार ।।४६१
कलि विप्र जाती काज, सोइ करहि सूद्र-समाज।
जप व्रत सकर जोग, वढ होय धर्म विजोग ।।४६२
इह पायकै असलील, सव नष्ट होवहि सील।
जव वरन-सकर जात, वसू होयगी विख्यात ।।४६३
सोइ जाय नरक सदीव, जेतेक कलजुग जीव।
कलिकाल धर्म कथाह, जाँनै न जीव जथाह ।।४६४
धरमात्म हू तज धीर, तेऊ पाय कल तासीर[5]।
करहै विपर्जय काँम, निज धर्म कौ तज नाँम ।।४६५

---

१ आर्य। २ न्यूनता। ३ कपट। ४ मू प्र. पतिव्रति=पातिव्रत। ५ गुण।

परिभाव कलि कौ पाय, ससार गहिहि सुभाय।
चहुँ काल चहुँ विध चाल, वरनी सु वेद विचाल ॥४६६
राजा विचार रहस, पूछी सु व्यास प्रसस।
जे पाप करता जीव, सकलक रहत सदीव ॥४६७
तिनके छुटै तन-पाप, वँह कथा कहीयै श्राप।
वोले सु व्यास वहोर, महाराज[1] सुनीयै मोर ॥४६८
श्रीपरासक्ती सेव, भक्ती करै लहि भेव।
जग-जननि करकै जाप, तनकै मिटावै ताप ॥४६९
सुभ देख पुन्य सुथाँन, ध्यावै सु अवा-ध्याँन।
अघ भसम होय अनेक, वाढ़ै सु पुंन्य विवेक ॥४७०
अपराध छूटहि आध[2], वपु होय जन निव्यधि।
आराधनीय अखंड, महमाय करता मड ॥४७१
व्याह्लती अजपा वाँन, सोपाँन मुक्ति सयाँन।
चढ जाहु कलि कर छेह, मलि धोय भात्ती[3] मेह ॥४७२
गायत्री दाता ग्याँन, द्वज-वर्न कौं सुख दाँन।
सोइ आद-मात सरूप, भजीयै सु निस-दिस भूप ॥४७३

दोहा

प्रस्न करयौ पारासरीय, प्रमुख परीखत-पूत।
सोइ पूछत है हित स्रवन, सौनकाद मिल सूत ॥४७४
ऊत्तम तीरथ अवन पै, सर सरता अरू सैल।
जाँने चाहत जाहि कौ, मन तस मेटन मैल ॥४७५
जात्रा करन विधाँन जिह, स्नाँन दाँन फल सुद्ध।
सवन कहहु समुझाय कै, पुहमी होय प्रसिद्ध ॥४७६

छंद हरगीतका

सुन भूप प्रस्न अनूप स्रवनन वेद व्यास विचारकै।
तीरथ कथा विस्तार सौं सोऊ लगे कहन सुधारकै ॥

१ मू प्र माहाराज। २ आधि। ३ भक्ति।

अस्थाँन देवी जहाँ ऊँन्नत जाँनने ध्रम जोग है।
सो कहत तोसौं हेत सुभ सव पुंन्यदाय प्रीयोग है ॥४७७
नद गग जमुना नर्मदा सरजू वितस्ता सरसुती।
चर्मनवती पुन चद्रभागा गल्लकी अरु गोमती ॥
कावेरिका सिंधव सुक्रस्ना अभ्रमती गोदावरी।
तमसा तथा तपनात्मजा तिंह पुन्य रूप प्रभावरी ॥४७८
पाथोद मैं नद जाय प्रवसत जिती ऊत्तँम जानीयें।
अघहारनी जगतारनी इह महाँ पावन माँनीयै ॥
मिल मास नभ स्रावन मही सरता सु होवत रजसुला[1]।
वपु सुद्धि हित जिह स्नाँन वर्जत जाँन्हवी विन अनजला ॥४७९
पुस्करारण्य प्रभास[2] पावन ज्यूं प्रयागहु जाँनीयै।
कुरुक्षेत जैसेंहु नेमखारन पूज्य धरम प्रमाँनीयै ॥
अरवुदा[3] आरन वसु उजागर ध्याँन अवा धेइयै।
श्रीसैल और सुमेर सिखरी गंधमादन गेइयै ॥४८०
सुस्रेय पावन विंदु सरवर लेख माँनससर लहाँ।
अक्षोद जहवाँ वद्री-आस्रम नर-नरायन रह तहाँ ॥
सतजुपा आस्रम वाँमनाश्रम करेऊ तपसा काय सौं।
परसिद्ध जग मैं नाँम पावन जानीयै गति जाहि सौं ॥४८१
ये सवै तीरथ महा ऊत्तम दरस देव दिखाइयै।
व्रत दाँन जग्य विधाँनें तप वपु जजन जात्रा जाइयै ॥
कहु होत सुद्धी क्रीया कर्मन द्रव्य सुद्धी दाँन सौ।
कहु चित्त सुद्धी जाँनीयै कछु गिरा आदक ग्याँन सौं ॥४८२
तत तीर्थ जात्रा ताहि सौ मन तजत नाँहि मलीनता।
अहकार सजुत धर्म, उर्मी, दोख उर जस दीनता ॥
तीरथ व्रत रु साधना तप विघनकार विसेखीयै।
मल माँनसी तज होय निरमल दसा कवहुँ न देखीयै ॥४८३
आचर्न[4] सत्य रु सौच आदक पुन अहिंस्या पालना।
सतसग विन नही मिलै समता कितव, झपै काल ना ॥

१ रजस्वला। २ क्षेत्र। ३ आबू। ४ आचरण।

सज्जन समागम देत है सुख तीर्थ जाँनहु ताहि कौं ।
मिट जाय ह्रदय-मलीनता, इह दिव्य गनहु उपाय कौं ।।४८४
तट गग वसत वसिष्ठ तपसी महा[1] विस्वामित्रहू ।
आडी वने इक वक अगोका चोह कीन चरित्रहू ।।
इक अयुत वच्छर भयौ अद्भुत जुद्ध जाजुल जोर सौं ।
विस्मयत भये सव स्वर्गवासी देख तम-गुन दौर सौ ।।४८५
जब व्यास सौं करजोर कै करुविद्र पूछी इह कथा ।
वासष्ट विस्वामित्र प्रव्रत[2] जाहि वरनहु मति जथा ।।
सब कह्यौ व्यास सुनायकै रविवस राजा राँम के ।
पर पितामह भये काल पूरब नृपत हरचद नाम के ।।४८६
जिह पुत्र हित सुर वरुन जिग करकै प्रतग्या इह कही ।
अघ दोष मिटहि अऊत[3] कौ जनमैं सु मेरे सुत जही ।
नरमेध करकै जिग्य निश्चय देहुगौ बलिदाँन कौं ।
प्रारंभ कीय उर धारकै पन हेर लाभ रु हाँन कौं ।।४८७
सतुष्ट भये जव वरुन सुख सौ सुभग राजा सुदरी ।
गुर्वनी ह्वै निज गेह मैं अनछेह वढेऊ अनदरी ।
धीमत गर्भाधाँन के कीय ससकारहु कर्म कौ ।
ऊतपन्न भयेऊ अनूप अगज धारना कुल धर्म कौं ।।४८८
अत होन लागे जनम उच्छव[4] जही अवसर जाँनकै ।
वन विप्र आये वरुन सुरवर अर्थना अनुमाँन कै ।
करजोर राजा इह कही नारी प्रसूता न्हाँन सौं ।
सुध होयगी जब देहगे सुत बलि प्रदाँन विधाँन सौं ।। ४८९
इक मास बीतत अवध पै नारी विजाता[5] न्हायकै ।
सुध भई पुन ताही समै इत वरुन पहुँचे आयकै ।
बलिदाँन माँग्यौ विप्र बनकै प्रथम रीत परेखकै ।
मन होय व्याकुल महपती विसवास हीन विसेखकै ।।४९०
जब कह्यौ राजा प्रत परजन देहगे बलिदाँन कौं ।
कर ससकार निसेक आदिक वस रीत विधाँन कौ ।

१ मू प्र माहा । २ युद्ध वार्ता । ३ पुत्र-हीनता । ४ उत्सव । ५ प्रसूता ।

चुप होयकै तव गये तिह छिन वरुन सुनकै वात कौं।
राजा सु करनै लग्यौ रीती जॉन छत्रीय-जात कौ ॥४६१
तिह नाम दीनौं रोहिताष्य सुवेस दिन-दिन वृद्धता।
गरू-कर्म सीखन लग्यौ गरू सौं सस्त्रभ्यासन सिद्धता॥
परवीन पढकै भयौ पडित वेस बाल वितायकै।
कह दई काहू वरुन की कथ जग्य-भेद जतायकै॥४६२
भयभीत ह्वै सु विपन भाग्यौ अपुन प्रान वचावनै।
गिर-किंदरा कहुँ दुरयौ गहवर जनन पहुचै जावनै॥
इत वरुन आये पाय अवसर नृपत पै हित नेम कै।
वलिदाँन माँग्यौ वहुरकै जिह जग्य-रीती जेम कै॥४६३
लख वरुन कौ लाचार ह्वै सुत की हकीकत अनुसरी।
कहा करूँ भाग गयौ कहाँ भय पाय मृत्यु भरा-भरी॥
सुन वरुन दीनौं स्राप कौ अहो मृखावादी अघपती।
कर कपट मो सौ लयौ सुत कँह देख हौं दुख दुरमती॥४६४
वढ है जलोदर वेदना मोंहि सत्य वाचा माँनीयै।
सुन भूप चुप ह्वै भयौ स्रापत हीय सौ लख हाँनीयै॥
गये वरुन अपने लोक कौं गृह भूप वाधा वस भयौ।
कोऊ पथक सुनकै इह कथा कँह कँवर कौं जावहु कह्यौ॥४६५
धिक्कार तोको देह धारी पिता तन सौ ऊपज्यौ।
सो देह सौं हित लाय स्वारथ भीत सौं काँनन भज्यौ॥
जव कँवर चाल्यौ जानकै पितु मिलन कौं हित पायकै।
कर विप्र-रूप अनूप क्रत्रम इद्र पहुचे आयकै॥४६६
बोले सु कँवर विलोक कै कहाँ जात हौ कहा कारनै।
जव कँवर दीनौं ज्वाव इह पितु-हेत मिलन प्रचारनै॥
मघवाँन सुनकै कह्यौ मूरख नाँहि जाँनत नेम कौं।
विसवास रोगी कहा विसेकत खोय है तन खेम कौं॥४६७
सुन फिरयौ इंद्र सलाह कौं गवन्यौ न अपने गेह मैं।
रुज पायकै हरचद राजा दु:ख वाढ्यौ देह मैं॥
वासष्ट गरू वुलवाय कै अरजी सु कीनी आपकी।
गरू कह्यौ सुनकै गूढ गत कौं समन ताप सरापकी॥४६८

सिद्धान्त आपत[1] सास्त्र कौ सुन लेहु भूप सयाँन सौं।
वाख्यॉन देत सु धर्म-वेता पुत्र नीत प्रमाँन सौं ॥
भल होत तेरह भाँत के कछु नही अगज कारना।
सुत क्रींत लेवहु मोलसाटै[2] वरुन जिग विसतारना ॥४६६
पुन होयगौ तोहि सत्य प्रापत जायगौ दुख जाहि तैं।
दुजजात-सुत कौं द्रव्य दै मँगवाय लै पितु-मात तैं ॥
गरू वात कौ सुन मन्त्रिगन कौ कह्यौ नृप वुलवायकै।
कोऊ मिलै विक्रीय काँम सौ दुज-पुत्र लेहु दिखायकै ॥५००
धन देहु निरधन देखकै मुख सौं कहै सोई मोल कौं।
मोहि अरथ करीयै गर्थ[2] अर्पत वात द्रढ जुत वोल कौं ॥
सुन नृपत की कथ सचव सवही चले खोजन चाहिकै।
गये ग्राँम-ग्राँम गली-गली नृप-काज कौं चित लायकै ॥५०१
अजिगर्त विप्र मिल्यौ इतै इक महा निरधन आयकै।
मुर[3] पुत्र जामैं येक मँझला वेच वित्त बसायकै ॥
सुनसेफ जाकौ नाँम सभव आँन सचवन अघपती।
दीय देखकै तिह द्रगन सौं उर भयौ आँनद अहमती ॥५०२
नृप विप्र-जातन दै निमत्रन जग्य करन लग्यौ जँही।
आये सु विस्वामित्र इतनै सुन्नसेफ लख्यौ सही ॥
विललात बंध्यौ थभ सौ बहु पसू जैसै पेखकै।
मुनि दया आय कह्यौ महीपत विमल वुद्धि वसेखकै ॥५०३
सुर जाचकै आयुस समर्पहि छोर दुज कौ छोकरा।
अविचार वातै करत हौ अव डिगी मति कहा डोकरा ॥
प्यारौ है तुमकौं प्रान ज्यूं याकौ हूँ प्यारौ आपकौ।
महाराज याकौ मारकै पैहौ जु कोऊ फल पापकौ ॥५०४
माँनी न विस्वामित्र की सुन वात राजा स्रौंन सौं।
अत भये क्रुद्धत महा उर मैं मुनी खडत मान सौं ॥
द्वज-पुत्र पै करकै दया दीय वरुन मत्र मुनिंद्रहू।
स्वर प्लुत सौ जव सुन्नसेफहु जजन लाग जितिंद्रहू ॥५०५

---

१ आप्त। २ समूल्य, मूल्य देकर। ३ गर्त। ४ तीन।

तिह मत्र कै परताप सौं आये सु वरुन उवारनै।
द्विज-पुत्र-वधन छोर दीनौ नृपत दोख निवारनै ॥
लै सुजस अद्भुत लोक कौं गये वरुन अपने गेह कौं।
द्विज औरहू गये दसहू दिस कौ सकल त्याग सँदेह कौ ॥५०६
राजाहू अपने राज कौं करनै लगौ सब कांम कौं।
बुलवाय लीनौ विपन सौ निज पुत्र रोहित नाम कौ ॥
मुनिराज विस्वामित्र हू मन रोप कर धर म्लाँनता।
कछु राज नहिं माँनी कही गहि ह्रदय मैं अत ग्लाँनता ॥५०७
आखेट इक दिन गये अवपत[1] कौसकी नद कूल मैं।
वाराह हेरत विपन कै विच भेट भई मुनि भूल मैं ॥
वयवृद्ध द्विज कौ वेख वनकै जाच भूपत जाल सौं।
सरवस्व लीनौं राज समृथ चित्त की मति चाल सौं ॥५०८
भये विपत मैं रत हीन वैभव जाँनकै जजमाँन कौं।
वासिष्ट विस्वामित्र कौ बहु कहेऊ वचन कुवाँन कौं ॥
दुरबुद्धि दंभी द्वेष दुस्तर कवल करकै क्रूरता।
हरचंद कौ सब राज हरकै धार लीनी धूरता ॥५०९
वक[2] व्रती लैकै विपन विहरत करत जालक काँम कौ।
वक होऊँ तेरौ दोप सौ वपु गेह वसहु न ग्राँम कौं ॥
मुनि कह्यौ विस्वामित्र हू वासष्ट सौं इह वात पै।
हम रहै जौलौ वक बिहगम आप होवहु आत[3] पै ॥४१०
वक भये कौसक जब वसष्टहु आडि होय उडान लै।
तट देख विटप तडाग पै तब करे वासौ कॉन लै ॥
निस रहत तरु पै सूर निकरत उभय सरवर आयकै।
कर क्रुद्ध लरत हमेस कौसक रिख वसष्ट रिसायकै ॥५११
चल चोट चोचन नखन लौचत खाल खाँच नखूर कै।
उड जात कबहुँ अकास मैं दै चक्र फिर-फिर दूर कै ॥
कर क्रुद्ध दाव अनेक करकै घने मारत घाव कौं।
पुन देत उभय प्रहार पछ्छन प्रबल झटकत पाव कौं ॥५१२

१ महाराज हरिश्चद्र। २ वगुला। ३ एक पक्षी (आड़ी)।

सुर देख विस्मय भये सब ही बात सुनकैं विध वहे ।
आये सु मांनस-ताल आतुर रिखी जहवाँ लर रहे ॥
करकैं निवारन कलह की संताप स्राप नसायकैं ।
विध गये अपने लोक मैं वट परम आंनद पायकैं ॥५१३
वासष्ट मैत्रावरुन मुनिवर मिले विसवामित्र हू ।
तज क्रोध और विरोध तव ही करन लाग इकत्र हू ॥
वासष्ट कौसक वारता श्रीवेदव्यास सुनायकैं ।
पुन कह्यौ कौरवपति प्रतैं सब सभा आद सुनायकैं ॥५१४
वलवती माया वेग कौ परवाह गनहु अपपरा ।
मुन तपी ग्यांनी जिनहुँ मोहत वचै कौन वसुधरा ॥
सुभ व्रत तीरथ और साधन जांनियैं वहिरग जे ।
पर अतरग पिछांनीयैं अहकार जीतन अग जे ॥५१५
मन होय जासौं सदा निरमल ध्यांन करीयैं धारना ।
अहकार जासौं मिटैं उरमी विहत[1] कर्म विचारना ॥
कलिकाल कठन कराल कर्मन वच्यौं चाहैं वासना ।
अनाद माया ईस्वरी अभ्यास करहु उपासना ॥५१६

दोहा

सुनी कथा कुरुराज सब, विस्वामित्र वसिष्ट ।
श्रीमुनिवर पारासरीय, प्रस्न करचौ इह पुष्ट ॥५१७
ब्रह्मा-पुत्र वसिष्ट कौं, आह्वय कह्यौ जु और ।
कारन जामैं कोन है, मन समझावहु मोर ॥५१८
गुनकर अथवा कर्म-गत, सख्या भई जु सघ ।
कैसे कहे वसिष्ट कौ, मैत्रावरुन मुनिंद ॥५१९

छंद हैं अरुखरी

व्यास सुनी जनमेजय वांनी, कहन[2] लगे वासष्ट कहांनी ।
नृप इक्ष्वाक सु तन निम नांमी, सो द्वादसम भये वसु स्वांमी ॥५२०

१ विहित । २ मू. प्र. कहनैं ।

आस्रम गोतम निकट उजागर, पत्तन जिह विरच्यौ जयतपुर।
येक समय पितु वोले ऐसैं, ज्याग करहु सुधरै गति जैसैं ॥५२१
साँमग्री सव भाँत सँवारे, द्वज कुल निमत वुलाये द्वारै।
वाँमदेव गोतम वासिष्टहु, पुलह पुलस्त्य भृगू प्रतिष्टहु ॥५२२
क्रतु-रचीक[1] कौं येकत करा, अवर वुलाये रिखि अगरा।
विद्या वेद परागत मुनिवर, भये अनेक येकठे भूसुर ॥५२३
मुनि वसिष्ट कुल-पूज्य विमलमति, प्रथम करी नृप अरज तिही प्रति।
क्रतु हम राजसूय करवावहु, दीक्षा मोकौं उचत दिवावहु ॥५२४
आस्रव करहु गरू इह वारा, हायन[2] वीते पाँच हजारा।
श्रीअवा आराधन साधन, विधवत वेद करहु निरवाधन ॥५२५
राजा सौ सुन कह्यौ रिखीस्वर, सुनीयें मेरी बात नरेस्वर।
मघवा कर्यौ निमत्रन मेरौ, तासौ कारज वनै न तेरौ ॥५२६
इंद्र कराय जिग्य मैं ऐहौं, जव तेरीहू भख कर जैहौं।
जव वोल्यौ राजा कर जोरै, ये रिखी निमत वुलाये औरै ॥५२७
साँमग्री सव वस्तु सँभारी, सो तौ विगर जायगी[3] सारी।
कुल-गरू होय देत हौ कांना, इह मेरौ करकै अपमांना ॥५२८
निम राजा वहु करे निहोरे, चले गरू जजमाँनहू छोरे।
मुनि ग्याँनी वासिष्ट[4] महाँना, लोभ पाय सोऊ ललचाँना ॥५२९
होय उदास भूप लख हाँनी, गरू पूजे गोतम मुनि ग्याँनी।
करनैं लग्यौ जग्य कौ कारज, और रिखी सजुत आचारज ॥५३०
गिर हिमवाँन उदध-तट गयेऊ, भूँम पवित्र करत जिग भयऊ।
जग्य-अत द्वज सकल जिमाई, द्रव्य दक्षना विवध दिवाई ॥५३१
रित्वज पूज विदा कीय राजा, वाजे जवही मंगल-वाजा।
वरख हजार पाँच जव वीते, निम राजा क्रतु भये न चीते ॥५३२
राजनगर मैं आये राजा, मत्री पुरजन मिले समाज।
सुरपत जग्य कराय सँपूरन, आये गरू वसिष्ट ह्वै ऊरन ॥५३३
उतरे राज-भवन मैं आई, सोवत राज सयन सुख पाई।
इह कारन सौं भयौ अवेरौ, कीय सतकार नहीं गरू केरौ ॥५३४

---

१ यज्ञ करने वाले। २ वर्ष। ३ मू. प्र जाय। ४ मू प्र. वसिष्ट।

गरू के मन मे उठी गिलाँनी, अन[1]कर गरू भयौ अभिमाँनी ।
आवत नाँहिन सनमुख अवा, कुल-रीती फेरचौ जिह कघा ।।५३५
ग्याँनी तऊ तमोगुत गहेऊ, भूपत निम पै क्रुद्धत भयऊ ।
स्राप देत भये मुनिवर सोऊ, ह्वै के हथ[2] विदेह तुम होऊ ।।५३६
जागे नृपत वात सुन जवही, सोच करन लागे जन सवही ।
रिखी कै निकट गयौ तव राजा, इह वोल्यौ कहा करचौ अकाजा ।।५३७
सोवत रह्यौ नीद मैं सयना, आये जवही अचाँनक अयना ।
जाँनी कछू न वात जताई, रोख करचौ अनुचित रिखीराई ।।५३८
मेरौ दोष करचौ मै मानत, जाहू पैं कछु रोप न जाँनत ।
गरू जजमाँन-पनौ कौ ग्याता, लोभ पाय विसरे तुम नाता ।।५३९
सूतौ नीद पाय सयनासन, खवर न पूछी दास खवासन ।
श्राप दयौ अनजाँनें सेती, इह चडाल क्रुद्ध कीय येती ।।५४०
इह ससर्ग भये अपवित्रा, पिंड त्याग तुम होहु पवित्रा ।
राजा श्राप दयौ रिखीराई, राजाहू इह कह्यौ रिसाई ।।५४१
श्राप-ताप लै विव इकसगा, भावी पाय भये मन भगा ।
विध पै गये वसिष्ट विचारो, इहै श्राप की कथा उचारी ।।५४२
अगज श्राप करू पितु औरै, मन गिलाँन आवत इह मोरै ।
करहु स्याहि मेरी तुम करता, हीय विचार दारुन दुख हरता ।।५४३
सुत पिछाँन विध करचौ सँवोधन, मत पिछतावहु सोच मनहिं मन ।
मैत्रावरून देह कै माँही, तुम प्रवेस कर रहहु तहाँही ।।५४४
अवसर पाकै होहु अजोनी, सुख सौ पैही देह सलोनी ।
ग्याँन न जैहै सुनहु मुग्याता, करता क्रम ह्वै हौ कुसलाता ।।५४५
सुन विध वचन मुनीस सिधाये, घट त्यागौ नही चित घवराये ।
मैत्रावरुन देह कै माँही, जीव अस प्रवस्यौ मुनि जाँही ।।५४६
पुन वीते वहु दिन जिह पीछै, वरती वात वरुन गृह वीचै ।
अली-सग उरवसी जु आई, वपु सुंदर मुच वेख वनाई ।।५४७
मैत्रावरन भये दोऊ मोहित, चितवत वाढी काँम केल चित ।
कह्यौ उरवसी ह्वै काँमातुर, चहत उभय रति करीयै चातुर ।।५४८

१ अन्य को । २ मृत्यु प्राप्त होकर ।

सुन देवन की वात सयाँनी, जुगल वात माँनी मन आँनी।
वास करयौ कछु दिन जहाँ वीते, हिल-मिल रहे उरवसी ही तै ॥५४९
करत काँम कौतूहल केते, मैत्रावरुन उरवसी समेते।
वपु की दूर मेलकै व्रीडा,[1] करत अनेक भाँत सौ क्रीड़ा ॥५५०
द्रगनन रूप उरवसी देखा, वढी अनग तरग बिसेखा।
उभयन वीज गिरयौ सग येकौ, परयौ कुभ मैं जाय परेखौ ॥५५१
उभय वीज सौं प्रकटे आई, रिखी अगस्त वासिष्ट रचाई।
सिसु वय मुनि अगस्त तप साधन, अटवी वसे ईस आराधन ॥५५२
नृप इक्ष्वाक वसिष्ट निहारे, दुज कौ राज बसाये द्वारे।
प्रोहित थाप पाव कीय पूजन, मैत्रावरुन वसिष्ट महाँमुन[2] ॥५५३
भूपत निम की इह गति भई, सुन लीजै ताही कौं सही।
मुनी जिग कारन आये मिलकै, छाय रहे नही गये जु चलकै ॥५५४
आये रिख वासिष्ट अजाँनै, निम कौं दीनौ श्राप निदाँनै।
होने लगी दसा नृप हीनी, खिती पर देह राखकै खीनी ॥५५५
जतन करन लागे सव जुरकै, चदन आद सुगधी छिरकै।
तत्र-मत्र कीने केऊ टोना, हिर कारज कीय जो कछु होना ॥५५६
इतने मैं मिल देवहु आये, प्रथा जग्य जे पूजन पाये।
वोले निम राजा सौं वाचा, सव देवन सेवन मैं साचा ॥५५७
कीय सतुष्ट हमैं जिग करकै, वचत माग लेहु तुम वरकै।
चाहत देह नवीनी चित सौं, हम प्रापत करहै गति हित सौं ॥५५८
जव वोल्यौ राजा कर जोरै, मिथ्या देह चाहि नहि मोरै।
जग मैं प्राँनी मात्र जितेकी, उपजै बिनसै जीव अनेकी ॥५५९
वायु रूप द्रष्टी कर वासा, खुसी रहूँ तन त्याग खुलासा।
साखी रूप लखूँ जग सारौ, है अभिष्ट इह तात हमारौ ॥५६०
देवन कह्यौ सुनहु नृप दाँनी, भजन करहु तुम आद भवाँनी।
परा अवका जगत पसारौ, विरचत रूप चेतना वारौ ॥५६१
वाकौ ध्याँन ह्रीदै आराधहु, सिद्ध मनोरथ जो कछु साधहु।
देव-रिखी सुन वात दुहूँ की, मन की दुतीय काँमना मूकी ॥५६२

१ लज्जा। २ मू प्र माहामुन।

परासक्ति पद पकज पावन, ध्याँन अखड लग्यौ नृप ध्यावन।
भक्ति निवाजन जक्त भूपनी, रमा ऊक्त ओउकार रूपनी ॥५६३
वछछ सव्द सुन सुरभी वेसा, निकट आय दीय दरस नरेसा।
सचर सुभ पौसाक संवारै, अवर पाट लाल रग वारै ॥५६४
वैनन नैन-सुधा-रस वरसै, दीपसिखा आभा तन दरसै।
करुनारस भीनी जिह् काया, जोगेस्वरी जीव जग जाया ॥५६५
मुनिजन सुर देखत महमाई, आरत नृपत दरस दीय आई।
वर माँगहु वोली मन वचत, उर मत होहु कछू अवलचत ॥५६६
वचन ईस्वरी पाय विमासा, इहै नृपत कीनी अरदासा।
मुक्त देहु माँगत महमाया, क्लेस पच[1]-जुत त्यागूं काया ॥५६७
परम ग्याँन जीवन परकासी, वसू द्रष्ट नैनन हुय वासी।
देवी कह्यौ सुनहु वैदेहा, सव जीवन कौ परम सनेहा ॥५६८
जग प्रारध्व जाँनवे वारे, होवहुगे इह् वचन हमारे।
नेत्रन वास करहु निरवाँनी, पलक आज सौंभाँ जाहि प्राँनी ॥५६९
अनमिख रहहि देवता यातै, जगत निसाँनी जाँनहि जातै।
पलक नाँम जिह् निमख प्रचारै, सव्द रीत परी आई सारै ॥५७०
दै वरदाँन सिधाई देवी, सुर नर नाग सकल जन-सेवी।
राजा मुक्ति भई इह रीती, पर्म सक्ति चरनन कर प्रीती ॥५७१
राजन तन मुनिजन लै राख्यौ, अगज उतपत चित अभलाख्यौ।
करकै होम जाप कथने कौ, मत्र सहित लागे मथने कौ ॥५७२
धरकै अरनी ताही धूपर, आहुती दैन लगे सव ऊपर।
काहुक वेर लगी मुनि करता, सुत उतपत्त भयौ वहु सुरता ॥५७३
रूप रंग निम सम अत रूरौ, येको अग न जाहि अधूरौ।
मथन करत सुत भयौ जु निम सौ, गोत्र दयौ मिथ ताही गम सौं। ५७४
भयौ जनक सौं ताही भेवा, दूसर जनक कह्यौ मुनि देवा।
निम का पुत्र जनक भये नाँमी, सकल सिरोमन वसुधा स्वाँमी ॥५७५
तट गगा ऊपर नृप ताही, सुदर मिथलापुरी वसाई।
ताही कुल उपजे नृप तेते, जनक विदेह पुकारत जेते ॥५७६

१ अविद्या, राग, द्वेष, अस्मिता, अविवेक—

ग्यॉनी भये सवही नृप ग्याता, वसुधा बाढयौ वस विख्याता।
सुन कुरविंद्र कथा इह सारी, व्यास प्रस्न कीय ग्यॉन विचारी ॥५७७
विध-सुत मुनि वासिष्ट विग्यॉनी, जिह नृप श्राप दयौ कहा जॉनी।
समीगर्भन[१] सौ नॉहिन समता, खत्री-वस करत सब खिमता[२] ॥५७८
कुल इक्ष्वाक तजी नृप कॉनी, गहत मोर चित व्यास गिलॉनी।
व्यास कह्यौ सुनीयै नृप वायक, वस जजात हस वर दायक ॥५७९
रागी जीव क्षमा-पन्न राखन, स्वारथ वॉन मत्य सभाखन।
कृतघन कहूँ होत निसकपटी, येती बातै गनहु अटपटी ॥ ८०
समरथ ह्वै पुन सहन सुभाऊ, कोटन मॉंझहि देखीयै काहू।
तपनेष्टा जोगी सग त्यागी, विहृत कर्म रत अरू बैरागी ॥५८१
त्रस्ना नीद क्षुधा जित तेऊ, अहकार बिन लखै न येहू।
मोह करत जिनहूँ को माया, कॉम क्रोध-बस दीसत काया ॥५८२
उरमी[३] धर्म जीतने वारे, नॉं कोऊ सुने न नैन निहारे।
ब्रह्मलोक वैकुठ विचाला, पेख लेहु तुम स्वर्ग पताला ॥५८३
विध-सुत कौ कहा दोख वखॉनौ, जिनहू की मति इह गति जॉनौ।
मुनी तपी सव त्रय गुन निर्मत, मनुजन की जॉनहु जैसै मति ॥५८४
कपल[४] जु स्याख्य[५] सास्त्र के करता, अत पवित्र तप तन उद्धरता।
करे भसम तिन सगरकुमारा, कारन भाव गनहु अहकारा ॥५८५
तीन लोक की उतपति तासौ, जुदे नही कोऊ जॉनहु जासौ।
ब्रह्मा रमॉंनाथ महावरती[६] पेखहु तीन गुनन परवरती ॥५८६
तीन देह मैं गुन हैं तीनूं, प्रथक-प्रथक भखत परवीनूं।
प्रथक-प्रथक जिह भान परीखत, द्रगनन विद्यमॉंन सोइ देखत ॥५८७
मनुजन सतगुन केवल मिलनौ, चितवन कठन जाहि मग चलनौ।
सकर[७] गुनन भाव सवही मैं, हेर लेहु जीवन केही मैं ॥५८८
कवहूँ व्रद्धि होत सतगुन की, जैसै ही गत रज तम जिनकी।
समता भाव कवहु ह्वै सुख सौं, रजगुन तमगुन सतगुन रुख सौ ॥५८९
परै गुनन कै है परमातम, गहृत ग्यॉन अनुभव जाकी गम।
परा सक्ति ऐसै पहिचॉंनौ, येकीभूत जाहि अनुमानौं ॥५९०

---

१ ब्राह्मण। २ क्षमा। ३ काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद। ४ कपिल मुनि। ५ साख्य। ६ महादेव। ७ मिश्रित।

अल्प-बुद्धि जाँनत नही यातैं, वाद वढाय वनावत वातैं।
माँनत जुदे-जुदे अभमाँनी, पावत मोक्ष नही जे प्रांनीं ॥५६१
माया ब्रह्म येक कर मानत, परमारथ सोइ जन पहिचाँनत।
पद निर्वांन अगम गति पावत, इकादै वे दाँत दिखावत ॥५६२
इह सिद्धांत जानवेवारे, अधकूप जग मैं उजीयारे।
वेद भेद द्रढ रीत वनायौ, ग्यांन दोय परकार[1] गनायौ ॥५६३
सात्विक बुद्धि जोग के सोई, जाँनत सास्त्र अरथ सौ जोई।
अनुभवाख्य दूसर अवरेखौ, दुरलभ जग मैं कोऊ डर देखौ ॥५६४
सज्जन मिलन और सतसगा, पावत जिनकौ पाय प्रमगा।
सव्द-ग्यांन सौं कारज सिद्धी, काय कलेस न जाय कुवुद्धी ॥५६५
अनुभव ग्यांन कोऊ अधकारी, निगम-अगम सौ जिह गति न्यारी।
जामैं इक द्रिष्टांत जनावत, ग्यांनवाँन परीआई गावत ॥५६६
दीपक वात करै तै द्रग कौ, जात नही अँधियारौ जग कौ।
जात अँधारौ दीप जगाये, वाती तेल मेल विलगाये ॥५६७
कर्म वही जो वधन काटै, विद्या मुक्ति वतावै वाटै[2]।
सिल्प-निपुनता आद सकोई, नाँम कहत विद्या निरलोई ॥५६८
कारज यातैं मधै न कोऊ, देख विचारहु द्रगनन दोऊ।
सील संतोष जु परहित साधन, आर्जव क्षमा ईस आराधन ॥५६६
कोप अभाव जाय कठनाई, विद्या-फल इह लहै वसाई।
विद्या पाय जु लहै विवेका उर-अग्यांन मिटै अविवेका ॥६००
जोग जुगत जप विन जन जोई, क्रोध सत्रु नहिं जीतै कोई।
काम-क्रोध अरु लोभ कलेसा, होत प्रगट चित माँझ हमेसा ॥६०
मन जीतैं तव मिटै मलाँनो, वेद पुरानन कथा वखाँनी।
काम क्रोध वस निम क्रम कीनौं, दुज वसिष्ट कौ स्राप जु दीनौं ॥६०२
नृप जजात ज्यो क्षमा न कीनी, छत्री-धरम राह नही छीनी[3]।
भृगु-सुत नृप जजात कँह भारी, दै सराप वहु करचौ दुखारी ॥६०३
जुरा-अवस्था लै तन जोई, विपता गहि समता न विगोई।
क्रूर सुभाव भये नृप कोऊ, सील सुभाव वखाँने सोऊ ॥६०४

१ प्रकार। २ मार्ग। ३ चीन्ही, पहिचानी।

है सुभाव आस्रत दोऊ हेतू, सुनीयै स्रुत कुरुपति ध्रमसेतू।
परपरा रोती इह पेखौ, द्वेपरागजुत सवही देखौ ॥६०५

दोहा

हैहय-वसी नृप हने, भ्रगुवसी भूदेव।
कुल प्रोहित जिनकौ कलंक, भयौ नयौ तज भेव ॥६०६
छत्री वडे कुलीन छित, क्रोध भये वस क्रूर।
व्रह्मघात कीनी विवध, दया मेलकै दूर ॥६०७

छंद उद्धोर

भये कार्तवीर्ज भुवाल, वली सँहँसबाहु विसाल।
निज ताहि अर्जुन नाम, धर्मार्थ सुक्रत धाँम ॥६०८
अवतार दत्तात्रेय, सिख ताहि पावन स्रेय।
सुख-समृध-दाता सिद्ध, पुहमी भये परसिद्ध ॥६०९
भृगुवसीयन जुत भाव, पूजत सु तिनके पाव।
जजुमाँन प्रोहित जाँन, द्रव देत अगनत दाँन ॥६१०
जिग करे अगनत जाहि, उर धर्म मति अवगाहि।
दुज-जात लैलै दाँन, वहु भये लिछमीवाँन ॥६११
पद स्रेष्टता जग पाय, सुख-भोग करत सुभाय।
वढजात केतक काल, भये कालवस भुवपाल ॥६१२
कुल कार्तवीरज केर, घर लये दारद घेर।
वित सिवायन[1] कीह व्याज, रन[2] माँग जाती राज ॥६१३
द्रव नटे करजा देत, इह उपज आय अहेत।
जजुमाँन नातौ जाँन, कीय नाँहि विप्रन काँन ॥६१४
कीनौं सु छत्रिन कोह, दुज-जात सौं चित द्रोह।
भृगुवसीयैं भयभीत, नृप-वसीयन लख नीत ॥६१५
भागे सु तज-तज भौन, गिर किंदरन कीय गौन।
लागे सु हैहय लार, मडी सु विप्रन मार ॥६१६

---

१ सवाया। २ ऋण।

तीय लूट-लूट तमाँम, धन धरोहर पुर धाँम।
जजुमाँन हैहयजात, दुज प्रोहितन दुखदात ॥६१७
भृगु-वमीयन के भाँन, खोदत बीच खदाँन।
जहाँ मिलै द्रव्य जितेक, लैलेत अपनौ लेख ॥६१८
दुज मुनी तपसी दौर, आये सु सज्जन और।
हैहयन छत्री हेर, तिन कहे वायक टेर ॥६१९
जजुमाँन प्रोहित जाँन, नही तजै वैर निदाँन।
करता सु करम करूर, धुर धर्म मिलवत धूर ॥६२०
इह काँम करत अनर्थ, विप्रन प्रहारत व्यर्थ।
द्वज वाल वृद्धन दुष्ट, तज दया मारत तिष्ट ॥६२१
गुर्वनी फारत गर्भ, अघपूर डारत अर्भ[1]।
इह पाप नाँहि अघात, जाजुल्य हैहयजात ॥६२२
जब मुनीजन कौं जाँन, बोले सु हैहय बाँन।
हम पूर्वज्यूं के हाल, तुम ग्यात द्रष्ट त्रकाल ॥६२३
भुज पराक्रम लीय भूम, घमसाँन फौजन घूम।
जिन करे दुसमन जेर, फुरमाँन[2] चहूं दिस फेर ॥६२४
लै प्रजा कर वित लोर, कीय जमा लाख करोर।
दीय दुजन सोई दाँन, परमार्थ स्वार्थ पिछाँन ॥६२५
वक व्रती विप्र विडाल, मेल्यौ सु घर मैं माल।
जिग करत ना कछू जाप, थाती सु राखत थाप ॥६२६
हर जातीयन कर हेत, द्रव व्याज-साँटे देत।
द्वज करत सग्रह दाँन, जय मँनावत जजुमाँन ॥६२७
सुक्रत लगावत सोय, हित जाहि दाता होय।
ससार कहत सुनाय, गति तीन द्रव्य गनाय ॥६२८
भल दाँन दूसर भोग, कँहाँ नास पाय कुजोग।
देत भोग दोऊ सुखदाय, निस्तात पुरपन न्याय ॥६२९
निध होत पापी नास, खरचै न खावै खास।
उपजंत ताकौ आँन, भय राज तस्कर भाँन ॥६३०

१ गर्भस्य शिशु। २ फरमान=आज्ञा।

जरजात अगन सँजोग, ले जात घूरत लोग।
है ऊचत बात हरेक, वित स्रधा जाँन विसेक ।।६३१
खरचै कि अथवा खाय, जाँनै जु अवसर जाय।
पुन विप्र-जात पुनीत, रिखी-वस की इह रीत ।।६३२
इन तजी विप्रन आद, महामुनन की मुरजाद[1]।
द्रुज महाजन बन दुष्ट, इक द्रव्य राखत इष्ट ।।६३३
हित पुरोहित कुल होय, कर कपट छल-बल कोय।
हम मांड नीचै हाथ, सकल्प लै द्रुज साथ ।।६३४
दे दगा लीनौ दन्न[2] परलोक के हित पुन्न।
अहलोक विगरचौ आज, रन करचौ गारत राज ।।६३५
कुल-पुरोहित अनुकूल, वित-व्याज करन वसूल।
माँग्यौ न दीनौ मोहि, हम रहे सभ्रम होय ।।६३६
पुन नीत-रीत पिछांन, जीय राजद्रोही जाँन।
दैनै लगे जब दड, भागै सर्व मति-मड ।।६३७
नही सध करत निलाज, इह रोग येह इलाज।
मुनी नही जाँनत मत, अघपूर विप्र अनत ।।६३८
माँनी न सीख मुनिंद्र, ऊठ चलेउ विप्र-अरिंद्र[3]।
लागे सु ढूंडन लार, भृगु-वसीयन सभार ।।६३९
भय पाय गये द्रुज भाग, मिल हिमाचल के माग[4]।
तीय जात अबला त्याँह, मेली सु मारग माँहि ।।६४०
हैहयाजाती हेर, घन करी दु.खत घेर।
भागी सु त्रीय भयराय, थित छोर उर थहराय ।।६४१
दौरे सु पीठ दे काल, हैहयन कीय बेहाल।
गये विप्रहू जिँह गैल, श्री गई ताही सैल ।।६४२
जहाँ विप्र ढूंढे जाय, नही मिले कोऊ नोयराय।
विललात नार विसेस, कर सीस ऐंचत केस ।।६४३
इक वृद्ध तीय उन माँही, उपदेस दीय अवगाहि।
पूजहु सु गवरी पाव, भय त्यागकै जुत भाव ।।६४४

१ मर्यादा। २ दान। ३ विप्र-बैरी। ४ मार्ग।

सुन तीया सवही साथ, महमा सु गवरी[1] मात।
वन सघन नैंन विलोक, थिर वैठ थोकन-थोक ।।६४५
मृनमई[2] मूरत-मड, येकत वैंठ उछड।
सब करन लागी सेव, सजुक्त मत्र सभेव ।।६४६
जप मत्र गौरी जीह, दुःखार्त रात्री दीह।
इक नार सोवत आय, सुभ सुप्न मात सुभाय ।।६४७
सेवत सु मूरत साच, वँह बोल ऊठी वाच।
तो जघ जनमहि तीय, कऊमार[3] सुख करनीय ।।६४८
सो करहि बाल सहाय, विस्रभ रहहु वसाय।
तव जाग ऊठी तीय, हित हरख वाढचौ हीय ।।६४६
इह सुप्न सुखद अपार, नारिन कह्यौ इह नार।
उपज्यौ सु गरभ अधाँन, सोई जघ मैं सुखदाँन ।।६५०
इतने कहै हय[4] आय, कीय कुलाहल वलकाय।
भागी सु विप्रन भाँम, मिल त्याग-त्याग मुकाँम ।।६५१
पुन लगे हैहय पीठ, नारी सु भागत नीठ।
गर्भनी काँपत गात, बहु रोयकै बिललात ।।६५२
सुन रुदन पुत्र सयाँन, उर[5] फार प्रगटचौ आँन।
अत तेजवत अनूप, सुखदाय गौर-स्वरूप ।।६५३
अरू उदित आभा अग, परभात मनहु पतग।
दुति जाहि वाढचौ दौर, वँह फैलकै चहुँ ओर ।।६५४
द्रग मूँदे हैहय देख, विस्मयत भयेऊ विसेख।
भट सवही ह्वै भयभीत, मन जाँन लीन प्रमीत[6] ।।६५५
अकुलाय डोलत अध, कलभूंम जाँन कवध।
कोऊ कुढत कर-कर कूक, अह[7] दसा जेम उलूक ।।६५६
रहे विपन वीच रुलाय, पग गरत-परत पुलाय।
सटपटत अटकत साल, भटभेर होवत्त भाल ।।६५७
कंटकन अरुझत केस, अट जात पट अवसेस।
विसरे सु हैहय वीर, सुध खाँन-पाँन सरीर ।।६५८

१ गौरी। २ मिट्टी को। ३ कुमार। ४ हैहय। ५ यहाँ=जघा। ६ मृत्यु

इक येक पूछत अध, कहा पाप बैठौ कध।
जब कहत कोऊक जाँन, कीय मेट कुल की काँन ॥६५९
पूजत सु प्रोहित पाय, घट तिनही घालत घाय।
घर छोड भागे घाँम, भागी सु सग ही भाँम ॥६६०
इत करी पीडत आय, निरनौ न सोचे न्याय।
इह पाप गनहु अघोर, इधकौ न यासौं और ॥६६१
कीय महाँ निंदत काँम, मरजाद छोर मुकाँम।
लीय ब्रह्महथ्या लाख, सिस सूर भरहै साख ॥६६२
परलोक बिगरचौ पथ, अह लोक आयौ अत।
इक सुनी बात अभूत, प्रघटचौ सु जघा पूत ॥६६३
जिह लख्यौ तेज जहूर, द्रग द्रष्टि भागी दूर।
मिल सबै सिसु की माय, तुम करहु बिनती ताहि ॥६६४
सिसु होयगौ सु प्रसन्न, उरु भयौ जो ऊतपन्न।
वयवृद्ध की सुन बात, जब सोच हैहय.जात ॥६६५
द्रज तीयन आगैं दीन, कर जोर बिनती कीन।
हम करे दोख हजार, अनऊचत लोभ अगार ॥६६६
तुम प्रोहतन की तीय, हम मात सोचहु हीय।
जजुमाँन सुत सम जाँन, पथ जात राखहु प्राँन ॥६६७
मरहैं सबै विन मौत, कुल वहहि कठ करौत।
कहा वाल वृद्धा काय, मम हैहयन की माय ॥६६८
सुत जाँन करहु सँभार, वपु वयर भाव विसार।
सुन विप्र तीयन सकोय, सुप्रस्न ह्वै सहकोय ॥६६९
हैहयन कहेऊ सहेत, सब सुनहु होय सचेत।
पितु हने जाहि प्रचार, मुनि औवं भ्राता मार ॥६७०
कीय गर्भ-छेदन केक, सो देखलीय सविवेक।
वस रहे जघा-वीच, मुनि और्व नैनन मीच ॥६७१
अब प्रगट पलक उघार, चित समुझ पापाचार।
द्रग ग्रहन कीनी द्रष्टि, तुम छत्रीयन की तिष्ट ॥६७२
तऊ करहु विनती ताहि, देहैं सु द्रष्टि दिखाय।
सुन विप्र-नारी सीख, अवगुनन अपने ईख ॥६७३

मुनि ग्रौर्व पायन माँय, गिर गये माँन गिराय।
कऊमार विप्र क्रपाल, तव द्रष्टि दीय ततकाल ।।६७४
पुन छत्रीयन मुनि पाव, पूजे सु पूर्न प्रभाव।
दीय ग्रभय तिनकौ दाँन, सव रीत ग्राद समान ।।६७५
लै ग्राय हैहय लार, दुज ग्रापने दरवार।
धुर धरा दीने धाँम, तज वयर भाव तमाँम ।।६७६
विनती करी नृप व्यास, इह स्रौंन सुन इतिहास।
भृगुवस हैहय भाय, इह लोभ कीय ग्रन्याय ।।६७७
ग्रत लोभ पापी ग्राद, पथ-धर्म करत प्रमाद।
द्वज छत्रीयन कौ दोस, जिह लगायौ कर जोस ।।६७८
जग भये हैहय जात, खत्रीन कहीयै ख्यात।
मुद पाय व्यास मुनिंद्र, कहने लगे करुविंद्र ।।६७९
इक दिवस रवि[1]सुत ग्राय, रेवंत रूप रचाय।
हय ऊचस्रवा चढ हाल, वैंकुंठ-लोक विचाल ।।६८०
चित विस्नु-दरसन चाह, रमनीक लीनी राह।
श्रीविस्नु देखत सोय, जिह रही पद्मा जोय ।।६८१
वोले सु विस्नु विचार, इह कवन हय ग्रसवार।
हय रही पद्मा हेर, वोली नही तिह वेर ।।६८२
प्रभु जाँन मनमैं पाप, सोई लगे दैन सराप।
मन नही थिर तोहि मूल, डग रहहु डाँवाडूल ।।६८३
रमतीत रहु दिन-रात, वसु रमाँ नाँम विख्यात।
चल नाँम चचल चित्त, पुहमीन होउ प्रवृत्त ।।६८४
थिर होयकै कहु थाँन, नहि वसहि येहु निदाँन।
मिल पास वैठी मोर, चित जात जहाँ-तहाँ चोर ।।६८५
हय हेत वाल्यौ हीय, तुम होहु वडवा[2] तीय।
मृतुलोक वसहु मुकाँम, वयकूंठ तजकै वाँम ।।६८६
श्रीविस्नु सुनकै स्राप, वहु लगी करन विलाप।
लिक्षमी ह्वै दुखलीन, कर जोर विनती कीन ।।६८७

---

१ यम। २ घोडी।

कव स्राप मिटहिं कलेस, इह करहु हरि-उपदेस।
जव कह्यौ विस्नू जाहि, उर ग्यांन कौ अवगाहि ॥६८८
सुत जनहिगी सुख-दाँन, सतांन मोहि समांन।
जव छूटहै दुख जाल, कछु अवस बीतै काल ॥६८९
सुन विस्नु वायक स्रौंन, गृह-त्याग कीनौं गौंन।
इदरा चाली ऊठ, वस सोक तज वयकूंठ ॥६९०
पितु गई सूरज पास, उर भरत पूर उसास।
सव कह्यौ कारन स्राप, विसवास दीनौं वाप ॥६९१
मृतुलोक कौं लीय मग्ग, तन त्याग कीनौं तग्ग।
कोऊ दिवस पूरव-काल, विव नदी सग विचाल ॥६९२
जहाँ करयौ पूरन जाप, तन तरुन तरुनी[1] ताप।
जहाँ लक्षमीहू जाय, कीय रूप वडवा-काय ॥६९३
प्रभू पचमुख दस पाँन, उर याद कीय ईसाँन[2]।
उज्जल अनूपम अंग, अरू गवरजा अरधग ॥६९४
त्रीनयन हाथ त्रसूल, द्रपी व्याघ्र-चर्म दकूल।
मध कठ-मुंडन-माल, विधु दूज भास विचाल ॥६९५
कलमलत कुंडल कॉन, सिर जटाजूट समांन।
सिव ध्यांन धर होय सुद्ध, कल्पना त्याग कुबुद्ध ॥६९६
चनकै तुरगनि वेख, येकत थल अवरेख।
हर स्तुत करत हमेस, रुख मिलन भाव रमेस ॥६९७
वीते सहस्रक वर्ष, अत करत तप ऊतकर्ष।
दीय आयकै दरसन्न, श्रीईस ह्वै सु प्रसन्न ॥६९८
वोले सु सिव तिंह वार, अहो मात जग आधार।
क्यूं करत तपस्या क्रूर, पति-त्याग सुख भरपूर ॥६९९
कीय तुरगनि क्यूं काय, वन[3] रही वास वसाय।
पति-भाव भूल प्रवेस, हम जपत नांम हमेस ॥७००
नित त्रीयन कौ इह नेम, पति भजै सजुत पेम।
अन पुरख करनो याद, महिला नही मुरजाद ॥७०१

---

१ तरणि=सूर्य। २ शिवजी। ३ जंगल।

श्रीविस्नु होय स्वकीय, हित केम विसरी हीय।
सिव वचन सुनकै स्रांन, वोली सु कमला वांन ॥७०२
सग तज्यौ लैकै स्राप, वंह नहीं जांनत आप।
हरि कह्यौ अस्वा होहु, मन मोह उपज्यौ मोहु ॥७०३
पति कह्यौ जव पिछताय, इक पुत्र उपजहि आय।
वपु-त्याग कै वडवाय, इहां मिलहु मोमों आय ॥७०४
श्रीविस्नु स्यॉम सरीर, धर ह्रिदय वैठे वीर।
मै पतिव्रता जग-माय, किह सग भेटहु काय ॥७०५
उपज्यौ सु ससय येह, दुख दहत है मोहि देह।
सिव विस्नु येक समांन, उर जांनकै ईसांन ॥७०६
इह ध्यांन धारचौ आप, कछु दोस नांहि कदाप।
मुन इदरा के स्वाल, कहि सिभु होय क्रपाल ॥७०७
भव[1] कह्यौ हमरौ भेद, विध नहिन जांनत वेद।
तुम लह्यौ कैसे तत्त, पुन इहै कहहु प्रवृत्त ॥७०८
जव रमा वोली जोय, महाराज सुनोयै मोहि।
कर-कँमल आसन कथ, इक दिवस जाग इकत ॥७०९
ध्यावत सु वैठे धांम, सज पद्म-आसन स्यांम।
द्रग देख पीय सुखदात, विस्मयत पूछी वात ॥७१०
मै ऊपजी महाराज, सांमद्र वीच सुकाज।
देखे सु सवही देव, भल वूज-वूज सु भेव ॥७११
गुन देख-देख गरीय, पुन वरे आपही पीय।
इह लख्यौ अचरज आज, मो कहहु कथ महाराज ॥७१२
जग करत तुमरौ जाप, उर कौन ध्यावत आप।
हरी कह्यौ जव कर हेत, सजुझाय तत्व समेत ॥७१३
मैं करत ध्यांन हमेस, माहेस भजत रमेस।
परोआय हरि हर प्रीत, द्रग देखवे के द्वीत[2] ॥७१४
उर लखैं हरी हर एक, साधू सोई सविवेक।
भव हमही समुझत भेद, नित परत नर्क निखेद ॥७१५

१ शिव। २ दो।

कहनी मुनी इह कथ, गन हृदय बाँधी ग्रथ।
सिव समन ताप सराप[1], आराधना कीय आप ।।७१६
पीय पर्मप्रीय पहिचाँन, धुरजटी ध्याई ध्यॉन।
पति मिलै मोहि मुख पाय, इह सभु करहु उपाय ।।७१७
मुन लक्षमी की सोय, हर चले हर्षित होय।
दीय और सुभ उपदेस, मन सुद्ध होय महेस ।।७१८
पद परासक्ती पेम, नित हृदै धारहु नेम।
पीय-सग पैहौ पूत, करनीय इह करतूत ।।७१९
मुन कथा समन सराप, तन रमा मेटचौ ताप।
भव चले ऊठ विधु-भाल, कयताम-सिखर क्रपाल ।।७२०
तहाँ जाय लोचन-तीन, पेरचौ सु दूत प्रवीन।
कीनी न देर क्रपाल, हर लक्षमी लख हाल ।।७२१

दोहा

चित्र रूप अत मति चतुर, सिंभु वह्यौ समुझाय।
कीय प्रयाँन वयकुठ कौं, चित हरि-दरसन चाहि ।।७२२
वेग जाय वयकूठ कौ, पहुँच्यौ हरी कै पास।
हर सदेह-हारक[2] हरख, अभय करी अरदास ।।७२३

छंद अरध हर-गीतका

श्रीकमल-लोचन साँमरे, कर-कंमल पूरन काँमरे।
गिर गदाधर गोविंदजू, माधव मुरार मुकदजू ।।७२४
जग-जीव जेतक जे कहू, अग्यात नाँहिन येक हू।
इह कह्यौ सिंभु उराहना, श्री करी वहुत सराहना ।।७२५
कहा कौन तिह तकसीर कै, सात्वक सुभाव सरीर कै।
सामद्र-सुत उच्चीस्रवा, हित पिता पख भ्राता हुवा ।।७२६
वहु दिवस मैं लख वीर कौ, सुख वढ्यौ नैन सरीर कौं।
वोली न ताहौ वार मैं, बंधव सु प्यार विचार मैं ।।७२७

---

१ शाप। २ सन्देशवाहक, दूत।

जान्यौ न नारी जीय कौं, हित इदरा के हीय कौं।
भ्राता रु ववव भाव कौं, नही-गन्यौ जग के न्याव कौं ।।७२८
पति साथहू प्रीय पायकै, महला धरै चित्त मायकै।
गत सुनी नही हम गेह की, नती पिता-मात सनेह की ।।७२९
मैं जात वरजी मायकै, पी-भाव[1] पहुँची वायकै।
अपमांन निज अवलोक कै, सो जरी परवस-सोक कै ।।७३०
वधु पाय हमहु विजोग कौं, भूले सु तम-मन भोग कौं।
तप करचौ वहु हित तीयकै, जो हम ही जाँनत जीयकै ।।७३१
हिमवांन पुत्री होयकै, जाया लई पुन जोयकै।
जिन दिनन कौ दुख जोयकै, हम रहत विस्मय होयकै ।।७३२
जव कहत हूँ तुम जाँनकै, मति येक तन-मन माँनकै।
ससार-रीत सदीव की, जाँनी न पद्मा जीव की ।।७३३
वढ स्राप दीनौं वांम कौं, कीय नाथ अनुचित कांम कौं।
वडवा भई विललात है, पतिव्रता संकट-पात[2] है ।।७३४
भटकत फिरै तरु भीर पै, तमसा रु जमना-तीर पै।
पीय-भाव की प्रत पारीयै, तुम लक्ष्मी कौं तारीयै ।।७३५
सिव कह्यौ इह सदेस कौं, कमला सु हरन कलेस कौं।
सदेस-हारक सिंभु कौं, सिसविंदु[3] देहु विस्व भ कौं ।।७३६
जाहूँ मू सिव पैं जाँचकै, विव-जुक्त भाखूं वाँचकै।
चित रूप अरजी चिंतकै, माहेम मांन्यौ मंतकै ।।७३७
इह कहहु मोय उदत कौं, कर विनय गवरी-कथ कौं।
सुख लक्ष्मी सरसायकै, वयकूंठ देहु वसायकै ।।७३८
तीय कँमल-नैनी ताप सौं, सोइ मोक्ष होय सराप सौं।
इस सिंभु कौं अवगाहकै, सदेस कहहु सुनायकै ।।७३९
सुन दूत के सव सासना, भर मोद हीय मैं भासना।
कीय कूंच फिर किवलाम कौं, पद वंदकै हर पास कौं ।।७४०
श्रीनाथ होत सवेरकै, ऊठ चले वीच अँवेरकै।
हय-रूप धार हुलास कौं, पहुँचे सु कँमला पास कौं ।।७४१

---

१ पुत्री भाव। २ सकटग्रस्त है। ३ विष्णु।

मिल परसपर अत मोद सौं, वपु विगत होय विरोध सौ।
रत दांन दीनौ रमनिकौं, सुख पाय स्रापहु समन कौं ॥७४२
गुर्वनी अस्वा ह्वैगई, निज रूप कँमला निरनई।
कछु दिवस बिचरे कतरा, आधांन पायौ अतरा ॥७४३
जनम्यौं सु सुत तिह जायगा, पुन तिही छोरयौ पायगा।
चलने लगे जब चाहिकै, पद्मा कह्यौ पिछतायकै ॥७४४
कहा हाल वाल-कँवाँरकै, निरनौ कहहु निरधारकै।
जब कह्यौ विस्नू जाहिकै, अनुराग कौ अवगाहिकै ॥७४५
जग प्रसिध[1] सुवन जजातके, सोइ करत तप तीय साथके।
सुत-हेत धर सकल्प कौं, वपु ह्रिदय छांड विकल्प कौं ॥७४६
तुव वाल देवहि ताहिकै, वँह लहहि सुख उपजायकै।
दपतहु हित दरसायकै, चढ चले यांन चलायकै ॥७४७
कछु घटी जावत कालकै, चपक सु आयौ चालकै।
नभ-यांन जात निहारकै, विद्याधरा तिह वारकै ॥७४८
सिसु देख उतरयौ वसुमती, चिव धाँम सग नारी छती।
सिसु लै चले सोई स्वर्ग मैं, विच जाय देवन वर्ग मैं ॥७४९
सोइ सभा मेल सुरेस कौ अरजी करी अवसेस कौं।
जब कह्यौ जिस्नु जताय कै, विस्नू सुं अस वसाय कै ॥७५०
नृप तुर्वसू हित निर्मयौ, करीयै न ताकौ कर्म यौ।
तिह ठौर लीनौं ताहि कौ, जहाँ मेल आवहु जाहि कौं ॥७५१
सुन इद्रचपक सासना, विद्याधरा तज वासना।
कालद्रि[2] तमसा-कूल मैं, मेल्यौ सु सिसु तरु-मूल मैं ॥७५२
श्रीविस्नु कमला साथकै, नजदीक गये नरनाथकै।
उतरे विमान उतारकै, निज भक्ति नृपति निहारकै ॥७५३
नृप देख जग के नाथ कौं, श्रीइदराहू साथ कौ।
परनांम कर-कर पाव सौं, चिव देख श्रीहरि चाव सौ ॥७५४
मन मगन ह्वै पुन पगन मैं, लोटत सु भक्ती लगन मैं।
वर्नना कर्न विचारकै, अरु जया सव्द उचारकै ॥७५५

१ प्रसिद्ध। २ यमुना।

रुच जाँन हरी राजाँन सौं, वोले सु इमृत-वाँन सौं।
जप करत सुवन जजात ही, सत वरख वीते साथ ही ।।७५६
हम जाँन तेरे हाल कौ, वगसीस किय निज वाल कौ।
नद संग जमुना-नीर पै, तमसा नदी की तीर पै ।।७५७
जहाँ जाय लीजहु जोयकै, हीय सौ अनदत होयकै।
सुत हमही दीन सँभाग्नै, कुल-वृद्धि तेरै कारनै ।।७५८
वस जाय हम वयकूठकै, वँहा तुमहु जावहु ऊठकै।
हरी चले यॉन हकारकै, वयकूंठ मग्ग विचारकै ।।७५६
नृप वैठ रथ पै नीसरचौ, सुत-लाभ कौ हित अनुसरचौ।
नद ऊभय सग निकुज मैं, पुन लख्यौ तरवर पुज मैं ।।७६०
पद के अँगूठा पाँन मैं, वँह धवे[1] गहि अवुराँन मैं।
किलकै सु खिलकत केल मैं, मुलकै मु हुलकत मेल मैं ।।७६१
नृप लख्यौ अगज नैन सौं, वंतराय अमृत-वैन सौं।
भुक लयौ भटकै भेलकै, मुद पाय रथ मैं मेलकै ।।७६२
आयौ सु नगर ऊछाह सौं, सुत पाय लिछमी नाह सौं।
हरखे सु पुरजन हेरकै, सुख वढचौ माँन सुमेरकै ।।७६३

दोहा

नृप तुर्वस कुल-नीयँम सौं, संसकार कीय सूँन[2]।
वढनै लगौ सु वाँल वय, अग्र संग विन ऊन ।।७६४
मास षष्ठमै के मँहीं, अनप्रासन कीय और।
कीय त्रवर्ष चूडा-करन, जजु विध विप्रन जोर ।। ७६५
वय भय ग्यारह वर्ष की, दई जनेऊ देख।
धनुरवेद विद्या धरम, अरू दीनौ अभषेप[3] ।।७६६

छंद अरघ हरगीतका

नृप भये वृद्ध निदाँन कौ, पुत्र सूँप राज-प्रधाँन कौं।
गये विपन मैं तज गेह कौ, दिव करन दपति देह कौ ।। ७६७

---

१ ध्यान लगाये। २ पुत्र। ३ राज्यतिलक, राज्याभिषेक।

मैंनाक पर्व्वत गिर मया, जहाँ करन लागे तप जथा।
केऊ दिवस वीते कारना, धावत सु गवरी-धारना ॥७६८
तन-त्यागकै दपति तही, स्वार्गीय भये राजा सही।
हित पाय सुत जव हैहया, कीय पिता की ऊरध-क्रीया ॥७६६
दे विप्र लाखन दाँन कौं, धन रोहनी[1] अरु धाँन कौं।
पितु होय ऊरन पेम सौं, नय लगौ करनै नेम सौं ॥७७०
वसु राज-काज विचार मैं, द्रढ वैठ कै दरवार मैं।
सव मंत्रिजन के सग मैं, प्रज उन्नती परसग मैं ॥७७१
नीती सुधर्म निहारकै, वट लेत अपनौं वारकै।
तसकर दुरे सव ताप सौं, वाजी सवाई वाप सौ ॥७७२
निज येक वीर नरिंद्र कौ, स्वाभाव सुद्ध सुरिंद्र कौ।
प्रज लेत भाग पिछाँनकै, जिह हेत खरचत जाँनकै ॥७७३
कर निकटक चहु कोद कौ, महाँराज लै मन मोद कौं।
इक दिवस नृप अवकास लै, खेलन गये जन खास लै ॥७७४
कढ गये गगा-कूल कौं, फल-फलद देखत फूल कौं।
वेली अनूपम विस्तरी, उरझाय ततन उर्झरी ॥७७५
कोमल सुहावत अकुरा, मदमत्त गुजत मधुकरा।
परछाँह पल्लव पर्न की, कहुँ गली नाहिंन किरन की ॥७७६
कंकोल अव कदव की, सोभत उदवर सिंव की।
जामून जाल जंभेर की, कचनार भोर कनेर की ॥७७७
कीकरा मोचक कटहरा, मधु-मालती अरू मोगरा।
क्रतमाल पकत केलकी, चपा रू वेल चमेल की ॥७७८
वजुल हू मजुल वेनुका, कु जन मनौं पटकेनका।
पल्लव नवीनन पौंन सौं, उरझात मजरीयाँन सौं ॥७७६
पिक सोर होत पपीहरा, कूँजत मयूर कुरकुरा।
सरसात होम सुवासना, पुन वेद-धुन परकासना ॥७८०
मुनि पर्नसाला मडता, आराध ईस अखडता।
वन सघन उपवन वाटका, सोहत निकु ज सुघाटका ॥७८१

---

१ गाय।

परवाह गगा पावने, सुच पत्र कमल सुहावने ।
चिव लखत नृप चित चाहिकै, वँह दीप पहुँच्यौ आयकै ।।७८२
नद विमल सोभा नीर की. सोगध मद समीर की ।
जहाँ पाय थभे जायकै, आँनद हीय उमगाय कै ।।७८३
कमनीय देखी काँमनी, दुति-दमक माँनहु दाँमनी ।
कट-खीन जंघा-केलसी, स्रगार-रस की वेलसी ।।७८४
दीपत नासा दीपसी, स्रुति सुस्कली जुग सीपसी ।
अँखीयाँन रुख अरविद की, चिव वदन राका चद की ।।७८५
विथुरे सु सीरख वारहू, लट छुटी केतक लारहू ।
स्वर भीन क्रदत स्वास कौ, अरु भरत कवहुँ उसास कौ ।।७८६
नृप दुखी ताहि निहारकै, नजदीक पहुँचे नारकै ।
विसवास दै वतरायकै, अरु कही कथ्य ऊचारकै ।।७८७
द्रढ महपती मैं देस कौ, केऊ दुष्ट हरन कलेस कौ ।
कीय निकंटक जग कारनै, विध नीत नय विस्तारनै ।।७८८
किह करी पीडत काँमनी, गथ कहहु कुजर-गाँमनी ।
सुन वचन राजा सुदरी, चित भयौ सर्प-चचुदरी[1] ।।७८९
मैं, रही मीन न मेखहू, इतकी न उतकी एकहू ।
वंह अरज सुनीयै आपहू, कछु कहत करत कलापहू ।।७९०
अनदेस मैं इक अधपती, सुभ-रम्य नाँम सु सुधमती ।
तिह रुक्म रेखा तीय कै, सुत भयौ नाँहि सुतीय कै ।।७९१
क्रतु करचौ तिह इह कारनै, वुलवाय विप्रन वारनै ।
आहूत पूरन ह्वै इतै, प्रगटी सु कन्या तिह प्रतै ।।७९२
सुभ रुप लक्षन सजुता, लड थेक मनु मुक्ता-लता ।
रिख सवही वोले कर रली, इह नाँम है येकावली ।।७९३
लीय ताहि राजन लाल कौं, वय देख सिसु हित वाल कौ ।
वपु वढत ज्यूँ गुन-वृद्धनी, सरसात रूप समृद्धनी ।।७९४
लखीयै जु चचल-लोचनी, मद कंज खजन मोचनी ।
रद-वस्त्र[2] विद्रुम रग के, अरु स्याँम कच ऊतमग के ।।७९५

१ छछुँदर । २ श्रोठ ।

कुच ताहि कचन-कलस से, रद मनहुँ कुली दाडम रसे।
भृगुटीहु नत भ्रूहावली, उड रही मनु अवली अली ॥७९६
चिव मत्त कु जर चाल की, मति होत चकत मराल की।
स्वर कोकला स्रौनन सुधा, तन रूप गुन जोवन अधा ॥७९७
कऊमार राजा कन्यका, वेंह सखी मैं हूँ अन्न न्यका।
सुभ राजमत्री की सुता, जसुमती नाँम सुनौ जथा ॥७९८
येकावली चित येकमैं, बरताव भाव विसेखमैं।
सग रहत उभय सदीव सौं, जुदगी न जाँनत जीव सौं ॥७९९
सोइ राजकवर सुभाव कौ, चित करत वरनन चाव कौ।
सोगध कमल सुहावनै, द्रग घ्राँन सुख दरसावनै ॥८००
जहाँ रमत निस-दिन जायकै, पुन रहत हित सुख पायकै।
इह बालपन सौं आज लौं, लाई न उर मैं लाज लौं ॥८०१
पितु लाड सजुत प्रेम सौ, नही हटक कीनी नेम सौं।
तन जोवना लख ताहि कौ, संग दये सुभट सहाय कौं ॥८०२

दोहा

आई गगा-नद इहाँ, समय प्रात सुख साज।
कूल कु ज कजन कली, रही फूल महाराज[1] ॥८०३

छंद अर्ध हरगीतका

आई जवै येकावली, उठनै लगी भ्रमरावली।
कल्हार -पकज की कली, खसवोह चहुँ दिस कौ खिली ॥८०४
किंजल्क ऊपर कर्नका, तिह लही आभा तर्नका।
लग पौंन लहरै लेत है, द्रग द्रष्ट आँनद देत है ॥८०५
दल हरत[2] कोमल देखीयै, वहु पद्म-नाल विसेखीयै।
तरू-भीर छाया तीर पै, कोकला बोलत कीर पै ॥८०६
वहु रक्ष सग वली-वली, गहि सस्त्र वैठ गली-गली।
कँवरी सु क्रीडा कारनै, वढ चली हेत विहारनै ॥८०७
गन अछ्छरन के गाँन की,न धुन बढ़ी वाजन ध्वाँन की।
सुन कालकेत सराहना, चल आय कँवरी चाहना ॥८०८

---

१ मू प्र. माहाराज। २ हरे।

वरज्यौ सु रक्षक वीरहू, भट सग दाँनव भीरहू।
तिह जुद्ध कीनौ ताहि कौं, समले न वीर सहाय कौं ।।८०६
वँह पकरकै येकावली, चाल्यौ सु असुर महाछली।
लगई ता सग लार सौं, पुत्री सु राजन प्यार सौ ।।८१०
जव मोहि पकरी जाँनकै, वँह सखी प्रीय अनुमाँनकै।
पुर गयौ सो रथ प्रेरकै, घमसाँन फौजन घेरकै ।।८११
काँमार्त ह्वै हमसौ कही, सम जास कर कँवरी सही।
परनै सु हमकौ प्यार सौं, मन विकल भौ सरमार सौं ।।८१२
जव विनय-जुत कर जोरकै, वोली सु कथ्थ वहोरकै।
इह सघ करोयै आपही, मुद पाय हेत मिलाप हो ।।८१३
जव कालकेत जनायकै, वोल्यौ सु वचन वनायकै।
सुन राज-कवर सुजाँन तूं, मति कछू मेरी माँन तूं ।।८१४
इह नई वेस अयाँनीयै, जिम अभ्र छाया जाँनीयै।
ज्यूँ दौर आवत जात है, वसु सथिर नाँहि वसात है ।।८१५
मैं कहत हूँ सोइ माँनीयै, जामैं न ससय जाँनीयै।
हित राजराँनी होइयै, वय नूंत नाँहि विगोइयै ।।८१६
पग-दास करकै पेम-सौं, खुस खेल करीयै खेम सौ।
सुन राजकँवर सयाँन सौं, वोली सु आरत-बाँन सौ ।।८१७
असुरेस अरजी आप सौं, बेटी सु माँगत वाप सौं।
जो देत तिह गृह जात है, कुल उभय की कुसलात है ।।८१८
इह रीत आद-अनाद की, महि मडता मुरजाद की।
विप्रीत यातै वात है, सुवन स्रवन हि सुहात है ।।८१९
इक अरज मेरी औरकै, जिह कहत हूँ करजोरकै।
पितु प्रथम वोले पेम सौं, निज व्याह पुत्री नेम सौ ।।८२०
दुहिता सु हैहय देहगे, लख दपती जस लैहगे।
पितु-वचन कौ पन पारहू, सुख जनम मोर सुधारहू ।।८२१
विप्रीत करहु न वात कौं, अव छोर देहु अनाथ कौ।
सुन कालकेत सवाल कौं, पठई सु विवर[1] पताल कौ ।।८२२

१ तहखाना।

राखमी राखी रक्षका, भट सग दीय निस-भक्षका[1]।
कँवरी सु कारागार मे, लहि सग मैं हू लार मैं ॥८२३
भोगे सु दुख के भोग कौ, अरू करत रहत उद्योग कौं।
जव सुनी वात जसोमती, पुन दयौ उत्तर महपती ॥८२४
निज काय हैहय नाँम है, करता सु पूरन काँम है।
इक मोहि ससय ऊपनौ, सखी राजकँवरी इह सनौ ॥८२५
किह रीत कारागार सौ, निकरी सु जाहि निसार सौं।
कहीयै सु कारन काज कौ, वपु छोर कै हीय व्याज कौं ॥८२६
सुन जसोमति नृप सासना, भाखी सु निज मति भासना।
तन त्रविध मेटन तापहू, जगतंव करता जापहू ॥८२७
इक सिद्ध द्वज आराधना, सिखई सु मोकौं साधना।
सुभ करन्नास समाम कौं, अरू अग-न्यास अभ्यास कौं ॥८२८
नित करत हूँ निज नेम सौं, पद मात पकज पेम सौ।
वाढी सु भक्ति विसेखीयै, लहि पवन कौं वल लेखीयै ॥८२९
अव विनय सुनीयै औरहू, भयभीत सूती भौरहू।
दीय सुप्न मोहि जगदविका, वाचा सु देय विस्रंभका ॥८३०
सिख दतात्रय गरु साधकै, उपदेस लीन अराधकै।
सतुष्ट कीय मोहि साच सौं, वर्नना कर-कर वाच सौं ॥८३१
मैं महाविद्या मात कौं, सुमरन लहै सोइ साथ कौं।
उपदेस दीनौं जिह इतौ, मैं आवन कीनौ मतौ ॥८३२
हीय वसूं हैहय हेत मैं, खल मार डारू खेत मैं।
वँह गग-तट पै आयगा, जावहु तुही वँह जायगा ॥८३३
दुख कहहु जासौं दहुन कौं, श्रीलक्ष्मी के सुवन कौं।
सव भाँत करहि सिहाय कौं, भर प्रेम कँवरी भाव कौं ॥८३४
मैं करी अरजी मर्म की, धारना धारहु धर्म की।
करीयै विलव न काज कौं, मोहि लाज है महाराज कौं ॥८३५
कथ सुनी जसुमति की कही, सुख प्रेम बाढ्यौ नृप सही।
सग वीर लै वहु साथ कौं, घालन सु असुरन घात कौं ॥८३६

---

[1] राक्षस।

अत मिले गै-दल आयकै, च मु है-दल चाहिकै ।
पैदलन आयुव पाँन मैं, वढ चल साँझ विहाँन मैं ॥८३७
रथ कढे मारग रूंधकै, धर व्योम वाढत धूंधकै ।
करीयार[1] वाजत किंकनी, घरीयार-धुन जैसी घनी ॥८३८
ललकार वाढत लाग सौं, रसवीर सिंधव राग सौं ।
आवाज दुंदभ ऊठकै, छिक सध अद्रिन छूटकै ॥८३६
रथ चढ्यौ हैहय राजकै, घन ऊपटर्यौ जनु गाजकै ।
सुभ सुकन साथ सर्याँनकै, पुन लखे समय प्रयाँनकै ॥८४०
दध घिरत चावल दूवका, भल भर्यौ जल कौ कूंभका
सरसौ भयौ अन[2] सिद्धकै, मिल चदनाद समृद्धकै ॥८४१
आदर्स[3] संख अलंकृता, पल मछ्छ मदरा प्रवृता ।
गोरोचना मृतका गऊ, सुभ सहत गोवर फल सऊ ॥८४२
अरू देव-प्रतमा आसना, सुभ हेत फूल सिंघासना ।
वीनाद भेरी वाजहू, आसीरवचन अवाजहू ॥८४३
वर वस्त्र वाहन विजना, अंकुस अजा गज अजना ।
संपुट सरावा[4] धुज सु तै, प्रज्वलत अग्नी सुव प्रतै ॥८४४
सिवका रु चाँमर सेतहू, तावूल छत्र सहेतहू ।
अरू कलस झारी आयुधा, ववे सु पसु-गन गुन वृधा ॥८४५
ताँवौ रु सोवृन-तारहू, अनमोल रत्न अपारहू ।
पल्लव सहेत वनस्पती, नव साक दल फल निर्मती ॥८४६
ये मिले सनमुख आयकै, दरसाव मंगलदायकै ।
सुभ दरस हंस सुवेखकै, द्वै सव्द वोलत देखकै ॥८४७
वक येक पग पै वैठकै, उत्कर्ष देखत ऐठकै ।
चकवाक दरसन चाहिकै, जुग लखे सारस जायकै ॥८४८
नाचत मयूर निहारकै, गृह-चटक[5] सगम गारकै ।
पुन स्वर्नचूड प्रदक्षना, दीय आय आगै दर्सना ॥८४६
गृह-सूर लुथ-पथ गार मैं, मध गैल देखेऊ मार मैं ।
अरु लख्यौ खंजन येमहू, तरू हरित ऊपर तेमहू ॥८५०

---

१ वख्तर । २ सिद्धान्न (रोटी आदि) । ३ दर्पण । ४ दीपक । ५ घरेलू चिड़िया ।

घुरमाल मृघ मिल धोर कौ, उतरी सु दछ्छन ओर कौं।
लोमा इहामृघ लारकै, तेऊ गये दछ्छन तारकै ॥८५१
दछ्छनह भारद्वाजहू, अत दई वैठ अवाजहू।
चहके सु फेंच[1] चकोरहू सुन दइयरी मुख सोरहू ॥८५२
धुन सिखडक[2] कीय धारकै, गभीर सव्द गुहारकै।
भनकार कीनौ भैरवी, स्वर पारथव मै स्वैरवी ॥८५३
द्रग लखे दछ्छन देस मै, भूपती मगल भेस मैं।
इतने सु वामे आयकै, माकुन्य सुभग सुभायकै ॥८५४
गन भृमर उडकर गुंजकै, सोगव पुस्पन सजकै।
अली जालकारक[3] ओरहू, जिम वर्नकोटी जोरहू ॥८५५
फन करत फनधर फेरकै, टिट्टभहु बोलत टेरकै।
बोलत कपिजल बाँनकै, उल्लूक गहकत आँनकै ॥८५६
अरू सरभ वाँमौ आयकै, आहार लेत अघायकै।
धुज-दडहू के धूपरा, उड सैन वैठौ ऊपरा ॥८५७
अरू ढैंक वोलत अग्र कौ, सुख लखे निमत समग्र कौ।
पथ देख सुखन प्रसग कौ, उर धार अभय उमग कौं ॥८५८
ज्यूँ कही कथ्थ जसोमती, मन मोद वाढ्यौ महपती।
वंदरी-सेन वनायकै, रन वढे रघुवररायकै ॥८५९
येकावली सीय येकसी, गत एक सौ दुख मैं ग्रसी।
पुर लक ज्यूँ पहुँच्यौ पुरी, घन नौवतै हैहय धुरी ॥८६०
सुन कालकेत सँभाय ज्यूँ, रन रुप्यौ रांवनराय ज्यूँ।
उर असुर फाटक आयकै, वल वयर-भाव वसायकै ॥८६१
लागे सु लरनै लोह कौं, सनमुख भूप सँदोह कौ।
रजपूत रुठे रार कौं, कर वीरता किलकार कौं ॥८६२
टकार कर धनु तांनकै, सर-वृष्ट करत संधांनकै।
सत्ती त्रसीरख सर्वला, अत परी मार अपर्वला ॥८६३
केऊ मार देत कुठार की, करीयार वीच कटार की।
धकपक्क माची धधला, अकवक्क ह्वै सारी इला ॥८६४

---

१ वुलवुल। २ मोर। ३ मकडी।

झर अगनवाँनन झाल की, करतूत वाढी काल की।
परताप पत्तन ऊपरा, चली चलो-चलो परजा निसचरा ॥८६५
केऊ वूंब कर-कर कांमनी, विललात वहु विडरावनी।
घस सिथला विच धायकै, छतीयाँन वाल छिपायकै ॥८६६
गढ परी भीर गली-गली, वढ चले वीर वली-वली।
जे जुरे छत्रिन-जात सौं, हठ सस्त्र गहि-गहि हाथ सौं ॥८६७
इत राजपुत्र उमडकै, महि-मेर जिम पग मंडकै।
कर सघर लै कोदड कौं, कर दाव छडत कड कौं ॥८६८
उड जात आसुर-आवली, पवमांन जनु पत्रावली।
कहुँ रथी रथ कर[1] सौं करी, असुवार हयन अराअरी ॥८६९
पैदलन पैदल पेलकै, झट कांनं सम्मुह झेलकै।
धर धूज मड़त धूंम कौं, घायलहु मडत घूंम कौं ॥८७०
झुक झुंड खग्गन झारकै, मिल मुड ऊार मारकै।
तन खड खंडन तूटकै, अत रुड नाचत ऊठकै ॥८७१
वलवड के रन वावरे, अनी ऊमड भिरत उतावरे।
गत सिंध गाजत गल्ल मौं, भिर सॉग सल्लन भल्ल सौं ॥८७२
मन जाँन छत्रिन मॉनवी, दिखरात माया दाँनवी।
श्रीविस्नु लक्ष्मी[2] संभवा, डहकाय कैसैं डिभवा ॥८७३
भिर परे जुद्ध भयानका, आवाज वाजत आनका।
ऊड परत अग अरीन की, कट वुथ्य-वुथ्थन कीनको ॥८७४
पसरी उदंवर पक्क ज्यौं, अत वुक्क सिवा अक्क ज्यो।
केऊ कालखंजन कट्टकै, इक परे येकन अट्टकै ॥८७५
छुट परी चपटल छद की, किधूं गाँठ आवरकद की।
तरवार धारन तूटकै, खित परे भेजा खूटकै ॥८७६
रल भूंम पै मिलकै रही, मटकी जु फूटी जनु मही।
चल चिच स्रोनत छूटकै, वरखात मडी वूठकै ॥८७७
अत मच्यौ कर्दम आयकै, मिल घूमरी धर माहिकै।
उड गिद्ध गहि अंत्रावली, चढ चग ज्यौं चिल्लन चली ॥८७८

---

१ हाथी। २ मू. प्र लछी।

किंख कोक गहि कंकाल कौ, खैंचत खसोटत खाल कौ।
जुर जूह-जूहन जोगनी, भर खप्प रन-रत्त-भोगनी ।।८७९
वलवल्लत भूत विताल जू, खिलखिलत खेतरपाल[1] जू।
गावत सु नारद गुजकै, महती सु ततन मजकै ।।८८०
मुडमाल लेत महेसहू, निरखत स्याल नरेसहू।
रन राजपुत्रन रूठकै, दल असुर मारयौ दूठकै ।।८८१
जय भई हैहय जग की, दिग-द्वार ऊपर द्रंग की।
भागे सु घायल भीत सौं, वपु-आक्रती विपरीत सौ ।।८८२
पति असुर कौ परचायकै, जय कही छत्रिन जायकै।
सुन कालकेत सु जाँनकै, मरनौं जु आपन मॉनकै ।।८८३
रथ चड्यौ करनैं रार कौं, विकराल ह्व जिह वार कौं।
घर धूज नेमी घरहरी, घन गाज जैसे घरहरी ।।८८४
टकार दै धनु तांनकै, सर करत गुन सधॉनकै।
आयौ सु हैहय इच्छकै, गढ ओट कौ तज गच्छकै ।।८८५
द्रग ताहि नरपत देखकै, वढ क्रुद्ध वयर विसेखकै।
वोल्यौ सु नीत विचारकै, धनुवॉन सींजनी धारकै ।।८८६
जाँनत न छत्री-जात कौं, तुर्वसू मेरे तात कौ।
अन्याय सनमुख आयकै, वचहै न वैर वसायकै ।।८८७
नृप रंम्य कँवरी नेम सौं, पति मोह इच्छत प्रेम सौं।
कर हरन लायौ कन्यका, अवलोक वीच अरन्यका ।।८८८
तैं करी इच्छया तीय की, जव कही कँवरी जीय की।
मो नांम लै पितु-मात की, सिद्धान्त भाख्यौ सातुकी ।।८८९
कर रीस कारागार मैं, वधन करी इह वार मै।
खल मारहूँ रन-खेत मैं, चित्त तोहि राखहु चेत मै ।।८९०
सुन वात असुर नरेस की, धारी, सु अहिमति द्वेस की।
कातर हु वीच क्रसाँनु कै, प्रजरयौ सु लागत पॉन कै ।।८९१
फनी पूँछ ऐंचत ज्यूँ फिरयौ, घन केसरी जनु घरहरयौ।
रथ देख हैहयराज कौ, छत्रीन-सूर-समाज कौ ।।८९२

---

१ भैरव, क्षेत्रपाल।

बरख्यौ सु पाँनप वारकै, धनु-ताँन बाँनन-धारकै।
सुन तुर्वसू जनु सभ्भ्रम्यौ, गज देख मृघपत गज्जयौ ॥८६३
मृध उभय इह विध मडकै, कर ताँन लै कोदडकै।
झर कक-पत्रन झेरकै, घन जेम बरखत घेरकै ॥८६४
हथवाह सरसत हाथ की, जुर उभय आवत जात की।
इक येक पं कर वार कौं, मडी सु वहु विध मार कौं ॥८६५
रथ बाँम दल्छन राह कौं, बेवाह हाकत वाह कौं।
चकरात चचल-चाल सौं, ढिग ओट दै-दै ढाल सौं ॥८६६
तन ताक-ताक तुरगके, सर दये दहुँ अनसगके।
घर गिरे स्वारथ धूजकै, अत पीर धाव अमूझकै ॥८६७
जब बिग्थ ह्वैकै दोऊ जुरे, कर वार-वारन कौं करे।
पुन अनय आसुर पेखकै, नृप गदा कर गहि लेखकै ॥८६८
समसुप्र फूकर सेस की, मनु त्रतीय आँख महेस की।
ज्वल-सक्ति माँनहु ज्वालका, कल जीह देवी कालका ॥८६९
कऊमार-सक्ति करालकै, कर दड माँनहु कालकै।
मारी सु नृपन मरोर सौं, सिर कालकेत स जोर सौं ॥९००
घर गिरयौ प्राँनन घोयकै, खल आस जीय की खोयकै।
जय भई हैहय जग की, रन वीरता रस-रग की ॥९०१
सुन जसोमतकँवरी सखी, महपती ह्वै कै सनमुखी।
अरू जाय ढिग येकावली, मन-मोद सौं दोऊ हिल-मिली ॥९०२
दीनी बधाई देखकै, सुन लक्षमी सविसेखकै।
मृत कालकेत मदध कौ, सब रीत उद्यम सध कौ ॥९०३
कँवरी सु कीन कहाव कौं, भर मोद सखी के भाव कौं।
येकावली उमगायकै, लीय जसोमति उर लायकै ॥९०४
पूछी सु राजन प्रीत कौं, जिह कही सजुत जीत कौं।
उत राजमंत्री[1] आयकै, मिल भूप भेट मनायकै ॥९०५
अरजी सु कीनी औरहू, निरवाह नीत निहोरहू।
अन्याय अघ अतनाय कौं, रन हन्यौ आसुरराय कौं ॥९०६

---

१ कालकेत का मत्री।

दै अभय राखहु दास कौं, विनती सु हमरे वास कौं।
बोल्यौ सु नृपत महावली, इहाँ आँन दौ येकाँवली ॥६०७
जव चले मत्री–जातहू, उर त्याग भय उतपातहू।
गये सबै कारागार कौं, लै पालखी रथ लार कौं ॥६०८
वैठार करकै वीनती, जुत राजकँवरी जसुमती।
सौंपी सु नरपत सुंदरी, कर कमल नैन क्रसोदरी ॥६०६
लै चल्यौ ताकौं लार कौ, जुत मोद रम्य जुहार कौ।
कर सग उभय कुमारका, लै सग लसकर लारका ॥६१०
पुर रम्य आयौ महपती, कर अमर जगमैं कीरती।
पहुँचाय दिय कँवरी प्रते, जसुमतो पुन आली जुतै ॥६११
नृप लखे रॉनी नैन सौं, वतराय वच्छल[1]–वैन सौं।
पूछी सु राजन प्यार सौं, कर वोध उभय कुमार सौं ॥६१२
जव जसुमती सव जीय की, बिपदा प्रकासी बीय की।
जिम भयौ हैहय जावनौ, अरू फेर जय लैं आवनौ ॥६१३
सुन राज हैहय साथ कौं, विनती करी हित वात कौं।
सनमाँन करकै सर्भरा, निर्वाह गौरव निर्भरा ॥६१४
पुन कही राजा प्रेम सौं, खितपती हैहय खेम सौं।
इह आपके अवसाँन मैं, दुहिता सु देहै दाँन मैं ॥६१५
कीजै सु अगीकारना, घ्रू मेर साखी धारना।
नय वात रम्य नरेस की, भर प्रेम मगल भेस की ॥६१६
विघ वेद कीनौं व्याह कौं, उर लाय अमित उछाह कौं।
परनीज हरन–पसाव[2] लै, भज राजरॉनी भाव लै ॥६१७
वहु करत भोग-विलास कौं, वस नृपत अपने वास कौं।
सुख लहत दपत साथहू, निज नेह रत रतिनाथहू ॥६१८

दोहा

केऊ दिन वीते सुख करत, भोग-जोग वहु भाय।
सुत भौ क्रमवीरज सुभग, सतति वृद्ध सवाय ॥६१६

---

१ वत्सल, स्नेहयुक्त। २ दहेज।

कार्तवीर्ज ताकौ कंवर, भयौ प्रतापी भूप ।
जग्य दाँन कीय विवध जिह, आतिथ पुज्य अनूप ।।६२०
कही कथा हैहयन-कुल, सुनके भये सुनाथ ।
विस्नु रमापत हय बने, वरनन करीयै वात ।।६२१

छंद त्रोटक

सुनकै जनमेजय प्रस्न सही, करकै निरनै मुनि व्यास कही ।
भ्रम मेटन कौं कथ भाखत है, उर नाँहि कछू अभिलाखत है ।।६२२
विध के सुत नारद सुद्ध-व्रती, मधुरी गति वीन लीये महती[1] ।
सोइ आय गये सुभ आस्रम पै, हित लाय कृपा करकै हम पै ।।६२३
तट ब्रह्मसुता ठहरे तहवाँ, इक प्रस्न करचौ लिखकै अहवाँ ।
मुनिराज असार ससार मंही, कुछु देखत हैं सुख नाँहि कंही ।।६२४
हमरी कथ भाखत हैं हमतौ, तुमरी गत जांनत हैं तुमतौ ।
सुत मात जने जव सत्यवती, गवनी सोई छोरकै गूढ-गती ।।६२५
जमी दीप सौं ऊठ चले जवही, कहुँ वैठ रहे गवने कवही ।
तट ब्रह्ममुता फिरकै तितनै, अभलाख भई सुत की इतनै ।।६२६
त्रपुरार पै जाय करचौ तप कौं, वहु-भाँत कलेस दये वपु कौ ।
सुकदेव से पुत्र लहे सुकवी, निह-जोन[2] भये इह वात नवी ।।६२७
जजु आदिक वेद पढाय जंही, गरूकर्म विसारद होय गृही ।
परलोक गयौ मुंहि छांड पिता, वहु-पुत्र के सोक वढी विपता ।।६२८
तरहेटीय त्याग सुमेर तवै, सुभ आस्रम समृध मेल सवै ।
कुरू जागल-देस मैं आय कढे, मिलनै कँह मात सनेह मढे ।।६२९
सुन सातन लैगये सत्यवती, विधवा सोई ह्वै गई सुद्धव्रती ।
मम भ्रात चित्रागद नाथ मही, रचना रजधाँनीय हाथ रही ।।६३०
तिह थोरेही काल मैं देह-तजी, उर मात के सोक वला उपजी ।
वयठार विचत्रहवीरज कौं, घर राज-सिघासन धीरज कौं ।।६३१
दुहिता सुत कासीयराज दई, जिह भीसम लायेऊ जुद्ध जई ।
परनाय दई लघु भ्रात प्रतै, उर मात भयौ सुख आय इतै ।।६३२

---

१ नारद की वीणा का नाम । २ विना यौनि के ।

खय[1] रोगहु सौ जिह आयु खुंटी, पुन वेदना मात हीयँ प्रगटी ।
बुलवाय करयौ जव वोधन को, अरु भेज दये अवरोधन कौं ।।६३३
लघु भ्रात की सग करयौ ललना, मति भीसम मात हमैं मलना ।
सुत अंध भयौ धृतराष्ट सही, नृप राज के कारज जोग नही ।।६३४
जनम्यौ फिर दूसर पुत्र जितै, मुत पडहु पडुर रग सु तै ।
सुत तीसर भौ सोई दासीय सौ, रमनी रत मैं सुखरासीय सौं ।।६३५
विदुरा तिह नाँम धरयौ वपु कौ, प्रगट्यौ अवतार सु पित्रप कौ ।
इन कौ लखकै सुख भौ उर मैं, पहुँचे वन कौं हथनापुर मैं ।।६३६
दुख भूल गये सुखदेवहि[2] कौ, सिसु तीनहु की लहि सेवहि कौ ।
झुक्‌जात मती झकझोरन-सी, दहु ओर हिंडोरन डोरन-सी ।।६३७
पुन भीसम पडु दई नृपता, विभवा सुत देख मिटी बिपता ।
तिह पंडुव व्याहीय दोय त्रीया, सुभ कुंतीय माद्रीयहू सुकीया ।।६३८
दुज पडु-नृपाल कौं स्राप दयौ, ललना सग लै वनवास लयौ ।
सुख मैं दुख भौ इतनी सुनकै, गहि मौन कौ ग्याँन रहे गुनकै ।।६३९
वनमैं नृप-पडुव वास वस्यौ, गन श्राप अपुत्र प्रगाढ ग्रस्यौ ।
कहि कूँतीय कौं सुत कारन कौं, सुख सतति-काज सुधारन कौ ।।६४०
पति सासन कूँतीय पाय प्रीया, करकै ध्रमराज की मत्र क्रिया ।
जग-मित्र जुधष्टर पूत जने, हीय पडुव के जिह सोक हने ।।६४१
वुलवाय कै वायु विकोदर कौं, निज अगज इंद्र जन्यौ नर कौं ।
जिह माद्रीय मत्र दयौ जमकै, सुत दोय भये इकही समकै ।।६४२
नकुलौ सहदेव जुतै निरनै, कुल पडुअ, वृद्ध भये करनै ।
पुन पडुव स्राप भयौ प्रथमैं, सोइ भूल गयौ उर अंतस मैं ।।६४३
मिल माद्रीय-सग इकत मंही, तन-त्याग चल्यौ नृप वार तँही ।
सुत माद्रीय कुतीय सौंप सती, पुन संग जरी सोई पडु पती ।।६४४
ठहरी तिह कुतीय ठाहर कौ, बुलवाय लये मुनी वाहर कौं ।
कर मत्र कह्यौ तिन कुतीय कौ, समुझाय बुझाय सपूतिय कौ ।।६४५
पतिकै विन साथ सहायपनै, वनवास कै वीच न वास वनै ।
इह सोच सलाह मुनी उर मैं, पहुँचाय दई हथनापुर मैं ।।६४६

---

१ क्षय । २ शुकदेव ।

तीय पाडुग्र की जुत पाँच तनै, मति भीसम राखेऊ सुद्ध मनैं ।
घृतराष्ट नही कछु द्वेष धरचौ, सिसु जाँनकै पालन काज सरचो ।।६४७
इतनै फिर द्रोन-अचारीय पै, धनुवेद पढावन धारीय पै ।
दरजोधन आदक सौप दहे[1], सुत पडुव के तिह सग सहे ।।६४८
पुन कुंतीय-पुत्र जन्यौ पहिलै, मझ पेटीय मैं अधरथ्थ मिलै ।
धुर नॉम करन्नहु जाहि धरचौ, कपटी दुरजोधन मित्र करचौ ।।६४९
खुरली मिल खेलत ख्यालन मैं, बढ वैर गयौ वय वालन मैं ।
घृतराष्ट लख्यौ मति धारन मैं, अपने सुत द्वेखऊ धारन मैं ।।६५०
गृह-लाख वनायकै गूढ-गती, सुत पच बसायेऊ कुति-सती ।
सुत दासीय पित्रव दीन सला, वच भाग गये विच आग बला ।।६५१
जर आग गये इह जाँनीय मैं, महाँ सोक हीयै उनमाँनीय मैं ।
पहुँचे नृप द्रोपद के पुर मैं, समले[2] वहु भूप स्वयवर मैं ।।६५२
नर मछ्छ के लछ्छ कौ वेधन की, नृप पौरूख माँन निखेधन की ।
कर साहस द्रोपद की कँवरी, वरवीर धनजय ताहि वरी ।।६५३
तिह पाँचहु भ्रात समाँन तीया, पुन मात के सासन कीन प्रीया ।
सुत पडु के जीवत स्रौन सुने, हित पायकै संसय सोक हने ।।६५४
रहि आपुस सौं नहि चित्त[3] रसे, वट लेयकै इद्रप्रहस्थ वसे ।
उपताप[4] अजीरन पाय इतै, ज्वल जिस्नु जुहारीय क्रस्न जुतै ।।६५५
मघवा वन-खाडव जार मतै, सुत पाँडुग्र अर्जुन क्रस्न सुतै ।
भुय-बीच लख्यौ परताप भुजा, रुहिताच[5] निवारीय जाहि रुजा ।।६५६
कर राज निकटक जग्य करचौ, अपने पितु पडऊ कौ उधरचौ ।
दरवार सभा मयदाँनव की, रजवार विभौ जस केरव की ।।६५७
लखकै दुरजोधन आग लगी, ठिक ठौर तजी जिह वुद्धि ठगी ।
अभिमत्र करे पितु अधव कौं, बुलवाय जुधष्टर बधव कौ ।।६५८
दुरजोधन बोलकै येक दुआ, जिह राज लयौ रच खेल जुआ ।
वन कौं अनुवछ्छर बारह कौं, ललना द्रुपदी लीय लारह सौं ।।६५९
कर गौंन गये तत[6] भ्रात कही, सुत पडुव के इह भाँत सही ।
दुख फेर भयौ इह देखत मैं, वतीयाँ सुख नाँहि विसेकत मैं ।।६६०

१ दिये। २ सम्मिलित हुए। ३ मू०प्र० चित। ४ रोग। ५ अग्नि। ६ पाँच।

दुख के सुख सागर डूबतहू, चित मो विष इमृत चूंवतहू।
भ्रम के वस ह्वै क्रम-भूलन मैं, भ्रम आद मिलावत धूलन मैं ।।६६१
हम कौन हैं कौन पिता हमरौ, पुन मात है कौन पिचंड[1] परौ।
सुत बधव कौन सुजातीय मैं, रुज घेर रह्यो दिन-रातीय मैं ।।६६२
जड़ता उर सौं नही जावत है, दिल भौंर की नाव डुलावत है।
थिर होत न पावत थाहन कौ, रुख देख सुभासुभ राहन कौ ।।६६३
चल जाँऊ कहाँ मन चचल तै, दिखरात न ठौर द्रगचन तै।
ज्वर जाय ज्यूंही हमरे जीय की, हित सोच विचार कहो हीय की ।।६६४

दोहा

वेदव्यास के सुन वचन, नारद कह्यौ निहार।
बहुबिध माया वलवत्ती, पावत कोऊ न पार ।।६६५
जिह मोहे करतार जग, माया विस्नु महेस।
भ्रमत रहत सोइ भूल-भ्रम, सनकादिकहु सुरेस ।।६६६
हम-बीती अब कहत हम, सुनीयै परम सयाँन।
भरम भूल हित भारजा, आतुर भये अजाँन ।।६६७

छंद त्रोटक

सुनीयै कथ अंगज सत्यवती, पहलै कछु बीत गई प्रवृती।
मुनि आय जबै परवत[2] मिले, हम देखन भारथ खड हले ।।६६८
तजकै सुरलोक कौं भूतल मैं, मृतलोक में आय गये पल मैं।
पुन आस्त्रव किन्नेऊ आपुस मैं, वतरायकै चित्त करे वस मैं ।।६६९
उपजै अभलाख सु इच्छ्छन मैं, छिपवाय न ताहि तत्छिन मैं।
मति सौं मन सौं कर येक मतौ, छित पै विचरै कर नाम छतौ ।।६७०
तज व्याज चले जितहू-तितहू, मुनि-आस्रम देखत पै मतिहू।
गत ग्रीषम चातुरमास गह्यौ, नृप सजय कौ पुर जाय लह्यौ ।।६७१
सनमाँन करचौ नृप जाँन समैं, गन आतिथ राख लये गृह मैं।
दमयतीय भूपति की दुहिता, पन-पूजन राखीय ताहि पिता ।।६७२

---

१ उदर। २ पर्वत मुनि।

वँह सेव करै निस-वासर कौ, मति येकत जाँन मुनेसुर कौं ।
करकै जप वेद कौ पाठ करै, ध्रुव-आसन ईस कौ ध्यांन धरै ॥६७३
दिन येक भई हम येहु दसा, हीय देख घनाघन कौ हुलसा ।
तन कार सँवार कै ततन सौ, महती कर-वीन लई मन सौं ॥६७४
सुर साधत गायन माँम सरयौ, भल कर्न रसायन प्रेम भरयौ ।
सुन राजकँवारीय स्रौंनन सौ, पती आय गई निज प्रांनन सौं ॥६७५
करनै सोइ प्रीत लगी करुना, पुन सेज सँवारत पाथरना ।
हम मिष्ट-अहार पुरी हलुवा, पुन पर्वत पोलीय तेल-पुवा ॥६७६
हम दूध-दही हरखायन कौ, रिख पर्वत पाय रसायन कौं ।
रिख पर्वत देख लई रचना, चख वक विलोकन औ वचना ॥६७७
जव पूछीय मोपँह जाँन जँही, गत राजकँवारीय कौन गही ।
मन सौ तुम आदर माँनत है, जीय सौं हम अप्रीय जाँनत है ॥६७८
कहीयै छल छोर कै कारन कौं, पन सत्य करयौ सोइ पारन कौ ।
मिल नारद जाय इंकत मही, कथ राजकँवारीअ तथ्य कही ॥६७६
पति चाहत है हम प्रांनप्रीया, हिलकै-मिलकै हरखात हीया ।
तुम कौन प्रयोजन बूझत हौ, अहंकार विकार अरूझत हौ ॥६८०
वँह चाहत है हमहूँ वन कौ, करनी निज दोख कहौ कुन कौ ।
करनी-फल भोगहु आप क्रीया, हित औरन सौ सितराय हीया ॥६८१
पुन पर्वत वोलेऊ सुद्धमती, छिपवाय कै वात न कीन छती ।
विन देव उठै नही व्याह वनै, तुम वीन वजावहु तंत तनै ॥६८२
इतनै फल लेहु अराधन कौ, सुख राजकँवारीय साधन कौ ।
पन भूल गये तिह पातक सौ, कपि कौ मुख पावहु कातिक सौ ॥६८३
भगनी-सुत पर्वत भानज पै, हित पाय क्षमा न करी हम पै ।
हमहू तमकौ गुन आय हीयै, कुनसाय उठे वहु रीस कीयै ॥६८४
अनजाँनेऊ थोरेई औगन पै, मुंह मातुल स्राप दयौ मुन प ।
भ्रमते रहहू तुम भूतल मैं, दिवलोक की आस तजौ दिल मैं ॥६८५
मुन पर्वत ऊठ चले मिलकै, हम रूठ रहे न गये हलकै ।
मुख-आक तहोय वलीमुख सी(को),सवही विध आस तजी सुख की ॥६८६
तऊ राजकुमार न प्रीत तजी, रस वीन सु तै स्वर भीन रजी ।
मुहि सेव करै हिलकै-मिलकै, चित ताहि गयौ न कहूँ चलकै ॥६८७

नृप सजय जाँन हीयें-निरनौ, कँवरी उदवाह[1] रच्यौ करनौ।
बुलवायकें मत्रीय विप्रन कौं, उन और सलाह कही जिनकौं ।।६८८
कोऊ छत्रीय राजकवार कितै, पुतरी वर हेरहु व्याह-प्रतै।
करनीय कलाजुत सूर-कुली, वय जोर किसोर सदक्ष वली ।।६८९
गन मत्रिन वात सुनी गरजी, अपनी मति माँन करी अरजी।
हम हेर करै इह हायन मैं, केऊ राजकँवार कहायन मैं ।।६९०
दत देवहुगे सोऊ दायज मैं, जिनकौ करीय सब येकज मैं।
मिल राजन मत्रिन कीन मतौ, करनै सोइ उद्यम लाय कितौ ।।६९१
सुन राजकँवारीय वात सही, कर जोर पिता सन वात कही।
रुख पायकें आये है देव रिखी, अपनी मति किन्नीय प्रीत अखी ।।६९२
परनाय क्रितारथ होउ पिता, दमयतीय दाँन करौ दुहिता।
कँवरी सुन वात सु मात कही, रिख वदर के मुख रीझ रही ।।६९३
विपरीत भई मति कोन विधी, पहिचाँन परी न अवी-परधी।
कहुँ जाय लता चढ कीकरकै, पिछतावहु भिक्षुक पी[2] करकै।।६९४
वर पाँनन नागर-वेलीय कौं, कोऊ ऊँट चरावत केलीय कौ।
पहिचाँन परी हमकौं पुतरी, बकवाद करै तितरी-वितरी ।।६९५
निज प्रीउ करै मुनि नारद कौ, हित नाँहिन जाँनत हारद कौ।
शिव जूटजटा लटि चेपन की, वपु-उपर भस्मि विलेपन की ।।६९६
द्रग देख दसा घ्रन दायक सी, वरकौं करनै कहा प्रीत वसी।
महती गहि जावत मगन कौ, अतथी वन आँगन अगन कौं ।।६९७
तिँह भिक्षुक की बनकै तरनी, फिरहै घर ही घर मैं फिरनी।
हँसहै हमकौं जग देख हीया, पतनी वन चाहत ताहि प्रीया ।।६९८
दमयतीय मात लखी-दुचती, रुख तोरकै वात करी रुचती।
गिरजा दुहिता पुन हेमगिरी, भरता अरधगीय प्रेमभरी ।।६९९
निहकाँम सदाँ सिव-सेवन मैं, भर मोद रही स्वर भेवन मैं।
चितवै पति और न चितत है, गुन के गुन सौ मन ग्रथत है ।।१०००
स्वर-ग्याँन मुनिंद्र महेस्वर से, रुच राग विरागीय सौंन रसे।
अभिलाख न भोग चहूँ उर मैं, सुख जोग लहूँ महती-स्वर मैं ।।१००१

---

१ विवाह। २ पति।

रति रूप न रग न चित्त रल्यौ, मन ताँन-तरगन जाय मिल्यौ ।
जीय नाँहिन चाहत होन जुदा, मुनिराज पती मम येहु मुदा ।।१००२
सुर सप्त सौ साँम[1] सुनावत है, गहरी धुन वेद कौ गावत है ।
सम नारद स्रौंनन नाँहि सुन्यौ, गुनवाँन पनै हम स्रेष्ट गन्यौ ।।१००३
हयँ आँनन किन्नर होवत है, गुन रागन मैं धुन गोवत है ।
सोई पावत आदर देव-सभा, परवीनन मैं जिह नाँम प्रभा ।।१००४
मुनि सुंदर आँनन सुद्धमती, कपि-आकृत होय गये सुकृति ।
जग स्रेष्ट सबै विध जाँनत है, परवीन सदा प्रतिभाँनत है ।।१००५
भरता नही चाहत भूमपती, मद मच्छ्रर गर्वित मदमती ।
स्वर लाग कुरग भुजग सुनै, जिह राग नही अनुराग जिनै ।।१००६
विध विस्नु-महेस बखाँनत है, जिह नारद कौ जग जाँनत है ।
हम स्वाँम के गायन चित्त हर्यौ, क्रतुहस्त चहूँ भरतार कर्यौ ।।१००७
सुत जाँन विरच रिखीस्वर कौ, तज ससय के अभिअतर कौ ।
परनाय दई मिल मात-पिता, दमयतीय नाँम जही दुहिता ।।१००८
जब बैठ रहे हमहू जमकै, रमनी उर-प्रीत रहे रमकै ।
पुन सेवन आवत काज प्रीया, हम आनन सौ सकुचात हीया ।।१००९
तऊ आनँद माँनत मो तरुनी, हित सौं मति सौं चित की हरनी ।
कीय काल वितीतक केतकहू, सुसतायकै स्त्रीय सुमेतकहू ।।१०१०
मुनि पर्वत भूम रहे भ्रमते, रुच तीरथ सौं रमते-रमते ।
पुन आयेऊ केतुक पेखन कौं, द्रग राजकँवारीय देखन कौं ।।१०११
रुच राजकँवारीय प्रीत रुखी, वहु सेव करै न रहै बिलखी ।
अत माँन कर्यौ उर आदर सौं, चमरी मृघ तोखेऊ चादर सौ ।।१०१२
पकवाँन खवायकै मालपुवा, लपसी पुरीया हलुआ लडुआ ।
मिलवाय विलेपीय मेवन की, तजवीज करी वहु तेवन[2] की ।।१०१३
मधु-धूलीय पूलीय मैं मिलवा, घृत सजुत तोय बिना घुलवा ।
गन पाक रसायन के गुटका, वली मौठ वलाट[3]हु के वटका[4] ।।१०१४
सब रीत प्रसादन साधन की, अत स्वादन आद अराधन की ।
पति भाँनज सौं न पिछाँन पखा, रिखी पर्वत कौं मिभ्रनाँन रखा ।।१०१५

---

१ सामवेद का गायन । २ शाक आदि । ३ मूंग । ४ बड़े ।

रिख पर्वतहू सुप्रसन्न रहे, कथ मातुल हेत पिछाँन कहे।
अनजाँन दयौ हम स्राप अहो, वसुधातल तीरथ जात वहौ ॥१०१६
हमरौ पुन तोहि दयौ हित सौ, मुख सुदर होवहु या मति सौ।
रिख की सुख रूप लखी रुख सौं, मुद पायकं वोल उठे मुख सौं ॥१०१७
सुरलोक-विहार सौ हाउ सुखी, रचना वरदाँन सौं ब्रह्मरिखी।
मिल आपु रमै दोऊ स्राप मिट्यौ, पतनी अहलाद ह्रिदै प्रगट्यौ ॥१०१८
द्रुत जाय वधाइय मात दई, करतूत मुनी परवत्त कही।
रचना कहि रॉनीय राजन कौ, सुभचिंतक मत्र समाजन कौ ॥१०१९
सव देखन अ.येऊ ताहि समैं, अत आनँद पाय रहे उर मैं।
मुनि पर्वत भेट करी मिलकै, भर मोतिन-थार घने भलकै ॥१०२०
दुहिता पति जाँन दहेज दयौ, ललचाय तहाँ हम जाहि लयौ।
इह पूरव वीतीय वात इती, तुम सौं हम भासन कीन तिती ॥१०२१

दोहा

माया-वस भूले भ्रमत, सुर मुनी परम सयाँन।
पार न पायो[1] पायहै, अहमत पाय अयाँन ॥१०२२
गर्वत ह्वै त्रय-गुनन सौं, मिथ्या पावत मोह।
सुखी न कोऊ समुभीयै, तत्व प्रकासत तोहि ॥१०२३

छद पद्धरी

अव कहत कथा इह द्रुतीय और, जिह सुनीयै मुनिवर स्रवन जोर।
वयकूंठ गये इक दिन विचार, माहाराज दरस कारन मुरार ॥१०२४
स्वर-सप्त सहित धुन करत साँम, गह वीन मूर्छना ताल ग्राँम।
कमला जुत वैठे हरी क्रपाल, वर कंज नयन वाहू विसाल ॥१०२५
जव करयौ प्रस्न श्रीविस्नु जाँन, हम आवन की पहिचाँन हाँन।
दुर गई भवन पट ढाँक देह, इदरा करयौ कहा छद येह ॥१०२६
दूसर नायक के नही दूत, धारै नही छल-वल काँम धूत।
माया जित इद्री जीत मोह, करकै तप जीते काँम कोह ॥१०२७

---

१ मू० प्र० पयो।

विचरत रहत ब्रहुलोक-बीच, नर-नार विकार न ऊँच-नीच।
हम अहकार के कहे हाल, श्रीविस्नु करचौ ऐसौ सवाल ॥१०२८
जे वेता[1] मुनिजन सांख्य जोग, पुन आसन आदक कीय प्रीयोग।
पवमाँन जीत थिर करत पिंड, अपनै सम जाँनत ब्रह्मडड ॥१०२९
ब्रह्माद सिवादिक हम विसेस, ऐसौ न करै अनुचित उदेस।
माया अजेय जाँनहु मुनिंद, जेता तिह नाँहिन जती जिंद। १०३०
जब कह्यौ विस्नु सौं हाथ जोर, अरजी मम सुनीयें नाथ और।
थित माया जाकौ कवन थाँन, इह देस रहै किधु देस आँन ॥१०३१
रचना जिह देखन चहत रूप, समुभाय कहहु जोती-स्वरूप।
जब कह्यौ हरी तुम चहत जाँन, अह[2] संग चलहु चढ गरुड-याँन ॥१०३२
ऐसै कहि कीनौ गरुड याद, लै सग चले हम पीठ लाद।
बन पर्वत देखत व्योम वाट, घर पत्तन आदक नदी-घाट ॥१०३३
कढ आये प्रातर काँनकुब्ज, इक देख्यौ सरवर सहित अब्ज।
निर्मल ताही मैं सु भर नीर, कारड हस बहु ध्वनत कीर ॥१०३४
उतरे हमहू उपकठ[3] आय, सुस्ताय उभय बैठे सुभाय।
श्रीविस्नु कह्यौ हमकौं सुजाँन, निर्मल जल करीयें रिखी न्हाँन ॥१०३५
विस्नू सुन सासन जिही बेर, हीय-हूँस बढी जल विमल देख।
मृघचर्म बीन कौं तही मेल, करनै हम लागे सवन केल ॥१०३६
निकसे डुबकी लै होय नार, भर रहे भुजतर सतन[4] भार।
लज्जत ह्वै कीने अद्ध[5] नैन, वपु चित्र देख नही कढत बैन ॥१०३७
मृघचर्म बीन कौं लै मुरार, चढ गरुड-पीठ चल भुजा च्यार।
आभूखन तट पै देख और, ठहरे मृघचर्मा तिही ठौर ॥१०३८
आकल्प झीन अवर अनूप, रुचता कर पहनत बढ्यौ रूप।
लख अग-अग सोभा लुभाय, भूले महती मृघचर्म भाय ॥१०३९
माया-बल वाढचौ इधक मोह, वँह ठौर कछू कीनौ उपोह।
पति-इच्छया उपजी सहित प्यार, विध-विध उर वाढचौ हित विहार ॥१०४०
नृप लख्यौ ताल ध्वज तहाँ नैन, मृघीया तट खेलत मनहु मैन।
मुख चंद विलोकी तीया मोहि, हित वात कही आसक्त होय ॥१०४१

---

१ वेता। २ हमारे। ३ तीर। ४ स्थन=कुच। ५ नीचे।

वचं भ्रमत अकेली कोन काँम, निज मात वतावहु पिता नाँम।
सुन वात कही मैं हित सहेत, नृप मात-पिता नाँहिन निकेत ॥१०४२
तट जाँनत अथवा इही ताल, निरनौ न मोहि दूसर नृपाल।
निरवाह करहु उर सहित नेह, अरदास हमारी सुनहु येह ॥१०४३
भृत गनन कह्यो सू सुनत भूप, इक सिवका लाये अत अनूप।
वैठार लई तव पकर वाह, विव वेद विचारै करचौ व्याह ॥१०४४
उर होय अनदत रही अत, सेवा केऊ दासी अनुसरत।
मुख पाय करत नित सयन सग, वस होय नृपत सोइ रचत व्यग ॥१०४५
वानी मुखदाँनी रचत वाच, कर हाव-भाव लोचन कटाच[1]।
उदवर्तन कर-कर अग-अग, मजन चख अजन भरत मग ॥१०४६
रच चर्चक कुकम भाल रेख, परसाधन विर्चत पेख-पेख।
वीरी लै मुख मैं करत वात, दोऊ अधुरन पै लाली दिखात ॥१०४७
रुख देख मधुर हाँसी रचत, दाडमी कुली दिखराय दत।
लालित्य चरन जावक[2] लगाय, महँदी रच वुदी कर मलाय ॥१०४८
करपूर घोर मय कासमीर, श्रीखड विलेपन सुच सरीर।
फूलेल तेल सोगध फेर, वपु अगर चढावत वेर-वेर ॥१०४९
मागल्य इक्षकर्दम मिलाय, गुरीया पुन रेसम गुन गुहाय।
कमनीय सुमन की माल कठ, गैदा गुलाव विच गठ-गठ ॥१०५०
चलनी कट झीने ओठ चीर, भर कचुलका कुच कसन भीर।
आभर्न कर्नभर्नहु अनूप, सिझ नाक नथुनीयाँ-जुत स्वरूप ॥१०५१
उर-हार मुक्ति मनी मय अरोह, स्र खला कठभूषा सु सोह।
वाजू कर-कंकन पहरवीय, उर्मिका सु धारै अगुलीय ॥१०५२
किंकनी वाँध कट कुनतकार, प्रतिधुनित सुनत पीय वढत प्यार।
झकार नूपरन होत झीन, वाजत मधुरी गत मनहु वीन ॥१०५३
ठुमकै पग मेलत ठौर-ठौर, भरतार रिझावत साँझ-भौर।
कौतूहल कर-कर रचत केल, वन कोक कला स्रंगार वेल ॥१०५४
भर प्रेम प्रकासत भोग भाय, ललचाय लोल लोचन लगाय।
सुख विलसत निस-दिन पीव सग, येकाकी माँनहु रति अनग ॥१०५५

---

१ कटाक्ष। २ महावर।

पुन होत अकारन कोऊ प्रभाव, सविसेख सुनहु गर्भित सुभाव।
अरु पीय लखत कहु तीय और, माँननी होत आँनन मरोर ।।१०५६
कोऊ कारन उपजत हृदय-कोप, गुन माधुर जुत तऊ करत गोप।
अमरख[1] मे राखत गुन उदार, अवगाह तीय मति अलकार ।।१०५७
खत देत नखःछत अधुर खड, पीरा मैं सात्वक गहत पिंड।
जुत राजकाज नृप दूर जात, विरहनी दसा गहि बिलबिलात ।।१०५८
वोलत कहु सौतन पीय बिसास, अनखावत हीय सौं भर उसास।
वाढत तऊ नित-नित चित्त विनोद, मद पट्टपरॉनी पाय मोद ।।१०५९
वागन विच जावत हित विहार, रागन अनुरागन रीझ वार।
प्याला भर हाला सहित पीव, संधाँन मद्य सेवत सदीव ।।१०६०
जाँने नही वासुर निसा जात, विध वेद-वाँन की भूल बात।
अनुवछ्छर द्वादस गये येम, पीव के साथ ह्वै विवस पेम ।।१०६१
पुन भई गुर्वनी काल पाय, ऊपज्यौ फेरकै प्रसव आय।
सजुक्त वेद विध ससकार, कीने विचार मगल कुमार ।।१०६२
दीय नाँम वीरवर्मा सुदेह, निरखत सिसु वाढत हृदय नेह।
पुन भयौ सु धन्वा दुतीय पूत, अत रूप-रग गुन मय अभूत ।।१०६३
सुत जने वीस इन आद सर्व, गृह-गोत राज-सुख भयौ गर्व।
विध वेद करे तिनके विवाह, आई वधूटीयें लहि उछाह ।।१०६४
पुन होन लगे तिनके पऊत्र, अंगन[2] मैं डोलत सव इकत्र।
किलकत मिल-मिलकै करत केल, खिल-खिलकै विरचत विवध खेल ।।१०६५
घुटनीयें चलत केऊ ललत घूम, भर पेम सुहावन लगत भूम।
सुख माँनत मन वाढत सनेह, ललकत लोचन सौं लाभ लेह ।।१०६६
ललचाय वलइया जाहि लेन, दीठ के दिठोना भाल देत।
माँनत मैं मन मैं महामोद, गहि हाथ खिलावत वीच गोद ।।१०६७
सुख मैं कवहूँ दुख होत सघ, सीतला आध-व्याधी समघ।
अतिसार छाँदनी दूख अख, खाँसी ज्वर वासी होत खख ।।१०६८
क्रमी काटत केते करत कूक, रात मैं सुनत मैं जागरूक।
जव जाँन वधूटी मात जास, पुन करत वचन पौरुख प्रकास ।।१०६९

---

१ अमर्ष। २ आँगन।

रूखी रुख चूकी करत रार, वह जात मनावन बार-बार।
सकल्प विकल्प न चित्त सग, चढ जात हिंडोरैं डोर चग ॥१०७०
स्त्रीय-भाव भई हीय बीच सघ, पुरपत्व भाव छूटयौ प्रवध।
गम वेद स्रुती अरु ब्रह्म-ग्यांन, धारना धेय कौ हटयौ ध्यांन ॥१०७१
नही जांनत मैं नारद-मुनीस, उनमांनत माया नहिन ईस।
कुल जांन कृतारथ गेह-काज, रांनी मैं पट्टप अटल-राज ॥१०७२
इतनैं भय ऊठ्यौ अकसमात, पुर आय लगी सत्रुन प्रपात।
दारुन किह कारन रच्यौ द्रोह, रन होन लग्यौ घोरन-अरोह ॥१०७३
रथ हाथी रोकी आय राह, तरकन तेगन की मँडी त्राह।
कन्नौज नगर पै अत करूर, पर सैंन वढचौ आतख पूर ॥१०७४
पुत्रहू लरे औरैं पऊत्र, कीनी सब्ब सेना जत्र-कत्र।
उव्ररचौ पुन राजा भाग येक छल-वल सौं कल[1] सौ पाव छेक ॥१०७५
खल छोर चले जब वीर खेत, सघार सैंन पुत्रन समेत।
मैं गई रुदन करती मुकांम, तहाँ मृतक आँख देखे तमांम ॥१०७६
हा हत वांन कह मुक्क हीय, जुग हाथ मलावत जक्क जीय।
कर वृद्ध विप्र कौ वेख काय, श्रीरमांनाथ आये सहाय ॥१०७७
विसवास दयौ वाचा वसेख, सोक मैं देख व्याकुल असेख।
गहि मौन रही जब दयौ ग्यांन, सूतका सरहु तीरथ सिनांन ॥१०७८
पुन देय तिलाजल करहु पार, कुल-पुत्रन कौ कर संसकार।
पुरपत्व तीर्थ लैगये कृपाल, तहाँ निर्मल देख्यौ नीर-ताल ॥१०७९
सूतका करन लागी सिनांन, जहाँ डुवकी लेत ही परी जांन।
विध सुत मैं नारद ग्यांनवत, वपु नार भयौ कैसौ वृतत ॥१०८०
जल सौ सिर वाहर करत जात, हरि आगे ठाढे च्यार हाथ।
वोले कहि नारद लेहु वीन, मृघचर्म त्याग अवर मलीन ॥१०८१
हीय विस्मय ह्वैकै लख्यौ हाल, खर्टांवदु[2] कहा इह कर्यौ ख्याल।
मोहि लज्जत लख वोले मकुंद, माया के जेता महा मुनिंद ॥१०८२
वस भये जाहि कैसे वरिष्ट, आपनैं भूलकै नाम इष्ट।
जब कह्यौ हरी माया अजेव, भगवंती जांनत आप भेव ॥१०८३

१ युद्ध-कला। २ विष्णु।

हम अहकार-वम होनहार, देख्यौ चरित्र माया दुसार।
मन विगत करचौ अहमत मुरार, उपदेस पर्म दीनौ अपार ।।१०८४
हीय दर्प त्याग भौ चर्न हेत, सुख-ग्यांन पाय आर्जव[1] सहेत।
श्री विस्नु करत नारद सराह, राजा पुन आयौ तिही राह ।।१०८५
नारी कौं देखी नही नैन, बोल्यौ ताही छिन इही वैन।
तट आय कहाँ गई मोर तीय, जिह बिना न थिरता लहत जीय ।।१०८६
मुत मरे तऊ नही करत सोच, पतनी बिन परगये-ह्रदय पोच।
हथ करी क्रीत मैं ताहि हेत, खल-दल कौ दीनी पीठ खेत ।।१०८७
छत्री ह्वै कातर करचौ चित्त, वैभव लुटाय पुन कोस वित्त।
जूझत जो वेरन वीच जग, स्वर्ग की वधू तऊ लहत सग ।।१०८८
नीचता लह्यौ पद उभय लोक, सु दरी वड़ोयौ नीर सोक।
कित गई कमल-नैनी कुरग, भरता मोंहि करकै रग-भग ।।१०८९
हा ! प्रॉन-प्रीया तोहि करत हेर, विधु-वदन दिखावहु वेर-वेर।
लै गयौ पकर कहुँ वरुन-लोक, तिम तथा तिमगल[2] लई तोक ।।१०९०
ब्रह्मा इह कीनौं कहा विचार, निरदई रचे जुग पुरष-नार।
मृतु येक साथ नही लिख्यौ मूढ, राखो नही कैसै राह रूढ ।।१०९१
नारी कौं दीनो सत्य नेह, दाहत सोइ पतिकै संग देह।
इह नेम करचौ नही पुरख आद, पन भूल गये लहिकै प्रमाद ।।१०९२
विलपत इम रहि-रहि वचन विग, कहि-कहिकै वांनी अत कुढग।
हरि देख पुकारत हाय-हाय, उपदेस तालधुज दयौ आय ।।१०९३
सुन राजा मेरी वात स्रौन, कौन है तीया तिह पती कौन।
सैंवलनी तट पै मिलत साथ, ज्यों आय पथक-जन जात-जात ।।१०९४
पुन नाव वैठकै जात पार, विछुरत नहिं लागत नैंक वार।
पथ कौ जात सोइ फेर पूठ, आपने-आपने देस ऊठ ।।१०९५
येक कौ येक कोऊ करत याद, पुन करै याद सोई प्रमाद।
ताही प्रमाद ग्यॉनी तजत, इह निरनौ आगम-निगम अत ।।१०९६
संजोग विजोगहु काल-साथ, है रोग-भोग सोऊ कर्म-हाथ।
भोगे तुम नारी-संग भोग, वस ईस भयौ ताही विजोग ।।१०९७

---

१ सरलता। २ मछ्छ।

करनौ न सोक ताकौ कदाप, ममता उर त्यागहु हित मिलाप।
तरुनी तुम पाई ताल-तीर, निरनौ कहा पावत बीचें नीर ॥१०९८
नही मात-पिता कौ याद नाम, गृह नाँहिन जानत कौन ग्राँम।
रुदत जिह कारन करत कूक, मग जावहु नारी आस मूक ॥१०९९
सुख जो कछु भोगहु रह्यौ सेस, इक नार गई कैसौ अँदेस।
जो भोग न रुच तौ करहु जोग, रिपु जन्म-मरन कौ मिटै रोग ॥११००
ध्रुव नाँहिन सुख-दुख धाम-धूम, घटीजत्र[1] रचावत सदा घूम।
पुत्र कौं सौंप अथवा पऊत्र, इह राज-त्याग जावहु अनत्र ॥११०१
दुरलभ इहै पाई मनुज देह, निर्वान ईस पद करहु नेह।
जिम्या उपस्थ[2] सुख सबही जोंन, कल्पना जाहि की करै कोन ॥११०२
पसु-जोनी मैं होवत पसाव, भाव सौं भजहु अथवा अभाव।
बिन माँनव-तन दुरलभ विचार, सुख अभय-ग्याँन कौ ससकार ॥११०३
धर धीरज करकै समाधाँन, निभ ग्रेह नृपन जावहु निदाँन।
तीय-सोक हृद सौं करहु त्याग, सुख माया बिरचत साँनुराग ॥१११०
सुन बात जनार्दन नृप सयाँन सो गयौ ग्रेह करके सिनाँन।
पर कर रजधाँनी निभ पऊत्र, ताहि कौ सौंप बन गयौ तत्र ॥११०५
आराधन करकै जोग अग, साधना ग्याँन निर्वाँन सग।
पायकै तत्व भव भयौ पार, सुनीयै हम बीते समाचार ॥११०६
न्रप करयौ गवन जबही निकेत, हँसने हरि लागे पाय हेत।
जब करी अरज मैं हाथ जोर, माया कौ अचरज भयौ मोर ॥११०७
चलवती-वेग जाँन्यौ बिसाल, हीय तीयाभाव के लखे हाल।
सुमरन कर ससय होत सोय, मन हरख सोक-वस भयौ मोहि ॥११०८
कीय मजन सरवर बीच काय, सब पूर्व-ग्याँन बिसरे सुभाय।
पति पाय तालध्वज सहित पेम, निभ ब्रह्मग्याँन कौ भूल नेम ॥११०९
मन चितवत ही तन लिग मोहि, सुध कैसै भूलौ कहहु सोय।
निज हृदय भयौ सोइ ग्याँन-नास, इह ससय सौ करीयै उदास ॥१११०
भोगे अनेक परकार[3] भोग, जाने न कछू जोग रू अजोग।
निरनौ नहीं कीनौ बिध निखेद, येक से गने मेध रू अमेध ॥११११

---

१ रहट। २ लिंग। ३ प्रकार।

हम नारद मुनि हीय विसर हाल, कीने वितीत केऊ सहज काल ।
इह देह पायकैं होत ग्राद, वाढत वीते दिन उर विषाद ॥१११२
कारन सोइ कहीयै रमाकथ, गति होय हृदय अग्यान ग्र थ ।
श्री विस्नु सुने नारद सवाल, दीनौ पुन उत्तर ह्वै दयाल ॥१११३
जग-जीव-जत ग्रादक जितेक, तन भेद विवध दीसत तितेक ।
जागर्त सुप्न सुखपति[1] जनाय, तुरीयाहु-दसा व्यापत तथाहि ॥१११४
भव-जीवन के इह च्यार भेद, नही करत सकत ताकौं निषेद ।
देहातर प्रापत वहा सँदेह, याही प्रकार गति लखहु येह ॥१११५
जव सोवत निद्रा पाय जीव, सुध भूल जात तन की सदीव ।
जागत मैं सव कछु जाँन जात, इह देह हमारी गेह ग्राथ ॥१११६
कहु सुखपति सौं चित करत काँन, सुप्न मैं होय कछु सावधाँन ।
मृतु पूर्वज देखत गेह माँहि, विवहार वारता हित वसाहि ॥१११७
सुख माँनत तैसे दुखही सथ्य, मिल वैरी काटत पकर मथ्थ ।
जागत जव जाँनत सोइ जीव, क्रतुकर्मा ग्रथवा भये क्लीव ॥१११८
सुप्न मैं न जानत सुप्न सुद्ध, पुन जागत जव जाँनत प्रवुद्ध ।
भ्रम कौ हीय होवत फेर भाँन, माया इह दुर्गम लेहु माँन ॥१११९
पावत नही हमहू सिंभु पार, चित चकत होत जिह वदन च्यार ।
सुर नर मुनि जासौं हीय ससंक, वदत निस-वासुर छोर वंक ॥११२०
माया ग्ररू गुन की गति महाँन, जाकौ कोऊ नाँहिन सकत जाँन ।
गुन तीनहु सौं जग करचौ गोय, जुर थावर जगम जीव जोय ॥११२१
संसार विना गुन नहिन साच, विध जुक्ति विचारहु मोर वाच ।
इह ग्राद ग्रत निरनय ग्रखड, पिडत[2] जन वरनत धर्म पिंड ॥११२२

दोहा

मुख[3] सतगुन है हमही मँहि, सवही कहत संसार ।
रज तम हू वरत रहै, निभ्र जाँनत निरधार ॥११२३
व्रहमा रज गुन सौं वने, समुभ्रत सवही सयाँन ।
सत तम वरतत ताहि संग, समय-समय सुप्रमाँन ॥११२४

---

[1] सुसुप्ति । [2] पंडित । [3] मुख्य ।

सिव-निर्मत तम-गुन सरस, सत रज वरतत संग।
भुवनेस्वर होवहु भलै, इन गुन सौं न असंग ॥११२५
दै नारद कौं ग्याँन द्रढ, विस्नु गये वयकूंठ।
ब्रह्मलोक नारद वहुर, वहाँ तैं चालै ऊठ ॥११२६
पिता दरस कर प्रथम ही, वीती कही सु वात।
माया-ठगे मुरार मोहि, तुम किम जीती तात ॥११२७
विध सुनकै नारद वचन, वोले तवही वहोर।
हम ही वचे न सिव हरी, अहि नर सुर मुनि और ॥११२८
उतपत पालन करन अरू, सघरता जग सोय।
काल-कर्म स्वभाव कर, जाँनन कारन जोय ॥११२९
विध के सुन नारद-वचन, विसमय मेट विषाद।
वीनाँ लै कर विचरनै, लागे जुत अहलाद ॥११३०
व्यास कहन लागे वचन, जनमेजय नृप जास।
कुरुकुल जूझ्यौ कलह मैं, तजहु सोक नृप तास ॥११३१
गरभत[1] माया तीन गुन, जीवन कारन जाँन।
सात घोर मूढहु समुझ, विवध प्रकार विधाँन ॥११३२
सभव सहज सुभाव संग, जगके जेतक जीव।
कैसै न्यारे होय कोऊ, उरझे जाल अतीव ॥११३३
तूल विना नही ततु कहु, ततु विना पट तेम।
घट मृतका विन नहि घटत, अनुभव जाँनहु येम ॥११३४
ब्रहमा विसन महेस वपु, न्यारे गुन सौं नाहि।
प्रीत-जुक्त अप्रीय पुन, जेह विषाद-जुत जाँहि ॥११३५
सतगुन व्रह्मा पाय सम, सात चित्त ह्वै सोय।
सजम धार समाध सुख, गहत ह्रदय मति गोय ॥११३६
ग्याँन-जुक्त ह्वै गूढ गति, प्रीत-जुक्त प्राँनीन।
तम गुन मूढ विषाद तिम, होत जथा मति-हीन ॥११३७
रजोगुनी जव होत रुख, घोर रूप चित छीन।
प्राँनिन सौं अप्रीत पख, वरतत हेत विहीन ॥११३८

१ उत्पन्न करती है।

हरी हरहु इम होन है, त्रविध-दसा लहि तंत।
सुर-आसुर कों गनहु सम, मुनिजन सिद्ध महत ॥११३९
मनूं चतुर्दस महपती, सूरज-वंसी सोम।
गुनाधीन सबकों गनहु सोम[1] सुभाव असोम ॥११४०
विस्व-जीव कहा बापुरे, गिनती में वपु गौन।
चित माया जीतन चहै, हुयौ न कोऊ हौन ॥११४१
ब्रह्म-परत्व मँहीं वसै, ओत-प्रोत अध ऊद्ध।
रमत सच्चदारूपनी, येक-मेक अविरुद्ध ॥११४२
चेष्टा प्राँनी करत चित, जग पुतरी-जालीन[2]।
गुन[3] आस्रत ज्यूं करत गति, पेखहु सकल प्रवीन ॥११४३
भाव भगत सौं भगवती, जाल मिटावहि जीव।
आराधन कीजै वही, सुध[4]-मति होय सदीव ॥११४४
अनुभव ग्यांन प्रकास उर, मोख करत मँहमाय।
भवसागर भवनेस्वरी, नवका स्यात्रक न्याय ॥११४५

---

१ सौम्य। २ मकड़ी। ३ तागा, डोरा-गुण। ४ शुद्ध।

बुधसिंह चारण रचित

देवीचरित

द्वितीय भाग

सप्तम-स्कंध

दोहा

सोनकाद सौं सूतजू, कहत सुनौ दै कॉन।
कुरुपति सौं जिह विध करयौ, वेदव्यास वाख्याँन ।।१
सुनी कथा पारासरीय, सप्टम-श्रत सकंध।
कुरुपति पूछी पुन कथा, सूरज सोम समंध ।।२
वंस उभय विख्यात है, आद भये नृप औंर।
कहहु कथा विस्तार कर, मुनिराजन कुल-मौर ।।३
हेत सहित अघ-हारनी, पावन कथा प्रसिद्ध।
हम सौं सुन नारद कही, सब विध वाचा सिद्ध ।।४

छंद पद्धरी

श्रीविस्नु कमल नाभी सुथाँन, उपजे चतुरानन प्रथम आॅन।
तप करचौ महादुर्गम तिनूह, आराधन माया सहित ऊह ।।५
वरदाँन पाय तातै विरंच, विस्तार सिष्ट कौं काज वंच।
परगट कीय मानसि सात पुत्र, अंगरा मरीची[1] पुलह अत्रि ।।६
पोलस्त[2] वसष्टहु क्रतु पुनीत, जे महारिखी मद मोह जीत।
पुन उपज रोप सौं रुद्र पीन, कोरा सौं नारद प्रगट कीन ।।७
सनकाद च्यार सुत भये साथ, गिनतो मै माँनसी तिही गाथ।
दक्षन अगुष्ट सौ भयौ दक्ष, परजापति पदवी लहि प्रतक्ष ।।८
अगुष्ट वाँम विध सुता येक, बहु रूपवती उपजी बसेक।
तिह नाँम वीरनी[3] धरयौ तात, दूसरौ असक्नी नाँम दात ।।९

---

१ मरीचि। २ पुलस्त्य। ३-वीरिणी।

भइ दक्षप्रजापति गेह भाँम, लावन्य कंज लोचन ललाँम।
विध तनय रिखी नारद वहोर, इह आय उदर तीय जनम ओर ॥१०
व्याम सौ सुनी कुरुविंद्र वात, हित वचन वहे पुन जोर हाथ।
सुत वेदगर्भ[1] नारद सुभाय, अवतरे वीरनी गर्भ आय ॥११
विस्तार सहित कहीयै वृतत, अभलाख सुनन की आद-अत।
तन प्रथम कोन गति भयौ त्याग, लीय जन्म दूसरो कोन लाग ॥१२
वोले पुन पारासरीय वाँन, सवा नृप कारन समाधाँन।
निज आद वात सुनीयै नवीन, कमलासन सासन दक्ष कीन ॥१३
परजा कौ सिरजहु प्रजापत्त, है काज हमारौ परमहित्त।
द्रिढ सुनकै सासन कमन[2] दक्ष, पतिव्रता वीरनी तीय प्रतक्ष ॥१४
तिह गर्भ करे सुत प्रगट ताँम, निज उभय अग हरीयस्व नाँम।
पूरे गनती के सहस पंच, वहु भये प्रसन्न[3] तानौं विरंच ॥१५
सो लगे वढावन प्रजा साथ, वोले नारद इह देख वात।
खित कौ तुम पहिलै करहु खोज, ध्रुव स्रष्ट-काज वाँधहु धरोज ॥१६
परमाँन विना जाँनै प्रवध, वाँधहौ स्रष्ट कौ कहाँ वध।
हरीयस्वन[4] सुनकै वचन हेत, खोजन कौं चाले सवही खेत ॥१७
उत्तर केऊ दक्षन चले ऊठ, प्राची रु प्रतीची फेर पूठ।
सुत गये देखकै दक्ष सोच, परगये हृदय मैं प्रथम पोच ॥१८
पुन परगट कीने फेर पूत, कीनी नारदजू पुन करतूत।
हरीयस्व कही जिम कही हेर, वसुधा कौं खोजहु प्रथम वेर ॥१९
स्रष्टी कौ पाछै करहु सूत, हम कह्यौ करहु तुम प्रथम हूँत।
उठ चले दक्ष के सुवन ओर, भागे दिस-विदसा साँझ भोर ॥२०
सुत गये प्रजापत वढ्यौ सोक, रिख नारद पै अत करयौ रोख।
दीय श्राप प्रजापति अति दुरत, मिल पुत्रन दीनी खोट मंत ॥२१
मो 'त्रीया गरभ मैं परहु माँन, अवतरहु फेर धर देह आँन।
पुद्गल[5] तज नारद श्राप पाय, अवतरे वीरनी-गर्भ आय ॥२२
करकै विचार पुन दक्ष कीन, कन्यका साठ परगट कुलीन।
तेरह दीय कस्यपमुनी ताहि, अत रूपवती परजा उपाय ॥२३

१, २ ब्रह्मा। ३ प्रसन्न। ४ हर्यश्व आदि। ५ शरीर।

दस धर्म सताइस सोम दीन, पुन दोय भृगू मुन दोय-प्रवीन।
च्याहिक अरष्टनेमी जु च्यार, दीनी क्रमास्व[1] को दोय दार ।।२४
दुई दई अगरा रिखी दॉन, करके विवाह साखी क्रसॉनु।
ऊपजे पुत्र-पौत्रहु अनेक, सुर और असुर मॉनव विसेक ।।२५
कर वैर परसपर कलहकार, वढ राग-द्वेष अतसय विचार।
वाख्यॉन सुनहु नृप सूरवस, पुन भये और राजा प्रसस ।।२६
मॉनसी पुत्र विध के मरीच, विख्यात भये रिखो जगत-वीच।
सुत कस्यप भये ताकै सुजॉन, दीय सुतर त्रीयोदस दक्ष दॉन ।।२७
कऊमारि[2] त्रीया मुनि ग्रहन कीन, उपजावन स्रष्टी विध अधीन।
देवता दैत पंन्नग दिखाय, उपजे पसु-पक्षी उदर आय ।।२८
कासपी-स्रष्ट तातै कहत, आदर्सौ वारता सुनहु अत।
सुत भयौ रिखी कस्यप सुभेव, देवन मैं गनीयै सूर्जदेव ।।२९
विवसॉन[3] नाम जाही विसेस, अरू तेजवॉन जॉनहु असेस।
सुत भये वैडवस्वत[4] मनु सधीर, परजा की मेटन महॉपीर ।।३०
नव पुत्र भये ताके निदॉन, इस्वाक जेष्ट कॉनिष्ट ऑन।
नाभाग धृष्टि सर्याति नाम, जॉनीयै नरस्यंति[5] प्रासु जॉम ।।३१
नृग दिष्ट करुख अरू प्रखध[6] न्याय, सुत मॉनव मनु के इह सुभाय।
मनु सुतन जेप्ट इस्वाक मॉन, सत पुत्र ताहि उपजे सँतान ।।३२
वड सवन वीच जॉनहु विकुक्ष, पुन सुनहु नवन को कुल प्रतक्ष।
सव सूरवीर अत सावधॉन, नय नीत विदुष जॉनन निदॉन ।।३३
सखेंप सुनहु सव वस सूर, पुहमी सु प्रतापी भये पूर।
मनु-पुत्र लघू नाभाग नॉम, जाकैहु भयौ सतसध[7] जॉम ।।३४
धृष्टि कै भयौ धार्ष्टक सधीर, भय ब्रह्मकर्म-रत समर-भीरु।
सर्याति सुतन आनर्त सुद्ध, अत रूपवत स्वाभाव ऊद्ध ।।३५
याही कै कन्या भई येक, मुनि च्यवन दई धारै विमेक।
मुनि अध भये जम[8] मिने आय, पुन लोचन दीने क्रपा पाय ।।३६
कुर्रविद्र सुनी इह व्यास कथ्थ, वाख्यॉन कहहु मुनि च्यवन वत्त।
मुनि अध भये कैसे महत, कीने कन्या के नृपत कथ ।।३७

---

१ कृशाश्व। २ कुमारी। ३ विस्ववान्। ४ वैवस्वत मनु। ५ नरिष्यत।
६ प्रषध्र। ७ सत्यसन्ध। ८ अश्विनीकुमार।

जब व्यास कहन लागे सुजाँन विधजुक्त कथा करबै बखाँन।
सर्याति नृपत व्याही सुकीय, तिह सहँस च्यार सन्या जु तीय ॥३८
इक भई सुता तासै अनूप, सबहिन कौ प्यारी सुन सरूप।
जिह दयौ सुकन्या नाँम जाँन, सुभ लछन देखे सनिधान ॥३६
कमनीय कलेवर वय किसोर, अंतहपुर देखत जिही ओर।
सर्याति नृपत राँनीन संग, देसंतर चाल्यौ छोर द्रंग ॥४०
सेना सब लीनो जिही साथ, चालत सोइ सत्रू देस घात।
निर्जनवन पहुँच्यौ सोइ नरेस, वन मैं तड़ाग इक लख्यौ वेस ॥४१
माँनसरवर कै सोइ माँन, सोपाँन घाट सुंदर समाँन।
फूले सरोज विच चहू फेर, अली गुंज करत सोगंध येर ॥४२
तरु हरत सुसोभत तीर-तीर, निरमल ताही मैं भरयौ नीर।
रवि बिंब छाँहि-जुत रंग-रंग, तामैं अनेक ऊठत तरंग ॥४३
कऊ कछछ-मछछ कर रहे केल, मुक्ता सफोट[1] सौ भेख मेल।
उर देख नृपत वाढी उमंग, सर मैं अवरोधन लऐ संग ।.४४
करनै सोइ मजन लग्यौ केल, झुक नारिन वाँहे झेन-झेन।
कँवरी सरवर की तीर कुंज, पुस्पन के हेरत चली पुंज ॥४५
सखीयन कौ नूतन लयैं संग, अत रूपवती सब गोर-अंग।
चमकत विजुरी सम प्रभा-चीर, सुच कंचन-वेली सम सरीर ॥४६
खिल-खिलत चलत मिल करत ख्याल, मजुल-प्रसून की रचत माल।
थक वैठ गई इक देख थाँन, सखीयाँन संग ह्वै सावधाँन ॥४७
मुनि च्यवन विराजे ध्याँन माँहि, छिपवाय तरोवर सघन छाँहि।
वपु भयौ व्यमीरा[2] रूप वेख, द्रग दुइन सोइ पुन रहे देख ॥४८
जिगनूँ-सम चमकत जिही जोत, अत तेजवत आभा उदोत।
तहाँ जाय सखी देखे जु ताहि, अचरज कँवरी सौं कह्यौ आय ॥४६
कँवरी मुनि नैनन लखी क्रत, विसमय विचार कैसौ वृतंत।
कंटक मगाय तिछछन कठोर, अवलोक चलायौ चखन ओर ॥५०
सोइ फूट गेय लागत जु साल, किन्या उठ भागी तातकाल।
मुनि विथत भये पीड़ा मझार, चख-अंध विचारै दुराचार ॥५१

---

१ सीप। २ दीमक की वामी, विमौट।

उर सोक वढयौ ताकौ अछेह, द्रग विना दिखावत वृथा देह।
अपराध मुनी पातक उपाय, रुक गई सवन मल-मूत्र राहि ॥५२
नर-नारी वाहन-जुत नरिंद, दरसाव रोग कौ वढयौ दुंद।
वतरावत आपुस वीच वात, इह पाप भयौ कहा अनाघात ॥५३
मत्रीगन राजा करत मत, वरताव भयो कौनै वृतत।
सुन राज-कँवर वोली सँभार, वेदना देख आसय विचार ॥५४
खेलन मैं वनमै गई ख्याल, तुम रहे नहावत वीच ताल।
वल्मीक विमोरी[1] लखी बैठ, पुन छिद्र-वीच ह्वै रहे पैठ ॥५५
जिगनू सी जागत जही जोत, प्रेरचौ निकास कौ प्रथम पोत।
लाग्यौ सोइ कंटक तिही लार, वहिनै कछु लाग्यौ तहाँ वार ॥५६
अरू निकरी हाहा इह अवाज, भइ जोत वध हम चली भाज।
इह सका उपजी ह्रदय आय, अनजाँन भयौ कैसौ उपाय ॥५७
सुन वचन सुकंन्या भूप स्रौंन, गलि पूछ सघन वन करचौ गौन।
मुनि च्यवन लखे भृगु-सुत मुकाँम, परचाय करे बहु विध प्रनाँम ॥५८
अपराध करचौ कंन्या अजाँन, मुनि क्षमा करहु मम विनय माँन।
मुनि च्यवन कह्यौ सुन महाराज, इह कन्या कीनौ हम अकाज ॥५९
विन लोचन काया भई वृद्ध, सेवक नही औरैं सिख सनिद्ध।
कन्या हम देवहु करन काज, अपराध क्षमापन इह इलाज ॥६०
नही नटचौ न कीनौ दैन नेम, जहाँ आयौ उठकै गयौ जेम।
मत्रिन सौ लागौ करन मत, वृद्ध मुनि अध सुनीयें वृतत ॥६१
निज हेत सुकंन्या चहत नार, इह कैसै करहै अनाचार।
जावहु सकट सौ इहै जीव, पुत्री कौ अब न करहै पीव ॥६२
हठ पकरचौ राजा दुखत होय, सुन लई सुकन्या वात सोय।
राजा सौं वोली न्याय-रीत, निज पिता सुनहु मम वचन नीत ॥६३
अपराध करचौ मै जाय येक, ऐंसौ दुख भोगत तुम अनेक।
अपराध वन्यौ पहिलै अजाँन, लाग्यौ फल ताही लयौ लाँन ॥६४
सव भोगत है दुख सैन-सग, तुम मात-पिता हाथी तुरग।
येकहू करचौ ऐंसौ अनर्थ, अन्नेकहु सौ कहा होय अर्थ ॥६५

---

[1] दीमक की बामी, विमोट।

येक सौ होय सवहिन उवेल, मिल होहु सुखी मुनि धाँम मेल ।
दुख भुगनहु अथवा मुख सुदेह, विच भाल लिखे सोइ अकवेह[1] ॥६६
अपराध चढावहु नही और, नीकी विध सुनीयैं पितु निहोर ।
सुन भूप चल्यौ पुत्री सलाह, रिखीराज-धाँम की लई राह ॥६७
जायकैं करी विनती जहाँह, विधवेद सुकन्या गहहु व्याह ।
सुन भये प्रसन मुनि चिवन ग्याँन, दीनी असीस नरपत निदाँन ॥६८
उपताप[2] मिटचौ सब येक सग, तन सैन सहित हाथी तुरग ।
परनाय दई कन्या नृपाल, कर गृहन लई मुनिवर क्रपाल ॥६९
दैने पुन्न लागे नृपत दहेज, सुच वस्त्र अलकृत मच सेज ।
नही गृहन करचौ मुनिवर निदाँन, दैने कौं जो कछू लगे दाँन ॥७०
लीय राजकँवारी चित्र ललाँम, कीय मनसा पूजत सफल काँम ।
निज हृदय अनदत ह्वै नरेस, दै कन्या चालन लग्यौ देस ॥७१
पितु कह्यौ सुकंन्या कह्यौ पेख, वनवास प्रमाँनै चहत वेख[3] ।
मृघरोमज वलकल वसन मोहि, सव रिखी त्रीया मम देहु सोय ॥७२
सेवा पति करकैं तप सजोग, जत-मत सौ साधहुँ क्रीया जोग ।
पितु मात तुमहु ह्वैहौ पुनीत, कुल उभय वढावहुँ अमर क्रीत ॥७३
त्रीय अरधुती वासिष्ट तेम, जग-पावन सुनीयत नाँम जेम ।
परपाटी तिनकी गृहहुँ पथ, गृह जाहु छोर अग्याँन ग्रथ ॥७४
अनुसुया तीया जिम रिखी अत्र, पति-सेवा करहूँ मन पवित्र ।
सुन सुता वचन वाढचौ सनेह, गत ईस विचारत गयौ गेह ॥७५
लखत पुत्री कौ हृदय लेख, द्रग नीर वहावत चल्यौ देख ।
पुत्री कौ हीय सौ तज्यौ प्यार, विवजुक्त ग्याँन चित सौ विचार ॥७६

दोहा

सब उदास ह्वै मिल सुता, राज-भवन लीय राह ।
रही सुकन्या धाँम रिख, चित निज पति-हित चाह ॥७७
पति की सेवा प्रेम सौं, करत भये वहु काल ।
अकस्मात दिन येक कौं, तोय भरन गइ ताल ॥७८

---

१ विधाता । २ रोग, कष्ट । ३ वेश ।

तिही ताल सूरज तनय, श्रोय् वुद्धि अगार।
आयुरवेदो अमर गन, क्रति अस्वनीकुमार ॥७९

छंद अर्ध हरगीतका

सर्वांग देखी सुदरी, आनन सु राका-इंदुरी[1]।
निर्धूम दीपक नासका, रद-वस्त्र विद्रुम रासका ॥८
कमनीय-नैन कुरग से, भ्रूहार अवली भृंग से।
कमनीय गोल कपोलहू, वणपीह[2] कोकल ,वोलहू ॥८१
दुई पीन उरज दिखात है, लहि भार कटि लचकात है।
कर कमल जघा केलसी, वपु-प्रभा कचन वेलसी ॥८२
पद व्रह्मवर्धन[3] पात से, पथ चलत नैक पिरात से।
वर देख वलकल वेख कै, विस्मयत भयेऊ विसेख कै ॥८३
जम[4] देवकन्या जाँनकै, पूछी सु वात प्रमाँनकै।
कह देहु कन्या कोनकी, हित पती-पत्नी होनकी ॥८४
वसरही क्यौ वनवास कै, दासी न दास उदास कै।
सुनकै सुकन्या स्राँन सौं, वोली सु मधुरी वाँन सौं ॥८५
सरजात नृप कीं मै सुता, पति च्यवन नारी पतिव्रता।
मुनि अध वृद्ध महाँमती, पुन करत सेवा प्रवृती ॥८६
चलीयै जु आस्रम चाहिकै, प्राँनेस मिलन पसावकै।
जव कह्यौ अर्कज[5] जाँन सौं, कँवरी सु सुनीयै काँन सौं ॥८७
वैठन सुजोग विवान मै, पद चलत पथ पथराँन मै।
वपु पाट जोग ही वसन कौ, कट उरज वलकल कसन कौ ॥८८
दासी न सेवा दायका, मुनि भजत तजकै मायका।
नित भवन जोग निवास मै, वस रही काँनन वास मै ॥८९
पत अध जीरन पायकै, सुख लहहु कहा सरसायकै।
नव जोवना हम निरखीयै, पति करन जुग महि परखीयै ॥९०
वरलेहु येक विचारकै, वय-वृद्ध अद्ध विसारकै।
सुख-सेज लेवहु सोयकै, हित पाय निर्भय होयकै ॥९१

१ पूर्णिमा का चंद्र। २ पपीहा। ३ तांवा। ४, ५ अश्विनी कुमार।

सुन उठी बोल सुकन्यका, गनीयैं न मोकहू गन्यका।
सरजात दीनी सूंप कें, रिखीराज केवल-रूप[1] कें ॥६२
सेवा सु करत सुधार कौं, अरु पिता-मात उधार कौ।
बॉनी अनर्थ न बोलीयैं, तुल कनक उपलन तोलीयैं ॥६३
तुम स्राप देहुँ तपायकें, पथ गहहुगे पछतायकें।
सुन लई तुमरी सीख कौं, नही खरे रहहु नजीक कौं ॥६४
कथ सुनी कँवरी कॉन सौं, सुरवैद बोल सयॉन सौं।
कहै तुमहू जैसें कीजीयैं, परचाय पतिहि पतीजीयैं ॥६५
हम रोग हारक हेरकें, निज लेहु न्याव निवेरकें।
कहीयौ जु पति कौं इह कथा, जुग वैद आये सुर जथा ॥६६
कर कहत नेम करार कौ, नय नीत के निरधार कौ।
लख रूप मोहि ललचायकें, उर कॉम उपज्यौ आयकें ॥६७
त्रीय करन कौ ह्वै तत्परा, भरमाय मेरे स्रुत भरा।
मोहि जॉन पतिवृत रतमई, निज ऊकत इक भाखी नई ॥६८
सुन लेहु साथ सयॉन कें, हित वचन कारक हॉन कें।
रवि तनय हारक रोग के, जिम जॉन ओपधि जोग के ॥६६
सो करत सुर्ग सँभाल कौं, तेऊ निकस आये ताल कौं।
अस्वन सुनॉम अनूप के, रमनीय अद्भुत रूप के ॥१००
सो करत है इह सासना, पति तोर हित परकासना।
करहैं जु हम सम काय सौं, ओषधी जोग उपाय सौं ॥१०१
पति वरहु पुन पहिचॉनकें, मम सत्य वाचा मॉनकें।
छल है क अथवा चातुरी, उर सोचीयैं मुनि आतुरी ॥१०२
जव कह्यौ तीय सुनि जॉनकें, अवगाह उर अनुमॉन कें।
सन लहहु वुद्धि सुमार कौं, कह देहु सूर-कुमार कौं ॥१०३
वोले सु च्यवन विचारकें, हित जॉन अपनौ हारकें।
सुरवैद कौ समझायकें, जुग धॉम लावहु जायकें ॥१०४
कह लेहु कहन करार कौं, विस्मयत त्याग विचार कौ।
चाली सुकन्या चाहिकें, पति-हेत सासन पायकें ॥१०५

---
1 जीवन मुक्त।

मुरवैद जाय समीप कौं, जहाँ कही हार-रुजीप[1] कौं।
तुम कह्यौ आस्रव ताहि कौं, निरवाह करहै न्याय कौ ॥१०६
धर धीर चालहु धाँम कौ, करीयै सु उत्तम काँम कौं।
जम वैद आये जाँनकै, मति मुनी सुकन्या माँनकै ॥१०७
जम कह्यौ मुनि कौं जोयकै, तुम ताल पैठहु तोयकै।
सुन च्यवन जल मैं संचरे[2], जम सगहू पाछै जुरे ॥१०८
डुबकी सु लीनी डोहकै, जम वैद कौं सग जोयकै।
निकसे सु जवही नीर सौं, सम रूप होय सरीर सौ ॥१०९
त्रहु कहत वाँनी टेरकै, हम वरहु-वरहू हेरकै।
इक रूप त्रहु-गुन थेक मैं, वाँनी सु वेख वसेक मैं ॥११०
रिखी परख नाँहिन रंच की, पाई न देव प्रपच की।
सर्यात-नंदनी मोचकै, पर गई मन सौं पोचकै ॥१११
विस्वेस्वरी जग-वदनी, कीय ध्याँन कष्ट-निकंदनी।
वरनना कर-कर वीनती, पहिचाँन कै हित निज पती ॥११२
रज चरन कह-कह रावरी, सिरजता माया सावरी।
सकरी तूँही सरसुती, पद्मालया तू प्रवृती ॥११३
प्रीय पर्म पुर्ख प्रधाँन तूँ, ग्यानीन अतर ग्याँन तूँ।
जननी तुही जग-जीव की, स्वाभाव सिद्ध सदीव की ॥११४
तूँ विसद आतम तारनी, प्रज वेद-धर्म प्रचारनी।
पतिवृत धर्म प्रभाव सौ, भीनी सु पति के भाव सौं ॥११५
व रतूत अर्क-कुमार की, नही समुज पति निरधार की।
मुध देहु त्रपुरा-सुदरी, दुख मिटहि जामौं दुंदरी[3] ॥११६
कर क्रपा मात सुकन्याका, उर-भक्ति जॉन अन्यंनका।
मुध ग्याँन दीनी सुमृती, पहिचान लीनेऊ निज पती ॥११७
मुन च्यवन मिलकै मोद कौं; सुत अर्क पाय सवोध कौ।
चाले सु आमा छोरकै, वोले सु च्यवन वहोरकै ॥११८
पतिवृत्त सुकन्या प्रेम सौं, निरवाह अपने नेम सौं।
निज भवन वैठ निदाँन कौं, कर अस्वनीसुत काँन कौं ॥११९

---

१ रोग हारक, अश्विनीकुमारों। २ घुसे। ३ द्वद।

रिख देख अपने रूप कौ, सुभ द्रष्ट जुगल सरूप कौ।
बोले सु बात विचार कौं, उर सोच कै उपकार कौं ॥१२०
गुन करचौ मेरे गातपै, जुग[1] निरामा ह्वै जातपै।
वर माँगीये मन-वचना, उर होय जो कछु इछना ॥१२१
कीय तरुन जीरन-कायकै, द्रग-जोत रूप दिखायकै।
तरुनीन परन्यौ ताहि सौ, सुख लेहुँ तोर सहाय सौं ॥१२२

दोहा

ऋन दीनै विन रावरी, अर्कज मुनहु उदंत।
ऊरन होउ न आपसौ, आद न जाँनहु अत ॥१२३
मन-वचत वर माँगीयै, उभय विचार अरथ्थ।
कहीयें जो कछु काँमना, मैं देवन समरथ्थ ॥१२४
मुनि पतनी-जुत महत मति, करकै सुमत कहेव।
देहु वचन हम दुहुन कौं, लाभ फेर कछु लेव ॥१२५
सुनी सुकन्या मुनि सुघर, कहि अस्वनी-कुमार।
निर्भय मागह हम निकट, वाचा देत विचार ॥१२६

छंद पद्धरी

नासिक[2] तव वोले मुनि निहार, स्वर[3] गिर पै वरते ममाचार।
सुन लेहु प्रथम ताकौ सिधत, इह कहत वारता आद-अत ॥१२७
विध करचौ जग्य ऊत्तम विधाँन, वह ठौर सवही सुर मिले आँन।
लागे सव अपनौ भाग लैन, दाँनी विरच जव लगे दैन ॥१२८
वैठे हम देवन-संग वीय, कहनावत ऐसै इद्र कीय।
तुम वैद होयकै चहत त्याग, भूलकै न देहौ जग्य-भाग ॥१२९
यँह करचौ निरादर चले ऊठ, पकती सुरन सौं फेर पूठ।
ओसधी[4] जग्य की तजी आस, इक कारन हम डोलत उदास ॥१३०
पुन हमही करावहु सोम-पाँन, उर नाँहि कछू अभिलाष आँन।
अर्कज की कहनी सुन अधार, मुनि च्यवन कहे इस समाचार ॥१३१

---

१ दोनों। २ अश्विनीकुमार। ३ सुमेर। ४ औषध=सोमरस।

सर्याति नृपत सौं करहि संध, पुन करहि जग्य करनैं प्रवध।
भाग कौं दिवावहि हाथ भूप, सुख पाय लहहु दोनौं स्वरूप ।।१३२
मुन की सुन अर्कज वात माँन, अत सुखी भये विस्वास आँन।
सुख पाय सुकंन्या रिखी-संग, आसम जनु वैठे रति अनग ।।१३३
विलसत सुख नाना रति-विहार, दपत हित चित सौं मति अगार।
वीते केऊ वासुर चली वात, महपती सुकंन्या कही मात ।।१३४
अगजा दई मुनि वृद्ध अंध, सुख सौं है अथवा दुख समंध।
साख्यात[1] देवकंन्या-स्वरूप, भोगत है कैसे भोग भूप ।।१३५
सुध्र पूछहु ताकी कर सँभार, उर आय वढी चिंता अपार।
निद्रा नही आवत मोहि नैन, अगजा हेत उपज्यौ अचैन ।।१३६
माता हित जैमें पिता-मोह, इतनौ किह कारन कीय उपोह।
जायकें खवर करीयै जरूर, पुत्री कौं देखहुँ प्रेम-पूर ।।१३७
सुनकें रानी को कथ समग्ग, महपती चल्यौ रथ वैठ मग्ग।
मुनिराज जाय पहुँच्यौ मुकाँम, भर सुता हेत सग लयैं भाँम ।।१३८
मुनि जाय लखे मनु द्वुतीय मार, कमनीय सुकन्यर जुत कुमार।
अदेस आय उपज्यौ अचैन, वतरावत आवत नहिन वैन ।।१३९
पुन रहे द्वार ठाढे नृपाल, विव मात-पिता जव लखी वाल।
आयकें मिली करकें उमग, सुख पाय मात-पितु येक सग ।।१४०
विस्मय जुत पूछी नृपत वात, द्रग तोहि पती नाँहिन दिखात।
कहाँ गये सग तू रहत कौन, जैसी कछु वीती कहीय जोन ।।१४१
सुन सुता करयौ साच्यौ सवाल, है इही वूभीयैं आप हाल।
सुन सुता जात वैठे समीप, मुनहू सौं वात पूछी महीप ।।१४२
जामात प्रथम तुम अध जात, गृहनीन जुरा[2] अत गलत गात।
नव जोवँन कैसैं भये निदाँन, वाख्याँन करहु वाचा विधाँन ।।१४३
जव कह्यौ मुनी नरपति जताय, सत तोर सुता कीनी सहाय।
देवन के आये वैद दोय, मिलकैं नव-जोवन करयौ मोहि ।।१४४
उपकार भयौ हमपै अनून[3], स्वभाव सिद्ध सौ अर्क-सूँन।
वरदाँन दयौ हमहू विचार, जग्योपध पावहि नृप जुहार ।।१४५

---

१ साक्षात्। २ वृद्धावस्था से ग्रसित। ३ अत्यधिक।

सर्जात भूप¹ इह मुनी स्राँन, जामातु कही मुनिराज जाँन।
उपकार कर्‌यौ जम सग आप, पुत्री निज काटयौ महापाप ॥१४६
हम सुखी भये तुम उभय हेर, वदली जम दीजै इही वेर।
सतुष्ट होय नृप सावधाँन, निज राजभवन आयौ निदाँन ॥१४७
मत्रन वुलायकै कर्‌यौ मत, वरन्यौ मुनि दुहिता सव वृतन।
जिग करनै कौ कीय जतन जोर, साँमग्री करनै वटयौ सोर ॥१४८
घृत अन्न आद चीजे घनेर, येकत्र करी वहु येर-येर।
जामात वुलाये सुता-जुक्त, अव करीयै जो कछु रचै उक्त ॥१४९
मुनि च्यवन देख उर भयौ मोद, करदये निमत्रन चहूँ कोद।
वासष्ट आद रिखी मिले वृंद, पुन मख करनै कीनौ प्रवध ॥१५०
जिह वेर होन कौ लग्यौ ज्याग, सूत्राँन मिले सुर साँनुराग।
पीने कौं लागे सोम-पाँन, अस्वनहू ठाढे भये आँन ॥१५१
सुरराज लखत अरू देव-साथ, हित सौ जम माड्यौ सोम हाथ।
पुन च्यवन मुनी दीय सोम-पाँन, वज्री तव वोरयौ इहै वाँन ॥१५२
तुम वैदन कौं कहा देत त्याग, लख कर्‌यौ सोमपा वध लाग।
वोले मुनिराजहु तिही वेर, अह वीच करत कैसौ अँधेर ॥१५३
क्रम-साखी¹ सुत अस्वनकुमार, नय विना सकत नाँहिन निकार।
मोटे उपकारी जगत-मित, पावहि नहि कैसे देव-पत ॥१५४
निरनै कर सुरपति कहहु न्याय, अरू देव रिखी-गन मिले आय।
हम अघ वृध रिखी निवल-अग, साँमर्थ ओपधी कीय सुचग ॥१५५
पुन जग्य ओषधी करन पाँन, जम कह्यौ हमहु उपकार जाँन।
प्रेरना करी हम नृपत पाहि, इह जग्य कर्‌यौ याही उपाय ॥१५६
राखीयै हमारी वचन रूढ, पुरहूत होत कैसे पढ़ूढ।
वढ वोल्यौ सुरपति सभा-वीच, नासकहु चिकत्सक महानीच ॥१५७
मल-मूत्र परीक्षक चित मलीन, घट धातु लखत नही करत घ्रीन।
सो देव-सभा कैसै समाँन, पावहैं ओसधी जग्य पाँन ॥१५८
जव मुनी अहल्या कह्यौ जार, वोलीयै नेक आपौ विचार।
आपनी ऐंव ज नत न आप, पहिचाँन विना जम देत पाप ॥१५९

---

१ सूर्य।

ओषधी जग्य हम देत एह, दुइ वेद सुरन कौं निसदेह।
जम दई ओसधी जग्य जाहि, तव लयौ सोमपा पॉन ताहि ॥१६०
वासव लख बोले पख[1] विसेख, तुम ब्रह्मवधु[2] ह्वै करत तेख।
मैं विस्वरूप कौ लयौ मार, तोहू कौं मारन काजें त्यार ॥१६१
इह कहत वज्र छोरचौ अभग, परकास जास कोटक पतग।
आवत सिर देख्यौ च्यवन अक्ष, परकास्यौ तप-वल मुनि प्रतक्ष ॥१६२
अववोच थभ दीनौ अकास, सुर देख रहे सव सावकास।
आहूत मत्र पढ दई आग, जाही मैं करते रहे ज्याग ॥१६३
इक प्रवल पुरख उपज्यौ अखड, चल चले देख सुर महाचड।
मद नाँम जिहो दाँनव मदध, पर्वताकार काया प्रवध ॥१६४
चारसौ कोस की वाँह च्यार, अत तिछ्छन भुज-कटक[3] इभार[4]।
करकसह जभ मल्लक कुदीर, सोइ सव्द करत्त कटकट सधीर ॥१६५
अतक्रूर दिखावत्त लव ओठ, लहलहत लगावत जीह लोट।
तिह महा भयानिक वक्रतुंड,[5] आहार करहि मनु ब्रह्मइड ॥१६५
जगजगत दिखावत नैंन जेह, आग के भरे मनु कूप एह।
कारौ तन ऊरध लाल केस, धगधगत ह्रदय विच ज्वाल ध्वेस ॥१६७
कलकलत वाँन वोलत कठोर, घहरात मनहु घन प्रलय घोर।
इद्रहू गह्यौ कर वज्र ऊद्ध, जाही सौ करनै काज जुद्ध ॥१६८
लीनौ गहि आसुर वज्र लील, अचरज लख वासव भौ अलील।
भयभीत भये सुर गये भाग, इह ज्याग करचौ कैसौ अभाग ॥१६९
सव दिसा होत हाहत्त सोर, ठहरे नही येकहु येक ठौर।
सुमरन तव कीनौ गरू सुरेस, आयकै लख्यौ मद आसुरेस ॥१७०
पुन कह्यौ इद्र सौ वृहसपत्त, सुन लेहु हमारी वात सत्त।
मुनि च्यवन मत्र तप-वल मिलाय, कीय प्रगटत याही असुरकाय ॥१७१
इह जाँनलेहु दाँनव अजेय, अतघोर रूप वल अप्रमेय।
मुनि चरनं सरन लीजै महंत, माँनीयै हमारौ मूल मत ॥१७२
जव इंद्र च्यवनमुनि-सरन जाय, वर्नना करन लागे वनाय।
तुम परासक्ति के भक्त तौन, कर सकै और समता जु कौन ॥ १७३

---

१ पक्ष। २ ब्रह्मवेत्ता। ३ नख। ४ सिंह। ५ मुख।

अब क्षमा कीजीयें विनय येह, दुइ स्वर्नवेद मग्ग भाग देह।
तिनकौ नही करहै तिरसकार, ध्रम-रीत प्रतग्या कहत वार ॥१७४
आपकी प्रतग्या रही आज, लाचार भये हम तजी लाज।
सुनकै वज्री की वात स्याँन, दीय च्यवनमुनि तव अभयदाँन ॥१७५
कीय च्यार भाग मद देत केर, वाँटकै दये पुन तिही वेर।
स्त्रीय, मद्य, जुआ औरै सिकार, वस गयौ च्यार द्याँ जिही वार ॥१७६
सुर सुखी भये देखत समाँन, मुनि देख पराक्रम प्रवल माँन।
वडवा-सुत वैठक दई वीच, सोमपा पात[1] दीय सुभ रचीम ॥१७७
पुरहूत कह्यौ देवन पुकार, कृतकृति भये अस्वनकुमार।
सवकै समाँन सुर भये सुद्ध, वाँचीयें कवहु नाहिन विरुद्ध ॥१७८
सर्जात नृपत की कीत सेख, वसुधा पै वाढी अत वसेख।
मुनि कौ प्रभाव जाँन्यौ महाँन, परवीन सत्यवाचा प्रमाँन ॥१७९
जिग भयौ सँपूरन सुभग जोग, भूसुर सुर पायौ दाँन भोग।
द्विज देव गये सव देस-देस, निग नगर ऊठ आये नरेस ॥१८०
करनै सोड लार्गौ राज-काज, रुच धाँम रहे तहाँ रिखीराज।
वसुधा प्रसिद्ध मुनि च्यवन वात, जैहै नहि केतक काल जात ॥१८१

दोहा

क्रीत नृपत सरजात की, रिख की समृथ राह।
देव गये दिस-विदस कौं, सव ही करत सराह ॥१८२
अर्कजहू उपकार कौं, पलटौ पाय प्रसग।
भये सोमपाई भलै, सव देवन कै सग ॥१८३

छन्द उधोर

सर्जात नृपत सधीर, विख्यात जग सोइ वीर।
आनर्त सुतन उदार, भुज राज दीनौ भार ॥१८४
निज तनय रैवत नाँम, ध्रुव धारना वलधाँम।
सुस्थाँन कुस्थली[2] सोय, जिह वसाई द्रग जोय ॥१८५

१ पात्र। २ द्वारका।

सामुद्र-दीप समीप, मध करेऊ वास महीप।
आँनर्त देस अनूप, भुव-राज कीनौ भूप ॥१८६
सत पुत्र भयेऊ सुभाय, जेठौ ककुद्मी जाहि।
उपजी सु कन्या येक, रेवती सुदर रेख ॥१८७
अत रूपवत अनूप, भरतार ढूंढत भूप।
केऊ लखे राज-कुलीन, पुत्री-समाँन प्रवीन ॥१८८
रैवत-गिर कौ राज, केऊ दिन विचार्यौ काज।
आये न निजर अधीस, वर सुता विसवावीस ॥१८९
बूझनै काज विचार, चित वच आँनन च्यार।
तनया सु रेवति ताहि, लीनी सु सग लगाय ॥१९०
विध-लोक गये वहु वीर, सुर दिव्य धार सरीर।
स्रुत गिरहु यग्य समेत, नद उदध दिव्य निकेत ॥१९१
गधर्व रिख सुग्यात, विद्याधरा विख्यात।
सिध नाग चारन सर्व, सुच वेख धार सुपर्व ॥१९२
केऊ चरत देखन कार, केऊ वरन राजकुमार।
विध के पहूँचे वास, हीय धार-धार हुलास ॥१९३
वरनना करत विसेस, ललचाय चित लोकेस[1]।
सुन नृपत वात सयाँन, वच व्यास के वाख्याँन ॥१९४
ब्राह्मन वखानत वात, जहाँ ब्रह्म-वित द्वज-जात।
भुवलोक-वासी भूप, सो विना ब्रह्म-स्वरूप ॥१९५
विध-लोक करन विचार, लै सुताहू कौ लार।
कैसैं गयौ कहि देह, सुन मिटै मोहि संदेह ॥१९६
ससय मिटावन सक, सुन कहेऊ व्यास निसक।
सवपुरी सीस सुमेर, कैलास वरुन कुवेर ॥१९७
विधलोक जम वयकूंठ, अरू द्रलोक अनूठ।
जिह करी अर्जुन जात, वसु वात है विख्यात ॥१९८
वस पाँच वरख विताय, इहाँ कर्यौ भारथ आय।
अरू कुतस्थादिक आद, पुन गये पाय प्रसाद ॥१९९

---

१ ब्रह्मा।

केऊ भये दैत कम्बर, पहुँचे सु वन गौ पुर।
जिह इंद्र-आसन जीत, नव करेऊ देव सभीत ॥२००
गये महाभिस कर गौन, परगित् वात पुरौन।
वेंकुठ मुनीये वान, जहाँ देव पीड्न जान ॥२०१
वँह लोक तै उहाँ आय, श्रीविस्नु करन मिहाय।
लेगे जु जिनने लोग, जेऊ मनुज जावन जोग ॥२०२
रिखी पुन्य आनमरूप, भल जात आवन भूप।
जिग करत जे जजुमान, परभाव पुन्न प्रधान ॥२०३
जे स्वर्ग लायक जीव, सुख वास करत सदीव।
कीय प्रस्न पुन कुरुविंद, श्रीव्यास ग्यान समंद ॥२०४
रेवती रेवत-राज, कीय फेर कैसे काज।
कहीये क्रपा कर कथ्थ, स्त्रुनि सुनू है समरथ्थ ॥२०५
जव वादरायन जाँन, वोले सु निर्मल वाँन।
नृप गयौ विध नीयराय, गध्रव रहे गुन गाय ॥२०६
जुत सुता ताही जाग, रुच सुनन लागी राग।
भये त्रप्त नाँहिन भूप, उर गाँन सुनत अनूप ॥२०७
वहु काल सौ भये वंध, सु विचार राजा सध।
क्रन्याँ दिखाय कहेहु, उपदेस देवहु येहु[1] ॥२०८
हम कन्यका-सम हेर, वर वतावहु इह वेर।
केऊ लखे नृपत-कुमार, इह कंन्यका अनुहार ॥२०९
आयौ न द्रष्टी येक, लेख्यौ जु विध कहा लेख।
कह देहु नाथ क्रपाल, सुन मोर दीन सवाल ॥२१०
विध कही सुनीयै वात, नृप लखे तै निस्रात।
वँह रहे नाँहिन येक, वध कीन काल विसेक ॥२११
सुत पौत्र वंधव सोय, लखीयै न औरहु लोय।
अरू प्रगट भवे दनु-ग्रस, कली रूप धारै कस ॥२१२
अठविंस द्वापुर येह, छित काल कीनौ छेह।
रहि सोमवसिन राज, सविसेख छत्रि-समाज ॥२१३

---
१ मू॰ प्र॰ येह।

अवतरे क्रस्नहु आय, सव सुरन करन सिहाय।
मारे सु कस मदध, भुव-भार टार भयद ।।२१४
वलभद्र माधव वीर, सारूप गौर सरीर।
वँह सेख[1] कौ अवतार, भुँय कौ उतारयौ भार ।।२१५
तिह सुता देवहु तोहि, मत माँनीयै इह मोहि।
रैवत-सुता लै राह, आयौ सु सहित उछाह ।।२१६
रैवती दीनी राँम[2], कीय व्याह पूरन काँम।
अरु करयौ मुक्ती-आस, वद्रका-आस्रम वास ।।२१७
तहाँ गग पावन तीर, रैवत त्याग सरीर।
सुरलोक गयेऊ सिधाय, तन जोग ताप तपाय ।।२१८
इह सुन्यौ नृप आख्याँन, वर व्यास सौं वाख्याँन।
सका करी पुन सोच, अवगाहि हीय आलोच ।।२१९
रेवती–रेवतराज, वहु दिवस रहेऊ विराज।
जुग सत अठोतर जात, विध-लोक मैं विख्यात ।।२२०
निरवाह भय किह न्याय, वयवृद्धता न वसाय।
आयुर न खूटी अग, पुन कहहु व्यास प्रसग ।।२२१
मुन व्यास कीय सबोध, विध-लोक मैं न विरोध।
आसा पिपासा आद, वस ग्लाँनता न विखाद ।।२२२
सर्जात गये सुर-लोक, सतती होय ससोक।
कीय राखसन भख केक, पुरवासीयन जुत पेख ।।२२३
कुसथली ऊजर कीन, नहि वसे वास नवीन।
मनुहू के छीकत[3] नाँम, इक्ष्वाक भयेउ उदाँम[4] ।।२२४
विस्तरौ सूरज-वस, पुहमी-पती • परसस।
उपदेस नारद आप, जिह करयौ देवी-जाप ।।२२५
सत पुत्र भये सविसेक, इधके सु येकन-येक।
वड नाँम ताहि विकुक्ष, दातार सूर सुदक्ष ।।२२६
इक्ष्वाक अवध-अधीस, सोइ छत्र धारै सीस।
उत्तर सु रक्षा अर्थ, सुत भेज दयेऊ समर्थ ।।२२७

१ शेष। २ वलराम। ३ छींकने पर। ४ स्वतन्त्र।

धूरे जु गनत पचास, जग-दुद मेटची जास।
आपाक[1] अठतालीस, उत भेज सुतन अवीस ।।२२८
सुत दोय कारन सेय, अवगाह रखेउ अजेय।
इक्ष्वाक-सुतन अभीत, जगती करी वस जीत ।।२२९

दोहा

स्राध अष्टका करन सुभ, नृप इक्ष्वाक निहार।
सुत विकुक्ष कौं कहेउ सोइ, सुत गये काज सिकार ।।२३०
ऊत्तम पल लावहु अवस, जुत आदर मृघ जोय।
स्रांध भोग जोगही समुझ, करी विलव न कोय ।।२३१
सस्त्र बांध वन संचरयौ, पिता-हुकँम कौं पाय।
मृघ सूकर केऊ मारकै, भयौ थकत स्रम भाय ।।२३२
भूख लगी वनमै भ्रमत, वुद्ध भ्रमी जिह वार।
सुमरन भूल सराध कौं, ईच्यौ कछु आहार ।।२३३

छंद हरगीतका

इक लोमकर्न[2] आहार कौं मँगवाय कै कछु मंस लैं।
कहु काट-छांट क्रपालका अलपीय तनकौ अस लैं ।।
भक्षन करयौ ज्वल भूजकै पितु निकट आय पुलायकै।
वासष्ट प्रासन करन विध कौ लगे चित ललचायकै ।।२३४
खरगोस कौ तन लख्यौ खडित महाँपडित मोह सौं।
पितु सौं कह्यौ सुत-पाप कौं दिल धारकै कछु द्रोह सौं ।।
आमख उच्छिष्ट भयौ इहै नही स्राध-जोग नरेस जू।
करतूत देखहु कँवर की इह दीजीयै उपदेस जू ।।२३५
गरू-वचन सुन कीय कोप परगट दै निकारौ देस सौं।
दूसरहु नाम ससाद दीनौ धिक्कीया क्रत ध्वेस सौं ।।
वन सघन मैं सोइ लग्यौ विहरन काल काटन कारनैं।
दुख दीह भोगत महाँ दुस्तर पिता कौ पन पारनैं ।।२३६

---

१ दक्षिण। २ खरगोश।

भये कालवस इक्ष्वाक भूपत देह छेह दुरतरा।
पद राज लयेऊ ससाद नरपत क्लेस तजकें कतरा।।
परजा सु पालक नीत पथ सौ सत्रू घालक सूरमा।
जिग करे सरजू तीर-पै जिह जात विप्रन कर जमा।।२३७
ककुतस्थ नाँमा पुत्र जाकें इद्र वाहक है वँही।
स्वर्गीय हारे समर मैं जग-जोर असुर वढयौ जँही।।
जिह काल सवही देव जुरकें विस्नु सौ कीय वीनती।
विस्नू करयौ उपदेस, विबुधन माँनीयें हमरी मती।।२३८
ककुतस्थ राजा अवधपुर कौ जाय जाचहु जाहि कौ।
महपती दाँनव मारकें सोई सुरन करहि सिहाय कौं।।
पुन वचन सुनकें रमापत के देव चाले देखकें।
तव आय पहुचे भूँम-तल कौ अवधपुर अवरेखकें।।२३९
पहुचे सु राजन के प्रवेसन आय सम्मुह अधपती।
बहु करयौ आदर विनयजुत उच्चारकें मुख अस्तुती।।
कहीयें जु आगम कवन कारन भयौ मेरे भवन कौ।
वासी तिविष्टप लोक वसुधा गेह तज कीय गवन कौ।।२४०
जव और सुर वोले जँही सुन नृपत की कथ साँच सौं।
दुख देवतन कौ देत दाँनव तेख घेखहु ताच सौ।।
जव विस्नु पै हम गये जुरकें दयौ हरी उपदेसकें।
उपदेस सौं आये इहाँ सव सग पाय सुरेसकें।।२४१
महाराज वासव मित्र ह्वै सज समर करहु सिहाय कौं।
परसिद्ध भक्ति-परावका[1] उद्धर्न सरहु उपाय कौ।।
नृप कहेऊ सुरन निकाय कौं करलेहु जैसें हम कहैं।
मघवाँन वाहन होय मम दल दाँनवन कौ चढ दहै।।२४२
सुर सवही वोले सुरपती सौ वनहु वाँहन वेखकें।
सुविचार अपनौ धर्म स्वारथ तजहु लज्या तेखकें।।
वन वृषभ ठाढे भये वृखा अवगाह हेत जु आपनौ।
सभ्भ चढयौ भूपत समर कौ घट लायकें पौरुख घनौ।।२४३

---

१ गायत्री।

ककुतस्थ नाँम जु इही कारन भयौ ताही भूप कौं।
जनु प्रलय काज महेस जाजुल रोख धारयौं रूप कौं॥
पुन ककुद नाँम जु पीठ कौ ऊचार करत अरोह कौं।
ककुतस्थ चढकै कलह कारन दाँनवन रच द्रोह कौं॥२४४

अरु इद्र-वाहन नाम इह पायौ जु चढकै सुरपती।
पुर दाँनवन सौं जीत पाई पुरजय सग्या प्रती॥
धन खोस कै लीनीं धरोहर देवतन सौं दाँनवा।
दीनी जु पाछी देवतन कौं महा उरजम माँनवा॥२४५

मघवाँन सौं कर मित्रता आयै अजोध्या अवपती।
ककुतस्थ ताकौ वस कहीयत पुहम कीरत प्रवृती॥
प्रथु नाँम ताकै पुत्र उत्पत विस्नु अस विसेखीयै।
वल पाय सोय परावक्रा परताप अधिक परेखीयै॥२४६

निज प्रथू-तनय विरध नाँमा तनय चद्र जू ताहिकै।
जुवनास्व सुत को पिता जाहर भूप तेज सभायकै॥
जुवनास्व कै सामत जाँनहु देस गौड़ दिगत मैं।
साँमत नगरी जिह वसाई वार जिह वरतंत मैं॥२४७

सामत कै बृहदस्व सुत भौ जाहि कौ सुत जाँनीयै।
नृप कुवल आस्व निरतरा महा निरधर अनुमाँनीयै॥
मृध धुधनाँमा असुर मारचौ धुधमार वसुधरा।
यँह नाँम परगट भयौ यातै धर्मराह धुरधरा॥२४८

भय सुतन ताहि द्रढास्व भूपत प्रजा-पाल पराक्रमी।
हरीयस्व नाँमा ताहि सुत हुव जाहि राज जम्यौ जमी॥
ताकैहु भयेउ निकुभ नरपति वरहनस्व विसेखीयै।
ताकेहु भयेउ क्रस्वास तनय जु अत प्रचड असेखीयै॥२४६

जाकैहु भयेउ प्रसेनजित वलवाँन वीर महावली।
सुत जोवनास्व भयेउ सभव दुर्ज्जनन-सेना दली॥
ध्रुव भये ता सुत माँनधाता पेट पितु सौं ऊपनै।
हित कहत हूँ ताकी हकीकत सुनहु भूप सनै-सनै॥२५०

जनम्यौ न सुत जुवनास्व कै सत त्रीया परन्यौ सो सही।
वन वीच होय उदास विहरत मुनिन के आस्रम मँही॥

इक मुनी आस्रम आयकै उस्वास लीनौ अधपती।
पूछी सु मुनि तिह नृप-प्रतै परचाय कहीयै प्रवृती ॥२५१
जव कही राजा जाहि सौं मुख नाँहि मोहिन सुतन कौ।
मुनिराज करकै इह मया जप जग्य करीयै जतन कौ॥
मुनिराज औरहु मुनिन कौ वुलवाय कै जग विस्तरयौ।
मंत्रतहु करकै वेदमत्रन भाँमनी-हित जल भरयौ ॥२५२
अनजाँन पन उठवायकै घट पाँन जल कीय महपती।
द्रग मुनन घट कौं ऊन देख्यौ होत प्रात मती हयी॥
पूछने लागे दुजहु प्रवृत कह्यौ नृपति हकारना।
अनजाँन कीनौ आचमन कुट वार कहीयै कारना ॥२५३
चुप होयकै मुनि गेल चालेऊ येक-येक उदास ह्वै।
नृप रहे अपनै निलय मै अरू उदर-सुत की आस ह्वै॥
दस मास पूरे भये दुख सौ जनन-वेला जाँनकै।
केऊ भये ठाढे मिल चिक्कचिक वेदना सुन वाँन कै ॥२५४
भल करेऊ दछ्छन कूख भेदन सुत निकार सँवारकै।
कथास्पति इम मत्रनन कहि वेख कै जिह वारकै॥
सुरपती[1] मन्धाता कहेऊ सुख मुखहु खोल्यौ माँनीयै।
यँह कह स्देसिन दीय पीआई भूख त्रस्ना भाँनीयै ॥२५५
भये चक्रवरती सोइ भूपत विजय कीनी वसुमती।
कीय त्रसत जाँनै सवही तस्कर पर्मधार्मक छितपती[2]॥
त्रसुदस्यु नाँम धरयौ तँही अत इंद्र वल अचगाहिकै।
सिसविंदुकी कन्या सुधर विधि वेद कीनी व्याहकै ॥२५६
तिह नाँम विंदुमती तीया सुत जने दोय सुजानीयै।
पुरुकुत्स औ मुचकंद परगट माहाप्रतापी माँनीयै॥
पुरुकत्स सुतन पराक्रमी अनरन भयेऊ उदारकै।
हरीयस्व नाँमक सुत हुवौ धरमग्य धीरज धारकै ॥२५७
तिह भये अगज नृप त्रवन्वा अरुन सुत तिह ऊपजे।
सतवृत्त[3] ताकै सुवन भौ रुख कुटल सोई काँमी रजे॥

---

१ मू. प्र. सुरपति। २ मू. प्र. छत्रपती। ३ मू. प्र. सतवृत।

अघपूर दुज की त्रीया इक हर लई ताही हेरकैं।
कछु व्याह मैं जिह विघन कीनौ फल सौ मति फेरकैं ॥२५८
वँह विप्र की तीय व्याहता इह हरन कीनी हेर सौं।
दँ गये कांनौ जात दुज वसुधापती जिह वेर सौं॥
कह दई वातैं कँवर की सुन अरुन कीय सुत सासना।
सतवृत्त[१] दीनौ नांम सोई तैं भलै कीनौ भासना ॥२५९
कढ जाहु मेरै राज सौ कहुरे कपूत रिसायकैं।
द्रग देख मोकौं होत दुख दुज-द्रोह कौं दरसायकै॥
सतवृत्त पितु सौं कह्यौ सुनकैं कहां जाहूँ कोन पै।
जव अरुन वोले जाहु तुम जहां जातऊँ मन जोन पै ॥२६०
तीय हरी विप्रन की तुही कीय सुपच-कर्महु कारना।
रुच सुपच-जातन संग रहीयै धार नीची धारना॥
सुन पिता सासन स्रवन सौ कढ दूर देस गयौ कितैं।
सँग डूंमडन के रहत सतवृत वेस आयुस कौं वितै ॥२६१
धनुवांन ककट करै धारन विचरनैं लागे वँही।
वासष्ट मति सौं देस-वाहर कढे जिह वातै कही॥
वासिष्ट ऊपर सत्तवृतहू अमित धारै आंमनौ।
दस-विदस[२] हू डोलत रहै दिखराय भेख डरावनौ ॥२६२
पितु अरुन सुत हित हरन प्राछत करन तपस्या वन कढे।
सतव्रित्त पाय अवर्म सुरपत वूंद जल की नह वढे॥
दुरभिक्ष परेऊ दिगत लौं वँह वार गत भय औरहू।
मुनिराज विस्वामित्र नैं चाले सु निज त्रीय छोरहू ॥२६३
नद कौसकी पैं जाय निर्भय करेऊ तप की कारना।
आसन लगाय अडग ह्वै ध्रुव-ध्यान धारी धारना॥
मुनि तीया पालन कुटम कौं असमर्थ ह्वै अकुलायकैं।
मुनि-आस्रमन मांगन लगी जहां-तहां सुत-जुत जायकै ॥२६४
नव-वर्ष लग दुरभिक्ष निवहन त्रसत भय कौंसक त्रीया।
गुन डार मझलै सुत-गलै वँह गई करनै विक्रीया॥

१ मू प्र सतवृत। २ देश-विदेश।

सुन रुदन बालक सत्तवृत मग विपन जावत मैं मिल्यौ ।
पूछी सु मुनि की त्रीया-प्रत कछु तोहि हीय नहि कलमल्यौ ॥२६५
कहि सुतन है इह कोन कौ दारा सु कोनैं निरदई ।
चिललात बालक लैचली गल-डारकै गुन गहि रही ॥
तीय कह्यौ मैं गाधेय-तरुनी सुतन मो मुनि सभवा ।
मम सहित सबही भूख मारे डुलैं जित-तित डिभवा ॥२६६
पति गये तपसा करन परहर हम न कीनी हेर कौ ।
सिसु वेचकैं वित लेय साटैं दिनन काटहुँ देर कौ ॥
इह सुनत सतवृत दया उपजी कह्यौ मुनि तीय कारना[1] ।
गुन छोरीयैं गलवध की वय बाल सहित विचारना ॥२६७
निरवाह करहै जीवका नित जो कहूँ सरधा जिती ।
आस्रम बतावहु आपनौ थिर रहहु तुम ताही थिती ॥
मुनि-त्रीया आस्रम आय मिलकैं जोय लीनी जाग[2] कौं ।
इक वृक्ष की कह दीन याकौं पलल भक्षन पायकौं ॥२६८
नित आय लेवहु नेम सौं इहाँ मेल जावँहु आयकैं ।
सुत सहित भोजन करहु सुकीया पर्मआँनँद पायकैं ॥
कहि सत्तवृत गये कतरा दिन-अतरा नित देखकैं ।
वाराह मृघ कौं मारवे वन लगेऊ निज पन लेखकैं ॥२६९
निरवाह मुनि की त्रीया नित-प्रत मस लावत मृघन कौं ।
सोइ बाँध जावत निकट आस्रम लाय ध्रम की लगन सौं ॥
माहारिखी विस्वामित्र के सुत पोख पावत पालना ।
मृघमस चिक्कन भूँज मिलवत सुभग पावत सालना ॥२७०
गल-रसी डारी मात गालव कहत याही नाँम कौं ।
मुनि भये सोई सुक्रती मति करन तपसा कॉम कौं ॥
सतवृत्त राजकुमार समृथ चले कवमल छोरकैं ।
हुय गये साँमल हिंसकन कैं भ्रमत साँझहु भौरकैं ॥२७१
वासष्ट-मति सौं पाय विपता जाहि कारन जाँनीयैं ।
इह विप्र-जातिन आँमना परीआय रीत पिछाँनीयैं ॥

---

१ मू० प्र० कारनै । २ स्थान ।

पुन होय नाँहिन सतपदी स्त्री विप्र की नहीं ह्वै सकै।
कुल-रीत जवलौ कन्यका अवगाह कै सवही अखै ॥२७२
सतपदी पहलै हरी सतव्रत वेख कन्या वालका।
द्विज-जात को गनीयैं न दोखी न्यावतावैं नालका[1] ॥
वेता सु सास्त्र वसिष्ट द्विज-वर, धर्मरीत-धुरधरा।
राजा सुनाई नाँहि रीती पेख वात परंपरा ॥२७३
इह जाँन राजकुमार इनपै रोख कर भ्रमते रहे।
वन मैं न कोऊ मृग मिल्यौ परवस दुखद खुध्या[2] होय-दहे ॥
वासष्ट की लख गऊ वन मैं हयन कीनी हाथ सौं।
वँह लेय आमख मुनी-आस्रम व ध तरू भरवाय सौं ॥२७४
तीय मुनी कौसक ताहि को पुत्रन खवायौ पायकैं।
वासष्ट सुनकै आय वँह विक्रीया दीनीय वायकैं ॥
त्रीय विप्र की तैं हरी तस्कर पिता क्रोध पिरायकैं।
पुन गऊ मारी तीन पातक येकठे कीय आयकै ॥२७५
त्रय-संक तेरे भई तन सौं तोहि नाँम त्रसक है।
पापी पिसाच प्रभाव सौं कुल सूर कौ जु कलंक है ॥
सतवृत्त नाँम् त्रसक ह्वै सोइ उर ससक अभाव सौं।
अत निकट कौसक मुनी आस्रम भगवती हित-भाव सौं ॥२७६
तप करत अरू जप जाँन तीरथ धर्म-प्रक्रत[3] पेम सौं।
उपदेस द्विज द्रढ धार आसन निव्वहै निज नेम सौं ॥
मनसा नवाक्षर मंत्र कौ जप कर्यौ वहु विध जोग सौं।
जाचे सु विप्रन जोरकै कर अघ मिटावन ओघ सौं ॥२७७
कछु मोहि हवन कराइयं अव दसम अम उछाह सौं।
सिध होय कारज मोर सव पर्मार्थ पुन्य-प्रवाह सौं ॥
कथ कही राजकुमार कौं जन जेष्टवरन[4] जतायकै।
गरू-स्राप सौं पैसाँच गत कौ लई अघ-पद लायकै ॥२७८
करता वही तुम होम-कारज धोम आहुत धेय कौ।
अधकार वेद न आपको स्रुत सुनन कौं अरू सेय कौं ॥

---

१ परम्परागत रीति। २ भूख। ३ गायत्री। ४ ब्राह्मण।

इह राजपुत्र उदत्त सुनकै अमित-सोच उदासकै।
मन भयौ व्याकुल मोह निर्मत वीच मैं वनवासकै ।।२७९
तव त्याग आसा आप तन की चिता भूमी छायकै।
प्रज्वलत करकै जहाँ पावक जारनै तन जायकै ।।
जिह जाप कीनों जगत-जननी याद करकै अतकौ।
परवेस करनै राजपुत्रहु तक्यौ जाहू ततकौ ।।२८०
हित जाँन जननी सुजन हीय कौ दयौ दरसन द्रगन कौ।
पुन कह्यौ तिह परचायकै अब करहु टारी अगन कौं ।।
भये पिता तेरे वृद्ध भूपत वैग तोहि बुलवायगे।
सव राजधाँनी सौंप कै जाप करन कौं वन जायगें ।।२८१
थिर होय रहहु इहीं थाँनक दूत आवत देखनै।
हम सत्यवाचा कहत हैं हित सत्यवृत सविसेखनै ।।
कर स्तुत तिह जय-जय कह्यौ श्री जगत-जनन सिवायगी।
परतीत लाय पवित्र ह्वै त्रित वेल आनँद छायगी ।।२८२

दोहा

कथा देख नारद कही, अरुन भूप सौं आय।
सत्यवृत तेरौ सुवन, भोगत दुख वहु भाय ।।२८३
दरसन श्रीदेवी दयौ, भयौ पवित्र भुवाल।
वनसौं ग्रेह वुलायकै, क्यौं नहो होत क्रपाल ।।२८४

छंद मोतीदाम

सुनी कथ नारद की नृप साँन, विचारकै देवीय कौ वरदाँन।
निदाँन कौ जाँन भयौ निकलंक, तनै वुलवावन काज असंक ।।२८५
कही सब मंत्रिन कौं इह कथ्थ, सबै विध लायक है मतवृत्त।
करचौ हम सासन जास करूर, सँभार कै सीस कै ऊपर सूर ।।२८६
विपत्त मैं डोलत है वनवास, इही सुत करन चित्त उदास।
वुलावहु ताहीय कौं इह वेर, करचौ निकलंकत देवीय केर ।।२८७
जोई सुत राजसिंघासन-जोग, लहै सुख राज प्रजा सब लोग।
सुने नृप वायक मंत्रिन साथ, मनावन चाल नमायकै माथ ।।२८८

पहूँचेऊ जाय त्रसकु के पास, अमातन साथ करी अरदास ।
बुलावत राज-पिता सुविचार, करी अवलंब न राजकुमार ॥२८९
विचारकै देवीय कौ वरदाँन, चल्यौ संग मंत्रिन कौं पहिचाँन ।
अमातहू औधपुरी बिच आय, मनाय कै भूपत दीन मिलाय ॥२९०
पिता पग पुत्र करे परनाँम[1], लयौ उर लायकै लाल ललाँम ।
महाकृस गात दकूल मलीन, रहे जट-जूट कसैं रसरीन[2] ॥२९१
कह्यौ सुत देखकै लोचन वार, पिता पिछ्नायकै किन्नेऊ प्यार ।
करयौ करतव्य अजाँन करूर, दिसंतर दीन निकारीय दूर ॥२९२
क्षमा करीयै सुत मोकँहू खूँन[3], इहै दिन फेर भई मति ऊँन ।
करी पितु वीनती राजकुमार, भरे हम औगुन के अघभार ॥२९३
खिमा कर माफ करे सुत खूँन, दया पितु राज विचारकै दून ।
इही हम माँनत है उपकार, सनातन मात-पिता सुविचार ॥२९४
मंगायकै दूसर आसन मेल, भुकायकै हाथन वाँहन झेल ।
नजीक कौ बैठक दीन नरेस, अनूपम दैन लग्यौ उपदेस ॥२९५
प्रजाकहु पालन नीत प्रमाँन, लहै वट न्याय की रीत निदाँन ।
करै नहि भूट सौं कोय कथन्न, सदा सत सील रहै सुप्रसन्न ॥२९६
कुमारग-गाँमीय पै कर क्रुद्ध, निवारन कारन काज निसिद्ध ।
दिवावत क्रूरन चोरन दंड, पराक्रम ताहि दिखाय प्रचंड ॥२९७
करै वस इंद्रीय कौं तज काँम, गहै नहि लोलुप ह्वै सुखग्राँम ।
सपुत्र कौ काज लहै हित सिद्ध, सुमित्रन मंत्र विचार सनिद्ध ॥२९८
अकारज कारज चिंत इकंत, मिलायकै गूढ रखै निज मंत ।
लघू जिह वैरीय कौ वड लेख, दहै तिह च्यार उपायन द्वेख ॥२९९
करै कोऊ भेद की वात कुमित, वँही लख आपसौं राखीये अंत[4] ।
पिछाँन कै हेरक चातुर पूर, दसू-दिस वात मँगावहि दूर ॥३००
अरिष्टहु इष्ट विचार अरथ्थ, सुकारज और अकारज सथ्थ ।
करै हित आपनौ जाँनकै काँम, विचारकै लावहि नाँहि विराँम ॥३०१
निरथ्थक-वाद तजै कर नेम, जथा कछु वात करै नय जेम ।
सबै नही वंचक दुष्टन संग, रचै नही नारन कौ बहु रंग ॥३०२

१ प्रणाम। २ रस्सियों। ३ अपराध। ४ अन्तर=दूर।

परायन पाप जुआ मदपाँन, तजै सुख राग-तरगन-ताँन ।
कुनारीय वारवधू कुटनीन, पराइय नार तजै परवीन ।।३०३
करै जन और निवारन कार, करायकै दडहु कौल-करार ।
क्षिपा[1] जव च्यार घटी रहै सेस, वतावत ब्रह्म-महूरत्त वेस ।।३०४
नहावत्त लायकै ऊत्तम नीर, सुधारत अँवर स्वच्छ सरीर ।
परावका-पूजन ध्याँन पुनीत, करै विध वेद सौ अस्तुत क्रीत ।।३०५
वढै धन-धाँनहू सतति चित्त, पदारथ च्यार लहै परवृत्त ।
गहै चरनोदकहू जुत ग्याँन, मिटै गृभवास कौ दुःख महाँन ।।३०६
जिते द्विज वेद-परायन जाहि, वसायकै आदर धाँम बुलाय ।
सुभासन ताहि करै सनमाँन, दीयै गऊ सोवृनहू अन[2] दाँन ।।३०७
दुजन्मन जाँनहु भूमपै देव, सदा सुभदायक ताकँहु सेव ।
वतायकै राज की नीत विसेख, कँवारकै भूप करयौ अभिषेक ।।३०८
गयौ तट गग सोई तज ग्रेह, दई हित आप ऊधारन देह ।
करी सग राँनीय सेवन-काज, सवै सतवृत्त कौं सूँप समाज ।।३०९
करयौ तप-साधन त्याग कै काय, जम्यौ सोई इद्रपुरी विच जाय ।
जमाय कै राज त्रसक जमीन, पराक्रम जाहि प्रचारीय पीन ।।३१०
वसष्टहु आय मिले तज वक, तप्यौ धर छत्र नरेस भसक ।
करे जिग होम जथा करतूत, सवै विध सूरज-वस सपूत ।।३११
हितू जग पूत भयौ हरचद, उहा सत माँनहु पूरन इदु ।
सवै सुभ लच्छन जाहि सरीर, विचच्छन काज महा[3] वरवीर ।।३१२
विसारद वेद की रीत विधाँन, जिही सुखदायक लायक जाँन ।
करयौ जुवराज तिही अभिषेक, दुजन्मन जोर महूरथ देख ।।३१३
धुरधर जाय वसिष्ट के धाँम, पदावुज कीन गरू-परनाँम ।
कही करजोरकै भूपत कथ्य, सनातन आद गरू समरथ्थ ।।३१४
अमाँनुप-भोग सुरालय येह, दिखावहु आनँद मानुखी-देह ।
करावहु जग्य तथा जप कोय, मुनीसुर लोक वसावहु मोहि ।।३१५
डरावत मृत्यु भयकर दोख, मृतु विन चाहत है हम मोख[4] ।
भली विध देवन भोगहि भोग, अमीरस पाँन सौ होय अरोग ।।३१६

१ रात्रि । २ अन्न । मू प्र. माहा । ४ मोक्ष ।

विलव न कीजीयै वेद विचार, ग्रहो अभिरूप करौ उपचार ।
विचारकै उत्तर दीन वसिष्ट, इहै तुम भाखत वात अनिष्ट ॥३१७
ग्रहो तन मांनव कर्म अधीन, परायन पुन्य गये परधीन ।
वसे मृतु होयकै देवन-वास, अनांद सौं नेम इही अविनास ॥३१८
वसिष्ट की वात सुनी होय वक, तमोगुन पायकै वोल अगक ।
भरे रिस मो-हीय पै सोइ भाव, अजौं नही जांनत ताहि अभाव ॥३१९
तज्यौ अहकार न कारन ताहि, पुरोहित और के पुज्जहि पाय ।
करावहि जिग्य हमै करतव्व, सनांतन मांनहि ताकँहु सम्य ॥३२०
सुरालय जावहि सुक्रत साथ, विचारकै वर्धांन कह्यौ गरू वात ।
सुनी इह भूप की वात वसिष्ट, तपायकै[1] श्राप दयौ पुन तिष्ट ॥३२१
भयौ निकलक रह्यौ तऊ भाव, पिसाच की वृत्र गह्यौ परभाव ।
हरी तीय विप्र करी गऊ हांनि, महा अघगांमीय नीच महांन ॥३२२
भयौ जग जाहर मै मति भड, दिखावत जोग महा जम दड ।
चहै सुरलोक के भोग चिरत्र, इहै तन मांनव सौं अपवित्र ॥३२३
भये मृतु पै न मिलै सुख-भोग, अनेकन कांम करे अनजोग ।
पराक्रम पायकै होहु पिसाच, वसिष्ट के साच सुनौ इह वाच ॥३२४
दयौ फिर श्राप गयौ नृप दूर, धरी उर आस मिली सोइ धूर ।
गही तव फेर वँही दुरगध, सरीर की नासत होय सुगंध ॥३२५
सुवर्न के कुडल मडत स्रांन, प्रभाहृथ होगये सोय पखांन ।
थई गज-चर्म ज्युही छवि थूल, घसी सुच वास मलांनीय धूल ॥३२६
वनी तन-आक्रतहू विपरीत, भरे अघ-भार भये भयभीत ।
गये गृह कौ न करयौ वन-गांन, सरूप कौ धार पिसाच समांन ॥३२७
कुटी तट गग महीपत कीन, दसा दुखदायक सौं भये दीन ।
सुनी हरचदहु वात सपुत्र, तहां सव मत्रिन भेजेऊ तत्र ॥३२८
कहे तिह जायकै भूप कथन्न, इकत मै वैठ भये अप्रछन्न ।
सरापत[2] होगये और सरूप, रहे तऊ पुत्र के तीरथ-रूप ॥३२९
पधारहु औधपुरी सुत-पेम, निभावहु सासन सजुत नेम ।
संबोधन मत्रिन कौ कर साथ, निवेदन किन्नीय कोसलनाथ ॥३३०

---

१ क्रोधित होकर । २ शापित ।

सुनी हरचद की वात सलाह, इहै हीय फेर कही अवगाह।
हित्तू सुत मेर महा[1] हरचद, समै इह मोर विचारीय सध ।।३३१

दोहा

गायत्रीजप–निष्ट गरू, दीनौ श्राप दुरत।
भोग करहुँगौ भागवस, अवधपुरी सौ अत ।।३३२
पुत्र मोर हरचद प्रीय, करहु राज-अभिषेक।
आवहुँगौ नही मै अवध, व्रपु चंडाल कर वेख ।।३३३
करहु राज-कारज कुसल, सव मन्त्रिन कौ साथ।
मो सुत अरू मेरै मँही, गनहु न दूसर गाथ ।।३३४

छंद त्रौटक

सुन भूप त्रसंक के सासन कौ, सव मत्रीय थाप सिघासन कौ।
कीय चचक भाल कुमारह कै, भुज ताहि धरयौ रज-भारह कै ।।३३५
हरचद कौं देख प्रजा हरखी, वरखा अवग्राह[2] मनौ वरखी।
उत भूप त्रिसक इकंत मही, तप-साधन लागेऊ ठौर तही ।।३३६
परवीन अराधन सक्तिपरा, जप मै वपु जोग जमाय जुरा।
मुनि कौसक केतक काल मंही, तप साधकै आयेऊ धाँम तही ।।३३७
महिला जुत पुत्रन आय मिले, दोऊ ओर वियोग कौ दु'ख दले।
कहनै कँह लागेऊ वीती कथा, जुत पुत्रन नारीय देख जथा ।।३३८
तप नेम करयौ पँहिलै तनकौ, इतनै मँह काल परयौ अनकौ।
पराजा वस भूख पिरावन मै, खिन कंद लगे फल खावन मै ।।३४६
हम भूख विजोग विहाल भये, नहि फूल मिले कद मूल नये।
विभुखा[3] जव काजल-कोर वढी, चित आय अनर्थ की वात चढी ।।३४०
चलकै हमहू गये चोरीय सौं, जव जाय चडालय जोरीय सौ।
भरकै लख हाँडीय भोजन की, पल पूरन सिद्ध प्रयोजन की ।।३४१
कवका[4] हम लेन लगे-कर मै, घर कौ धनी जाग उठ्यौ घर मै।
सोइ वेल[5] कह्यौ हमसौ सुपचा, पहिचाँनहु कुक्कुर-मांस पचा ।।३४२

---

१ मू. प्र. माहा। २ दुर्भिक्ष। ३ विभुक्षा=भूख। ४ ग्रास=निवाला। ५ समय।

कुन हौं तुम चाहत भक्ष करा, पुन दोष न दीजीयै मोहि परा ।
वच बोल उठे हम ब्रांमन है, भय भूख-ग्रसे मति भ्रांमन हैं ।।३४३
कछु सुक्षम धर्म की रीत कहै, गनकै हमहूँ वँह नीत गहै ।
मुनि भाखत आपतकाल मही, निरनै जिह मेघ अमेघ नही ।।३४४
तन राखीयै जाहीय ताहीय सौं, कछु दोष लगै नही काहीय सौं ।
मँडकै वरखात न मेघ मही, इहतौ हम जांनत दोष वँही ।।३४५
मुख बोल कहे हम आप मतै, जुरकै नभ-छायेऊ मेघ जितै ।
गज-सूड़ ज्यूंही जलधार गिरी, वरखै-वरखा चमकै-विजुरी ।।३४६
तिह देख चंडाल की ग्रेह तज्यौ, अत आनँद आय हृदै उपज्यौ ।
भर मोद सवै विध भूख भगी, ललचाय सुधर्म की चाहि लगी ।।३४७
धुन पूरव राख लयौ पन[1] कौं, तिह तै नही दोख लग्यौ तन कौं ।
हमरी गत येह भई महिला, परकास करी तुम मौं पहिला ।।३४८
तुमही कहीयै कछु वात तीया, हित वालक सौं हहरात हीया ।
सुन वात इहै पति की सवही, तज व्याज लगी कहनै तवही ।।३४६
तप कौं कर नेम गये तुम तौ, हित पुत्रन ग्रेह रही हम तौ ।
अन-काल परचौ इतनै अरसै, इहकाय रही विमुखा डर सै ।।३५०
कद-मूल मिले नँही फूल-कली, फिरती रही खोजन-काज फली ।
निरवाह कौं नांहि लख्यौ निरनौ, सुत कौं न मिल्यौ कितहूँ सरनौ ।।३५१
गहि पुत्र कौ वेचन काज गई, रसरी गल डारकै मार रही ।
चिललावत वालक लार[2] चल्यौ, मग मै इक राजकुमार मिल्यौ ।।३५२
पुन बोल कह्यौ तुम को प्रमुदा, मोहि साच वतावहु वाच मुदा ।
सतवृत्त हमारो है नाम सही, गँनीयै कुल छत्रीय-जात गृही ।।३५३
दुख वाल कौ देख कै आत दया, तुमकौं इह पूछत वात तया ।
छिन होय गई मीयरी छतीयां, वहुरै हम ताहि कही वतीयां ।।३५४
रिखी कौंसक की सुनीयै रमनी, गहि वालक वेचन कौ गमनी ।
तप-साधन कौं तीय छोर तनै, सोइ चालगये न मिले सुपनै ।।३५५
हठ पाहन सद्रम कीन हीया, सिसु वेचत काल लखै समीयां ।
सतवृत्त कह्यौ प्रवृती सुनकै, मत वेचहु वालक है सुनकै ।।३५६

---
१ प्रण । २ पीछे ।

पल-भक्षन कौं हम नित्य प्रतै, तुम देवहिगे दुरभिक्ष तितै ।
बिसवास जिहीं गृह आय वसी, दुरभिक्ष की आँच[1] नही दरसी ।।३५७
इक द्योस कुमार अहेरन[2] मैं, मृघ सूकर नाँहि मिले वन मैं ।
हठ पाय वसिष्ट की गाय हनी, कर क्रोध कौं श्राप दयौ कुहनी ।।३५८
धुर ताही कौ नाम त्रसक धरयौ, कऊमार कौ रूप चंडाल करयौ ।
भर दोख फिरै भटक्यौ-भटक्यौ, सुख औधपुरी तजकै सटक्यौ ।।३५९
हमरे हित सौं अपराध हुवा, जिह दोस तैं आपहु नाँहि जुवा ।
अघरूप छुरावहु औगुन कौं, गुनही पै करौ तुम ही गुन कौं ।।३६०
मुनि कौसक वात सुनी प्रमुदा, जव वोल कह्यौ हम नाँहि जुदा ।
गरूकर्म तथा तप की गत मौं, मल राज मिटावहिगे मति सौ ।।३६१
त्रीय पुत्र सँवोव चले तपसी, दुख मेटन काज त्रसक दिसी ।
मुनिराज नरेस सौं जाय मिले, झुककै दोऊ हाथन पाँय झिले ।।३६२
दुज उत्तँम आसरीवाद दयौ, नमकै सिर भूप चढाय लयौ ।
कुसलात कौं पूछ मुनिंद्र कह्यौ, हमरे हित मौं तुम स्राप लयौ ।।३६३
अव माँगीयै जो कछु इछत है, वरदाँन लहौ मन-वचत है ।
कर जोर कै भूप त्रसक कही, उरमैं अभिलाख है येक इही ।।३६४
वपु माँनव सौं सुरलोक वसूं, वहु देवन के सुख कौं विलसूं ।
मुनिराज कृपाल ह्वै देहु मती, समरथ्थ सहाय करौ सुक्रती ।। ३६५
जिग जाप करावहु कोय जथा, करनी जुत उत्तँम पाठ कथा ।
नृप कौसक वात सुन्यौ निरनै, ऋतु-हेत विचार लगे करनै ।।३६६
सव वस्तु मँगायकै जाहि समै, जिग[3] कारन किन्नीय सोधजमै ।
दुजजात निमत्रन फेर दयौ, ऋतु रोकन काज वसिष्ट कह्यौ ।।३६७
भुवदेव सु मत्रन के भरता, कोऊ आये नही जिग के करता ।
मुन कौसक जाँन वसष्ट मतौं, छस भूपत सौं कर दीन छतौं ।।३६८
उर होय ससक त्रसक इतै, तपसी मुनि कौसक वोल तितै ।
मत होवहु भूप उदास मना, गृह देवन कै करीयै गवना ।।३६९
तवही जल हाथ मैं लीन तही, जप मात इकाक्षरी कीन जही ।
करनी तप जाहि सकलप करयौ, अघगाँमीय भूपत कौ उधरयौ ।।३७०

---

१ अग्नि, प्रभाव । २ शिकार । ३ यज्ञ ।

उड चालेऊ सोय सुरालय कौं, भर मोद सो त्याग सबै भय कौं।
पहुँच्यौ सोई जायकै इद्रपुरी, कोउ देवन इद्र पुकार करी ।।३७१
वपु वेख चँडाल बनावट कौ, इक आवत है जिनकौं अटकौ।
पुरहुत कह्यौ सतवृत्त-प्रतै, कलि-रूप अहो नृप जात कितै ।।३७२
निज पत्तन मैं कोऊ धाम नही, तुम वास करावहि जा गत ही।
तिहतै फिर जावहु भूतल मै, थिन देवपुरी न रहौ थल मैं ।।३७३
इतनी कथ इद्र मुखा उचरचौ, अवधेस त्रसक अधो उतरचौ।
रिखी कौसक-कौसक बोल रह्यौ, वहुरै हम भूतल आत वह्यौ ।।३७४
करीयै अब मोर सहाय कहू, दुख दीरघ पाप की आंच दहू।
थित होहु कह्यौ रिख थभन कौं, विच व्योम के पाय विस्त्र भन कौं ।।३७५
थिर होय रह्यौ जितही थित कौं, करनै रिखी लाग गये क्रतु कौं।
निपजावन[1] लागेऊ स्रष्ट नई, जप-जोग तथा तप-जोग जई ।।३७६
दनहै सुरलोकहु स्रष्ट वनै, मघवा कीय भूप त्रसक मनै।
वंह उत्तँम वास वसावहिगे, पुरहूत जबै पछतावहिगे ।।३७७
मुनिराज सिधत सुन्यौ मघवा, मुनि धाँम कौं ताँम लयौ मगवा।
विनती कर इद्र कहे वचना, रिखीराज नई न रचौ रचना ।।३७८
घट दिव्य करौ नृप एह धरी, पुन वास वसावहि देवपुरी।
विसवास कै वासव नै वरजा, रिखीराज त्रसकहु दीन रजा ।।३७९
तन होय पवित्र लयौ तवही, जोइ इद्र के साथ गयौ जवही।
मुनि कौसकहू मुद पाय महा, रुच पायकै आपने धांम रहा ।।३८०

दोहा

सुनी वात हरचद-सुत, पितु भये मोहि पवित्र।
सँदेही[2] पठये सुरग, मुनिवर त्रिसवामित्र ।।३८१
मुनिवर विसवामित्र कौं, उर समुझौ उपकार।
करत वडाई नित कहत, धन्यवाद निरधार ।।३८२
पितु कौ मिटचौ कलक पुन, गयौ इद्र-सग ग्रेह।
होय सुखी वाढचौ हरख, नृप हरचद निहेर ।।३८३

---

१ उत्पन्न। २ सदेह=सशरीर।

छंद मोतीदाम

भयी हरचद कै आनंद भौंन, गयौ सुरलोक पिता कर गौन।
करै रिख कौसक की नित क्रीत, गवावत मगल के पुन गीत ॥३८४
मिटी हीय छोभ[1] भयी मन-मोद, वढावत रांनीय राज विनोद।
विधोविध राचत भोग-विलास, उपज्जीय अगज की उर आस ॥३८५
वसिष्ट कौ वूझन काज विचार, नरेस्वर धाँम गये निरधार।
निवेदन सजुत वोल नरेस, अहो गरूराज करौ उपदेस ॥३८६
विना सुत मुक्त न होय वरिष्ट, इहै हम सिद्ध करौ तुम इष्ट।
गये गरू भूल रहे निज ग्रेह, सु होवत रावरै नाँहि सँदेह ॥३८७
मिटायकै संक कह्यौ हम मत, विचारहु जास ह्रदै वरतत।
करावहु जो कछु उत्तँम काँम, लहैं सुत सुंदररूप ललाँम ॥३८८
विचारकै वाँनीय वोल वसिष्ट, अराधहु यादपती[2] सुत ईष्ट।
सतांन की वृद्धिय-कारक सोय, कहै ईतीहास पुरांन सकोय ॥३८९
दहू पुरषारथ और दईव, समाँन ही जाँनीयै भूप सदीव।
अनाद सौ उद्यम आस्रत ईस, करै सिध कारज न्याय कहीस ॥३९०
सुनी गरूराज की वात सनद, हल्यौ तप-साधन कौं हरचन्द।
वस्यौ तट गग इकत मै वास, अरावन यादपती-सुत-आस ॥३९१
मिलायकै आसन पद्म महीस, अराधन लागेऊ पछ्छम-ईस[3]।
धरयौ उर-ध्यांन विसास कौं धार, परजन[4] नाँम प्रचार-प्रचार ॥३९२
भली विध जाँनकै पुत्र कौ भाव, दयौ नृप यादपती दरसाव।
कह्यौ अववेम कहौ कोऊ काज, विचारकै देवहिगे निरव्याज ॥३९३
जहाँ हरचद कह्यौ कर जोर, मिटावहु ऐव[5] अपुत्र-की मोर।
इहै मम वीनती माँनहु येक, सिवाय न मागत हूँ मविवेक ॥३९४
परजन भूप कह्यौ परचाय, तुमै सुत देवहुगे हम ताहि।
दिवावहु मोहीय कौं वलदाँन, विचार कै जग्य की रीत विधाँन ॥३९५
सुनी कथ यादपती सुविचार, करी पुन वातहू अगीयकार।
परजन पाय करार प्रधाँन, दयौ सुत होवन कौं वरदाँन ॥३९६

---

१ क्षोम। २, ३, ४, वरुण। ५ दोष।

तज्यौ तप भूत मिल्यौ निज तीय, लयव्या[1] राँनीय नाम सुकीय।
विवै मिल किन्नेऊ भोग-विलास, वस्यौ सुन ताहीय कै गृभवास ।।३९७
भये दस-मास भयौ सुत भूप, उपज्जीय आँनँद आय अनूप।
वधाई के वाजन लागेऊ वाज, सवै सुख राचत राज-समाज ।।३९८
महोछव[2] होय रहे चहु-मेर, वने द्विज यादपती जिह वेर।
विलव न कीन कह्यौ सुविचार, करचौ जिग ह्वैगये राजकुमार ।।३९९
जवै हरचंदहु भूप सुजाँन, प्रचेताय वीनती कीन प्रमाँन।
जुपै दस-द्यौस पिता सुत जोग, प्रसूतीय नारीय मास प्रयोग ।।४००
पवित्र न होय जितै प्रमुदाह, करे जिग कारन धारन वाह।
सुध्रम के जाँननहार सुग्याँन, वनै किह रीत सौ जग्य-विधाँन ।।४०१
वितै इक मास जितै पति-वार[3], सुधाँम कौं जावहु राज-सिधार।
गये जव यादपती कर गौन, भये सुख राज रहे निभ मौन ।।४०२
निहारकै द्रोनदुधा नव अग, सुवर्न मैं जाहि मढायेऊ सृग।
ज्युही खुर तार[4] मढे दुइ जोर, करी दत विप्रन गाय करोर ।।४०३
दये तिल-पर्वतहू केऊ दाँन, परायेऊ रोहित नाँम प्रधाँन।
भयौ जव पूरन मास सुभाय, इतै फिर वर्न पहुँच्यौ आय ।।४०४
करौ जिग फेर कह्यौ नृप केर, वुलावत मोकह वेर ही वेर।
ह्रदै वहु सोक भयौ हरचंद, फस्यौ दहु ओर सौ दुख के फद ।।४०५
करी तऊ वीनती जोर करग्ग, विचारकै कारन कौ पसुवग्ग[5]।
जमै नही दत जहाँ लग जोय, करै वलिदाँन पसू नही कोय ।।४०६
इहै सिसु दंतन ऊगेउ आय, नही वलिदाँन के लायक न्याय।
विचारकै सोचहु नैक विवेक, परजन राज दयाल प्रवेक ।।४०७
गये जव यादपती निज ग्रेह, दया कर भूपकौं आसिप देह।
विते दिन केतक औध विताय, उगे मुख दतहु रोहित आय ।।४०८
परजन विप्र कौ वेख प्रचार, दिखायेऊ आवत राज-दवार[6]।
जुहारकै जाचना किन्नीय ज्याग, अहो नृप पुत्र तजौ अनुराग ।।४०९
वुलावत मोही कौं वारमवार, प्रतग्या क्यो न करौ अव पार।
करी सुन वीनती भूप कृतग्य, अहो कहा यादपती भये अग्य ।।४१०

१ शैव्या। २ महोत्सव। ३ वरुण। ४ चाँदी। ५ पशुवर्ग या कोटि। ६ द्वार।

करे नहीं दूरहु गर्भ के केस, सिसू किह रीत सौ मागत सेस।
करावहि मुंडन राजकुमार, लहौ वलिदाँन न देर लिगार ॥४११
परजन कीन विदा परचाय, भयौ उर आँनँद भूप सुभाय।
केऊ दिन वीतत मुंडन कीन, प्रचेताय आयेऊ पौरुख पीन ॥४१२
करावहु जग्य कह्यौ कर क्रुद्ध, सवै विध वाल भयौ इह सुद्ध।
सुनायकै वोलेऊ भूप सँदेह, अजाँनही वाल भयौ सुध येह ॥४१३
त्रवर्न कौ धर्म न जाँनत तात, जमै जिह वेर सौं सुद्रही जात।
करै जवलौ न अहो वटुकर्न[1], वनै नही व्रांमन खत्रीय-धर्न ॥४१४
कह्यौ क्रम वैस्यहु कौ करनीय, जथारथ सोच विचारहु जीय।
भयौ सिसु नाँहिन क्षत्रीय-भाव, करौ वलदांन न जग्य कहाव ॥४१५
जनेऊ कौ धारन कारन जाँन, सिधायकै वर्न गये सुसथाँन।
वढ्यौ सिसु वीतेऊ ग्यारह वर्ष, करयौ उपनय[2] जिही उतकर्ष ॥४१६
विचारकै आय गये तँही वर्न, करयौ नृप अंगज कौं वटुकर्न।
हुवौ जिह चित्त जवै हरचंद, निरधर काज सौ औध-नरिंद ॥४१७

दोहा

कह्यौ वरुन नृप कीजीयै, जिग-सामग्री जोर।
आँनाकीनी करत अव, कर-कर वात करोर ॥४१८
राजा वोल्यौ रहँस सौं, त्यारी जग्य तमाँम।
सहँसकार[3] कछु रहेउ सुत, करन-जोग सोई काँम ॥४१९
कर्म जनेऊ दैन कीय, दया आपसौ देव।
दोख छुटयौ वधत्व द्रढ, सो प्रभाव तुम सेव ॥४२०
निगम कहत उपनयन सौं, मास पष्टमै माहि।
होय समावर्तनहु हित, करन देहु सुव काय ॥४२१
देहु पुत्र वलिदाँन मैं, करकै जग्य क्रतग्य।
ऊरन होवहु आपसौं, सुनहु देव सरवग्य ॥४२२
गये वरुन करकै गमन, सुन स्राँनन सौ संध।
भूप रह्यौ निज भवन मै, उर उपजाय अनंद ॥४२३

१ यज्ञोपवीत। २ उपनयन-संस्कार=यज्ञोपवीत। ३ संस्कार।

षष्ट मास गये खेम सौं, बीतत लगी न वार।
काज समावर्तन करन, लागेऊ ह्वै लाचार ॥४२४
आवत-जावत अवध मै, वरुन लखे केऊ वार।
पितु कौ लख्यौ उदास पुन, रोहित राजकँवार ॥४२५
पूंछन लागौ जन-प्रतै, किहु कारन कहदीन।
भागौ सुत भयभीत ह्वै, निपजी वात नवीन ॥४२६
वहुरै इत आये वरुन, जिग्य करावन जात।
बोल्यौ राजा वरुन सौं, तुमहि दोस नहि तात ॥४२७
भाग्यौ सुत मो भाग सौं, जीव छिपाय जरूर।
पाई खवर न तिह प्रतै, देस दिसतर[1] दूर ॥४२८
कहौ आप जैसी करू, लेख करचौ लाचार।
करनी मेरे करम की, है को मेटन-हार ॥४२९
कह्यौ वरुन मुनीयै कुटल, बार बुलाय विचार।
करचौ मोर उपहास क्रम, धरम तोहि धिक्कार ॥४३०
आमय[2] ह्वै है उदर मै, पूर जलोदर पाप।
द्रोही तेरै दोष कौं, सीस चढावहु स्राप ॥४३१

छंद मोतीदाम

गये कहि यादपती निज ग्रेह, दुरतर रोग भयौ नृप-देह।
जही दुख भोगत आठहु-जाँम, नही सुख खावन कौ कछु नाँम ॥४३२
भयौ अनुवछ्छर भोगत भीत, मुनी सुत रोहित वात मचीत।
चल्यौ मिलनेकह कतर छोर, दुजन्म के वेख पुरदर दौर ॥४३३
मिले मग रोक दई तिह मत, विचारहु कालही कौ वरतत।
भरचौ पितु आपने औगुन भार, करै वलिदाँन कौं राजकुमार ॥४३४
विचारहु नीत कै साथ विवेक, विसासँ न रोगी कौ सग विमेक।
जिही विध राखहै आपनौ जीव, करै निज अर्थ अनर्थ कलीव[3] ॥४३५
मरै जब जावहु राज मुकाँम, धरोहर लेहु धरा धन धाँम।
सुनी दुज क्रतँम इद्र मलाह, रह्यौ रुक जावन सौं घर राह ॥४३६

---

१ देश-देशान्तर। २ रोग। ३ क्लीव।

रह्यौ वन बीच सोई पग रोप, गही गिर-किंदर कौं मति गोप।
मनोरथ कीनेऊ फेर मिलांन, मिले मग आय ज्युं ही मघवांन ।।४३७
विनास कों भूप लख्यौ वरतत, मिले कुल-प्रोहित सौ कीय मत।
वसिष्टहु आंनीय वीतत वात, घली जजुमांन के ऊपर घात ।।४३८
कही गरू मंत्र विचारके कथ्य, अहो नृप भूल भये असमथ्थ।
कह्यौ मनु-नीत मैं पुत्रहू क्रीत, वसावहु मोलको दे कछु वीत[1] ।।४३९
जही वलीदांन करौ रच ज्याग, भरोसौ राखहु आपने भाग।
गयौ सुत ताहि कौं कोन गुनाह, रखै जीय आपनौ अपनी राह ।।४४०
सुन्यौ गरू-बोध भयौ सुप्रसन्न, कह्यौ सोई मत्रन बोल कथन्न।
विचारकै मंत्रिन मत्र विसेस, दिसा-विदसांन चले विच देस ।।४४१
अकिंचन जाहि मिल्यौ द्रुज येक, वसै अजिगर्त सु नांम विसेक।
जिही सुत तीन सुनी कथ जास, पहूंचेऊ धीमक[2] ताहीकै पास ।।४४२
कह्यौ तिह तीन मैं देवहु येक, दयै मत गाय अहो दुज देख।
जिही अजिगर्त कहेऊ जथाह, तुमैं सुत देवहि येक तथाह ।।४४३
बडौ सुन-पुच्छ न सक्कहि वेच, समापन याल करै जल-सेच।
सुनो लांगूल लघू सुविचार, परवै सोइ मात रखै-कर प्यार ।।४४४
तनै मझलौ सुनसेफ तिकोय, वसायकै वित्त सकाय विकोय[3]।
सुने कथ मत्रीय होय प्रसन्न, दई मत गाय सुमोल मैं दन्न ।।४४५
लयौ सुनसेफ कौं संग लगाय, पहूंचेऊ औधपुरी सुख पाय।
करयौ त्रिम हाजर दारक क्रीत, प्रचारेऊ जग्य को काज पुनीत ।।४४६
सतभ कौं बांध दयौ सुनसेफ, थितौ जिह बांधत है पसूथेफ।
गह्यौ जब कंपन लागेऊ गात, चहूं-दिस देखत औ चिललात ।।४४७
निसूदन-कारन दीन निदेस, उठे केऊ हिंसकहू अवसेस।
गये वध-कारन आय गिलांन, हटे दुज-बालक देखत हांन ।।४४८
दया-वस होय गये सब दीन, किहूं लख बालक घात न कीन।
सभासद देख करयौ नृप स्वाल, करौ करत्तव्य विचारकै काल ।।४४९
सभै चुप साध रहे सुन स्रांन, उठे अजिगर्त पिता सिसु आंन।
कह्यौ सब है धनवांन कुलीन, दरद्र मैं डूब रहे हम दीन ।।४५०

१ वित्त, धन। २ मंत्रीगण। ३ बेच सकते हैं।

अहो सत गाय दिवावहु और, तनी सुत कौ सिर डारहु तोर।
रजावँध होय कह्यौ महाराज, करी हित जाँनकैं पूरन काज ।।४५१
लहौ तुम मागत हौ सोइ लाभ, समापत कीजीयै जग्य सताव।
गहे जव आयुधहू अजिगर्त, सु अगज मारन किन्नीय सर्त ।।४५२
हल्यौ निज कारज सौं कर हेत, पिसाँचकैं घोर पडालहु प्रेत।
कह्यौ तिह जायन राख सकोय, लख्यौ भयभीत भजे सव लोय ।।४५३
सभा-विच होय कुलाहल सद्द, गमागम माचीय आहि गरद्द।
सुन्यौ इह अप्रीय वाँनीय-सोर, दयानिध आयेऊ कौसक दौर ।।४५४
अहो नृप विप्रकौ वालक येह, डरावत भीत मौं धूजत देह।
दया कर छोरीयै येह दयाल, परायन नीत करौ प्रतिपाल ।।४५५
पती पुरओघ त्रसक के पूत, कहैं हम सोय करौ करतूत।
पिता तुम होगये रूप पिसाच, सोइ सुरगीय भये गृहि साच ।।४५६
विलावहि आपही की तन-व्याध, अवै सिसु देहु न दुख अमाव।
इही जिग-जाचना माँगत आज, समापहु दाँनिन के सिरताज ।।४५७
कही वहु या विध कौसक कथ्थ, न माँनीय भूपत येक निरथ्थ[१]।
सवै विध कौसक वुद्ध सयाँन, गये सिसु-पास जवै कर गाँन ।।४५८
विसासकैं मत्र दयौ इकवर्न, करयौ सिसु जाप जँही सुखकर्न।
प्रगट्टेऊ यादपती सिसु-पास वढ्यौ जव जीवन कौ विसवास ।।४५९
सबै जन बोल उठे जय सद्द, निहसत ढोल नगारन नद्द।
महीपत आय करयौ परनाम, करौ मन-वचत पूरन काँम ।।४६०
छिपायकै जीव करयौ हम छद्म[२], छिमा सोइ कीजीयै जीवन सद्म।
लखैं जब दाँनीय लागत लार, वनीपक[३] दोख करै न विचार ।।४६१
मिलै नही पुत्र विना कहुँ मोख, दुरायकैं चित्त करयौ हम दोख।
वडप्पन राखहु आप विवेक, वसावहु नाँहि ह्रदै वितरेक ।।४६२
गयौ निज अगज कोनहु गैल, सरोवर ढूँढ लये वन सैल।
मिल्यौ नही क्रीत लयौ सुत मोल, करौ जिग आपकौ पायकै कौल ।।४६३
निवाजस कीजीयै लै वलीदाँन, दिवावहु मोहि अभै-पद दाँन।
कह्यौ मुन यादपती नृप-काज, रहौ निरव्याध सदाँ माहाराज ।।४६४

१ व्यर्थ। २ कपट। ३ याचक।

छुरावहु बालक बन्धन छोर, तज्यौ हस द्वेख विसेकत तोर।
निरामय[1] होहु इही निरधार, अहो हरिचंद नरिंद उदार ।।४६५

दोहा

सूंनसेफ जहा थभ सौं, छूटे बंधन छोर।
जिग्य संपूरन करेऊ जब, सुभग भयौ जय सोर ।।४६६
जुरे सभा-विच सभ्यजन, सूंनसेफ कीय प्रस्न।
कहहु पुत्र मै कौन कौ, साची कहहु सहिस्नु ।।४६७
सबही सभासद अत सुघर, बोले ताही बार।
अगज है अजिगर्त कौ, निरससय निरधार ।।४६८
बांमदेव बोले वचन, सुनहु सभासद साथ।
दयौ बेच अजिगर्त दुज, अरु पलटै लीय आथ[2] ।।४६९
है सुत इह हरचद नृप, अथवा वरुन ऊवेल।
कीनी ताकौ सुत कहहु, इह सिद्धान्त अपेल ।।४७०
भयत्राता अरु अन-भरन, देत जु विद्यादाँन।
न्याय कहत अरु नीत-वित[3], सब ये पिता समाँन ।।४७१
सबही कहत मयाँन सुन, पितु अजिगर्त प्रधाँन।
कोऊ राजा कोऊ वरुन कौ, पिता कहत पहिचाँन ।। ४७२
बोले जब वासिष्ट मुनि, निरनौ करकै न्याय।
सबही वेदवित अत सुघर, इह भाखत अन्याय ।।४७३
तज सनेह अजिगर्त सुत, बेच्यौ अर्थ बसाय।
तबही गयौ सबध तिह, निरनै समुझहु न्याय ।।४७४
क्रीत पुत्र हरचद कर, मारन कीनौ मत।
तबही गयौ सबध तिह, विखम बार वरतत ।।४७५
करी स्तुत जप मत्र कीय, अरू कीय वरुन ऊवार।
इष्ट स्याहि करता अवस, कहीयत विप्र-कुमार ।।४७६
मुनि हित विसवामित्र कौ, पुरखारथ अरू प्रेम।
जाही कौ सुत जाँनीयै, नाँहिन दूसर नेम ।।४७७

---

१ रोगरहित । २ अर्थ, धन । ३ नीतिवेत्ता ।

वचन सुने वासिष्ट के, नीत विसेसत न्याय।
बोले कोऊन विचारकै, सभा सुजन सरसाय ।।४७८
सूनसेफ दछछन सु कर, मुनि गहि विसवामित्र।
ग्रेह आपनै लै गये, प्रेम-परायन पुत्र ।।४७६
सभ्य गये रित्वक-सदन, वरुन गये निज वाम।
राजा अपने ग्रेह रहे, हित चित धार हुलास ।।४८०
कथा सुनी रोहित कँवर दूतन के मुख दूर।
पितु नृप भये निरोग पुन, प्रगट्यौ आँनँद पूर ।।४८१
निकट आय हरचद नृप, पगन करयौ परनाँम।
सीस सूघ पितु मिलेऊ सुत, धुन वाढी जय धाँम ।।४८२
मिल राजा सुत मत्रि-जुत, करन लगे निज काज।
राजसूय-जिग फिर रची, मति वसिष्ट महाराज ।।४८३
होता गरू वासिष्ट हुव, परसे जिनके पाव।
जिग सपूरन भयेऊ जव, पायेऊ पुज्ज-पसाव ।।४८४

छंद त्रोटक

गरू पुज्जत ह्वै सुरलोक गये, निध पाय वनायकै ठाट नये।
मुद लायकै इदर-मदर मं, उत कौसक आय इकदर मै ।।४८५
मिलकै कथ पूछ मुनिंदरहू, सवसेख कै वेख कौ सुनदर[1] हू।
पून कौसक पूछ वसिष्ट प्रतै, कहा पूजन पाये है येहु कितै ।।५८६
सुन बोलेऊ ताँम वसिष्ट सही, नृप काँन सुन्यौ हरचदन ही।
जजमाँन उदार करयौ जिग[2] कौं, पुन पुज्ज कहै हमरे पग कौं ।।४८७
उनकै सम दूसर कोन इला, करता दत कौसल सूर-कला।
हुव नाँहिन है फिर होवहिगे, गुन कीरत मै जिह गोवहिगे ।।४८८
सुन कौसक बोलेऊ ताहि समै, हित वात सुनावत कोन हमैं।
हरचद कौ वाप पिसाच हुवौ, जिनकौं लख ह्वैगयौ आप जुवौ ।।४८९
हम स्वर्ग पठायेऊ जाहीय कौं, गुन भूँल गयौ अवगाहीय कौं।
करकै करुना हम चाहि कह्यौ, दुज कौ सुत ताहि न छोर दयौ ।।४९०

---

१ सुन्दर। २ यज्ञ।

पन हारगयौ कर यादपती, वंह साथहु वात . करी अनूती ।
अदता[1] कर छोरहि जाहिं अवैं, जुर जावहिगे हम जाय जवै ।।४६१
अदना न करु जग-बीच इला, करनी हम जोवहि पुन्यकला ।
वंह आपन दाँनी बनावहिगे, जवही तुमरौं पुन जावहिगे ।।४६२
इह पैंज करी हम आप मतैं, सुर साखीय दै वरतै-सरतै ।
घर ऊठ चले दोऊ ताहि घरी, पथ आप मतै तज इंद्रपुरी ।।४६३
दिन वीत गये कैऊ देखत कै, वचनतर याद विसेकत कै ।
इक द्योस नरिंद अहेरन कौ, हरचद गये मृघ हेरन कौ ।।४६४
तन सुदर जाहि लखी तरुनी, वहु रूपवती स्वरना-वरनी[2] ।
कर रोय रही सिसकारन सौ, धर[3]धोवत आँसुन-धारन सौ ।।४६५
लखकै हरचद जही ललना, कछू देखत जास परी कलना ।
करुना कर ताकह भूप कही, दुख सौ विललावत कोन दही ।। ४६६
दरसावहु मेट करू दुख सौ, रुच पाय जनाय कह्यौ रुख सौ ।
हरचद नरेस अहो हम है, गुनके करता जग कौं गम है ।।४६७
हरचंद कौ नाम सुन्यौ हितसौं, चतुराइ सुनार कही चित मौं ।
अरु आँसुन पौच-अँगोचन[4] सौं, मुद पाय कह्यौ दुख-मोचन सौ ।।४६८
तन कौसक साधत है तन कौ, वरीआई सौ बाँधत है वपु कौं ।
करदेहु निवारन ताहि क्रीया, हहरावत है डर ताहि हीया ।।४६९
जव भूप कह्यौ हम जावत है, मुनि कौसक कौ समुझावत हैं ।
तज सोच रहौ निहचित तीया, कर देवहि वधन मत्र-क्रीया ।।५००
गवन्यौ मुनि-धाँम की भूप गली, पलट्यौ दिन सीस विपत्त पिली ।
तपसी मुन जाय मिले तवही, करजोर निवेदन वात कही ।।५०१
किह हेत करौ कररी करनी, अभिलाख धरौ मति उद्धरनी ।
कुछ चाहत हौ हम सौं कहीयें, दुख पावत देह नही दहीयै ।।५०२
जग पीडत होवत व्याज जँही, कौऊ काँम करै नही आज कही ।
सव राज-मही इह सासन है, सोइ आप सौ कौन सँभासन है ।।५०३
मुनिराज पदारहु[5] धाँम मही, करीयै अनकूल ह्वै वात कही ।
तव कौसक छोर चले तप कौ, जिह ठौर वहोर महांजप कौ ।।५०४

---

१ न देनेवाला । २ स्वर्णवर्णी । ३ घरा, पृथ्वी । ४ अँगोछा (कपडा विशेष) । ५ पधारिये ।

नृपहू निज भौन गयौ नमकं, कर जोर प्रनाँम करे नमकैं ।
जनु सग वसष्टकैं आग जरी, कर भूपत आय अहूत करी ।।५०५
अब कौसक रोख कर्यौ उर मैं, इह भूप नही सुर-आसुर मैं ।
करनी सुभ रोकीय कोन क्रीया, हित की नही जाँनत फूट हीया ।।५०६
तव येक निसाचर घोर तही, अनहोनी क्रीया कीय घोनी[1] वँही ।
वँह भेज दयौ फुलवारीय मैं, कर दाव रुप्यौ विच क्यारीय मैं ।।५०७
तरु तोरत दाँतन तुडन सौं, मसलै-किसलै फल मुंडन सौ ।
खुर मारत पिंड खसोरत है, झल आँनन सौं झकझोरत है ।।५०८
कदली विदुलीतरु[2] कुंजन कौं, भुय लोट लगावत-भजन कौ ।
रखवारन आप लखी रचना, विनती कर भूप कहे वचना ।।५०९
किट[3] वाग मै आय वलाय कढ्यौ, चकचूर करै तरु रोख चढ्यौ ।
रखवारे सवै जिह घेर रहे, अततासी फिरै उमहे-उमहे ।।५१०
तऊ मारचौ मरै नही टारचौ टरै, कहीये सोइ राज उपाव करै ।
हित वात सुनी इह हेरक की, उपवाटका अद्रीय येरक की ।।५११
भट-सग लये तिह भेरन कौं, उठ चालेऊ भूप अहेरन कौं ।
अस पै करकै असवारीयहू, धनु-बाँन रु कूँत सुधारीयहू ।।५१२
केऊ वीरन की अनोयै करकै, फुलवारीय घेर लई फिरकै ।
कर हेर वकारेऊ कुजन मै, पहुपावल[4] के तरु पुजन मै ।।५१३
सोइ घुर्घुर-उच्च कर्यौ स्वरकै, कटकाहट दंतन की करकै ।
अरू कधर रौम उचालीय तै, निकस्यौ मनु गोलक नालीयतै ।।५१४
गिर-टौल मनी गिर सौ गुरक्यौ, नृप आवत सूकर कौं निरख्यौ ।
कर लै धनुवाँन दयौ कररौ, चट आँनन दाव कर्यौ चुररौ[5] ।।५१५
किर[6] देख भयंकर रूप कुप्यौ, रन वाँन प्रहारन भूप रुप्यौ ।
सर दै जिम सूकरहू सरसै, द्रग दूर सनीड जु पै दरसै ।।५१६
विछरै पिचरैऊ चरै वन मै, तऊ वाँनन लाग न दैतन मै ।
भट औ रथ के भट भेरन कौ, हरचद चल्यौ नृप हेरन कौ ।।५१७
कढ दूर गये माहाँ कतर मैं, अरु वीर रहे सव अतर ।
सिर सूरज आय दुपैर-समै, भुवपालहु सूकर-लार भ्रमै ।।५१८

---

१ सूकर । २ वेंत-वृक्ष । ३ सूकर । ४ पुष्पावली । ५ चूर-चूर । ६ सूकर ।

कछु भूख लगी त्रसना करुरी, भग आतप की किरनै भररी।
असहू थकगौ असवारीय कौं, वनमैं न लख्यौ कहू वारीय कौं ।।५१९
नृप सोच भयौ न लयौ निरनै, सरनै न मिली कहुनी सरनै।
दरसै न कछू विदसा न दिसा, उर आय वसी भरकै अदसा ।।५२०
मन सोच रहे मुरभाय मती, सवही विध भूल भये सुमृती।
पुन चालेऊ खोजत येकपदी[1], निरखी वन ताही मैं स्वछ्छ नदी ।।५२१
तट तोय पिवाय तुरगम कौं, उतरे भटकै उचरगम[2] कौं।
जल-पांन करयौ हरचद जही, तरु सीतल ठाढेऊ छाह तही ।।५२२
पुर जावन के सुविचार प्रतै, उर सोच दिसा-विदसा न इतै।
पथ पूरव पछ्छम नाँहि पतौ, अरु उत्तर-दछ्छन भाँन इतौ ।।५२३
मन ही मन सोच रहे वनमैं, द्रग भूल गये धवरै दिनमैं।
तन जीरन कौसक धार तही, वनकै दुज आयेऊ ठौर वँही ।।५२४
कर जोर नरेस प्रनाँम करयौ, भुवदेवहु आसीर्वाद भरयौ।
पुन वूझन लागेऊ भूप प्रतै, कँहाँ राज पधारेऊ काज कितै ।५२५
विसवास कौं पाय कहे वचना, रिखीराज सुनौ हमरी रचना।
वन-सूर धस्यौ फुलवारीय मैं, धिक मारन की हीय धारीय मैं ।।५२६
भट और थके हम लार भगे, थक दौर तुरंगम आप थगे।
गम सूर नही लीय कोन गलो, चित विभ्रम होयकै वुद्धि छलो ।।५२७
गँम नाहि दिसा-विदसा गत की, हीय सोचहु वात मुनी-हित की।
हरचद है औंवपती हमहूँ, गृह-मारग भूल रहे गमहू ।।५२८
सुध मोह वतावहु येह समै, करकै परनाँम सु धाँम क्रमै।
उपकार करौ दुजराज अहो, कित मोह[3] पुरी सु विचार कहो ।।५२९

दोहा

विसवामित्र विचारकै, बोले हित-जुत वाँन।
इह तीरथ पावन अमन, सुभ दिन करहु सिनाँन ।।५३०
जो कोऊ तीरथ जायकै, करै न विधवत काज।
आतँमघाती होय वँह, मो सुनीयै महाँराज ।।५३१

---

१ गैल, पगडडी। २ घोडा ३ मेरी।

छंद उद्धोर

सुन नृपत हरचँद स्राँन, सुच सलल करेऊ निनाँन ।
जल-दाँन पितरन जात, निज हाथ कीय निमनाथ ।।५३२
जिम कही विप्र जताय, विध करीय भूप वताय ।
वोले सु मुनिवर वाँन, दुज दीजीयैं कछु दाँन ।।५३३
ह्वै सुफल जात्रा हेत, सुभदाय वडन समेत ।
जव कह्यौ राजा जास, पन आपनौ परकास ।।५३४
कीस राजसूय क्रतग्य, जस कारनैं हम जग्य ।
दुज साख दै कहदीन, पुन कर प्रतग्या पीन ।।५३५
मागै सु दुज कोऊ माँन, दैहूँ सु वंचत दाँन ।
अभलाष जो कछु आप, करीयै न देर कदाप ।। ५३६
दत माँगीयै हम देत, हीय सोच कहीयै हेत ।
सुन क्रहेऊ दुज सरसाय, वहु भूपकौ विरदाय ।।५३७
वासष्ट कीनी वात, वाँनी सु जग-विख्यात ।
विख्यात सूरज-वस, तिह वस कौ अवतस ।।५३८
हरचंद सौ सुध हीय, दाता न और दुतीय ।
इह साच जाँनी आज, मिल आप सौ महाराज ।।५३९
उद्रवाह[1] मो सुत आज, करीयैं जु अवसर काज ।
पग धारीयैं हम पौर, माहाँराज रवि-कुल-मौर ।।५४०
जव कह्यौ राजा जास, हित करहु चित्त हुलास ।
सुन वात वसी सूर, दुज क्रतमी गये दूर ।।५४१
जहाँ रची माया-जाल, क्रत्तमी[2] वीतत काल ।
कीनौ सु प्रगट कुमार, किन्या[3] सु तन-सुकमार ।।५४२
वेदी वनाय विताँन, कीय प्रज्वलतहु क्रसाँन ।
कर भावरैं सिध काज, वोले सु वाँनी व्याज ।।५४३
अव दाँन-वेला येह, सकल्प करहु सुग्रेह ।
दैहौ सु जैसौ दाँन, सत-गुनौ मिलहै सुथाँन ।।५४४

१ विवाह । २ कृत्रिम । ३ कन्या ।

पुन राज-विभव प्रपच, राखुहु न पाछै रच ।
सुत त्रीया स्वर्ग मिधाय, सुख नृपत लेहु सुभाय ॥५४५
मति फिरी राजा मद, फस मुनीकौसक-फद ।
सकल्प दीनौ छोर, कीनौ न ह्लदय कठोर ॥५४६
झट लयौ कौसक झेल, कहि स्वस्य-स्वत्य[1] कुटेल ।
दीय भोग-अरथ सुदाँन, जीय चाहि सौ जजमाँन ॥५४७
विन दक्षना सु विरथ्थ[2], इह हेत दीजै अथ्थ[3] ।
भुवपती गयेऊ भुलाय, तुम लहहु जोन तुलाय ॥५४८
भूतम[4] अढाई भार, दुज देहु नृप दातार ।
द्रुत कह्यौ राजा दैन, लागे सु पाछै लैन ॥५४९
भागे सु राजा भौन, इत मिली सैन आँन ।
नृप लख्यौ व्याकुल नैन, वहु विनय-जुत कहि वैन ॥५५०
नही पगन थँभे नैक, वोले न वचन विसेक ।
राँनीन-सग रनवास, ऊठ गयेऊ चित्त उदास ॥५५१
मति-भ्रमत देख महीप, सुविचार वैठ समीप ।
वूझी सु वात विसेस, नही उत्तर दीन नरेस ॥५५२
रहे जागते सव रात, वीती सु सोचत वात ।
परभात होवत पाँन, गुनि करेऊ भैरव-गाँन ॥५५३
सध्या सु करन सुकाज, मन करयौ तव माहाराज ।
मुनि आय विसवामित्र, सरवस्व हारक सत्र ॥५५४
वपु कपट धारै वेख, धूरत सु धारै धेख ।
देख्यौ सु राजा द्वार, चित विकल भयेऊ विचार ॥५५५
चिव सरद पूनम-चद, तिह गये मनु विधु-तुद[5] ।
इम होय भूप उदास, जुग हाथ जोरे जास ॥५५६
वोले सु विप्र कुवेख, अवधेस कौं अवरेख ।
तज देहु वैभव तस्य, सकल्प कीय सरवस्य ॥५५७
कीय हमही सौं जिम कौल, तपनीय[6] देवहु तौल ।
वोले सु भूप विचार, सव राज लेहु सँभार ॥५५८

---

१ स्वस्ति । २ व्यर्थ । ३ अर्थ, धन । ४ स्वर्ण । ५ राहु । ६ स्वर्ण ।

दक्षना कारन दाँन, नहि जातरूप[१] निर्दान।
हम कहूँ आवहि हाथ, मुविमेग्र देहै साथ ॥५५९
अव करन जात उपाय, निरनात मागत न्याय।
इह कहत चाले ऊठ, पुर अवध को दे पूठ ॥५६०
मुत लये रानी साथ, हाले मु भाटक-हाथ[२]।
पुर-त्याग लीनौ पथ, हुव सोर जन हाहत ॥३६१
मुनि आय कौसक मग्ग, अटकाय दोनौ अग्ग।
दै दछ्छना विन दाँन, गैलै न करीयै गाँन ॥५६२
नट जाहु नहि लै नाँम, तुहि लेहु राज तमाँम।
नृप कह्यौ सुनहु मुनेस, नहि रीत वस दिनेस ॥५६३
दैकै न लेवहि दाँन, पथ भलै जावहु प्राँन।
दिन कोऊक करहू देर, हम करत है घन हेर ॥५६४
प्रापत ही होत प्रमाँन, दछ्छना लीजहु दाँन।
वोले सु मुनि विग ताय, मन सोचीयै समुझाय ॥५६५
परहरै अवधपतीज[३], धन मिलन की कहाँ धीज।
जैहौ सु जाही जाग[४], नृप जाँनहै निरभाग ॥५६६
रिन कोऊ न दैहै राज, विन धरोहर अरू व्याज।
नाकार करनौ नीत, कहा लाभ पायै कीत ॥५६७
हट त्यागीयै हरचद, नाकार करहु नरिंद।
पन तजै वैभव पाय, सुख लहहु राज सुभाय ॥५६८
नृप सुनी कौसक-नीत, कहा लाभ खोयै कीत।
जग-वीच अजसी जीव, सो जीयत मृत्यु सदीव ॥५६९
रन तीर्थ मै रजपूत, इह तजत प्राँन अभूत।
वपु-त्याग कीत वसाय, सोइ अँमर होत सुभाय ॥५७०
इह आद-रीत अमाँहित, नाकार देवहि नाँहि।
पुन धरोहर हम पास, सुन लेहु विप्र सुहास ॥५७१
श्री पुत्र जौलौ साथ, इह वेच लैहौं आप।
दछ्छना दैहौ दाँन, पहिचाँन वचन-प्रमान ॥५७२

१ स्वर्ण। २ हाथ झाड़कर। ३ अवध का राज्य। ४ स्थान जगह,।

लै अवध सौ सुत नार, विक्रीया करहु विचार।
जिह काज कासी जात, नहि अटकीयै निस्नात ।।५७३
जब कह्यौ अवसर जाँन, पथ करेऊ भूप प्रयाँन।
कोऊ मास कौ कर कौल, बाँधे सु वाचन बोल ।।५७४
वानारसी निज वास, पँहुचे सु गंगा-पास।
न्हायें सु निर्मल नीर, सुच धोय कीन सरीर ।।५७५
मन मैं विचारत मत, इह मास आयौ अत।
विक्रीय कोन वसाय, राजाँ न कोऊ राय ।।५७६
इहाँ विस्वनाथ अधीस, वसवाय विसवावीस।
इह धारकै हीय-आस, वाढे सु कर विसवास ।।५७७
वाजार जावत वीच, मुनि मिले आय मलीच।
दक्षना माग्यौ दाँन, परचाय वचन-प्रमाँन ।।५७८
कीय मास जास करार, पुन भयौ सोऊ पार।
नट जाहु अवध-नरिंद, वाँधीयै अथवा बध ।।५७९
महपती कहेऊ मुनेस, अध दिवस है अवसेस।
सुन स्रवन चुपकौं साध, गये दूर नदन गाध[1] ।।५८०
भ्रम ऊपज्यौ हीय भूप, रुख जाँन आपत[2]-रूप।
श्री पुत्रँ कोन वसाय, द्रव मिलहिगौ किह दाय ।।५८१
पथ राजनीत-प्रवीन, तऊ धर्म जाँनत तीन।
अध्ययन जजन उचार, दत दैन मति दातार ।।५८२
अर्थना[3] कारन अर्थ, मन छत्रीयन असमर्थ।
दुज दछ्छना कह दीन, करीयै न टारौ कीन ।।५८३
दुज रनी त्यागू देह, विट क्रमू करहै वेह।
पिंड वनहि अथवा प्रेत, अध भरन करन अहेत ।।५८४
वपु करन विक्रीय वेस, इह न्याय कौ उपदेस।
नृप विकल देख्यौ नार, वोली सु सोच विचार ।।५८५
माहाराज चिंतामाँन, गहि रहे काँय-गिलान।
तज देहु ताहि तुरत, मन माँन करीयै मत ।।५८६

---

१ विश्वामित्र। २ आप्त। ३ याचना।

पालीयै सत मत प्रीत, कल्न अमन करीयै क्रीन ।
धन जाय तोहू धर्म, सुध भूलीयै न सुकर्म ॥५८७
जग-धर्म त्यागी जीव, मोह प्रेम-रूप सदीव ।
सत-धर्म पालन सोय, वनीयै न ताहि विगोय ॥५८८
अगनोत्र[1] औरहु याग, तत पठन-पाठन त्याग[2] ।
है क्रीया जितनी हेय, व्यापार वेद विधेय[3] ॥५८९
जरहू असतवादी जात, कहाँ रहत है कुसलात ।
पढ धर्म-सास्त्र पुरांन, निज धर्म कीय निर्वान ॥५९०
सत कह्यौ सवको सार, नय-नीत नेहु निहार ।
जिग करे नृपत जजात, सत येक जिह सात्यात ॥५९१
कीय राजसूय क्रतग्य, तव स्वर्ग पहुँचे तग्य ।
इक वार वोल अनृत्त, सोऊ पतत भये असमत्त ॥५९२
सत तजहु नाँहिन सोय, होनी सु रहिहै होय ।
राँनी सु कहीय रहस, पति सुनी वात प्रसम ॥५९३
मन लैन कौं माँहाराज, वाँनी कही जुत व्याज ।
विग गयौ राज विसेस, स्त्री पुत्र थातौ सेस ॥५९४
मत करत सास्त्र मनाह, स्त्री वेचनौ न सलाह ।
अरु पुत्र वस-उपाय, जो दीयौ नाँहिन जाय ॥५९५
कहि कीजीयै कहा काँम, वेला विचारै वाँम ।
जव कह्यौ राँनी जाँन, वाँनी सु नीत-विधाँन ॥५९६
निज नार रति-हित नाँहि, सुत-हेत गिनहु सदाँहि ।
सुत भयौ सुफल सुकाज, मुद माँनीयै माहाराज ॥५९७
स्त्री रही कारन सेव, तज देहु स्वार्थ तुमेव ।
मोहि वेच अरथ मिलाय, जिह देह-धर्म न जाय ॥५९८
सुन नार की समजास[4], अत भयौ नृपत उदास ।
अव कहत नारी येम, पूरव विसारयौ पेम ॥५९९
धिक्कार याही धर्म, कहा भयौ उदय कुकर्म ।
वहु करत-करत विलाप, आई सु मुरछा आप ॥६००

---

१ अग्निहोत्र। २ दान। ३ मूर्खता के। ४ जड़। ५ समझाना।

गिरपर्‌यौ धरनी गात, वहु सोक सौं विललात।
भूले सु तन-मन भाँन, गहि ह्रदय-बीच गिलाँन ॥६०१
पति-दसा देख पिराय, हा कहत राँनी हाय।
धरनी गिरी तन धूज, उर रह्यौ सास[1] अमूज ॥६०२
सुत बोल रोहित साथ, मोहि भूख लागी मात।
जहाँ देख अवसर जत्र, माँगन सु विसवामित्र ॥६०३
कर क्रोध आये क्रूर, धूम कौं मिलावन धूर।
इत देख नृपत अचेत, अत वचन कहेऊ अहेत ॥६०४
बौल्यौ न सुनकै बाँन, जल कर्‌यौ सेचन जाँन।
उघरी सु नरपत-अख, इत पर्‌यौ मुनि-आतंख ॥६०५
भुय फेर विहवल भूप, रिख देखकै दुख-रूप।
रिखी कह्यौ सुनीयै राज, इह अवध बीतत आज ॥६०६
अब चहत दिनमनि येह, चरमाद्र[2] करनै छेह।
सत राखीयै नृप सेख, द्रग तपत सूरज देख ॥६०७
अरु सत्य सौं उनमाँन, थिर रहत अचला थाँन।
स्वरगीय स्वर्ग सुधाँम, करता सु सत्य ही काँम ॥६०८
तुम सत्य दैही त्याग, जावै ततौ हम जाग।
दैही सु स्राप दुरत, अकुलाय कै हम अंत ॥६०९
दिन जात मैं नही देर, सोइ गयौ सीस सुमेर।
मुनि चले विसवामित्र, तव रह्यौ राजा तत्र ॥६१०

सोरठा

भूप भयौ भयभीत, कौसक मुनि सुनकै कही।
इतनैं वेद अधीत, वृद्ध विप्र आयौ वहे ॥६११
देख्यौ राँनी द्रष्ट, धरमसील अरु है धनी।
कहीयै अपनी कष्ट, इहतौ धन दैहै अवस ॥६१२
सुनकैं राजा स्राँन, वोल्यौ राँनी सौं वचन।
जात विप्र जजुमाँन, कैसै जाचहि दुज कहौ ॥६१३

---

१ श्वास। २ अस्ताचल।

देनी चाहत दाँन, लैनी नह चाहत लयौ।
होय धरम की हाँन, मैं छत्री रिव वंस मह ।।६१४
तीन कर्म है तीन, पहलै कहदीने प्रीया।
याद करहु उर आँन, वातै करहु विवेक की ।।६१५
देवहु-देवहु दाँन, वचन न जाँनत वीनती।
दैगे-दैगे दांन, वाँनी चित मैं वस रही ।।६१६
परजा की प्रतपाल, करकै धन लेवन कुसल।
कै सत्रुन कर काल, भुजम्वल सौं लेवहि भलै ।।६१७
राँनी वोली राज, काल प्रवल अकरन करन।
हेत विचारहु हाल, करनी सोई करीयै कुसल ।।६१८
आदर अरु अपमाँन, काल विसम सम करत है।
राजा भिक्षुक राँन, जाही कै वस जाँनीयै ।।६१९
काल भयौ प्रतकूल, दुजहू कीय यैसी दसा।
महाधरम कौ मूल, काटन लगौ[1] कुठार लै ।।६२०
राजा कह्यौ रिसाय, रसना जो देवौ रटै।
करकै टूक कढाय, कुक्कर भख देहू करट ।।६२१
सुनकै राज-सवाल, राँनी वोली राज सौं।
करीयै जैसौ काल, वरतमाँन कै विसतरन ।।६२२
मदरा-हित माहाराज, हेत भोग नहि चूत-हित।
विक्रीय कर निरव्याज, हित परमारथ देहु हम ।।६२४

दोहा

अपजस कछू न आपकौं, जस मेरौ रह जाय।
आऊ तो पतिकै अरथ, जग-कीरत ह्वै जाय ।।६२५

छंद त्रोटक

स्त्रीय की हरचद सलाह सुनी, धन[2] लेवहु-लेवहु कीन धुनी।
जन पूछन लागेऊ जात जँही, कररी कर छातीय भूप कही ।।६२६

---

१ मू०प्र० लागौ। २ स्त्री-धन।

हम जाँनहु पॉह्म जात हीया, पलटै घन वेचत प्राँन-प्रीया।
कोऊ दासीय चाहत जो करनी, तन सुदर लेहु इहै तरुनी ।।६२७
तन जीरन कौसक आय तही, करकै दुज वेख को भूप कही।
हमरै इक दासीय चाहत है, इह मोल करी अवगाहत है ।। ६२८
हमरै सुकमार है नार हितू, कर जाँनत हैं नही ग्रेह-क्रतू।
धन देवहिगे तिह ग्रेह-धनी, वचनतर भाखहु वात वनी ।।६२९
सुनकै हरचंद करी सहना, कछु नाँहि कही दुज सौ कहना।
दुज ताहीसौं वोलेऊ देख दसा, वित देवहु जो कछू चित्त वसा ।। ६३०
जव राज कह्यौ तुम जाँनत हौ, परमारथ-हेत पिछाँनत हौ।
वकलास्त्र धरयौ जिह पैं वित्त कौं, अह मोल मगाय धरी इतकौं ।।६३१
जव येक करोर मगाय जमा, समपे दम ताही कौं वोल समा।
कर साखीय दै नृप कौं कुह्नी, गृह केस लई सिर की गुह्नी ।।६३२
जव लागेऊ जावन ऐंच जँही, सुत रोहित देखीय मात मही।
जननी-जननी कहि वोल जितै, कहनै पुन लागेऊ जात कितै ।।६३३
सिसु कौं हम भूख सँतावहिगे, जननी-विन कोन जिवावहिगे।
विथुरे सिर घूंघर वारनकै, पुन लागेऊ लार पुकारनकै ।।६३४
रुख रोहित की लख रोवन की, द्रग येक भई गति दोवन की।
सिसु देखत मात के ओठ सुके, रुख वाप लखै उर-स्वास रुके ।।६३५
विललावत वोल कहै वतीयाँ, चिललावत फाट रही छतीयाँ।
पितु कौं तज मात की लार परयौ, दुज देख तनधय द्वेख धरयौ ।।६३६
मुख मोरकै लागेऊ मारन कौं, पुन लागेऊ वाल पुकारन कौ।
इक मात ही मात उचारत है, पितु-हेत वहारन-पारत[1] है ।।६३७
गह मात लई परतै-गिरतै, डहकाय इतै दुजकै डरतै।
मुख मात कह्यौ सुत सौं मिलकै, किह कारन रोय करै किलकै ।।६३८
छुटकावहु चालन छिप्रन की, वन मैं गई दासीय विप्रन की।
तऊ छोरत हाथ न मात तनै, मुख पौंच करयौ केऊ वार मनै ।।६३९
सुत की वहु वार करी सहनी, कीय रुद्र दुजातहु सौ कहनी।
कुटहारका कीनीय काँमन कौ, सुख देहु कहा मोहि स्वाँमन कौ ।।६४०

१ रोते हुए चिल्लाना।

सुत मैं रहिहै चित मेरी सदा, करहूँ मन भ्रांमत कांम कदा।
विटमावहिगी हीय सुद्ध वृती, सब जावहिगी मतहू नुमृती ॥६४१
सुत-मोल वसावहु वित्त-सटै, विगरै न मती नही चित्त वटै।
सब सासन सावहु स्वांमन कौं, करहू कहिहै सोइ कांमन कौं ॥६४२
सुन विप्रहु वात सयांनप की, नहचै कर ओर चल्यौ नृप की।
सुत तोर चहै सिवकाइय कौ, मिल भूंव रह्यौ सोइ माइय कौं ॥६४३
परचाय कह्यौ हीय पेचन कौं, पित लै सुत चाहत वेचन कौं।
नृप विप्र कह्यौ करकै निरनै, सुतहू तुम राख लहौ सरनै ॥६४४
वित देहुगे सोय वसावहिगे, कछु नांहिन और कहावहिगे।
दीय मोल जयारथ देख दसा, गहिकै वित-मोक मैं चित्त गसा ॥६४५
लखकै पति-दूर खरी ललना, मम दुस्तर होय गयौ मिलना।
परनांम करचौ निज नाय प्रतै, छल त्याग कह्यौ सब हीन छतै ॥६४६
पति त्याग दई कहि प्रांन-प्रीया, हहरात न जात न फाट हीया।
अघ आय भयौ इह कोन उदै, जीय सौ पीयकै करदीन जुदै ॥६४७
कछु पुन्य करचौ अथवा करनी, वहु आंनन जाय नही वरनी।
दुज साखीय है दुतियो[1] दमुना, सिस सूरज होहु जवै सुमंना ॥६४८
हरचंद मिलै भरतार हमै, जग के करता सब आप जमै।
दुख सौं कहिकै मुख हाय दई, भुवपै गिर सोय अचेत भई ॥६४९
तलपात[2] लखी इह भांत तीया, हहरात लख्यौ सिसु फूट हीया।
केऊ भूप विलाप लग्यौ करनै, विनता सुत के गुन कौं वरनै ॥६५०
सुच सुंदर सीलवती सुकीया, पिकवैनी अहो मृघनैनी प्रीया।
द्रव लैकर ताही कौं वेच दई, नर निप्टुर मो-सम और नही ॥६५१
जग रूखन रीत लख्यौ जँहीयां, छितपै विसतार रहै छहीयां[3]।
सग राखत आपनी आप सदा, तिह सौं कवहूँ नही होत जुदा ॥६५२
करतूत नही हम जात कही, जड जीव समांन न वोल जहि।
प्रगटचौ तन अगज मो पहीयां, विललावत विप्र गही वँहीयां ॥६५३
धिक मोह धुरधर धर्म-धृती, कपटी पर वंचक कूर क्रती।
द्रव लै विनता सुत वेच दुनौ, गहिकै निज स्वारथ त्याग गनौ ॥६५४

१ दूसरा। २ तड़फती हुई। ३ छाया।

अवधेस करै इह सोच इतै, चख सौं सुत नारीय ताहि चितै ।
दुज रीस लगी दोऊ देख दसा, गल गालीय दै श्रय दड गृसा ।।६५५
तरुनी नृप लागेऊ तारन कौं, सुत रोहित दास सुधारन कौ ।
चिललावत ताही कौं लेय चल्यौ, दुख दीरघ भूप कौ हीय दल्यौ ।।६५६
घर नाहि लख्यौ रवि धोवत मै, सिस नाँहि लखी निस सोवत मैं ।
कमनीय महाँ कर कजन की, जिह आँखन की चिव खजन की ।।६५७
गज-गाँमन्न भाँमन दु.ख-गसी, वन दासीय विप्र कै ग्रेह वसी ।
उतपत्त भयौ नृप-असन मैं, पुन हंस के वस प्रसंसन मैं ।।६५८
रमनीय विलेपन अग रचे, सिर गू घर-वार फुलेल सिचे ।
पद कोमल कज के पात्त प्रभा, सुखदायक लायक राज-सभा ।।६५९
जन दास खिलावत जाहीय कौ, सुत सोय गयौ सेवकाइय कौं ।
मुरझावत यौं मन ही मन मे, तब ताप वढो नृप के तन मैं ।।६६०
मुनि कौसक लै रिख-मडल कौ, दिखराईय दीन द्रगचल कौं ।
द्रुत माँगीय आय जिही दछना, रुख कौं लखकै नृप की रचना ।।६६१

दोहा

निमसकार कर नृप ततह, कौसक कह्यौ क्रतग्य ।
खोर लेहु करकै खिमा, जमा दक्षना जग्य ।।६६२
कौसक द्रच देखरू कह्यौ, अह नह लेत असस्त[1] ।
सस्त[2] होय तौ समपीयै[3] सुनीये वाचा स्वस्त ।।६६३
कहाँ तै आयौ किह दयौ, किह पलटै कह्न देहु ।
सुनै विना लैहून सो, आद-प्रतग्यत येहु ।।६६४
विप्र ग्रेह तै विप्र दीय, तीय सुत वेचे ताहि ।
तीय के दीय इक कोट तिह, सुत दस कोट सिवाय ।।६६५
ग्यारह कोट गरथ कौं, कौसक लेहु क्रपाल ।
सेष रह्यो वपु मोर सो, इहै आपके हवाल ।।६६६

---

१ अस्वस्थ । २ स्वस्थ । ३ समर्पण करिये ।

छंद-पद्धरी

कौसक जब बोले क्रोध-धार, आयौ चौंथाई अरु उधार।
ग्यारहौ करोर है निस्कग्यात, अवसेस रही सो देहु आथ ।।६६७
रैहै पन तुमरौ महाराज, अवसर पिछाँनीयै समय आज।
अब दिवस रह्यौ है घटी-आध, बाँकी न प्रतग्या होन बाध ।।६६८
इह सुनी भूप कौसक ऊदत, उर जांन्यौ अवसर भयौ अंत।
कोऊ मोल लेहु किंकर सुकाज, विनती इह मेरी विगत व्याज ।।६६९
स्वाँमी की करहौ परम-सेव, दुज सूर चंद साखी जु देव।
वाँनी नरपत की सुन विवेक, आयौ चँडाल डाविड-रूप[1] येक ।।६७०
विक्रत जिह छाती लव बार, मुंडन की माला गल-मझार।
दुरगंध जुक्त तन दिघ्घ दाँत, अरु कसी कमर लपटाँय आँत ।।६७१
टर जाहु-जाहु इह कहत टेर, फाटी कर-लाठी लीयैं फेर।
बोल्यौ नरपत सौं ह्वै नजीक, सेवक मैं चाहत कर सरीक[2] ।।६७२
मुख माँग लीजीयै देत मोल, तपनीय तराजू लेहु तोल।
जब कह्यौ भूप तुम कोन जात, वित-साटै हम सेवक बसात ।।६७३
करवीर नाँम हम सुपच-काय, तन मुर्दन-कप्फन लेत ताहि।
इही वृती हमारी सही आद, नही मो-सम दूसर कोऊ निपाद ।।६७४
सुन राजा बोल्यौ तिही सेत, हम छत्री चाहत विप्र हेत।
ऊँत्तम की उत्तम चहत आस, अँधम कौं अधम अनायास ।।६७५
मधँम कौं मद्धम चहत मित, अनुचित तुम भाखत कहा उदत।
इह सुनत सुपच बोल्यौ अधीर, वारता कहत तुम न्यायवीर ।।६७६
कोऊ लेहु कह्यौ तुम प्रथम काहि, साँमॉन[3] सब्द सबकौं सुनाय।
मैं आयौ सुनकै लैन मोल, कह देहु झूट इह करचौ कौल ।।६७७
हम मिथ्यावादी जाँन हाल, चल जाँह आपने गृह चंडाल।
राजा तब बोल्यौ सुन रहस, ऊतपत्त कुलीनन राज-अंस ।।६७८
झूटौ हम नाँहिन करत झौर[4], इक विनती मेरी सुनहु और।
सोई भूप रह्यौ मुख मैं सवाल, कौसक मुनि आये तिही काल ।।६७९

१ कुरूप, असभ्य, भयानक। २ सम्मिलित। ३ सामान्य। ४ झगड़ा।

वोले राजा सौं देख वाँन, धन सुपच देत इह सनिधान।
दक्षना देहु लेकै जु दाँम, कहा ऊँच-नीच सौ तुमही काँम ।।६८०
देहै नहि तुमकौ स्राप देत, सुन लेहु वचन राजा सहेत।
चडाल देहगे द्रव्य छोर, इतनौ कोऊ नाँहिन देह श्रोर ।।६८१
पन राख लेहु धर्म ही पिछाँन, हरचद नही ह्वै सत्य हाँन।
विन सत्य वसैहौ नर्क-वास, उद्धार हृदय सौं छाँड श्रास ।।६८१
वाँनी कौसक की सुन विसेस, नमकै पग झाले मुनि नरेस।
हम दास करहु राखहु हजूर, कवहूँ न वचन लोपहि करूर ।।६८२
कहहै मुनि जैसौ करहि काँम, नाकारपनै कौ छाँड नाँम।
सुन वोले विसवामित्र सोय, हीय रुचै भलै मम दास होय ।।६८३
करहौ हम अग्या भग काज, अतसय तुम ह्वै है फिर अकाज।
हित सोच लेहु हीय लाभ-हाँन, करहूँ मै नाँहिन नृपत-काँन[1] ।।६८४
सुन नृपत करचौ आस्त्र मधीर, धरकै मुन वोले तवहि धीर।
सुनकै पुन ह्वै कै सावधाँन, मन लयौ दूसरौ जन्म माँन ।।६८४
विनती वहु कीनी वार-वार, आपकौ दास गनीयै उदार।
सासन जो करहौ धरहु सीस, अनुचर मै मेरे तुम अधीस ।।६८५
कर वोल कोल द्रढ सध केक, राजा फिर वौल्यौ धर्म-रेख।
कहदेवहु मुनिवर करै काँम, सव विध मैं जानत धर्म-स्याँम ।।६८६
कौसक तव वोले इही काज, अनुचर चँडाल के होहु आज।
मुख मौन कही सुनकै महीप, चडाल भयौ ठाढ़ौ समीप ।।६८७
मुख माँग्यौ कौसक जितौ मोल, तेऊ दीन तराजू सुपच तोल।
मन कनक-तार दीने मिलाय, लीनै सोई कौसक हेत लाय ।।६८८
राजा सौं वोले रिखीराज, मम ऋन सौ छूटे महाँराज।
आकास-वाँन तव भई येह, नृप भये अनृरन[2] निसदेह ।।६८९
दक्षना कही सो दयौ दाँन, पन रह्यौ सत्यवाचा प्रमाँन।
कहि साधु-साधु स्वर्गीय कथ्य, सुमन कौ वृष्ट कर येक सथ्य ।।६९०
कौसक राजा कीय इह कहाव, भूदेव पिता-माता सुभाव।
कहहु तुम जैसौ करहु काज, मै अग्या मागत महाँराज ।।६९१

---

[1] मर्यादा, राज प्रतिष्ठा। [2] ऋण-मुक्त।

वोले मुन स्वस्ती तिही वार, लीय मोल नुपम सौं जाहु लार।
कौसक इह कहके गमन कीन, इत सुपत्र वध कीनो अवीन ॥६६२
चहकाय चल्यौ भय लाय चंड, दी मोरेन-ठीरन मार दड।
मातग[1] गयौ लै ग्रेह माँझ, सूरजहू अथयौ भई साँझ ॥६६३
भय ताहि दिखावन धनी-भाव[2] पहराई वेरी[3] उभय पाव।
कीनौ कारागृह वीच कैद, विध चूक परै कहा करै वैद ॥६६४
मन ही मन सोचत महाराज, एकहू नाँहि सूझत इलाज।
अन जलहू त्याग्यौ ह्वै उदास, दुरदसा वनायौ सुपच दास ॥६६५
कहाँ राँनी रोहित है कुमार, हम वदीखाँनै परे हार।
अगज तीय मेरी करत आस, दुखदाय छुरावहि भाव दास ॥६६६
विच स्वपच ग्रेह मैं परयौ वंध, सुत त्रीया आज छूटौ समंध।
रोहित माता सौं करहि रार, पितु मोह मिलावहु सहित प्यार ॥६६७
समझाय कहा कहिहै सवाल, हा दई भये इह कहा हाल।
मृघनैनी जांनत नही मोहि, खावदहू आपौ रहे खोय ॥६६८
दूपन हे आद सौं इही देह, सुपनै न भयौ सुख निसदेह।
ठहरे कहाँ मत्री-जनन ठाट, प्रोहित कहाँ मेरे राजपाट ॥७९९
गज घोरे रथ अरू पतन ग्राँम, घवरोहर जैसे इद्र-धाँम।
सेनापति सेना सुभट सग, अत पराक्रमी सगर अभंग ॥७००
जे रहे कहाँ के कहाँ जाग, इह खोटे दिन कीनौ अभाग।
चिर सोचत वीते दिवस च्यार, निज खान-पाँन विन निराधार ॥ ७०१
पचमैं दिवस होवत प्रभात, जीय सोच आपने सुपच जात।
वेरी पग काटी तिहो वार, कर क्रुद्ध-वचन कीनौं करार ॥७०२
कर वीर-भूम[4] का काँम-काज, रखवारी दीनी सुपचराज।
लाठी जिह फाटो हाथ लीन, कर कृपा इनायत भूप कीन ॥७०३
तुम वूझै ताकौं कहहु-ताँम, निज वीरवाहु भृत लेहु नाँम।
दिस दखन जावहु छोर द्रग, भृत अग्या कवहु न करहु भग ॥७०४
सुन वचन वीरवाहू सकोय, समसाँन भूमका गयेऊ सोय।
जहाँ देखी मुर्दन जाय जाग दै रहे कितेइक मनुज दाय ॥७०५

---

१ चांडाल। २ स्वामित्व। ३ वेड़ी। ४ श्मशान-भूमि।

कर वाल-सिखा दुरगध केर, फैलत नभ मारग चहूँ-फेर।
घुट रहे जहाँ अधार घोर, लूवत जनु पव्वय अभ्र लौर ।।७०६
केऊ मात पुकारत तात कूक, उठ रही जितहु तित ज्वाल ऊक।
अरनसा घोरवासी जु आय, अधवरे[1] लेत मुर्दा उठाय ।।७०७
भागत केऊ भख्खन करत भूक, हुरराय सिवा मुख देत हूक।
जहाँ पहुचे राजा तुरत जाय, हरचद कहत मुख दई हाय ।।७०८
तहाँ रहन लगे आचार-त्याग, लैनै मुर्दन के लगे लाग[2]।
गूदरी फटी-सी गरै गोय, हिल-मिलकै सुपचन रूप होय ।।७०९
समसाँन-भसम लागत सरीर, धोवन कौं नाँहिन मिलत धीर।
वचजात पिंड सोई वसात, भूँखकै लगे वँह खात भात ।।७१०
अनुवछ्छर वीतौ तहाँ येक, व्रह्माँ के दिन सौ जहाँ विसेक।
इक दिवस भई दुरदसा और, मुत रोहित ताकौ वय किसोर ।।७११
खेलत वालन के सग ख्याल, कहु दूर गये वस पाय काल।
कुस कोमल देख्यौ वीच कुज, पुहमी सु उखारन लगेऊ पुज ।।७१२
वालकन कही जव देख वात, कुसकौं क्यौं तोरत कसमसात।
वौल्यौ तव रोहित सुघर वाँन, स्वाँमी दुजकर्मा सावधाँन ।।७१३
मैं ताकौं अरपन करहु मित, सो ह्वै है राजी पर्म सत।
खोदकै लयौ कुम खोज-खोज, वाँधकै चल्यौ सोइ सीस बोझ ।।७१४
घर जावत-जावत परस घाँम[3], मिल त्रखा[4] लगी ताही मुकाँम।
भुव देय विवोरी धरचौ भार, वढ चाल्यौ रोहित पीयनवार ।।७१५
जल-पाँन करचौ कछु देर जात, हेरत कुस भारी डार हाथ।
देखते रहे सव वाल दूर, काटचौ सु भुजगम अत करूर ।।७१६
मरगयौ कुँवर ताही मुकाँम, कुस रह्यौ लयौ सो स्याँम-काँम।
दौरे सव वालक हाल देख, विगताय कह्यौ माता वसेख ।।७१७

दोहा

दुज की दासी दुरदसा, भई सु तेरे भाग।
सर्प डसौ मरगौ सुवन, जाह सँभारहु जाग ।।७१८

---

१ आधे जले हुए। २ दहन-कर। ३ धूप लग जाने से। ४ तृषा = प्यास।

वज्रपात के सम वचन, सुनकै रांनो म्रांन ।
गिरी भूम गररायकै, परत केल जिम पांन ॥७१६
दुज देखी ताकी दसा, जल सीच्यौ मुख जाहि ।
हा सुत बोलत चेत हुव, रीस भयौ द्रुजराय ॥७२०
आवहि ग्रेह अलक्षमी, सव्या-रोज[1] सुनत ।
निरलज क्यौं रोवन लगी, वार असुभ वरतंत ॥७२१
मोल लई दीव दांम मैं, दती लये परखाय ।
ताही की कै कै तीया, करत कांम नहि काहि ॥७२२
दासी दांम दिवायकै, भई हमारे भांन ।
निसचै रोरव[2]-नरक मै, पर्है बहुत पुरांन ॥७२३
परी रोय रांनी पगन, द्रुज स्वांमो मैं दासि ।
मेरौ सुत मरतक[3] भयौ, पहुचावहु तिह पास ॥७२४

छंद त्रोटक

दुज बोलेउ रांनी की देख दसा, तुमरौ चित नांहि अजौ तरसा ।
गृह-काज विगारकै जात गली, तुव पुत्र मरौ हम व्याध टली ॥७२५
जननी वन रोवत पूत जितै, अय दड मिली नही मार इतै ।
मोहि ढीठ न जांनत क्रूरमती, समुझावत हूं पर होत सती ॥७२६
दुज कौं लखकै जव हीन दया, करनं पुन लागीय ग्रेह-क्रीया ।
भ्रमतै-भ्रमतै अधरात भई, दुज रांनीय कौ तव सीख दई ॥७२७
कहनावत या विध-ताहि करी, घर आवहु होवत प्रात-घरी ।
करहू निस भीतर दाह-क्रीया, हम सासन राखहु वीच हीया ॥७२८
छुटकी लह रांनीय उठ चली, गत प्रांन भयौ सुत ताहि गली ।
कुस पास धरयौ इक कोरीय पै, वलमीक की ठीक विमोरीय पै ॥७२६
मृतु रोहित पुत्र लख्यौ महि पै, जुमलायकै दौर गई जिह पै ।
तन ताहि टटोरन लागत ही, वतरावत आंसुन-धार वही ॥७३०
करकै दुइ कोयन के करवा, धुलवावत मृत्यु मनौ घरवा ।
कवहूं करलै कवहूं क्रम कै, रज पौंचत अग रही रमकै ॥७३१

---

१ रुदन = रोना । २ रौरव = घोर । ३ मृत-तुल्य ।

सिर गूंघर-वार सँवाँरत है, ध्रुव लै पुन गोद मैं धारत है।
उभरे भुँह नास अनेखत है, द्रग दीपसिखा-सम देखत है ।।७३२
करसौं गहि गोल कपोलन कौं, वतरांवन चाहत बोलन कौ।
दुख पायकै हाय कहै दईया, मुहि क्यों न कहै मईया-मईया ।।७३३
लीह रीस रह्यौ कोऊ लागन सौ, भरमाय अभागनि भागन सौं।
कहि वछ्‌छ पुकारत है कवहूं, उठकै मोहि लाय गरै अवहू ।।७३४
निस बीतत लाल निहोरन तैं, कढ नीद उठौ चख-कोरन तैं।
गृह कौं सवही तुहि मित्र गये, निरमोहीय त्याग सनेह नये ।।७३५
चलीयै सव प्रात चितारहिगे[1], मिल गेंद कौं चोटन मारहिगे।
सुनकै किलकारन होत सुखी, दुख मैं फिर होवहु वछ्‌छ दुखी ।।७३६
करकै धमनीन गयौ कतीयाँ, छवि दाटत फाटत है छतियाँ।
उर देख किहै उलसवहुगी, हित वातन सौं हुलरावहुगी ।।७३७
लहि अंक मैं सोवत लाग तकै, जननी-जननी कीह जाग तकै।
पुसलावत आँनन पौंचन मैं, अरू आँखन वार अँगोचन मैं ।।७३८
पकरै दोऊ पाँनन-पाँनन कौं, डर दीठ के देत दिठोनन कौं।
ढिग[2] सौं मत जाहु ढिटाइय सौं, मुख वोल कुमार मिठाईय सो ।।७३९
पति वेचदई निज पानन सौ, अव दासी कहावत आँनन सौं।
सव ही दुख वात न वात सही, तुहि देखत भूलत्त जात तही ।।७४०
पितु तोहि कँहाँ-कँहाँ औधपुरी, कहाँ राज-सिंघासन वाज करी।
पलका कँहाँ रेसमी पौढनके, अरू पाट-पटंवर ओढ़न के ।।७४१
धवरोहर त्याग परे घरमैं, उड धूसरी छाय रही उरमैं।
ढिग लागत दीमक गार, ढला, लुरकाय करोटन लेहु लला ।।७४२
पितु तेरौ कहाँ अव औधपती, छतीयाँ न लगावत मोहि छती।
खुस होवत तेरे ही ख्यालन सौं, लहि अग लगावत लालन सौं ।।७४३
करतौ वहु धूँम किलोलन की, वतीयाँ तुतरी मुख वोलन की।
सुत पावन हाथ भये सीयरे, नही आवत नाथ अजौ नीयरे ।।७४४
सुत तूं जनम्यौ जिह वार सही, केऊ आय महूर्तिक येम कही।
सिसु दीरघ आयुस है सुकृती, छत्र धार प्रचारीह राज छिती ।।७४५

---

१ याद करेंगे। २ पास, निकट।

गुन सूर उदार मवै गहिहै, लख मात-पिता सुखकों लहिहै।
पतरा[1] सबही रद[2] होय परे, कुरविंद रु कुकम लेख करे ॥७४६
पग हाथन में तुहि रेख परी, केऊ मछ्छ-धुजा श्रीय वछ्छ करी।
विपरीत भई लिखनी विव की, सव आस गई रिवकी-सिवकी ॥७४७
इम रोवत डारत आँसुन कों, उरभावत साँस उसासन कों।
मुख-चुंवन लागीय मोहित कै, रख हाथ गरै सुत रोहित कै ॥७४८
भहराय कै सोय अचेत भई, केऊ देख परोसिन येह कही।
कुन है अवरात अहो कुटला, करनी कहा किन्नीय मत्र कला ॥७४९
सिसु-घातनी आजलों नाँम सुनों, दुरभागन देखीय आँख दुनी।
नही छोरहिगे विनही निरनै, केऊ वार की फैल लगी करनै ॥७५०
गहि केस कलाइय पाव गला, उर पै सिसु वाँधेऊ डार इला।
वहु पीट-घसीट कै ऐंच वहे, समसाँन की भूँमीय जाय सहे ॥७५१
वुलवाय चडालन वीचन कों, चट सौंप दई तिह नीचन कों।
सिसु-कोनप[3] ताहि दिखाय सही, करकै निरनै सव वात कही ॥७५२
इह वालक-घातनी है अदया, द्रुत मारहु लावहु नाँहि दया।
इतनी सुन वोल चडाल उठे, जमराज के किंकर जेम जुटे ॥७५३
परचाय कह्यौ पुर वासिन कों, सुनीयै सुपचाधिप सासन कों।
श्रीय विप्रन घातीय वाल तया, गऊ-हिंसक सुवृन-चोर गता ॥७५४
गरू नारन गाँमीय गैल ठगी, अरू आग लगावत पूर अघी।
मदपेईय लोप मृजादन कों, सोइ दूंख करै पुन साधुन कों ॥७५५
इतने वधकारक है अधमी, जिह भार सौं पीडत होत जमी।
घर जाहु नचीत[4] ह्वै येह घरी, मन मॉंनकै दुष्टनी राँड मरी ॥७५६
इतनी सुन होय सुखी उर मैं, पुरवासीय ऊठ गये पुर मैं।
चुटला गहि हाथ चडालन नै, जुर आय सवै तीय जालन[5] नै ॥७५७
हरचद कौ वोल कह्यौ हठ कै, सुपचाधिप दास सुनौ सटकै।
सिसुघातनी खेल खिलाय सवै, इह नार सँघारहु वार अवै ॥७५८
इतनी सुन भूपत काँप उठ्यौ, निस नारीय मारन-काज नंट्यौ।
तमकयौ तव देख चडाल तंही, निरनै कछु जाँनत धर्म नही ॥७५९

१ ज्योतिष-पञ्चाङ्ग। २ रद्द, व्यर्थ। ३ शव। ४ निश्चित।
५ जाल, कपट रखने वाली।

वहु मारत पाप निवारन कौ, अव चाहत ताहि उवारन कौ।
सँमुझै नही स्वाँमीय-सासन कौं. भरनै उर लागेऊ भासन कौ ॥७६०
मिलहै दोइ दोसतें दड महा, करहै हमरौ नही जोन कहा।
नही राँनीय जानेऊ राजन है, सुपचाँन कै दास समाजन है ॥७६१
गृह केस जबै कछु दूर गये, करकै विनती इह वात कहे।
हम पूत जरावन दौ पहलै, अव ईस दयौ दुखकौं सहलै ॥७६२
पुन मोहि प्रहारहु पापिन कौ, तन खोय कै जीतुहुँ तापन कौं।
कहि भूप दयौ करीयै करनी, विध सुक्तम वेद जही वरनी ॥७६३
सुन सासन दास लयौ सुत कौं, हहराय्र हीयै गनकै हित कौं।
पुन लागीय फेर पुकारन कौं, परचाय बहारन-पारन कौ ॥७६४
धर रोहित पूत धरयौ धरपै, झटकै भूप-गह्यौ झरपै।
उघरयौ मुख चद-उजारीय मै, विकस्यौ मनु पकज वारीय मै ॥७६५
सिर-वार लसै गुँघरारे सही, तिल-फूल सी नासका देख तही।
सित दाँत लसै अधुराँन समा, जनु विद्रुम-सपुट हीर जमा ॥७६६
भृमरावल भ्रूह दिपै भरीयाँ, अनीयारीय पकज आँखरीयाँ।
लख कै सिसु की चिव चित्त लुभा, प्रगटयौ हीय सात्वक देख प्रभा ॥७६७
वपु रोहित कै अनुकार वचा, रमनीय्र महाँ विध-रूप रचा।
विललावत राँनी कही वतीयाँ, तन ताही को आँच लगी ततीयाँ ॥७६८
गस आयकै भूपत भूँम-गिरयौ, वभक्यौ हित आरत-पेम भरयौ।
हीय जाँन लई वीनता हमरी, मुँह अंगज की इह लोथ मरी ॥७६९
जव राँनीय जाँन लई जीय मै, पितु रोहित भूप इही पीय मै।
दुख सौं कहिकै मुख हाय दई, भरतार कौ देख अचेत भई ॥७७०
अवधेस सुरेस समाँन इही, महि डोलत है समसाँन मही।
तिह रूप न रग रह्यौ तन कौ, दरसाव इही पलटै दिनकौ ॥७७१
धन मै हुय कै छत्रधारीय की, दुज-दासीय होय दुखारीय की।
सुत दास भयौ समसाँन समा, अरू राजहु जात भये अधमा ॥७७२
कित मारग लाग गई करनी, वन आवत नाँहि जथा वरनी।
अवधेसहु देख उजागर मै, सुकीया दुख बूडीय सागर मै ॥७७३
मुख देखत राजकँवार मरयौ, पुहमी पग हाथ पसार परयौ।
कहि रोहित-रोहित क्रन्दत है, उठकै नही होत अनन्दत है ॥७७४

कलि देख हमैं छल क्यूं करीया, हित सौं नहीं देत है हूँकरीया[1]।
अहो वछ्छ[2] करी कहा देर इती, पितु तेरी सनातन औवपती ।।७७५
विड रूप दिखावत वेख वन्यौ, गहि भीत लई कपि साच गन्यौ।
वतराय रह्यौ सुख-वाँनन तै अजहूँ नही बोलत आँनन तैं ।।७७६
बपु घेर लयौ कहा आय वला, लरकाई के ख्याल दिखाहु लला।
विव आँखन नीर लग्यौ वहनैं, केऊ आरत-वात लग्यौ कहनैं ।।७७७
सुखहू न भह्यौ हित सौं सुत कौ, विनता जुत राज-विभौ वित कौ।
छिन मैं इक साथहि छूट गयौ, लिखनी विधकी सुत सोक लयौ ।।७७८
हठ फाटक तूटत नाँहि हीया, कररौ हुँय जूटत कोन कीया।
प्रीय रोहित पुत्र सु प्राँनन सौं, अब बोलत नाँहिन आँनन सौं ।।७७६
भवतव्य विचारत मोह भयौ, गत पै पति राँनीय आय गह्यौ।
नीयराय लखी मुख नैंनन सौं, वतरावन लागीय वैंनन सौं ।।७८०
हम वेच दई निज हाँथन मौ, स्त्रीय पुत्रहु धर्म सनातन सौं।
गत रावरी या विध होय गई, निज नाथ कही इह वात नई ।।७८१
सुत-सोक कौ हीय गयौ सपना, अहवाल विचार कहौ अपना।
नृप वीतीय वात कह्यौ निरनौ, मन सोच विचार लयौ मरनौ ।।७८२
सुत के विन जीवन मृतु-समा, जरहै अहु येकत होय जमा।
छिन पै रचकै इक काठ चिता, पतनी सग लै सव[3] पुत्र-पिता ।।७८३
थिर बैठन लागेऊ जाहि घरी, कर जोरकै वदना मात करी।
जिह नाँम सताक्षीय जाहर मैं, ठहरी सोई कासीय ठाहर मैं ।।७८४
पच कोस पै धाँम है मात परा, तन बृह्म-सरूपनी सो अपुरा।
करुना कर भक्त-सहाय करी, अंत आतुर चातुरता ऊबरी ।।७८५
धृमराज पुरदर अग्र धरे, खित ताहीपै कीनेऊ आँन खरे।
सुर आयेऊ सग जहाँ सिगरे, भलकै मुनिहू रिखि सग भिरे ।।७८६

दोहा

सव देवन कौं सग लैं, आई मात उवेल।
हरख भयौ हरचद कौ, मात सुरन लख मेल ।।७८७

---

१ वार्तालाप के समर्थन मे 'हूँकारा' देना, बोलना। २ वत्स, पुत्र। ३ शव।

छंद द्रु-अ.खरी

विध विस्नू महेस विख्याता, विस्येदेव साध्यगन वाता।
लोकपाल चारन सुर लेखहु, नाग सिद्ध गवर्ब निरेखहु ।।७८८
वडवा-सुत आदक वृंदारक, धन्य धन्य कहि रिखी मुनी धारक।
विस्वामित्र नाँम वाखाँनत, जाँनलेहु जाँको हम जाँनत ।।७८९
विस्व-त्रई के सग विसेसा, मैत्री करन जु चहत हमेसा।
मिस्वामित्र तिही को वाचक, समुज लेहु नृप सावन साचक ।।७९०
विस्वामित्र सहेत विसेसन, इह तुमको कीनौ उपदेसन।
जिह तुम ताप करयौ है जी कौं, सत्य वताय दयौ सवही कौं ।।७९१
आये सग ही रिखी अपारा, वदन कर सुख करहु विहारा।
वोले धर्मराज तव वाँनी, सुनीयै राज रिखी सुग्याँनी ।।७९२
तुमरी देखी हमहु तितक्षा, पुन इद्री निगृहन[1] परीक्षा।
भये सतुष्ट सत्वगुन भासन, आर्जव सजुत धर्म अभ्यासन ।।७९३
रही धारना सव विध रूरी, येकहु वात न सही अधूरी।
इद्रा कह्यौ सुनीयै अवधेमुर, धीर धर्म पथ महा धुरंधर ।।७९४
हे हरचद नैंक इत हेरहु, अव कोनै विध करत अवेरहु।
नारी पुत्र जुतै नरनाथा, सत्य तिहारै करेऊ सनाथा ।।७९५
जीतै जीय दुरलभ है जोई, तेई वास देत है तोई।
सोवत चिता देख रोहित सुत, इद्र कराई वरखा अमृत ।।७९६
मृत्यु अकाल निवारी मघवा, अवगुन दूर भये तन-अघवा।
वरखत कुसम दुंदभी वाजे, अतरीक्ष जय होत अवाजै ।।७९७
तन सुकमार कुमार तहाँ तै, जागे सोवत चिता जहाँ तै।
नृप हरचदहू सैंव्या-नारी, सुत रोहित मिल भये सुखारी ।।७९८
अक लगाय करत अवलोकन, धीरज वार सुखन दै धोखन[2]।
विछुरी सफरी[3] मनहु वार मैं, पैठी माँनहु वारपार मै ।।७९९
माता सुत देखे सुख माँन्यौ, जीय के अभय-दाँन सुख जाँन्यौ।
राजा आनद पूरी रली, मनिधर मनहु गई मनि मिली ।।८००

---

१ मू० प्र० निगृन। २ ढोकन = प्रणाम। ३ मछली।

सुतहु मात-पितु देखत सरसै, पंकज मनहु सूरकर[1] परसै।
भयौ अपूरव सुख सब भाँती, परख-परख हरकत सुरपाँती ॥८०१
राजा दिव्य-देह भई राँनी, इंद्र मनहु सोहत इद्राँनी।
इद्र कह्यौ हरचद पुन ऐसै, कीने सत्य-कर्म तुम कैसै ॥८०२
वसहु स्वर्ग मै हमहु वसावत, और जीयत जीय मनुजनआवत।
स्त्री पुत्रहु[2] सहित पधारहु, विबुधालय महि अभय विहारहु ॥८०३
इद्र-वचन हरचद सुने इह, जोर करग प्रतिउत्तर दीय जिह।
सुपच-दास मै मो वँह स्वाँमी, अग्या सिर धारत अँनुगाँमी ॥८०४
सासन जो दैहै तुम सगा, दिव्य वसैहू देवन-द्रगा।
अग्या भग करूँ नह वाकी, तन मन कीन प्रतग्या ताकी ॥८०५
धर्मराज वोले सुन धीरै, परी विपत नृप आई पीरै।
सुपच-वेख हम करे सरीरा, करी सुर्वार भूम करवीरा[3] ॥८०६
पुरी चडाल वसाई आतर, वँह कासी की सीव अवातर।
और नही सुपचाधिप येकौ, लाग लगाय माँग है लेखौ ॥८०७
चिंता तजहु सत्यपथ चातुर, इद्रपुरी पग धारहु आतुर।
इद्र कह्यौ नृप करीयै ऐसै, जमराजा भाखत है जैसै ॥८०८
अरजी इद्र करी नृप औरै, जमराजाहू कौं कर जोरै।
अवधपुरी मम विनाँ उदासी, वाट विलोकत है जनवासी ॥८०९
ताप वसाय रहे है तन सौं, मै किम भूल जाहुगौ मन सौ।
सुहृद-विसार वसूँ जो सुरगा, विललावहि कारन अपवरगा ॥८१०
सुजन तजै लागै अघ सगा, पडित कहै सुन्यौ परसगा।
हथ्या वृह्म गऊ स्त्री हता, मदरा पाँन समाँन महता ॥८११
अवधपुरी मोहि सुहृद अनेका, येकन तै अधके है येका।
सवही है मेरे सतसगी, वहुते नाँम धरहि वैहरगी ॥८१२
अपजस तिनकौ लहूँ न ऊपर, सोच विचारत सुनौ सुरेस्वर।
स्वर्ग-नर्क है तिनके सगा, इनसौं कवहुँ न होऊँ असगा[4] ॥८१३
सुरपत कह्यौ सुनहु अवधेस्वर, प्राँनी जिते वसत कवसलपुर।
करनी ऊँच-नीच तिन केरी, वसै स्वर्ग कैसै इकवेरी ॥८१४

१ सूर्य-किरण। २ मू प्र. पुत्र सहित स्त्री। ३ श्मशान-भूमि। ४ पृथक।

तिनकी कही विचार तुरता, नीत-निधान सुधर्म-नीयता।
बोले नृपत विनय-जुत बाँनी, जैसी गत हमरी जोय जाँनी ॥८१५
तुम सौ सोच कहत हैं ताही, अहमत की बातें अवगाही।
राजा भाग लेत परजा सौं, जग्य आद पुन करत सु जासौं ॥८१६
दुख-सुख सहस नृपत सग दोऊ, करनी नृप भागी सह कोऊ।
करें जुदे हम तिनको कैसे, इह विचार मुख बोलत ऐसे ॥८१७
येक दिवस अथवा-क अनता, वसहि सग सुनीयें वरतता।
सुर इद्राद मुनी कौसक सुन, पुन हरचद भये सुन परसन[1] ॥८१८
आये नगर अजोध्या येहू, भूप प्रजा सौ कह्यौ जु भेऊ।
सत हरचद नृपत के साथी, जन सुरलोक चलहु सब जाती ॥८१९
परजा भई अनदत पूरी, राजा सत्य वात सुन रूरी।
राजा सुहृद जिते सुखरासी, इह जग तै सव भये उदासी ॥८२०
सौंपे घर के काँम सुतन कौं, ऊँन्नत कुलकी राखहु तन कौ।
रोहित राज-सिघासन राजा, सौंप्यौ वैभव सहित समाजा ॥८२१
राँनी सग लीयै राजेसुर, परजा सहित पधारे सुरपुर।
वाजे देव दुदभी वाजा, सुरग वस्यौ नृप सहित समाजा ॥८२२

सुक्राचारजजी के श्लोक के भावार्थ की येक चौपाई समेत पंडित महेसदत्त सुक्ल कृत प्राचीन चौपाई

चौपाई

अहो तितक्षा केर महातम। अहो दाँन फल अहै पुरातम ॥
तिह प्रभाव हरचद नरेसा। सुरपुर गवन्यौ सहित सुरेसा ॥८२३
कहत सूत हरचद-कथाँनक। तुम सन कहा मुनीस सुभाँनक ॥
दुखी सुनत जो इह सुख पावत। सत्य कहत कछू नाँहि कहावत ॥८२४
स्वर्गार्थि सुरपुर कँह जावहि। पुत्रार्थि उत्तँम सुत पावहि ॥
भार्यार्थी[2] पावहि सुभ दारा। राज़ार्थी नृपत्व ससारा ॥८२५
हरिश्चंद्र- सम भूपत आँना। सत्य प्रतग्य न भयेऊ जहाँना ॥
उन सम कर्म कवर के जोगू। वँही भये नहि अब कोऊ लोगू ॥८२६

---

१ प्रसन्न। १ मू० प्र० भारार्थो।

दोहा

सुन जनमेजय व्यास सौं, चिरत[1] भूप हरचंद।
सवही सभाजन हित सहित, अत चित भये अँनद ॥८२७
मात सताक्षी कीय मया, सुमरन करत स-गाँन।
इहै मात कहाँ अवतरी, जाँनी चाहत जाँन ॥८२८

छंद हरगीतका

वोले सु व्यास विचारकै माहाराज धन्य महीपती।
देवी सताक्षी सुभग-दायक सदा पूजत सुक्रती ॥
देवी जु वाचक वर्न-द्वै चित सौं करै कोऊ चिंतना।
अममेव[2] फल पावै वही आवै जु ताकौ अत ना ॥८२६
सुनीयै सताक्षी चिरत श्रवनन पाप मेटहु पिंडकै।
उर करहु भक्ती सक्ती अवचल मुक्ती उक्ती मंडकै ॥
कुल भयौ इक हरनाक्ष कै सुत रुद्र कौ दुर्गम सही।
दाँनव विचक्षन महा दारुन जाँनीयै कारन जही ॥८३०
उर करेऊ जाहि विचार इह सुर कौ जु वल भूसुर सुतै।
भूसुरहू वल है वेद-भासन जग्य-कारक है जितै ॥
विघ वेद कौ नासै विना सुर निवल होय न साथकै।
करीयै जु नासत वेद करनी जाँन दुजवर जातकै ॥८३१
तप करयौ कुछ हित होय तत्पर अद्रराट[3] हु ऊपरै।
इक सहँस वीते अव्द वाकौ कठन गत करनी करै।
सुरजेष्ट[4] ताकौ दयौ दरसन कह्यौ लै वरदाँन कौं।
वोल्यौ सु दैत विलोक कै अवगाह कै अवसाँन कौ ॥८३२
हमकौ हु दीजै वेद-हसग[4] विप्र जाँनत जिह विधी।
जग-वीच जेतक मत्र-जप सुर-असुर साधत जिह सिधी ॥
सव जीतकै हम ह्वै सुखी विसतारहूँ जस वसुमती।
रुच भक्ति करहूँ रावरी सतधृती दाता सुक्रती ॥८३३

---

१ चरित्र। २ अश्वमेध यज्ञ। ३ हिमाचल। ४ ब्रह्मा।

तँह तथा-अस्तु कह्यौ तही वृह्मा जु हेत विचारकै।
सत-लोक विधहु सिधायगे वरदाँन दै तिह वारकै ॥
करनी जु भूले सवही द्विजकुल स्नाँन सध्या सेवकी।
स्रुती-सूमृती विन होम साधन द्युति घटी सब देव की ॥८३४
महि-वीच हाहाकार माच्यौ मूढ भये सब माँनवी।
भूदेव वोले कहा भयौ दिखरात माया दाँनवी ॥
जप-जग्य सौं सब पुष्ट निरजर[1] दीन ह्वैगये देह सो।
सुरलोक लीनौ घेर असुरन गवन कीनौ गेह सौ ॥८३५
गिर-गुहा काँनन वीच गहवर लुरखरात[2] लुके-लुके।
बलहीन ह्वै अत दीन विहरत रहत कंद रुके-रुके ॥
जप वध होम भये जमी वरखा न होवत वार की।
सलता रुकी अरु सुके सरवर, क्षपी वारह भार की ॥८३६
वसु वर्ष सत रही अनावृष्टी त्रस्त स्रष्टी ह्वै तही।
जब विप्र सोच विचारकै जीय गैल हिर्मगिर की गही ॥
परचार ध्याँन समाद[3] पूजा सक्ति आद्या साधना।
जप करत तप वपु जक्त जननी अवर गूढ अराधना ॥८३७
माहेस्वरी महकाय तूं जग जीव अतर जाँमनी।
अब स्याहि करीयै ईस्वरी सब विस्वहू की स्वाँमनी ॥
दुख-दमन तूं सुख-भवन देवी नमन करत निहोरकै।
इह करत विनती आपसौ जग-जननि दहुँ कर जोरकै ॥८३८
सुर-अरज सुनकै भूसुरन की भई सरगुन[4] भेसकै।
पुन दयेऊ दरसन होय परसन पार्वती परवेसकै ॥
मनि नील सम जिह नैन निर्मल नील रग निरजनी।
ऊन्नत उरोज अनूप आक्रत भूख जन-गन भजनी ॥८३९
करयुक्त लीनै वाँन कमलहु पुस्प पल्लव पत्र कौ।
साकाद फल नव वस्तु सरभर त्रिप्ति[5]कारक तत्र कौं ॥
नवरात लौ जल नयन सौ वरसाय चहुदिस विथ्थुरयौ।
अन्नाद ऊन्नत ओसधी त्रसी भई दुरभिख टरयौ ॥८४०

---

१ देवता। २ लड़खड़ाते थे। ३ समाधि। ४ सगुण। ५ तृप्ति।

नद वहन लगेऊ नीर निर्मल भरे सरवर सरसगा।
बहु अन्न निपजे भार बारह्न ऊँमती जुत उर्वगा।
सुर और भूसुरहूँ विवध गुन लगे कीरत गावनं।
वर्नना कर-कर विवध-विध पद मात परमे पावनं ।।८४१
कूटस्थ सत-चित रूप कारन नित्य तूँ निर्दोखनी।
भुवनेस्वरी तूँ भगवती परमातमनी जग-पोखनी।
हम क्षुधा आतुर हेर हीय द्रग दिव्य-रूप दिखायकै।
सत-सहँस नैनन धार संचर वार दीय वरसायकै ।।८४२
माता सताक्षी भूँम-मडल नाँम कत्पन सुर नरा।
ससार-बीज-स्वरूपनी वर वढहि श्रीत वनु धरा।
मुनि-जननि अस्तुति करी मिलकै कद-मूल कितेकहू।
अन्नाद दीनी श्रोसधी जुत स्वाद खाद जितेकहू ।।८४३
अन दये पसुवन[1]-काज तव जिह पुष्टिकारक जाँनकै।
जुर करी जीवन जाचना सोइ देय दाँन समाँन कै।।
साकाद दीने स्वादुमय मंस्या[2] जु तिह साकभरी।
जय-जय पुकारत कहत जस विरदाय मात विसंभरी ।।८४४
कीरत कुलाहल अवका कीय सिवरा तरु मालुरी।
दूतन कह्यौं वृत्तात[3] दुरगम भीर दाँनव सगभरी।
सब रथन हय गय सुभट सजुत सहँस अक्षोहन सभौ।
घन जेम प्रलय घुमडकै घहराय देवन पे गज्यौ ।।८४५
घेरे जु जहाँ तहाँ वाट घाटन सैन ठाटत सम्भकै[4]।
अतसय अचानक भू भयाँनक वढे आनक वज्जकै।
हलचलीय सागर सीम लाहद वढे दैत वली-वली।
अराय सुर-भूसुर उठे गरराय भाग गली-गली ।।८४६
मुनिगनन मैं कलवली माची कली[5] दैत प्रकोपकै।
समसुप्त मानिहु वार सरसत लहरनिध[6] हद लोपकै।
कर त्राहि कूकन लोक-लोकन थोक-थोकन थडकै।
गहमहे पोषन प्राँन-पोखन मात पोखन मडकै ।।८४७

१ पशुओं। २ सज्ञा=नाम। ३ मू प्र वृतात। ४ मू॰ प्र॰ सभकै। ५ पापी। ६ समुद्र।

सवोव देवी सुरन कों अवलव दैन उतावरी।
पुन आप तन कीय अगन परगट समुझ माया सावरी।
चँहु ओर फेरी चकर दै विच देव जात वचायकै।
कलकारनै वाहर कढी रमनीक-रूप रचायकै ॥८४८
कर-चाप लै टंकार करकै आय असुर उमंडकै।
करखन लगे गुनवांन वर्खन मेघ धारन मंडकै।
मूंदे सु तिह छिन भूरमडल स्वर्न पर्नहु सरन सौं।
अवलोक सुर मुनि ह्वै अचभत भीत असुरन भरन सौं ॥८४९
निज आप तन मौं श्रीनिरजनी रूप केऊ परगट करे।
सोइ सक्तियां सख्या सुनौ द्रग देखकै दांनव डरे।
तारनी वाला और त्रपुरा काल दनुजन कालका।
मातगी तेज अगाव मडंत जगत मांनहु ज्वालका ॥८५०
भैरवी वगलामुखी भ्राजत रमा पुन-अवरेखीयै।
तुलजा रू त्रपुरासुंदरी द्रग छिन्नमस्ता देखीयै।
कामाक्षी मोहनी गुह्यकाली जभनी अन जांजुला।
दस-सहँस वाहुक और देवी केऊ वतीस भई कला ॥८५१
इन छोर चवसट भई अवरै सस्त्र-अस्त्र सँचारकै।
जुव करन लागी जहां-तहां विकराल-रूप विथारकै।
सघार दनुजन करयौ सगर दिवस दस दसहु-दिसा।
वरसात कीनी जिही विच सौ रुधर भीनी पुन रसा ॥८५२
दिन ग्यारहै फिर दैत दुर्गम सुही वेख सँवारकै।
छत्तीस[1] आयुध तन सझे रथ चढयौ कारन रारकै।
सव सग लीनी बची सैन्या दुष्ट-रूप डरावने।
सव सक्तीयां जीती सु समहर[2] उमड लागौ आवनै ॥८५३
देवी सताक्षी देख दुर्गम क्रुद्ध कीय रन करनको।
तरकस निकारे वांन तिछछन धनुप सिजा धरनको।
कर तांनकै गुन कान ली दनु प्रांन-हारक तज दये।
विवु[3] वदन लागे अस्व वपु कौ हेरकै च्यारहु हये ॥८५४

१ मू प्र छतीस। २ युद्ध। ३ चद्राकार।

इक वान मारचौ सारथी ऊर वूजकै धरनी वुक्यौ।
समरथ्थ मथ्थह धून समहर रथ्थ पै दांनव रुक्यौ।
पुन येक दै तोरी पताका उडी अवर ऊव कौ।
वल घटचौ तोहुन हटचौ वहुरै जुटचौ देवी जुद्ध कौ ॥८५५

दोऊ वांन दै दोऊ द्रगन मै कलिकलत वली उन्मुख[1] करचौ।
तन वांन मारे हृदय मै तिह पिंड गिर धरनी परचौ।
निरजीव ह्वै तिह जोत निकसी मात की दुति मै मिली।
सुख भयौ भूसुर सूरन कौ त्रहुलोक की विपदा टली ॥८५६

वृहमाद देव विचारकै सिव अग्र कर आये सवै।
कर वर्नना अत जोर कर कौं जीय करी परसन[2] जवै।
सतुष्ट ह्वै सुर-भूसुरन सौं कही श्रीमुख कारना।
चिद वेद है मोहि अग च्यारहु ध्यांन धारहु धारना ॥८५७

मरजाद वेद सु भूँम-मडल प्रजा-हेत प्रचारीयै।
वैवेय-भये सव वेद विन निज हृदय मै निरवारीयै।
उपदेस मेरौ सत्य इह जामै न ससय जानीयै।
दुरगम सँघारचौ खेत दांनव मोह दुर्गा मांनीयै ॥८५८

दुर्गा कहौगे महादुख मै आय करहुँ उवेल कौ।
साकभरी कहि करहु- सुमरन अन्न दैहु उभेल कौं।
सुमरन सताक्षी करहु सावन वृष्ट करहूँ वार की।
सुर और भूसुर सुनहु सव निज नेम के निरधार की ॥८५९

इह चिरत जो मेरौ अनूपम सुनहि कोऊ सध्या समै।
कर सिद्ध मन की कांमना अरू अतपुर मो अनुक्रमै।
वरदान दै सुर मनोवचत सुभग-लोक सिधायगी।
भूसुरन कौं उर भावना द्रढ वेदमय दरसायगी ॥८६०

दोहा

सूरजवसी सोमकुल, भूम भये जे भूप।
परासक्ति के भक्त पुन, अतही भये अनूप ॥८६१

---

१ अधा। २ प्रसन्न।

महि पै पाय महत्व कौ, वसे स्वर्ग मे वास।
उपजे देवी-अग सौं, देवीहू के दास ।।८६२
और जगत मे अवतरे भक्ति विनाँ भुव-भार।
साखी इह ससार कौं, काटन सिफा[1] कुठार ।।८६३
धान्यार्थी ज्यूं धाँन लै, परहर भाग पराल।
सेवै परा जु सक्ति कौं, जक्त त्याग जजाल ।।८६४
दुग्ध वेद कौं दोहिकै, सार निकार्यौ सिध।
जे जन जग मैं जाँनीयै, पराभक्ति परसिद्ध ।।८६५

छद अरध हरगीतका

सव विश्व ऊपर स्वाँमनी, जग-जीव-अतरजाँमनी।
विध- विस्नु रुद्र विसेखीयै, देवाध देव जु देखीयै ।।८६६
आसन वनायइ माँन की, थित कोन बैठहि थाँन की।
श्रीमहादेवी अनुसरे, किल पच बृह्मासन करे ।।८६७
इन पाँच सौ अधकी अभै, नारायँनी जाँनहु नृभै।
महमाय मैं अनुमाँनीयै, जग ओत-पोत ही जाँनीयै ।।८६८
जिह सक्ति कै बिन जाँनीयै, मुक्ती न कवहूँ माँनीयै।
आकास कौ अवगाहकै, थित सिधु पावै थाहकै ।।८६९
भुवनेस्वरी विन भाव सौं, पुज्जै न मुक्ति पसाव सौं।
साखा जु स्वेतासित रमै, परभाव सो चहु पत रमै ।।८७०
ध्याई जु जाँनत धारना, कहै अबका जग कारना।
अरू ध्याँन जोग उपाव सौं, पुन गुननके परभाव सौं ।।८७१
देवात्म सक्ति दिखात है, वहु गूढ जाकी बात है।
सारूप जोत विसेखीयै, देवीजु देवी देखीयै ।।८७२
वहु जतन करत विचारकै, साफल्य जन्म सुधारकै।
लज्या जुतै भर्य लायकै, अत प्रेम ह्रदय उपायकै ।।८७३
सुख विसयके तज सगकै, रुच भाव सौं मन रगकै।
हीय रोककै चित हेत सौं, स्वाभाव सिद्ध समेत सौ ।।८७४

1 जड़।

मॉनै जु नेष्टा[1] मायकी, जाचै सु भक्ती जाहि की।
वेदात-सास्त्र बिचार कौ, सासन इही ततसार कौं।।८७५
सोवतहु जागत साथ मैं, वैठतहु ऊठत बात मैं।
ध्यावे जु देवी ध्यॉन कौ, उर धारकै अनुमान कौ।।८७६
वेराट-रूप विसभरी, इह विस्वहू की ईस्वरी।
इम प्रथम कर आलोचना, रुख तिही करीयै रोचना।।८७७
रमतीत सूत्रहु रूपनी, उपदेस ग्यॉन अनूपनी।
जीय जॉन [अतरजॉमनी, साखी सरूपा स्वॉमनी।।८७८
सोपॉन-क्रम सौ साधना, उर करै नित आराधना।
जब चित्त-सुद्धी जॉनीयै, पुन ग्यॉन-ध्यॉन प्रमानीयै।।८७९
सच्चदानद सरुप की, अभलाख कर अनुरूप की।
सेवै सु वृह्म-सरूपनी, भज प्रेम जग की भूरनी।।८८०
पर सोइ उलास प्रपचकै, वृती[2] लीन करीयै वचकै।
आराधना जानौ इही, कछु और नंही जातै कही।।८८१
सूरज रू वसी सोम के, सुगता भये नृप भोम के।
वरनी सु तिन की वारता, अरू दॉन कीत उदारता।।८८२
वूभन सु चाहत वूभीयै, हीय नृप कतारथ हूजीयै।
इह कही व्यास उचारकै, वॉनी विधॉन विचारकै।।८८३
जब करुपति करजोरकै, वूभै सु प्रस्न वहोरकै।
इक अरज मेरी औरहू, थिर चित्त सुनीयै[3] थोरहू।।८८४
कथ आप इह पूरव कही, श्रीपराअवा है सही।
त्रहु-देव कौ देवी त्रहूं, कीनी पसाव सु जिन कहूँ।।८८५
अरू आपही यैंसें कही, श्रीखीरसागर-धीसही।
गौरी-सुता सु गिरीस की, अरधग है सोइ ईस की।।८८६
वँह मूल-देवी आद सौं, अवतरी सुद्ध उपाध सौं।
पद्मा सुना पाथोद मैं, गौरी सु हिमगिर-गोद मैं।।८८७
ये पुनर कैसे अवतरी, विस्नू महेस्वर जिह वरी।
कहीयै सु सवही कारना, धारै सु हीय मै धारना।।८८८

---

१ निष्ठा। २ वृत्तियों को। ३ मू प्र. सुनी।

सुन प्रस्न कुरूपत श्राँन सौं, पारासरेय प्रमाँन सौं।
वारता लागे वर्ननें, कल्याँन जगकी कर्ननें ।।८८९
श्रीपराश्रवा सेव कौं, दीय सक्तीयाँ त्रहुँ-देव कौं।
स्त्रष्टी रची तिह साथही, वसुमती वीच विख्यातही ।।८९०
परजा वढी परमेस्वरी, अनुकंपया जुत ईस्वरी।
इक हलाहल दनु ऊपज्यौ, गहराय देवन पै गज्यौ ।।८९१
वृह्माँ सु लै वरदाँन कौं, थित जीत देवन थाँन कौं।
त्रयलोक-विजय करी तही, सुर जेर तँह कीने सही ।।८९२
कथलासहू घेरयौ करयौ, वयकूठहू नही ऊवरयौ।
काँमार[1] अरू कंटभअरी, पुन भीर तिनहूँ पै परी ।।८९३
लरनै सु लागे लाग सौं, रन-विजय के अनुराग सौं।
रमतै हायन रारकै, ह्वै गये साठ-हजारकै ।।८९४
जीते सु दाँनव-जात कौं, सिव-विस्नु येकै साथ कौं।
छित दाँनवन कर छेह कौ, गवने सु दोउ सुरोह कौं। ८९५
श्रीपरा दीनी सक्तीयाँ, जिह सौं मिले सुख जुक्तीयाँ।
अभिमान कर-कर आपकौं, तिह दैन लागे ताप कौं ।।८९६
मसकरी[2] कर-कर माँन सौ, वातैं वनाय विधाँन सौं।
जीते सु जिनही जोर सौं, वह समुझ औरही और सौं ।।८९७
दुर्गा रमाँ देवी दुनौ, अपमाँन संमुझयौ आपुनौ।
मेटन सु दोउ सुर माँन कौं, धारयौ सु अतरध्याँन कौं ।।८९८
सोइ आप रूप समायकै, विपु दिव्य गइय विलायकै।
हर हरी पहुँचे हाँन कौं, निस्तेज भयेऊ निदाँन कौ ।।८९९
सुरसहित सृष्टं समाज के, करता न काहू काज कै।
वृह्मा विचारी वारता, उर जोग-ध्याँन अधारता ।।९००
इह देवीयाँ अपमाँन सौं, गम हीन ह्वैगये ग्याँन सौ।
सव विस्व करन सनाथ कौ, करनै लगे जग काथ कौ ।।९०१
तिहुँ देव-कारज तिष्टकै, सुरजेष्ट करत समप्ट कै।
उतपत्त पालन आद कौं, वहु रहत करत विखाद कौं ।।९०२

---

१ महादेव। २ विनोद, हँसी।

थविरहू[1] भये मति थोय कै, हारे मु केऊ दिन होत कै।
सुविचार विध सुत सलमले, मन्वाँद सनकादिक मिले ॥६०३
द्रग पिता विध कौ देखकै, वारता वूज विसेख कै।
क्यूँ खेद-जुक्त क्रपान जू, हमको जु कहोयै हाल जू ॥६०४
जव कही विध मुत जाँनकै, सव रीत परम सयाँनकै।
हित सृष्ट करता हरि-हरा, भये सक्ति-होन विसभरा ॥६०५
मैं काज करता मोरकै, इन काज करत जु ग्रौरकै।
कल परत नाहिन पलक कौ, खित पै सँभारत खलक कौ ॥६०६
तुम जतन करहू ताहि कौ, मिल भजहु श्रीमाहामाय कौं।
दै सक्तीयाँ सुर दहुँन कौ, गौरी रमाँ कर गृहन कौ ॥६०७
सामर्थं लैकै सक्तीया, जव काज जाँनै जुक्तीया।
हर-हरी समलै हाल सौ, जव छुटै इह जजाल सौ ॥६०८
हम करै तप-जप हेरकै, वन सकै नहि इह वेरकै।
परसन कर परमेस्वरी, हित मोहि करहू हर-हरी ॥६०९
इह उकत सुन विध आपकी, जग-जननि पूजा जाप की।
विध वेद करहु विचारकै, ध्रुव ध्यान निस्चय धारकै ॥६१०

दोहा

परजापत दक्षाद पुन, सनकादिक मनु सग।
करन लगे जप-तप कठन, पूजा मात प्रसग ॥६११
वीते तिनकौ लख वरख, आराधना उपाय।
परसन ह्वै दरसन प्रगट, श्री दीनौ सुराय ॥६१२

छद त्रोटक

करुनारस-भीनीय मात क्रपा, तिह नैनन मै सरसात त्रपा।
कर पंकज पासहु अकुसकै, वर मुद्रका लाय अभै वसकै ॥६१३
त्रय-लोचन भाल विराजत है, प्रतिछद्र प्रभा परकासत है।
सचदानद विस्व-स्वरूप स्वय, महा सु दर सचर तेज-मय ॥६१४

१ ब्रह्मा।

नुत को करकै सुर पायन मै, हीय जान कृतारथ कीन हमै ।
विनती इह कीन सबै विबुधा, सुन मात कहे वच रूप सुधा ॥६१५
किह कारन मोकह याद करी, परचाय कही कहा भीर परी ।
इतनी सुन देव करी अरजी, गुन-हीन सबे हम है गरजी ॥६१६
पद पंकज भूलकै सेव-प्रथा, विसीया[1] रस मै रहे भूल वृथा ।
तऊ मांत कृपा करकै अगुनी, सुर-भासन की अरदास सुनी ॥६१७
असमर्थ भये सिव विस्नु अजा, परभाव भई जिह पीड प्रजा ।
अजहू फिर काज करयौ इनको, मिलकै सुग मांन तज्यौ मनको ॥६१८
सिव विस्नू पसाव करौ सगती, जिह तै सब पीर मिटै जगती ।
सुन मात कही इह वात सही, निरनौ सिव जांनत विस्नु नही ॥६१६
सगती लहि सृष्ट सबै सिरजा, परपूरन[2] भूम भई परजा ।
अपमांन करयौ तज आदर ज्यां, विलमाय गई नभ वादर ज्यां ॥६२०
परजापत येह सुनो प्रवती, सोइ ग्रेह-सुता तुहि होय सती ।
अौय होय सुता पुन सागर की, अत रूप अनूप उजागर की ॥६२१
अपमांन करै कबहूँ अब ना, करदेहु हरी-हर को कहना ।
रिभु लोकप अौ सनकाद् रिसी, वरदांन कौं दै मनीदीप वसी ॥६२२
सनकादिक आद सबै सुरहू, विध को कथ अांन कही वरहू ।
पचअांनन अौ वयकुंठ-पती, समरथ्थ भये लहि कै सुमृती ॥६२३
करनै पुन लागेऊ कारज कौं, उर मै गहिकै अत आरज[3] कौ ।
जगमात प्रीया सोइ धूरजटी, परजापत-ग्रेह सुता प्रगटी ॥६२४
सविसेख धरयौ सोइ नाम सती, सोइ दक्ष दई सिव कौ सुकृती ।
त्रयलोक अनदत होय तँही, रमनी हुय है सिव-संग रही ॥६२५
पतिवृत्त-परांयन सिंभु-प्रीया, सिवकै गृह-वास वसी सुकीया ।
वहुकाल वृतीत[4] भये विव कौ, सुख भोगत जोग सिवा सिव कौ ॥६२६
मुनि जाय कुसारनी[5] आप मतै, सलता जवु ईस्वरी-धांम मुतै ।
जहां वैठकै बीज ही मंत्र जपा, करनी लख मात करी किरपा ॥६२७
हत देवीय फूलन-माल दई, महां सुदर येक सुगध मई ।
मुनि होय प्रसन चले मन सौ, चढकै नभ-पथ जिही छिन सौं ॥६२८

---

१ विषय । २ परिपूर्ण । ३ आर्जव । ४ व्यतीत । ५ दुर्वासा ।

परजापत धाँम गये प्रथमैं, नीयराय सतीकँह् पायन मैं ।
पुहपावलि देख प्रजापतहू, चिव पायकै चाहि चढी चितहू ॥६२६
दिख माँग लई मुनिराज दई, सोइ डार चल्यौ गल-वीच सही ।
अवरोधन वीच गयौ अपनै, तन काँम की ताप लग्यौ तपनै ॥६३०
द्रुत माल उतारकै मेल दई, मदमत्त भयौ रति-खेल मई ।
सती वात सुनी रू महेस्वर मैं, अप्रसन भये अपने उर मैं ॥६३१
सती ईस की वातहू दक्ष सुनी, करनै जव वैर लग्यौ कुहनी ।
जुत रज लख्यौ पितु कौ जवही, सती जार दयौ तनकौ सवही ॥६३२
अवतार लयौ पुन आद अजा, गिरी हैम कै ग्रेह सुता गिरजा ।
कुरविंद्र कही इह व्यास कथा, जिनसौं फिर बूझीय येह जथा ॥६३३
सती जार दयौ तन जाहि समैं, कहौ कौन ऊमापत कोन क्रमैं ।
कहनै पुन लागेऊ व्यास कथा, जग अंतर वीतीय वात जथा ॥६३४

दोहा

सती जरी ताही समय, कीय जग हाहाकार ।
जोग अगन की ज्वाल मैं, चाहि करयौ तन छार ॥६३५
भये ससकत[१] त्रहुँ-भुवन, सुन अरष्ट इक साथ ।
डोल रसा गिर डगमगत, पयनिध उभले पाथ ॥६३६

छद द्वै-अखरी

संकर वात सुनी इह स्रांनन, परम कोप कीनौं पंचानन ।
दहकत अगन मनहु घृत डारयौ, प्रलय किधौं विन अवव[२]प्रचारयौ ॥६३७
भद्रकालका गुन-जुत भारी, वीरभद्र प्रगटयौ जिह वारी ।
महाप्रचड कुद्ध के मारयौ, परजापत कौं जाय प्रहारयौ ॥६३८
प्रलय करन लाग्यौ पुन पुहमी, भयौ कुलाहल सृष्टी भूमी ।
द्रुघन[३] आद सव देव डरांनें, सिव के सरनहु गये सयांनै ॥६३९
अस्तुत करी विवध-विध आरत, अवध विना क्यूं सृष्ट उजारत ।
सकर विनय देवतन सुन पै, गुन कीनौ येते अवगुन पै ॥६४०

---

१ ससंकित । २ अवधि = समय । ३ ब्रह्मा ।

वीरभद्र कौं क्रोध विहायौ, वहुरै अपनै लोक वसायौ।
दक्षप्रजापत सौं तज दार्यौ[1], जोर छगल-मुख ताहि जिवायौ ।।६४१
जिग्य-कुंड देवी तन जार्यौ, वह सरीर लै कंध उपार्यौ[2]।
पिंड मती सौं करकै प्रीती, रोदन करत चले वहु-रीती ।।६४२
भ्रांत-चित्त ह्वै भृमते-भृमते, रेना[3] ऊपर फिरै जु रमते।
विध आदक करते रहे वाहर, वृहमंड सौं जाय न वाहर ।।६४३
विस्नू जब तजवीज विचारी, लै धनुवाँन लगे सिव लारी।
ताक ताक काट्यौं सति[4] तन कौं, जटधर खबर न पारी जिनकौ ।।६४४
इह विस्नू कीनौं हित आछै, पुन वृतत जांन्यौ सिव पाछै।
बोले सिंभु विमल-मति वांनी, भई पतित जहाँ देह भवानी ।।६४५
तीरथ प्रगट भये जग तेते, उत्तँम लखहु धाँम है येते।
जप तप करहि बैठ तिह जागा, सफल होय साधन हु सभागा ।।६४६
माया-वीज इती कहि मुख सौं, दुखी भये माहेस्वर दुख सौं।
इन धाँमन मैं विचरत एको, विरह सती उर-ताप विसेखो ।।६४७
धर समाध उर-ध्यांन जु धारत, सती-सती मुख नाम सँभारत।
धाँम पवित्र नाँम हीय धारहु, निरनै कर भाखन निरधारहु ।।६४८
सिद्ध-पीठ सोई सुस्थांना, जे परगट है वीच जहांना।
स्त्रवन करत जोड नाँम सुहावन, परम पवित्र होय नर पावन ।।६४९
मुख भौ पतित प्रथम कासी मह, विसालाक्षी[5] देवी जांनहु वँह।
जोन देस निमखारन[6] जांनहु, लिगधारनी[7] नाँम निदांनहु ।।६५०
पुन प्रयाग मैं ललता[8] पुनीयै, गँधमादन गिर कांमुकी गँनीयै।
दक्षन माँनस कुमदा[9] देवी, सुर नर नाग सकल जनसेवी ।।६५१
रंम्य उत्तर माँनससर राजत, विस्वकाँमनी पूर विराजत।
विसकाँमा[10] ताँही धाँ वरनत, गिर गोमत गोमती गनीयत ।।६५२
मदराचल पै दनुज मारनी, विरत अँनूपम कांमचारनी[11]।
विहरत सदाँ चैत्ररथ वन मैं, मदोत्कटा मदमाती मन मैं ।।६५३
हथनापुर जयती अघ हनीयत, गौरी पुर कनोज मैं गनीयत।
मल्हागिरी पै रभा माँनहु, आँमृपीठ पै येका[12] आँनहु ।।६५४

१ प्रतिहिंसा-भाव। २ ऊपर डाल लिया। ३ पृथ्वी। ४ सती। ५ विशालाक्षी। ६ निमिषारण्य। ७ लिंगधारिणी। ८ ललिता। ९ कुमुदा। १० विश्वकामा। ११ कामचारिणी। १२ एकाम्रपीठ।

कीर्तमती ताही कौं कहीयत, लाभ कीर्ती जासौ लहीयत।
विस्व विस्वईस्वरी[१] बराबर, पुरहूता देवी है पुमकर ॥६५५
पीठ थान केदार पायनी, देवी तहा सन्मार्ग-दायनी।
है मदा-पर्वत हैमालय, उच्च सुथाँन जाहि कौ आलय ॥६५६
तीरथ है गोकर्न तहांही, जाँनहु भद्रकर्नका ज्याँही।
थानेस्वर जहा खेत्र सुथाँनी, भुवन-भूपनी मात-भवाँनी ॥६५७
विल्वधाँम माँही विलपत्रा[२] श्रीपर्वत माध्वी सुचरित्रा।
भद्रेस्वर मै देवी भद्रा, अखल जया वाराह सु अद्रा ॥६५८
कमलालय[सुथाँन मै कमला, रुद्रकोट रुद्राँनी[३] रमला।
कालजर मै काली सोई, सालगाँम महादेवी सोई ॥६५९
सिर्वलिग ही जलप्रीया[४] सुहाता, महालिग पै कपला[५] माता।
मायकोट मुकटेस्वरी मानहु, मायापुरि कुमारि उनमानहु ॥६६०
ललितअवका संतॉन मै लहीयै, गया मगला पद-रज गहीयै।
पुरपोतमपुर विमला पावन, सहस्राक्षि पुर धाम सुहावन ॥६६१
उत्पलाक्षी महमाय उदारा, सकल ताहि पूजत ससारा।
हिरनाक्ष मै थाँन सुहाता, महोत्पला जँह ठाँम है माता ।६६२
नदी विपासा तापै नहचल, अमोघाक्षी है मात अपरवल।
पुद्रवर्धन[६] मे मा पाडला, सुपार्स मै नारायनि सकला ॥६६३
रुद्रसुंदरी त्रकूट पै राजत, विप्रल[७] मै विपुला हु विराजत।
मलयाचल कल्याँनी माता, सरधाद्रा[८] त्रकवीराह[९] सुख्याता ॥६६४
चद्रका हरीचद्र पै छाजत, रामतीर्थ मै रमना राजत।
जमुना मिरघावती जहाँही, कोटतीर्थ कोटवी कहाँही ॥६६५
माधववनहु सुगधा मुनीयै, गोदावरी त्रसंध्या गँनीयै।
गगाद्वार रतिप्रीया गाँवत, सुभा नदा सिवकुंड सुहावत ॥६६६
तट देवका नदनी त्यूँही, जाँनहु द्वारका रुक्मनी ज्यूँही।
वृदावन मै राधा विहरत, मथरापुरी देवकी महामत ॥६६७
परमेस्वरी पाल मै प्रवीता, सोहत चित्रकूट पै सीता।
विंध्याचल पै विंध्रवासनी, लछमा करवीर मै हुलासनी ॥६६८

१ विश्वेश्वरी। २ विल्व-पत्रिका। ३ रुद्राणी। ४ जलप्रिया। ५ कपिला।
६ पुण्ड्रवर्धन। ७ स्थान विशेष। ८ सह्याद्रि। ९ एकावीरा।

तीर्थ विनायक ऊमीया तैसै, विस्वनाथ आरोग्या वैसै।
माहाकाल माहेस्वरी-माया, उस्न तीर्थ मे जाँनहु अभया ॥६६९
विंध्यापर्वत ज्युँही नितत्रा, ऐसै माड़व-माडवी अबा।
सोहत माहेस्वर पुर स्वाहा, छगल येड परचडा चाहा ॥६७०
अमरकंट चडका उजागर, सोभत बरारुहा सोमेसुर।
पुस्करावती है प्रभात मै, देवमात सरस्वत दिखात मै ॥६७१
पै ससुद्रतट पारावारा, महाभागा महालाव मझारा।
पिंगलेस्वरी पौखापाँही, क्रतसौच मै सिंचका कहाही ॥६७२
कार्तक माहे निसा जु करी, उत्पला वृत लोला अनुसरी।
संगम मोन सुभद्रा सरसत, सिधवन माँही माता सोहत ॥६७३
भरतास्रम पै कला जु भासत, अनग लक्षमी रूप उभासत।
विस्वमुखी जालधर वसयत, किसकवा मै तारा कहीयत ॥६७४
देवदार वन पुष्टी-दाया, कासमीर मेधा जु कहाया।
भीमा हिमा-अद्र पै भ्राजै, विस्वेसुर तुष्टी सु विराजै ॥६७५
श्रद्धी क्रपाल मोचन सोहत, वरारोहन मै मात विमोहत।
धरा माँत तूं सखोधार मै, पिंडाकारक धृती प्रकार मै ॥ ६७६
चद्र-भागातट कमला छाजै, सिव-धारनि मच्छोद समाजै।
वेना मै अमृता वसाता, वद्रकास्रम उरवसी विख्याता ॥६७७
उत्तर कुरु ओसधी अँनूपा, कुसहुदीप मै कुसोदका रूपा।
हेमकूट मन्मथा कहावै, सत्यवादनी कुमद सुहावै ॥६७८
अस्वँत्थ मै राजत वंदनीया, निध कुवेर आलय मै लहीया।
गायत्री वेदन मै गावै, सिव संनिध पार्वती सुहावै ॥६७९
सुरग-लोक इद्रॉनी साजै, वृह्मा-मुख सरस्वती विराजै।
सूर्ज-बिंव म प्रभा मुहाई, माता मही वैस्नवी माई ॥६८०
अरधुती मतीयन मै ऐसै,, तिलोत्तमा राँमा मै तैसै।
जग-जीवन मै वृह्मकला जिम, इकसत-आठ नाँम जाँनहु इम ॥६८१
सती अग सौ उपजी सोई, गन प्रसग मै औरहु गई।
जजन करन लायक सव जाँनी, पूजनहू विध वेद प्रमाँनी ॥६८२

श्री देवी भागवत के तिलक करता
श्री पडित महेसदत्त की प्राचीन चौपाई मैं महांतम-वर्नन

चौपाई

अष्टोतरसत नांम भवांनी । सुमरत सुनत जौन जग प्रांनी ।।
सर्व पाप सौ मुक्त मरन मैं । सौ देवी को जात सरन मैं ।।९८३
इतनै पीठन मैं जो कोई । जात सकल फल पावत सोई ।।
जात्रा-विध सौ पौंचत जँहवां । तर्पन स्राध करत जो तहवां ।।९८४
अह देवी की महती पूजा । विध सौं करत त्याग कै दूजा ।।
जग माता सौ करत क्षमापन । वारवार तिह चित दै आपन ।।९८५
जनमेजय सो होत कृतारथ । जो इह विध पूर्वत निज स्वारथ ।।
भक्ष भोज्य पुन विवध प्रकारा । दुजहि जिमावत सहित पियारा ।।९८६
चित्राबर पहिराय कुमारी । अत जो पूजत जांन दुलारी ।।
वटुकन भोजन देत तहांई । अरु जो जीव देव तिह मांही ।।९८७
सब देवी के रुप जाहि सौ । पूजनीय सब भांत ताहि सौ ।।
आपन करै पती-गृह काहू । क्षेत्रन मह चह लह वड लाहू ।।९८८
ईथा सक्ति तँह जाय मत्र कर । पुरश्चरन करलेय भक्तवर ।।
जो देवता वसत है जहवां । ताहि मत्र कर तोखहु तँहवां ।।९८९
वित्त साढत देवी वर-दासा । कवहु न करै ज्युही कछु आसा ।।
जो या विध देवी की जात्रा । करत प्रेम-जुत मनुज सुपात्रा ।।९९०
ताके पित्र सहस्रन कल्पा । वसत वृह्मपुर रहित विकल्पा ।।
वह सु अन्न देवी-पुर जावै । लहि तँहि ग्यांन भक्ति कौ पावै ।।९९१
अष्टोतरसत नांम जाप तै । वहुत सिद्ध ह्वै छूट पात तै ।।
पुस्तक लिखत जँहां ये नामा । रहत तहां नहि मारी वामा ।।९९२
अरू सुजोग्य तहां नित वाढै । कवहु न तहां नर पर ही गाढै ।।
नमहि देव-गन तिह लख आपू । नरन केर फिर तँह कहा दापू ।।९९३
स्राध समय जो नाम ऊचारै । पितर भवाव्ध-पार ऊतारै ।।
ह्वै कै त्रप्ति परमपद पावै । पितर वहुर ससार न आवै ।।९९४
इतने मुक्ति-क्षेत्र महिपाला । छिन मह तुम सन कह्यौ कृपाला ।।
सिद्ध पीठ ये है सव जासौं । वुद्धिमांन तँह वसहै जासौं ।।९९५
पूछहि जो भगवती-चरित्रा । कहेउ भूप जो अतही पवित्रा ।।
अव का सुना चहत महिपाला । निज मन की कहु तज मन-जाला ।।९९६

सोरठा

जनमेजय कर जोर, व्यास पाँहि कर बीनती ।
उमाँ तेज सोइ ओर, हिम-गिर कि मपरगट हुयौ ।।६६७
दक्ष - सुना स देह, अगन - जरी पुन अवतरी ।
अभलाखा हीय येह, कहहु व्यास गौरी कथा ।।६६८

छंद त्रोटक

कहनै पुन लागेउ व्यास कथा, जनमी गिरजा गिर गोद-जथा ।
सती त्याग करयौ तन जाहि समै, भ्रमते रहे सिंभु भुलाय भ्रमै ।।६६६
कोऊ थानक देख इकंत कितै, उर ध्यांन मृडांनीय धार इतै ।
लवलीन भयेऊ समाध लगी, जोय मैं प्रीय आसय जोत जगी ।।१०००
मति भूल गये तनकौं मनकौ, जोय की न रही सुमृती जिनकौ ।
पर सोम पतंगहु हीन प्रभा, सु विचार मिटचौ सव देव-सभा ।।१००१
इक तारक दांनव भौ इतनै, विध सौं तिह कीनीय येह विनै ।
मृतु औरनकै कर होय मनै, हर कौ सुत मोकँह खेत हनै ।।१००२
विधहू सुन ताहि दयौ वर कौं, घिर दैत गयौ अपनै घर कौं ।
मन सोच विचारकै सिद्धमती, सिव-काम जरयौ जरी तीय सती ।।१००३
सिव कै सुत होय नही सपनै, उपजै निरीया तन ना अपनै ।
भय कौ तज देवन जुद्ध भिरयौ, सव जीत लये निज काज सरयौ ।।१००४
सुर भाग चले डर सौं सिगरे, दसहू-दिस कातर वीच दुरे ।
सिव कै अरधगीय नार सती, तन-त्याग करयौ विच आग तती ।।१००५
विरहावस ह्वै सिवहू विचरै, इक नाँम सती हुँ सती उचरै ।
अपनी न सँभाल न औरन की, ठिक जाहि न ठाहर ठौरन की ।।१००६
सवही दुचते हुय एक समा, रिभु[1] जाय जुहारेऊ नाथ रमा ।
कर मत सवै वरतत कह्यौ, दनु तारक देवन साथ दह्यौ ।।१००७
कछु आप वतावहु नाथ क्रीया, प्रगटै पुन देवोय सिंभु-प्रीया ।
जनमै सुत धूरजटी तवही, सुरजात कौ दुख मिटै सबही ।।१००८

---

१ देवता ।

अरजी सुन देवन की इतनी, कर ममत येह करी कथनी।
दुख मेटहिगी तुम देख दया, मनोदीप निवारनी- मात मया ॥१००९
मिलकै तुम जाहि मनावहुगे, परताप जिही सुख पावहुगे।
सब देव चले हरि की सुनकै, जगनाथहू संग भये जिनकै ॥१०१०
चल आयेऊ सोय हिमाचल पै, थित देख इकत जिही थल पै।
करनै जप लागेऊ ध्यान कथा, जोइ जानत है जिह भाँत जथा ॥१०११
केऊ घोस अखड करी करनी, विध वेद सौं जाहि जथा बरनी।
नवमी मधुमास निरालीय मैं, उसना[1] सुभवार उजालीय मैं ॥१०१२
प्रतिबिंबत तेज महा प्रगट्यौ, असमान लौं भूतल आद अट्यौ।
चहु ओर प्रभा परकास चढै, प्रतिछद धरै नुत[2] वेद पढै ॥१०१३
दुति कोटक सूरज की दरसै, ससि कोटक सीतलता सरसै।
जननी प्रगटी इह जोत जबै, सुर होय अचभत देख सबै ॥१०१४
समटी सोई तेज की रास मु तै, इक सुदर ह्वैगई नार इतै।
नव कोमल अग निकाइय की, जग मैं नही ओपम जाहीय की ॥१०१५
सुकमार कुमारीय सचर की, सुभ षोड्स वेस समचर की।
फल बील कठोर उरोज फवै, समटे अँगीयान सवाँर सवै ॥१०१६
धुन किंकनी की कटि धारन मैं, प्रतिबिंब परै पनवारन मैं।
बिहु बाँहन बीच बँधे बजुला, कमनीय मनौ बिजुला की कला ॥१०१७
मुदरी अंगुरीयन मैं मनि की, करकै मनिबधन कक्न की।
मुगतान की माल गलै महीयाँ, चँमकै मनि माँनक की छँहीयाँ ॥१०१८
सकुचै पुहमी पग सँभन सौं, नमक कट भार नितबन सौं।
खत-नाभीय तुद रह्यौ खुलकै, रचना बिच रेख रुमावल कै ॥१०१९
विधु अष्टमी भाल विराजत हैं, रज बंदन बिंदीय राजत है।
हिमकदल से अधुरान हसै, बिच हीर-कनी सम दत बसै ॥१०२०
जुरं जाय जुही उरजालन की, मुचकु द रु मालती मालन की।
दुति आँनन चंद ज्युही दरसै, सिर कीट जराव जर्यौ सरसै ॥१०२१
मिल अकुस पास अभै मुदरा, धुर सोहत है बरहात धरा।
छिब दीसत ज्यौं घन मैं चपला, करुना-रस माँनहु साति कला ॥१०२२

---

१ शुक्रवार : २ स्तुति।

मुख नागरबेलीय-पन्नम सैं, वपु असुक किंसुक-फूल वसै।
नमकै सुर लागेंऊ पायन मैं, जुरकै फिर होयकै येक जुमै ॥१०२३
महादेवी कहै जयमात मया, दुरगा कोऊ वोलत नाँम दया।
कोऊ मात विराटनी रूप कहै, ओउकार-सरूपनी बीज इहै ॥१९२४
कोऊ सब्द-सरूपनी कातीकला, जगजोत सरूपनी रूप जुला।
करजोरकै वंदन देव करै, अविधा जय सद्द मुखा उचरै ॥१०२५
स्तुती वहु भाँत करी सबही, जग-मात-कृपाल भई जबही।
सुर देख प्रसन्न महाँ सगती, मन उक्त करी विनती की मती ॥१०२६
जग-जीव की अतरजाँम्मन तू, सव लोक-अलोक की स्वाँमन तू।
सुख-दुःख नहीं अप्रचन्न सहो, अरदास करै तऊ मात अहो ॥१०२७
भृगु कौ सिख तारक नाँम भयौ, विधहू सौं जिही वरदाँन लयौ।
तन पै मोहि और न मृत्यु तकै, सिव कौ इक पुत्र सघार सकै ॥१०२८
सिव होय गये विन नार सती, पतनी विन पुत्र कहा प्रवृती।
सुर होय सुखी अनुराग सरौ, प्रगटै सिव कै सुत काज परौ ॥१०२९
इह सकट मेटहु मात अजा, परपूरन होवहि देव प्रजा।
दुर वैठ रहे डरते-डरते, केउ व्योम भये विनती करते ॥१०३०
दरसी तुव मूरत पुंज्ज दुती, सुर साथ भये सवही सुक्रती।
भगवंतीय मेट करौ भय कौं, लहिकै सु वसाय सुरालय कौ ॥१०३१
अरजी सुनकै कह मात इती, थिर सीस हिमालय जाहि थिती।
गवरी तिह नाँम सोई गिरजा, सिवकै हित काज जिही सिरजा ॥१०३२
मिलकै सुर देव महेस्वर कौ, वँह पुत्र मिटाय सकै अर[1] कौ।
हिमवाँन करै भगती हित सौ, चितवै हमहूँ मत सौं चित सौ ॥१०३३
अवतार लयौ गृह वाहीय कै, निरनौ इह साथ निकाइय कै।
मुख वात कही कर मात मया, जुरकै सुर किन्नेऊ सद्द जया ॥१०३४

दोहा

लख प्रसन्न ललचायकै, पूछेऊ देवी प्रस्न।
जोग वेद वेदात-जुत, सुखप्रद कहहु सहिस्नु ॥१०३५

---

१ वैरी।

भक्ति-जुक्त निज भावना, विस्व रूप वपु वेख।
होय कतारथ देख हम, इह अभिलाख असेख ॥१०३६

छंद उधोर

सुन वचन हिम गिर स्रांन[1], सव सुरन साथ समाँन।
इह प्रस्न सुन अनुकूल, फूले सु जिम तरु-फूल ॥१०३७
रुच जाँनकैं सुरराय, पुन सुरन सौं सुख पाय।
हिमवाँन सौं कर हेत, सखेप तत्व समेत ॥१०३८
कहनै लगी सव कथ्थ, अँनुमाँन ग्याँन अरथ्थ।
हम विना जाँनहु हाल, कछु नहिन पूरवकाल ॥१०३९
आतमा-रूप अनूप, चिच्छक्ति जाँन चिद्रूप।
निज पारवृह्म ही नाँम, वँह अँनिर्देस अकाँम ॥१०४०
वामैं विकार ना येक, वपु रूप सौं वितरेक।
सक्ती जु जामैं सिद्ध, माया सु नाँम प्रसिद्ध ॥१०४१
सती नाहि असती सोय, जुग सौं विलक्षन जोय।
जिह अनर्वचनी जाँन, अभिरूप उर अनुमाँन ॥१०४२
सो बनी रहत सदाह, दमुना[2] सु जैसैं दाह।
जिम तरन किरनन जूह, चद्रका चद्र समूह ॥१०४३
सम होत परगट सग, पहिचाँन लखहु प्रसंग।
वरताव प्रलय विचाल, क्रम जीव जीवन-काल ॥१०४४
वँह होत लीन अभेद, विमतार वरनत वेद।
जिम सयन सोवत जीव, स्रम पाय तमहु सदीव ॥१०४५
वपु लीन ह्वै विवहार, सोइ लखत सब संसार।
आपनी सक्ति उद्योग, जग बीजता ह्वै जोग ॥१०४६
वह हमही है नही और, आधार वृह्म अथोर।
करता अछादन काय, दोषत्व येह दिखाय ॥१०४७
पुन जोग चेतन पेख, निमतत्व कहत निरेख।
परपच के परनाँम, समवाय कहत सुग्याँन ॥१०४८

---

१ मू० प्र० स्रोन। २ अग्नि।

नित तिही माया नाँम, तप कहत है जुत माँम ।
तंम कहै कोऊक ताहि, जड कहै कोऊक जाहि ।।१०४९
गुन कहै कोऊक ग्याँन, पुन कहै कोऊ परधाँन ।
प्रक्रती कहत परेख, वहु सक्ति कहत विसेख ।।१०५०
पुन सैव्व[1] सास्त्र प्रचार, वोलत विमर्स विचार ।
ते वेद जांनत तत, वँह अविद्या उचरत ।।१०५१
निगमाद विध-विध नाँम, जे कहत आठौ जाँम ।
द्रग रूप जाहि दिखाय, जड कहत मिथ्या जाहि ।।१०५२
सम्बद्रूप अनुभव सोय, साक्षी सरूप सुगोय ।
अनुभूत होवत येव, सम्वितसरो रस भेव ।।१०५३
ह्वं स्रष्ट स्रष्टा होत, अँनुमाँन द्रष्ट उदोत ।
षट-सास्त्र दरसी खेम, नि.तत्व भाखत नेम ।।१०५४
आनदरूप अनाद, वाख्यान करत विवाद ।
मिल सर्व लोकन माहि, सुख प्रेम रूप सु ताहि ।।१०५५
थित जहाँ हमारी थाय, मिथ्यात लोक मिलाय ।
इह जाँन कहत असग, अप्रछन्न मेरौ अग ।।१०५६
सुख आतम-ग्याँन स्वरूप, चित लखहु सिद्ध चिद्रूप ।
अरू द्वैत जाल असंग, पुन लखहु सिद्ध प्रसंग ।।१०५७
स्रष्ट के पूरव सोय, आतमा-सक्ति इकोय ।
मिल कर्म अकर्म मुक्त, जोइ होय माया-जुक्त ।।१०५८
ससकार पूरव सग, पुन काल कर्म प्रसग ।
अववेक तत्व अधीन, करता सु इच्छया कीन ।।१०५९
सरजता स्रष्ट सुभाय, जुत गनहु माया जाहि ।
सुध आतम-ग्याँन स्वरूप, सर्वदा सोइ सुख रूप ।।१०६०
अच्छात्त रूप अछेह, अरू आद कारन येह ।
भव-कर्म साखी-भूत, अज क्रीया आस्रय भूत ।।१०६१
गत गूढ जामै ग्याँन, सच्चदानंद समाँन ।
इह आद तत्व अनूप, ह्रींकार मत्र सरूप ।।१०६२

१ शैव ।

आतमा तत्व अनाद, आकास भयेऊ अवाद।
तत आतमा इह तौन, मात्रा सु सब्द मिलौन ॥१०६३
पुन वायु भयेऊ प्रसिद्ध, सपरस जु मात्रा सिद्ध।
तत तेज-रूप जु तेम, जलमई रस है जेम ॥१६६४
प्रथवी सुगंध प्रमाँन, इम जाँनीयै अँनुमाँन।
आकास मैं गुन येक, सब्दहु गनौ सविवेक ॥१०६५
द्वै वाय गुनहु दिखाय, सब्द रू सपर्स सिवाय।
तेज मै गुन है तीन, सद स्पर्ष रूप सहीन ॥१०६६
जल-वीच च्यार जताय, रव स्पर्स रूप रसाय।
प्रथवी मैंही गुन पंच, सब येकठे कीय संच ॥१०६७
रहि सब्द सपरस रूप, इम रसहु गंध अनूप।
सुक्षम सु भूतन संग, लखीयै जु देही लिंग ॥१०६८
कारन सु तौ कह दीन, सोइ बीज रूप सबीन।
जामै जु लिंगहि जाँन, उतपत्त कौ असथाँन ॥१०६८
पश्चात पंची कर्न, भूतन सथूल सुभर्न।
पाँचूँन सुनहु प्रकार, उतपत्त अरू आकार ॥१०६९
पूर्वोक्त भूत प्रवाँन, सब कहे रूप समाँन।
मल करै द्वै द्वै भाग, तिन येक येकन त्याग ॥१०७०
लै येक कौ फिर लेख, सोइ रह गयौ जू सेख।
बट च्यार-च्यार विसेस, अवधारीयै जु असेस ॥१०७१
इनतै जु इक-इक और, जासौं सु लीजै जोर।
कलपै जु पंचीकर्न, येकत्र इह ऊद्धर्न ॥१०७२
वैराट-रूप बनाय, करतार धरता काय।
इह थूल देह उपाध, ईस्वर अनूप अगाध ॥१०७३
पंचहू भून प्रविष्ट, उतपत्त इंद्री इष्ट।
मिल ग्याँन इंद्री माहि, अंतैकरन उपजाय ॥१०७४
वृति बेद च्यार विधाँन, सब कहत है सुग्याँन।
संकल्प विकलप संग, इह जाँनीयै मन अंग ॥१०७५
रचना सु निश्चय रूप, तिह बुद्धि-बल तद्रूप।
सोइ करत अँनुसधान, चित लीजीयै पहिचाँन ॥१०७६

है येह हम हकार, अंतहकर्ण अनुसार।
गुन पचभूतहु ग्यात, रज-क्रीया-जुक्त रचात ।।१०७७
पुन कर्म इद्री पच, परभाव वीच प्रपच।
तिनसौं जु मिलकै तौन, प्राँनाद उपजत पौन ।।१०७८
पुन हृदय वसत मु प्रांन, अरू गुदा वसत अपाँन।
साँमाँन नाभि सुथाँन, अरू कठ मै उद्याँन ।।१०७९
सव अग व्याँन सुभाय, वित्ती सु पाँचौ वाय।
दस इद्रीयन समुदाय, विध पाँच जाँनहु वाय ।।१०८०
मन वुद्धि देहु मिलाय, इम तत्व सत्रह आय।
सुक्षमहु होत सरीर, सुख-दु.ख मै जिह सीर ।।१०८१
प्रक्रत सु दोय प्रकार, सत्वात्मका सुविचार।
माया सु ताही माँन, सोइ आद-रूप सुग्याँन ।।१०८२
मिस्रत सु गुन जिह माहि, वँह अविद्या कहि आय।
आस्रई रक्षावाँन, माया सु कहत महाँन ।।१०८३
परमातमा प्रतिछाँहि, मिल परत जाहि माहि।
वाकौं जु वरनत ईस, वँह तीन लोक अधीस ।।१०८४
स्वय आस्रइण समाँन, निज वृह्म-रूप निदाँन।
सरवग्ग करता सुद्ध, अज ईस सोइ अविरुद्ध ।।१०८५
परमातमा प्रतिविंव, विच अविद्या सु विडव।
जासौ सु कल्पत जीव, सुख-दु ख जनत सदीव ।।१०८६
इह जीव ईस अनाद, वँह देह तीन ऊपाध।
वपु ईस सूत्र विराट, सव स्रष्ट कौं सम्राट ।।१०८७
जीवहू त्रविधा जाँन, सव कहत है सुग्याँन।
अभिमाँनि कारन अंग, पुन प्राग कहन प्रसग ।।१०८८
अभिमाँनि सूक्षम आहि, तेजस कहत है ताहि।
अभिमाँन स्थूल अतीव, जोइ विस्वनाँमा जीव ।।१०८९
इह जीव कौं अनुमाँन, विष्टी सुरूप विघान।
ईस्वर समष्टी येक, विग्याँन सहित विवेक ।।१०९०
जुत अनुग्रह जगजीव, सरजता विस्व सदीव।
जग पाप-पुन्य सुजोग, भोगत सु नाना भोग ।।१०९१

करता सु ईस सु काथ, सब सक्ति मेरी साथ।
नग अधप समुजहु नेम, विन सूत्रवाँन न वेम ।।१०६२
जग सवही मोमैं जाँन, पहिचाँन वेद प्रमाँन।
उच्चार करत अभेद, निरभाव जुत निरवेद ।।१०६३

दोहा

अद्रराट सौं उच्चरत, श्रीदेवी सुरराय।
जगत चराचर जीव कौं, माया मक्ति मिलाय ।।१०६४
माया जुदी न माँनीयै, मोही सौं हिमवाँन।
वरतत जन विवहार मैं, विद्या आद विधाँन ।।१०६५
तत्व दिष्ट तै तत्व हीं, केवल रूप कहंत।
प्रॉन सहित कर्मादि पुन, सकल जगत सिरजत ।।१०६६
माया करत प्रवेस मैं, येक अनेक ऊपाव।
भिन्न-भिन्न सोइ भेद सौं, अवरल-रूप उपाव ।।१०६७

छंद भुजगीप्रयात

उपाधी जुतै मोहु मैं भेद आँनौ, मठाकास ज्यूंही घटाकास मानौ।
इको सूर आकास माँही उजासै, पदार्थ सवै ऊंच-नीचै प्रकासै ।।१०६८
गुनूं दोष कौ नाँहि जैसै गृहीता, इही रीत सौ मोहि जाँनौ अतीता।
हितू जक्त की येकमैं व्याप्तहू पै, गुन दोप कौं जीव नाँही गृहूं पै ।।१०६९
तथा मूढ जो लोग वुध्याद तासौं, जथा सौ लगावै हमै कर्म जासौं।
मनीसी इहै वात कौं नाँहि मानै, परा-आतमा कौं अकर्ता प्रमाँने ।।११००
ज्युही जीव मै ईस मै भेद जाती, गहै अग्यता सौं असाता अग्याती।
मठाकास औरै महाकास माँही, निहारै कछू भेद पै भेद नाँही ।।११०१
परमानमा जीव ज्यूंही पिछाँनौ, जुदे येक सौ येक कौ नाँहि जाँनौ।
वहुत्व ज्युही जीव माया विसेस, इही रीत सौं जाँनीयै भेद ईस ।।११०२
विसै जीव इद्रीनहू का वखेरा, घलै वासना आयकै चाहि घेरा।
वँही जीव मै जाँन लीजै अविद्या, दुनौ दु ख औ सु ख की सोय दद्या ।।११०३
गुन वासना भेद माया गहावै, वँही ईस मै भेद कौ भाव आवै।
अखड इकै रूप माया उदोत, प्रभा जीव मै ईस मै ओतप्रोत ।।११०४

विधानं ज्युही सूत्र आत्मा विराट, घराने अनेकं सु तै घाट घाट ।
बृहमा विसँन ज्युही रुद्र वेता, हरी सकरी-सक्ति ब्राँह्मी सहेता ॥११०५
त्युही सूर औ चद के विंव तारा, किते व्योम के वीच वाँधे कतारा ।
पसू पक्षि औ जून मैं पुन्य पापी, कहूँ कौं जुदे नाँहि माँनौ कदापी ॥११०६
निपोसँक श्रीलिंग पुलिंग नाँमा, धरचौ ध्यांन मोहीसनै आदधाँमा ।
नही जाँनीयै कोय मोसौं नियारा, धरा और आकासहू वारधारा ॥११०७
निहारौ सोई वाँझकै पुत्र नाही, ससा-स्त्र ग सर्पा रजू के समाई ।
जुदे नाहि ईसाद हू जक्त-जीवा, करे भेद कौ भाव सोई कलीवा ॥११०८
अधिष्टाँन है रूप संसार येको, विचारै सोई आद-माया विसेकौ ।
रहस सुनी श्रीमुखा अद्रराटा, वतावौ कह्यौ रूप जो है विराटा ॥११०९
सुनी वात हेमाद्र की भक्ति साँनी, प्रकास्यौ जवै रूप आदू प्रधानी ।
लसै सीस जामै सही सप्त-लोका, विवै चद औ सूर नैनाँ विलोका ॥१११०
दिसा स्राँन के सोत्र जामै दिखाई, विचत्र हीर्य-वान है प्राँन-वाई ।
जिही कौ हृदौ विस्वहू भूम जघा, भुवर्लोक नाभी विराजै अभगा ॥११११
उरस्थान है जोतस चक्र येही, महर्लोक ग्रीवा सथान मिलेही ।
अनूप मुखा येह जनलोक यैसै, तपोलोक है भाल की ठौर तैसै ॥१११२
दिपै वाहु इद्रादहू लोकदेवा, भली भाँत सोतिंद्री सव्द सभेवा ।
जिही नासका-भाग स्ववैद जाँनौ, पखै गधहू प्राँन इद्री पिछाँनौ ॥१११३
जिही आँनन-जोत है अग्नि-ज्वाला, चितै रात औ दीह उन्मेख चाला ।
लसै व्रूंह की आवली वृह्मलोका, वसै जीव निस्रेय जामै विसोका ॥१११४
तत तोय जाकै विखै वीच तालू, रसग्या मृदू स्वाद जामै रसालू ।
दिपै दत दढ्ढा जिही आघदेवा, अरू हास माया अनूप अछेवा ॥१११५
निपावै सोई सृष्ट नैना निवाँना, सोई लीन उन्मेख जाही समाँना ।
लसै ऊपरी ओठहू रूप लज्या, अधो ओठ है लोभ औ मोह इज्या ॥१११६
उपाजै जिही पीठ भाग अवर्मा, सृजता प्रजा सिस्त इंद्री सकर्मा ।
जिही सात-साम द हू कूख जाँनौ, मढी सैल की माल मेदोज माँनौ ॥१११७
नदावरत रोमावली ओत नाडी, अवस्था अहूँ की गती सी अगाडी ।
सिरोकेस है मेघ-आछाद सध्या, मनो चद्रमा वुद्धि विस्नू समध्या ॥१११८
अहकार है रुद्रहू देव औरे, अनेक पसू-पछ्छ है आँन औरै ।
पतालाद पाव जाही प्रचडा, मडी सात ही लोक चामड मडा ॥१११९

रवी कोटक देह की दीप्त राजै, विधू कोटक सील आभा विराजै ।
छवी विजुला कोट जोती चमकै, दसू ही दिसा तेज रासी दमकै ।।११२०
सहस विराजै पद बाऊ सीसा, उचारै चहूँ वेद वाँनी असीसा ।
भये देवता देखकै भर्म भूले, हीयकार की रूपनी रूप हूले ।।११२१
वँही अवका है किधौ रूप औरै, भुवँनेस्वरी कौं भजै भाव भौरै ।
नमे पाय लागे जमै होय लेखा, विराट लख्यौ वेख नैना विसेखा ।।११२२
करी वीनती फेर जोरै करग्गै, महमाय आदेस्वरी भाव मग्गै ।
इही रूप कौ देख भासै अचवा, अहो माय माहेस्त्ररी आदअंवा ।।११२३
सुधारै हीयै भक्त कौं जक्त सेवी, दिखावौ हमै सु दरी-वेख देवी ।
सुपरवा सुनी वीनती मात सारी, सुसोभा जुतै मूरती कौं सुधारी ।।११२४

सोरठा

सुनी अरज सुरराय, सव देवन की येक सम ।
दीनौ रूप दिखाय, पहलै सोई कीनौ प्रगट ।।११२५
पाशाकुस वर पाँन, और जोर मुद्रा अभय ।
अमल हास अधुराँन, वसन लाल धारै सु वपु ।।११२६

छद भुजंगप्रयात

विचारै हीयै प्रेम सौं मात बोली, अमीरास ओ हासवाँनी अमोली ।
सुनौ वात मेरी सवै स्राँन स्रोता, प्रपच गनै रूप मै ओत-पोता ।।११२७
वही रूप ठाढौ भयौ तोर आगै, जिही जोत आकास-पाताल जागै ।
परमातमा आद जोग उपाधी, उपाजै सोई जीव करतत्व आधी ।।११२८
वँही प्राप्त ह्वै कै सुधर्मा-अधर्मा, क्रीया साथ नाना करै सोय कर्मा ।
जिही सौं भृमै भूलकै बीच जोनी, डुलै सु ख औ दु.ख के ओर दोनी ।।११२९
घटीजत्र ज्यों ऊद्धहू - अद्ध घूंमै, भजै स्वर्ग भोग कहूँ आय भूंमै ।
वसावै नही येक ठौरै विराँमा, सोई जाँनीयै मूल अग्याँन साँमा ।।११३०
जिही तै इही जीव अग्याँन जावै, उजासै सोई ग्याँन कीजै उपावै ।
विचारै हृदे-वीच साँमर्थ विद्या, असाता गृसाता नसाता अविद्या ।।११३१
जनेता अविद्या अकर्मं जवूँना, करै जाँनकै ताहि प्राँनी कवूँना ।
करै तौ अनर्थं भरै आय केते, जगावै सोई राग औ द्वेष जेते ।।११३२

वटोरै जिही कारनै ग्याँन वातै, जमावै मती सत्य कैवल्य जातै।
सता ग्यान सौं कर्म ह्वै है सहाई, गिरा सास्त्रहू वेद के वीच गाई ॥११३३
घुलैतै खुलै भेद की हीय-ग्रथा, सोई जाँनीयै मुक्तिहू की सुपंथा।
अभिप्राय है जाहि मैं येकता की, जमै ग्रथ मैं ग्याँन ना भाँन जाकी ॥११३४
अँवेरा-उजेरा गनौ न्याय ऐसै, विरोधी सदाँ भाव भ्यासै वसेसै।
चनै जो कछू काँम वेद विहीता, समै जाँन साधै स्रधाँहू सुभीता ॥११३५
उपावै फलीभूत सौ ह्वै उदासी, रजै चित्त की सुद्ध आँनंद रासी।
प्रवेक सदाँ जाँनीयै ग्याँन पाखै, रिदै नाहि अग्यान कौ अस राखै ॥११३६
गिरा मोर कल्याँन काजै गनाँऊ, सुतै सिद्ध सानिद्ध जोहै सुभाऊ।
सम इद्रयूं का निरोध समाँना, दम वाह्य इद्री निरोध दिखाना ॥११३७
सहै सीत उस्नं तितक्षा सुभाव, विराग सवै आस त्यागै विभाव।
करै सुद्ध जेतै हीयै अतकर्नं, विछेप मिटै और आवर्न भर्न ॥११३८
तत-ग्याँन कौ पायकै कर्म त्यागै, सदा निश्चल भक्तिमैं सांनुरागै।
गरू वृह्मनिष्टा गहै सर्न ग्याता, सुनै वाक वेदात कौ धार साता ॥११३९
जवै जीव कौं वृह्म कौ येक जाँनै, पराखप तद्रूप आपौ पिछाँनै।
उपाधी जुतै भेद है जीव ईस, मिटै तौ वँही सेख है पारमीस ॥११४०
अजं अक्रीय आतमा रूप आदू, प्रकासै नही कोय जामैं प्रमादू।
सथूल सोई सुक्षम रूप सारै, प्रभा आपनी सौ प्रपच पसारै ॥११४१
इही भेद कौं नाँहि जाँनै अग्याँनी, गहै आतमा रूप कौ सोय ग्याँनी।
वृती भावना होयकै जोग वेता, चितै अच्छ्छरं तीन को लाय चेता ॥११४२
हकार सथानी गनै देह ही की, रकार गनै लिंग वाको रही कौं।
इकार गनै कारन देह ऐसै, त्रहू की करै जोजना लेख तैसै ॥११४३
मिलै तै चतुर्थं ह्रीकार मैं हूँ, समष्टी तथा व्यष्टी वैराट सै हूँ।
सँमाधीहु के काल पूर्वं समाँना, धरै धारना भावना राख ध्याँना ॥११४४
अड्डग[1] करै प्राँन औरै अपाँना, थपै नासका कै तथा मध्य थाँना।
उभै नेत्र कौं मूंदकै मोहि ओरै, धरै ध्याँन कौं धारना लाग धोरै[2] ॥११४५
विसै की निवर्ती करै त्याग वञ्चा[3], पसारै नही मोहि आदं प्रपंचा।
जमै आसन वैठ येकत जागै, ह्रदै सच्चदानदनी साँनुरागै ॥११४६

१ स्थिर। २ निकट। ३ इच्छा।

हकार मिलावै रकार सहेता, इकार ह्रीयकार माँही उजेता ।
विचारे हीयै वाच वाचार्थ वाँनी, सवै द्वैत को भाव छंडै मुग्यानी ॥११४७

दोहा

रामी मो मुख्ख रूप कौ, ध्यावै निस-दिन ध्यांन ।
जोइ होत मम रूप जन, हित चित सौ हिमवाँन ॥११४८
जोग-जुक्त सौं जाँन मोहि, परमातम पहिचाँन ।
नास होय ससय नही, उर भीतर अग्यांन ॥११४९

छंद द्वै-अखरी

माहेस्वरी वचन सुन माता, कीय हिमवाँन प्रस्न कुसलाता ।
जोग अग-जुत देहु जनाई, करकै मेट करै क्रपनाई ॥११५०
सम्मत-दायक जोग सुहावन, प्रकट तत्व हम हूँ ह्वै पावन ।
हिमगिर प्रस्न सुनत हरखाँनी, वोली फेर अमी-रस वाँनी ॥११५१
नही जोग आकाम निराला, पुन पुहमीनहि स्वर्ग पताला ।
जीव-आतमा येक जनावै, विसद-लोग सोइ जोग वतावै ॥११५२
जोग विघन करता पट जाहर, वादी समुझ निकारै वाहर ।
काँम क्रोध अरू लोभ कुहेता, मद मच्छर पुन मोह समेता ॥११५३
साधन जोग सुनौ स्रुत सोई, अष्ट-अग कौं सग इकोई ।
यम नियमासन प्राँनायामा, प्रत्याहार धारना प्रकाँमा ॥११५४
ध्याँन समाध जाँनीयै येई, इष्ट जोग साधन है येई ।
जिनके लक्षन लेहु जनाई, गिरा मोरे सौं देत गनाई ॥११५५
यम दस नियम जाँनेव जोगू, प्रथम अहिसा सवै प्रयोगू ।
सत्य वचन आस्तेय समाँना, वृह्मचरीय अरू क्षमा विधाँना ॥११५६
धृती दयार्जव मिताहार धुर, मन तन सौउच[1] विचारत मुनिवर ।
अभिमति कहत नीयम दस ऐंसै, जोगकार उपयोगी जैंसै । ११५७
तप सतोष दाँन आस्तिकता, तोखन देव सिधंत स्रवनता ।
प्रनवादिक जप होम पुनीता, परम ममुक्षन हेत प्रवीता ॥११५८

---

१ शौच ।

आसन कहत तिनहु के आगै, साधन कर जन होय सभागैं।
चचल मन कौं करत जु निश्चल, मोक्षदाय नाड़ी मेटत मल ॥११५९
रज तम गुन अरु हरता रोगा, जे नित प्रतहै साधन जोगा।
कुडलनी के बोध करन कौ, हितकारी तन-ताप हरन कौ ॥११६०
लख चौरासी सख्या लेखौ, वर चौरासी ताहि विसेखौ।
च्यार कहत तिन मैं पुन च्यारू, यामैं सग्या कहत अगारू ॥११६१
सिद्धासन पद्मासन सोऊ, सिघभद्र-आसन सह जोऊ।
सिद्धासन इह सुगम समांना, महामोक्षदायक अनुमांना ॥११६२
यौनिस्थांन वांम पग येडी, टकना थाप लगावै टेड़ी।
येड़ीहू दक्षन-पग ऐसी, ऊपर मेहनभाग[1] असेसी ॥११६३
थिर कर हृदय लगावै थोडी, जुगल-नैन भृगुटी-विच जोड़ी।
करकै अचल संवारै काया, मुगती लहै जीतकै माया ॥११६४
वज्रासन कोऊ नांम वखानत, मुक्तासन याही कौ मांनत।
गुप्तासन कोऊ नांम गंनावत, जांनत सोइ पार भव जावत ॥११५५
यमन मांहि जिम निमत[2] अहारा, नीयम अहिंस्या ज्यूं निरधारा।
आसन पै सिद्धासन ऐसै, जोगी-जन जांनत है जैसै ॥११६६
करै वरख द्वादस जो कोई, जोग सिद्ध पावत है जोई।
तासौं बध पगट ह्वै तीनूं, निज अभ्यास सौ सुतै नवीनूं ॥११६७
मूलबध उडियांन समेता, बंध जलधर जांनत वेता।
पदमासन अव कहत प्रधांना, सव सिद्धीदायक सु प्रमांना ॥११६८
बैठै मार पालथी बैठकै, जंघाकै ऊपर पद धरजकै।
पीठ पछारी हाथ पसारै, दक्षन-पद दक्षन कर डारै ॥११६९
—गहै अंगुष्ट-भाग अवगाही, वांम-पाव कर वांम वसाई।
चिवुक वीच लगावै छाती, द्रष्ट नासका अग्र दिखाती ॥११७०
अचल होय धारै इह आसन, पाप-प्रहारन ग्यांन-प्रकासन।
कुंडलनी कौ बोधन करता, स्वास सुखमना[3] मारग सरता ॥११७१
भद्रासन अव कहत सुभेसा, मांनत जोगी आद-महेसा।
वृसन[4] तरै सींवन सौं वांमैं, वांम पाव येड़ी विसरामैं[5] ॥११७२

१ शिश्न, मूत्रेन्द्रिय। २ नियमित, परिमित। ३ सुषुम्ना। ४ अंडकोष। ५ विश्राम।

दच्छन मॉऊ येडी दछछन, रख सौं थाप करै थिर रछछन।
पार्स्व समीप समेट जु पावन, भुजा वाँधरहि सहज सुभावन ॥११७३
रोग हरन अरु ग्यांन रसांनी, सदां अभ्यास करै सुग्यांनी।
अव सिघासन कहत अनूपा, ससित जाकौ लखहु सरूपा ॥११७४
व्रसन तरै सीवन रख वीचै, निज येड़ी दोऊ धरैजु नीचै।
वॉम सवारै दछछन वाऊ, दछछन-पग वांयै मुख दाऊ ॥११७५
अप्टीचात[१] हाथ धर ऊँधै, साखाकर धारै पुन सूधै।
वाहर मुखा जीभ कर वैठै, अगृ नासका निजर जू ऐंठै ॥११७६
मूल आद वधन त्रय मीता, भये सिध मेटत भव भीता।
सुखमन मारग सहज सुभाऊ, कुडलनी कौ वोध कराऊ ॥११७७
आसन सिद्ध भये तै आगै, प्रांनायांम सविध मति पागै।
रेचक-पूरक कुभक-रीती, केवल कुंभक सुलभ कहीती ॥११७८
प्रांन उदरगत नासा पुट सौं, हरवै रेचन करै जु हट सौं।
सुन्नमाहि निश्चल कर सोई, काया सथिर करै सह कोई ॥११७९
इह रेचक है प्रांनायांमा, धरै धारना जोग सुधांमा।
वँही प्राननासा अभिअतर, नासा-पुट सौ पीयै निरतर ॥११८०
कहै निरोध सु पूरक कहीयै, लाभ जोग मत जासौं लहीयै।
रेचक अथवा पूरक रुख सौं, सजम करत प्रांन ही सुख सौं ॥११८१
अचल धारना करै जु ऐसै, कुंभक सहित लखहु गत कैसे।
रेचक करै न कुभक-रीती, प्रांन-पवन सौं आॅन प्रतीती ॥११८२
करै निरोध नासका केवल, मन तन के मैटै जासौं मल।
केवल कुभक है हितकारी, सहज समाध लहै मुखसारी ॥११८३
केवल कुंभक सिद्ध करन कौं, भजै भावना प्रांन भरन कौं।
सिद्ध भये तै जोगी सीधा, विजय पवन निहचै मन वीधा ॥११८४
ओउकार पोडस जप येतै, स्वास पिंगला द्वार सहेतै।
उदर भरै कुभक असथांना, पुन चौसट जप करै प्रमांना ॥११८५
इतै यभकै फेर उतारै, सुखमन मौं पिगला सँवारै।
जप वत्तीस करै पुन जेतै, उतरै पवन पिंगला येतै ॥११८६

१ शिर।

रात दिवस मैं याही रुख सौ, साधक साधन करै जु सुख सौ ।
प्रातकाल मध्यॉन जु परसिध, सध्या अरध-रात साधै सिध ।।११८७
जप ध्यॉनाद रहित है जोई, कहत विगर्भ ताहि सह कोई ।
करत जाहि अभ्यास कलेवर, ताहि पसीना होय तरातर ।।११८८
अधम जॉनीयै प्रॉनायॉमह, जोग-पथ-वेता जॉनत जँह ।
कप होय सोइ मध्यँम कहीयै, गोत्रा[1] त्याग उत्तँम गति गहीयै ।।११८९
साधक जोग-क्रीया जव साधै, ये विवहार नही आराधै ।
निराहार वृत करै न नेम, प्रात-स्निान सरद-रित प्रेम ।।११९०
ज्वाला तपै न अतसय जागै, अत निद्रा कवहु न अनुरागै ।
दुरजन-सग त्रीया-सग दोई, सीघ्र गमन मारग को सोई ।।११९१
कारक काया जिते कलेसा, आलस भति क्रोध अवसेसा ।
वहुजन-सग न करै वारता, चचल चित विसीयन सचरता ।।११९२
सिर पै भार धरै नही सांई, जोग सिद्ध साधक है जोई ।
येते है साधन उपयोगी, जोग-जुगत सौं साधै जोगी ।।११९३
निद्रा मुल्प[2] सुल्प-सभासन, गमन सुल्प आहार गरासन ।
सरद-स्निान उस्न-जल सेती, उर अँनुकूल जॉन विध येती ।।११९४
सनै-सनै अभ्यास सास सौं, पूजत ह्वै जोगो प्रकास सौं ।
करै सीघ्रता विनसै काया, यातै करीयै सहज उपाया ।।११९५
वायु-निरोध होय मन वस मै, दूसर नहि उपाव दस-दिस मै ।
मुक्ती चाहै याही मन सौ, तौ अभ्यास करै जन तन सौं ।।११९६
गरू-मुख सौं अभ्यास गृहीता, जोग-जुगत सौं जग मै जीता ।
साधक की अभ्यास साधना, ईस्वर जप पूजा अराधना ।।११९७
प्रॉनायॉम करन सौं परघल, नाड़ी सुद्ध होय तन निरमल ।
इडा चद्रमा रूप अनूंपा, सूर पिगला नाड सरूपा ।।११९८
तीन मास मैं सवही तासौ, अवरहु नाड सुद्ध ह्वै यासौ ।
तीन मास लग होय जु तत्पर, प्रॉनायॉम अभ्यास करै पुर[3] ।।११९९
लघुता होय जोग चित लागै, जठरा-अगन उदर मै जागै ।
नाद श्रवन हुय प्रॉन निरोधन, सवही प्रकार होय मल सोधन ।।१२००

१ भूमि । २ स्वल्प । ३ शरीर ।

इह सरीर मैं नाड असख्या, साढे तीन लाख कहै सख्या।
पुन तिन मै दस कहत प्रधाँना, जिनके नाँम कहत इह जाँना ॥१२०१

इडा वाम नासा अवरेखौ, दक्षन-भाग पिंगला देखौ।
मुक्तदाय सुखमन तिह माँही, गधारी चख वाँम गहाही ॥१२०२

हसत जीह दक्षन चख हेरहु, पूरवा दछ्छन करन प्रतेरहु।
वाँम ईसस्वनी कर्न विचारहु, अलवुखा मुख-द्वार उचारहु ॥१२०३

लिंग-देस[1] मैं कुहू लखाँना, मूलाधार सखनी माना।
उत्तँम नाड़ी येक-येक तै, वपु उर्पयोगी वल विसेखतै ॥१२०४

सव नाड़ी आधार सुथाँना, मुक्तिदाय सुखमन ही माना।
मूल सुथाँन कद तिह मुदी[1], जासौं कोऊ न नाड़ी जुदी ॥१२०५

गुदा लिंगकै वीच गिरोई, सीवन-भाग मध्य तन सोई।
नव अगुल अतर तर नाभी, ऊपर लिंग-देस ठिक याभी ॥१२०६

इडाकार तँही की आकृत, व्यास च्यार अगुल है विस्त्रत।
मध्य कद नाडी सुखमना, प्रप्ट भाग मेरू उत्पना ॥१२०७

सुखमन -कद सथाँन सँभारा, ऊठ गई सो चक्र अधारा।
स्वाधिष्टाँन चक्र मै सोई, जाय प्रवेस भई है जोई ॥१२०८

चक्र होय मनीपूर विचाली, चक्र अनाहित कौ पुन चाली।
कठ चक्र मै ह्वैकै काढी, विव साखा ताही की वाढी ॥१२०९

मिल ककाटका पछ्म मेरु, वँहाँ तै पँहुची जाय अगेरू।
वृह्मरव मैं कीन निवासा, परमज्योति मैं ताहि प्रकासा ॥१२१०

पछँम मारग कहत प्रवाँना, ऊत्तँम मति ऊत्तँम अनुमाँना।
पूरव-मारग कहत प्रवीना, अग्या चक्र कूर्प[2] आधीना ॥१२११

भाल-भाग सौ वृह्मरधृ भिल, थिरता पाय रही ताही थल।
दोऊ मारग है मुक्तीदाता, गैल पछँम मानत है ग्याता ॥१२१२

याकौ भेद कहत कछु आगै, जोग सधै जठरानल जागै।
द्रप्ट-दोप आदहि सोउ दमनी, सव इद्रीगन पातक समनी ॥१२१३

---

१ मुखो। २ भौंह का मध्य भाग।

दोहा

धमनी जैसे धातु के, दाभ्र[1] करै मल दूर।
प्राँनायाँम प्रभाव सौं, पाप निवारै पूर ।।१२१४
मानस वाचक मल मिटै, अभिमति भाखत येम।
तातै प्राँनायाँम त्रय, नित-प्रति करीयै नेम ।।१२१५
सोलह प्राँनायाँम सोइ, करै मास त्रय कोय।
पाप भ्रूनहथ्या प्रमुख, सवै जात मिट सोय ।।१२१६
त्रय रितु प्राँनायाँम तेउ, अभ्यासै जब ऊह।
जनमातर अग्यात जन, मेटै पाप समूह ।।१२१७
वरस दिवस ताही सविध, साधै साधक सुद्ध।
मिटै बृह्म-हथ्याद मल, इह भाखत मति ऊद्ध ।।१२१८

छंद उद्धौर

अभ्यास प्रानाँयाँम, कलि हरन पूरन काँम।
इह साधना विन आँन, दूसर न मुक्ती-दाँन ।।१२१६
अभ्यास करत--उछाह, लुधुता सु पुज्जै लाह।
जठराग्न वाढै ज्वाल, वपु मिटै रोग विसाल ।।१२२०
इद्री चपलता आद, बल विषय होवै बाध।
कुडली ऊरध कद, बैठी सुखमना बद ।।१२२१
तिह आँट साढे तीन, छूटै सु आपौ छीन।
अध-भाग नाभी येह, कुडली-वास करेह ।।१२२२
जोगी-जनन कौं जोग, प्रति ताहि करन प्रयोग।
जाँननौ बध जरूर, ऊर मुक्त कौ अकूर ।।१२२३
तिह नाँम है पुन तीन, अस्थाँन तीन अधीन।
उड़ीयाँन उदर अकुच, मध-भाग नाभी मु च ।।१२२४
उडीयाँन बध अरभ, थिर पवन करीयै थभ।
अरू जलधर है येह, मध हृदय चिवुक मिलेह ।।१२२५

---

१ जलाकर।

वाँधै सु पवना वध, सु विचार मुक्ति समध।
भीरैं सु पारस-भाग, जाँनी गुदा को जाग ॥१२२६
आधार थभ अपाँन, जुत सिद्ध आसन जाँन।
कीजं सु पूरक काल, उडीयाँन वधऊ माल ॥१२२७
जालधृ कुभक जोग, उडीयाँन रोचक ओघ।
पूरक सु मूल प्रवध, सुखमना पथ समध ॥१२२८
गरू मुखा करकै ग्यात, खोजना करीयें त्यात।
जागै सु कुडली जेम, नित कीजीयें उर नेम ॥१२२९
ईस्वरी सक्ती आद, निज भुजगी निर्वाव।
मुक्ती सु दाता माँन, जुक्ती सु जोगज माँन ॥१२३०
आराधनीय अखड, विचरत सोइ वृहमड।
सुखमना करत सँचार, तन भक्त सुछ्छम तार ॥१२३१
अभ्यास प्राँनायाँम, कीजै सु याही काँम।
धारना पावै धेय, निज आसरै निर्लेय ॥१२३२
पहलैं सु प्रत्याहार, वाह्याँन करत विचार।
सव्दाद विसीयन साथ, इद्री करत उतपात ॥१२३३
कीजै निवारन काय, जुत दोप द्रष्टी जाहि।
अथवा-क विपय उमग, सुभ-असुभ पाय प्रसग ॥१२३४
आतमा मानत येक, दुख-सुख राग न द्वेप।
जग के चराचर जीव, सुभ रूप समुझै सीव[1] ॥१२३५
अव प्राँन के अवरोध, प्रत्यासुहार प्रवोध।
मन और प्राँन मिलाय, रुख येक रूप रलाय ॥१२३६
जुग पग अगुप्टन जोर, थिर करै ताही ठौर।
पुन उभय गुल्फ परेख, विस्राँम धार विसेख ॥१२३७
प्रती जघ उभय प्रमाँन, थित करै ताही थाँन।
चित मूल देस जु चाल, वढ उभय जाँनु विचाल ॥१२३८
अरु उभय प्राँन अरोह, उपरोक्त धार उपोह।
पुन गुदा मूल परेख, वपु मध्य भाग विसेख ॥१२३९

---

१ सभी को।

मिलकै जु मेहन मूल, कर नाभकै अनुकूल।
हृद-देस मै पुन होव, गल-कूप मांही गोय ॥१२४०
विच तालु मूल बसाय, लीजै सु नास लगाय।
दोऊ नेत्र-मडल द्वार, लै भृगुट देस लिलार ॥१२४१
पुन वृह्मरधृ प्रवेस, द्रढ रहै ताही देस।
ठहराव करकै ठीक, अवलोक गत अतरीक ॥१२४२
पुन ऊतरै सुख पाय, जाही जु मारग जाय।
जव तजै मूर्धा जाग, विच वसै भाग विभाग ॥१२४३
भ्रू मध्य नैन भरत, विच नासका विचरत।
मिलकै जु जिभ्या मूल, कठ कूप ह्वै अनुकूल ॥१२४४
हृद-देस करके हेत, नाभी सुचक्र सुनेत।
मेहन सु मूल मझार, सम सीवनी तत-सार ॥१२४५
गुद-देस मै कर गाँन, अरू मूल थापै आँन।
अरू मध्य मै ठहिराय, जाँनू सु वीचै जाय ॥१२४६
चित मूल रोध चलंत, प्रति जघ मै पसरत।
पुन गुल्फ ऊपर पाव, अगुष्ट उभय उपाव ॥१२४७
मन चढै उतरै मीत, प्राँनी सु प्राँन प्रतीत।
जिह जोग-वल सौं जीत, परहरी विसयन प्रीत ॥१२४८
मै जक्त-जननी माय, सव भाँत करत सहाय।
सिदनह[1]-रूप सरीर, इद्री सु अस्व अधीर ॥१२४९
वुद्धी सु प्रेरक दाग, मोरै सु जोरै माग[2]।
लै अविष्ठाता लार, पहुँचाय अभिमति[3] पार ॥१२५०
ज्यूं दमन इंद्री जोग, कलि करत दूर कुजोग।
मुक्ती सु जुक्त मुकाँम, ध्रुव देत अवचल धाँम ॥१२५१
अव धारना-जुत अग, परकास कहत प्रसग।
अध्यातमीक अनूप, अरू आवदेवक ऊप ॥१२५२
पुन आध-भौतक पेख, विध तीन कहत विसेख।
मिल हृदय-चक्र मझार, अरू नाभ-चक्र अधार ॥१२५३

१ रथ। २ मार्ग। ३ बुद्धिमान।

कठ-कूप जिम्या केर, अवलोक भाग अगेर ।
नासका अग्र निहार, लवका तालू लार । १२५४
भ्रू देस मद्ध भरत, ठिक बाँधकैं ठहरत ।
अध्यातमीक जु अग, पहिचाँनीयै परसग ॥१२५५
अरु आधदेवक येह, महरिसी कहत मिलेह ।
ससी विव जैसैं सूर, द्रग देखीयै ध्रुव दूर ॥१२५६
नछ्छत्र औरहू नेम, ग्रहमनी[1] जोत निगेम ।
पुन आधभौतक पेख, द्रग लाय इकटक देख ॥१२५७
मनी रतन सालग्राँम, रिभु मूरती अभिराँम ।
ठहराय मनकौं ठौर, जुग नैन-द्रष्टी जौर ॥१२५८
इह चपल चित्त अनत, वृती विषय मैं विचरंत ।
धारना कर-कर धेय, ललचाय ताही लेय ॥१२५६
तत पंचहू मैं ताहि, विध जुक्ति लाय वसाय ।
पग सौं जु जाँनु प्रजंत, प्रथवी सु तत[2] पसरत ॥१२६०
जाँनु सौं ऊपर जाँन, अघ मर्म जल अस्थाँन ।
आपान हृदय जु अग, पावकह जाँन प्रसंग ॥१२६१
हृद भ्रुवर मध्य रहाय, वासौ सु वायु वसाय ।
भ्रुव वृह्मरघ्र विभाग, आकास गनहु अलाग ॥१२६२
सुर वीजमंत्र सहेत, हीय धारणा धर हेत ।
अभिरूप[3] कर अभ्यास, पिंजा सु काटत पास ॥१२६३
धारणा आलय धीर, साख्यात थभ सँमीर ।
हीय मध्य देखत हेय, इह चिमतक्रत अप्रमेय ॥१२६४
नीहार धूम निगेम, ज्वाला सु माला जेम ।
खद्योग विद्रत खेल, मनि फटिक रवि-ससी मेल ॥१२६
इह आद-रूप अनेक, द्रग हृदय परखत देख ।
दस माहाँनाद जू दौर, घरराय धुन घन-घोर ॥१२६६
परतीत वृह्म पसाव, मूलत आपौ भाव ।
हीय तेज पुंज हुलास, वृती सोक होय विनास ॥१२६७

---

१ दीपक । २ तत्त्व । ३ बुद्धिमान ।

जोई सुरी जग मॉन, ध्यावै सु अवचल ध्याँन ।
ओउकार वाचक आद, सो जपै धार समाद । १२६८
इह धारणा सम आँन, मुक्ती उपावन मॉन ।
अव कहत ध्यॉन अनूँप, रचना सु अद्भुत रूप ॥१२६९
अध मर्म सौं उपरत, अगुल सु दोय अगत ।
मेहन सु अगुल मूल, इह वीच थित अनुकूल ॥१२७०
जोनी सु जाँनहुँ जॉन, सोइ उरध मुख सॉमान ।
अस्थाँन कद जु येह, कुडली वास करेह ॥१२७१
घेरै सु नाडी घाट, वल तीन साढे वाट ।
आनन सु पुच्छ दवाय, सुख सयन करत सुभाय ॥१२७२
सुखमना विवर समध, बाँधे सु गाढे बध ।
इह वागदेवी आद, ससार वीज सुखाद ॥१२७३
गुन तीन माता गोप, अत प्रभा चँहु-दिस ओप ।
कुडली मात निकेत, है काँम वीज सहेत ॥१२७४
वधूक पुस्प विकास, प्रभुता सु करन प्रकास ।
है चिंतनीय हँमेस, सुभ जोग द्वारा सेस ॥१२७५
परकास कोट पतग, ससी कोट सीतल संग ।
सुखमना कुडली-सक्ति, जाँनीयै वीज सजुक्ति ॥१२७६
त्रपुराहु भैरवी ताहि, जोगी उपासत जाहि ।
इहाँ वीज कौं अवगाहि, मिल क्रीया-सत्ती माहि ॥१२७७
अरू ग्याँन-सत्ती आँन, मिल येक-येक समाँन ।
सो भृमन करत सरीर, स्वाभाव सिद्ध समीर ॥१२७८
सुख तेज पुज समाँन, थित वीज जोनी थाँन ।
इह पद्म इक आधार, चिब धाँम पँखुरी च्यार ॥१२७९
वस रवसहु च्यारौ वर्ण, सोभायमाँन सुवर्ण ।
लेखहु स्वयंभू लिग, पख पाय जोग प्रसग ॥१२८०
सम्मत दुरडा सिद्ध, परभाव जाहि प्रसिद्ध ।
कमल सु कुलाभिध-काय, डाँकनी देवी दाय ॥१२८१
देवता गनपत देव, भल जाँनीयै तिह भेव ।
जोनी सु वीचै जाय, कुडली-वास कराय ॥१२८२

अरु दीप्तवाँन अनन, तहाँ काँम बीज भ्रमत।
इह ध्याँन करत अधार, पय जोग वारापार ॥१२८३
दादुरी-वृत्ती दाय, भुँव त्याग सिद्धी भाय।
जठराग्न वाढ़त जोर, आरोग्यता तन ओर ॥१२८४
पुन होत पर्म प्रवीन, उदगत ग्याँन अहीन।
सरस्वती देवी मोय, हित पाय परसन होय ॥१२८५
जप सिद्ध होवत जास, पुन तेज करत प्रकास।
सब जात दुःख सँमूह, अक्षर वढावत रूह ॥१२८६
वल पवन जुत विसवास, उर प्रवल होत अभ्यास।
तन मिटत पाप तमाँम, करता सु पूरन काँम ॥१२८७
इह धाँम मूल अधार, परमात्म उपजत प्यार।
खट मास करत जु खोज, ध्रुव धारकै सु धरोज ॥१२८८
सुखमना वायु सँचार, मन जीत जीतत मार।
थिर विंदु होत सुथाँन, धारना धारै ध्याँन ॥१२८९
अह-लोक सिद्ध अगार, परलोक पहुँचत पार।
तिह उरध स्वाधिष्टाँन, पुन दुतीय चक्र प्रधाँन ॥१२९०
खट पखुरी जु खिलत, अछ्छर जु खट उधरत।
वभमय रलहु स वसेस, सोभायमाँन सुदेस ॥१२९१
सब रक्तवर्ण सुभाय, मेहन सु मूल मिलाय।
सिधवाँन नाँम सरूप, राकनी देवी रूप ॥१२९२
वृह्माँ सु देव वसत, अभिरूप सब उचरत।
इह करत ध्याँन अभ्यास, वेता सु कर विसवास ॥१२९३
सिद्धान्त सास्त्र सुजाँन, गरु कर्म वाढै ग्याँन।
कट जात पातक क्रूर, परकास होवत पूर ॥१२९४
अणमाद सिद्धी आद, पावत सु जोग प्रसाद।
मृतु जीतकैं जग माहि, विचरत सु ख वसाहि ॥१२९५
सुखमना मारग साध, वपु होत पुन निर्व्याध।
थिर लखहु नाभी थाँन, मनीपूर चक्र समाँन ॥१२९६
दस पखुरी-जुत देस, सोभायमाँन वसेस।
दस वरन की समुदाय, लखीयै चित्त लगाय ॥१२९७

ड ढ ण त थ द ध न प फ देख, विसतार सहित विसेख।
सिध रुद्र तहाँ सुविचार, लाकनी देवी लार ॥१२९८
श्रीविस्नु देव-सुधाँम, करता सु पूरन काँम।
धारै जु साधक-ध्याँन, सिध लाभ होय सुग्याँन ॥१२९९
दुख जाय ताके दूर, पहिचाँन सौं मनिपूर।
इह पायकै उपदेस, पर काय करत प्रवेस ॥१३००
गुन ओसधी ह्वै ग्याँन, देवता दरसन दाँन।
निध मिलत ताही नेम, इह बात नाँहि अगेम ॥१३०१
सुभ हृदय-कँमल सुथाँन, निज सोइ अनाहत नान।
दल जिही वारह देख, वारह सु वरन विसेख ॥१३०२
क ख ग घ ङ च छ कल्याँन, ज झ ञ ट ठ जाँनहु जाँन।
वँह प्राँन है आधार, सोइ वाँन लिग सुमार ॥१३०३
सोहत पिनाकी सिद्ध, पुन काकनी परसिद्ध।
देवी सु ताहि-दिपत, सोइ ध्याँन परम सिद्धत ॥१३०४
अपछरा सुदरि आय, परसै जु ताके पाय।
हीय ग्याँन उत्पत होत, अनमाद सिद्ध उदोत ॥१३०५
त्रय-काल की सुध ताहि, सब्दहू दूर सुनाय।
दरसाय सुक्षम द्रष्ट, उर-वीच धारै इष्ट ॥१३०६
आकास-गमनहु आद, वपु ताहि होय न वाध।
भेटै सु अमृत भोग, जोगनी पावै जोग ॥१३०७
खेचरी-मुद्रा ख्याल, भूचरी भ्यासै भाल।
धारै अनाहत ध्याँन, महमान कहीयै माँन ॥१३०८
वृहमाद देव वसेस, मुद पाय गहत महेस।
इह ध्याँन सम कोऊ आँन, दरसै नहै मुखदाँन ॥१३०९
पुन कठ-थाँन प्रसिद्ध, वेखीयै चक्र विसुद्ध।
सोहत क्रांती स्वर्ण, परकास सोरह पर्ण ॥१३१०
सुर सोरहौ अस्थाँन, अ आ इ ई उ ऊ ऋ ॠ ऌ ॡ
ओ औ अं अः -वरीयै जु निश्चल ध्याँन।
छगलाँ डहै जहाँ सिद्ध, साकनी देवी प्रसिद्ध ॥१३११

इह अधिष्टात्री आद, जीवात्म देवत ज्याद।
धारै सु जोगी ध्यांन, गल्कर्म वाढै ग्यांन ॥१३१२
वकता सु च्यारहु वेद, निज भाव ह्वै निर्वेद।
धारना प्रांन धरत, सांमर्थ उपजै सत ॥१३१३
समता सु पाय समीर, सधित जु होय सरीर।
सिध भाय लाय समाध, वल नांहि उपजै व्याध ॥१३१४
अग्या सु चक्र अगेर, विच्च क्रूप भाग वसेर।
दुइ वीज है तिह देस, ह क्ष सु चित्त हमेस ॥१३१५
महां काल सिद्ध महांन, जहां अधिष्टात्री जांन।
हाकनी देवी हेर, वस रही सोय वसेर ॥१३१६
परमात्म-देव पुरांन, धारीयै नित-प्रत ध्यांन।
ठ वीज तहवां ठांन, सोइ सरद-चद समांन ॥१३१७
चिंतना करीयै चाहि, आराधना अवगाहि।
मिल पर्म सिद्धी मूल, करता सु मति-अनुकूल ॥१३१८
अग्या महातम येह, वृख-अक जांनत वेह।
ऊठतहु वैठत आत, सोवतहु जागत सात ॥१३१९
तन होय जो अपवित्र, तजीयै न ध्यांनहु तत्र।
अग्या सु पकज ऊद्ध, मिल मूल-तालू मद्ध ॥१३२०
दल सहँस पद्म दिखत, अरू कद जहाँ उभरत।
मिल अधोमुख तिह माग, जोनी त्रकोना जाग ॥२३२१
वँह मूल विवर अनूप, तहा सुखमना तद्रूप।
सोइ वृह्मरधृ सुजांन, इह कुडली अस्थांन ॥१३२२
सुखमना नाडी सध, सक्ती सु होय समध।
चित्रा सु नाडी च्यार, विच जाहि लेहु विचार ॥१३२३
इह ग्यांन पावत ऊह, सव जात पाप समूह।
कट जाय वधन काय, सुख-धांम रहत समाय ॥१३२४
मिट जात नाडी मैल, गत कुडली तज गैल।
साख्यात वृह्म-समध, पावत सु जीव प्रबध ॥१३२५
सुखमना पथ समीर, सचार करत सरीर।
इगला नाड़ी येक, पिंगला दूसर पेख ॥१३२६

सुखमनाँ बीच सुथाँन, मती मुक्ति-दाता माँन।
इह त्रवैनी उचरत, मुग्यात जाँनत सत ॥१३२७
सर्वतो मुख मैं स्नान, मन धोय हरत मलाँन।
पातक वहावत पूर, दुख ताप जावत दूर ॥१३२८
मृतु-समय होवत मोख, द्रढ भाव सौं तज दोख।
धारना धारै ध्याँन, पथ करै प्रान पयाँन ॥१३२९
निम्रेय पावै नित्य, सव कहै वाचा सत्य।
कर चेत विवर कपाल, खेचरी-मुद्रा ख्याल ॥१३३०
द्रग निरंजन कौ देख, विस्वास वढत विसेख।
ध्रुव धेय मैं मिल ध्याँन, मन तजै अपनौ माँन ॥१३३१
सारूप सिद्ध समाध, सकल्प साधै साध।
लय होत ज्यूं जल लौंन, पावत न लख पहिचाँन ॥१३३२
जीय आतमा कौ जोग, परमात्म करत प्रयोग।
इह समुझ आठौ अंग, रच रहै निर्भय रंग ॥१३३३
वरन्यौ सु जोग विधाँन, सोपाँन मुक्ति समाँन।
सुन हिमाचल निज स्राँन, पूछ्यौ सु प्रश्न प्रमाँन ॥१३३४

दोहा

परासक्ति तेरी प्रभा, व्याप रही वृहमंड।
सगुन रूप कहीयै मुलभ, उपजै भक्ति अखंड ॥१३३५
करै साधना सुगम कोऊ, सुर नर मनी सकोय।
कहीयै श्रीमुख कारना, हमहु कृतारथ होय ॥१३३६

छंद भुजगप्रयात

रहमं मुनी अवका अद्रराटा, वताई सवै जुक्त सौं मुक्ति वाटा।
इही रूप ठाढौ तुमारै अगारी, हृदै धारना चाहि कीजै हमारी ॥१३३७
अहूँ जक्त की भूपनी रूप आद्ू, परावृह्म की सक्ति हता प्रमाद्ू।
मधै ध्याँन नाही कहूँ येक संगा, अराधै हीयै पाय अस्ताद अंगा ॥१३३८
जुरै ध्याँन मै मूरती नाहि जेतै, तलासै सुवेख जुतै अंग तेतै।
द्रढ भाव सौं रूप मेरौ दिखावै, धृती धार गाढी निसा-द्योस धावै ॥१३३९

समावै वृती चित की मो समाँना, पराग्रवका-रूप माँही प्रवाँना ।
प्रकासै जवै ग्यांन ग्रद्वैत पूरौ, वंही मुक्त कौ जांन लीजै ग्रकूरौ ।। ३४०
मतीकै सनीकर्ष जो वृह्म मैं हूँ, सत प्राँन साखी सुधा-रूप सै हूँ ।
स्रुती-बोध कौं पाय कोडड साधै, ग्रोउकार कौ वाँन-रुपी ग्रराधै ।।१३४१
निहारै मनो स्निष्ट वेधै निसाँना, सोइ ग्रातमा वृह्म जाँनौ संधाँना ।
तत पाँच है ग्रोत-पोत तही मै, जथा जोग सौ प्राँन जाँनौ जंही मैं ।।१३४२
सनायू लगी चक्र ग्रारा-समाँना, नियता तिही वृह्म जाँनौ निदाँना ।
जिही कौ सदा जाँनीयै ध्याँन-जोगू, प्रचारै नही ग्रौर येकौ प्रीयोगू ।।१३४३
करै दूर ग्रग्याँन कौ ग्रधकारा, समावै हीयै ग्रातमा ससकारा ।
छुटै भेद गृथी मिटै छोह छ्या, सुधा सपजै रूप ग्रानद सद्या ।।१३४४
कटै कर्म-पासी विलावै क्लेसा, प्रकासै कला दिव्य पावै प्रवेसा ।
सुवर्नमई-कोस मे तेज सोई, दुती सूर ग्रौ चद पुज्जै न दोई ।।१३४५
तहाँ चचला ग्रौ ज्वला नाँहि तारा, वँही रूप ग्रद्वैत जाँनौ ग्रपारा ।
प्रभा जाहि सौं जक्त सारौ प्रकासै, वँही रूप को ध्याँन जोगी ग्रभ्यासै ।।१३४६
गनौ विश्व मै ताहि कौ स्रेष्ट ग्याता, वसू मै हीयै जाहिही कै विख्याता ।
परासक्ति कौ भक्त नीकै पिछाँनौ, जुदाई निसा-द्योस मोसौ न जाँनौ ।।१३४७
वसै संत ऐसौ जहाँ मोर वासा, सदाँ पुन्न खेत्र लखौ सावकासा ।
गरू-ग्याँन दीनौ इहो सार ग्राही, सँपेखौ पिता मात सोई सहाई ।।१३४८
इही वृह्मग्याँन कहै भक्ति ग्रागै, विरागी जही मध्यमा हूँ विलागै ।
इकै मुक्ति के तीन जाँनौ उपाई, गिरा वेद कै सास्त्र कै वीच गाई ।।१३४९
ग्रस्थ्य गनौ कर्म सौ जोग येको, विचारौ दुती ग्याँन जोग विवेको ।
लखौ तीसरौ भक्ति-जोग ललामा, करै जक्त कौं सोय उद्धार काँमा ।।१३५०
सोई ताँमसी राजसी मातुकी हू, महमाय ग्रादेस्वरी मातुकी हू ।
प्रचारै जहाँ दभ पीडा पराई, सोई ताँमसी भक्ति जाँनौ सदाई ।।१३५१
करै काँमना कर्म सौ भक्ति कोई, सोई राजसी जाँन लीजै सकोई ।
करै भक्ति कौं मोर निरकाँमना सो, वँही सातुकी जाँनीयै ग्रामना सौ ।।१३५२
धरै ध्याँन मोमै ज्युँही तेल धारा, पराभक्ति मै माँनीयै वारपारा ।
चहै मुक्ति कौ मोर सेती न चाहै, ग्रनिछ्या जुतै सेव काजै उमाहै ।।१३५३
सवै थावर जगम जीव सोई, गनै ताहि के वीच मै मोहि गोई ।
रखै ग्राप मै प्रीत ज्यो ग्रौर राखै, भजै भाव सौं वाच मिथ्या न भाखै ।।१३५४

सँमाँना गनै चेतना रूप सारौ, नही माँनीयै भक्त मोसौ नियारौ।
सधै सेव जाको वँही मोहि सेवा, भजै भाव सेती तजै द्वैत भेवा ।।१३५५
गरू ह्वै नँही जाँनीयै सिद्ध ग्याता, महा आतमा सो पिता जेम माता।
इही सौं नही कोय सिद्धाँत औरै,जिही सौं सही चित्त की वृत्ति जोरै।।१३५६

दोहा

देवी के उपदेस कौ, सुन हेमाचल स्राँन।
प्रस्न करचौ करजोर पुन, सव विध परम सयाँन ।।१३५७
सुर-समाज वाख्याँन सुन, भये कृतारथ भाय।
मनुज होय पावन मही, सो तत कहहु सुभाय ।।१३५८

छंद द्वै-अखरी

सुन हिमगिर की वाँनी स्राँनन, उत्तर दयौ मात निज आँनन।
जगम-थावर जीव जहाँना, मनुज जन्म अत ऊत्तँम माँना ।।१३५९
पाय देह ताही कौ पावन, अनचल भक्ती करै उपावन।
सास्त्र सुनै मेरे सिद्धता, प्रेमाकुल ह्वै जन्म प्रजता ।।१३६०
कारन कौ कारन जो काया, मोहि आद पिछाँनै माया।
घृत स्वधा-जुत दाँन विसेसा, और सुनै मेरौ उपदेसा ।।१३६१
उछ्छव मेरे कहै अनूपा, भजै भाव सौं रक रू भूपा।
मेरे थाँन अनत मही मै, जात करै सुख मानै जी मै ।।१३६२
रूप अनत नाँम है रूरे, पाठ करै सुमरै मति पूरे।
मो सौं भिन्न कछू नही माँनै, सुछ्छम और सथूल सँमाँनै ।।१३६३
या विध ध्याँन करै निज उर मै, पहुँचै सो मनीदीप ही पुर मै।
इधक भक्ति जो उपजै आई, सुख सौ मुक्ती होय समाई ।।१३६४
अव मेरी पूजा आराधन, समचित होय सुनहु जुत साधन।
पूजन है सोई दोय प्रकारा, अभ्यितर अरू वाह्य अगारा ।।१३६५
दोय प्रकार वाह्य दरसावत, वैदक तंत्रक भेद वतावत।
वैदक हूँ द्वै रीत वखाँनी, मूरत्त भेद जुत अँनुमाँनी ।।१३६६
वैदक लोग वद विध वैसै, तान्त्रकहू तान्त्रक विध तैसै।
वैदक विध सुनीयै वाख्याँना, सो सवही कौं सुगम समाँना ।।१३६७

द्रगन रूप मेरा तुम देखा, अनंत नैन सिर पाव असेखा।
रच मूरत ताही विध रूरी, प्रेम भक्ति करीयै उर पूरी ॥१३६८
ध्यांन अरचना विध-जुत-धारै, आंनन नाम पवित्र उचारै।
अहकार तज मांन अमाता, करै सुकर्म दाय कुसलाता ॥१३६९
हम सतुष्ट होय जिह हेरी, मात भक्त उपजै मन मेरी।
पार करहुं भव सागर प्रांनी, सब विध सौं करकै सुग्यांनी ॥१३७०
सुभ कर्मन सोई वेद समांना, धर्म वढावत पर्म धियांना।
अग्या है मेरी सोई आदू, पथ गहै नहो गृथ प्रमादू ॥१३७१
व्रांमन खत्री वैस वनाये, वेद-कर्मरत गुन विलगाये।
तिनके हित उधार त्रपुरारी, कीने मत थापन सुभकारी ॥१३७२
सिव-सक्ती वैस्नव पुन सौरी, गनपत सुतन जांनीयै गौरी।
त्रई वेद द्वारा है तैई, आराधना पर्म है एई ॥१३७३
कांम क्रोध तजकै अहकारा, सहै प्रांन मोमै संचारा।
निस-दिन मेरौ रूप निहारै, निज हीय कौ अवेर निवारै ॥१३७४
परम रूप पुन ग्यॉन प्रकासै, निश्चल ह्वै ससय सब नासै।
वैदक पूजा की विध वरनी, कलुष मिटावन ऊत्तम करनी ॥१३७५
पुन अव कहत दूसरी पूजन, जाकौं कोई जांनत ऊत्तम जन।
मूरति वा मडल के माही, तरून निसापत विंव तहांही ॥१३७६
जल मैं वांन लिंग मै जैसै, यत्र महापटहू मैं ऐसै।
हृदय-कमल मैं या विध हेरी, मूरत ध्यांन अधारै मेरी ॥१३७७
सगुन रूप करुना-रस सांनी, भीनी रस सृगार भवांनी।
पर-दुख दुखी सुखी सुख पर सौं, अत प्रसंन मुख हास अवुर सौ ॥१३७८
धारन करै अभय मुद्रा धुर, वहुर पास अकुस औरै वर।
रुचर वेख आनद-रूपनी, भजै ध्यांन मो विस्व भूपनी ॥१३७९
अतर-पूजा जितै न आवै, पूजा वाह्य करै सुख पावै।
अभ्यतर पूजा आराधन, सुफल फलै सवही मन साधन ॥१३८०
सम्वित रूप होय लय सोई, जांनहु रहित उपाध जिकोई।
आतमतत्व साक्षनी आदू, पहिचांनै मोहि रहत प्रमादू ॥१३८१
जोग-जुगत सौं करीयै जाहर, विच अभ्यतर देखै वाहर।
विध ताकी मै अहूर वतावत, प्रांनी जिम मोही कौ पावत ॥१३८२

तम-गुण बढै निसा मैं तब ही, सयन करै जढ जगम सबही।
जँन मेरी मेरै हित जागै, वृह्म-महूरथ देख विभागै ॥१३८३
सिर पै उज्जल कमल सुहावन, प्रथम ध्याँन धारै इह पावन।
गरू कौ ध्याँन करै पुन ध्याता, करग जोर पूजै कुसलाता ॥१३८४
कुडलनी देवी हितकारी, पावन सुमरन करै प्रचारी।
जन ऐसौ मन भाव जनावे, सरन होय निर्वेद सुभावै ॥१३८५
करुना कर चिंतन तिह करीयै, सजम वृह्मरघ्र अनुसरीयै।
रूप प्रकासमाँन जिह राजत, विस्त्रत मूलाधार विराजत ॥१३८६
अमृताय माँना सोइ ऊपा, सुखदाँनी आनद-सरूपा।
सुखमन मैं सचार सुपथा, गहन चक्र भेदत सोइ ग्रथा ॥१३८७
सिखा-मध्य तिह ध्याँन सवारै, पुन तन-सुद्धी-रीत प्रचारै।
सौच आद सव काम सुखारी, क्रीया समाप्त करै हितकारी ॥१३८८
विप्र होय तौ होम विधाँना, सुद्ध रीत विध वेद समाँना।
साँमग्री मधुपर्क सँवारै, वस्तु विवेक सहेत विचारै ॥१३८९
भूत-सुद्धी मात्रहु सुभ देसा, न्यास करै जिम गरू-निदेसा।
हल्लेका जु मात्रका हीकै, न्यास करै वहुरै विध नीकै ॥१३९०
मूलाधार हकार मिलावै, हीय-पकज ररकार रहावै।
भ्रूँह-मध्य इकार वसेरै, ह्रीयकार मत्र हीं इम हेरै ॥१३९१
मस्तक न्यास जथा अनुमाँनै, मत्र विधाँन-जुक्त रुच माँनै।
जे जे मत्र कहे विध जाही, तत्पर होय उचारै ताही ॥१३९२
निज जन देह आपनी जामै, पीठ कल्पना कर सुख पामै।
वाही मैं धर्मादिक औरै, करै न्यास नही चित्त सकोरै ॥१३९३
हृदय भोज मात ह्रींयकारी, पाँच प्रेत आरूढ प्रकारी।
आसन कीयै रहत जो इनके, जाहर नाँम कहत है जिनके ॥१३९४
वृह्मा विस्नु रुद्र अरु ईस्वर, गनहु सदा सिव जहाँ जक्त-गुर।
भजै पायतर रहत भवाँनी, पच-भूत आत्मक जे प्राँनी ॥१३९५
पंच अवस्था है सोइ प्रापत, अह चिद्रूप पिछाँनत आपत।
सक्ति तत्र विस्तार समाँना, वरनन कीनौ सकल विधाँना ॥१३९६
इह प्रकार कर ध्याँन अराधन, सव विध माँनसी करै जु साधन।
श्रीदेवी हित जाप समर्पन, करै भाव-जुत भरै न कर्पन ॥१३९७

अरघ स्थापन करै जु ऐसै, जल-पात्रा साधन पुन जैसै।
सामग्री सुध करकै सारी, तिह जल मंत्रत करै तयारी ॥१३९८
दिग बंधन लै गरू-निदेसा, हृदय पीठ वर दीठ हमेसा।
मूरत चितै भावना मेरी, हृदय चक्षु सौं अंतस हेरी ॥१३९९
पुन विद्या-जुत प्रांन-प्रतष्टा, आवाहन कौं धारै इष्टा।
आसन अर्घ पाद आचमना, सुभग रीत परचारै सबना ॥१४००
अंग-अंग पौसाक अधारै, सोगंधी आभूषन सारै।
पुस्पन की माला पहरावै, गुन पुन गिरा मोर हित गावै ॥१४०१
जत्रस्थापन पूजा ज्यौंही, भाव करै आवर्न भरोंही।
प्रति-दिन बनै न यैसै पूजन, सुक्रवार करीयै सो सुभ दिन ॥१४०२
और देवता मत अनुकूला, भजै भाव सौं रहै न मूला।
अभय मात करुना-रस उसरी, प्रभुता तीन-लोक मैं पसरी ॥१४०३
करै चि   तिह प्रतिकाया, मूलाधार वसै सोई माया।
पूरव कही जिही विध पूजा, देखै भाव नही कछू दूजा ॥१४०४
मूल मत्र कौं जपै मन ही मन, तव पवित्र होवहि जन कौ तन।
स्तुत सहस नांम जन सुमरन, सूक्त कवच रुद्रेमिसभासन ॥१४०५
वेद अथर्व सिरो मंत्रहु विध, सब विध हल्ले खोप निसत सिध।
लिखे मत्र जेते कछु लेखै, पेम-जुक्त ताही कौं पेखै ॥१४०६
मो सौं दोष क्षिमापन मगै, रूप हमारे मन तन रगै।
नृत्य गीत मंगल विध नाना, और सुनै मेरा आख्यांना ॥१४०७
करै होम सरधा जुत हित सौं, बार-बार तोखै दत वित सौं।
विप्र-कुमारी अंन्य बरन कौं, भोजन बटुकन आद भरन कौं ॥१४०८
करै सतुष्ट विहत मति करनी, ह्रीयकार बांनी मल हरनी।
हल्लेखा दर्पन मैं हेरौ, मध प्रतिबिंब परै नित मेरौ ॥१४०९
यासौं परै मत्र नही औरै, कारक देखहु गृंथ करोरै।
इही मत्र सौ मो अनुरागा, भाव भजै सोई बडभागा ॥१४१०
जन मेरी कोऊ या विध जांनै, अंत वसत मोही अस्थांनै।
अधिकारी ह्वै जाही आगै, भेद कहै जासौं दुख भागै ॥१४११
अन अधिकारी क्रर अगारी, हित की कहै न कथा हमारी।
जेप्ट पुत्र अथवा सिख-जोगू, परकासै इह पुन्न-प्रयोगू ॥१४१२

गीता कोउ मेरी इह गावै, पित्रवास मनीदीप ही पावै।
आप ऊधार कहा अदेसा, सत्य-सत्य इह वाच नगेसा ।।१४१३
अतरध्यान भई कह येती, सँलपती अरू देवन सेती।
जनमी फिर हिमगिर-गृह जाई, तब गौरी सिव-वरी जु ताही ।।१४१४
सिव-गौरी सुत भयौ सकदा, दाँनव तारक सौं रच दुदा।
करचौ निकदन दुष्ट कलेवर, सेनापत देवन अग्रेसुर ।।१४१५
सुरन मथ्यौ फिर जलध सकोई, जासौं रतन लये केऊ जोई।
मिली रमाँ जाही जल माही, ताकँह विस्नु वरी छिन ताही ।।१४१६
व्यास करचौ इह विध वाख्याँना, सुन्यौ भूप जनमेजय स्ताँना।
गोपनीय इह कथा गनाई, जजन करै पातक कट जाई ।।१४१७
कवि 'वुध' वरनी जेम कहाँनी, भाषाँ करकै कथा भवाँनी।
सज्जन सुनकै होय सुखारी, हित पुज्जही अभलाख हमारी ।।१४१८

दोहा

सुर बोले ताही समय, हेत धन्य हिमवाँन।
अखल जगत की ईस्वरी, भई सुता तुम भाँन[1] ।।१४१९
येक ही जाके उदर मै, वसत कोट वृहमड।
सरव-मगला जिह सुता, अक्षर-रूप अखड ।।१४२०
जग के जेते जीव है, थावर-जगम थोक।
सब ध्यावत जाकी सरन, पावत जासौं पोख ।।१४२१
चातुरता जाकी चितहु, अहो जीव मति अध।
वाल वसत हो उदर विच, पय कौ करत प्रबध ।।१४२२
अघ-हरनी करनी अभय, वरनी जाकौं वेद।
सुता भई हिमवाँन सोइ, निरख भाव निर्वेद ।।१४२३
हिम गिर कौ धिन-धिन कहत, स्तुति करत सुपर्व।
हिमगिर करत सराहना, सुता मगला सर्व ।।१४२४

---

१ भवन।

बुधसिंह चारण रचित

देवीचरित

द्वितीय भाग

अष्टम-स्कंध

सोरठा

सप्तम कह्यौ सकध, सुन नृप जनमेजय स्रवन ।
पूछ्यौ वस प्रबध, मनुवन कौ ताही समय ।।१
मन्वतर जिह माहि, जिह-जिह क्रम जिह जायगा ।
जिही रूप सौं जाहि, किह पूजी देवी कहौ ।।२
सो वैराट-सरूप, ध्यांन प्रथम हीय धारकं ।
राचूं सुक्षम रूप, हीय माही कल्यांन हित ।।३
द्वीपायन नृप देख, उत्तँम प्रस्न नरेस इह ।
वरनन लगे वसेख, नारांयन नारद कथा ।।४

छंद पद्धरी

विच हृदय रिखी नारद विचार, आये श्रीनारांयिन अगार ।
स्रम कौ निवार वैठे सुधांम, कीय नारांयन स्तुति सुकांम ।।५
जिम करयौ प्रस्न तुम हमहि जांन, नारांयन प्रति नारद निदांन ।
इह भयौ जक्त कैसै उदोत, परीयाय रीत सौ प्रथम पोत ।।६
होवत प्रतष्ट कहाँ रहत हेत, लय होत कहाँ को समट[1] लेत ।
पुरषोतम कहीयै सव प्रकार, आतम-सरूप जगके अधार ।।७
कर्म के फलोदय करत कोन, जांनी हम चाहत कथा जोन ।
मन तजै भूमका-मोह माय, पूजा जप कहीयै ध्यांन पाय ।।८
उर मिटै अविद्या अधकार, ह्वै प्रगट ग्यांन सूरज हमार ।
आपकै विनां नही कोय और, जासौं हम पूछै हांथ जोर ।।९

---

१ समेटना ।

प्रस्नन कौ उत्तर देहु पूर, हित चाहि पाय लागत हजूर।
सुर आद माँनवी सुनत स्राँन, गूढात्म होय परकास ग्याँन।।१०
पूछी मुनि नारद इह प्रकार, नारांयन बोले हित निहार।
जक्त कौ तत्व सुनीयै जरूर, परचाय कहै हम प्रेम-पूर।।११
गुन माया गर्भत होत ग्यात, तृय गुन सौं जाँनहु जक्त तात।
देवी कौ सुमरत देव-देव, भाखत हूँ ताकौं सकल भेव।।१२
वृह्मा के सुत भये मनु विख्यात, स्वयंभू मनुंतर पति सुग्यात।
पति सतरूपा राँनी जु पाय, वहु भये अनदत हित वसाय।।१३
सोइ वृह्मा लागे करन सेव, भाँमनी सहित पितु जान भेव।
बोले तव वेधा[१]-सुत विसास, आराधहु देवी प्रजा आस।।१४
ईस्वरी आद माया अधीन, तुम जाँनहु नीकै गुनन तीन।
गुन विनाँ न होवहि सृष्ट ग्यात, खोजीयै आद माया जु ख्यात।।१५
स्वायभू पितु कथ सुनी स्राँन, जिह अस्तुत लागे करन जाँन।
तप करकै परसन करी ताहि, अत नमसकार कर-कर उगाहि।।१६
देवी दीय दरसन तिही देख, वर लेहु-लेहु बोली वसेख।
वर माँग लयौ मनु तिही वार, निरविघ्न सृष्ट करीयै निहार।।१७
सिरजहि परजा कौं कर सहाय, विन माँत भवाँनी किम वसाय।
स्वायंभू सुनकै हित सुधार, वरदाँन दयौ देवी विचार।।१८
सुत वृह्मा लै वरदाँन सोय, गये वृह्म-लोक हीय ग्याँन गोय।
मनु पाय लगे विधके मुकाँम, कीनी पुन विनती सहित काँम।।१९
सुस्थाँन वतावहु मोहि सुखेत, हित करकै सिरजहु प्रजा हेत।
सोचन तव लागे विध सखेद, भूमका भई जल मग्न भेद।।२०
थल कोन वताऊँ जाहि थाँन, सुत स्रष्ट रचै जापै समाँन।
उर-कष्ट भयौ वृह्मा असेस, देखत नासका अग्र देस।।२१
अगुंष्ट माँन वाराह येक, पुल ताही परगट भय प्रवेक।
वढ गये तँही वेला विसाल, वपु भयौ दिघ्घ परमाँन व्याल।।२२
व्याल सौ सिलोचय भयौ वेख, द्रग रिखी मरीची आद देख।
तज विस्मय जाँने जक्त-तात, व्यापक जग विस्नू अज विख्यात।।२३

---

१ ब्रह्मा।

अस्तूति सब करनै लगे और, घरराय सव्द तब करत घोर।
जल पैठे ताही समय जाय, अत कठन रोम कंवर उठाय ॥२४
खित लागे खोजन करत खेल, परवाह जलघ जल पेल-पेल।
खलचलीय सिंधु हलचलीय खीर, दलमलीय रलीय ऊपर डिंडीर ॥२५
सूंघते-सूंघते पाय सोय, जल मैं प्रथवी कौं लई जोय।
दतन पै घरकै देव-देव, भुव लाये जलकौं पाय भेव ॥२६
निरखे वराह देवन निकाय, पढ-पढ कै अस्तुत लगे पाय।
दंनु हरनाक्ष आयौ जु दौर, ठाढचौ मग रोकै भुजा ठौर ॥२७
जाजुल्ल भयौ तिह वेर जुद्ध, वँह गदा मार दीय धाँम ऊद्ध।
जीत कै दनुज प्रथवी जमाय, श्रीनाथ गये निज पुर निवाय ॥२८
अवतार आद वाराह येह, निरनौ जग भाखत निसदेह।
स्वायभुव सुत कौं अप्ट-आँन[२], थप्पे विच भूंमी देख थाँन ॥२९
उपदेस रीत बोले उदत, सुत स्वायंभू मनु पर्म संत।
"महि महावाहु कीजै मुकाँम, धन-धान्य पाय इहाँ रचहु धाँम ॥३०
परजा की वृद्धी करहु पूत, कर नीत-रीत आपन क्रतूत।
वट देस काल करकै विभाग, लख न्याव निवेरौ गृहन लाग ॥३१
जग्येस-पुरस कौं करहु जाप, थिर राज जमावहु प्रजा थाप।
च्यारहौं वर्न के धर्म चार, विव अगम-निगम विचरहु विचार ॥३२
आचर्न कर्म उत्तम अनेक, विस्तार करहु परजा विवेक।
गुन के समाँन विद्या गरिप्ट, परभाव कीत करीयै प्रतप्ट ॥३३
सुत सुता करहु उतपत्त सोय, जिनके विवाह विध करहु जोय।
मनु-अस-वस राचहु मृजाद, वढ सकै नही तातै विपाद ॥३४
परधाँन पुरख कर भक्ति प्यार, सुभ रीत जन्म लेवहु सुवार।
सपन्न जोगचरीया[३] सवध, पद उच्च लहउ याही प्रवध ॥३५
उपदेस सुतन दै अप्रमाँन, सुरजेष्ट[२] गये अपने सुथाँन।
मनु रहे स्वयभू महि मुकाँम, करनै हित लागे प्रजा काँम ॥३६
सुत भये दोय ताके सुखाद, प्रीयवृत्त अवर उत्ताँनपाद।
सुकंन्या भई त्रय-जुत सरूप, अकूती देवहूती अनूप ॥३७

---

१ फेन। २ ब्रह्मा। ३ योग-चर्या।

तीसरी प्रसूती नाँम ताहि, विध वेद करे तिनके विवाहि।
आकूती रूचि रिख दई आथ, दई देवहुती कर्दम दुजात ॥३८
दक्ष कौं प्रसूती दई दाँन, सताँन वढे तिनके सुथाँन।
परजा परपूरन भई पुष्ट, तीनहूँ कन्यका वस तिष्ट ॥३९
आकूती रूचि रिख उभय अस, परमात्म अवतरे जिग[1] प्रसंस।
कर्दमहु देवहूती क्रतज्ञ, तिह उदर जन्म लीय कपल[2] तग्य ॥४०
ते सांख[3]-सास्त्र करता सुजोग, राचत जिह व्यापत नही रोग।
प्रसूती दक्ष सौं गर्भ पाय, वहु प्रगट करी कन्या वसाय ॥४१
जिह कंन्या सौं सताँन जान, ऊपजे मनुज सुर दनुज आँन।
सृष्ट के वढावन-हार सोय, जोनी जिह उत्तम कहत जोय ॥४२
जिग-पुरस[4] समय इक देव जाँम, कहनै जिह उत्तँम करचौ काँम।
स्वायंभू मनु की कीय सहाय, वहु दनुज कष्ट सौं लीय वचाय ॥४३
दीय ग्याँन मात कौ कपलदेव, भासातर करकैं वहुत भेव।
जिह साख्य-सास्त्र कौ ग्याँन जाँन, प्रक्रती पुरख पावत प्रमाँन ॥४४
वदना करत जिह वार-वार, अववेक मिटत उर अवकार।
माता कौ दैकैं पर्म मोख, उठ गये पुलह आस्रम अदोख ॥४५
पद अमर भयौ प्रापत प्रतक्ष, द्रढ साध जोग कौं पर्म दक्ष।
कपल कौ नाम जो लेत कोय, हित सहित ग्याँन हीय प्रगट होय ॥४६
वरन्यौ मनु कन्या केर वस, पुहमी प्रभाव जाकौ प्रसंस।
जिह पढत सुनत अघ दूर जात, खोजीयै तँही निस-दिवस ख्यात ॥४७

दोहा

अव मनु सुत कौ वस इह, कहत सुन्यौ जिम काँन।
दीप और सागर दुनी, सिध विवहार समाँन ॥४८
स्वायभू मनु के सुवन, वड़े भये प्रीयवृत्त।
सुता विस्वकर्मा सुघर, पुत्री परजापत्त ॥४९
महाँसती परनी मुदत, रूपवती गुन रंग।
ताके सुत दस भयेउतव, अत वलवाँन अभंग ॥५०

---

१ यज्ञ। २ कपिल मुनि। ३ सांख्य। ४ यज्ञ-पुरुष।

छन्द हरगीतका

जिह कहत नाँम जुदे-जुदे पहिचाँन लेहु परंपरा ।
विख्यात भये सोऊ जगत के विच ग्रत उदार अपंपरा ।।
अगनिध्रि[१] औरहु इध्मजिग[२] हू जग्यवाहु सुजाँनीयै ।
हुय महाँवीर हिरंनरेता परम धर्म प्रमाँनीयै ।।५१
घृतप्रष्ट स्रवन[३] धुरधरा मेधातिथी ग्रत सुधमती ।
पुन वीत्रहोत[४] पिछाँनीयै कवि भयेऊ ग्रतसय सुकृती ।।
उरजसवती भइ कंन्यका इक सील-जुत इक सुंदरी ।
मनु सुतन त्रय लय मुक्त-मारग द्वेष तज दुख दुंदरी ।।५२
कवि सवन अरू महावीर त्रहु कढ भज विरागी-भाव कौं ।
सोई ऊर्घरेता भये समरथ पाय जोग पसाव कौं ।।
इन त्याग करेउ गृहस्थ-आस्रम विपन रहेउ विहार मैं ।
मनु सुतन त्रय औरहु भये मिल निपज दूसर नार मैं ।।५३
ऊत्तम रू तामस रैवतहू इह मुनतर पत माँनीयै ।
तिनकी कथा वीती सु ताकौं जुत पुराँनन जाँनीयै ।।
इह भाँत करकै वस उत्पत राज कीनों सव रसा ।
ग्यारहौ अर्बुद अब्द गनती वीच भुव-मंडल वसा ।।५४
नीती रू विध की न्याय सौं सव प्रजा कौं कीनी सुखी ।
सूर्जास्त लख अवेर वसुमत द्रगन जन देखे दुखी ।।
इक दिवस करेऊ विचार इह रहि ध्वांत किम मोहि राज मैं ।
रथ करचौ त्यारी तेज जिम रवि सकल साज समाज मैं ।।५५
उत सूर घूँमत वीच अवर भूप प्रथवी भाग मैं ।
अघार मेटन भयौ उद्यत लार-लार ही लाग मैं ।।
वसु सात वार नरिंद्र विहरचौ विध सुनी इह वात कौं ।
सोइ रोक दीय समुझायकै सव जाँन मारग जात कौं ।।५६
रथ चक्रहू सौं वनीय रेखा सात-सागर सजुरे ।
खाली रही सोई द्वीप खित पै भीर परजा-जन भरे ।।

१ आग्नीध्र । २ इध्मजिह्व । ३ सवन । ४ वीतिहोत्र ।

जबू पलक्षहु सालमली जगकुसरू क्रौच कहीजीयै ।
पुन साकदीपहु दीप पुस्कर लेख सख्या लीजीयै ।।५७
इक येक सौं दुगनौ अनुक्रम दीप की जाँनहु दसा ।
सातहौ कहत समुद्र सीमा रचे सोऊ ऊपर रसा ।।
खारोद ईखरसोद खित पै तिम सुरोद घृतोदहू ।
खीरोद-दध मडोद लेखहु पुन सुधोद प्रवोदहू ।।५८
पुन कह्यौ जंबू-दीप प्रथम ही खार-सागर विच खिती ।
अग्निधृ नाँमक पुत्र प्रीयवृत इहाँ कीनौ अधपती ।।
तिह पार दीप पलक्ष पवृत ईखरस आवृत वही ।
जहाँ वास दीनौ ईध्मजिह्वा सुतन प्रीयवृत हित सही ।।५९
सालमली-दीप सुरोद मै मदरा भरयौ जिह माँनीयै ।
वासौ सु दीनौ जग्यवाहू जिही नृप सुत जाँनीयै ।।
कुसदीप जाकै पार कढकै घृत भरयौ सागर घनौ ।
राजाँन पुत्र हिरण्यरेता गडपती ताही गनौ ।।६०
तहाँ क्रौंच-दीपहु पार ताकै पय भरयौ सम पाँनीयै ।
घृतपुष्ट प्रीयवृत सुतन कौं घर जाग ताही जाँनीयै ।।
आगै जु साकसु अतरीपह मडोद-दध सीमा मही ।
मेधातिथी पति जहाँ माँनहु सुतन प्रीयवृत ही सही ।।६१
पुस्करह-दीप जँही परै सुद्धोद जाँनहु सागरा ।
पति वीतहोत्र प्रमाँनीयै इहाँ नृपत सुतन उजागरा ।।
उरजसवती नृप अगजा दीनी सु सुक्र दुजात कौं ।
जिह देवजाँनी आतमजा रिवत प्रगट कीनी ख्यात कौ ।।६२
प्रीयवृत्त राजा आप पुत्रन दीप करहैं सादये ।
आस्रयन करकै जोग-आस्रम भूम तज निवृत भये ।।
द्रढ प्रथम जांवू-दीप की सख्या कहै जैसी सुनौ ।
इक लाख जोजन जास आसय गोल जिम पंकज मनौ ।।६३
जिम पखुरी नवखड जाँनहु सहँस नव-जोजन समा ।
इक येक कौ जाँनहु अनुक्रम छेह पर्वत विच छिमा ।।
दक्षन रू उत्तर खड-द्वै आकार धनु अवरेखीयै ।
खूटा इलावृत खड ह्वै पुन च्यार सजुत पेखीयै ।।६४

जिह वीच सैल सुमेर जाँनहु, लाख-जोजन लेखीयैं।
आकार पकजकर्नका इम प्रभा जाहि परेखीयैं ॥
जोजन सु षोडस मूल जाकी सीस दुगन समाँनहू।
उत्तर इलावृत खड के इह सैल त्रय सु प्रमाँनहू ॥६५
गिर नील स्वेत रू स्त्रंगवांनिह तीन खड मृजाद ते।
रम्यक सु और हिरनमय रह कुरुवर्ष क्रमाद ते ॥
पूरव समुद्र समुद्र पछ्छम जहाँ जाय तहाँ जुरे।
दो-दो सहँस प्रमाँन दीरघ ऊद्ध सोहत नभ अरे ॥६६
वृत इला खड समीप वरती उत्तरोतर क्रम इही।
न्यूंनता जाहि दसांस निरनय साख साखा प्रति सही ॥
नद-नदी जाहि अनेक निकसत सुछ्छ नीर सुहावनी।
तरु ताहि के तट हरित त्रन परछाह सोभा पावनी ॥६७
दक्षन इलावृत निषध-गिर द्रढ जाहि दक्षन जाँनीयैं।
हिमकूट दक्षन गिर हिमालय मृजादा इह माँनीयैं ॥
पूरव समुद्र सु मिले पछ्छम ऊद्ध दो-दो सहँस ये।
क्रम दक्षनह तिह खड कहीयत भाग ताही सम भये ॥६८
हरी-वर्ष अरू किंपुरख हेरहु अरू भारत आदकै।
हरी-वर्ष कैं क्रम सौ निहारहु मही सैल मृजादकै ॥
पिछँम इलावृत-खड ' पव्वय मालवाँन मिलायकै।
महि दिसा पूरव गंधमादन जोइ मिल्यौ है जायकै ॥६६
दोऊ मिले नील रू निषध सौं द्रढ लंव जाकी लेखीयै।
विस्तार द्वै-द्वै सहँस वसुधा वारपार विसेखीयै ॥
इह केतुमाल भद्रास्ववर्ष जु मृजादा गिर माँनीयै।
मदर तथा नग मेरुमदर पाद च्यार प्रमाँनीयै ॥७०
सोपार्स[1] कुमँद सहेत समसर रहे घेर सुमेर कौं।
ऊंचे सु दस-दस सहँस योजन फिरे च्यारहु फेर कौं ॥
तरू च्यार जापै ताँम तिनके समुझ लेहु सयाँन सौं।
सहकार[2] जाँमुन नीप[3] वट सम निंच कुड निदाँन सौं ॥७१

१ सुपार्श्व। २ आम। ३ कदंब।

पय-रस मधू-रस ईख-रस पुन सुद्ध जल सरभर सुतै।
सपरस[1] करत लहि देव-सिद्धी जोग सनत ह्वै जुतै।।
उद्यांन तापै च्यार उत्तम देव विहरत देखोयै।
वन-नदनहू अरू चैत्ररथ वन रम्य अत अवरेखीयै।।७२
वैईभ्राज[2] स्रवतोभद्र[3] विरचत सुभग भूँम सुहाँवनी।
तिहि जाग वासौ देवतन कौ पर्म महिमा पावनी।।
अरू मदराचल ऊपरा तरू अत्र अत दीरघ तँही।
फल ताहि लागत फूटकै वर नदी अरू नोदा वही।।७३
भगवती अरू नोदा सु भ्राजत तट विराजत ताहि पै।
जन तही पुज्जत जायकै काँमना सिद्ध कराय पै।।
माया सु आद्या तुला मालिनि अँनता पुन ईस्वरी।
पुष्टी भनता काती पावन खड दुष्ट खयकरी।।७४
होत है तट पै तहाँ हाटक पुज्ज ताहि प्रवाह मै।
पूरव इलावृत-खड प्रवसो नद सोई निरवाह मै।।
पसूपती-सग सु पार्वती विच देस करत विहार कौं।
गधर्वी ईक्षनि किन्नरी-गन निज लीयै सखी नार कौं।।७५
जिही अगराग पटीर जाकी अत सुगध उडात है।
लहि पवन ही की ताग सौं जोजन सु दस-दस जात है।।
अरू मेरुमदर-गिर अनूँपम जबु-तरू जापै जुरचौ।
फल ताहि सौ रस फिसल के उत ओर दछ्छन ऊतरचौ।।७६
जामनवती नद वही जासौं जाहि तट पै जाँनीयै।
जवादनी देवी जहाँ वसुवास करत बखाँनीयै।।
जन देव नाग रिखी जुतै निश्चरहू पूजत नेम सौं।
करुना सु भीनी क्रपा करकै खड राखत खेम सौं।।७७
काँमहु-कला अरू कोकलाक्षी काँम पूजत कारुनाँ।
कोऊ नाकमाँन्या कहत धाँन्या आद नाँम उचारना।।
गुन विगृहाजु गभास्तनी[4] मनु पुज्जता जिह माँनीयै।
जबू-नदी तट पकजा पै सूर तापस माँनीयै।।७८

---

१ स्पर्श। २ वैभ्राज। ३ सर्वतोभद्र। ४ गर्भस्तनयुक्त।

लागत प्रकपन होत लेखहु जंबु-नद उत्तँम जही।
भाँमनी देवन वनत भूखन[1] सूत्रकट आदक सही।।
पर्वत सुपारस ऊपरा पादप कदव प्रमाँनीयँ।
धर निखस खोढल पाँच धारा इलावृत ऊधराँनीयँ।।७९
मधुरस वहै सोई पिछम मारग अत सुगधम मइ इला।
गहि पाँन करत जु देवगन करतूंत वाढत सुख-कला।
धुर वसत जहाँ धारेस्वरी देवी सुजन सुखदायनी।
पूजा करत जहाँ देव पुज्या काल-रूपा कायनी।।८०
माहाँनँना कहत जु महोसाहा कर्मदा फल-कारनी।
पुन काँन कोटि प्रवर्तनी देहा कराल सु दारुनी।।
कातार गृहनेस्वरी केवल कालअगी कहत है।
भक्ती सु ताके भाव भजकै लाभ वचत लहत है।।८१
नग कुमद जापै वट अनोकह साख सौं रस स्त्रवत है।
नद होय कै जहाँ नीसरी द्रढ दिसा उत्तर द्रवत है।।
मधु दुग्ध दध गुड़ अन्न मिलकै वस्त्र आभूषन वहै।
जहाँ के निवासी आयकै जन लाभ वहु विध सौं लहै।।८२
मीनाक्षी देवी, जहाँ मदर पर्म सुदर पेखीयै।
नाना प्रकार निरजनी द्वज देव पूजा देखीयै।।
नीलावरा रौद्रामुखी निज जाहि नीलालक जुता।
अत पुज्जया अत माँनया पुन प्रीया माँनसु प्रवृता।।८३
पुन कहत माँन प्रीयंतरा मातंग मत्त सु गाँमनी।
मदोद मादनी मार मादनी जपत जग की जाँमनी।।
सिखी वाहना सु मयूर सोभा गर्भभू ताही गनौ।
पूजता मार सुनाँम पावन भूत जग कारन भयौ।।८४
श्रीअवका के नाम सुमरत पाँन जल कर प्रीत सौं।
जन होत रोग न जुराभव ताप छूटत भीत सौं।।
संनिकर्ष सैल सुमेर कै सम मूल पर्वत ये गिलै।
तिह नाँम कुरग कुरग चारुध त्रकुट वैडूरज तलै।।८५

---

१ भूषण।

अरु कपल-वास कुसभ सिती अरु सिसर निखध रु सरभरे ।
पुन हंस संख रु रिखभ पावन अरु विककत उद्धरे ।।
नाग रु कलजर अडग नग ये रुक पतंग रुचीक हूँ ।
ये घेर रहे चहुँ ओर सौं निरभय सुमेर नजीक हूँ ।।८६
पर्वत सुमेर सुभाग पूरव सहँस अष्टादस सही ।
लवे सु उत्तर ओर-लेखहु सहँस द्वै ऊँच्चे सही ।।
जिह व्यास दोय सहँस जांनहु देवकूट जु जठर द्वै ।
पवमान पच्छम पारजातहु दिघ्घ इतने और द्वै ।।८७
करवीर अरु कैलासहू दक्षन दिसा मै देखीयै ।
उत्तर त्रसंगहू मकर ये सम इनही केस विसेखीयै ।।
ये आठ पर्वत येक से विसतार ऊँच वरावरीं ।
सोवर्न वीच सुमेर सोहत भिरे सृंग भराभरी ।।८८
मडत सु ऊरघ मध्य मैं ब्रह्मापुरी विस्तार सौं ।
दस सहँस जोजन दिपत दस-दिस भरी संपत मार सौं ।।
सोवर्नमय चहु-खूंट सरसत कोट फाटक द्वार के ।
दिस-विदिस आठहु दिसा पालक पुरी जाके पार के ।।८६
पचीस सत जोजन प्रलबत येक इन अनुमांनीयै ।
सख्या जु ताकी कहत साची जाहि अनुक्रम जांनीयै ।।
महादिव्य प्रथम मनोवती अमरावती अवरेखीयै ।
तेजोवती सजमनि तेऊ स्वर्न समय विसेखीयै ।।६०
क्रस्नागना सृद्धावती कहि और गंधवती इही ।
जांनीयै फेर जे जसोवती जिस्नू रवीर्पत है जँही ।।
नद महा पावन गग निकसी जाहि ख्यात जनात है ।
अवतार वांमन पद अगुप्टन तिही उत्पत तात है ।।६१
चालीस डड कटाह छिद्रन पुन्य रूप प्रवाह सौं ।
उतरी सुरालय ऊपरा जल रूप धारा जाहि सौं ।।
आकास मस्तक ऊपरा हायन हजारन रहि वही ।
प्रम धांम विस्नू सोई प्रमातम जांन ध्रुव-मंडल जँही ।।६२
उत्तांन-पाद सु भूप अगज विस्नु-पद सेवत वसै ।
परिक्रमा देवत सप्तरिखि प्रत लोक जिह आवृत लसै ।।

महमा सु गगा जांनके मुन जटा धारन कीय जही।
रहि तहाँ गगा सीस रिखीयन वहुत दिवसन सौं वही ।।६३
मुनि धाँम सौ पुन चद्र-मंडल चद्र-मडल सौं चली।
सुरजेष्ट-लोक सु संचरी उमगाय कै पुन ऊभली ।।
ह्वै च्यार धारा सीस हिमगिर नांम इह च्यारहु नदी।
निमनगा सीता अलकनंदा चक्षुभद्रा पथ छिदी ।।६४
सीता सु विध के लोक सौ पर्वत सु केसर पै परी।
मस्तक सु गधनमाद सौं भद्रा सु मडल मैं भरी ।।
मह चली पूरव दिसा मारग मिली खारोदिक मँही।
सुरसरी सुरगन सेवता जान्हवी भाखत है जँही ।।६५
नग मालवानह नीसरी दूसरी धारा दौरकै।
वढ केतुमालहु वर्ष मैं सोइ चक्षु नांम सजोरकै ।।
पाथोद पच्छम मांहि प्रवसी अत प्रवाह उभेलकै।
नीसरी तीजी अलकनदा मेर दक्षन मेलकै ।।६६
आरण्य सीम उलघकै आई सु हिमगिर ऊपरी।
हिमकूट सौ पुन पतित ह्वैकै भरतखड ही मैं भरी ।।
द्रुत मिली सोय समुद्र दच्छन सलल पावन सुरसरी।
पग परत ताके पथ मैं ह्वै रूप जावत हर-हरी ।।६७
अस्नान कर जल आचमन मांनवी मेटत म्लांन कौं।
महिमा वखांनत जाहि सुर मुनि नित्य लहि निर्वांन कौं ।।
भई चतुर्थ धारा सुभद्रा है सृगवांन सिधायकै।
भद्रास्ववर्ष मही मिली वहती हुई विचवायकै ।।६८
उत्तर समुद्र सु मिली उज्जल मात गगा मोद सौं।
उतरी सु मेटन ओघ-अघ कौं कर कृपा चहु कोद सौं ।।
जिह नाम गगा जाप सौ नर रूप होवत निर्जरा।
खित जिही भारत-खड की वरनै सु महमा मुनिवरा ।।६६

दोहा

निकस मेर सौ नद-नदी, मिली समदर माहि।
दीप कहे परवत सुद्रिढ, भूम भाग सव भाय ।।१००

कर्म क्षेत्र भारथ कहत, सब दीपन सिरमौर।
सुभ करनी पावत सुरग, ध्रुव करनी मत धोर ।।१०१
अन्य दीप है आठहू, सुर पुर जिम सुखदाय।
वल सहस्र हसती वसत, जन ताही थित जाय ।।१०२
सु रत करत नारीन सग, पौरख घटत न पिड।
विहरत सुख विलसत विवध, आयु समांन अखड ।।१०३
त्रेताजुग सम तिनह की, पौरख आयु सपूर।
उन खडँन मै रहत इम, दोख-भाव जन दूर ।।१०४

छंद उघोर

महिमड खडन माहि, देवेस रहत दिपाय।
वर्णना मत्र विसेस, अरू करत जन उपदेस ।।१०५
हित मात तत्पर होय, पूजा सु करत प्रतोय।
नव-खड मै वन नीर, सोगध वहत समीर ।।१०६
पर्वत सु पांतन पांत, अत भरे सर उपरात।
फूले सु पकज फेर, उड भ्रमर करत अँवेर ।।१०७
कारड हस चकोर, मन मुदित नाचत मोर।
क्रीडा जु करत किलोल, वोलत सु मधुरे बोल ।।१०८
वस देवगन जहाँ वास, हित करत नार हुलास।
धुर अष्ट-खडन धांम, श्रीविस्नु मूरत स्यांम ।।१०९
पूजा सु देवी पाय, वस रहे गुन विलगाय।
खित जहाँ इलावृत-खड, महादेव वासौ मड ।।११०
इक पुरख रूप ही आप, दूजौ न पुरख कदाप।
नी के सग, रच रहे ताहो रग ।।१११
जहाँ और कोऊ नर जाय, स्त्री होत सहज सुभाय।
इह कीय भवांनी आद, महि इलावृत मुरजाद ।।११२
सहचरी नार सरुध, सग रहत सेव समध।
देवेस श्रीमहादेव, सकर हखन कर सेव ।।११३
इच्छ्या सु कर जन अग, सुख जाचना सरवग।
चौथी सु मूरत चारु, वपु महादेव विचार ।।११४

तांमसी भाख्त ताहि, कारन सु वृह्माकाय ।
महादेव ध्यांन सुमत्र, तत-रूप जांनहु तत्र ।।११५
मत्र —'ओ नमो भगवते महा पुरुषाय सर्वगुणसंख्यानायानन्तायाव्यक्ताय नम' इति ।
इह करत ध्यांन उमग, पुन कहत सोइ परसंग ।
जप करन तुमही जोग, ईसवर-रूप अरोग ।।११६
इह पाद-पंकज आप, तुम सरन मेटन ताप ।
ऐस्वरीय पूरन अग, पुन-परायन पर-सग ।।११७
भावत सु भक्ति-भाव, प्रगटत सु भूत पसाव ।
संसार भासत सोय, हित आपही सौं होय ।।११८
आपही समेटत येह, गत गूढ सों होय गेह ।
जिही द्रष्ट माया जाल, कर्मन सु गुन त्रय-काल ।।११९
वृतीयां करकै वेख, द्रग सकत नांहिन देख ।
नही लिखत होत लिगार, वितरेक करत विचार १२०
हम येह जांनत हाल, जीते सु क्रुद्ध जवाल ।
आतमा जीतन आस, विच करत हीय विसवास १२१
जांननौ चहत जरूर, पर्म प्रीत तुमही पूर ।
ससार इह थित सोय, जन्मनौ-मरनौ जोय ।।१२२
मांनत जु तुमकौं मूल, अज वेद मति अनकूल ।
सीरख सु आप सहस, पुहमी मु धार प्रसस ।।१२३
आधार सक्ती आप, थिर रहे थांनक थाप ।
वदना करत विसेस, दायका सृष्टी देस ।।१२४
अज भये उतपत आद, मय ग्यांन गुन मुरजाद ।
हम ऊपजे तिह हेत, सुर असुर बघे सूत ।।१२५
इद्रीनगन उपजाय, उर रहे गति उरझाय ।
सृष्टी करत हम सोय, हित अनुगृह तुम होय ।।१२६
कीय कर्म गृंथी केर, गुन मई मोहत गेर ।
परवेस अरू प्रस्थांन, जांनत न येयहु जांन ।।१२७
आपकौं थोक अनत, संखर्हखन वित सत ।
वृत इला खड वमेस, मुद सेव करत महेस ।।१२८

पुन लखहु इह परमाँन, भद्रास्ववर्ष विधाँन।
सुत धर्म करत जु सेव, भद्रहसृवा जुत भेव ।।१२९
हरी-मूर्ती जहाँ हयग्रीव, जन प्रजा पालत जीव।
जिह उपासत इह जाप, प्राँनी सु मेटत पाप ।।१३०

मंत्र—ओ नमो भगवते धर्मायात्म विशोधनाय नमः। इति

जप करत इह मन जीत, पुन ध्याँन् आँन प्रतीत।
आस्चरीय जग मै येह, वारता विरचत वेह ।।१३१
भगवाँन-चरत विचित्र, इह जीव मृत्यु अमित्र।
मृत्यू न मारत मौत, छादवी धोवत छौत ।।१३२
फिर कुकर्मन की फास, वँध करत जग मै वास।
हीय नाँहि सोचत हाल, करतूत ऐसी काल ।।१३३
सुत पिता दग्ध सरीर, निज हाथ सेचत नीर।
इछ्या सु जीवन आप, उर चाह करत अमाप ।।१३४
रावरी माया रीत, प्राँनीन लखत प्रतीत।
आस्चरीय यातै और, देख्यौ न मन की दौर ।।१३५
अध्यात्म पठत अपार, कवि कहत वांध करार।
जापै न समुजत जीव, दुस्तर प्रभाव दईव ।।१३६
जग झूंट साँचौ जान, गहि रहे इह अग्याँन्।
पुन आप रचत प्रपच, रुख नाँहि जाँनत रच ।।१३७
अहि निसाकार अनत, सव ही पुकारत संत।
उतपत्त पालन आद, महि रची जग-मुरजाद ।।१३८
सव जोग तुमही स्याँम, ध्रव ठौर जीवन धाँम।
सव वस्तु कारन सेख, वाँनी विचार विसेख ।।१३९
भृगु-सिख्ख पायौ भेद, विध हरज कीनौ वेद।
सव रसातल मै जाय, तुम जीत आँने ताहि ।।१४०
वँह दये विध कौ आँन, विख्यात जग वाख्याँन।
नम नमो मायानाथ, हित अहित तुमही हाथ ।।१४१
सकल्प सत्य सदीव, हरी हयानन हयग्रीव।
भद्रहस्रवस भद्रास, हयसीर्ख सेव सुहास ।।१४२

ससिद्ध करत सु सेव, द्रढ भक्ति देवन देव।
तुम देत हौ जन तात, निरवाह पद निस्नाथ ॥१४३

दोहा

पढत इहै इतीहास पुन, सुनत सुनावत सोय।
पाप छूटकें मुक्त पद, लहत सयानैं लोय ॥१४४
खड सुनहु हरी-वर्ष की, कथा अनूंपम काँन।
सेवक रत प्रहलाद सुभ, नारसिंघ भगवाँन ॥१४५

मत्र.– ओ नमो भगवते नरसिंहाय नमस्तेजस्तेजमे आविराविर्भव वज्रद्रष्ट्र-कर्मा शयाँन रन्धय रन्धय तमो ग्रस ग्रस ओ स्वाहा अभय-मात्मनि भूयिष्ठाय ओ क्षौ ॥

इह मत्र कौं प्रहलादजी जपते और नीचै लिखी हुई रीत सौं ध्यॉन करते हैं। इति

कवित

स्वस्ति होंउ खलभी प्रसंन्न होउ बुद्धि सम,
परसपर प्राँनी कल्याँन ध्यावै मनक।
मेरी अन्य जननी की भक्ती विन काँमना सौं,
होय भगवाँन पद-पकज सौं सनकै ॥
संग त्याग भव जन असग होय रहूँ सुखी,
सग जो मिलै तौ मिलै सदा हरीजन कै।
दारा पुत्र वधु-वर्ग चाहत न वचाचित,
आतमा मैं रहूँ रत सरन असरन कैं ॥१४६
आतम के ग्याँनी प्राँन वृती मैं सतुष्ट होय,
सोइ अल्पकाल वीच सिद्ध होय जाता है।
ग्रेह मै सनेह कीयै वैभव मैं विकल्प होत,
चित्त नाँ थिरावत है यैसी तौ असाता है ॥
विक्रम त्रिविक्रम कौं मुनकै सुखद आँन,
अक्रम मिटत ओघ सुक्रम सुहाता है।

विस्नू विन भावना सौं होय न सहिस्नु सत,
आद-अंत व्यापक अनत जगत्राता है ॥१४७
माँनसी मिटत मल, जाही की उपासना सौं,
जात खल दूर काँम-क्रोध आद जाँनीयै।
गेह पुत्र दारा सुख वासना विसय बीच,
बधे जे अग्याँनी अभमाँनी उर आँनीयै ॥
आस्रय ज्यौं मीन जल प्राँनिन कौं आतमा है,
ऐसे हरि भूलकै महत्व मीत माँनीयै।
दैतराज दैतन कौं ऐसै उपदेस देत,
पूरन प्रभाव नरसिंघ पहिचाँनीयै ॥१४८

दोहा

पाप-रूप हस्ती प्रबल, करन निसूदन काज।
सेवत श्रीनरसिंघ कौं, रात-दिवस दनुराज ॥१४९

छंद हुँ-अखरी

इह प्रकार जाँनहु अधिकारी, केतुमालवर्ष हु सुखकारी।
प्रदुमन श्रीभगवाँन प्रधाँना, काँम-रूप करता कल्याँना ॥१५०
वसत जहाँ-तँह केर निवासी, रचत सेव ताकी सुखरासी।
सँमद-सुता तिह खड-स्वाँमनी, भजत रँमा तिह ग्रेह भाँमनी ॥१५१
जपत मत्र तिह देत जताई, गिरा जेम नाँरायन गाई।
मत्र.—ओ ह्री ह्री ह्रू ओ नमो भगवते हृषीकेशाय सर्वगुण विशेषै विलक्षितात्मने आकूतीना चित्तीना चेतसा विशेषाणाचाधिपतये षोडशकलायच्छदोमयायान्नमयायामृतमयाय सर्वमयाय सहसे ओजसे बलाय कान्ताय कामाय नमस्ते उभयत्र भूतात्-इति
जपकू मत्र ध्याँन कर जासू, पर्म भक्त इह करत प्रकासू ॥१५२
अनस्त्रीगन तुम करत अराधन, सुख चाहत अनपति रति साधन।
बात अजुक्त इहै विभचारी, है नाँहिन रुच कबहु हमारी ॥१५३
पालन करत वढावत प्रीती, पति तुमही हरि मोह प्रतीती।
आतम-लाभ परै नही औरै, जाकौं त्याग-भावना जोरै ॥१५४

आप त्याग धावत जो अन कौं, महाँ क्लेस बढावत मन कौं।
करकै जाचत तऊ काँमना, आप देत मुख इही आँमना ॥१५५
गूढ रहत सबही मन गोई, देखत भाव-अभावहू दोई।
भोग देत नही बिना भाव सौं, इछ्छत सुख मिलत न अभाव सौं ॥१५६
त्रप्ति होत नही लहत ताप कौं, अच्चुत भूलत मोउ आप कौं।
विध महेस सुर मोही वचत, ऐसै ही नर-नार जु इचत ॥१५७
आप विमुख ह्वै करम ऊपावत, पै मोकौं सुपनै नही पावत।
वसत हृदय-विच मोहि विसभर, घट जिन वसत जहाँ मेरौ घर ॥१५८
जाँनत इह सिद्धाँत न जौलौ, ते जीवन सुख लहत न तौलौ।
भक्तन सिर पकज कर भेटत, महाँ ताप तिनके अघ मेटत ॥१५९
सोई कर धारहु मेरै सिर, वक्कुस्थल[1]-विच देहु वास वर।
माया कर चेष्टा जग माँही, रात-दिवस हरी-सग रहाँही ॥१६०
इह अभिलाख सदा मोहि आरत, राखहु निज चरनन भक्ती-रत।
काँमरूप भगवाँन निकाई, सेवा लिछमी करत सदाई ॥१६१

दोहा

खित-विच रंम्यक खड मै, मच्छ-रूप भगवाँन।
वँहाँ मनु करत उपासना, निज मति नीत-निवाँन ॥१६२

मत्र —ओ नमो मुख्यतमाय नम सत्वाय प्राणायौजसे वलाय
महामत्स्याय नम ॥ इति

छंद द्वै-अक्खरी

आप लोक पालन जु अदिष्टी, वाहर-भीतर सृष्टि वरष्टी।
विचरत रचत तुमहु जग-वीचै, सव जीवन कौ जीवन सीचै ॥१६३
वाजीगर जिम पुतरी वाँधै, नाँच करावत गुन कौ नाधै।
विस्व सदा करकै वस-वरती, तुमही करत निवृत परवरती ॥१६४
भक्ती त्याग आपकौ भेवा, दनुज मनुज पन्नग अरु देवा।
पीडत ह्वै मत्सर जुर प्राँनी, इह जग-वीच घने अग्याँनी ॥१६५

[1] वक्षस्थल।

देख परत जेतौ जग-द्रष्टी, सवही आप सँवारत सृष्टी।
लोकपाल जाँनत नहि लेखौ, वल माया इह आप विसेखौ ॥१६६
प्रलय काल मैं सागर-पाँनी, वढ्यौ सबै इह विस्व विलाँनी।
पुन तुमही धरनी प्रगटाई, विवध ओसधी वीच वसाई ॥१६७
हमही जुत जग-जीव हजारन, कीने थाप, आप भव कारन।
आपही नाथ पराक्रम आदू, पैहै हम किम गृसे प्रमादू ॥१६८
अस्तुत कर मनुराज उपासत, मत्स-रूप भगवाँन महामत।
सुमरत पाठ करत जन सोई, सपत पावत मुगत सकोई ॥१६९

दोहा

मानत वर्ष हिरण्य मय, कूर्म-रूप करतार।
जिह सेवत है अर्जमा, पित्रवती परचार ॥१७०

मंत्र—ओ नमो भगवते अकूपाराय सर्वसत्त्वगुणविशेषणाय नोपलक्षित स्थानाय नमो वर्ष्मणे नमो भूम्ने नमोऽवस्थानाय नमस्ते—इति

इह जप करकै ध्याँन करत इह, जाँन लेहु सव भाँत रीत जिह।
प्रथम आप, माया परकासत, अर्थ-रूप वहु-रूप उजासत ॥१७१
रूपत है जेऊ रूप रतेई कारन मिथ्या-रूप कितेई।
गनना ताकी कौन गनावै, जग सोई असथित-रूप जनावै ॥१७२
कूरम नमसकार तुमको रै, इडज अद्भुत स्वेदज औरै।
जीव जरायुज थिर चर जेते, सुर रिखी भूतहु पित्र सहेते ॥१७३
अद्रीय सैल नदी धर अंवर, और नव-ग्रह नखत अडम्बर।
दीप समद तुमहि सव देवा, सुमन देहु सुमरन वस सेवा ॥१७४

दोहा

विनवत आद वराह कौं, प्रथवी जोरत पाँन।
खेम हेत कुरु-खड मैं, सब विध सुनहु सुजाँन ॥१७५

मत्र—ओ नमो भगवते मत्रतत्त्वलिगाय यज्ञक्रतवे महाध्वरावयवाय महा-वराहाय नम कर्मशुक्लाय त्रियुगाय नमस्ते—इति

छंद द्वै-अखरी

करत ध्यांन इह विध सौं कहीयै, लाभ धरा मन-वचत लहीयै ।
निपुन देह इद्री निज मन सौं, पडत मथन करत लहि पन सौं ।।१७५
काठ मथन कर अग्नी काढत, विसन त्याग आतम सुख वाढत ।
द्रव्य क्रीया अरू विसय जु देवा, इद्रीगन व्यापार अजेवा ।।१७६
हेतु अयन तन ईस काल हुव, धरता करता अहकार ध्रुव ।
क्रम माया गुन कारज करकै, वस्तु रुप आतम लख वरकै ।।१७७
हिरण्याक्ष दाँनव के हेता, आँनी जल सौं मोहि अनता ।
नमसकार तुमकौ वहु नाँमी, श्रीवाराह विश्व के स्वाँमी ।।१७८

दोहा

खड येम किंम पुरख मैं, राजत सीता-राँम ।
करत सेव हँनुमत कपि, सुखद-रूप घनस्याँम ।।१७९

मत्र—ओ नमो भगवते उत्तमश्लोकाय नम.—इति । आर्यलक्षण शीलवृताय नम, उपशिक्षितात्मने उपासित लोकाय नमस्साधुवादनिक्‍र्षणाय नमो ब्रह्मण्यदेवाय महापुरुषाय महाभागाय नम.—इति ।

छद द्वै-अखरी

येक रूप वेदात अभ्यासै, परसिध तत्व सोय परकासै ।
अनुभव सौं आतम अविनासी, रहित गुनन सतन सुखरासी ।।१८०
प्रापत जोग सु सीलन पूरौ, दुरमति अहकार सौं दूरौ ।
वृह्म-रूप श्रीरांम विसारद, सेस महेस वखाँनत सारद ।।१८१
जग सिक्षा हित जनम लयौ जिन, गुन ताके विचार लीजै गिन ।
पुरी अजोध्या सुरग पठाई, सदगत दीनी जन सुखदाई ।।१८२
प्रगट करी कीरत जग-पावन, निगम रीत अघ ओघ नसावन ।
पकज-नयन राँम-पद प्रीती, पूजा हँनुमत करत प्रतीती ।।१८३

दोहा

नाँराँयन नारद कहत, भारथ-खड सभेव ।
तुम पूजा मेरी करत, दास-भाव हम देव ।।१८४

मंत्र—ओं नमो भगवते उपशमशीलायोपरतात्माय नमो किञ्चन वित्ताय ऋषिऋषभाय नरनारायणाय परमहंस परमगुरवे आत्मारामाधिपतये नमो नम.—इति ।

छंद द्वै-अक्खरी

सबही इह दीसत संसारा, नाँरायन करता निरधारा ।
बंधत नहिं ताही मैं बंधन, देहक क्षुधा पिपासा दुंधन ।।१८५
गुन अवगुन देखत सब ग्याता, दूखत द्रष्ट न होय दिखाता ।
जोग-निपुन तुमही जोगेस्वर, हिरण्यगर्भ लौं आद हरी हर ।।१८६
वृह्माँ कही विवध विध बाँनी, निरगुन तुम दाता निरबाँनी ।
भक्ति जुक्ति चित करै भावना, देह मलिन्न सौं धरै दावना ।।१८७
पडत सोइ सोई परवीना, अप्ट प्रकार जोग आवीना ।
मिटै वासना जैसै मन की, चितै सरव तेरे चरनन की ।।१८८
देहु अधोक्षज इह मति देवा, सुमरन करूँ आपकी सेवा ।
नारद सौं प्रसन्न नारायन, कहनै लगे भरथ-खंड कारन ।।१८९
करम-भूंमका इही कृतारथ, भूमंडल मैं खंड जु भारथ ।
परवत सलिता परम पवित्रा, चित लगाय सु सुनहु चरत्रा ।।१९०
स्नान करत जल-पाँन करत सम, तीन ताप मेटत हीय कौ तम ।
माँनव जे जनमत जिह माँही, सातुक राजस ताँमस साँही ।।१९१
कर्म करत जैसी कछु करनी, वेद विहत अविहत जो बरनी ।
देव होत माँनव समुदाई, जीव नारकी किते जनाई ।।१९२
नाना विध के जीव निदाँना, विलसत नाना भोग विधाँना ।
जिह प्रधाँनता सब कोई जानत, वेद-वाद मुनि देव वखाँनत ।।१९३
आठ निकट उपदीप है औरै, जाही के उपजोगी जोरै ।
स्वर्णप्रस्थ आवर्तन रमणक, चंद्रसुक[१] मंदर अरू रमणक ।।१९४
पाँचजन्य सिंघल वा लंका, सँमज नाम मेटहु हीय-संका ।
वरन्यी जंबु-दीप विसतारा, नाँरायन नारद निरधारा ।।१९५

१ चंद्रशुक्र ।

दोहा

नाँराँयन नारद कह्यौ, नव खडँन कौ नेम।
पूजा सुमरन मत्र पुन, जाँनत है जन जेम ।।१६६
पलक्षाद[1] खट दीप पुन, वरनन करत विसेस।
घिरे सँमदर घेर मैं, दीपत सवही देस ।।१६७

छद पद्धरी

दीपनँ मैं उत्तँम जवु-दीप, सोहै सुमेर आवृत समीप।
पूरत सु लाख जोजन प्रमाँन, विस्तार ताहि जाँनहु विधाँन ।।१६८
वीत्यौ सु खार सामद्र वार, पुन दीप पलक्षहु जिही पार।
तामै पलक्ष कौ वृक्ष तेम, है दीर्घ सोई आकार हेम ।।१६६
सुत इध्मजिह्व प्रीयवृत सोय, साख्यात अग्न के रूप सोय।
वस रहे जहाँ निस्सक वास, ताहीने अधपति गनहु तास ।।२००
आपने दीप के भाग और, ठहराय दये सुत सात ठौर।
गहि जोग-क्रीया नृप आत्मग्याँन, धारन कीय कारन ईस ध्याँन ।।२०१
सुत सात-खड मै वसत सोय, इह नाँम ताहि जाँनहु अगोय।
सिव वयस भद्र सातहु सुखेम, अमृतहू अभय अवपती येम ।।२०२
सात ही नदी निकसत सजोर, अरुणा नृमणा[2] अगरसी और।
सावत्री सुप्रभातिका सुद्ध, क्षित्तभर[3] सत्तभरा[4] रुद्ध ।।२०३
गिर सात जहाँ ही कहत गोत, इह दीप माँहि दीरघ उदोत।
मनीकूल इद्रही कूट मड, पुन इद्रसेन जाँनहु प्रचड ।।२०४
जोती-समाँन सोपन जाँन, हिरनाष्टा पर्बत अत महाँन।
गिर मेघमाल तहँवाँ गहीर, भूरुह[5] की तापै भरी भीर ।।२०५
जल-सपरस नदियन कहत जास, तन मिटत तीनही ताप त्रास।
जहाँ ब्राँमन हस पतग जात, वासौ उर्धायन[6] जहाँ वसात ।।२०६
हत्याग[7] च्यार येऊ वर्न होय, जन तहाँ वसत है खड जोय।
आयुस सहस्र हायन अखीर, विध वेद त्रई निरवहत वीर ।।२०७

---

१ प्लक्षद्वीप आदि। २ नृम्णा। ३ क्षतभरा। ४ सतभरा। ५ वृक्ष। ६ ऊर्ध्वायन। ७ सत्यांग

सूरज-आराधना करत साथ, श्रीविस्नु-मूर्त पूजा सनाथ ।
पाँचही दीप जे पलक्षाद,[1] आयुस बल बुद्धी अप्रमाद ।।२०८
विक्रम सबही कौं अत विचत्र, परभाव वीरीय आंतम पवित्र ।
आवर्त ईखरस-उदध आप, थिर करी दीप मुरजाद थाप ।।२०९
तिह पार साल्मली-दीप तेम, आवृत मदरादध भरयौ येम ।
सालमली वृक्ष जामै समाँन, पूरन पलक्षही के प्रमाँन ।।२१०
रहत है गरूड जहाँ पक्षराज, धर जग्यवाहु[2] राजाधिराज ।
प्रीयवृत सुतन येऊ प्रचड, खित प्रजापाल है तिही खड ।।२११
सात ही पुत्र ताके समाँन, दीय भाग धरा कौ वाँट दाँन ।
ताके सुनाम जाँनहु तमाँम, महि-खड जिते जाहर मुकाँम ।।२१२
सुरोचत[3] सौम सरमनै सोय, अरू देववर्ष[4] जाँनहु अगोय ।
पुन पारभद्र याही प्रमाँन, अप्यायन[5]-वर्ष जु जाँन आँन ।।२१३
अतग्याँन[6]-सहित सातहु अखंड, मिल पर्वत सातहु नदी मड ।
पर्वत सख्या कहि प्रथम पोत, इह खड करत न्यारे उदोत ।।२१४
सिल्लोचय स्वर[7] अरू सत्यस्त्र ग,[8] अरू वाँमदेव कु दह्व उतग ।
कोऊमद[9] पुस्पवर्षहु कहत, पुन भनहु सहँसस्त्रु त[10] दध प्रजत ।।२१५
नदी जहाँ प्रथम अनुमती नाँम, लेखीयै सिनावाली ललाँम ।
सरसुती कूह रजनी कहाय, नदा जल निर्मल जन नहाय ।।२१६
वृहाँमन आद वर्णन विसेस, स्नु तधर वीरजधर धर सुवेस ।
विसुंदर[11] ईखूंधर विचार, चल रीत नीत ये वर्न च्यार ।।२१७
सोममय मूरती विस्नू स्याँम, जाही उपासना आठ जाँम ।
दध मदरा सौं दुगनी घृतोद, कुसदीप वीच मै चहूँ कोद ।।२१८
कुसवृक्ष जहाँ करता प्रकाम, जाँनीयै प्रभा सौ प्रभा जास ।
सुत प्रीयवृत के परम सत, राजा हिरण्यरेता रहत ।।२१९
सुत तातहु कौं जिह दई सीम, नि:कंटक राज की सात नीम ।
अधपती खड के नाँम येह, वसु वसूदाँन द्रढरूच वसेह ।।२२०
अरु नाभगुप्त जाँनहु अजेव, द्रढ स्तुतवृत अरू नाँमदेव ।
विभुक्ती[12] जुतै वासौ वसाय, छित दीप कुसहु मै रहे छाय ।।२२१

---

१ प्लक्ष आदि । २ यज्ञबाहु । ३ सुरोचन । ४ देववर्षक । ५ आप्यायन । ६ विज्ञात ।
७ सरस । ८ शतशृंग । ९ कुमुद । १० सहस्रश्रुति । ११ वसुंधर । १२ विविक्त ।

गिर सात सातहू नदी ग्यात, खित-सीमा लेवहु समुज ख्यांत ।
चक्र नग जाँनीयै चतुरसृ ग, अरू कपल चित्रकूटक ऊतग ।।२२२
देवानिक ऊरधरूमा देख, पुन द्रवन गिरी लहीयै परेख ।
सैंवलनी तामैं गनहु सात, रसकुल्या मधुकुल्या रहात ।।२२३
जाँनीयैं मित्रव्रिदा जरूर, पुन स्रुतव्रिदाहू सलल पूर ।
आपगा देवगर्भा जु और, जल वहत घृतच्युता वीच जोर ।।२२४
जाँनीयै मत्रमालका[1] जेम, आँनद सहत जन रहत येम ।
विप्रन के जांनहु च्यार वर्न, अभियुक्त कुसल कोविद उधर्न ।।२२५
जुत कुलक जाँनीयैं च्यार जात, परमेस विस्नु पूरन पुजात ।
साख्यात अग्नही के सरूप, आनदकद सोभा अनूप ।।२२६
आगैं घृतोद के लखहु येम, जिह क्रौंचदीप है नाँम जेम ।
कुसदीपहु सौं दुगनौ कहत, आवृत खीरोदिक आद-अत ।।२२७
नग अडग जहाँ है क्रौंच-नाम, धरतीय कहावत क्रौंच धाँम ।
प्रीयवृत सुतन घृतप्रष्ट पूर, सोई वास करत नृप-त्रंस पूर ।।२२८
अगज भये ताकैं सात येम, जिह् वाँट खड दीय सात जेम ।
नाँम सौ पुत्रके खड नाँम, वोलत है परजा विन-विराँम ।।२२९
पुत्र कौ राज दै ग्याँन् पाय, श्रीविस्नु-लोक कौं गये सिधाय ।
तिनके पुत्रनके नाँम तौन, भूपती देस निज वसत भौंन ।।२३०
आँम अरू मधूरुह कहत येम, जाँनीयैं मेघहूप्रष्ट[2] जेम ।
सुधामक फेर आजिष्ट सोय, लोहितारनह[3] जाँनौ सुलोय ।।२३१
पुन वनसपती[4] जाँनहु प्रमाँन, पर्वत अरू सलता इह प्रधाँन ।
गिर सुक्र[5] नाम कहीयत गनाय, वैवर्द्धमान भोजन[6] वसाय ।।२३२
उपवरहन कहोयत गोत्र आँन, जहाँ लेहु नद-नदत सुजान ।
सर्वतोभद्र जाही सहेत, खित नदी सात है मात खेत ।।२३३
अभया रू अमृतओवा[7] जु आद, आरोयका तीर्थवती अगाध ।
वृतोरूपवती सुक्ला विसेस, अरू पवित्रवती है नद असेस ।।२३४
जहाँ आँमनाद है वर्न जाँन, पय पावत जाही करत पान ।
जलमय सोइ ईस्वर करत जाप, आराधन साधन मत्र आप ।।२३५

---

१ मदमालिका । २ मेघपृष्ठ । ३ लोहितार्ण । ४ वनस्पति । ५ शुक्ल । ६ भोजन नामक पर्वत । ७ अमृतौघा ।

आप' पुरुवीर्याः स्थ—पुनतीर्भूर्भुव स्वरः ।
तान. पुनीताऽमीवघ्नीः स्पृशतामात्मना भव ॥

छंद पद्धरी

दध खीरोदक पर साक-देस, वत्तीस-लक्ष जोजन विसेस ।
जिह दीप माँहि तरु साक जाँम, निज साक-दीप तिह कहत नाँम ॥२३६
दध मडोदक आवर्त-दीप, मेधातिथ प्रीयवृत-सुत महीप ।
दीय सात सुतन कौ सात देस, वरनत तिह आख्या खड वेस ॥२३७
पुरोजव भृतोजव[1] पवहमाँन, धुम्रानिक चितरथ सनिर्वांन ।
वहुरुप विस्वध्रक जहाँ वहोर, ठहराय दये नृप सात ठौर ॥२३८
मरजाद सिलोचय सात मेल, अरु सात नदी अंमृत उभेल ।
ईसाँन सिखर उरुस्र ग येक, वलभद्र रु सतकेसर वसेक ॥२३९
पुन सहँस स्रोत्र कहु देवपाल, महाँसन की विरचत सयल-माल ।
नदीयन मै अनघा सुभग नीर, गँनीयै आयुरदा पुन गहीर ॥२४०
अरु उभय-सपृष्टी नदी और, जहाँ अपराजित पचपदी जोर ।
स्रुतीसहँस[2] निजधृती सोत, इह वर्न विप्र आदन उदोत ॥२४१
सतवृत रितुवृत[3] ही विसेस, दाँनुवृत[4] अनुवृत वसत देस ।
भगवाँन वायु की करत भक्ति, जप प्राँनायाँम ही सहित जुक्ति ॥२४२
रज तम कौ लागत नाँहि रंग, सत वाढत जासौ येक सग ।
तन कौं नही व्यापत तीन ताप, जिह हेत करत इह सदाँ जाप ॥२४३

मंत्र.—अन्त प्रविश्य भूतानि यो विभर्त्यात्मकेतुभि अन्तर्यामीश्वर.
साक्षात्पातु नो यद्वशे इदम् ॥ इति ॥

छद पद्धरी

इह साक-दीप सौं दुगन अत्र, पुस्करह-दीप जाँनहु पवित्र ।
सुद्धोदक-दव कै वीच सोय, जहाँ पुस्कर फूले लेहु जोय ॥२४४
छद सिखा अग्न दुति रहे छाय, जगमगत प्रभा जाही जनाय ।
श्रीवृह्माँजू कौ इक सुथाँन, जिह लोकन के करता सुआँन ॥२४५

१ मन' पूर्वज । २ सहस्र स्रोत । ३ ऋतुव्रत । ४ दानव्रत ।

गन जहाँ माँनसोतर[1] गिरद, विसतार अयुत ऊरध विलद ।
दिस च्यार वसे सिर च्यार द्रग, इद्रादि आद जाँनहु अभग ।।२४६
जिह ऊपर सूरज-चाल जाँन, मेर की प्रदक्षन करत माँन ।
समछर[2] चक्र ताही समीह, देवन को गनीयत रात दीह ।।२४७
ऊत्तर अरु दछ्छन अयन येम, जाँनीयै प्रमाँनहु काल जेम ।
प्रीयवृत्त सुतन परताप पूर, जहाँ वीतहोत्र वासौ जरूर ।।२४८
द्वै पुत्र भये - जिनके दुरुह, जिह खड भाग द्वै करे जूह ।
जिह बाँट दये आसन जमाय, रमनक अरु धातकि उभय राय ।।२४९
ह्वै गये सरन हरी वीतहोत्र, प्रथमी सु देय पुत्रन पत्रोत्र ।
परजा सुकर्म जहाँ की पुनीत, इक वृह्मरूप ध्यावत अथीत ।।२५०

मत्र —यत्तत्कर्ममय लिग व्रह्मलिगं जनोऽर्चयेत् ।
एकातमद्वय शात तस्मै भगवते नम· ।। इति

छंद पद्धरी

सुद्धोदकहू पै पारसीम, नग लोकालोक निरखू[3] नीम ।
लोक रु अलोक के मध्य लेख, वट हेत भाग जाँनहु विसेख ।।२५१
मेरू रु माँनसोतर मभार, सोवर्न-भूँम जाँनहु सँवार ।
समरूप गनहु दर्पन समाँन, येको न वृक्ष जामै उगाँन ।।२५२
ओसधी जहाँ नही अन्न आद, माँनवी वसत कोऊ न मृघाद ।
देवन की वासी सबही देस, अन[4] प्राँनी कोऊ न जहाँ असेस ।२५३
परवत जो लोकालोक प्रत, वामौ अलोक-लोकहु वसत ।
लेखत इम लोकालोक नाँम, ध्रुव तीन-लोक विच रच्यौ धाँम ।।२५४
ईस्वर की रचना अत अभूत, विरच्यौ इह पर्वत वाँध व्यूँत ।
जिह सूर-किरन नही पार जात, ध्रुव-आदक जोती धगधगात ।।२५५
इह पार रहत सूरज-उजास, भूगोल लेहु परमाँन भास ।
पचास-कोट जोजन प्रमाँन, नग लोकालोकहु घर निदाँन ।।२५६
चतुरांस इही नग गनहु छोन, कीय रक्षक दिग्गज चहूँ कोन ।
दिग्गजहु रिखभ अरु पुस्पदत, वामन अपराजित जहाँ वसंत ।।२५७

---

१ मानसोत्तर। २ संवत्सर। ३ सूर्य। ४ अन्य।

सोइ रक्षक है लोकन समस्त, है माया ईस्वर रचत हस्त।
परमेस्वर लोकालोक पास, सोई अष्ट-सिद्धि जुत सावकास ।।२५८
विष्वकसेनादिक[1] प्रभू विसेख, परवेष्टत आयुध पुञ्ज पेख।
कल्यांन-अरथ रहि चहूँ कोद, माया निज विरचत पाय मोद ।।२५९
ससार करत पालन समर्थ, आपनी विभूती पाय अर्थ।
इह पर्वत-पार न जाय और, जोग की विना सिद्धी सजोर ।।२६०
श्रीक्रस्न सिखडी गये साथ, गुरू-पुत्र-हेत सोई प्रगट गाथ।
द्वावाभूमी[2] की करत दौर, भाँनहु भ्रमत गत सौभ-भौर ।।२६१
पचीस कोट जोजन प्रमाँन, जिह अतर कौ तुम लेहु जाँन।
प्रापत सूरज ही मध्य पिंड, याही कौ कहीयत नाँम इड ।।२६२
सो होत अचेतन मृतु-समध, वैराज पुरखहू रूप विध।
ये ही प्रवेस करता सु इड, ताही सौं उचरत मारतड ।।२६३
उतपत जिनहू की हिरन इड, ये हिरनगर्भ जाँनहु अखंड।
सूरज कर विदिसा-दिसा सध, पावत सु कालवेता प्रवध ।।२६४
इनही सौं भ्यासत है अकास, अपवर्ग स्वर्ग नाना अवास।
देवता दैत पन्नग दिखाय, जढ जगम जढ जाहर जनाय ।।२६५
सवही के लोचन गनहु सूर, दिष्टा उपदिष्टा निकट दूर।
इनकी उपासना थपी आद, जोग की रीत औरै जपाद ।।२६६
भूमडल भाख्यो सर्वे भेव, दँनु माँनव वासी जहाँ देव।
गँनीयत प्रमाँन याही खगोल, पुस्कर की दुस्कर महा पोल ।।२६७
दाँना इक जैसै दोय दाल, भूगोल जितौ खगोल-भाल।
अतर कौं कहीयत अतरीक्ष, परकास करत सूरज प्रतक्ष ।।२६८

दोहा

उतराँयन गत मद अत, दक्खन सत्वर दौर।
मोटौ-छोटौ इह मुदै, तमी दिवस कौ तौर ।।२६९
तुला मेख सूरज तुलै, सम सुथाँन दहु सध।
दिवस-रात सम होत दहु, पडित लखत प्रवध ।।२७०

---

१ विष्वक्सेनादि आठ सिद्ध। २ द्यावाभूमि।

पाँचहु रास वृपाद पुन, बाढत दिवस बसेख ।
वृश्चकाद छिनदा वढत, द्रगनन लीजै देख ।।२७१

छंद उधोर

श्री सूर उत्तम चाल, वरनत सु वुद्धि विसाल ।
गत सीघ्र मद गिनत, मध्यम सु जाँनहु मित ।।२७२
परभाव त्रय परकार, गृहहु के त्रय आगार ।
मध जारईव[1] कौं माँन, सोई कहत मध्य सुथाँन ।।२७३
उतराध ऐरावत्त, प्रथ नाँम है परवृत्त ।
दिक जाँन दख्खन देस, वैस्नाँहनर[2] सुविसेस ।।२७४
सुसथाँन तीन समाँन, पुन वीथीयन परवाँन ।
अस्वनी भरनी और, जाँनीयै क्रतका जोर ।।२७५
निज नाँगवीथी नाँम, धुर कहत है मतिधाँम ।
रोहनी मृगमर रेख, आद्रा सु नखत असेख ।।२७६
वीथी सु गज वाख्याँन, सव कहत है सुग्याँन ।
पुनरवसू पुख्ख परेख, श्लेखा जु जाँनहु सेख ।।२७७
ऐरावती उर आँन, वीथी सु इह वाख्याँन ।
त्रहु वीथीयन गत तेह, उत्तराध मारग येह ।।२७८
न छूछत्र मघाहु निरेख, पूर्वा सु फलगुनी पेख ।
उतरा सु फल्गुनी और, जिह आर्षभी मग जोर ।।२७९
हस्तहू चित्रा होय, गोवीथी स्वातहु गोय ।
पुन विसाखा पहिचाँन, अनुरधा जेष्टा आँन ।।२८०
जारदगृवी[3] इह जाँन, वीथी सु कहत विधाँन ।
मध्यम सु मारग मित्र, परमाँन जोतस-पत्र ।। २८१
पुन मूल नखत परेख, पूर्वाहुषाढा पेख ।
उतराहुषाढा आँन, वीथी सु अज वाखाँन ।।२८२
स्रवनहु धँनेष्टा सिद्ध, सतभिखा नखत सनिद्ध ।
मृघ-वीथका इह माँन, जोतसी जाँनत जाँन ।।२८३

१ जारद्गव (?) । २ वैश्वानर । ३ जारद्गवी ।

पूर्वा सु भाद्रपदेह, उत्तराभाद्रपद येह।
रेवती नखत रहत, वैस्वानरी वरतत ॥२८४
इह तीन वीथी आद, दिनकरह मग दिखनाद[1]।
विच ध्रुवा सूरज वास, रथ बँधी कोटी रास ॥२८५
उतराद मैं जुग और, अक्ष के बीच अथोर।
पवना सु बाँधी पास, खैंचत सक्ति खास ॥२८६
रोहँण[2] सु बीच रहत, गत मद सूर गहत।
जिह बीच मडल जात, रह जाय छोटी रात ॥२८७
दिन होत वृद्धी दौर, उतराव सूरज और।
दिन जात है दिखनाव, पेरना वायु पसाव ॥२८८
अवसेहनऊ[3] आखत, परवेस ताही प्रत।
रवि चलत बाहर रेख, बढ सीघ्र चाल वसेख ॥२८९
अह[4] होत है लघु येम, तमसनी दीरघ तेम।
समता सु विखुवत संग, पथ गहत जवही पतग ॥२९०
सब रात-दिवस समाँन, सम भूत जाहि सुथाँन।
करकै जु ध्रुवकै कायु, वल पास औरै वायु ॥२९१
खैगोल-मडल बीच, विचरत सूरज बीच।
ध्रुव वायु छूटत धोर[5], कढजात मडल कोर ॥२९२
बाहर सु जात विसेस, दिस उतर-दखन दिनेस।
गत सूर वरनी गैल, सम सर सुमेरू सैल ॥२९३
मंड पूर्व पुरि मघवाँन, अमरावती अस्थाँन।
जमपुरी दख्खन जोय, सजँमनि नाँमा सोय ॥२९४
पछ्छम सु वरुन प्रधाँम, निश्लोचनी जिह नाँम।
पुर सोम की पहिचाँन, उत्तर विभावरी आँन ॥२९५
खित वसत भारथ-खड, मरजाद जोतस मंड।
रवि उदय कहत सुराह, मघवाँन-नगरी माह ॥२९६
मध्याँन जमपुरी-मध्य, पुरी वरुन साँझ प्रसिद्ध।
रवि सोमपुरि अधरात, पुरहूतपुरि परभात ॥२९७

---

१ दक्षिण। २ रोहण=चढाव। ३ अवरोहण। ४ दिन। ५ धारा।

पुरहूतपुरीय पतग, आवत सु जवही उमंग।
जमपुरी उदय जनाय, वँह जँमपुरी जब आय ॥२९८
पुरी परजन परभात, जासौं सु आगै जात।
पुरि सोम होवत प्रात, अमरावती पुन आत ॥२९९
सोइ वसत सीस सुमेर, घर देव द्रगन घेर।
मध्यांन कै सम मित्र, तहाँ वसत दीसत तत्र ॥३००
करत सु प्रदक्षन केर, सवताँ नगेस सुमेर।
दिस-विदिस सूरज देव, अह करत फिरत अजेव ॥३०१
प्रथमा उदय कौं प्रात, लहि ओट साँझ लखात।
रव उदय अस्तन रूप, भव-कर्म साखी भूप ॥३०२
जहाँ लखत उदय जनाय, अनलखै निस अवकाय।
दिन-रात कौ सव दौर, आकास-प्रथवी और ॥३०३

दोहा

रवि-मडल नीचै रहत, जोजन अयु जहाँह।
सूर चद की येक सम, रोकत है मग राह[1] ॥३०४

छंद पद्धरी

जोजन सहस-दस विव जाँन, सूरज प्रमाँन जाँनहु समान।
वारह-सहंस है चद्र-विव, परकास करत जोती प्रलव ॥३०५
जोजन सहंस-तेरह जरूर, करता आछादन राह क्रूर।
दूर सौं ढकत विधु सूरदेव, अधार घोर रूपी अजेव ॥३०६
जव सूर-चद सामीप जात, हरिचक्र प्रेर ताही हटात।
जन कहत गृहन ताकौं जनाय, दुति हरन चद सूरज दिखाय ॥३०७
जोजन सहंस-दस तरै जास, विद्याधर चारन सिद्ध वास।
इतनै ही अतर गनहु और, ठहरे पिसाचहू भूत ठौर ॥३०८
राक्सहू जिक्ष जहाँ प्रेतराज, सव येक-रूप गनीयत समाज।
लेखीयै तरै तिह भूरलोक, थित पंखी-गनकै रहस थोक ॥३०९

---

१ राहु।

हंसाद गरुड सारस रहत, अतर येते पैं धरा-अंत।
तिह तरै सात है विवर तेम, जोजन दस-दस कौ वीच जेम ।।३१०
चौडे अरू लबे इते चौक, लग अतल-वितल आदक सु लोक।
सुख जहाँ स्वर्ग ही के समाँन, वरतै न जहाँ साँझहु विहाँन ।।३११
दाँनव अरू पन्नग जहाँ द्रग, सुख वास वसत आनद सग।
ऐस्वर्ज सकल विध जहाँ औज, है वापी कूंप तड़ाग हौज ।।३१२
वन उपवन वीथी हित विहार, वाढत सुगध सीतल-वयार।
तरू तरल सरल मजरत-माल, मणीवक पर गुजत भृमर-माल ।।३१३
पत्तन मय दाँनव रचत पूर द्रग दीख परत तहाँ निकट दूर।
मिदर केऊ सुदर ठये मड, झुक रहे झरोखन झुड-झुड ।।३१४
जगमगत जात नग मनि जहूर, परकास करत चहु-दिसा पूर।
आदीत-किरन विन जहाँ उजास, रगमगत नगन-प्रतिविंव रास ।।३१५
ओसधी रसाँयन जुत अँनेक, अन्नाद भक्ष भोजन असेख।
नही जरा मरन व्याधी जनाय, कवहूँ नही व्यापै मरन काय ।।३१६
दुरगध स्वेद जिनकै न देह, उछ्छाह प्रकासी थाँन येह।
श्रीविस्नु सुदर्सन-चक्र सोय, हित आकर्सन परवेस होय ।।३१७
पतनी दैतन की माहि पेट,- झरजात गर्भ ताही झपेट।
वाढत नही तातै दैत-वस, प्रभू देवन के स्याहिक प्रसस ।।३१८
पुन प्रथम विव अत लहि प्रधाँन, जाकौ प्रमाँन इह लेहु जाँन।
मय-सुतन वसत जहाँ वल-मदध, छिन्न माया के रचत छद्र ।।३१९
साधना-अरथ हितकार सोय, लेकै कोऊ धारन करत लोय।
वलकै वल की सुन लेहु वात, जो मुखा-जँभाई लेत जात ।।३२०
तीय-झुड प्रगट ह्वै तातकाल, वहू रूपवती मोहनी वाल।
पुरचली स्वैरनी त्रय प्रकार, काँमनी काँम-हित करत कार ।।३२१
येकत पुरख कौं पाय येह, दुरवलहू पुष्टी करत देह।
रस हाटक भोजन दै रसाल, वृद्धि काम करत ज्वाला विसाल ।।३२२
नित रमन करत तासौ निसक, आसन परभासन लाय अक।
कर-कर कटाक्ष अवलोक नाद, विल्लासी अनापहू विभ्रमाद ।।३२३
मन-तन कौं मोहित करत मद, वल वाढत वाधा वाढ विंद।
भासत नहि ताकौं साँज-भौर, ज्याँ-ज्याँ मनोज कौं गाढ जोर ।।३२४

होवत वलिष्ट हस्ती हजार, मद-ग्रध कंध परभाव मार।
सिध ईस्वर ग्रापै माँन सोय, हीय ग्रहकार सौ विवस होय।।३२५
इह प्रथम विवर जाँनहु उदत, दूसरौ वितल नाँमा वदत।
भूतल कै नीचै विवर भाग, सिव ग्राद भवाँनी साँनुराग।।३२६
वस रहे भोग हित जहाँ वास, पार्षद ग्रनेक जिह ग्रासपास।
जिस नाँम हाटकेस्वर जपत, विध स्रष्ट सवै तासौं वढत।।३२७
विरचत विहार नाना विधाँन, देवी कौं देवत भोग दाँन।
वीरज-प्रवाह वाढत वसेस, हल नही हिरन वरना हमेस।।३२८
हाटकी नाँम है तिही हेत, रँमन सौ भवाँनी गिरत रेत।
पवन सौ प्रज्वलत ग्रगन पूर, सोइ पाँन करत ताकौ समूर।।३२९
थूकै सोइ हाटक वनत थाट, केऊ दाँनव लावत काट-काट।
स्र गार वनावत त्रीया सोय, हाटक स्ववर्न कौ नाँम होय।।३३०
वितल कै तरै है सुतल वास, वीरोचन ग्रगज वलि निवास।
प्रीय इद्र करन कौ मेट पाप, थिर करचौ सुतल मे वास थाप।।३३१
प्रभू ग्राप भये तिह द्वारपाल, कर क्रपा रहत वरसात-काल।
जहाँ की विभूत वरनी न जाय, वयकूँठपती वासौ वर्साय।।३३२
तर सुतल तलातल विवर त्याँहि, मय त्रपुर पती दनु वसत माँहि।
सिव जीते ताही त्रपुर साथ, नित वास दयौ तव क्रपानाथ।।३३३
ग्रतसय मायाग्री वसत ग्रौर, जिह ठौर दाँनवन घोर जोर।
तिह तरै माहातल विवर तेम, जहाँ वसत नाँगगन वास जेम।।३३४
येकन-येकन के सिर ग्रनेक, वपु येकन-येकन तै विसेक।
जिनके प्रधाँन इह नाँम जाँन, पुन कुहक ग्रौर तक्षक प्रमाँन।।३३५
कालोय सुखेन ग्रतसय करुर, जिह गरुडपक्षि दुसमन जरूर।
लैकै कुटब तिह वसत लाग, सौहिर्दन[1] बधव साँनुराग।।३३६
है विवर रसातल तिही हेट, थट रहे दाँनवन थाट-थेट।
नीवात कवच ग्रादक निदाँन, पुर हिरन निवासी जहाँ प्रधाँन।।३३७
कालेय नाँम है प्रवल-काय, जहाँ वसे जोर ग्रपनौ जमाय।
देवन सौ सोइ करत द्वेख, वलसाली जाली ग्रत बिसेख।।३३८

---
१ सुहृद।

श्रीविस्नुसक कौ मांन सोय, करसकै नही अपराध कोय।
पाताल विवर तिह तरें पेख, वस रहे नागहू जहाँ वसेख ।।३३९
मुख वास वासकी सख मांन, अरू कुलक स्वेत महाँ सख आंन।
धृतराष्ट धनजय महाधूत, कवलास्वतर परवल क्रतूत ।।३४०
देवोपदेह दिकर्ण दूठ, क्रोधी अत उगलत कालकूट।
सिर पचसप्त फनिधर प्रसस, सत मस्तक कोऊक फनि सहस ।।३४१
पाताल मनन[1] की क त पाय, जगमगत जोत द्रग मग जनाय।
नही तिमर जहाँ निस-दिवस नेम, इह विवर वसत है नाग येम ।३४२
इह ठौरहु तें आगें अनत, हज्जार तीस जोजन रहत।
श्रीविस्नु-कला तांमसी सोय, कर्षणहू ताकौं कहत कोय ।।३४३
लछमन सकर्षन जन्म लेत, हरीकै सग अवतार हेत।
मस्तक सहस जाही महत, इक सीस धरी धरनी अनत ।।३४४
सोहत सोई सर सौं कन समांन, आधार स्रष्टि वल अप्रमांन।
करता सघार जग प्रलय-काल, जिनके मुख विख की वढत ज्वाल ।३४५
भ्रूँह के मध्य सौं रुद्र भीम, येकादस प्रगटत वल असीम।
त्रयनेत्र हाथ लीनें त्रसूल, विकराल ज्वाल माला वधूल ।।३४६
औधकौं पाय जग करत अत, ऐसे सँमर्थ स्वांमी अनत।
वैस्नव-जन वदत वार-वार, वर्नना करत आसय विचार ।।३४७
श्रीनाग-कुमारी अत-सरूप, आभूषन पहरें अत-अनूप।
अत सुदर जाके सकल अग, राचत सुगध्र अनुलेप रग ।।३४८
आसका चहत नांही अनत, सेवा प्रसाद उर अँनुसरंत।
सुखदायक देवन के सदीव, जढ जगम पालत जगत-जीव ।।३४९
सुर सिद्ध असुर कर उग्र सेव, भक्ती कौ पावत जोग-भेव।
विद्याधर गध्रव मुनि विचार, अस्तूत करत करुना उचार ।।३५०
पांरषद करत पूजा पुनीत, कर जोर विवध विध गाय क्रीत।
प्रथमी की जड मैं जहाँ पोल, तहाँ वसत अनत सिर धरा तोल ।।३५१
धर रही सकल सोइ स्रष्ट धार, चर-अचर जीव जे खांन च्यार।
आधार सवन कौ प्रभू अनत, सेवत हित मुक्ती पर्म सत ।।३५२

---

१ मणियों। २ शेषनाग। ३ सहार।

जोग की जुक्ति वरनी जिनूंह, अग्याँन विनासत वढत ऊह।
भूगोल कह्यौ खैगोल-भेव, दिस-विदिस ग्याँन हित वृह्यदेव ।।३५३

दोहा

श्रीनाराँयिन-वचन सुन, नारद ग्याँन-निधाँन।
अरज करी औरहु अवर, जाँनन हेत जहाँन ।।३५४

सवही इकसे जीव सम, भिन्न-भिन्न कीय भौन।
ताकौ कारन कहहु तुम, मन की मिटै मलाँन ।।३५५

नाराँयिन नारद कही, विध-जुत सुनकै वात।
कहन लगे कल्याँन-हित, कथा सहित कुसलात ।।३५६

प्रथक-प्रथक कहै करम पुन, स्रधा प्रथक है सोय।
सुख-दुख भोगत विसम सम, हीय की वचा होय ।।३५७

सरधा सातुक होत सुख, राजस सरधा रोर।
ताँमस सरधा मूढता, करत सुभाव कठोर ।।३५८

जैसी सरधा होय जुत, जैसी फलै जु जीव।
करता जग विध-विध करम, दाता येक दईव ।।३५९

केऊ विहत अविहत करम, वरनन कीने वेद।
जाही कौ मत जाँनकै, नही गहत निर्वेद ।।३६०

विद्या मन माँनी विवध, पथ केऊ करत प्रचार।
करत सुमत-सत सौं करम, अनुचित चित आचार ।।३६१

गत अनेक ताकी गनहु, कहत सुनौ दै काँन।
सुभ करमन अरु असुभ की, गत जुत भाखत ग्याँन ।।३६२

अतल विवर के ऊपरै, दख्खन-दिसा जु दूर।
अगनी स्याता वसत वँहाँ, पित्रपती वल पूर ।।३६३

अपने-अपने अस की, वस विचारत वात।
करत आस सुभ करम की, जासौं पूजत जात ।।३६४

स्राध समर्पत करत सुम, दिल सुध आसिख देत।
देत स्राप कुकरम दुरत, पाय खेद गन प्रेत ।।३६५

छंद भुजंगी प्रयात

वसै दक्ष नासापती और वासा, तिही ठौर सौं कर्म देखै तमासा ।
जिते जक्त के जोव को उक्त जाँनै, पठै दूत को गुप्त आपी पिछाँनै ॥३६६
पठावै सोई स्वर्ग पुन्यातमा कौ, जतायौ सवै रीत सौं भेद जाकौ ।
पठावै केऊ नर्क कौं जीव पापो, करै न्याव सौ भूल नाही कदापी ॥३६७
धरै दड कौ ईस की धारना सौं, करै भाव कौ भाव की कारना सौं ।
करे कर्म जैसौ सरै दड काला, जनावै जही दोष की रोप ज्वाला ॥३६८
वसै काज वाही जहाँ तत्व-वेता, सवै आपही आप सौ सावचेता ।
जिही कुर्कु भेजे जहाँ लेय जावै, दीयै दडहू चड आदेस दावै ॥३६९
जिही नर्क के ठौर दै हौं जनाई, विधाता अधर्मीन काजै वनाई ।
उचारै केऊ नर्क है येक वीमा, अठाईस केऊ गनावै अनीसा ॥३७०
उभै रीत सौ जाँन लीजै अगाधा, वसावै अधर्मीन कौं लेख बाधा ।
इकै अधता मिस्रता मिस्र औरै, महाँ रोरवा रोरवाहू मरोरै ॥३७१
कुँभीपाक औ कालसूत्र कुरूपा, असीपत्र आरण्यहू अधकूपा ।
मुखा सूकरा मै क्रमीहू मिलाई, डसै डसहू मस जासौं डराई ॥३७२
कसै मूरती तप्त औ लाग काँटा, उगाहै तरू साल्मली वाढ आँटा ।
नदी वैतरंन्नी दुखारी लँघावै, दगावाज पूयोद माँही डुवावै ॥३७३
करै प्राँन कौं रोव विसमन्त काया, ललाभक्ष औ सारमेयाद लाया ।
अयापाँन है आरवीनर्क औरै, जहाँ है रखो गन्न भोजन्न जोरै ॥३७४
तथा खारहू कर्दमा है तहाँही, सूलो-प्रति औ ददसू का समाँही ।
विट है अधारा अपर्जा वृतन, कहै और सूचीमुखाहू कथन ॥३७५
वखाँनै इहै नर्कहू आठ-वीसा, इही घाट वाध कहै कोइ कोसा ।
जनावै कथा-वीच विस्तार जाकौ, पठावै जहाँ ईस पापी प्रजा कौं ॥३७६
इहै मूल कर्मं लखौ वात येती, सिधावै केऊ नर्क मै पाप सेती ।
परायौ हरै वित्त औ नार प्रारी, गृहै पुत्र भूत्राय आपी गवारी ॥३७७
रचै दड जापै इही धर्म राजा, करै ताडना रोत नाना अकाजा ।
मुरछ्छा गहै मारही सौं मिलोता, गिरै मिस्रहू नर्क मै खाय गोता ॥३७८
करै और की नार सौं भोग कोऊ, दगावाज पत्नी-पती भूल दोऊ ।
मुकाँम पठै अधता मिस्र माही, केऊ दु:ख भोगै महाँकल्प त्याँही ॥३७९

फटै सीस जाको उभै-ग्रांख फूटै, केऊ कान लौं किंकरा मृत्यु कूटै ।
जथाँ नांम ताही तथाँ नर्क जांनौ, परै पाप के ताप सौं जीव कांनौं ।।३८०
परायौ गहै वित्त जो पारथी, घुलै आततार्इ हीयै लोभ-गृर्थी ।
दीयै ग्रौर कौं भीत आपौं दिखावै, कुटवीन कौं पोख नीकौं नहावै ।।३८१
प्रचारै महामोह हू सौ प्रपचा, विचारै न कल्यांन कौ हेत वचा ।
गिरै रोरव नर्क मैं सौ ग्रग्यांनी, हुजारां वर्मं जाहि मैं नेन्दहांनी ।।३८२
डसैं फंक सौ ऊक ज्वाला डराई, चहूँ ओर सौं कूर रूरू चलाई ।
पसू मारकै मास खावै पकावै, दया कौं तजै जीभ के स्वाद दावै ।।३८३
घलै किंकरा धर्मराजांन घेरा, दिरावै कुंभीपाक मैं दुष्ट डेरा ।
तिही मैं भरे तेल के कुंड ताते, जँहो पै जलै ऊवलै जीव जाते ।।३८४
सँघारै पसू रोम की जोर सख्या, खवावै तिते वर्ष लौं घोर खंख्या ।
करै जो पिता-मात सौं द्रोह कोऊ, सबै गेन सौं दुःख जांनौ नकोऊ ।।३८५
सोई नर्क-वासौ वसै काल-सूत्रा, कनै ग्रग्न ताती सरीर कुपूत्रा ।
सिरानै नही कल्प लौं जीव सोई, क्षुधा ग्रौ पिपासा भरै जन्म रोई ।।३८६
कोऊ पथ पाखड चालै कुगांमी, सँवोधै ग्रग्यांनी वनै ग्राप स्वांमी ।
ग्रसीपत्र ग्रारण्य मैं जाय ऊभै, चलावै तहाँ पाव मैं धार चूभै ।।३८७
तरू-पत्र जामैं परे धार तीखा, वहै वार-ही वार ग्रासार वीखा ।
करै किंकरा मार दडा क्रतता, हलै सव्द ऊचारकै हाय हुंता ।।३८८
घने थाकने पै तही पै घसीटै, परै ग्रद्ध ऊद्ध तऊ दुष्ट पीटै ।
इही नर्क कौ नांहि नै ग्राद-ग्रता, भयकार हकार पापी भरता ।।३८९
कोऊ होय राजा तथा राज-कांमी, सँतावै प्रजा कौं विना न्याय स्वांमी ।
मृजादा मिटावै गरू विप्र मोटी, खिती पै प्रचारै कोऊ वात खोटी ।।३९०
मुखा सूकरा नर्क मै वास मडै, खलै तेल के जत्र ज्यौं देह खडै ।
फिरै तामही वार ही वार फेरा, घुटै जास ही ना उठै लाग घेरा ।।३९१
केऊ वीच ह्वै चूर्न सपूर्न काया, महाँ ईस की देखीयै घोर माया ।
मदाभीरु उत्कून जूंका जु मारै, वहै जीवन देह दूजी ग्रवारै ।।३९२
करी ईस निरवांनहू जाहि काया, दुखीहू भये पै तजै सोय दाया ।
करै वास जो नर्क मैं ग्रधकूपा, वसै जतु जामैं ग्रनेक विरूपा ।।३९३
केऊ सर्प वीछू जिनै डस काटै, घनी खटपदी ग्रौर उद्दंस घाटै ।
महाभीरु चैंटत रोलव मख्खी, भरै कर्नकीटी पद मांस-भख्खी ।।३९४

जोई अन्न खावै विना पाँच जग्य, अधौ खै क्रमी कु ड मे सोय अग्य ।
क्रमी दाटकै-चाटकै दुष्ट काया, रमै छादवी फाटकै मस राया ।।३९५
करै स्वर्न-चोरी विना आप्त काला, जरावै अय पिंड सौं आग ज्वाला ।
अगम्पार मै पुर्ख नारी उभै सो, चपेटै सथूना तपाई चुभै सो ।।३९६
नही होन देवै कहूँ हाथ न्यारे, भरै येक ही साथ मै बाथ भारे ।
चड़े दु ख सौ कूक पारै वहारै, त्युही दड सौ किंकरा मृतु तारै ।।३९७
पसू जात नारी करै भोग पापी, मिटावै महाँ काँम बाधा मिलापी ।
तरू साल्मली पै चढावै तही कौ, जटे कटकं लोह ताते जँही कौ ।।३९८
चढै-ऊतरै वार-वार छिनगी, तपावै घसीटै जही ठौर लगी ।
महाँवेदना छेदना सौं मरोरै, करै दीन वाँनी डराँनी करोरै ।।३९९
वनै भूप कोऊक पाखडवर्ती, अरू राज-मत्री भरै सो अनर्थी ।
नदी वैत्रनी माँजि मोई नहावै, विचै मूत्र विष्टान लोहू वहावै ।।४००
सभोग करै विप्र जो नार सूद्री, वसावै तथा ग्रेह मै वुद्धि क्षुद्री ।
करै मुच्च आचार कौ नष्ट काँमी, हथै नेम निर्लाज सोई हराँमी ।।४०१
सोई वैत्रनी धार माँही समावैं, खखार सोई मूत्र विष्टा जु खावैं ।
तथा विप्र छत्रीन-औ वैस तेऊ, गधा औ कुता पालकै वीच ग्रेऊ ।।४०२
खिलै जो सिकार पसू मार खावै, वसै नर्क जाही निसाँना वनावै ।
जमराज के वीर तीर जमावै, जवै और ठौरै कहाँ भाग जावै ।।४०३
छिदै भाल तीखी भिदै जाहि छाती, घलै वार ही वार आसार घाती ।
इही काँम कौ जाँनीयै दड ऐसौ, कमाई भरोसै भरै सोक रैसौ ।।४०४
करै दभ सौ जिग्य मारै पसू कौ, वितर्न दई विप्र लेवै वसू कौं ।
परै नर्क वैसस्य-मे सोय प्राँनी, अय मुद्गर डड पावै अग्याँनी ।।४०५
करै काँमनी सौ जवै काँम-क्रीडा, वनै निष्टुर त्याग आचार व्रीडा ।
पलोटै मुखा काँमही कौं पीवावै, जोई नर्क मै काँम के कु ड जावै ।।४०६
पीयै काँम सोई महाँ घोर पापी, सहै वेदना अग केऊ सँतापी ।
दगावाज यो ग्राम मैं आग देवै, लुटेरा वनै औंर कौ वित्त लेवै ।।४०७
सोई सारमेयादन नर्क साधै, वहाँ पिंड कौ स्वाँन काटै असाधैं ।
महाँ वेदना सौं कही अग मोरै, तहाँ मृत्यु के किंकरा हाड तोरै ।।४०८
भरै भूट साखी कोऊ पाप-भडा, दियै मृत्यु के किंकरा सार डडा ।
अवीचाख्य जो नर्क सृ गा उतगा, उतारै-चढावै-गुडावै अलगा ।।४०९

पुनीत अवर्न सुधा सोम पेई, तजै धर्म हाला पीयै जाँन तेई।
सोई नारकी घोर माँही समावै, पियालै तही लोह तातौ पीयावै ।।४१०
करै ग्याँन कौ माँन विद्याक हाँनी, गनै आपकौ श्रेष्ट औरै अग्याँनी।
वसै क्षार-कर्दम माही वसेरा, घलै जातना भोग-भोगै घनेरा ।।४११
वलीदाँन देवै पसू माँनवी कौं, भवाँनी तथा भैरवा भैरवी कौं।
पुरी प्रेत की प्रेत सोई पहूँचै, लगै आय पासै जँहो प्रेत लूँचै ।।४१२
खिलै ताल दै-दै जिही माँस खावै, गहै आँत ताँतै ज्युँही गीत गावै।
विना कोय अप्राध प्राँनी विनासै, गृहै सस्त्र मौ वाँच मूली गृहासै ।।४१३
तपै नारकी प्राँत मै आतताई, विवै लोह के कटक सौ विधाई।
छिदै माँस अग्नेय की चिछ छूटै, घनी उज्जली चिल्ल औ गृद्ध घूटै ।।४१४
भखै स्वाँन सृँगालहू माँस भेजा, कढै काकहू आँख फारै करेजा।
करै आप के पाप कौ याद कर्मा, छिकै ठौरही ठौर सौ रोम चर्मा ।।४१५
करै क्रूर स्वाभाव सौ रोख कोई, डरावै घने दीन सौ होय द्रोही।
सोई नर्क-वासौ वसै ददसूक, फसै तै डसै ज्वाल-सी मार फूक ।।४१६
धकेलै कोऊ कूँप मै मार धक्का, रखै किंदरा मै कोऊ जीव रुक्का।
वसै अघही कूँप मै सोय वासा, असगो प्रसगीन सौ ह्वै उदासा ।।४१७
अमर्ष करै द्वार आतिथ्य आँयै, जथा-जोग सौं भोग नाँही जिमाऐ।
परै नर्क माही सोई क्रूर प्राँनी, करै रुख काया जँही अख काँनी ।।४१८
करै दर्व कौ गर्व काजै कँमाई, त्रसै दीन कौं सीस डारै तवाई।
दुखी देखकै ना कहूँ दाँन देयै, सोई जीव सूची मुखा नर्क सेवै ।।४१९
गनाये इते नर्क औ नर्क-गाँमी, महाँ पाप पापीन थप्पे मुकाँमी।
कुकर्म करै जाँनकै जीव काँनौ, सवै रीत सौं ताहि जाँनौ सयाँनौ ।।४२०

दोहा

दुरत-करम सौ नरक-दिस, जावत जीव जरूर।
आराधन श्रीईस्वरी, दोष गमावत दूर ।।४२१
जाही कौ अनुक्रम जुतै, वरनत कर विस्तार।
साधन आराधन सुलभ, सुखदायक ससार ।।४२२

छद द्रुं-अखरी

पूजै देवी निस-दिन प्रॉनी, मिटै दुरत-क्रत पाप मलाँनी ।
वरनत मैं ताकौ विसतारा, सुनीयै हित नारद ससारा ।।४२३
प्रथम दिवस प्रतीपदा पुनीता, पूजन घृत सौं करै प्रवीता ।
करै वरत सुद्धी-जुत काया, अथवा विप्र देय वृत आया ।।४२४
मिटै रोग ताके तन माँही, रुज ही कटै नही दु ख रहाँही ।
दूज सरकरा पूज सो दीजै, लाग पाय दुज आसिष लीजै ।।४२५
दीरघ आयुस दीयै जु देवी, सुखदायक जीवन कौ सेवी ।
त्रतीया पय पूजै ताही सौं, विप्र दॉन दीजै वाही सौ ।।४२६
देवी प्रस्न होय छूटै दुख, संपत वढै और नाना सुख ।
पुवा चौथ देवै अरु पूजै, वहै विघन सौं नहिन अरूझै ।।४२७
कँदली-फल पचम सिवकाई, विप्र देय वाढै निपुनाई ।
मधु पष्टी पूजै द्वज मॉनै, होय कातीजुत दुख की हाँनै ।।४२८
सातम गुड देवी सतोखै, त्रसै सोक विप्रन कौं तोखै ।
अष्टम दिन नरीयर आराधै, अर्पत दुज अघ मिटै उपाधै ।।४२६
लाँवी नवमी पूजन लावै, जाही विध सौं विप्र जिमावै ।
देवी उभय-लोक सुखदाता, माँन पाँन राखै जग-माता ।।४३०
दसमी दिन पूजै जो देवी, काले तिल सौ रहै न केवी ।
दाँन करै विप्रन सुखदावै, जम की त्रास मिटै अघ जावै ।।४३१
श्रीअवा येकादसि सेवै, दस सौं विप्र दाँन ही देवै ।
पुन देवी के होय पियारा, सकती लोक लहै सुखसारा ।।४३२
चूरा द्वादसी पूज चढावै, विप्र देय सतती वढावै ।
चतुरदसी नैंवेदै सतुवा, करै दाँन सिव ह्वै क्रत-क्रतवा ।।४३३
पूरनमासी खीर पकावै, श्रीअबा नैइवेद चढावै ।
अँमावसी इम ही आराधै, सवही पुनीत साधना साधै ।।४३४
मिटै अमगल फलै मनोरथ, तहाँ-तहाँ वरनी पूजा तिथ ।
होस करै इधकौ सुख हेतू, सागर भव माँही सुख सेतू ।।४३५
सूरजवार खीर सौ सेवै, दूध चद्र नैइवेद जु देवै ।
केला मगल वुध नैनू कर, वृसपत लाल खाँड जाँनहु वर ।।४३६

मुक्र ऊजली सक्कर सेती, सनीवार कौं घृत-रस हेती ।
वरत करै देवै ग्रांमन कौं, मेव प्रसाद जगत स्वांमन कौं ।।४३७
जीवन भुगत मुगत-पद जावै, नारांयन नारद समुजावै ।
सत्ताईस नखत की सेवा, भाखत श्रीनारांयन भेवा ।।४३८
ग्रस्वनी घृत भरनी तिल येऊ, क्रतका मै सरकरा करेऊ ।
दध रोहिन नखत्र मै देवै, मृगसर दूध मलाई मेवे ।।४३९
ग्राद्रा दूध मलाई ग्राछै, पुनर्वसू लडुवा दै पाछै ।
पुख्ख तार फैनी कौ परूसै, सक्कर कौं ग्रश्लेपा सरसै ।।४४०
मघा नखत मै पापर मेलै, पूर्वा फाल्गुनि कमरा पेलै ।
ऊतरा फाल्गुनि घेवर येहू, हस्त नखत मै वटुका देहू ।।४४१
चित्रा माँझ खजूरा चावै, स्वात-नखत रस पूर्न सुहावै ।
मधू विसाखा मै पुन मेलै, अनुराधा मैं सूरन येलै ।।४४२
जेष्टा मै गुड़ ऐसै जांनौ, मूल नखत मै चूरा मानौ ।
पूर्वापाड़ा मुनका पूरा, षाड़ा ऊतरा नखत खजूरा ।।४४३
सरवन रसहु धनेष्टा चारक, सत ताको पुवा सु विचारक ।
पूर्वा भाद्रपदा नैंनू पुन, उत्रा भाद्रपदा मोदक ग्रन ।।४४४
मातु-लिंग है रेवति माही, ग्रवा-पूजन इह ग्रवगांही ।
जोग सताइस है इम जांनौ, महा प्रसाद नाम ग्रनुमांनौ ।।४४५
गुड मधु घृत पय दध कौं गहीयै, तक्र पूप नैंनू लै तँहीयै ।
ककड़ी कुमडा लडुग्रा कटहर, केलाफल जाँमुन ग्रांमन कर ।।४४६
तिल नारगी दाड़म तैसै, वेर ग्रांवला खीरहु वैसै ।
चूरा चना रू नरीयर चाहै, ऐसै जांम-फला ग्रवगाहै ।।४४७
सुभग कसेरू जैसै सूरन, पूजै देवी विध परपूरन ।
जोग ग्रगारी करन जनावत, गनती एकादसहु गनावत ।।४४८
प्रथम कसार पूजना करीयै, ग्ररू मडक फैनी ग्रनुसरीयै ।
मोदक वट-पत्रन कौं मेलै, लडुवा घेवर तिल कौं लेलै ।।४४९
दध घृत मधु नैइवेद दिवावै, पूजन सौं देवी सुख पावै ।
देवी पूज विप्र दत देवै, लाभ सु जन मन-वचत लेवै ।।४५०
पूजन ग्रौर विधांन प्रकासत, भाँन ग्यांनमय-जीय-हीय भ्यासत ।
चैत सुक्ल त्रतीया हित चित सौं, महुवा पूजन करीयै मति सौं ।।४५१

सब मासन मैं इह विध सेवै, देवी मन-वचत फल देवै ।
गुड वैसाख जेठ मधु गहीयें, पुन असाड मैं नैंनूं पईयै ।।४५२
सावन दध भादव सरकरा, आसुन मास खीर अनुसरा ।
फिर कातिक पय अगहन फनी, दुज की पूजा करकै दैनी ।।४५३
पूस मास दध कूर्चका पाई, माघ गऊ-घृत और मलाई ।
फागुन मैं नरीयर के फल कौं, बारह मास कही इह बल कौं ।।४५४
नाम अनुक्रम है इह निरनौ, बारह मास पूज मैं बरनौ ।
नाँम मगला वैस्नवि निर्मल, माया काल निसा मेटत मल ।।४५५
महा दुरतया पुन महामाया, मातंगी कालीय मिलाया ।
कमलवासनी सिवा कहावै, ध्याँन सहँस चरना कौ ध्यावै ।।४५६
सर्वमगला-रूपनि सेवा, भलीभाँत भाखत इह भेवा ।
द्वादस नाँम रूप सुख-दाता, महमा जाँन लेहु जग-माता ।।४५७
कर पूजा सतोत्र पुन करीयै, नाँम धेय सुमरन निस्तरीयै ।
पकज-नेत्रा मात पुनीता, जगधात्री केऊ दुष्टन-जीता ।।४५८
माहेस्वरी ईस्वरी माया, देवी महाँ सुजन सुखदाया ।
महाँ मगला मूरति माँनी, भय पर माया हरन भुमाँनी ।।४५९
पर मारग दायन परमेसी, उतपत परजा करन असेसी ।
परंब्रह्म-रूपा परमातम, अखल-जगत जीवन की आतम ।।४६०
महोनता[1] मनसिनी[2] मदमाती, धेश्रा मुनिजन ध्याँन धराती ।
मारतड सहचारनी माँनत, जगतवा लोकेस्वरी जाँनत ।।४६१
प्रलयाबुद सनिभा प्रमाँनी, करन सदा मंगल कल्याँनी ।
पूजन दाँनव देव प्रचारत, श्रीअबा कौ नाँम सँभारत ।।४६२
महाँमोह-हरनी माहामाया, जम-भगनी आद्या जगजाया ।
नमो-नमो दायक निर्वाँनी, सुरन-समाज मुनी रिखी माँनी ।।४६३
महाँमत्र गम्या उर माँही, जन सुमरत मेटत दुख ज्याँही ।
कैथा नीब आँब तरू काँही, वट बेरी निज बाग बसाही ।।४६४
पढ सतोत्र देवी कर पूजन, सुख पावै त्रय-बरन सहू जन ।
बरत करत मणीदीप बसावै, जाके जनम मरन मिट जावै ।।४६५

---

१ महोन्नता । २ मनस्विनी ।

बुधसिंह चारण रचित

देवीचरित

द्वितीय भाग

नवम-स्कंध

श्री गँणेसजीया नम श्रीदेवी-चरत्रे भासा नवमी स्कध प्रारंभ—

दोहा

नारांयन नारद कहत, प्रक्रत पाँच प्रकार।
वरनत स्रष्ट विधांन सौं, नांम सुनहु निरवार ।।१
दुरगा राधा इंदरा, महाँ सरस्वती माँन।
सावत्री जाँनत सकल, वेता स्रष्ट विधांन ।।२
कही धरम जैसी कथा, मोही सौं निज मत्त।
गुन उतपत पूजा गहन, चित सुध काज चिरत्त ।।३
प्र. प्रकृष्ट वाची प्रथम, क्रती इह सृष्ट कहंत।
सृष्ट प्रकृष्टा समुझीयें, सब्द विचारहु संत ।।४
अग्रेस्वर देवी वंही, प्रक्रत नाँम पुनीत।
अखल जगत की ईस्वरी, परगट लखहु प्रतीत ।।५
प्र प्रकृष्ट सतगुन प्रतैं, क्र रजगुन कहीयत।
तँम-गुन ती जाँनहु तँही, त्रयगुन प्रक्रती तत ।।६
त्रयगुन धारन करत तव, सृष्ट रचत है सोय।
प्रक्रत कहत परवांन प्रत, जाँनहु प्रक्रत जोय ।।७
प्र सब्द है वाची प्रथम, क्र.ती सृष्ट के काज।
विद्यमाँन प्रथम ही विसव, सोइ प्रक्रत सिरताज ।।८

छंद पद्धरी

वरनत अव देवी सव विवांन, प्रक्रती रूप माया प्रवाँन।
जोग माँ परम आतम जिकोय, सृष्टी-विधाँन के हेत सोय ।।९

रचना नारीस्वर वने रूप, जोइ अरधनार अरु पुरख जूप ।
श्रीक्रस्नचद्र है पुरख सोय, जिह वाँम-अग प्रक्रती जोय ।।१०
श्रीरूप गनहु प्रक्रती-प्रग, वृह्म कौ रूप जामैं न विंग ।
अग्नि के सग जिम दाह येक, विव होय नही जाँनहु विवेक ।।११
यातैं जोगी जन-हित ऊवार, नर रूप-भेद जाँनत न नार ।
इक वृह्म-रूप माँनत अखड, परकास करत वृहमड पिंड ।।१२
परमातम अग्या क्रस्न पाय, ईस्वरी मूल प्रक्रती आय ।
उतपत्त पाँच परकार येह, निरमाँन भई सोई निसदेह ।।१३
भक्तन के ऊपर भक्त भाय, माता गँनेस की महँमाय ।
सिव की सोई प्यारी भई सक्ति, जो दुरगा नाँमी मात जक्ति ।।१४
विस्नू की माया अत वलिष्ट, सोइ वृह्मरूपनी मत सपष्ट ।
वृहमाद देव मनु राज-वस, पूजन कौं लागे मति प्रसस ।।१५
सिव-रूप सनातनि प्रजा-साथ, निरवाह करन अन्नाथनाथ ।
धर्म की धारना पुंन्य धाँम, जस-मगलदाता आठ जाँम ।।१६
सुख मोख हरख-दायक सदीव, जातना मिटावन भक्त जीव ।
सरनागत वछ्छल सावकास, दीनन कौं निवहत जाँन दास ।।१७
तेज की अधिष्टात्री त्युहीज, वर्जत विषाद विध सृष्ट-वीज ।
सक्ती-स्वरूप सिद्धी समूह, अतह परकासक ग्याँन ऊह ।।१८
ईस्वरी सिद्ध वुद्धी अनाद, पिपासा छुधा छाया प्रमाद ।
अलसई दया निद्रा अनूप, सहनता जात सु मृति-सरूप ।।१९
इछ्या अरु साती भ्रात और, थित राजत माया ठौर-ठौर ।
चेतना तुष्ट पुष्टी जु छाहि, धारना सक्ति सोभा धराहि ।।२०
लक्षमी वदना करत लोय, श्रीक्रस्नचद्र की सक्ति सोय ।
पाँचमैं आद दुर्गा पुनीत, प्यारी सिव सिव सौं पर्म प्रीत ।।२१
अवतार लक्षमी सुनहु येह, सुध सतगुन-रूपी निसदेह ।
श्रीक्रस्नचद्र सपत-सरूप, अरु परमेस्वर सक्ती अनूप ।।२२
ताहि की अधिष्टात्री जु तेम, निग्रह इद्री कौं करन नेम ।
साता-सुभाव काता-समान, सुसीला सर्वमगला स्याँम ।।२३
रुज काँम लोभ अरू मोह रोख, मद अहकार सौं सदा मोख ।
अनुरक्त भक्त-जन सौं उदार, पति क्रस्नचद्र सौं पर्म प्यार ।।२४

पतिवृता सवन स्त्रीय की प्रवेक, अच्युता प्राँन के तुल्य[1] येक ।
प्राँनेस प्रेम की पात्र पोत, अत करता प्रीय आसय उदोत ।।२५
सब धान्य-रूपनी सग स्याँम, लक्षमी महाँ सोभा ललाँम ।
वयकूंठ मही जिह सदाँ वास, नित स्वर्ग-स्वर्ग लछ्छी निवास ।।२६
भज राज-लक्षमी राज-भौन, माँनव गृह लछ्छी ग्रेह मौन ।
सब वस्तु माँहि सोभा सरूप, पुनवाँन पुरस मैं प्रति रूप ।।२७
वाँनज्य-रूपनी जात वैस, हैं कलह-रूप पापिन हमेस ।
द्रढ दया रूपनी दीन दास, पावन प्रवीन करता प्रकास ।।२८
वदना करन पूजा विधाँन, लक्षमी चरित इह विध निदाँन ।
उतपत्त लक्षमी कही आद, माँनीयै जगत-रूपी मृजाद ।।२९
सरस्वती सुनहु उतपत्त साच, विद्या रु ग्याँन कौं रचत वाच ।
श्रीक्रस्नचद्र बुद्धी-सरूप, उर अधिष्टाँन देवी अनूप ।।३०
कविता प्रतिभा मेधा कहत, सुमृती दैन वाली सुमत ।
नाना प्रकार सिद्धत न्याय, भेद कौं खोल भासत भाय ।।३१
वाख्याकी बोधक सोइ वात, सदेह भज रजन सुहात ।
करनीय विचारन ग्र थकार, स्वर सप्त गाँन सवाँन सार ।।३२
पुन विसय ग्याँन वाँनी प्रभाव, सृष्ट की मूल जीवन सुभाव ।
अनुवाद वाद अपवाद आद, परमत्त तत्त हता प्रमाद ।।३३
पुस्तक अरु वीना ग्रहन पाँन, स्वाता सुभाव सीला-समाँन ।
भीनी सतगुन सौं ग्याँन भाय, सम कमल स्वेत आभा सुभाय ।।३४
चद्रमा कुद-सम कुमद चीर, पुन स्वेत विलेपन तन पटीर ।
कर स्वेत रतन-माला करत, जय त्रस्न-क्रसनहू कौं जपत ।।३५
जिह विना जाँनीयै विप्र-जात, गूंगा जिम अधा मृतक गात ।
तप कौ फल पावत तपी तपाय, सरसुती अराधन जग-सहाय ।।३६
धुर सावत्री चौथी सुधाँम, निज गायत्री है जिही नाँम ।
वेद है च्यारहू च्यार वर्न, भज सध्यावदन मत्र भर्न ।।३७
माता तत्रन की तिही माँन, खत्री विप्रन की धर्म-खाँन ।
जप रूप तपस्वनी तेज जोत, अभिससकार-रूपी उदोत ।।३८

---

१ मू प्र. त्युल ।

अतसय पवित्र सोई वृह्म श्रोक, सुस्थाँन निवासनी विगत सोक ।
नित वेदगर्भ प्यारी निदाँन, परसन जिह तीरथ चहृत पाँन ।।३९
सुव फटक-मनी सम तिह सरीर, निर्मल सुभाव जिम गग-नीर ।
रमतीत पर्म आनद-रूप, उल्लास हास सतगुन अनूप ।।४०
परवृह्म सनातनि प्रेम-पूर, दोख सौ सदाँ सोइ रहृत दूर ।
पद मोक्ष दैन सौं पर्मप्रीत, तेजोमय कारन गुनातीत ।।४१
जीव की अधिष्टाता जरूर, देवता दोष सौं रहृत दूर ।
पाय की धूर चाहृत पवित्र, जग चरत करत है तत्र-जत्र ।।४२

दोहा

प्यारी राधा पाँचमी, क्रस्नचद्र अनुकूल ।
पच सोइ प्राँनाधि पुन, माया देवी मूल ।।४३

छद भुजगीप्रयात

चही क्रस्न की है सदाँ वाँम-अंगी, रमै क्रस्न के सग मै प्रीत रगी ।
सोई सुदरी कद आनद सोहै, मती क्रस्न की नेह के फद मोहै ।।४४
जुतै गोरव और सोभाग्य-जुक्ता, मुखा पाँन वीरी गलै-हार-मुक्ता ।
सदाँ क्रस्न की अर्ध अंगी समाँना, प्रभा दिव्य सोवर्न-वेली समाँना ।।४५
करै क्रस्न के सग ही रास-क्रीडा, सोई अभ्रृ औ दामनी ज्यूं सनीडा ।
सुखी रास के वास जाही सुथाँना, जिही रास के मडल मंड जाँना ।।४६
गऊ-लोक अग्रेस्वरी गोपका मै, प्रकासै प्रकासं विहार प्रभा मै ।
हृदै हर्ष सतोप औ मंदहासी, रजै कोकला-कठ आँनद-रासी ।।४७
निराकार निर्लेप आकार न्यारी, मनोहार साकार रीझै मुरारी ।
रहै नाँहि जामै न हकार रेहा, सदाँ आपने भक्त साता सनेहा ।।४८
सुरद्रादि देखी नही ध्याँन सेती, करी धारना ध्याँन वृंह्माद केती ।
जरै अग्न मै डारनै सौं न जोई, सजै भीन आछाद पौसाख सोई ।।५९
अलकार नाना वनै दिव्य-अगा, प्रभा चद्रमा कोट दीपै पतंगा ।
हरी-भक्त कौ संपदा दैन हारी, दया-जुक्त वृषभाँन ही की दुलारी ।।५०
मही औतरी कल्प वाराह माँही, जमी वीच वृंदावन है जहाँही ।
पद पकज कीन ताहि प्रवीता, जंही सत वदै चही जन्म जीता ।।५१

सोई क्रस्न के सग देखी सवैंही, वृजं-मडल वास कीनौ जवैंही ।
विराजी सदाँ क्रस्न के हीय वीचैं, सनेह सुवाधार ग्राँनद सीचैं ।।५२
इही राधका पाँचमी सक्ति ग्राद्, परा-रूप जामैं नवाद प्रमाद् ।
प्रती विश्व मैं स्त्रीय जेती प्रनाली, वय-जोवन सोभन वृद्ध-वाली ।।५३
कोऊ प्रक्रती ग्रस कोऊ कला है, छ्ती ग्रस कोऊ कला की छला है ।
दिपै देवीयाँ पाँच जो ग्राद दुर्गा, विसेस इही जाँनीयैं ग्राद वर्गा ।।५४
तेई पूर्न ग्रवतार है प्रक्रती कौ, गनैं उत्पती ग्री मती सौं गती कौं ।
केऊ ग्रस परधाँन पुरख कहाई, सोऊ जक्त की सक्ति जाँनौं महाई ।।५५
गती दैन कौ प्रवती मात गगा, तेई ऊतरी तोय-रूपी तरगा ।
उपज्जी सोई विस्नु के अग ही सौं, सु सोभा नदी नाल के सग ही सौं ।।५६
ग्रघी के ग्रघी जारनैं ईंधना कौं, वह्निर्जोत-रूपी कटैं वधना कौं ।
सुख पूर्वक स्नाँन कीनैं सपरस, करैं मोक्ष कोटावधीहू कुपुसं ।।५७
लखौ जाहि सोपाँन गोलोक ही कौ, ग्रकर्मीन हू जीवधारा ग्रभी कौ ।
पर तीर्थ जेतेक कर्ता पवित्रा, पवन प्रवाहा मनौ पाप-पत्रा ।।५८
महेस जटा मैं मनौ मुक्तीमाला, भरैं सोभन लोभन चद्रमाला ।
सोइ स्वर्ग सौं मर्थ-खंड समाई, प्रभाचद्र दुग्ध सित कज पाई ।।५९
तपस्या फलीभूत देती तपी कौं, जुपैं जोग क्री जुक्त मुक्ती जपी कौं ।
ग्रहकार सौं वर्जत सुद्ध-अगा, तत मूरती सप्त गगा तरगा ।।६०
प्रीया नित्य नारायँन प्रेम-पूरी, धरैं ध्याँन जोगिंद्रहू सीस धूरी ।
वनैं विस्नु की काँमनी जेम वृदा, करैं भाव, सौं सेव ग्राँनदकदा ।।६१
ग्रलकार विस्नू भरैं ताहि अगा, सु सोमैं सदा कठ-माला प्रसगा ।
रिखीकेस के चर्न की सर्न राजी, वरा ग्राँननी दिव्य धाँम विराजी ।।६२
तपस्यादि सकल्प सेवा तही कौ, जन भाव वाढैं ग्रराधैं जँही कौं ।
सवैं पुस्प की सार है भूत सोई, गरैं विस्नु राखैं सदाँ दाँम गोई ।।६३
करैं दर्सन पर्सन पाप काटैं, सुकर्मी लहै मोक्ष कौ सेव साटैं ।
कलू-काल मैं वदना ताहि की तैं, जरैं पाप के ताप कौ जन्म जीतैं ।।६४
प्रथी चर्न सौं धर्न होवैं पुनीता, उपासैं जही वेदहू के ग्रधीता ।
वसैंहैं जँही धाँम मैं मात वृदा, छलैं भक्त ना मोह के छोह छदा ।।६५
वसैंहै सवैं तीर्थहू-थाँन वासा, पर-धाँमहू काँम मुक्ती-प्रकासा ।
विना धारना जाहि के जन्म वीते, रहे मगल मोक्ष सौं सोय रीते ।।६६

करै सेव जाकी सोई सिद्ध काया, मिलै सदगती त्याग कै मोह-माया।
वही कर्म-भूमी विचालै उपज्जी, रहै कल्पवृछ समा सोय रज्जी ॥६७
उपासै जहाँ के निवासी अपारा, पदार्थं लहै च्यारहू वारपारा।
माहात्म सुनौ और देवी मनसा, वही औतरी कस्प[1]-पुत्री सु असा ॥६८
प्रथाँनस सै जाहिनै देह पाई, सोई सकर सिख्ख दीनी सिखाई।
माहाँ ग्याँन भीनी सदाँ सिद्ध-मता, वँही भग्गनी[2] नागराजा,अनता ॥६९
सदाँ नाँग नागेस्वरी जाहि सेवं, लगै पाय कौं सपदा सु'ख लेवै।
चढी नाग के पीठ मैं म्हाँग चालै, पुजै नाग के लोक मै नाग पालै ॥७०
भरै नाग के भूषन अग भारी, पुलै नाग केते अगारी-पछारी।
सुखी जोगनी नाग पै सैन सोवै, गहै जोग के भाव कौं ग्याँन गोवै ॥७१
सदा वैस्नव भक्त ही की सहाई, माहाँ सत सेवै महमाय माई।
तपस्या करी देव वर्ष त्रलक्षं, अज अच्युत वृह्म जोई अलक्ष ॥७२
इहै मत्र की स्वाँमनी सिद्ध अंगा, पुनीत जही जाँन लीजै प्रमगा।
जिही जाप सौं जोग की जुक्त जाँनै, गुनी जाहि की उक्त सौ मुक्त माँनै ॥७३
जँही वृह्म के तेज सौ जोत जागै, भृम भूल अवार अग्याँन भागै।
रहै वृह्म की भावना चाह रगी, उपासै सदाँ ग्याँन ध्याँनी असगी ॥७४
उपज्जी सोई क्रम्न कै तेज असा, वढायौ जरत्कार कौ जाहि वसा।
मुनी आसतीक जनै जाहि माता, खिती-मंडल ताहि विख्यात स्याता ॥७५
खिती पै मुनौ स्यात कौं मात पष्ठी, सवै वाल कौ पालना मै सपष्टी।
दया-भाव सौं पुत्र-पुत्राद देवै, सुखी वाल राखै पदं ताहि सेवै ॥७६
माहा सिद्ध जाँनौ सोई जक्त माता, अरावै सिसु-काज मेटै असाता।
छटौ अस है प्रक्रती-रूप छाया, धरा मै जही नाँम षष्टी धराया ॥७७
प्रसूता त्रीया षष्टमै दीह पूजै, सिसू के सुखी-काज ताही सहूजै।
वदै जन्म के दीह सौ मास वारै, इही मात ही पूजना को अधारै ॥७८
छटै दीह कौ पूजना भूल छडै, माहा पुज्जई को समै दीह मडै।
वदचौ वंस चाहै कहूँ धर्मवादी, परा पुज्ज कीनै मिटावै प्रमादी ॥७९
प्रकास्यौ मुनी पिडता सार पथा, कहूँ भूल सौं नाहि लीजै कुपथा।
प्रधाँनंस देवी उपज्जी प्रधाँना, थिरा नीर आकास थप्पै सुथाँना ॥८०

---

१ कश्यप। २ भगिनी।

चवै ताहि कौ नाँम मागल्य चडी, अराधै सु मागल्य देवै अखडी ।
सोई विस्व-मागल्य-दाता सहाई, दिनावार अगारकं[1] पुज्ज दाई ।।८१
करै सतती वृद्ध सतुप्ट कीनै, करै सपदा वृद्धहू सेव कोनै ।
दयौ सुभ-नि सुभ कौ दड दुर्गा, वढे दाँनवी सैन मैं दैत वर्गा ।।८२
उपज्जी जवै भाल देवी अनादू, वही देवता मेटनै कौं विपादू ।
करयौ रूप ताही समै घोर काली, मिटाये सवै दाँनवा ज्वाल माली ।।८३
कह्यौ नाम ससार कालीय क्रस्ना, रटै क्रस्न कौ नाँम ही क्रस्न रसना ।
सदा क्रस्न की भावना मै सचेता, वदै क्रस्न कौ रूप ही तत्व-वेता ।।८४
सोई क्रस्न वर्न भई साधना सौं, अखडी हृदै क्रस्न आरावना सौं ।
पदार्थ लहै च्यार पूजा पसावं, भजे भक्ति-जुक्त भरै ऊक्त भावं ।।८५
धरै ध्यांन वृह्माद रुद्राद ध्यांनी, मुनिंद्राद इद्रादहू देव मांनी ।
मनू-वस मैं पुज्ज है सोय माता, उपासै सु ग्याता नसाता असाता ।।८६
प्रधांनस सौ मात प्रथी उपज्जी, सवै सृष्ट कौं धारना धार सज्जी ।
उपावै सदाँ ओखधी अन्न आदू, सुधा-रूपहू कद मेवा सवादू ।।८७
निपावै सोई गर्भ-रत्न नाना, सुवर्नादहू की रसांनी समाँना ।
धरा पालने कौं प्रजा देह धारी, सता सक्त की जक्त-काजै सुधारी ।।८८
जमी थावरं जगम जीव जागा, समी होयकै विस्व धारै सभागा ।
छिमा-रूप सोई चहूँ ओर छाई, वसू की नही कोन जाँनै वडाई ।।८९
इला तैं वडी मात है कोन औरै, जही सौं नही भावना कोन जोरै ।
अराधै नही सोय जाँनौ अग्याता, कुकर्मा क्रतघ्नी कुपुत्र कुसाता ।।९०
अवत्तार है प्रक्रती के अनेका, वडे येक सौं येक जाँनौ विसेका ।
स्त्रीया अग्न की है जँही नाँम स्वाहा, नमै देव आहूतही के निभाहा ।।९१
ज्युही जग्य की दक्षना स्त्रीय जाँनौ, माहाकर्म की सो फलीभूत माँनौ ।
सुधा पित्र की स्त्रीय जाँनौ सदाई, मुनी औ मनूं-वस की पुज्ज माई ।।९२
लयै नाँम सौं पित्रहू कव्य लेवै, भली-भाँत सौं पिडत जाँन भेवै ।
स्त्रीया वायु की जांनीयै नाँम स्वस्ती, नही नाँम लीनै सवै काँम नस्ती ।।९३
पर्सू पाँन[2] की जाँनीयै स्त्रीय पुष्टी, दया जाहि की ह्वै विना जीव दुष्टी ।
इही रीत सौं स्त्रीय तुष्टी अनता,[3] अराधै विनाँ होय स्रष्टी असता ।।९४

१ मंगल। २ परशुपाणि, गणेश। ३ अनन्त देव।

स्त्रीया येम सपत्ति ईमाँन साजा, रिसायै तँही होत है रक राजा।
घृतो है कपलदेव की धारना सौ, कही ग्यांन कै हेत ही कारना सौ ॥९५
सती सत्य पत्नी सता मैं समाई, जँही मुक्त की हेत दाता जताई।
दया मोह पत्नी गनौ दीन दाँनी, सोई विस्व के ज़ीव ही मैं समाँनी ॥९६
प्रतष्टा गनौ पुन्य पत्नी प्रवीता, जिही धारना सौ सबै जक्त जीता।
कहो कीरती स्त्रीय[1] जाही सुकर्मा, धरै धारना सौं वढै प्रीत धर्मा ॥९७
क्रीया है स्त्रीधा प्रीय उद्योग ही की, भरै भावना हेत है भोग ही की।
मिली है अधर्म स्त्रीया जेम मिथ्या, तेई पाप भोगै तजै साच तथ्या ॥९८
भली-भांत पोखै सदाँ दभा भ्राता, उपज्जै अधर्म पती कौ असाता।
उभै वैन भाई मिले येक्र येका, वसे है कनी जीव माही विसेका ॥९९
स्त्रीया साति लज्या गनौ सील ही की, उभैई समी धार जाँनौ अमी की।
स्त्रीया ग्याँनर्क तीन जाँनौ सदाई, मती और मेधा घृतीहू समाई ॥१००
स्त्रीया मूरतो धर्म की है समाँना, परमातमा आतमा ही प्रमाँना।
कला रुद्र कालाग्न की नीदकता, जिही जोग आछान्न है जीवजता ॥१०१
त्रीया काल जाँनौ त्रसंध्या तुलाई, रहै रात औ दीह माँही रलाई।
पिपासा खुधा[2] लोभ को प्राँन-प्यारी, नही है पती सौं उभैहू निआरी ॥१०२
प्रभा दाहिका तेजही की प्रीया है, करता उभै काँम जासौं क्रीया है।
ज्वर है प्रज्वार करै मृत्यु जातै, जरा मृत्यु है काल की जात नातै ॥१०३
त्युही कन्यका नीद की प्रीत तद्रा, उभै सुख की नार दीनी उपिंद्रा।
स्रधा भक्ति वैराग की सावधाँनी, विनै नार निर्वान दाँनी वखाँनी ॥१०४
अदित्ती सु माता गनौ आद तेई, भई साकर मातहू सौर भेई।
भली है दिती दैत की मात भद्रू, कही सर्प जातीन की मात कद्रू ॥१०५
वनी गरुड की मात जैसै विनता, दनूँ दाँनवी की विचारौ दुरता।
कला प्रक्रती कस्प की नार केई, जनेत्रा गनौ स्रष्ट के जीव जेई ॥१०६
कला है अनेका उदै प्रक्रती की, मुदै नाँम सख्या गनावै मती की।
त्रीया चद्र की रोहनी सग तैसै, जुँही सूर सग्या रही सग जैसै ॥१०७
मनू सत्तरूपा सची इंद्र मोहै, सुराचार्ज के सग तारा सु सोहै।
मिली संग वासष्ट कै अक्षमाला, अहिल्या ज्युही गोतम सग आला ॥१०८

१ पत्नी। २ क्षुधा।

अनूसूइया नार ज्यू ग्रेह अत्री, पतीवृत्त के धर्म मांही पवत्री ।
हुई कर्दमभार ज्यो देवहूती, प्रजा के पती ग्रेह ज्युंही प्रसूती ।।१०९
कही पित्र की मांनसी जेम कन्या, हिमवान की मनका भीत धन्या ।
मुनीद्रा अगस्ती धरै लोप मुद्रा, सवेंही नदी नार जांनी समुद्रा ।।११०
धनी श्रीद की श्रीय ज्यू वर्न-वर्ना, अरार्धं ज्युंही ईस-नारी अपर्ना¹ ।
बली-नार विध्यावली कौ बखांनी, रजै ज्यू नली² दम्मयन्तीय रांनी ।।१११
वसूदेव कै देवकी गेह वैसी, जसोदा ज्युंही नद कै नार जैसी ।
ज्युंही अध राजांन³ गधार जाई, वरी द्रोपदी पडु पच्चून भाई ।।११२
हरीचद्र की नार सैव्या हितैसी, ज्युंही नार वृषभांन साध्वीय जैसी ।
पतीलक मदोदरी नार पाई, कुसिल्या घरे दासरथ्थं कहाई ।।११३
किरीटी सुभद्रा कुरु कैरवीहू, रही वासनी पेयकै रैवतीहू ।
रजै क्रस्न कै आठहू पट्टरांनी, वडी सत्यभांमा कालद्री वखांनी ।।११४
ज्युंही लछमना जांमवती जनाई, जितीनग्न की मित्रवृदा जनाई ।
कही येम भद्रा तथा रुक्मनी कौ, विजायौ जंही द्वारका के धनी कौ ।।११५
सीया रांम कै ज्यू प्रीया भावना मैं, अरु रोहिनी नद आराधना मैं ।
परसरामहू रेनुका मात पाई, वसी विध पै जाय श्रीक्रस्न बाई ।।११६
कहै जोजनागध ही जेम काली, सुता बांन उखा सखीहू संभाली ।
मुदै चित्रलेखा प्रभा भांनुमती, हितू और मायावती सोक हती ।।११७
कला प्रक्रती की अनेका कही है, रुखाली सवै ग्रांम खैडा रही है ।
खिती मै विराजी हितू भर्य-खडा, प्रजा कौ नदै पोष दाता प्रचडा ।।११८
जिती नार ससार के वीच जांनी, परा प्रक्रती अस ही सौ प्रमांनी ।
विना आदरे सौ भरै दुख वाधा, अलकार औ वस्त्र कीजै अराधा ।।११९
पतीवृत्त औ ब्रांमनी पुत्रवती, सदां सेवकै काज जांनौ सुमती ।
जिमावै अलकार औ वस्त्र जोरै, इही प्रक्रती पुज्ज जांनौ अथोरै ।।१२०
कवारी करै पुज्ज जो बालकन्या, वंही प्रक्रती भक्त जांनौ अनन्या ।
त्रीया है जु ससार मै भांत तीनू, प्रकारा कहै तीन रीती प्रवीनू ।।१२१
मिली ऊतम मध्यम अध्यमाई, जिही सौ सदां तीन रीती जनाई ।
सती पत्तवृत्ता सुसीला सुभावा, भजै आपने ही पती प्रीत-भावा ।।१२२

१ पार्वती । २ नल । ३ धृतराष्ट्र ।

प्रनासै नही वस ही की प्रनाली, निकाई जुतै उत्तमा है निराली ।
कला प्रक्ती सत्तहू की कहावै, उभै लोक आँनदहू कौ उपावै ।।१२३
भजै है रजो-भोग की भावना सौं, चितं मध्यम जानीयै चावना सौं ।
कुल्लटा कुलघ्नी दगावाज कैनी, सुपुर्खं कुपुर्ख भजै भोग सेती ।।१२४
तमो अंस सं ऊपजी प्रक्ती कै, गनी सो अधँम न चाहै गृही कै ।
भर्थ-खंड कौ जाँनीयै पुन्य-भूँमी, वनी देवीयाँ देव की स्याहि घूँमी ।।१२५
दयौ दुर्ग ता दडहू नाँम दुर्गा, वढी पुज्ज संसार मै देव-वर्गा ।
मुनेत्री तहो वैस राजा सुरथ्थं, उपाये जँही हेत च्यारू अरथ्थ ।।१२६
पती लंक कौ मारनै राँम पूजी, जिही स्याहि सौ राखसी-सैन जूजी ।
वँही औतरी दक्ष के ग्रेह आई, सती नाँम सौ सेव देवं सहाई ।।१२७
पती निंदना कौं पिता ग्रेह पेखी, वरी जग्यकै कुंड मै सो विसेकी ।
गिरी हेम पुत्री भई सोय गिर्जा, निही देवता-जात कौं सोक तर्जा ।।१२८
तिही गर्भ मैं ऊपजे तारकारी, माहाँ तेज औतार सागे मुरारी ।
भये क्रस्न औतार हेरंब भ्राता, खिती देव अग्रेस मै जास ख्याता ।।१२९
नृप मंगलं पायकै पूज लछ्छी, अराधी तिही देवता रीत अछ्छी ।
जिही माँनवी पूजकै नित्य जाचै, नटी पुत्तरी की ज्युही अग्र नाचै ।।१३०
सावत्री ज्युही कास्प पती मुथाँना, नृपाल करी सेवता रीत नाना ।
मुनी देवता माँनवी पुज्ज मडी, अरावै तँही रूप ध्यावै अखंडी ।।१३१
अरू सरस्वती कौं वृहमा उपासी, प्रधाँनं परा-रूप सृष्टी प्रकासी ।
करी क्रस्नहू सेव ज्याँ राधका की, परधाँम गोलोक रासी प्रभा की ।।१३२
रच्यौ पूर्नमा रासहू देवि राधा, विहारी हीयै की करी भेट बाधा ।
परमातमा क्रस्न की प्राँन-प्यारी, माहा मोद सौं संग लीनै मुरारी ।।१३३

सोरठा

पुन हरी अग्या पाय, गो गन गोपी गोपका ।
पूजे राधा पाय, धूप पुस्प कर धारना ।।१३४
भूतल्ल मैं भूपाल, जिग करता जेते भये ।
करी पुज्ज तिहु काल, मंगलदायक मोदमय ।।१३५
संकर वृहमा सेव, कीनी मंगल कारनै ।
दुज मुनि माँनी देव, क्रस्न-भक्ति अवचल करन ।।१३६

प्रक्रत-रूप प्रधांन, श्रीराधा की रागुनांये ।
गोविद कै गुनगांन, करत रहत हित पारना ॥१३७
प्रक्रत पांच परकार, सगा श्रम तिनकी गही ।
वरनत पूज विचार, जनम चिरत मनु लिते ॥१३८
श्रीनारांयन रोग, वरनन नागं नारना ।
हरखत नारद होय, सुनकै सोग समुभनं ॥१३९

छंद भुजगप्रयात

ज्यु ही आतमा काल आकास जांनी, प्रकासै दिसा विस्व गोना प्रमांनी ।
ज्यु ही है इही क्रस्न गोलोक जैसै, तिही कै हरै धांम वैकुंठ तैसै ॥१४०
ज्यु ही प्रक्रती नित्य जांनी प्रधांना, सोई वृंह्म-लीना लिखै नारदांना ।
जसै अग्न मे सक्ति है जारने की, प्रभा चद्र ज्यू चन्न पामारने की ॥१४१
प्रकास ज्यु ही सूर मै ओतप्रोत, युंही प्रक्रती वृह्म मांही उदोत ।
करै ना विना स्वर्न कै स्वर्नकारा, अलकार जो कुंडलादं अपारा ॥१४२
कुलाली[1] विना मृत्यका कुंभ कैसै, विना प्रक्रती आतमा सृष्ट वैसै ।
सोई प्रक्रती जांनीयै वृह्म-सत्ती, बनावै इही विस्व की रूप व्यक्ती ॥१४३
सकारं सुर सोय ऐस्वर्ज साखी, बनैहै क्ती[2] सब्द प्राक्रम[3] दाखी ।
सोई दैन वाली गनी रूप सक्ती, प्रकासै मिली वृह्म कै बीच प्रक्ती ॥१४४
समृधी वल सपती कीत सोई, जनावै ज्यु ही जीवकां ग्यांन जोई ।
इतेकी कहै है भग नाम आदू, महां भगवती नांम जांनी मृजादू ॥१४५
सक्ती[1] सोई भगवती है समाई, कला रूप भगवांन जासों कहाई ।
स्वयछ्या निराकार साकार सोई, गहै ध्यांन जोगिन्द्रहू होय गोई ॥१४६
परमातमा वृह्म सो वारपारा, निपावै वही सृष्ट मैं सृष्ट न्यारा ।
अरू वैस्नवारूप ऐसै उपासी, रजा येक ही क्रस्न जो तेज-रासी ॥१४७
नही है कही मे सदा हे न्यारांरा, परतेज है वृह्म सृष्टी पीयारा ।
कला कारन-कारन ताहि केरी, सु सोभा जुतै नित्य सध्या सवेरी ॥१४८
किसोर अवस्था मनोहार-काया, मनो सात हकार व्यापै न माया ।
वपू सुदरं स्यांम जो मेघवर्नं, छटा ज्यूं पटा अग राजीव चर्न ॥१४९

---

१ कुम्हार । २ अनेक । पराक्रम । ३ शक्ति ।

चढ सीस कोटीर[1] कै मोर-चदा, मिली स्यॉमहू केस पाटी मुकदा ।
मुखा मद-हासी प्रभा चद्रमा-सी, कँनी हीर दतावली की प्रकासी ॥१५०
कला दीप निर्घूमहू नामका की, प्रवाली रदवख पाली प्रभा की ।
प्रभा कज की पग्वुरी नैन पैना, वजावै गहै वाँसुरी हाथ वैना ॥१५१
मढी कठ मै मालती फूल-माला, मरै रत्न आभूपन विदु-भाला ।
सदा जुक्त ऐस्वर्ज सक्ती समाना, प्रभू-भक्ति आधार मुक्ती प्रधाँना ॥१५२
सुतत्र सबै मगल-रूप साखी, रजा मै जिही रिद्ध औ सिद्ध राखी ।
जरा मृत्यु व्याधी नही सोक जामै, भचक्र निदेसा ससी सूर भ्रामै ॥१५३
जिही नैन उनमेख मै कल्प जाता, विलावै वसू स्रष्ट औरै विधाता ।
विलोकै कृपा-द्रष्ट स्रष्टी वनता, जगै थावरं जगम जीव-जता ॥१५४
जती दाँनवा देवता नाँहि जाँनै, मती ईस वेधा थिती रूप माँनै ।
कृष सब्द जो भक्ति वाची कहीजे, नकारं जिही दास कौ वाच लीजे ॥१५५
दया भक्ति कौ भाव जो दाम देवै, सदाँ कस्न ही क्रस्न कौ रूप सेवै ।
जिही क्रस्न के नाँम कौ सिद्ध जाँनौ, मती औ थिती के पती जाहि माँनौ ॥१५६
चिच्छक्ती परमेस माया छती है, थई स्रष्ट की आद जामै थिती है ।
वँही सन्मुखा स्रष्ट की तिष्ट वछया, उपज्जी जवै ईस्वरी आद इछया ॥१५७
इकै रूप सौं दोय ह्वै रूप आया, महाँ सुंदरी ह्वै गई रूप माया ।
सोई वाँम के अग कौ रूप सारौ, वपु दक्षन पुर्ष-रूपी विचारौ ॥१५८
जिही काँमनी कौ लखी काँम-जुक्ता, उपज्जी हीयै पुर्षहू आय उक्ता ।
निहारी ज्यु ही नैन वाढी निकाई, लता सौत स्रगार मानौ लुभाई ॥१५९
भजै क्रस्न कौं क्रस्न ही भाव भौरी, चितै पूर्नमा चद जैसै चकोरी ।
प्रवेनी वनी पीठ पाछै प्रलवा, थकी नागनी ऐंठ सोवर्न-थभा ॥१६०
परी केस की सीस पै केसपाटी, वनाई मनौ काँम आराँम-वाटी ।
भली रेख सिंदूर जामै भरी है, गिरी नील पै वृह्मपुत्री गिरी है ॥१६१
वनै चद्र-से भाल मै लाल वैदी, दिपै नद के नद आँनद देदी ।
भरे स्यामता रग राजै भुँहारा, अली आवली पख माँनौ उभारा ॥१६२
मुखा कज औ खजन नैन मीना, कली कुंद-सी दत की पत कीना ।
प्रभा ज्यो प्रवाली उभै ओठ पाई, लजै नाग-वेली न वीरी ललाई ॥१६३

---

१ मुकुट ।

कपोल लसै गोल आदर्स जैसे, रस राग स्रंगार सोभा असैसे ।
तरे चिबुका हैं कली कंज तैसी, मटी स्यामता तांम सोभीत वैसी ॥१६४
कसे है निवोरी गरे कम्बु काठी, अनूप त्यौ पीन की साथ संठी ।
तनी अगका हीय मे बांध तसौ, लसे है उरोजा मनो नागरंगा ॥१६५
रही तु दसा उपरै रोम राजी, बढी बेन स्रंगार मानो बिराजी ।
कटी छीन राजै मनो केहरी की, लटी किन्नरी केहरी नेहरी की ॥१६६
गुनी गोयके बव त्यो गावनी की, पसे पाट के ठाट बांनी जरी की ।
निकाई जुतै निरतुला द्वै-नितंबा, बिगोवै प्रभा चतुंला चद्र बिंबा ॥१६७
लसै गोर जघा अरोमा लसी की, करी सुड गोली मनो कंदली की ।
सु सोभै प्रभा पिडुरी मे सवारी, छटा जमर्क काम मानो उतारी ॥१६८
छुटयाँ घेर चौफेर की चालनीकी, जरी की किनारी भरी जालनीकी ।
निनाद बजै भीन तौ नूपरीकी, अटी ननकी गूंघरा उपरोरी ॥१६९
भरे आंगनै पैड त्यो नेह भीनो, भनकै ज्यु ही जेहरी राग भीनो ।
पद-पकज पावन्ताला पनारी, बनी चप की जांन बांधी किनारी ॥१७०
टटे वीछीया गूघरी की ठमकै, दुती अगुन जांम हीरा दमकै ।
द्रुत हाल मै लालनै चाल दीठी, मुरै पैतरा माट टोरै मजीठी ॥१७१
क्रीया तांन की वर्न लागी किसोरी, जुतै प्रीत सौ हाथ सौ हाथ जोरी ।
बिहूं बांह की सोह बाढी वहूंटा, छिके डोर मोती मनी गुच्छ छूटा ॥१७२
प्रकासै कलाई मही गोल पूरी, चुरावै प्रभा बिज्जुरी चद चूरी ।
मनी-दीप बाढे ज्यु ही मूदरी मे, छटा ज्यूं चमकै दुती चूंदरी मे ॥१७३
सुहास सुवास बढी त्यो सुगधी, रसा मे दसू ही दिसा ठौर रूंधी ।
सखीहू मिली आयकै सग सारी, महाँ मोद सौ रग भीजे मुरारी ॥१७४
मृदगा ज्यूंही ताल वीना मिलाई, इतै बांसरी हाथ लीनी कॅनाई ।
विनोद वढ्यौ बाजना बाजनेई, थगी राधका जू लगी तात थेई ॥१७५
सखीहू सखीकै लखी येक सगा, तहाँ गांन की तांन वाढी तरगा ।
लगे कांनहू पांनसौं लाडलीकै, फबै ज्यू पना सग मुक्ता-फलीकै ॥१७६
विहारी वढी विस्वकी वांदनी की, चहू ओर आभा चढी चांदनी की ।
मिल्यौ बांसरी-नाद वीना मृदगा, घुटी अर्कजा सरस्वती जेम गगा ॥१७७
छऊँ राग औ रागनीहू छतीसै, विहार वढ्यौ कैसकी की वृतीसै ।
बिबै राधका और राधा विहारी, सखी गोपकाहू रखी सग सारी ॥१७८

महा मोद सौं रास हल्लीस मड्यौ, थतेथी-थतेथी जहाँ सोर थड्यो।
गरे नेह भीनी भरे कंठ गावै, लली कोकलाहू पपीहा लजावै ॥१७९
जुतै हासकै लासकै रास जोरै, मुरै वैन त्यूं नैन की सैन मोरै।
झुकै अंग तैसै वढै पोत झांई, दुती तप्त सोवर्न जैसे दिखाई ॥१८०
ठिलै त्यों मिलै नेवरी की ठमकै, दीयै ताल के हाथ चूरी दमकै।
कला हीय वाढै कसी कंचुला कौ, चलै चंचला ज्यूं पलौ अंचला कौ ॥१८१
निकाई भरी नागरी नागरी में, घल्यौ रास कौं घेरहू गाघरी में।
अलंकार वौ पूर वाढ्यौ उजाला, मिली त्यूं रसा में निसा दीप-माला ॥१८२
रतँन-रतँन विचै क्रस्न रासी, प्रभा मूरती मूरती-सी प्रकासी।
वसै राधका हीय जैसे विहारी, भर्यौ गोपकाहू हीयै मोद भारी ॥१८३
फिरै चक्र आलात ज्यूं वक्र फेरी, घलै घूंमरी दाव की पाव घेरी।
चलै अग्र सौं अग्र कौं पेंड चाली, वढै येक सौ येक नैना विसाली ॥१८४
मुरै किंकनी झांन झंकार मडे, तनकै तरक कन ताल तडै।
लहंगा ज्युंही लोच लावै लली कौ, करै लालहू चाल वागौ कली कौ ॥१८५
झमका वजे जांझरी जेहरी का, गरै गीत गावै झरी गेहरी का।
विघे तार मुक्ता गरै गोय वधा, चलै हार मुक्तावली लौ चछदा ॥१८६
जगै हीर वैडूर्ज की जग्ग-जग्गी, दिपै मानक रांनक दुग्ग-दुग्गी।
डुलै हाथ वांहैं मनो चप-डारी, त्यु ही नैन की सैन कौं जोर तारी ॥१८७
किसोरी उभै रास राचै कनाई, छटा ज्यू चमकै घटा घोर छाई।
समै ताहि स्त्रंगार वाढी स्थाई, उभै सातुक भाव आठौ उपाई ॥१८८
सखी ही लखी क्रस्न राधा सतभा, थिरी भू दसी ह्वैगई स्वर्न-थभा।
पसीन्यौ छुट्यौ राधका क्रस्न प्यारी, सवे अंग ज्यों मुक्तवेली सँवांरी ॥१८९
निहारी सु रोमाच सौं धार नीचै, सुधा जांन स्रृंगार कौ वाग सीचै।
नटै पै रटै आंनन वोल नांहीं, मित्यौ सो रहै कांप कै जीभ मांही ॥१९०
वही कज से नैन आँनद व़ारी, विहार थके राधकाहू विहारी।
चही अंग सौ छूटकै दूर व्रीडा, सखीहू सवै संग त्यागौ सनीडा ॥१९१
विहारी हीयै ऊपजी कांम-वाधा, रही चित्र की पुत्तरी होय राधा।
द्रुत दौरकै रास की ठौर दूरी, रची गोपकाहू तहाँ सेझ रूरी। १९२
रही पास जाही समै अंतरंगी, प्रीया राधका क्रस्न नीकै प्रसंगी।
ढिगा दूर लागी द्रगा ढांकने कौं, झुकी ओट लैलै लगी झांकने कौं ॥१९३

लली राधका लालहू अंक लाई, लता पीत मांनौं तमालं लुभाई ।
पसारी तहाँ पीठ लैकै प्रजका, सिवाई उभै ओर सौं छोर संका ।।१९४
लगे भोग भीने सुखं सेज लूटैं, तनी कन्चुकी डोर त्यौं हार तूटै ।
करी रास क्रीडा ज्युंही कांम-क्रीड़ा, वखांनै ततौं ऊपजै चित्त ब्रीड़ा ।।१९५
विहाई जिनै रात सारी विधाता, दयौ लाडली कौं रती दांन दाता ।
भई राधका गुर्वनी प्रेम-भीनी, खिपा ह्वैगई कल्प कौ स्वल्प खीनी ।।१९६
तज्यौ रास ज्यौं भोग-विल्लास त्यागे, रुची पायकै क्रस्न हू सांनुरागे ।
विवै राधका रूप औरे विहारो, रच्यौ रास ताकी कही वात सारी ।।१९७

सोरठा

गर्व थप्यौ गोविंद, जीय सुभ वेला जांनकै ।
उभय भये आंनद, येक चित्त सुख येककौं ।।१९८
विछुरे लेत बचार, इत-उत डोलत आंगनै ।
लगी गोपका लार, केऊ राधा कोऊ क्रस्नकै ।।१९९

छंद पद्धरी

रासेस क्रस्न राच्यौ जु रास, कीनौ सोई वर्नन सावकास ।
रति दांन दयौ राधा रमाय, जुक्त सौं गर्भ ताकै जमाय ।।२००
श्रीक्रस्न राधका करचौ संग, आलिंगन मानहु रति अनंग ।
खेल में भई नहि लखी खेद, समता सौं रमता छुटचौ स्वेद ।।२०१
स्त्री लैनै लागी ऊर्ध-स्वास, पुन भयौ- पवन तातै प्रकास ।
जल तत्व वढचौ सोइ स्वेद जात, दि-सविदस वढचौ अतसय दिखात ।।२०३
वन गयौ भूत आधार वाय, सव प्रांनिनकौ जीवन सुभाव ।
वामांग वायु सें भई वांम, संग वायु रही मोई धार स्यांम ।।२०४
पांचहू जने ताही सपूत, आपांन[2] पांन व्यांनहु अभूत ।
सांमांन और उद्यान[3] सोय, गत गूड रहन प्रांनीन गोय ।।२०५
अब प्रांन पंचहू भये और, ठहरे प्रांनिन में ठौर-ठौर ।
समुदाय रहै देही सुथांन, जीवन के जीवन मूल- जांन ।।२०६

---

१ मू प्र. कंसेस । २ अपान । ३ उदान ।

स्रम जल सौं ह्वै जल प्रवल संग, अधदेव प्रक्रत सौ वरुन अग।
तन वाँम ऊपजी वरुन ताँम, वरुनाँनी ताही भई वाँम ।।२०७
सभोग विवस्था कही सोय, जल-माल लेहु उतपत्त जोय।
गर्भ की कहत अत्र गूढ गाथ, सवही जग करता पुन सुनाथ ।।२०८
चिच्छक्ति सक्त श्रीक्रस्नचद, वहु तेज दीप्त सौ जुक्त विंद।
सत मन्वतर लग विंदु सोय, गुर्वनी राधका रख्यौ गोय ।।२०९
सो क्रस्नचद्र कै रही सग, प्रीत की रीत ही के प्रसग।
पश्चात करचौ इक प्रगट पूत, अष्टापद रगत तन अभूत ।।२१०
अत तेजवत श्रीक्रस्न-अस, होवत प्रकास जनु कोट हंस।
राधका झल्यौ नही तेज रास, भयभीत भयौ चित जास भ्यास ।।२११
विथुरचौ निज देख्यौ स्वेद वार, विदसन दिसा-विच वारपार।
ताही मै त्यागन करचौ ताहि, हुय सव्द असंभव हाय-हाय ।।२१२
उर-कोप करचौ श्रीक्रस्न आप, श्रीराधाजू कौं दयौ स्राप।
तुम कोपसील निष्टुर त्रीयाह, पुत्रकौ तज्यौ मम जल-प्रवाह ।।२१३
अव होवहि नहि तुम पुत्र और, कीजीयै जतन जोपै करोर।
अरु ह्वै है नारी तोर-अस, वाढै न जाहि सौ देव-वस ।।२१४
रहिहै नव-जोवन नित सरीर, प्रसवता कवहु व्यापै न पीर।
निज पत्नी सौ इह कह्यौ नेम, पत्नी सौ उपज्यौ फेर प्रेम ।।२१५
सवोध दयौ वहु विध सँतप, राख्यौ नही उर मैं कछू रोष।
पत्नी प्रसन्न हुय करचौ प्यार, वपु उपज्यौ सातुक जिही वार ।।२१६
देवीकै जिम्या अग्र देस, वपु सुक्ल उपज देवी सुवेस।
धारै सुक्लावर धरै धीर, सोगध अग सरसत समीर ।।२१७
हित वीना पुस्तक लीयै हाथ, गुन-ग्याँन गिरा मय कथत गाथ।
केऊ रतन सेतके अलकार, जाँझर पग-वाजत झनकार ।।२१८
राधका रसन सौं प्रगट रूप, वैंह कन्या तिह जाँनहु अनूप।
वामांग राधका येक वाँम, लक्षमी उपज सोभा ललाँम ।।२१९
राधका अग दक्षन रहीज, रमनीय क्रस्न-मुख रही रीज।
द्वै रूप करे श्रीक्रस्न देख, वर द्वभुज च्यार-भुजहू वसेख ।।२२०
द्वै भुजा अग दक्षन दिखाय, भुज च्यार वाँम तव भये सुभाय।
वोले जव द्वै भुज उर-विचार, मननी राधका प्रति मुरार ।।२२१

सग मोही रहीयै सांनकूल, मेरे 'अंतह की प्रेम-मूल।
सरस्वती लक्षमी जुत सर्यांन, माहाराज द्वभुज की वात मांन ॥२२२
श्रीनारॉयन को गह्यौ सग, वयकूठ गई जामै न विग।
राधका रूप सौ उभय रूप, उपजै न पुत्र तातै अनूप ॥२२३
पारपद भये पुन अप्रमांन, नारांयन तनहू सौ निदांन।
श्रीनारॉयन के रूप सोय, हिल-मिलकै रहीयत सग होय ॥२२४
लक्षमी अग सौ चिव ललांम, विस्तरी धांम वयकूठ वांम।
सम रमा ताहि जांनहु सुवेस, दासका रमा मॉनहु सुदेम ॥२२५
गोलोकनाथ के उपज गात, केऊ गोप भये जुत करानात।
श्रीक्रस्नचद ही कै समांन, सु दर सरूप चित सावर्यांन ॥२२६
उतपत्त रोम-रोमहु अनेक, परभाव पर्म पावन प्रवेक।
ऊपजी गोपका किती आय; निज अग राधका तीय निकाय ॥२२७
गोपन के परगट भई ग्रेह, श्रीक्रस्नचद्र भांनी सनेह।
सब राधारांनी करत सेव, मिल-मिलकै हित चित अवसमेव ॥२२८
नवजोबन सोई रहत नार, अभिरांम धार तन-अलकार।
परसूत होत नही जिनही पीर, सु दर सरूप विरचत सरीर ॥ २२९
वपु क्रस्न राधका भये विभाग, सक्ती दुर्गा प्रगटी सभाग।
क्रस्न ही देव ताके क्रपाल, क्रस्न कौ ध्यांन अहु करत काल ॥२३०
विस्नू की माया सोई वलिष्ट, संसार वीज-रूपी सपष्ट।
नारांयनी ताकौ कहत नॉम, करतूत हुतै जग करत कांम ॥२३१
ईसांनी ईस्वरी रूप आद, मडता वेद पावन मृजाद।
श्रीक्रस्नचद्र बुद्धी सु ग्यांन, जाहि की अधिष्टात्री सुजांन ॥२३२
देवीयाँ जिती जग मै दिपंत, प्रक्रती मूल माया प्रजत।
सावर्न रूप आभा सरीर, चमकत वीजुली जेम चीर ॥२३३
मुख मद-हास अधुरांन माहि, द्रग सात रूप करुना दिखाय।
आभूपन नाना धरै अग, परकास चद्र कोटक पतग ॥२३४
भुज सहंस-वीच आयुधन भीर, सुर स्याहिक दायक सुच सरीर।
निज भाल वीच तिह तीन नैन, वण्पीह कोकला मधुर वैन ॥२३५
जेती है सुभगा त्रीया-जात, मोहित है ताकी करामात।
दुज ताही की ऐस्वर्ज देत, सुख सदन कीत मगल समेत ॥२३६

श्रीक्रस्न समर्पत भक्ति सात्र, वैस्नवी वैस्नवी कहत वाच।
महमाय मुमुक्षन देत मोक्ष, सुख चाहत ताको सुख संतोख ॥२३७
स्वर्ग मै स्वर्ग लछ्छी समान, गृह-लछ्छी सोई ग्रेह मान।
तपसीयन मांझ तप रूप तेज, महपनी मांझ सोभा सगेज ॥२३८
अग्न मै दाह छवि प्रभा येम, अरु कमलचद्र सोभा जु येम।
श्रीक्रस्नचद्र की पर्म सक्त, आतम परमातम रूप उक्त ॥२३९
मांनत है जगहू सक्ति मांन, विन सक्ति जीयतहू मृतु विधांन।
समार वृक्ष की वीज सक्त, विन सक्त होत जगहू विरक्त ॥२४०
अस्थित फल वुद्धी रूप आद, प्रांनी सुख पावत तिह प्रसाद।
जिह खुधा पिपासा दया जांन, निंद्रा अरु तद्रा क्षमा मांन ॥२४१
लज्जा अरु मानी धृती लेख, पुन पुष्टी तुष्टी भ्राति पेख।
भगवंती दसहु-दिस रही भ्राज, करता जग-जीवन सफल काज ॥२४२
थित भई क्रस्न आगै जु थांन, वर्नना करन लागी विधांन।
हित पाय क्रस्न सु प्रस्न होय, सिघासन रतनन जटत सोय ॥२४३
मेल्यौ सु आप हाथन मुरार, विध आये करता तिही वार।
विस्नु की नाभ के कमल वीच, ऊपजे सोय वेला अभीच ॥२४४
अस्तुती क्रस्न को करी आय, सग सावत्री लीनै सुभाय।
राधेस भये तव दोय रूप, इक स्याम गौर दूसर अनूप ॥२४५
गोपीपत स्यांमहु रहे गात, दक्षनह अग सोई दिखात।
वाँम के भये पुन वाँमदेव, अज अलख सिभु सिव सोई अभेव ॥२४६
सम फटक जास आभा सरीर, भूषन की लीनै सग भीर।
पट्टस पुन लीनै सूलपांन, सित भस्म स्वेत अवर समांन ॥२४७
अरू अजन व्याघ्र की चर्म और, भासत प्रदीप्त जनु तरुन भौर।
सिर जटाजूट सुरसरीय सग, राजीव नयन जहि लाल रग ॥ ४८
चित्र देत भाल-विच वालचद, मुसकात कमल मुख मद-मद।
गल नील गरल की रेख गोय, मनि-माल सनहु वाँधी समोय ॥२४९
कीनै सर्पन के अलकार, उर लसत मुंड-माला उदार।
निज वदन पाँच प्रत तीन नैन, आधार जोग के सिद्ध ऐंन ॥२५०
निर्वांन-रूप मगल-निधांन, जग कारन तारन माहा जांन।
मन मोक रहित अरु सुद्ध मत, श्रीक्रस्नचद्र के पर्म संत ॥२५१

सिंघासन अप्पेऊ सनिधाँन, दीनी सिव दुर्गा तिही दाँन।
सोइ पतीवृता सिव करत सेव, देवन के देवन वाँमदेव ।।२५२
सिव की सोई प्यारी भई सक्त, जन जाँन उपासत मात जक्त।
सिव सिवा नाम कल्याँन साथ, ईस्वरी ईस अनाथ-नाथ ।।२५३

दोहा

वालक त्यागौ तन विमल, श्रीराधा सुत सोय।
आयु विधाता लग वँही, तहाँ रह्यौ विच तोय ।।२५४
भाग दोय ताके भये, वालक के अध विव।
वालक इक उपजे वहुर, अदभुत-रूप अचव ।।२५५
सोभा तिह रवि कोट सम, दीप्त माँन जहि देह।
जननी विन अवलव जोइ, क्रदत साद करेह ।।२५६

छंद पद्धरी

वैराट महा जाँनहु विख्यात, वँह क्रदत कोऊ जैसै अनाथ।
आस्रत जिह केते वृहमड्ड, पावत प्रमाँन नही कोऊक पिंड ।।२५७
श्रीक्रस्नचद्र ही सौ सुभाय, तेजमैं सोरहौं भाग ताहि।
भव विस्वाँ का आधारभूत, अरू महाविस्नु मायक अभूत ।।२५८
इक रोम वीच जाके अनेक, विस्व कौ वास जाँनहु विसेख।
गनती विस्वन की नही गनाय, सुर आद विरचनहू सुभाय ।।२५९
प्रति वृहमड्ड विध विस्नु पेख, द्रग सूर-चद लौ देव देख।
विध और लोक पाताल वास, वृहमड इही पावत विकास ।।२६०
वृहमड-वीच सिव हरी विरच, रहत है सदा नही भेद रच।
वैकुठ तिही वाहर विसेख, सवही सौं न्यारौ रहत सेख ।।२६१
पचास कोट जोजन परेह, गोलोक क्रस्न कौ पर्म ग्रेह।
स्वारूप नित्य अरू सत्य सोय, कल जाँनत है तिह भक्त कोय ।।२६२
इह जाँनहु संग्या वृहमड्ड, खिती आद दीप दध नऊ खड।
उपदीप और पर्वत अनाद, वाख्याँन करत कवि निर्विवाद ।।२६३
लेखहु ऊपर तिह भूरलोक, ऊर्ध है ताहिकै भ्रुवर ओक।
सुरलोक और जाँनहु सुथाँन, जिह ऊपर कौ तप लोक जाँन ।।२६४

जाही के ऊपर लखहु जोय, सत लोक वृह्म हू लोक सोय।
इक-इक सौ इधके सबही येह, सुखदायक लायक निसदेह ।।२६५
पर विनस जात है प्रलय पाय, जल के बुद-बुद ज्यौं गनहु जाहि।
वैकूंठ और गोलोक वास, विव नही होत कबहूँ विनास ।।२६६
बालक विराट की सुनहु बात, बरनत ताही की जग-विख्यात।
ऊपर सोई देखत रहे आप, सहनता जुक्त लीनें सँताप ।।२६७
ऊपर कौ सुन्य ही सुन्य येक, विदसाँन-दिसा पावत विवेक।
चिंता कौं प्रापत भयौ चित्त, अह नित्य है क अथवा अनित्त ।।२६८
इह ग्याँन भयौ उर उदित आय, श्रीक्रस्न क्रपाही सौ सुभाय।
करनें पुन लागे ध्याँन क्रस्न, सु भक्त हृदय बाढी सहिस्नु ।।२६९
पुन भक्ति जोग ही के पसाय, द्वै भुजा क्रस्न दीय दरस आय।
सुदर स्वरूप बालक सँपेख, बाढी उर-करुना अत विसेख ।।२७०
वरदाँन दयौ सिसु तिही वार, व्यापै न खुधा असना विकार।
सुत मो-समाँन ह्वै हौ सुग्याँन, आधारभूत घर आसमाँन ।।२७१
वृहमड करहि केऊ रोमवास, अवचल हुय रहिहौ अनायास।
निस्काँम रहहु निर्भय निदाँन, विन जरा मरन सुस्थिर विधाँन ।।२७२
पुन रोग-सोक व्यापै न पीर, सुस्थाँन सदा अवचल सरीर।
किहि क्रस्न-क्रस्न त्रय वार काँन, दीनौ षट अक्षर मत्र दाँन ।।२७३
पुन बोले सिसु सौं क्रपा पाय, वरदाँन लेहु जो चित वसाय।
बालक विराट सुन वचन बाप, इह विनती कीनी हेत आप ।।२७४
सुतकौ जब लग इह रहै सरीर, ध्याँऊँ पितु चरनन धार धीर।
भक्ती अनन्य कौ पाय भेव, समता विस्तारहुँ क्रस्न सेव ।।२७५
अभलाख इही नही दुतीय और, जाचना करत नित हाथ जोर।
आपही सनातन रूप आद, वर्जता मोह-माया विषाद ।।२७६
जीवन के व्यापक वृह्म-जोत, इह जगत होत तुमसौ उदोत।
करीयै प्रसाद पितुवर क्रपाल, चाहत कछू और न चित्त चाल ।।२७७
सुन मधुर वचन बोले जु स्याँम, ध्रुव रहहु पुत्र विस्राँम धाँम।
वृहमड असंखहु जाय बीत, जम मृतुकाल सौ रहहु जीत ।।२७८
विनसै केऊ उपजै लघु विराट, धरहै केऊ वृहमाइड घाट।
विस्नू पुन होवहि वार-वार, कालाग्न रुद्र सघार कार ।।२७९

उपजहि केऊ विनसहि इह अनंत, अगण तुम कवहुन होय अंत ।
अरु देन तुमहि वरदाँन और, मत गत सौं सुनीयैं वचन मोर ।। ८०
जव करहौ मेरौ ध्यॉन जाप, वँह ठौर दरस मे देहु आप ।
मम हृदय वीच तुहि वसत माय, पुन दरसन तुमह नेहु पाय ।।२८१
इतनी कहि चाले क्रस्न ओक, वहराय सोक मुतकौ विलोक ।
उपजे विरंच सिव क्रम्न अंग, वँह रुप उभै जाँनहु अभंग ।।२८२
वँह वार मिले निज लोक आय, सासन तिन हूँ कौ दीय सुनाय ।
तुम स्रष्ट वनावन होऊ त्यार, महासुत विराट रोमन मँझार ।।२८३
केऊ लघु विराट ह्वै है मुकॉम, धारक प्रतिपारक स्रष्टि धाम ।
उन क्षुद्र विराटन केर अंस, प्रतिनाभ कमन उपजहु प्रसंस ।।२८४
उतपत्त होयकै स्रष्टि आद, मति वेद स्रष्ट वाँधहु मृजाद ।
वाचा सुन तवही हर विरंच, उठ चले जाँन कारज उदंच ।।२८५
श्रीक्रस्न रहे मुख पद समाय, ललना जुत पलना अंक लाय ।
इत महाविराट रोमन अगार, वैराट भये लघु वीच वार ।।२८६
वपु नवजोवन सव स्यॉम वर्न, चिव कँमल विराजत हाथ चर्न ।
पौढे सोड ओढें वसन-पीत, जलसाई जल विच मोह जीत ।।२८७
जगनाथ जनार्दन नाँम जास, पावत जग जाही सौ प्रकाम ।
नाभी मे उपजे कमलनाल, विध आय ऊपजे तिह विचाल ।।२८८
कमलोदय ताकौं जग कहत, संग्या तिह जाँनहु इह सिधंत ।
निरनय कौं खोजत पद्मनाल, व्रहु भ्रमत रहे ताही विचाल ।।२८९
पायौ न अंत ताकौं प्रमाँन, उर चिंता वाढी अप्रमाँन ।
ऊपजे जाहि थल गये आय, श्रीक्रस्न करहु मेरी सहाय ।।२९०
कर-कर सुमरन कौं लगे काज, विनती वहु कीनी छोर व्याज ।
वैराट क्षुद्र जल-विच वसाय, जलसाई-विस्नू लखे जाहि ।।२९१
उपजे विचगोलक वृह्मंडड, पौढे समेट जल-वीच पिंड ।
पुन महाविराट के दरस पाय, श्रीक्रस्नचंद्र देखे सुभाय ।।२९२
गोलोक लख्यौ नित क्रस्न-गेह, दुति इधक गोपका-गोप देह ।
सत दीप निवासी विस्नु संग, उपजे विराट लघु वाँम अंग ।।२९३
भुज च्यार लक्ष्मी सहित भाँम, स्रष्टी पालनकौ स्रष्ट स्यॉम ।
तिनकी सहायता लहि तुरत, विध स्रष्ट करन लागे वृतंत ।।२९४

सनकाद मांनसी-पुत्र साथ, निपजाये प्रथम ही लोकनाथ।
रुद्र की कला ग्यारह रचत, ग्यारहों रुद्र सख्या गनत ॥२९५
उपजे लिलाट विव सोऊ आय, सख्या पुरांन भाखत सुभाय।
वरनन इह कीनी सकल बात, खित नभ जल प्रथ्थी तत्व ख्यात ॥२९६

दोहा

नाभी क्षुद्र विराट निज, पकज ऊपर पात।
स्वर्ग मृत्यु पाताल सव, तवही रचे जग-तात ॥२९७
जीव चराचर जगत के, वसत वीच वृहमंड।
लघु विराट वपु लेखीयें, येकही रूप अखड ॥२९८
विध हरी सिव तहाँ वसत है, वृहमडड प्रतिवास।
महाविराट रोमन मही, खुद्र विराटहु खास ॥२९९
क्रस्न कीरतन कौ कह्यौ, नारांयन कर नेम।
मुनि नारद के हृदय मह, प्रभु सौ वाढ्यौ पेम ॥३००
नारांयन कहने लगे, पूजा प्रक्रत प्रसंग।
रहत सोइ सुख रूप सौ, सदां क्रस्न के सग ॥३०१

छद उद्धोर

प्रक्रती पाँच प्रधांन, सोइ स्त्रष्ट काल-समांन।
पूजनै जोग प्रसिद्ध, स्वाभाव सहजै सिद्ध ॥३०२
गनपती माता ग्यांन, जिह नांम दुर्गा जांन।
अरु राधका अरधग, श्रीक्रस्न गनीयत सग ॥३०३
लक्षमी सरस्वती लेख, सावत्रि पुन सविसेख।
इन कला पाँचन आंन, प्रगटी सु जग परमांन ॥३०४
सुन लेहु नांम सुभाय, सुर-काज करत सहाय।
गन कालका धर गग, सृष्टी सु रूप सुचग ॥३०५
मङ्गला चडी मात, तुलसी सु मनसा तात।
निद्रा सुधा निज नाम, वर अगन स्वाहा वांम ॥३०६
पुन दक्षना परभाव, सारूप सिद्ध सुभाव।
इन चिरत कहत उदत, सुन लेहु नारद सत ॥३०७

पुन जीव कर्म-विपाक, सुन लेहु ताकी साख।
दुर्गा सु राधा दोय, सुन लेहु चिरत मकोय ।।३०८
सरसुती देवी सुद्ध, बल देत जीवन वुद्ध।
राधका मुख सौं रूप, तन प्रगट भई तद्रूप ।।३०९
काँमुकी ह्वै कै क्रस्न, पति चाहि कीनेऊ प्रस्न।
जब क्रस्न सुनकै जाहि, सिद्धत कहेऊ सुनाय ।।३१०
मोहि संग राधा मान, पुन अधिष्टात्री प्राँन।
जो तजी नाहिन जाय, सो रही हृदय समाय ।।३११
वैकुंठ-वासी विस्नु, सुग्रेह नार सहिस्नु।
इंदरा चित्त उदार, उर-क्रोध जित अहंकार ।।३१२
पति करहु हरि कर पेम, निरवाह हैं रति-नेम।
इंदरा मिलकै आप, सुख सरहु छोर सँताप ।।३१३
जग जीव माता जाँन, गुन गाय है हित ग्याँन।
पंचमी माघ पुनीत, पख सुकल लाय प्रतीत ।।३१४
स्रष्टो सु करहै सेव, अहि मनुज देव-अदेव।
पुज्जहै तेरे पाय, हित वोध हीय हरकाय ।।३१५
विद्या सु लहिहै विवेक, प्रक्रती जाँन प्रवेक।
वर दयौ क्रस्न विचार, पूजा सु कीय परचार ।।३१६
सिव विस्नु विध अरु सेस, सनकाद आद मुनेस।
पूजे सु मति हित पाय, सुर मनुज चित सरसाय ।।३१७
पूजा विधाँन प्रकार, अब कहत जुत आचार।
पंचमी माघ पवित्र, सुक्ला दिनाँ सरवत्र ।।३१८
दिन पूर्व आस्रव दक्ष, पन करैं सत्य प्रतक्ष।
रहिकैं जितद्री रात, पूजैं सुजन परभात ।।३१९
कर स्नाँन कौ नितकर्म, धारना धारैं धर्म।
सात्रोक्त तंत्रक सार, घट थपैं ऊपर गार ।।३२०
प्रथमह सु गनपत पूज, विध वेद विप्रन बूज।
पूजैं सु सरसुत पाय, निज हाथ सीस नमाय ।।३२१
धारना करकै ध्याँन, घट वाह्य पै लहि ग्याँन।
परकार षोडस पूज, सुच करै रीत सहूज। ।३२२

नैइवेद करकै नेम, पुन धरह अतह पेम।
नवनीत पय दध नीक, तिल सेत मोदक तीख ॥३२३
रम-ऊख सहित रसाँन, सर्करा-आद समाँन।
अक्षत सुक्ल अनूप, पुन सर्करा-जुत पूप ॥३२४
पिष्टका मोदक पूर, गोधूँम जव घृत घूर।
निज केलफल नालेर, वेल के फल अरू वेर ॥३२५
पुन कद लै हरि-पर्न, वित धरै कछु सित वर्न।
सित गध-लेपन साध, अरु पुस्प स्वेत अराध ॥३२६
अरू सुक्ल अवर आँन, धारै सु इह विध ध्याँन।
सोगध माला सेत, सितहार रत्न सहेत ॥३२७
वहु अलक्रत सित वर्न, चिव धाँम दुई कर चर्न।
पुस्तक रु वीना पाँन, मनहरत मुख मुसकाँन ॥३२८
सिव वृह्म अरू सनकाद, विध लहत अक्षर वाद।
वदना करत विधाँन, धारै सु उरमै ध्याँन ॥३२९
अस्तूत कवच अनेक, साधना कर सविवेक।
अरु मूल मत्र अवार, अठ वरन करत उचार ॥३३०

मत्र—श्री ह्री सरस्वत्यै स्वाहा—इति।

इह मत्र पर्म अनूप, स्वर कल्पवृक्ष सरूप।
साधना करत समाँन, धारै सु अवचल ध्याँन ॥३३१
जप च्यार लक्ष जपत, सिध लहै अवरल सत।
वर्नना कवच विधाँन, पुन कहे वीच पुराँन ॥३३२
जोइ साधना के जोग, लहि सिद्ध ग्याँनी लोग।
मुनि आदकी इह मत, सरस्वती स्तुती सुमरत ॥३३३

दोहा

श्रीदेवी इह सरस्वती, वैकुठ कीनौ वास।
कलह हौन के कारनै, अत चित भई उदास ॥३३४
सव नारद सखेप सौं, इह मुनीयै इतीहास।
कलुप नसावन सुख करन, सका होय विनास ॥३३५

हरि की ये त्रय त्रीय हुई, लिछमी सरसुति लार।
गगाहू तैसै गनौ, पति के सजुत प्यार ।।३३६
वसत धाँम वयकुठ मै, कलह भई मति क्रूर।
वरनत सोई विस्तार कर, दोप करन जग दूर ।।३३७

छद अरध-हरगीतका

इक समय गगा आयकै, परसे सु पतिकै पायकै।
भई काँम की मनभावना, मुख मद-गत मुसकावना ।।३३८
विस्नू विलोकी वाँम कौ, कछु हेत द्रष्टी कॉम कौ।
मुख रहे चितवत मोह कौ, कीय सरस्वती लख कोह कौ ।।३३६
लक्षमी देखी लाग सौ, सुख नाथ भरीय सुहाग सौ।
समजास कीय वहु सरस्वती, माँनी नँ मत तौहू मती ।।३४०
भर क्रोधकै कपत भई, गहि क्रुद्ध मति की मति गई।
बोली सु विस्नु विलोककै, रिस आँसुवन कौ रोककै ।।३४१
घरमिष्ट पति की धारना, कछु कहत हूँ सुख-कारना।
सम प्रीत राखत स्त्रीय मै, त्रय होय भलहु दुतीय मै ।।३४२
मत विसम सम रति मेल है, खलपती के इह खेल है।
जाँनी गदाधर जीय को, करतूत पति करनीय को ।।३४३
लक्षमी गग लुभायकै, चित इधक राखत चाहिकै।
हमसौं न राखत हेतकै, द्रग देखतै दुख देतकै ।।३४४
मन रमा गगा हिलमिल्यौ, चित हमहु देखत चलचल्यौ।
तुम इधक देखत ताहिकै, पख दुहन कै इक पायकै ।।३४५
येऊ मुभामन है उभै, चित सग नित मेरौ चुभै।
इम करचौ वहुविध आँमना, सरस्वती धारै सामना ।।३४६
श्रीविस्नू देखी सरस्वती, उर-रीस वाढी उन्नती।
उठ चले हरि अकुलायकै, जुर सभा-मडप जायकै ।।३४७
हरि दयौ टारौ हेरकै, वढ सरस्वती तिह वेरकै।
विसतार कीनौ वाद कौ, मत तजी तीय मरजाद कौ ।।३४८
जव रमा विच मै जायकै, ठाढी भई ठहरायकै।
द्रग सरस्वती तिह देखकै, वोली सु रीस विसेखकै ।।३४६

अधवीच हमरे आयकै, थभी सु जढ-मति थायकै।
जड-रूप होहु जमा जमी, नद तथा तरु हुय लक्षमी ।।३५०
सरस्वती दीनौं स्राप कौ, पख पाय गगा पाप कौं।
गगा मु मन गल्याँन सौं, गमहीन ह्वैगई ग्याँन सौं ।।३५१
इह रीत वचनन उच्चरी, कल लक्षमी स्रापत करी।
नद होहु तुमही नीर की, पापीन गृहता पीर की ।।३५२
अध-अघी छोरहि आँनकै, सम सलल करत सिनाँनकै।
सुन वचन गगा सरस्वती, बोली मु इह विध प्रवृती ।।३५३
गगा सु जावहु गैल कौं, मनुजनन हरनै मैल कौं।
अघ गृहन करहू और के, केउ अक्रति जनन कठोर के ।।३५४
नद होहु मो जिम नीर की, सुरसरी सलल सरीर की।
इम स्राप दै इक येक कौं, विनता सुभाव विसेख कौं ।।३५५
श्रीविस्नु आय सुधाँम कौं, वच कहे तीनहु बाँम कौं।
वस होनहार विचारीयै, गिल्ला न देवहु गारीयै ।।३५६
इह कलह-फल लहि आपकौं, सव सहन करहु सराप कौं।
कमला कला-जुत कारना, पुहमी सु लोकप धारना ।।३५७
नृप धर्म धुज गृह नीत सौं, पुत्री सु होवहु प्रीत सौं।
वृप तत्व पाय विसेखकै, लहि स्राप कौ फल लेखकै ।।३५८
पति सखचूडहु पायकै, मम अस अक मिलायकै।
भाँमनी मोही भेटहौ, महाकलह कौ दुख मेटहौ ।।३५९
इक कला नद ह्वै हौ इला, नाँमी सु पद्मा निर्मला।
पापीन पाप प्रहारकै, वसुमती जस विस्तारकै ।।३६०
मिलहौ सु मोही मोद सौ, वहु हेत चेत विनोद सौ।
इम लक्षमी कही औरकै, बोली सु गग वहोरकै ।।३६१
भुँय जाहु स्रापत भारती, सव भरथ-खड सुधारती।
तन भगीरथ नृप ताप सौ, ऊधार चावहि आपसौ ।।:६२
पुरखाँन मेटहै पाप कौं, जग करहि गगा जाप कौ।
जव कहहि सव भागीरथी, परमार्थ हित परमारथी ।।३६३
सामुद्र मोहि सरूप है, भजमाँन सर नद भूप है।
बर करहु जिह वारीस कौं, रुख त्यागीयै दुख रीस कौ ।।३६४

सरस्वतो गगा दुई सुनौ, उपदेस देत उराहनौ।
त्रय भ्रात भृत त्रय तीय तहाँ, जुत कलह है देखहु जहाँ ।।३६५
इह जाँन कहत जु आपकौ, सहीयै न फेर सँतापकौ।
वस वृह्मलोक विहारनी, तुम होहु जग की तारनी ।।३६६
पति वेदगर्भा पेम सौं, नित होहु पत्नी नेम सौं।
सिवलोक वसहू सुरसरी, हम भेद नाँहित हर-हरी ।।३६७
रहिहै जु मो-सग ही रमा, छल दभ रहित लीयै छिमा।
पन वचन मेरौ पारीयै, वयकूंठ धाँम विसारीयै ।।३६८
सरस्वती गगा कथ मुनी, परचाय श्रीविस्नू पुनी।
मिल त्रहू मन मुरझायकै, लक्षमी हीय लपटायकै ।।३६९
वहु करत सोक बिलाप कौ, अहमती निंदत आप कौं।
कर जोर श्रीविस्नू कही, हम कलह सौं गत इह हुई ।।३७०
अव छिमा कर अपराध कौं, अत पै हरहु उपाध कौं।
उर चहत है हम येछना, वृद आप करहु विवेचना ।।३७१
मिट स्राप हँम तुमसौं मिलै, भल करहु करतै अनभलै।
इह आपही की आँमना, कीजीयै पूरन काँमना ।।३७२
सुन वचन ऐसे सातुकी, पत्नी न जानी पातुकी।
सतगुनी विस्नू क्षितसभा, पुहमीन परगट तिह प्रभा ।।३७३
बोले सु वचन विचार कौ, निज तीयन के निस्तार कौ।
सुन लक्षमी मम साम्नना, तुम कलह सहीयै त्रासना ।।३७४
इक कला होवहु आपगा, प्रानीन लीलहु पापगा।
इक कला तुलसी अवतरौ, वर सखचूडही कौ वरौ ।।३७५
सरस्वती वृह्म सुथाँन कौं, भल जाय विरचहु भान कौं।
इक कला नद ह्वै है इला, कवि सग मै आधी कला ।।३७६
सिव-सीस वसहै सुरसरी, कल जीव कौ पावन करी।
सिव जटा सीम प्रसगकै, गुन वढहि केते गगकै ।।३७७
जिह कला जहाँ-तहाँ जागहै, उर हमहि सौं अनुरागहै।
कर साथ मम पूरन कला, निज धाँम वसहै निस्चला ।।३७८
इल वीच कलजुग आयहै, वसू धर्म कौं विचलायहै।
हुय वर्ष पाँच हजार कौं, ऐहौ सु धाँम उधार कौं ।।३७९

पुन लक्षमी कोय प्रस्न कौ, वल्लभा प्यारी विस्न कौ ।
हम त्रहु नद तरु होयहै, नित पातकी अघ खोयहै ।।३८०
मल गहहि जुत मदाकिनी, जल रूप सौ तीनहु जनी ।
अपवृत्त ह्वकै अग मे, सु वसहिहि किम हरी सग मे ।।३८१
उद्धार-कारक आंमना, कहीयै जु पूरन कांमना ।
जब विन्नु बोले जाहि सौं, अभिमती उर अवगाहि सौ ।।३८२
सुन इदरा कथ सरस्वती, गगा जुतै पावन गती ।
अघ-अघी छोरहि आयकै, पुन रहैगे सुख पायकै ।।३८३
आसीस लगहै आप कौ, जग करहि तुमरे जाप कौं ।
सुन वैस्नवा जस सुक्रती, पतिवृता नारी प्रक्रती ।।३८४
तेउ आयहै तव तीर कौ, भर सतजन की भीर कौ ।
पग तीर वैठ पखारकै, घर धोयहै चित्त धारकै ।।३८५
अरु विस्नु नांम उचार सै, वपु करहि मजन वार सौ ।
द्रुत हरहि तुमरे दोष कौं, मिल सोइ देहै मौख कौ ।।३८६
मम भक्त की महमा महा, कछु मोहि सन जावत कहा ।
अघ मेट तुमही उधारहै, कल वीच करत करारहै ।।३८७

दोहा

सरस्वत गंगा स्राप सौ, आप कला सौं आय ।
भरथ-खड मे भारथी, सलता भई सुभाय ।।३८८
सरस्वतदेवी स्राप सौं, गंगाहू कर गांन ।
भरथ-खड भागीरथी, नद सोई भई निदांन ।।३८९
पद्मा-नद पद्मावती, भरथ खड विच भाग ।
विस्नू प्यारी अत विमल, रहत भरी अनुराग ।।३९०

छद त्रोटक

कल हायन पांच हजार कढै, वसुधा-विच पाप-प्रवाह वढै ।
वहु तीरथ आद वृंदावनकै, पतनी त्रहु सग लएँ पनकै ।।३९१
मिलहौ हम सौं तुम सुद्धमती, सत संगीय सग घने सुक्रती ।
वयकूंठ के धांम विहारहुगे, तनहू जन के वहु तारहुगे ।।३९२

कल हायन की गनती करतै, पच दूँन हजार जिही प्रवृतै ।
गिलका सिल सालगरांम गनौ, द्रढ भाव जुतै सिव सक्ति दुनौ[1] ॥३६३
जगनाथहु लौं सब जावहिगे, पुहमी नहो देव पुजावहिगे ।
वृत तर्पन स्राध रू वेद-विवी, सुभ-कर्म हरी-जस की समृधी ॥३६४
सत सास्त्र नही रहिहै-स कथा, वरनास्रम जांनहै धर्म वृथा ।
भुँय पै मदपेईय मास-भखी, छल दभ विथारहि क्रूर चखी ॥३६५
सठ हिंसक होवहै लोग सवै, जग सौ उठजावही देव जवै ।
मिट जातीय-भेद गहै महिला, कुल ऊँच गनै नही नीच कुला ॥३६६
पितु देय न थातीय पुत्रन को, कुपती जिम ग्रेह कलित्रन कौं ।
अपनौ-अपनौ वित आप भतै, विलसै सुत नारीय हू वरतै ॥३६७
करहै विनता कुलटा की क्रीया, सनमांन न पावहिगी सुकीया ।
पति सक नही पहिचांनहिगी, मन मांनै जहाँ रति मांनहिगी ॥३६८
करहै नरहू विपरीत क्रीया, करनीन सनेह जु पै सुकीया ।
गनका तिन सौं अधकी गनहै, मग लाज विहीन जिही मनहै ॥३६९
कुल की मरजाद न भायन की, सिसुनी भगनी न सगायन की ।
तज जोनीय मात की और त्रीया, करहै सवही पसूजात क्रीया ॥४००
विन कर्म त्रवर्न विचार विना, 'घट-वीच उपज्जहि धर्म घृना' ।
करकै मन मांनीय हू करनी, अपनी मति मांनहि उद्धरनी ॥४०१
तजहै उपवीत दुजातमहू, अवलोक न गृथन आतमहू ।
तज सवन-बधन जाप त्रई, मत धारहि सास्त्र मलेछ मई ॥४०२
पढनै विन वेद पुरांनन कौ, गम भूल भयै उर ग्यांनन कौ ।
करहै कोऊ दांन कदाचित पै, हर वात करै जस के हित पै ॥४०३
दुहिता वित लै दुज देवहिगे, सोई खाय विखै सुख सेवहिगे ।
उठ जावहिग जन आस्तिकता, नित फैल वढावहि नास्तिकता ॥४०४
नृप होवहि नीत विना अनई, कुमती पर पीड़ प्रजा करई ।
हरनै छित के वित हेरन मैं, सुध राखहि सांझ-सवेरन मैं ॥३०५
जड जीव दया न मया जिनकै, धृमकौ तज लोभ लगे धनकै ।
परजा हुय पीडत काल परै, मुरझावत आंतन भूख मरै ॥४०६

---

१ दोनों ।

वरखै वरखा नहि वारहू की, सस वारहभार सुधारहु की।
तरु सुस्क भये फल-फूल तजै, अचला नही घास-त्रना उपजै ।।४०७

वसहै नही गायकहू वजुला, कवरी किन ह्वै पीयरी कजला।
सलता सर सूक रहै समकै, जिह पूरकै धूर रही जमकै ।।४०८

रमनी नर होवहि पापरता, गुन सत्य-विहीन रू पुन्नगता।
मरजादहु वेद कौ वाद मिटै, प्रभु विप्र जसू गृह मै प्रगटै ।।४०९

सुच भूँम जहाँ पुर सभल की, करहै हरी रूप जवे कलकी।
सठ धूत मलेछ सँघार सबै, जगती अघ टारहि भार जबै ।।४१०

अस की करकै असवारीय कौ, खल खग्गन लाय खवारीय कौ।
कछु कालकै अंतर मेट कली, थित सुच्छ सुधारहि भूम-थली ।।४११

जल कौ वरसायकै वोर जमी, उभलै फिर सागर की उरमी।
जल ही जल होवहि पूर जमा, सविता तप वारह येक समा ।।४१२

करहै जल सोखन सूर-कला, अपवित्रता मेटहि नाँम इला।
अप दोख मिटावहि अतर कौ, निपजाहुव होय निरतर कौ ।।४१३

जमहै तरु अकुर वीच जमी, सरहू सलता हुय नीर समी।
वढहै तरु-वेलीय वीचन मै, वहु फूल-फलीन वगीचन मै ।।४१४

अनहू त्रन आदक ओषध की, रचना वनहै सिधकी-रिधकी।
अवलोकन तै फिर मात अजा, परपूरन वाढहिगी परजा ।।४१५

कल-काल के अत मै सत्य-कला, अपटतर जागहिगी अचला।
धरमिष्ट धुरधर वेदधृती, समी गर्भ प्रचार करै सुमृती ।।४१६

जिग सोम रू होम की पाय जथा, करहै क्रतु-कर्म पुराँन कथा।
तत रूपीय धर्म त्रवर्नन कौ, केऊ उत्तम कारज करनन कौ ।।४१७

क्रम ही क्रम सौं जग वोध करा, वसुधा निज सोध करै विपरा।
पुन खत्रीय खेल प्रचारहिगे, नृप-नीतहु कौं निस्तारहिगे ।।४१८

क्रति वैसन सूद्रन की करनी, धनहू अनहू उपजै धरनी।
सुख सपत होवहि जाहि समै, कोऊ पाप के मारग नाँहि क्रमै ।।४१९

विनता सब होय पतीवरता, करनी पति सौं कुल की करता।
रितु-गाँमीय ह्वै पतिहू रमता, सुत और सुता जुत ह्वै समता ।।४२०

दोहा

सतजुग मैं अधरम सकल, वसुधा जात विलाय।
च्यार पाय धरमहु चलत, बरतत काल विहाय ।।४२१
त्रेता मै तिह तीन पद, द्वापुर माही दोय।
इक कलजुग के अंत मै, इथ ह्वै लोप सु होय ।।४२२

छन्द ह्वै-अरखरी

काल सरूप लगे पुन कहनँ, नारांयन नारद-प्रत निरन।
सात वार तिथियाँ पुन सोरै, बारह मास विचार वहोरै ।।४२३
रितु षट पक्ष दोय ह्वै रूरे, पुन तहाँ अयन दाय है पूरे ।
पहर च्यार कौ इक दिन पेखौ, लेवहु इतौ रात कौ लेखौ ।।४२४
तीस दिवस कौ मास तुलावै, वरस मास बारह विगतावै।
संम्मत्सर परिवत्सर सोई, कहै पचधा भेद सकोई ।।४२५
मनुज-लोक इक हायन माँही, देवन के इक रात दिखाई।
मनजन त्रय सत साठ जुगतर, इक जुग सुरन होत इह अतर ।।४२६
देवन-जुग इकहंतर दावै, येक मनतर काल उपावै।
येक मुनतरहू के अतर, करत राज मधवा कालतर ।।४२७
मघवा आयुस येक मुनतर, करत प्रमॉन इही कलपतर।
इह प्रकार इद्रहु अठविसत, विध के रात दिवस मै विनसत ।।४२८
इक सत आठ वरख विध आयू, प्रलय होत प्राक्रत परजायू।
प्रथमी मै जल ही जल पसरै, अतरीक्षहू तै वहु उसरै ।।४२९
वृहमा विसन सिभु मुनि वृदा, सब ही वृह्मलय होत समधा।
प्रक्रत वृह्म रूप मै पैठत, आप-आप आकर्षन ऐंठत ।।४३०
प्राक्रत कलप कहत इह पाई, विध के मरन प्रजत वसाई।
देवी येक निमेष द्रगनकै, जुत वृहमड नास ह्वै जनकै ।।४३१
उपजत है उनमेषइ सारा, विनसत उपजत वारमवारा।
जाकी गत कोऊ नही जाँनै, आप-आपनी मति अनुमानै ।।४३२
मूल प्रक्रती सोई माहामाया, करत विस्नु वृह्मादिक काया।
विवध भाँत गुन तन विलगाये, येक-येक सौं येक उपाये ।।४३३

पाच प्रक्रत सोई उपजावत, प्रथक-प्रथक सत्ती-वल पावत।
इही राधका भक्ति उपासी, नग सत स्रग की होय निवासी ।।४३४
करे हजार वरख सुर केरा, सरस सु वपु-तप साँज सवेरा।
प्रक्रत मूल हुई नव परसन, दयौ ग्राय राधा कौं दरसन ।।४३५
चद्रकला राधा चित्र छीनी, भई सनेह सातरस-भीनो।
क्रस्न दये वर हित-चित कीले, रूप सच्चदानद रसीले ।।४३६
लाय अंक लीनी लपटाई, करकै पन वर दयौ कनाई।
ग्रवचल रहौ मोर उर-ग्रतर, विछुर न हो कवही वहुरतर ।।४३७
इह कह क्रस्न लई ग्रपनाई, करी सपत्नी ताहि कनाई।
हिमगिरपै ग्रपने तन हीता, साव्यौ तप दुरगा सप्रवीता ।।४३८
वरख सहँस देवन के वीतै, पायौ वर सु मूल प्रक्रती तै।
भई पुज्ज जग-मात भवाँनी, सुर नर नाग सकल सुखदाँनी ।।४३९
गँधमादन पर्वत पै गिरा, सुरके लाख वरख ग्रनुसरा।
तप कर मूल प्रक्रत सौं ताही, माता पुज्ज भई जग-माही ।।४४०
मतजुग लग लिछमी तप साधा, ऊत्तँम पुस्कर-धाँम ग्रबाधा।
मूल प्रक्रत वर लै मन मान्यौ, जग-संपत दैनौ तिह जाँन्यौ ।।४४१
मलयाचल सावत्री माँनी, साठ हजार वरख तप साँनी।
मूल प्रक्रत ही सौं वर मिलकै, ग्रापन रूप भई ग्रवचलकै ।।४४२
सौ मन्वतर सिव-तप साध्यौ, ग्रलख-रूप प्रक्रती ग्राराध्यौ।
जिह प्रसाद ह्वै कै मृत्यु जय, भव विचरत है त्याग काल-भय ।।४४३
सत मन्वतर विस्नू इक सम, साधन कीय ग्रत तप वपु सजम।
जुगत विस्व प्रतिपालन जाँनी, प्रक्रत मूल सेती परमाँनी ।।४४४
ग्रज तप करकै स्रष्ट उपाई, गृंथन वेद पुरानन गाई।
दस मन्वतर लग ग्रत-दारुन, क्रस्न करचौ तप ग्रपनै कारन ।।४४५
परमवास गोलोक ही पायौ, सजुत गोपी-गोप सुहायौ।
मूल प्रक्रत ग्राराधन मेका, ग्रौर देव भये पुज्ज ग्रनेका ।।४४६

दोहा

पसरत ही प्राक्रत प्रलय, जलकौ वाढचौ जोर।
बूडी सवै वसुधरा, ग्रतल-वितल चहु ग्रोर ।।४४७

पुन कैसै परगट भई, विस्व बनावत बेर।
बिच कैसै परजा वसी, घर आँमन कौं घेर ।।४४८
नारॉयन नारद कहत, सुनीयै परम सयाँन।
जिह प्रकार प्रगटत जमी, वेला पाय विधाँन ।।४४६
मधुकैटभ के मेद सौ, ब्रसुधा पाई वृद्ध।
घर प्रवाह है नित्य धुर, परजा धाँम प्रसिद्ध ।।४५०
पुस्कर मै हमहूँ प्रतै, कही धर्म इह कथ्य।
सो इतीहास प्रमाँन स्रुति, तुमहु सुनावत तथ्य ।।४५१

छद मौतीदाँम

प्रथी अनु जाँनहु नित्य प्रवाह, मिलै केऊ वार प्रलै जल माह।
करै जब स्रष्टि इही करतार, वसू प्रगटावत वारहि-वार ।।४५२
वन्यौ मन आद सौ रूप विराट, वढ्यौ सोइ रोमन छिद्रन वाट।
करयौ तहाँ उत्पत पचीय कर्न, भई वसु थापत लोकन भर्न ।।४५३
विराट के रोम विखै वृहमड, उपज्जत ठौरही-ठौर अखड।
सुधारत सागरहू धर सग, अनूपम कतर स्रंग उतग ।।४५४
चद्रादिक आदक हू ग्रह-चाल, विरंचन सकर विस्नु विचाल।
विसभर सकर-लोक विरच, पतालकै आद लौं स्वर्ग प्रपंच ।।४५५
जहाँ-तहाँ दीसत विंव जितेक, तहाँ-तहाँ भूम विभाग तितेक।
प्रलै-जल लीन करी पुहमीन, तहाँ रहि ऊपर फेर तिरीन ।।४५६
विसभर होयकै रूप वराह, उधारीय ताहि हृदै अवगाह।
निरतर भूँम अधिष्टा नार, वराह सौ राचत सग विहार ।।४५७
इला हरि रूपही की अरधग, विचार मै नाँहिन है कछु विंग।
निपायेऊ अगज मगल नाँम, वसू इह आद वराह की वाँम ।।४५८
वखाँनत ताहीय कौं वरतत, पुहमीय आद रु अत प्रजत।
विनै विध किन्नीय पाय विचार, वराह कौ रूप धसे विच वार ।।४५६
धरा कँह ढूढतकै धर धख, हथ्यौ तव दाँनवहू हर नख।
सुधारीय भूँम समद समझ, कुलीनस ऊपर ज्यूँ दल कज ।।४६०
वनायेऊ तामह विस्व विरच, प्रकासत ताहीय सौ परपच।
अधिष्टत देवीय ताही की आद, अनोअन्न राचत रूप उपाध ।।४६१

सोई पुन कांमुकी ह्वै हरि-सग, उपायकै खेलीये खेल अनग'।
विते सुर हायन येक विहार, मिले सुख सग गह्यौ तन मार ।।४६२
मुरछछत होय गई छित मड, छके रत खेल दई हरी छंड।
पतीवृत नार गनी जुत प्यार, करी तिह पूजन अगीयकार ।।४६३
धरचौ उर ध्यांन सुगधीय धूप, अमोलख पुस्प चढाय अनूप।
विलेपन नागज औ नइवेद, वसुधर पूजन की विध वेद ।।४६४
वराह नै फेर दयौ वरदांन, विचारकै विस्व अधार विधांन।
निसा मिल 'पूजहिगे नर-नार, प्रजा जुत वाढहिगे परवार ।।४६५
लहै धांन-धांनहू वृद्धीय लोय, करै नह विग्रह चालहू कोय।
सुरालय ग्रेह अरभ सु माग, तथा कोऊ वापीय कूप तडाग ।।४६६
सुरासुर पुज्जहि गध्रव सिद्ध, नरेस्वर लाभ लहै नव-निद्ध।
करै नह मूढ कोऊ इह कांम, धरा तज देवहू ताही कौ धांम ।।४६७
दरद्रीय होय भूमै दस देस, लहै नही सपत कौ सुख ल्हेस।
वराह की वात धराह विचार, करचौ वरदांनहू अगीयकार ।।४६८
वराह सौं वोल कही धर वात, सँभारहु स्रष्ट कौं आप सु हाथ।
करै मुहि ऊपर ये कोऊ कांम, नही तिह राखहुगी जहाँ नाम ।।४६९
सिवा-सिव मूरत सालगरांम, दीया मनी-मांनकहू जप दांम।
जनेऊअ पुस्कर-पुस्प जमाय, कपूर रु चदन धूप कमाय ।।४७०
जुतै तुलसीदल पूजन-जत्र, कपूरहु सख सुवर्न इकत्र।
इतो विन आसन मेलहि अग्य, सहूँ नही भार हरी सरवग्य ।।४७१
नछत्रहु रौद्रीय आद मै नेम, अत्री अपवित्र रहूँ गत येम।
करै कोऊ भूल न पूजन-काज, अधोगत जावहि होय अकाज ।।४७२
नही मोहि दोख लगावहु नाथ, हरी इह वीनती जोरकै हाथ।
वराह जू पायकै अग विरांम, धरा सुन वात गये निज धांम ।।४७३
जन्यौ पुन मंगल पूत जमीन, पवित्रहू तेज कौ पुज प्रवीन।
पुजी धर आद वराह परम, वसुधर पुज्जीय फेर वृहम ।।४७४
सवै धर पुज्जीय देव-समाज, मनु मनुवसिन के माहाराज।
जमी समी पूजनकै जप-जत्र, माहांमुनी जांनत है दुज मत्र ।।४७५
मही इह मांनीयै विस्व की मात, जमायकै पालत जीवन जात।
अधारह तत्वन की जुत आप, थिरा थिरकी न विसभर थाप ।।४७६

दोहा

क्षेत्र पुंन्यदायक खिती, भरथ-खड सव भत ।
नारांयन नारद-प्रतै, वरनन लगे वृतंत ।।४७७
जनमेजय नृप व्यासजू, वरनी जाकी वात ।
सोनकाद सौं सूतहू, खित की वरनत स्यात ।।४७८

छंद भुजंगप्रयात

भरे पुन्यहू पापहू भूमका पै, जिही सुक्रती अक्रती लेत जापै ।
सुनौ ताही आख्यांन कौ जो मुहावै, दुखी औ मुखी स्वर्ग औ नर्क दावै ।।४७९
खिती विप्रकौ देत जो पुन्य-खातैं, करै जोर संख्या जिही रेनुका तैं ।
सुखी होयकै वर्ष येते मुहासा, वसै धांम वैकूंठ कैलास-वासा ।।४८०
दयै ग्रांम की भूम मैं धांन-दांना, सु पै अग्रनी होय वांवै सुथांना ।
तरै आपहू आपनै गोत तारै, वसै सो मनीदीप दोखं विसारै ।।४८१
जमी दत्त दीनी हरै ह्वै उदासा, वसै सूर-चदा जितै नर्क-वासा ।
दरद्री तही वस के होय दोखी, माहा पातकी होय होवै प्रमोखी ।।४८२
धरा गोचरा कौ हरै सीम धोरै, वसै नर्क मैं आपनौ वस वोरै ।
तडागा गऊ गोट वा भूम तेती, खिली मैं निपावै सोई नाज खेती ।।४८३
असी-पत्र नर्कै वसै सो अग्यांनी, प्रमेष्टी वितै दीह जौलौ प्रमांनी ।
सरं कूप वापी खनावै सु स्वांमीं, निकारै विनां पिड कागार नांमी ।।४८४
पसू ज्यां नहावै पीयै जांहि पांनी, परै नर्क कै कीच कै वीच प्रांनी ।
करै वीर्ज कौ त्याग येकंत कांमी, गनौ ताहि प्रांनीन कौं नर्क-गांमी ।।४८५
भिगोवै जिते रेनुका भूमका के, जमैं रोरवा नर्क मैं प्रांन जाके ।
इकै पाय आद जही आदरा कौ, खंनै कूप वापो तथा खादरा कौं ।।४८६
उदक्या पिछांनै नही भूम-अगी, क्रमी दंस नर्क परै सो कुसगी ।
तलाई हरै और कौ कूप तापै, जमावै तरू वाग के आप जापै ।।४८७
थपै वस परजत लौ वांध थाती, धुलै सप्त कुंडा विचै नर्क घाती ।
वृहमा दिवस जवै ही वितीतै, नही छूट सक्कै सोई नारकी तै ।।४८८
खनै और के ताल पै खात काहू, नही पिंड देवै तही नाथ काहू ।
क्रीया त्राघ की जो करै है कुकर्मा, भजै नर्क मै जायकै भीत भर्मा ।।४८९

महो उपरै जो दसार्क्पं मेलै, भरै नैन अंधा फिरै काठ भेलै।
थपै भू विना आसन सख थोडी, कली दूसरै जन्म मे होय कोडी ।।४६०
मही पै धरै स्वर्नहू हीर-मोती, जँही अत पै आँख की जाय जोती।
विना आसन मूरती सिंभु वांमा, धरै भूंम पै लिंग विस्रांम धाॅमा ।।४६१
सत सोय मन्वतर कष्ट सेवै, दई ताहि कौं नारकी वासदेवै।
सिला सालग्रांम रिचा जत्र सख, पुजै चदन पुस्तका फूल पखं ।।४६२
कपूर गऊरोचन कासमीरा, जपै जाप रुद्राक्ष-माला जँजीरा।
जटादर्भ वृ दादलं कज्जला कौं, गुही जो जनेऊ न धारै गला कौं ।।४६३
विना आसन जो वसू पै वुसावै, जोई पातकी नारकी जीव जावै।
सधै होमना भोम पै दुग्ध सीचै, वसै अंत कौं अधमी नर्क वीचै ।।४६४
गृहं चद्रमा सूर कौं राह ग्रासा, उदै होय भूकप उल्का अयासा।
खनै भूंम पै कूप औ नीम खाई, जोई जीव वासो करै नर्क जाई ।।४६५
कछू भूमका की सुनी जो कहाँनी, प्रभाका सुनै मुक्ति ह्वै जाय प्रांनी।
भवँन वनै जाही सौ भूँम भाखै, रही कस्यपी कास्यप स्याहि राखै ।।४६६
चलै नाँ अन्चलाहू चलाई, भरै विस्व विस्वभरा की भलाई।
नही अत जापौं कहै है अनता, प्रथू-कन्यका कौ प्रथमी प्रजता ।।४६७
धरा पुन्य औ पाप की धारनाँ कौ, कही ग्याँन-अग्याँन की कारनाँ कौं।
पढै जो सुनै मोक्ष कौ पथ पावै, अहकार कौ नाहि प्रांनी उपावै ।।४६८

दोहा

धरा कथा सुन धारना, आद वराह उदत।
पूछै नारांयन प्रतै, श्रीमुनि नारद सत ।।४६६
सरस्वती के स्राप सौं, गगा कीनो गौंन।
आई भारथ-खड इल, वरनहु सकल विधांन ।।५००

छंद द्वै-अख्खरी

नारांयन नहचल निर्वांनी, कहनै लागे गंग-कहाँनी।
नारद श्रवन करन कौ लागे, उर अदभूत चिरत अनुरागे ।।५०१
सलता विस्नु-सरूपनी सोई, कहत विस्नुपदि ताहि सकोई।
किह जुग म विनती किह कीनी, भरथ-खड आई हित -भीनी ।।५०२

पुन्य-दायका पाप-प्रनासन, देन च्यार फल अपने दासन।
कहीयै सब याही की कथा, जासौं होय विस्व-गति जथा ॥५०३
जब नारॉयँन अतरजाँमी, सब जग-जीवन के हित स्वाँमी।
नारद सौं बोले जुत नीती, विगत स्रवन करीयै जोई बीती ॥५०४
भयौ सगर नृप सूरजवसी, पुन्य भाग मैं सोय प्रसंसी।
वैदर्भी रॉनी तिह व्याही, सैव्या दूसर नार सुहाही ॥५०५
जिह वैसव्या पहिलै जायौ, सुत असमंजस नॉम सुहायौ।
वैदरभी सुत हेत विचारचौ, धूरजटी पै तिह तप धारचौ ॥५०६
गर्भ रह्यौ तिह क्रपा गिरीसा, दुहिता सुत जनमत नही दीसा।
वरख येक सत जबही वीतै, रॉनी विनय कीन हर हीतै ॥५०७
परचौ उदर बाहर पल[1] पिंडा, मिलै न आक्रत रूडहु-मुडा।
रोदन करन लगी जब रॉनी, विप्र वेख कर सिव विग्यॉनी ॥५०८
काट-काट कै पिड सकोई, साठ हजार खंड कीय सोई।
पुत्र भये अवइव[2] तन पूरे, साठ हजार तेज वल सूरे ॥५०९
पुत्रन कौ वल सगर पायकै, जग्य करन सोई लग्यौ जायकै।
अस्वमेध कौ जब अस छोरचौ, छल कर तँही इद्र नें चोरचौ ॥५१०
कपलमुनी की वीच किंदरा, अस कौ वाँध्यौ जाय अदरा।
तिह सुत लागे ढूढन ताही, जाय जगाये कपल जहाँही ॥५११
भसम भये देखत सब भाई, उबरचौ नही येकहू आई।
सगर भयौ सुत सौक सुनता वँह वन गयौ राज-तज अंता ॥५१२
रह्यौ येक सुत सैव्या रॉनी, असमजस नृप भये अगवाँनी।
दुरगत जिह भ्रातन की देखी, लावन पावन गगा लेखी ॥५१३
तप लख[3] वरख करत तन त्याग्यौ, अंसुमाँन तिह सुत अनुराग्यौ।
लाख वरख तप तिह वपु लायौ, पै कहुँ गंग पतौ नही पायौ ॥५१४
भयौ नृपत तिह सुत भागीरथ, पुन लागौ तप करन पुन्य-पथ।
वैस्नव-मत सोई विग्याँनी, धरा नगर त्यागी रजधाँनी ॥५१५
पुन श्रीक्रस्न भये उर परसन[4], दयौ आय भागीरथ दरसन।
कोट सूर की प्रभा कनाई,[5] मंद-मद अधुरन मुसकाई ॥५१६

---

१ मांस। २ अवयव। ३ लक्ष, लाख। ४ प्रसन्न। ५ कन्हाई=कृष्ण।

मुरली की धुन करत मनोहर, वय किसोर माधव गोपीवर।
भगत-वचल[1] सुदर तन भीनें, भुगा वस्न[2] पीताबर भीनै ।।५१७
विजुरी-सम तिह प्रभा विराजत, लाख कांम की दुति लख लाजत।
रतन जटत सिर मुकट रहाँही, मोर-पख राजत तिह माँही ।।५१८
मोहत उर तुलसी की माला, वकु-भृगुट अरु नैन विसाला।
आसपास मुख छुटी जु अलकै, झाँई बीच कपोलन झलकै ।।५१९
द्वै-भुज मनहु चपकी डारै, सुबरन मनि कैयूर संवारै।
पुन मनिवधन ककन पहरै, चिव सांमन दॉमन की चहरै ।।५२०
सुक्षम हाथ अँगुली की सोभा, चपक-कली अली मन छोभा।
पद-पकज हीरक-नख पत्ती, दुति ताकी दीसत दमकत्ती ।।५२१
साखी जीव राधका स्वांमी, जग सबही के अतरजाँमी।
पर प्रकृत सोई भक्त पियारा, निरगुन-सगुन रूप तै न्यारा ।।५२२
द्वै-भुज रूप भगीरथ देख्यौ, विस्मय टरयौ अनद वसेख्यौ।
कर परनाँम स्तुति तिह कीनी, भक्त-प्रवाह सातिरस-भीनी ।।५२३
उर की जाँन नृपत की इछ्या, पुन वर दीनौ ताहि प्रतछ्या।
वस-उधारन तोहि वडेरा, तोह चहत गगा मत तेरा ।।५२४
सलता हुय चालहि तुहि-सगा, गिरा उचारत गगा-गगा।
इह कहकै गगा कथ आखी, सरसुति स्राप दयौ हम साखी ।।५२५
कै भागारथ-सग भरथ-खड मै (कै), चली जाहु तन-इही छडकै।
सलता ह्वै तुम तुरत सिधारहु, तोय धोय नृपकौ कुल तारहु ।।५२६
सीतल पवन तोहि लागत सम, कुल भागीरथ मिटहि दुरतक्रम।
मोहि पारपद ह्वै निज मदर, सवही आय वसहि तन सुदर ।।५२७
पवन लगन सौ होय पुनीता, जग के जीव जायगे जीता।
दरसन तै होवत फल दूनौ, स्वर्सन तै होवत अघ सूनौ ।।५२८
मौसल करै स्नाँन तो माँही, जनम-जनम के पातक जाँही।
कर सकल्प सिनाँन सो कीजै, कोटसेस फल नही कहीजै ।।५२९
सिव विध विस्नु न कहनै समरथ, पै मुनी कहा वरनै परमारथ।
मूसल ज्यू डुवकी जल मारै, वरनत फल ताकौ विसतारै ।।५३०

---

१ भक्त वतसल। २ वसन=वस्त्र।

करत भसम अघ जनम-जनम के, पयसुँनि गगा प्रनम-प्रनम के।
विधवत स्नान तीस गुन वाधू, सूर सक्रांत स्नान कह साधू ।।५३१
सव सक्रात जेम सविसेखौ, दिवस अमावस इह विध देखौ।
काती मास पूर्नमा केरौ, येक-येक सौं फल अवकेरौ ।।५३२
अक्षय नवमी तासौ इधकी, सुख पुन दाता रिधकी-सिधकी।
माघ सुक्ल सप्तमी महाँना, भीस्म अप्टमी पुन्य भराँना ।।५३३
असोकाष्टमी-फल अधकेरौ, कहत राँमनवमी हू केरौ।
नवरात्री थापन दिन नीकौ, दुगन दसहरा है दसमी कौ ।।५३४
परव वारुनी तामौं पावन, माहाँ वारुनी पाप मिटावन।
इंदु गृहन सौं सूरज इधकौ, वहुत पुन्यदायक विध-विध कौ ।।५३५
अर्धोदय सूरज अधकाई, सो फलदायक होत सदाई।
क्रस्न करयौ या रीत कथन कौ, पावन गगा भूम पतन कौं ।।५३६
इह गगा तव वात उचारी, मेरी अरजी सुनहु मुरारी।
इह मोहि हीयैं अँदेसौ आवत, जाहि मिटावहु पुन मैं जावत ।।५३७
पुहमी विच उपजत बहु-प्राँनी, पाप धोय है मेरे पाँनी।
मेटहि कवन इही अघ मेरौ, घबरावत दीय नाथ घनेरौ ।।५३८
दूसर बात सुनहु इह देवा, भली-भाँत जाँनत तीय-भेवा।
पति-विन सुन्य रहै नही पतनी, ऋतु होवहि तऊ कहै कुक्रतनी ।।५३९
यातै कहहु जतन कोऊ ऐसौ, जाहर दोप लगै नही जैसौ।
इल पै रहकै कव मैं ऐहूँ, प्रभू तेरौ दरसन पुन पैहूँ ।।५४०
इनकी कहीयै सुखद उपाई, जासौं उर-ससय मिटै जाई।
विनय सुहित गगा सुन वाँनी, कही क्रस्न पुन सत्य कहाँनी ।।५४१
जैहौ भरथ-खड मैं जेही, द्रवत-रूप तुम ह्वै हौ देही।
विरह मोर व्याकुल ह्वै वहिहैं गहर गँभीर समुद कर गहिहै ।।५४२
सगम कर तुम होहु सुखारी, पति तेरौ कग्है हित प्यारी।
नाराँयन इह नाँम निपाही, मेरौ रूप रहत ता माँही ।।५४३
येक रूप जाँनहु तुम यातै, जग मैं दोस लगै नही जातै।
लछमी-रूप तुँही है ललना, चितवत मोहि सदाँ मग चलना ।।५४४
पाँच हजार वरष कलि पाछै, इही रूप मिलहौ तन आछै।
मेरे गृह वैकूंठ मिलैही, भरथ-खड सौं ऊठ भलैही ।।५४५

स्राप सरस्वती रहै सोऊ, इह वाचा मैं कहत अगोऊ।
पाप त्यागहै तो मह पापी, करहु न ससय ताहि कदापी ।।५४६
भक्त मूल प्रकृत वहु भारथ, पुरख-रूप वेता परमारथ।
पाव पखारहि जल मैं पैठत, विघन दूर करहै तट बैठत ।।५४७
होय पवित्र वहहु हिल-मिलकै, कहा करहै कोऊ पापी कलिकै।
गगा गंगा नाँम गिरा सौ, जाय पुलाय अधम अघ जासौ ।।५४८
ध्याँन रूप तोहि गगा धारै, तरै आप अपनौ कुल तारै।
मृतक हाडहू परै जु माही, जनम-जनम पातक मिट जाही ।।५४६
भागीरथी सुनहु इह भेवा, देवी-लोक वसहि हुय देवा।
विस्नुपदी कहि विस्नू-विस्नू, सो त्यागहि तन कोय सहिस्नू ।।५५०
रतन-विमाँन वैठकै रूरे, परम-रूप भेटहि पद पूरे।
प्रवर-पारषद होवहि प्राँनी, वाचा इह हम साच बखाँनी ।।५५१
वृह्मकल्प लौ केउ जुग वीतैं, तेऊ फिरै नही फेर तँही तै।
ग्याँन करहि तेरौ जल-गगा, पाँन करहि कहु ध्याँन प्रसगा ।।५५२
वसहि सोय वैकूँठहि-वासा, वँहाँ तै कवहु न होय उदासा।
गत अग्याँनी इह विध गाई, ग्याँनी की का कहै गुराई ।।५५३
चित सुध ह्वै नईवेद चढावै, खाय आपहू और खवावै।
जो फल होय जाहि कौं जैसौ, तोय पीयैं गगा-फल तैसौ ।५५४
मूल प्रकृत सेवै मम मूरत, पुज्य चढाय नाँम मुख पूरत।
वहै धाँम है पावन वैसौ, तेरौ तट गगा है तैसौ ।।५५५
जीवन मुक्त मोर-जन जैसैं, तोहि सिनाँन-जुक्त फल तैसैं।
गगा इतनी वात गनाई, जाँनहु सत्य-सत्य कर जाई ।।५५६
भागीरथ सौ पुन हरि भाख्यौ, उर गगा हित तोहि अभलाख्यौ।
पूजन करीयै भक्ति परायन, गावहु स्तुत कीरती गायन ।।५५७
गवन करहि भूतल मैं गगा, पापी तारहि तोय प्रसगा।
अतरध्याँन भये कहि येती, श्रीहरीहू अपने मुख सेती ।।५५८

दोहा

नृप भागीरथ ग्याँन-निध, सुन हरी कौ उपदेस।
पूजा ध्याँन प्रचारनै, वचत काज विसेस ।।५५६

वेद कही जैसी विधी, पूजा की परभाव।
पच देवता को प्रथम, पूजन कीनी पाय ।।५६०
विघन नास हित गजवदन, रवि निरोगता रीत।
पावक सिद्धो हेत पुन, पद्मा प्रभू हरि प्रीत ।।५६१
ग्यांन हेत गवरीस की, मुगती दुरग्रा-मात।
इतने सुभ वांचत अरथ, तौ इह पूजत तात ।।५६२
अपनी जो चाहत अरथ, उभय-लोक की आस।
पूजन कीजे निगम पथ, दीन-भाव हुय दास ।।५६३

छंद भुजंगप्रयात

सवै देवता पूजकै ध्यांन साध्यौ, अजोनी माहां गगदेवी अराध्यौ।
सधी जाहि साखोक्त की रीत सारी, प्रभा-मूरती स्वेत वर्न पसारी ।।५६४
लसै असुक स्वेत भीनै निकाई, लजै पक्ज स्वेत जाकै लखाई।
जरै नांहि सो अग्न मै जारने सौं, धरै ना मलांनी सदां धारने सौं ।।५६५
मनी चद्र हीरा अलकार मोती, जगै चांदनी पूर्नमा जेम जोती।
हसै आनन मदही-मद हासी, प्रभा स्वेत दतावली की प्रकासी ।।५६६
रमांनाथ प्यारी सदां सात-रूपा, उर मालती-माल धारै अनूपा।
कसी स्वेत मुक्ता-मई सीस केसी, विनै चदन वदन भाल वेसी ।।५६७
भरे द्वै-कपोल सुतै हास भीनै, कपूर जुतै केसर चित्र कीनै।
लसै कुद रूपक्क की ओठ लाली, परे कुडल-मंडल कर्नपाली ।।५६८
जगै नासका दीप की जोत जैसी, तुलै कज सै नैन द्वै भौह तैसी।
उभै नांगरगी मनौ द्वै उरोजा, दिपै कचुको वाहरी चद दोजा ।।५६९
कटी भाग लागी उभै जघ केरी, प्रकासै मनौ कदली गर्भ पेरी।
विवै नूपर पाय झकार वाजै, रतंन-जरी पाभुरी पाय राजै ।।५७०
प्रभा चर्नं वर्नै मती कोन पूरी, धरै ध्यांन जोगिंद्रहू सीस धूरी।
सची उर्वसी देव इद्राद सेवै, खुलै केसर चदन धूप खेवै ।।५७१
पराग भरे पारजाती प्रसूंना, लसै जावक रग जैसै सलूना।
ममोक्षी अलीवृ द हू को मलिंदा, वृवै मुक्तकी उक्त पादारविंदा ।।५७२
पदार्थ लहै च्यारहू पुज्ज प्रांनी, गरू-ग्यांन की गम्म पावै सुग्यांनी।
भजे सत-सामाज कौं भाव भक्ती, सधा सौच वाढै क्षमा जुक्त सक्ती ।।५७३

जपै जक्त विस्नूपदी नाँम जाही, तत देत विस्नू-पद भक्त ताही ।
अधर्मी करै काँम कोऊ अनारी, तिही तारने की प्रतग्या तिहाँरो ।।५७४
दया-जुक्त पापीन कौ मुक्तदैनी, नमो कारना स्वर्गहू की निसैनी ।
करयौ ध्याँन राजा तथाँ पुज्ज कीनी, प्रचार कहै षोडसं जे प्रवोनी ।।५७५
यथा आसन पादकौ देय अर्घा, सिनान जलं निर्मल जो सवर्गा ।
अनूलेपना चदनाद अनूपा, धुँआँ काकतु ड तथा यक्ष धूपा ।।५७६
दसाकर्ष नैवेद्य तावूल देवै, सुपै निर्मल नीर कौ पाय सेवै ।
सवै अग मै फेर पौसाख सज्यै रतँन सुब्रनँ अलकार रज्जै ।।५७७
माहातेल सोगध के फूलमाला, सुची आचमनीया सु सेज्या सभाला ।
प्रनाँम करयौ भूपनै सेव पाछै, अस्तुती करी जोरकै दोय आछै ।।५७८
हितू हूजीयै जीव उद्धार हेतू, सदाँ मात तूँ पु न्य की धर्मसेतू ।
रहै सिभु सगीत सौं नित्य राजी, विभू वृह्म-रूपी जटामै विराजी ।।५७९
उपज्जी अहो राधका क्रस्न-अगा, नमो मात गगा नमो मात गगा ।
उपज्जी समा स्रष्टकै आद आई, सता क्रस्न गोलोक माँही समाई ।।५८०
सँनीकर्ष सभू सुधाम समगा, नमो मात गगा नमो मात गगा ।
प्रथा जन्मकी कार्तकी पूर्नमा कौ, रमावै सखी रास राधा रमाँ कौ ।।५८१
उहास उजासं प्रकास उमगा, नमो मात गगा नमो मात गगा ।
जमै जोजन कोट चौरी[1] जहू तै, गुना लक्ष लबी गनाई गृहूँ तै ।।५८२
समावृत्त गोलोक माँही सुचगा, नमो मात गगा नमो मात गगा ।
जुतै व्यास छै लक्षहू जोजनाई, तही चौगुनी लेखीयै दीर्घताई ।।५८३
दिखावै सही लोक वैकूँठ द्र गा, नमो मात गगा नमो मात गगा ।
लखावै जहाँ व्यासहू तीस लाखा, सिधावै तहाँ चौगुनी होय साखा ।।५८४
अज ईसकै लोक आवृ.त अगा, नमो मात गगा नमो मात गगा ।
चलो लाखहू जोजनं होय चौरी, धृवै सतगुनी होयकै धार-धौरी ।।५८५
प्रभा पूर धूलोक मै नीर पगा, नमो मात गंगा नमो मात गगा ।
लख जोजन पूर विस्तार लावै, गुना पच विस्तीर्न धारा गनावै ।।५८६
कला उज्जला लोक याँनी कु रगा, नमो मात गगा नमो मात गगा ।
सहस सठ जोजन व्यास सेती, वढी दसगुनी धार ध्वार वहेती ।।५८७

---

[1] चौड़ी ।

प्रकासै प्रभा लोक-मॉही पतगा, नमो मात गगा नमो मात गगा ।
इकै जोजन लाख विस्तार येतौ, जुतै पंचधा दीर्घता राह् जेतौ ।।५८८
तपो-लोक मै तोय-रूपी तरगा, नमो मात गगा नमो मात गंगा ।
सहस इकै जोजन व्यास सारौ, वढै दसगुनी लव जाह्री विचारौ ।।५८९
सदा आवृता नीर जनलोक सगा, नमो मात गगा नमो मात गगा ।
दस लक्षहू जोजना व्यास दीसा, सिधावै गुनी पच धारा समीसा ।।५९०
महर्लोक की भूँमका ऊत्तमगा, नमो मात गगा नमो मात गगा ।
मिलै जोजन व्यास साहस मेका, वहै सतगुनी दीर्घ ह्वैकै त्रिसेका ।।५९१
चढी वास कैलासकै सीस चगा, नमो मात गंगा नमो मात गगा ।
सत जोजन ताहि विस्तार सीमा, सुपै दसगुनी माग जागास सीमा ।।५९२
विचै इद्रकै लोक वेग विहगा, नमो मात गगा नमो मात गगा ।
दस जोजन वेगवती दिखाई, वहै दस गुनी होयकै वेगवाई ।।५९३
पताल वढी पाय पॉनी प्रसगा, नमो मात गगा नमो मात गगा ।
इकै कोस चौरी वही जाय आगै, भजै दर्सनै-पर्सनै पाप भागै ।।५९४
वही भर्थ-खड विचै वारधारा, मिली जाय सामद्र-सीमा मझारा ।
सिखा ऊतरी तोरकै मेर स्रगा, नमो मात गगा नमो मात गगा ।।५९५

दोहा

सतजुग मै जल खीर-सम, तेता मै ससि ताछ ।
द्वापुर मै चदन सद्रस, कलजुग निर्मल काच ।।५९६
जल-रूपी कलजुग जँही, प्रथमी तल पानीय ।
स्वर्गलोक मै दूध-सम, वदलत रूप न वीय ।।५९७
कनका जल सपरस करत, पातक जावत पिंड ।
अधम उधारन गग अव, वीच तुँही वृहमड ।।५९८

छद पद्धरी

गगा सुन अस्तुत चली गैल, सव वाटन-घाटन लाँघ सैल ।
हिमगिर उतग के स्रग होय, सलता वन उतरी भूम सोय ।।५९९
लैगयौ भगीरथ भूप लार, छित सगर जहाँ सुत भये छार ।
पौन के लगत गगा पसाव, भये दिव्य-रूप भक्ती प्रभाव ।।६००

वैकूँठ गये सव दिव्य-वेस, कीय तवही पारषद रिखीकेस।
भागीरथही के भक्त भाय, महि-मडल उतरी गगमाय ॥६०१
भागीरथी जु इह नाम भेव, दुज मुनिवर भाखत मनुज देव।
तिह त्रपथ-गाँमनी कहत तोय, सुन लीजै मोसौं कथा सोय ॥६०२
पूर्नमा जन्महू कौं प्रकार, सुन लेवहु नारद समाचार।
नाँरांयन करकै अभय नेम, जस वरनन लागे सुधा जेम ॥६०३
कार्तकी पूर्नमा सावकास, राधका-क्रस्न राच्यौ सु रास।
पूजा कीय राधा पाय प्रीत, करनै सुर लागे जही क्रीत ॥६०४
रिखी करन लगे तिह स्तुती रास, सुर सभा वैठ तहाँ सावकास।
बीना लीय सरस्वती तिही वेर, ताँन जुत गाँन कीय टेर-टेर ॥२०५
दीय रत्नहार सुरजेष्ट दाँन, मनि दई सिंभु इक मोद माँन।
कौस्तुभ मुनि दीनी रीझ क्रस्न, पुन राधा अनुमत होय प्रस्न ॥६०६
मनि-माल राधका दीय अमोल, वच अमृत-सरूपी बोल-बोल।
मोतिन नाराँयन दई माल, लागी तिह अतर मनी लाल ॥६०७
लक्षमी दये कुडल निदाँन, कीय तँही वेर स्रगार काँन।
भगवती मूल प्रक्रत सुभाय, ईस्वरी मात दुर्गा जु आय ॥६०८
इसाँनी नाराँयनि इतेक, वृह्म की भक्ति दीनौ विवेक।
धर्म मै दई वुद्धी जु धर्म, मानव उर देवन खुले मर्म ॥६०९
सुद्धासुक दीने अग्नि सेख, द्वै-नूपुर दीने वायु देख।
पुन प्रेरत वृह्मा सूलपान, गायौउ उलास सौं रास गाँन ॥६१०
क्रस्न के सुनत सगीत केर, विवुधन भई मुर्छा जिही वेर।
इतने मै जागे लहि सुख अनूप, राधका क्रस्न नही लख्यौ रूप ॥६११
जल लख्यौ रास-मडल जमीन, दुख सौ भये गोपी देव दीन।
विध करे ध्याँन कौं तिही वार, पायौ विवेक सवही प्रकार ॥६१२
सलल कौ धरचौ दपत सरूप, राधका क्रस्न भये तीर्थ-रूप।
अज त्याग ध्याँन कौ अवसमेव, भाख्यौ देवन सौ इही भेव ॥६१३
उर समुझ भये सुरगन उदास, अभलाख करी पुन दरस आस।
वर्नना करन लागे वसेस, मिल देव सवही आदक महेस ॥६१४
आकास भई तव गिरा येह, निर्लेप उभय हम निसदेह।
हम सक्ति. भक्त उद्धार हेत, दुई देह धारकै दरस देत ॥६१५

देखे तुम चाहत द्रगन दोय, हित भाव भजहु निस्कपट होय।
विध कहहु सिभु कौं इही वात, खित प्रगट करै निज मत्र ख्यात ॥६१६
वेद कौ अरथ वेस्नव वताय, पावै हमरौ पद जिह पसाय।
तत पाय तत्र स्वातक तुरंत, सास्त्रोक्त परांयन परम सत ॥६१७
पूजाद ध्यांन अस्तुत सप्रेम, नित गुप्त राखकै सर्वं नेम।
पापी जो रहिहै विमुख प्रीत, निज प्रभुता हित संसार नीत ॥६१८
माया की स्रष्टी रहै मड, आवाद दिखावहि वृह्मडड।
पचधा करहु वृह्मन प्रचार, स्वर्गहू भूँमवासी मुमार ॥६१९
द्रढ भक्ति देखकै देहु दांन, गोलोक लहै कोऊ पुरस ग्यांन।
सवहिन स्रद्धा नही होय सग, अदभूत सातुकी भक्ति अंग ॥६२०
सिव करै प्रतग्या विच समाज, अवलोकन देहूँ दरस आज।
विध कह्यौ सिभु सौं तिही वेर, तुम सुनत कहा कहै गिरा टेर ॥६२१
जल भये राधका क्रस्न जोग, सकल्प गिराकै कीय संजोग।
द्रढ करी प्रतग्या सिव दयाल, हीय क्रस्न रावका जांन हाल ॥६२२
अग्या सिव धारी सिर उमम, श्रीक्रस्न-राधका प्रगट सग।
रमनै फिर लागे उभय रास, हीय देवन कै वाढचौ हुलास ॥६२३
सिव करी प्रतग्या जल-सजोग, लहि जल-सँकल्प सव करत लोग।
इह करै जु मिथ्या आंमनाय, जीव सोइ नर्कक्रै वीच जाय ॥६२४
राधका-क्रस्न भये सलल-रूप, सोइ गगा कौ जांनहु सरूप।
गोलोक भई इम प्रगट गग, तत रूप तोय पावन तरंग ॥६२५

दोहा

नारांयन कहने लगे, नारद कथा नवीन।
गूढ जथा सुन गंग की, पावहि मोक्ष प्रवीन ॥६२६
गगा की गोलोक मै, उतपत वरनी आद।
गंगा राधा ग्रेह मै, वहु विघ वढचौ विषाद ॥६२७

छंद उद्धोर

गोलोक-उपजी गग, वँह राधका के अंग।
वपु रूपवत वसेख, सोभायमांन सुवेख ॥६२८

जल अधिष्टात्री जाहि, कहीयै जु उपमा काहि।
त्रहुँ-लोक मे नही तीय, बढ करै समता वीय ॥६२९
नव-जोवना तन नार, सज रतन वेश्व स्रँगार।
मुख सरद रितु के माँन, मध्याँन कंज समाँन ॥६३०
अधुराँन रूप अमद, मुसकात मदही मंद।
सोवर्न तप्त सरीर, चँमकत आभा चीर ॥६३१
आभा-स वढत उहास, पूर्नमा चद्र-प्रकास।
वैनी स चिक्कन वार, लहलहत कधर-लार ॥६३२
अत कठन पीन उरोज, मुखस्तन छाप मनोज।
कट खीन ग्रीवाँ कबु, निस्तुलाकार नितवु ॥६३३
जघा सु कँदली जाँन, प्रतिजघ गोल प्रमाँन।
पद-जुगल कमल-प्रकार, अगुरी रूप अगार ॥६३४
सुच पायमूल सुरग, राचे सु जावक रग।
नूपरन पायल-नाद, उर भरत रति अहलाद ॥६३५
करपूर चंदन काय, रज अगराग रचाय।
भ्राजत सु वेंदी भाल, मिल हृदय मालति-माल ॥६३६
गहमहत घूली-गध, सरसात अग सुगध।
येकंत हरि अवगाह, उर वढेऊ रमन उछाह ॥६३७
सुख चहत नूतन सग, अकुलाय वाँन अनग।
कर हाव-भाव कटाच, नैनन सु राचत नाच ॥६३८
श्रीक्रस्न देखत सोह, मन गंग उपज्यौ मोह।
गगा सु हरि जिम ग्रेह, इत वन्यौ अवसर येह ॥६३९
हरि गग के सुन हाल, चढ रीस राधा चाल।
आई सु ताही ऐन, निज गरल घूरत नैन ॥६४०
सखी तीस कोटक सग, वच कहत अमरख विंग।
राधका देखत रोष, श्रीक्रस्न धार सँतोप ॥६४१
आसन सु बैठे येक, वच कहन लगे विवेक।
गन आप पार्षद गोप, अत सभा वाढी ओप ॥६४२
गगा सु कपत गात, वर्नना वोलत वात।
कहि राधका सुन क्रस्न, प्रभु भये यासौं प्रस्न ॥६४३

है कोन इह का हाल, ललचाय देखत लाल।
जाँनत न मोही जाँन, प्रीय अधिष्टात्री प्राँन ।।६४४
ताही ततिछन त्याग, अनुसरत रति अनुराग।
अत कुटल कांमी आप, क्यूँ करत विवध कलाप ।।६४५
धकधकी मेटहु धाख, उघरी न अवलौ आँख।
चल जाहु ह्यांतै छैल, गोलोक की तज गैल ।।६४६
श्रीखडवन में स्याँम, विरजा करी तुम वाँम।
आई सु मैं जब ऊठ, प्रतकूल देगये पूठ ।।६४७
घुर भये अतरध्यांन, मुद छोरकै मन माँन।
विरजा सु ताही वेर, नद भई खेल निवेर ।।६४८
तुम तिही नद के तीर, धारी न उर मै धीर।
वहु करत रहेउ बिलाप, जाही सु विरजा जाप ।।६४९
कहा भयौ तासौं क्रस्न, समुझाय कहहु सहिस्नु।
सिध जोगनी सु विचार, नीर सौं ह्वैकै नार ।।६५०
कीनी सु तिह रति केल, झट गर्भ लीनौ झेल।
जन सात पुत्र जरूर, पन राख दीनौ पूर ।।६५१
दध अधिष्टाता देव, भये सोय जाँनत भेव।
चपक सु वन मैं चाल, गये रूप धार गवाल ।।६५२
सोभा सु गोपी संग, अत रचे खेल अनग।
हम आय पहुँची हेर, दुर गये टारौ देर ।।६५३
सोभा सु त्याग सुदेह, गई चद्र-मडल ग्रेह।
द्रग लखत सवही दूर, प्रतिबिंव वाढ्यौ पूर ।।६५४
वँह तेज कौ तुम आप, बाँटे सु करत विलाप।
कछु रतन मनि गन केर, वर स्वर्न कौ तिह वेर ।।६५५
नव-जोवना मुख नार, कछु कुज पुस्पन क्यार।
अधिपतन कौं कुछ अस, वर तपोनिध द्विज-वस ।।६५६
तरु फली कौ कुछ त्याग, वर पत्र किस्लय वाग।
निज तेज पस्पिक नाज, कछु दये दुग्ध सकाज ।।६५७
पुन प्रभा गोपी पेम, अरुझाय लहेउ अखेम।
मम वाल सुनत समाँन, कर गये आँनाकाँन ।।६५८

तन प्रभा गोपी त्याग, लीय सूर्ज-मडल लाग।
तिह गह्यौ तन कौ तेज, मो सौं न भये मुहमेज ॥६५९
वपु करत फिरेउ विभाग, जिह तेज अन-अन ज़ाग।
तव अगन कौं दीय तेज, भट सिव-तन दीय भेज ॥६६०
नृप दयेऊ देव निकाय, कछु विस्नु-भक्तन काय।
कुल नाग मुनिवर केर, दीय दुज़न कीय नहि देर ॥६६१
तपसीयन सुभगा तीय, दत जससीयन कौं दीय।
मिल रास-मडिल माँहि, विहरे सु गहि-गहि बाँहि ॥६६२
साती सु गोपी-सग, उत रचे खेल अनंग।
देखे सु जव मै दीठ, धस गये कुजन धीठ ॥६६३
साती सु त्याग सरीर, भई लीन तुम उर भीर।
हीय अधिक वाढी हूँक, क्रदत रहे कर कूक ॥६६४
वृह्मा दये गुन वट, कछु हँमहि वाँध्यौ कठ।
इदरा दीनौ आप, जग तुमहि करता जाप ॥६६५
सत्ती उपासक साथ, निज तपसीयन कौ नाथ।
धरमिष्ट औरै धर्म, को नहिन जाँनत कर्म ॥६६६
गये क्षमा गोपी गेह, दै लेप चंदन देह।
नव करचौ सगम नार, मेह्या प्रसून सुधार ॥६६७
सुख पाय होय निसक, पौढे रहे परजक।
वस होय नीद विहाल, लपटाय सूते लाल ॥६६८
तिह ठौर मै ततकाल, मुरली लई वनमाल।
लीय रतन-कुडल लार, अरू पीत-वसन उतार ॥६६९
भय लाज मेरे भाय, कारे भये कदराय।
तहाँ क्षमा देही त्याग, भयभीत ह्वैगई भाग ॥६७०
धस गई वीच धराह, सिव जोगनी तपसाह।
तिह गुनन भाग तुमेव, दीय वाँट देवन-देव ॥६७१
श्रीविस्नु वैस्नव साथ, हितु धार्मिकी के हाथ।
तपसीयन देवन त्याग, पुन पिडतन गुन पाग ॥६७२
दीय धर्मराजा दॉन, जगजीव दुर्बल जाँन।
सुरजात दीनेऊ सोय, राजीव-लोचन रोय ॥ ६७३

कहा सुने चाहत वाँन, विसरे न अपनी वाँन ।
निज मोहि राधा-नाँम, सो नही जाँनत स्याँम ।।६७४
प्राँनेस्वरी तुम प्राँन, मेरो न राखत माँन ।
मैं रखी जिम मुरजाद, वढ चले तुम तो वाद ।।६७५
सुख लीजीयैं रति-संग, इह गंग खरीय उमंग ।
वोली सु विध-विध वाँन, रद दावकै अधुराँन ।।६७६
दलमलत वाढ्यौ द्रोह, कलमलत हीय कीय कोह ।
भहरायकै भ्रू भंज, कर नैंन हल्लक कंज ।।६७७
सिध जोगनी सद्रूप, राधका देखत रूप ।
गंगा सु पाय गिलाँन, वारघौ सु अतरध्याँन ।।६७८
गलताँन ह्वैकै गात, जवनीय ह्वैगई जात ।
लीय राधका तिह लार, वनुमती पीवन वार ।।६७९
तव गंग उपजी त्राहि, जल अधिष्टात्री जाहि ।
श्रीक्रस्न जाँन सहाय, सो गई चरन समाय ।।६८०
राधका करकै रीस, विच नदी अरु वागीस ।
जोई सु जिह-तिह जाग, वैंकुंठ स्वर्ग-विभाग ।।६८१
गोलोक वेधा गेह, भूगोल भीत भरेह ।
जल करेऊ सोखन जाहि, कीय आचमन सव काहि ।।६८२
जल-जंतु जेतक जात, पैठे सु कीच पिरात ।
अपलासका चँहु ओर, जहाँ-तहाँ वाढ्यौ जोर ।।६८३
कुल-जीव कोटन-कोट, उर कंठ सूकत ओठ ।
अहुलोक उपजी त्रास, पाँनीय वाढी प्यास ।।६८४
मिल कमन विस्नु-महेस, समवर्ति मघवा सेस ।
रवि चंद मनु मुनिराज, सिध तपी आद समाज ।।६८५
गोलोक गये कर गौंन, भज क्रस्न ही के भौंन ।
भाख्यौ सु सवही भेद, निज भाव लहि निर्वेद ।।६८६
श्रीक्रस्न आद सरूप, रमतीत साखी रूप ।
द्रग दुखी देखे देव, भाख्यौ सु तिन सौं भेव ।।६८७
तु त्रपा उपजी त्रास, आये सु जल की आस ।
जल अधिष्टात्री जाहि, तिन दई राधा त्राहि ।।६८८

है सरन मेरी हाल, जीय-जाँन राधा जाल।
तुम प्रस्न करहू ताहि, प्रगटै सु गगा पाहि ।।६८९
तिहु-लोक मिटहै त्रास, विध आद करहु विसास।
गत गूढ कहीय गुपाल, सुरवृद सुनत सवाल ।।६९०
कर स्तुत राधा केर, विनती करी वहु वेर।
विध आद देव विचार, सव तत्व भाख्यौ सार ।।६९१
ऊपजी गग उदार, विच रास-मडल वार ।
दूसर न तुमसौं देह, रिस करत अनुचित रेह ।।६९२
जल अधिष्टात्री जाँन, दीजीयै निर्भय दाँन ।
त्रहुलोक उपजत त्रास, वर देहु सवन विसास ।।६९३
सुन विनय राधा स्रौन, मुख लही सुख रुख मौन।
विसवास कर सुरवृंद, उर चाहि पाय अनद ।।६९४
श्रीक्रस्न के गये सर्न, वर्नना करत सुवर्न ।
प्रभु चर्न सौं प्रगटाय, दीनी सु गग दिखाय ।।६९५
पुन देव राधा-पास, लैगये धार हुलास ।
राधा सु छोरी रीस, सु प्रस्न गगा सीस ।।६९६
ह्वै दयौ मत्र सहेत, सो गग लयेऊ सचेत ।
पुन कह्यौ गगा पेख, वर विस्नु वरहु सुवेख ।।६९७
वच राधका तिह-वार, कीय गग अगीकार।
सोइ क्रस्न लखत समग्र, अगुष्ट निकसी अग्र ।।६९८
वपु अधिष्टात्री वार, धुर द्रवत ह्वै जलधार।
अज कमडल मे आप, पुन लयेउ मोचन पाप ।।६९९
अध-चदकै आकार, सिर धरेऊ सभु सुधार।
पूजकै राधा पाय, सुरसरीय गईय सिधाय ।।७००
वयकूंठ कीनौ वास, हीय वढ्यौ विस्नु हुलास।
वीती सु तामै वार, राधा रू गगा रार ।।७०१
विध-लोक लौ वृहमड, भये कल्प पाय विभंड।
विध करी स्रष्ट नवीन, प्रवृत सु कहत प्रवीन ।।७०२

दोहा

रमा गिरा गगा रही, वृदा चौथी वाँम।
जथाँ-जोग वरनत जही, तुलसी-कथा तमाँम ।।७०३
विस्नू प्यारी वल्लभा, वपु पायौ वृख तत्व।
क्यूँ रॉवन पीडत करी, ताही कहीये तत्व ।।७०४

छद पद्धरी

सुन नारद मुन की प्रस्न स्रॉन, वोले नारॉयन विमल-वॉन।
अत कीर्तवॉन वैस्नव अनूँप, भये प्रथम दक्ष सावर्न भूप ।।७०५
मनु ताहीयके कुल मे महॉन, अवतरे वृह्म सावर्न आँन।
वरमिष्ट और वैस्नव सधीर, विस्यात भयौ मनुवंस वीर ।।७०६
पुन ता मनूही के वस पूर, सुत भयौ धर्म सावर्न सूर।
अवतंस वस ताके अभूत, पुन भये रुद्र सावर्न पूत ।।७०७
ऊपजे इद्र सावर्न आय, सुन याही मनु हू के सुभाय।
सव विस्नु-उपासक भये सुद्ध, विग्यॉन-ग्यॉन भक्ती प्रवुद्ध ।।७०८
वृष ध्वज्ज भयौ तिह सुत वलिप्ट, ईसॉन उपासी पर्म इप्ट।
करता जग पूरन सकल कॉम, घुर्जटी विराजे तँही धॉम ।।७०९
विवुधन के त्रय-जुग गये वीत, पुत्र सौं इधक हर पाय प्रीत।
अनदेव विस्नु आदक अभेव, सरस्वती लक्षमी तजी सेव ।।७१०
माघ की पचमी तिथ महॉन, भारथी न पूजी लखी भॉन।
रवि दयौ स्राप ताकौं रिसाय, जग नप्ट होहु मति भृप्ट जाय ।।७११
सिव कथा सुनी रवि दयौ स्राप, उठ चले सूल लै रीस आप।
आवत त्रसूलपॉनी अभग, प्रलयाग्न-रूप देखे पतग ।।७१२
भागके गये अगदॉन भॉन[१] सरनै कस्यप पितु सनिधॉन।
सुत कौ लै कस्यप आप साथ, निज सरनौ लीनौ लोकनाथ ।।७१३
विध मिवहू सौं देख्यौ विरोध, वैकूँठ चले विसराय वोध।
रिख कस्यप कस्यप-मुन विरंच, विस्नु सौ मिले निज काज वंच ।।७१४
पद-पकज पूजे प्रथम-पोत, हित ताहोय के जन अभय होत।
पुन सूर-कथा अरु सूलपॉन, सव कही होयके सावधॉन ।।८१५

१ सूर्य।

हरि अभय दयौ अहु दुखत हैर, वैठाये आसन तिही वेर।
सवोध करचौ सतोष साथ, निज आँनन सौ श्रीरमाँनाथ ।।७१६
इतने मे आये आप ईस, रिव ऊपर धारे माहाँ रीस।
श्रीपत अत कीनौ समाँधाँन, भव चरनन लागे ऊठ भाँन ।।७१७
वर्नना करी कस्यप विसेस, परचाय विरचन पुज्ज पेस।
सिव क्रोध तज्यौ लहि समाँधाँन, वोले विस्नू सौ विमल-वाँन ।।७१८
वृपघ्वज्ज मोहि है भक्त वेस, काटीयै सूर स्रापही कलेस।
कर श्रवन कथा सिव रिषीकेस, मुसकाय कह्यौ सुनोयैं महेस ।।७१९
वैकूँठ आवतै लगी वार, नहि काल विचारचौ निराधार।
मोहि लोक-वीच अधघरी माँहि, जुग भूँम-लोक इकईस जाँहि ।।७२०
वस काल भयौ वृपधुज वसेख, मुत रथधुज सोउ न रह्यौ सेख।
रथध्वज के द्वै-सुत करत राज, धरमधुज कुसधुज भूधिराज ।।७२१
सपदा नप्ट ह्वै कप्ट-संग, अत नीत-निपुन जुन भक्ति-अग।
लक्षमी करत तपसा ललाँम, तिह ग्रेह लहिह अवतार ताँम ।।७२२
वैभव जुत ह्वैहै राज वृद्ध, सपदा वढावह सकल सिद्ध।
निज-लोक सिधावहु गवरनाथ, सूरज लेजावहु कमन[1] साथ ।।७२३
कर विदा देव अहु हरि क्रपाल, कीय भवन गवन निज तातकाल।
धरमध्वज कुसधुज नृप सधीर, वसुधा विख्यात भये महाँवीर ।।७२४
पूजन पुन लागे रमा पाय, सपदा वढी तातै सिवाय।
परवार वढचौ पउत्राद[2] पूत, सत्र मत्री कुल उपजे सपूत ।।७२५
कुसधुज की पतिवृत तीय कुलीन, अभिधा मालावति नृप-अधीन।
आधाँनवती सोइ भई आय, सुभ गृह-नछत्र वेला सुभाय ।।७२६
जन्मी सु कन्यना ग्याँन-जुक्त, सूतका ग्रेह सौ पर्म सक्त।
धुन वेद सुनत स्रुत उठी धाय, कहि वेदमती द्विज मुनि निकाय ।।७२७
उठ चली कन्यका तुरत येह, सिसुपन मे सोई निसदेह।
वन तप-हित चाली तँही वेर, पितु-मात मनै कीय सखी प्रेर ।।७२८
रोकी न रुकी काहू रहस, अभलाख हरी उर रमाँ अस।
सर पुस्कर मै निर्जन सुथाँन, धारना जोग सौ धरचौ ध्याँन ।।७२९

---

१ ब्रह्मा । २ पौत्रादि ।

इक मन्वतर तप करचौ अग, तन जरा आय नही करचौ तग ।
कन्या नव-जोवन रही काय, परभाव तपस्या तेज पाय ।।७३०
नभ गिरा भई तिह हित निदाँन, पति मिलहि हरी वाचा प्रमाँन ।
जनमातर ह्वै है हित जरुर, पद-पकज राचहु प्रेम पूर ।।७३१
सुन हरख वढचौ कन्या सिवाय, पहुँची सु गधमादन पुलाय ।
सिखरी पै निर्जन लख मुथाँन, वैठी तप करनै हरी विधाँन ।।७३२
केतक दिन वीते वन निकेत हरी चरन-कमल मै लाय हेत ।
पुन भ्रमन करत रॉवन पुलाय, वन ताही आयौ मति विलाय ।।७३३
आस्रम कन्या कौ लख अनूप, भव तत्व पाय गये लक-भूप ।
जुत धर्म जाहि आतिःथ जोय, हित करचौ सवै विध समुख होय ।।७३४
पायकै कन्यका काय पोख, दुष्ट के हृदय मै वढचौ दोख ।
तिह रूप-दोप कै सील-त्याग, लीय पकर हाथ रति-हेत लाग ।।७३५
रिस करकै कंन्या कह्यौ रोय, हा दुष्ट सथभर रहहु होय ।
जड-रूप भयौ सो तँही जाग, मडै पग जाय न भाग-भाग ।।७३६
आराधी मन सौं प्रकृत आद, वपु त्यागौ जडता कौ विषाद ।
चाल्यौ तव आस्रम करत छेह, कंन्या तव वोली रिस करेह ।।७३७
घर तोहि आयकै रचहु घात, निज कुटम सहित करहू निपात ।
मुह धर्म विगारचौ तै मदंध, वपु छियौ काँम के वाँन विंध ।।७३८
फल ताकौ मिलहै दिवस फेर, वन त्याग जाहु तुम इही वेर ।
तन त्यागौ इतनी कहि तुरत, नृप-सुता वेदमति प्रभू निमंत ।।७३९
कालंतर कंन्या जनम केर, हुइ रावन कौ विद्धेप हेर ।
पति रॉमचद्र हरि-रूप पाय, सुख विलसे वहु-विध रति सुभाय ।।७४०
अवध मै रहे वहु दिवस आप, अरू दपत-सपत लहि अमाप ।
पितु-वचँन पालनै के प्रसग, सीय लखन राँम गये विपन सग ।।७४१
डडकारण्य मै दखन-देस, विद्वेस वढचौ निश्चर वसेस ।
आये तिह अवसर पर अभेव, दुज-रूप धारकै अगन देव ।।७४२
कथ रॉम सुनहु इह कठन काल, वीतेंगौ तुम सौ वन विचाल ।
भेज्यौ देवन मिल इही भाव, दिन फिरत न लागै दई दाव ।।७४३
जाँनकी देहु हम लीयै जाय, पुन तुमही देहौ काल पाय ।
सीय छाया-रूपी राँम-संग, इह राखस कुल मारहु अभग ।।७४४

सुन अगन देव की वात स्रॉन, माहाराज रहे मुख धार मौन।
वतराय कह्यौ सीता वसेख, पितु जनक जेम इह अगन पेख ।।७४५
कल विथ्यत होय उर उठ्यौ कॉप, सीता पावक कौं दई सौंप।
जोग-वल सीया ह्वै ज्वाल-माल, वपु लीन कर्यौ पावक विचाल ।।७४६
पावक दीयं माया-वल प्रसग, सीय छाया-रूपी रही सग।
नही वात जताई लखन नाथ, सीता माया को रखी साथ ।।७४७
विद्वेस राखसन सुन विचार, चल आयौ रॉवन दुराचार।
छल-वल सौं सीता हरी छॉहि, मेली सु जायकै लक मॉहि ।।७४८
श्रीरामचद्र कपि-सैन साथ, निर्मूल कर्यौ कुल लकनाथ।
सीता पुन दीनी अगन साख, रघुवीर सत्य श्री लई राख ।।७४९
श्री माया-रूपी सीया सोय, हित वचन कहे चित दुखत होय।
ह्वै है अव मेरौ कहा हाल, कछु जतन वतावहु तातकाल ।।७५०
श्रीरॉमचद्र अरू अगन सग, इह वात कही तासौं उमग।
तप करन जाहु पुस्कर-तडाग, पुन्य की भूमका रहहु पाग ।।७५१
हरपाय तपोवल सुवस होय, स्वर्ग की लक्षमो भई सोय।
त्रय-लक्ष देव हायन विताय, अवतरी द्रोपदी-रूप आय ।।७५२
पति पॉच भये ताकौ प्रसग, सुनहौ मुनि नारद येक सग।
तप कीनौ पुस्कर सीया ताहि, ऊपजी कॉम वाधा उमाहि ।।७५३
पत देहु-देहु इम वार पॉच, वाचा मुख वोली पती वॉच।
सकर दयाल ह्वैकै सुभाव, पति पॉच पडु कीने पसाव ।।७५४
इह वेदमतो आख्यॉन ऊद्ध, सत-सत सोइ भाख्यौ हृदय सुद्ध।
इतनौ चरित्र कर गई आप, पद्मा मैं मिल गई मेट पाप ।।७५५

सोरठा

अव तुलसी आख्यॉन, जाही कौं वरनत जथा।
करता जग कल्यॉन, करता सुख मगल-करन ।।७५६
नृप धरमध्वज नार, मधुर-भासनी माधवी।
पतिवरता जुत प्यार, सॉनुकूल पतहू सदा ।।७५७
गॅदमादन गिरराज, हिल-मिल गये विहार-हित।
सॅग लै सखी-समाज, कॉम-केल लागे करन ।।७५८

छद मोतीदाम

मनोहर चदन वाग मुकाँम, वसे हित काँम लयै सँग वाँम ।
विधोविध राचत भोग विहार, नही दिन-रात लख्यो निरधार ।।७५९
महा-रत खेल भये उनमत्त, समापत ह्वैगये वछ्छर मत्त ।
भई तीय गर्भवती तहाँ भूप, उपज्जेऊ आँनद आय अनूप ।।७६०
वढे सुख-सपत आय विसेस, निरतर आयेऊ देस नरेस ।
धरै रही गर्भ सोई निज-धाँम, विते सत वछ्छर भूप की वाँम ।।७६१
नवै-निध वाढीय भूप निकेत, सुखी परवार प्रजाँन समेत ।
वसी जहाँ आय रमा गृभवास, प्रभा तहाँ क्यों नही होय प्रकास ।।७६२
महूरथ मगलदायक माँहि, जनमीय भूप सुता गृह जाहि ।
वढ्यौ वपु-रूप वढी जिम वेस, कहै तिह ओपम कोन कवेस ।।७६३
अनूँपम आँनन पूरन इदु, उभै चख आस्वन के अरविंदु ।
प्रभा तिह ओठन रग प्रवाल, वनै अधचंद सु भाल विसाल ।।७६४
वनै वहु पात जटा सिर वार, सच्चिक्कन स्याँम वँधे सटकार ।
वनै रद पत अँनार के बीज, वरारक वाँनक ज्यूँ दुति वीज ।।७६५
निकाइय दीपसिखा जिम नक्र, वुहारन रूप प्रकासत वक्र ।
धरै कुछ उन्नत चोलीय ढाक, छिपे मनु आय उभै चक-वाक ।।७६६
मिली त्रवली सु तिही मध्र मेल, वढी जनु आय स्त्र गार की वेल ।
सुसोभत गर्भ अगार समाँन, निरतर नाभीय रूप निपाँन ।।७६७
खग्यौ वँध चालनी को कट छीन, नितवन वाढत सोह नवीन ।
ज्युँही जुग जघन-पिंडुरी जोर, गताकच कोमल रगत गोर ।।७६८
उभै पद-पकज की उनहार, चुरावत आँगरीयै चित चारु ।
प्रभा तलपाय हथेरीय पाँन, जमै रग स्वच्छ उदंवर जाँन ।।७६९
जिही तन ओपम सीतल जाँन, सदाँ हिमकाल मे उस्न समाँन ।
अनूपम गात सवै चिव ऐन, निकाइय वाढत देखत नैन ।।७७०
तुलै जही औरन जोर न तीय, तिहो वतरात कहै तुलसीय ।
सोई तुलसी अत वुद्धि सयाँन, धरचौ उर वद्रीयनाथ कौ ध्याँन ।।७७१
पँहूँचीय जायकै धाँम पुनीत, पती पुरसोतम लायकै प्रीत ।
पचागन ग्रीपम अग तपाय, ज्युही हिम सैन करै जलजाय ।।७७२

सहै जल-धार वृषा-ऋत सोय, करै चित कायरता नही कोय ।
सध्यौ तप वर्ष जु वीस सहस, रही इक धारन ध्यांन रहस ।।७७३
इतै फल-फूलन कीन अहार, कसोदरी ह्वैगई राजकँवार ।
तज्यौ फल-फूल अहारही ताहि, अहार सु पत्र तरू अवगाहि ।।७७४
विते लख तीस इही गत वर्ष, करचौ तप धारनह्वै उतकर्ष ।
तज्यौ सु अहार करचौ तन-ताप, प्रभजन भक्षन के परताप ।।७७५
विते दस चौक सहस्रक वर्ष, पितामह तापही की गत पर्ख ।
विलोकीय राजसुता तप वृद्ध, सिवायकै आयेऊ ताहि सनिद्ध ।।७७६

दोहा

हंस चढे आये हरष, विध विलोक पग वद ।
तुलसी विध देखी तहाँ, चिव दुतीया जनु चद ।।७७७
वोले तुलसी सौ वहुर, वृहमा करत विचार ।
कठन तपस्या कौ करत, वर माँगहु इह वार ।।७७८

छंद पद्धरी

वोली सु तवै तुलसी विचार, सुनीयै जग-करता समाचार ।
आपतै दुरी नही वात येक, पति क्रस्नचद्र चाहत प्रवेक ।।७७९
गोलोक-वीच गोपी-गुपाल, क्रस्न की किंकरी तिहूँ-काल ।
उतपत्त क्रस्न के अस-अग, सेवा मै क्रस्नही रहत सग ।।७८०
इक दिवस रास-मंडल अगार, प्रभु पकर लई मो सहित प्यार ।
उर लाय खेल खेले अनग, सुख भयौ क्रस्न सौं पाय सग ।।७८१
मुर्छतह्वै सूती रास-माँहि, राधका माँननी लखी राहि ।
गोविंद करचौ तिह देख गौंन, मै करग-जोर मुख गही मौन ।।७८२
राधका स्राप दीनौ रिसाय, जोनी सु माँनवी लहहु जाय ।
सो अगीक्रत कीनौ सराप, इह वात कही गोविंद आप ।।७८३
कछु सोच करहु तुलसी न कोय, सुन लेहु मोर सिद्धत सोय ।
भुज च्यार विस्नु सौ करहु भेट, मिलहै पति रहहौ भीत मेट ।।७८४
खित आय ऊपजी भरथ-खंड अज, तासौ कीनौ तप अखड ।
पति मोहि विस्नु करीयै पसाव, और न कोऊ मेरै हित उपाव ।।७८५

वृह्मा जव वोले विमल-वाँन, जीय तेरे हित की कहत जाँन।
गोलोक माँहि गत भई गूढ, मन तोही जाँनत नाँहिन मूढ ॥७८६
काँमातुर ह्वै के तुमही काय, चीत्यौ सु सुदामा गोप चाहि।
वँह कृस्न-अंस है नहिन और, राधा सौं स्रापत वय-किसोर ॥७८७
जल-वीच ऊपज्यौ समर जात, खित मैं है तेरी समर-ख्यात।
पति करकै भजहू सहित प्यार, करीयै विलव नाँहिन कुमार ॥७८८
वँह सखचूड है नाँम आय, मिलहै तोही सौ मन-मिलाय।
सुन वाचा मेरी इही साच, रति माँनहु ताहि रंग राच ॥७८९
इह पूर्व-जन्म आख्याँन आद, वरन्यौ तुलसी सौ निर्विपाद।
वोली वृह्मा सौं जुत विवेक, इतनैं पै मेरी अरज येक ॥७९०
दुइ भुजा चतुरभुज नहिन दोय, करहू नही हीय मैं सोच कोय।
राधा ह्वै परसन सोय रीत, करीयै पसाव जग अमरकीत ॥७९१
जव षोडस अक्षर मंत्र-जुक्त, अज दीनौ तुलसी हृदय उक्त।
पूजा स्तोत्र अरु कवच पाठ, उर पुरस्चरन मेटन उचाट ॥७९२
इह मंत्र राधका परम ऊद्ध, कवही न तोहि सौं करहि क्रुद्ध।
जाही राधाकौ करहु जाप, सुप्रस्न होय मेटहि सँताप ॥७९३
सुन वृह्मा के इह वचन स्राँन, तप त्याग तपोवन रही तौंन।
सुख विलसन लागी निज सरीर, पुन काँमदेव की वढी पीर ॥७९४
वपु जोर वढ्यौ तप सौ विकार, कलपत मन विलपत तन कुमार।
पुन सखी करत लेपन पटीर, निर्मल सुगध कुमकुमा नीर ॥७९५
आग की आच ज्यूँ लगत अग, अकुलाय प्राँन वाँनन अनग।
गहिकै पुलकावलि कवहुँ गात, वतरावत आवत नहिन वात ॥७९६
कवहू फुरकावत नयन कोर, उत्सक है देखत चँहूँ-ओर।
मन विभ्रम वाढत अधिक मोह, कवहूँ सखीयनं पै करत कोह ॥७९७
ललचाय चित्त उस्वास लेत, देखत इक टक ह्वै द्रगन देत।
पीयराई वाढत अरू प्रस्वेद, भूग्वन सौं दूषन गहत भेद ॥७९८
गारी सम लागत मधुर गाँन, सोगध पुस्प कटक समाँन।
चित चाहि वढी पति-हित अछेह, दुख काँम दहत अत जिही देह ॥७९९
इत सखचूड दाँवन उदार, विध करी प्रेरना तिही वार।
वद्री आस्रम की लई वाट, वँह गयौ तरेटी अद्रराट ॥८००

तुलसी क़ौ देखी वन तहीज, वपु सोभा मॉनहु चद्र बीज।
तुलसी दनुँ विद्र ही लख्यौ तेम, पुन उभय हीय सौं वढचौ प्रेम ।।८०१
समता वय इक सम सुच सरीर, भये व्याकुल अतसय जराभीर।
विध अंतरजाँमी तिही वार, मिल आय दरस दीय वन मझार ।।८०२
आपने वचन को देख ओर, वोले सु सुखद वाचा वहोर।
सम प्रीत येक की येक सग, उछवाह करहु धारै उमग ।।८०३
सावत्री जैसै मो सु तीय, पति क्रस्न राधका पर्म प्रीय।
विस्नू कै लक्षमी जेम वाँम, वाराह जेम धरनी' विस्रॉम ।।८०४
अनसुया जेम है नारि अत्र, काँमकै रती जैसै कलित्र।
वासिष्ट अरुधती ज्युही वाँम, निज रुद्र ग्रेह पार्वती नाँम ।।८०५
तारा सु वृहसपति जेम तीय, रवि प्रभा चद्र-गृह रोहिनीय।
गँनीयै सतरूपा मनूँ ग्रेह, स्वाहा सु छागरथ[1] सौ सनेह ।।८०६
नल दमयती सचि सक्र नार, काँमनी देवसेना कुमार।
हेरब[2] पुष्टि ध्रम मूर्ति हेत, कस्यपकै अदती ज्यूँ निकेत ।।८०७
जिम देवहुती करदम दुजात, गोतम अहिल्या जेम ग्यात।
कल ऐसै करहू अमर-क्रीत, पति नार परसपर भजहु प्रीत ।।८०८
वृह्या कहि स्वस्ती गये वाट, इह रहे तरेटी अद्रराट।
वाचा परमेष्टी उर विचार, अरु संखचूड तुलसी उदार ।।८०९
गधर्व व्याह कर भये गैल, सुखदायक देखत विपन सैल।
रति मॉनत जहाँ-तहाँ रहत रात, पुन वागन वन विहरत प्रभात ।।८१०
क्रीडा मिल दपत करत केक, वतराय तर्क हासी विसेक।
हाथन मैं कवहूँ गहत हाथ, गल वाँह डार नीयराय गात ।।८११
रच अवर झीने वेख रग, आभूषन नाना पहर अग।
नित नूतन वाढत हृदय नेह, दंपत मन येकै दोय देह ।।८१२
आलगन चुवन करत अग, अह-निसा ख्याल खेलत अनग।
तव वसंत दोय दीय पती ताहि, जीत कै परंजन लये जाहि ।।८१३
छाया रवि-पत्नी लये छोर, जिह वजुला दीनेऊ येक जोर।
सिस-पत्नी रोहिनी लये सोय, दीने दत कुडल कनक दोय ।।८१४

---

१ अग्नि। २ गणेश।

त्रीय अग्नि नाम स्वाहा मतोल, मजीर दये सो दीय अमोल ।
कर-वलय मुंदरी दई केक, आँनकै विस्वकर्मा असेक ।।८१५
स्रंगार और अगन मँवार, पत्नी सौ बोले सहित प्यार ।
मृघनैनो जाँनहु दाम मोहि, तुलसी तीय कासूं कहू तोहि ।।८१६
तुलसी-सी नरपत पाय तीय, विहरन सोई लागे विपन त्रीय ।
वन पारजात आदक विसेस, देखत गिर चाले देस-देस ।।८१७
नद सरवर देखत कुंज नाल, खेलन अनग के उभय ख्याल ।
करकै विहार आये मुकाँम, धवरोहर राजा पर्म धाँम ।।८१८
विलसन सुख लागे अत विचत्र, जुग मन्वतर लग रहे जत्र ।
पुहमीन वढ्यौ राजा-प्रताप, थित सीमा सागर करी थाप ।।८१९
सुर-असुर जीत लीने सकोय, कर सकै जाहि समता न कोय ।
अधकार लयौ सब देव आद, माँनी जग-हाँनी कीय मृजाद ।।८२०
भिक्षुक हुय चाले त्याग भोन, गिर किंदर कीनौ विपन गोन ।
पुन जाय विरचन कोय पुकार, सुरलोक खोस लीनौ सुरार ।।८२१
हम दुखत भये लख लेहु हाल, द्रुत स्याहिक रहु करता दयाल ।
जातना पाय सुर घट्यौ जोर, अब डोलत जित-तित चहूँ-ओर ।।८२२
इह सखचूड दाँनव अजीत, भय मेट सुरन करीयै अभीत ।
विनती देवन की सुनत वेर, हसग उठ चाले सिंभु हेर ।।८२३
पँहुँचे अष्टापद गिर पुनीत, असुरेस सबै वरनी अनीत ।
वरन्यौ देवन कौ दुख विसेस, मन सोचन लागे तब महेस ।।८२४
वैकूंठ गये श्रीविस्नु-पास, अनेक लखे ऊँचे अवास ।
जहाँ जरा मृत्यु मौं रहित जीव, सुख पाय वसत वासौ सदीव ।।८२५
अवलोके पार्पदगन अनत, श्रीविस्नु रमाँ के पर्म सत ।
जय विस्नु-विस्नु कौ जपत जाप, प्राँनी पुनीत सब रहित पाप ।।८२६
द्रग देत जहाँ-तहाँ निकट दूर, पत्तन की सोभा लखत पूर ।
निज भवन लख्यौ हरि कौ निवास, पार्षद केऊ डोलत आस-पास ।।८२७
सब स्याँम-वरन सुंदर सरीर, धारै पीतांबर महाधीर ।
सारूप मुक्त धारे सुवेस, रमनीय-रूप मनु रिखीकेस ।।८२८
आभूषन रत्नन सभै अग, अरू गदा सख लीनै अभग ।
भुज च्यार जिनहु के दिव्य भेस, वरमाला धारै उर वसेस ।।८२९

देवन सहेत विध माहाँदेव, भाख्यौ आगम कौ सकल भेव।
पुन सुनकै वोले द्वारपाल, कीजीयै गमन आगै क्रपाल ।।८३०
इम सोरह कक्षा कौं उलघ, सुर जाय पहूँचे पौर सिंघ।
हरि-सभा जाय पहुँचे हजूर, प्रभु देखे नैनन प्रेम-पूर ।।८३१
जहाँ देव रिषी पार्षद जितेक, येकतै मनोहर रूप येक।
स्वारूप विस्नु ही के समाॅन, सुख सभा विराजे सावधाँन ।।८३२
दुतीया के विधु जिम सभा दौर, जहाँ बैठे पार्षद जाँनु जोर।
वँह सभा करत वर्नन अगार, सावर्न रत्न-मडित सँवार ।।८३३
सोपाॅन अनूंपम/अत सुघाट, विध-विध रतनन की वनी वाट।
वज्र मै अजर अतसय विचत्र, तडता जनु चमकत जत्र-तत्र ।।८३४
मनि-मालन लालन-लरी मेल, झालरी मुक्तमय रही झैल।
नाना प्रकार रेखा निमद्ध, सोवर्न सँवारी सद्ध-सद्ध ।।८३५
दीसत विलद चँहुधाँ दिवार, केऊ रतन जरे विच मुकरकार।
झलमलत झालरी झुड-झुड, मुक्तन की माला जुक्त मड ।।८३६
कोटी मिल कोटी चहूँ कूट, छाजन मनी-आभा रही छूट।
उतरग कपाटन लगे ओर, जाली सु दिवाली जोर-जोर ।।८३७
चित्राँम पूतरी वनी चारु, अरुनोपल नीलम चिव अँगार।
सूरज मनि चद्रोपल समीप, दग-दगत जोत मनु जुरे दीप ।।८३८
मनिमय विनर्द के रही मड, खिच रहे वीच केऊ हीर-खड।
लक्षी पुस्पपन की लार-लार, हीरन कुजन की लगी हार ।।८३९
अवलोकन चख ऊँचे अवास, परकास करत दुति आसपास।
दीसत विचित्र चँहुधाँ दिगत, कोटन सूरज की मनहु क्रंत ।।८४०
जहाँ माला पुस्पपन पारजात, पुन पल्लव चदन वधे पात।
वदन-माला की वँधीं वेल, केऊ हरी रग की वनी केल ।।८४१
कसतूरी कुकुँम रग केक, ऊठत सुगंध जोजन अनेक।
गध्रव किन्नर जहाँ रहे गाय, अछरी नट तवहू आय-आय ।।८४२
वीना तंतन् की ताल विंग, मधुरी-धुन वाजत कहु मृदग।
विस्नु की सभा देखी विचत्र, चक रहे देव-जनु लिखे चित्र ।।८४३
सिंघासन लीनै रमाँ साथ, निज भवन विराजे क्रपानाथ।
इम पार्षद विच सोहत उपिंद्रु, उडगन मै जैसै वसत इदु ।।८४४

सिर क्रीट-मुकट धारैं समाँन, कुडल मक्राक्रत उभय काँन।
माला वैंजतो कठ-माहि, वजुला अनूँप वाँधे जु वाहि ॥८४५
वपु पीतवसन विजुरी विकास, कर-कँमल विराजत सावकास।
पद-पकज लिछमी भरत पेम, निरवाह पतीवृत धर्म नेम ॥८४६
मुनि मन भृमरावलि गहि मलिंद, उर अमित भक्ति पावत अनंद।
जन च्यार पदारथ लहृत जाँन, खडन अघ सुखप्रद धर्म-खाँन ॥८४७
ऐसे प्रभु देखे सुर उदास, पुन-पुन विमास वुलवाय पास।
जब करी स्तुति जिन हाथ जोर, विध अरु महेस वोले वहोर ॥८४८
इक सखचूड दाँनव अभंग, सब देवन जीते येक सग।
भिक्षुक जिम डोलत त्याग भौन, प्रभु स्याहि करहु सारंगपाँन ॥८४९

दोहा

श्रीविस्नूँ अरजी मुनी, सवही देवन साथ।
कहँन लगे इतीहास कछु, निज मुख पद्मानाथ ॥८५०
वीती जो कछु वारता, विच गोलोक वसेक।
वरनत सोइ विस्तार कर, वचन सुनहु सविवेक ॥८५१

छंद त्रोटक

गत गूढ भई गऊलोक गनौ, सव देवन की समुदाय सुनौ।
ग्रह-मडल रास के वीच गये, निज नैनन देखत स्याल नये ॥८५२
विरजा-संग खेल विहारनमैं, इकठे रहे कुज अगारनमैं।
गम पायकै राधका आय गई, विरजा सलता हुय नीर वही ॥८५३
भय सौं हम अतरध्याँन भये, गृह गोप सुदाँमा के वैठ गये।
गृह ताही मैं राधका आय गई, सखीयाँ इक लाख लै सग सई ॥८५४
केऊ वात कही हम सौं कररी, धर धीरजकै मुख मौन धरी।
केऊ वात सुदाँमाहू गोप कही, रमनी तऊ राधका रीस रही ॥८५५
सखीयाँ गहि वाहर कीन सभा, कहि गोप सुदाँमा कौं वात कुभा।
डुचती हुय राधका स्राप दयौ, भुँय पै सोइ दाँनव रूप भयौ ॥८५६
क्षन आध जितै गऊलोक खपै, तब लौ भुँव पै सखचूड तपै।
वसु येक मुनंतर वीतहिगे, जितनै स्वर आसुर जीतहिगे ॥८५७

पुन आवहिगौ हम लोक प्रतै, जुर जावहु देवन सैन जुतै।
वल जोग मै मायक है वहुरै, धमनी हम कौंच कौ बध धरैं ।।८५८
हम हूँ दुज ह्वै तुमरे हित कौ, छल ताहि निवारहिगे छल कौ।
सिव सूल इहै तुम लेहू सही, जिह कौं तुम मारहु खेत जँही ।।८५९
तुलसी पतिवृत है ताहि तीया, सुभ सीलवती सुमती सुकीया।
छल है हम ताहि कौं होय छता, गुन दाँनव के जब होय गता ।।८६०
सब तत्व कह्यौ तुमहूँ नै सुनौ, गृह आपने-आपने कौं गँवनौ।
जुरहै सिव दाँनव सौ जबही, तुम देवहू आय मिलौ तबही ।।८६१
कहिकै इह देव विदा करकै, वसे आपने धाँम रमावरकै।
सिव ऊठ चले सव देव समा, सुर-कारज कौ हुयकै ससमा ।।८६२
चंदभागा के तीर गये चलकै, विसवास दै देवन कौ ग्रलकै।
वट-पेढ अनूँपम छाँह बसे, कल कारन कौं जट-जूट कसे ।।८६३
संखचूड पै भेजेऊ दूत सही, करारी गत ताही नै वात कही।
स्वर भाग लये तुम आसुर नै, मुरझायकै देव लगे मरनै ।।८६४
विध कौं सिव कौं लहि सग वहे, करुनाकर विस्नु सौं वाच कहे।
सरनागत विस्नु सनातन के, जगतीमँह देवन जातन के ।।८६५
जगनाथ जनार्दन हेत जँही, त्रपुरार कौं दीन त्रसूल तँही।
सिवलै सोऊ आयेऊ सगर कौं, दल लै केऊ सग मै डिगर कौं ।।८६६
कहुँ स्याँम उपाय सौ सध करौ, मडकै नत संगर वीच मरौ।
कहीयै रुच होय सो ठीक कथा, जिही रीतकहूँ सिव जाय जथा ।।८६७
करारी सुन दूतहु की कहनी, दँनुविंद्र कौं रीस लगी दहनी।
पुन वात कही तिही दूत प्रतै, हम आवहिगे परभातहुतै ।।८६८
अवलवत दूत चल्यौ उठकै, सिव पै सोइ आय गयौ सटकै।
सिव सौं वरतत कह्यौ सगरौ, प्रभू दाँनव ऐहै भयै पगरौ ।।८६९
करहै रनकौं निसचै करकै, डहकावहु नाथ नही डरकै।
गन सिभु विदा कीय व्योम गली, सुन दूत हकीकत कौं सगली ।।८७०
द्रुत जाय कह्यौ तिन देवन कौ, भव के दनुविंद्र के भेवन कौ।
सिखीवाँहन आदिक वात सुनी, चँहु ओर सौं बोलकै सैन चुनी ।।८७१
पद वदन कीन महेस पिता, गँन वीरहभद्र सु संग गता।
मिलकै स्वर नदीय काल महाँ, अरु अक्ष विसाल सु भद्र अहा ।।८७२

तहाँ पिंगल नैन रु वाँन तिते, उड आये विकपन वीर इते।
वहु विक्रत और विरुप वली, मनी भद्र रू वास्कल सैन मिली ॥८७३
कपलाक्ष रू दीरघ द्रप्ट किते, जुर तांमर-लोचन आदि जिते।
विकटा कलि कटहू भद्र वढे, कलजीह कुटी चर आय कढे ॥८७४
उनमत्त वली रन स्लाघी इतैं, दुरगम्म रू दुर्जय दीर द्रुतैं।
अठ भैरँव रौद्रहू वध अनी, ठिक वारह रुद्रन पैंज ठनी ॥८७५
वसु आठहू आय मिले वहुरें, धरवज्र मिले कर वज्र धरैं।
रवि वारह तेज जुतैं रसमी, जुर अग्नि वढायकैं ज्वाल जमी ॥८७६
सुरवार्धक हू वडवासुतकैं, तहाँ आय कुवेर मिले तितकैं।
नल कूवड और जयत निरे, जमराज परजन आय जुरे ॥८७७
सनी आय प्रभजन वोल समा, जहाँ मगलहू वुध होय जमा।
दल आय इसाँन के देवन कौ, लरकैं रिपु सौं जय लेवन कौ ॥८७८
विषमायुध आयेऊ वीर वलो, उगृद्रंष्ट हु की प्रतना उझली।
चल कोटरा आयेऊ उग्रचडा, पुन कैटभी रूप धरैं प्रचडा ॥८७९
भद्रकाली भयंकरी अष्टभुजी, सव आयुध आनैं हाथ सजी।
नृत आरभटी वृत मै निपुना, उग्र वावन वीर सगी अपना ॥८८०
वपु असुक लाल ही माल वनी, जिह सग मै खप्पर लै जुगनी।
जिहि लवीय जोजन जीह जुतैं, कर पद्म गदा खग चर्म कतैं ॥८८१
धनुँवाँन लयै तिरसूल धृता, चिव देत है ताही पै व्योम छता।
सख चक्र गदा अरु पद्म सजे, गहरावत मॉनहु मेंघ गजे ॥८८२
सगती अरु मूसल वज्र सही, मिल मुग्दर प्रासिक हाथ मही।
वरुनास्त्र रू वैस्नव अस्त्र वनैं, अग्नास्त्र करैं वसमैं अपनैं ॥८८३
वृह्मास्त्र नरायन-अस्त्र वनैं, गरुड़ास्त्रहु आदक कोन गनैं।
परजन्य रु गध्रव अस्त्र प्रतैं, कर पासु पतास्त्र लएँ क्रम तैं ॥८८४
जभनास्त्र महेस्वर अस्त्र जुरे, भगवती भुजा दिव अस्त्र भरे।
कुसमाड रु भूत विताल किते, त्रय कोट सु जोगनी सग तितैं ॥८८५
सझकैं त्रय कोटहू सांकनीयैं, डहकावत येतेहू डॉकनीयैं।
व्रमराकस और पिसाच-वृती, जुर आयेऊ केतक साथ जती ॥८८६
सिव हाजर कीन सकध सवै, त्रपुरार खुसी भये देख तवै।
तुलसी सखचूड तीया तव ही, स्रवना इह वात सुनी सव ही ॥८८७

दोहा

जुध करनै कौं सुर जुरे, सुनी जु तुलसी स्रांन।
घर-घर लागी धूजनै, हित जाँनी पति हाँन ॥८८८
पति बुलायकै आप पँहि, बोली वचन विचार।
अवला के अहवात की, सब विध करहु सँभार ॥८८९
विध करता इह विस्व के, पालत विस्नु प्रमाँन।
सिव करता संघार के, पलटे सकल-प्रधाँन ॥८९०
स्याँम करहु पति समुझकै, देवन सौं तज द्वेष।
अमर होय अहवात अह, विधवत काल विसेष ॥८९१

छंद त्रोटक

पति बात सुनी निज प्राँन-प्रीया, समुझाँवन लाग तँही सुकीया।
सुख-दुख बँधे सब काल समा, वरतै वस काल समा-विसमा॥८९२
तरु कालकौं पायकै ऊगत है, परवाल सिखा जर पूगत है।
फिर फूलत लागत है फलहू, दिखरावत छाँह मिले दलहू ॥८९३
वस पायकै काल वहोरन सौं, झरजावत पौंन जभोरन सौं।
विनसै इह विस्वहू फेर बनै, सब कालही की करतूत सुनै ॥८९४
विध काल सौ विस्व बनावत है, हरि काल सौ पालन पावत है।
सिव ताहि सँघारत काल सता, वस कालही सौं प्रवृता-निवृता ॥८९५
प्रक्रती परमातम-रूप परै, केऊ कालकै आस्रत ख्याल करै।
जन सौ जनहू उपजावत है, जन को जन पालत जावत है ॥८९६
जन कौं जन नासत होय जमा, इह कालही की गँनीयै उपमा।
वस सासन जास बयार वहै, दमुना जिह सासन ज्वाल दहै ॥८९७
वरसावत इंद्र रसा वरखा, पय सागर जेम बँधे परखा।
ससी धारत है जिम सीतलता, कबहूँ हुय पूरन ह्वै कमता ॥८९८
विचरै जगहू हुय काल बली, मृतु मारत जीवन काल बली।
भरता कौं जँही समुझौ भरता, करता कौं जँही गँनीयै करता ॥८९९
पुन पालनवारे कौ पालन है, जमहू कौ सोऊ जमजालन है।
जिह के सरनै मरजावन मैं, कहा वात कहै कदरावन मैं ॥९००

तुम कोन अहो हम कोन त्रीया, कर संग लयौ जुत कर्म क्रीया।
वस भागकै देह मिलै बिछुरै, कोउ मूरख याही कौ सोच करै ॥६०१
पर सोक तजै सोइ पंडित है, उर जाही कै ग्यांन अखंडत है।
वतरावत ग्यांनमई वतीयाँ, रमनी-सग बीत गई रतीयाँ ॥६०२
मन जाँनकै वृद्ध-महूरथ कौं, रन कारन त्यार करयौ रथ कौं।
सुत सौंपकै राज-सिंघासन कौं, दल मंत्रिन दासीय-दासन कौं ॥६०३
रजधांनी विभौ दीय काज रसा, उठ चाल्यौ प्रभात ही के अरसा।
सग है दल पैदल सैन सज्यौ, गहरायकै देवन नीस गज्यौ ॥६०४
चल अग्रकौं रत्न-विमाँन चढयौ, वरखा-रित वद्दर जेम वढयौ।
विच मारग व्योम लग्यौ वहनै, गृह-राह मनौ रवि कौं गृहनै ॥६०५
अँनि वाँघ खरे रहे देव इतै, जुर जूहन-जूह-समूह जितै।
विव ओर तै सस्त्र लगे वहनै, दनु देवन सैन लगे दहनै ॥६०६
कल-भार परयौ नही जात कह्यौ, रव मारहु-मारहु होय रह्यौ।
सर येक प्रहारत येक सहै, विच खेत वकारत देव वहै ॥६०७
खवला केउ मारत सालन सौं, भट केक परोवत भालन सौं।
कर दाव किते सकती रुकती, छुरका जमदाढ प्रहार छती ॥६०८
केउ देत प्रहार कुठारन की, धक चाल करै खग-धारन की।
लर वैर अनाद के लेवन कौ, दल जूझत देव-अदेवन कौ ॥६०९
दनुँविप्रहु सैनद कारत है, हर सैन इतै हलकारत है।
वृष रु परवा सौं जुरे जु वृषा, बहु अस्त्रन-सस्त्र करी वरषा ॥६१०
रवि सौ विप्रचित्त अरयौ रनकै, जय चाह उमाह उभै जनकै।
विधु दभ जुरे सग लै वल कौ, कालकेस्वर काल रुपे कल कौं ॥६११
गवकर्न हुतासन टेक गही, जुर कालही के यक श्रीद जंही।
मिल वार्धकदेव जहाँ मय सौं, भिर भृत्यु भयकरहू भय सौं ॥६१२
जम सौं रन आय सँघार जुरे, इत वर्न विककन खेत अरे।
जहाँ चचल वात जुरे जुध कौं, वहुरै वृतगर्व मिले वुध कौं ॥६१३
समले रगताक्षहू सग सनी, वसू और सुवर्च सौ रार वनी।
अरू रत्नहसार जयत अरै, वडवासुत दीपत सौ वहुरै ॥६१४
नलकूवर धूमर सौं निहसै; धर साहस धर्म धुरंधर सै।
इत मंगल और उपाक्ष अरे, भट भाँन सुभाकर जुद्ध भिरे ॥६१५

पुन काँम जुरे रन पीठर सौ, क्रम वारह आदित जू कर सौ।
पुन ग्यारह रुद्र प्रकारन सौं, गँम पाय भयकर ग्यारन सौं ।।६१६
उग्रचड जुरे माहाँमारी इतै, पुन तड्डु अदेवन जूह प्रतै।
जुत्र घोर करची सुर होय जमा, असुरायन जोर वढे अवमा ।।६१७
दल देवन की वहु मार दई, वढ दाँनव साथ भये विजई।
सुर भाज चले अपयाँन समाँ, जितहू तित होय न कोय जमा ।।६१८
कृतकासुत जुद्ध मै उद्ध क्रती, पग माँड खरे रहे सैनपती।
जुरकै सुरहू मुर संग जवै, सिखी-वाँहन कौ वल पाय सवै ।।६१६
सिखी-वाँहनकै गन हू सिगरे, कल कौ सिखी-वाँहन सग करे।
दनुँविद्र की सैन मिटाय दई, भर खप्पर जुगन सग भई ।।६२०
जर टूट गई दनु जालीय की, किलकार मची जहाँ कालीय की।
केऊ तुडन खडन मार कुकै, झर मुडन झुडन-झुड झुकै ।।६२१
घट घायल ह्वै नट घूँमत है, लरनै इक को इक लूँमृत है।
खल देख स्कध कौ खेत खरे, भट दभ विकर्नहू आय भिरे ।।६२२
महाँमारी सकत्त जवै मुरकी, घहरायकै दाँनव पै घुरकी।
माहाँमारी सकध उभै मिलकै, वहु दाँनव मार चली वलकै ।।६२३
सुर होय सुखी वरखे सुमना, वहु गध्रव गावत वारँगना।
दनुँविद्र सुन्यौ रव देवन कौ, अनकारज होत अदेवन कौ ।।६२४
वढ आय विमाँन पै वीर-वली, द्रढ वाँनन सौ सुर-सैन दली।
कर तै धनुँ कॉनन लौ करखै, वरखा-रितु मेघ ज्युही वरखै ।।६२५
दीय मार कठोर सु घोर दसा, वल वाढेऊ जोर दिसा-विदसा।
पर कूक अचूक पलायन की, पहिचाँन न आप परायन की ।।६२६
चँहु ओरन वाँनहू वाँन छ्ये, भुंय अंवर माँनहु येक भये।
सुर आदिक और नँदीस्वरकै, डहकाय रहे सवही डरकै ।।६२७
षट-आँनन दीसत खेत खरे, दल देवन ताही की लार दुरे।
दनुँविद्र षडानँन देख तँही, वढ आयेऊ काल विसेक तँही ।।६२८
तरु लै गिर लागेऊ ताडन कौं, अरू दीरघ स्रग उखाडन कौं।
वहु मार दई फिर वाँनन की, परतीत मिटी स्वर प्राँनन की ।।६२६
कऊमार पै घोर अँधार करचौ, उठ मेघ मनौ गिर पै उलरचौ।
दनुँविद्र सकदकै वाँन दयौ, लगते सम चाप कौं काट लयौ ।।६३०

कैऊ बाँहन देवन चूर करे, पुहमी रथ घोटक तूट परे।
मिखी-वाँहन वाँहन कौ सरसै, पँखवा पर पीर कर्यौ परसै ।।६३१
सविसेख सकद लखे सुरमै, इक सक्ति भृमाय दई उरमै।
लगतै सम कोह मै मोह लयौ, भर येक महूरथ चेत भयौ ।।६३२
कऊमार झलाझल क्रुद्ध कर्यौ, धनु दत्त रमाँपति हाथ धर्यौ।
वहु अस्त्र तजे केऊ वाँनन कौं, असुरेस भजे अवसाँनन कौं ।।६३३
तरु पव्वय डारेऊ सीस तितै, जिन आवत टारेऊ पार जितै।
अगनास्त्र तज्यौ दनुँविंद्र इतै, क्रतकासुत देख लयौ क्रमतै ।।६३४
सरमेघ तज्यौ तिह देख समा, ज्वल सीतल ह्वै इल-वीच जमा।
दनुविंद्रकै विच्छुत्त वाँन दये, गिर चाप निषगहू तूट गये ।।६३५
रथ सारथि खूटकै लीन रसा, दल भागेऊ देख दिसा-विदसा।
क्रतकासुत सक्ति लई करमै, असुरेस कौं ताक दई उरमै ।।६३६
मुरछा लहिकै परजाय मही, रनकी तनकी न सँभार रही।
लहिकै पुन चेत कौं चाप लयौ, निज सारथि लायेऊ रथ्थ नयौ ।।६३७
तिह पै चढ लाखन तीर तजे, इत सौं उत अवर मैं उरझै।
सर स्वर्न पँखारन रूप सिरा, किरनै मनु दीसत भासकरा ।।६३८
क्रतकासुत रोक रहे क्रम कौं, परचंड दिखाय पराक्रम कौं।
असुरेस लई कर सक्ति इतै, कल-जुक्त जमाय तजी कर तै ।।६३९
अतजोर कुमारहु पै उसरी, प्रलयाग्न मनौ चहुँधाँ पसरी।
सकती जिम लागीय काल सिछा, माहाँसेन कौं आय गई मुरछा ।।६४०
माहाँकाली चली लहि गोद मँही, त्रयनेत्र ससीम गई तवही।
सिव सौंप चली फिर जुद्ध सजी, गलकौं भर केहर-नाद गजी ।।६४१
गनहू सिवके केऊ साथ गये, जुरकै रन कौं दनुवीर जये।
वलसाली जहाँ माहाँकाली वढे, केऊ गध्रव किन्नर आय कढे ।।६४२
कल वावन वीर मिले किलकै, मधुपाँन कर्यौ तिनसौं मिलकै।
सझ कोटवी डाकन-साकन की, हलकार वढी गन-हाकन की ।।६४३
केऊ नाचत खप्पर लै करमै, भरकै रस तेज पीयै भरमै
केऊ भूत-वितालहू ख्याल करै, जम जालन-तालन ताल जुरै ।।६४४
भख लै केऊ चख्खत भेजन कौं, केऊ तोरत कोर कलेजन कौ।
वहु खावत फिप्फर वुक्कन कौं, टटकोरत आमख टुक्कन कौ ।।६४५

सुर-जोर वढ्यौ असुरायन सौ, सभ कालीय पाय सहायन सौ।
दनुविंद्र की सैन भई दुचती, मग सूरन के रुख सौ मुचती ।।६४६
रवि कालीय तेज तपाय रह्यौ, दसहूदिस आतप जात दह्यौ।
जहाँ आय गयौ दनुँविंद्र जई, हिमकै गिर की मनु आड हुई ।।६४७
तहाँ कालीय लै अगनास्त्र तज्यौ, लखकै रवि ग्रीषम कौ लरज्यौ।
दनुँविंद्र लख्यौ प्रलयाग्न दसा, मुदरास्त्र चलायकै ताहि मुसा ।।६४८
माहाँकाली तज्यौ वरुनास्त्र मतै, गहि गध्रव अस्त्र सौं कीन गतै।
तव काली महेस्वर अस्त्र तज्यौ, वर वैस्नव-अस्त्रहु सौ वरज्यौ ।।६४६
झट काली नारॉयन अस्त्र झिल्यौ, घटकौ रिपु ताककै ताहि घल्यौ।
रथ तै उतर्यौ दनुँविंद्र रसा, द्रग देखत ताही कौं घोर दसा ।।६५०
कर-जोर उभै परनाँम कर्यौ, हथ-जोरीय सौ तिह तेज हर्यौ।
वृह्मास्त्र तज्यौ तव काली वला, झुक वृह्म ही अस्त्र सौ ताहि झिला ।।६५१
दिव-अस्त्र कौं कालीय छोर दयौ, लहिकै दिव-अस्त्र कौं झेल लयौ।
सगती इक कालीय दिघ्घ सजी, तन कौ दनुँकौं तिह ताक तजी ।।६५२
कीय खडन मारकै कडन कौ, मुहमेज भयौ रन-मडन कौं।
लख कालीय पासुपतास्त्र लयौ, चहुँ ओर झलाझल तेज छयौ ।।६५३
अवसाँन दयौ नभ वाँन इही, मत अस्त्र प्रहारहु खेत मही।
जव अस्त्र तज्यौ नहि काली जँही, रसवीर छई पग रोप रही।।६५४

दोहा

कसै रहत हरी-कवच कौ, दाँनव ईस दुरत।
पतिवृत नही विगरै प्रीया, इतनै होय न अंत ।।६५५
वृह्मा कौ वरदाँन वर, काली सुनीयै कथ्थ।
इही अस्त्र सौ अधम इह, होवही निसचै हथ्थ ।।६५६

छद द्वै-अख्खरी

काली नभ-वाँनी सुन कहनी, दनुँ भक्षन लागी जनु दहनी।
पासुपतास्त्र नही कीय प्रेरन, घट दाँनव-केऊ लागी घेरन ।।६५७
खल पकरत ताही कौं खावत, चखनी करत फिरत रद चावत।
खूटन लागी फौज खलन की, जीह लपक मनु सिखा जुलन की ।।६५८

सखचूड काली-कथ सुनकै, चल्यौ सुभट ठट आगै चुनकै ।
लीलन कौ दौरी तिह लारी, इतनै भाग्यौ दनुज अगारी ॥६५६
आय सु तीक्षन फिरचौ जु आडै, गिर सुमेर जैसै पग गाडै ।
दिव्य अस्त्र काली कै दीनौ, काली कै घट पीडन कीनौ ॥६६०
काली खडग लयौ कर कैसौ, ज्वाल-रूप दावानल जैसौ ।
पती दनुजकै सीस प्रहारचौ, ताही दिव्य-अस्त्र सौं टारचौ ॥६६१
काली गृहन करन खल काया, मुख गिर-किंदर कीय महमाया ।
मायक दाँनव कीय तन मोटा, खाय सकी नह पकर खसोटा ॥६६२
मुक्का येक दयौ उर-माँही, घूंम अचेत भयौ तिह घाँही ।
पाव पकर नभ अंतर प्रेरचौ, हटचौ नही रन देवी हेरचौ ॥६६३
कीनी खुदा पीड़ जब काली, जाय भक्ष कीय दाँनव जाली ।
पँहुची जाय तुरत सिव पाँही, जुध की वरनी कथा जहाँही ॥६६४
सिव सुनकै उर भये सुखारी, सगर हित गन सैन सँवारी ।
पासुपतास्त्र गह्यौ सिव पाँनिन, ऊठ चले रनकै अगवाँनन ॥६६५
रतन-विमाँन बैठ तब राजा, सनमुख आयेऊ जोर समाजा ।
जन-जन गन दैतन सम जूझत, येक-येक सौ येक अरूझत ॥६६६
राजा अरु सकर रन रूठे, जाजुल काल उभय जनु जूटे ।
अनुवछछर बीते सत येका, असुर मरे तिह ठौर अनेका ॥६६७
राजा सिवहू जूझत रहे, विमुहा ह्वै नही येकहु वहे ।
ठहरे स्रमत होय निज ठाहर, बीरासन कै गये न बाहर ॥६६८
वृद्ध विप्र कौ वेख वनायै, वँह अवसर श्रीविस्नू आयै ।
जाचन्या कीनी नृप जाँही, माँगहु विप्र होय मन-माँही ॥६६९
दरद मिटै इह कवच दीजीयै, लाभ सुजस कौं भूप लीजीयै ।
माँग्यौ सोइ दीनौ माहाराजा, विप्र दई आसिप जुत व्याजा ॥६७०
भूप-रूप कर श्रीभगवाँना, पहर कवच तन करेऊ पयाँना ।
तुलसी पतिवृत नार तहाँही, जाय मिले रनवास जहाँही ॥६७१
भोग-विलास करचौ सुख भीनौ, छल-वल हरि तुलसी नही चीनौ ।
पतिवृत खडत होत प्रीया कौ, थित रन असुरपती-बल थाकौ ॥६७२
अवसर जाँन सिभु अविनासी, पावक सिखा तेज परकासी ।
मारतड ग्रीषम-रितु माँनौ, सारभूत सब सस्त्र समाँनौ ॥६७३

मारचौ असुर सूल उर-माँही, विषधर सरप जेम विलगाँही।
तन रथ सहित लगत ही तूटौ, विखरत अवइव प्राँन विछूटौ ।।६७४
गोप सुदाँमा-रूप लही गत, पँहुच्यौ सोइ गोलोक-पथ प्रत।
राधाकृस्न चरन सुख-रासी, अभय लह्यौ सरनै अविनासी ।।६७५
सखचूड के हाड समाँना, भये सख भुँव उदध भराँना।
पूजन देवन हेत पवित्रा, सखोदक लेवत सरवत्रा ।।६७६
वसत सख जहाँ तीरथ वासा, पाप विलावत पुन्य प्रकासा।
सेवालय तज सव्द सुनावत, जातै सकल अमगल जावत ।।६७७
वसत लक्षमी निश्चल वासा, वँह तै कवहु न होय उदासा।
श्रीविस्नू जहाँ रहत सहाई, वसत जहाँ-जहाँ संख वसाई ।।६७८
सख-सव्द स्त्री सूद्र सुनावै, जहाँतै रमाँ रूठकै जावै।
इह प्रमाँन जाँनहु इतिहाँसा, मृखाँ रती नहि येकहु मासा ।।६७६
दाँनव मरचौ सवहि मिल देवन, सिव कौ कीनी पूजा सेवन।
आप-आपकौ लहि अधिकारा, सवही लोकन सवहि सिधारा ।।६८०
सिव कयलास गये सुस्थाँना, सव्द करत जय जयत समाँना।
गुन गावत किन्नर गध्रव-गन, माहाँ रिखी भये देव मुदित मन ।।६८१
सखचूड इतीहास सुनायौ, परममुनी नारद सुख पायौ।
तुलसी कौ आख्याँन तहाँही, पूछ्यौ मुनि नाँराँयन पाँही ।।६८२
श्रीदामोदर कपट-सरूपा, भये विप्र जाच्यौ तव भूपा।
दयौ भूप जो कवच दाँन मै, तन सवार लीय तँही त्राँन मै ।।६८३
सखचूड कौ वेख सवाँरचौ, धनुष-वाँन विजई कर धारचौ।
निहसत भेरी और नगारा, पहुचे राजभवन परकारा ।।६८४
वदीजन लागे विरदाँवन, गायन मगल लगी सु गावन्न।
तुलसी पतिव्रत नार तवैही, साझ्यौ तन स्रंगार सवैही ।।६८५
निज जाँन मिली नाराँयन, परम प्रीत की रीत परायन ।।★
जुद्ध-कथा पूछी क्षिन जासौं, तव हरि वात कही इह तासौं।
मै अजेय सिव जाँने मनमै, रीत स्याँम की कीनी रनमैं ।।६८६

★ मूल ग्रन्थ मे दो ही चरण हैं।

देवन भाग दयौ देवन कौं, खित मैं लई राज खेवन कौं।
तुम तीय कह्यौ करी मैं तैसी, कथा फेर पूछत हौ कैसो ।।६८७
रमनी तोहि देखी सुखरासी, उरकी-मुरकी सवै उदासी।
पकर वाँह लीनी परजका, सु रत करन लागे तज संका ।।६८८
कपट-वेख की करकै काया, रिषीकेस रति खेल रचाया।
उठे रमन करकै हरि ग्रातुर, चित विचार तुलसी मति चातुर ।।६८६
इह तौ दगावाज कोई औरें, भोग करयौ मैं रही जु भोरें।
कुहना करी निक्रत रत-काँमी, सठ मेरौ इह नही जु स्वाँमी ।।६६०
पूछन लागी परम प्रवीनी, छल-वाजी कीनी हम चीनी।
ग्रापौ करहु प्रकास ग्रनारी, नहि जाँनत मैं पतिवृत नारी ।।६६१
रिस-वस देखी तुलसी राँनी, प्रगट रूप कीय सारग-पाँनी।
नील-जलद तन पकज नैना, विमल-हास मुख इमृत वैना ।।६६२
जव जाँनी तुलसी विस्नू जीय, पती रमाँ नाँहिन मेरे पीय।
मुरछत ग्राय परी धर-माँही, पतिदेवत मत गयौ पलाँही ।।६६३
चेत पाय हरि कौ मुख चितवत, प्रभू विगारयौ मेरौ पतिवृत।
ग्रकुलावत बोली पुन ऐंसै, तुमरौ हीय पाँहिन है तैसै ।।६६४
पाहन ह्वैकै जगत पुजावहु, प्रभू कपट कौ इह फल पावहु।
मेरौ पति छल-कर तुम मारयौ, वचक ह्वै पतिवरत विगारयौ ।।६६५
करयौ परायै हेत कुकर्मा, धिक-धिक नीत तुमारौ धरमा।
इतनी कहिकै रुदन उचारयौ, धर धीरज प्रभू सातक धारयौ ।।६६६
तुलसी के इह वचन सुने तव, करुनानिध इम वोले केसव।
जोग-जुगत तै मोर करयौ जप, तुम हित संखचूड कीनौ तप ।।६६७
भोगी सखचूड़ तोहि भाँमिन, करनी-फल लीनौ सव काँमिन।
ग्रव हम दरस दीयौ तुम ग्राई, भूंड -देहु मत कहहु भलाई ।।६६८
दिव्य-देह धर हम सुख दीजे, लिछमी ज्युँही लाभ तुम लीजै।
पुहमी भरत-खड इह पावन, नदी होउ तुम पाप नसावन ।।६६६
गिलका नाँम जगत जस गावहि, ग्ररथ धरम ग्ररु काँम उपावहि।
इह तन केस होय तरु ऊगहि, पूजा-हित तुलसी-दल पूगहि ।।१०००
देवन कौं चढहै सुख-दाँनी, पवित्र माँन पुज्जहि जग-प्राँनी।
वसहै देव जहाँ तुम वासा, करहै तीरथ सवही प्रकासा ।।१००१

स्वर्ग मृत्यु पाताल सहेता, गऊलोक वैंकूंठ गृहेता।
थपहै जहां तिहारौ थांना, नित वसहै जहाँ पद-निर्वाना ।।१००२
विरजा नदी-तीर तुम वसहू, जंमुना-तट पै लोजं जसहू।
मडल रास वृंद्रावन-माँही, चदनवन माधववन छाँही ।।१००३
केतकवन मालतीवन कुदन, वसहु मल्लका वन जग-वदन।
पुन्य भूंमका जहाँ पवित्रा, सुवस वसहु तुलसी सरवत्रा।१००४
जहां पत्र गिरहै तोहि जाई, वँहा वसहि सव तीरथ आई।
तुलसी-दल लैहै जल तामै, अत अभिसेख पीयै अरु पामै ।।१००५
दुजन दयौ जनु जिग मै दांना, सव तीरथ मनु करयौ सिनांना।
जिग मै दीक्षत भयौ जु जोई, तुलसी हरि कौं चाढत तोई ।।१००६
कारतक मास विचार कारना, धरै हरी की पुज्ज धारना।
तुलसीदल चाढै हित तरनै, विगत ताहि फल ही की वरनै ।।१००७
दस सहस्र दुजकौं गऊ देवै, लाभ पुन्यकौ सोइ जन लेवै।
मरन-समय दल मुख मै मेलै, प्राँनी असह पापकौं पेलै ।।१००८
वसत लोक वयकूंठ विचाला, काल-चाल नही करै कराला।
नित्य पीयै जो तुलसी-नीरा, अनंत जिग्य फल लहै अपीरा ।।१००९
कर तुलसी लै मजन कीजै, वास जाय वैंकूंठ वसीजै।
तुलसी-माला धरै जु तनमै, विचरै ग्राम तथा कोऊ वनमै ।।१०१०
पैंड-पैंड जिग कौ फल पावै, जनम-जनम के अघ मिट जावै।
तुलसी निकट कोऊ अततार्इ, सपथ करै मिथ्या सरसाई ।।१०११
वृह्म दिवस लग नर्क वसावै, विदुष वात यह सत्य वतावै।
करै प्रतग्या जो जन कोय, तुलसी-दल लै करमैं तोय ।।१०१२
पालै नही नर्क जो परै, सूर-चद जौलौं दुख सरै।
पूरनमा रू अभास पवित्रा, वरतै जव संक्रांत विचत्रा ।।१०१३
द्वादसी अरु रविवार दिखावै, अग लगाय तेल कौ आवै।
संध्या रात दुफैर समांना, सुच विन कीनै तथा सिनांना ।।१०१४
तुलसी-दल कोऊ मजर तोरै, वूढै नरक आप कुल वोरै।
धीरज सौं कहु रहै धरेई, त्रय निस है पवित्र दल तेई ।।१०१५
स्राध वरत अथवा-क सिनांना, करै सुक्रत अथवा-क करांना।
उत्तम फल पावै अधिकारी, विस्नु कहत तुलसीहु विचारी ।।१०१६

तरवर अधिष्टात्रि है तूँही, जग मैं कल्पवृक्ष कैं ज्यूँही।
काँमी पूरन करन काँमना, इह तुलसी की परम आँमना ॥१०१७

दोहा

लेव वास गोलोक मैं, कृस्न-सग अनुकूल।
सुख विहार करहू सदा, भवको संसय भूल ॥१०१८
अधिप्टात्री गल आपगा, गलका रहहै गात।
मोहि रूप सौं उदध मिल, खित विस्तारहि ख्यात ॥१०१९

छंद द्वै-अरखरी

हम ही भरथ-खड तुम हेतू, सालग्राँम होय सुख सेतू।
तट तेरै रहिहै विच तोई, ग्राँवाँ मैं अपनौ तन गोई ॥१०२०
सालग्रॉम जपहि संसारा, पूजन कर उतरहि भव-पारा।
कोटन कृमी धारकै काया, द्रष्टा तीक्षन-रूप दिखाया ॥१०२१
आयुध-जुत मूरत ह्वै ऐहै, लाखन संत पुज्ज हित लैहै।
रूप कहत तिह मूरत रूरी, पुन्य-प्रवाह वढहि जग पूरी ॥१०२२
जुदी-जुदी ताकी सव जाती, वरनत फल अरु गुन-विख्याती।
येक छिद्र ह्वै मूरत आई, च्यार चक्र जामैं, परछाई ॥१०२३
जामैं मेघवरन दुति जागै, सो लिछमी नारॉयन-सागै।
मालाकार छिन्न जिह माँही, निसचै कर होवे कहु नाँही ॥१०२४
छिद्र दोय अर चक्र च्यार है, वँह रघुवर मूरत उदार है।
हृस्व-रूप ह्वै चक्र होत है, वँह वाँमन मूरत उदोत है ॥१०२५
चक्र दोय अत लघु प्रतिछाया, रस्व रूप वनमाल रचाया।
श्रीधर रूप विचारहु सोई, हितू गृहस्थन जनके होई ॥१०२६
दोय चक्र निस्तुल दामोदर, माला रहत सु रूप मनोहर।
लगे वाँन कौ चिन्न लीयेही, वाँन रु तरकस चिन्न वसैही ॥१०२७
कहत राँम रग्ग तिह प्रतिकाया, दीरघ लघू न रूप दिखाया।
सात चक्र की मूरत सोई, हित जुत छत्र विभूषत होई ॥१०२८
रुचर राज राजेस्वर-रूप, भवन-वीच पूजै जिह भूप।
स्थूल-रूप नव-चक्र सहेता, वपु अनत भाखत ततवेता ॥१०२९

अरथ धरम अरु कांम उपावै, पूजा करै मोक्ष-फल पावै।
चक्राकार चक्र दोय छाजै, विच मैं गोपद चिन्न विराजै ॥१०३०
चिन्न लक्षमी ह्वै प्रतिछदा, मधुसूदन तिह कहत मुनिंदा।
कहत सुदर्सन जिह सह कोऊ, जांनत हरि-पूजा कौ जोऊ ॥१०३१
येक चक्र ह्वै गुप्त अकारा, नांम गदावर है निरधारा।
दोय चक्र वंह मुख रुख देखौ, वरनत तिह हयग्रीव विसेखौ ॥१०३२
विस्रत मुख ह्वै चक्र विराजै, रूप भयांनक नरसिंघ राजै।
जिह सेवै वैराग जगावै, पुन विराग-सौ मुक्ती पावै ॥१०३३
वनमाला को चिन्न विसेखै, लिखमीपति नरसिंघ जिह लेखै।
सो गृहस्थकै लायक सेवा, भाखत है नरसिंघ सभेवा ॥१०३४
द्वार स्थांन चक्र है दोई, समस-रूप लिछमी जुत सोई।
वासुदेव प्रतिकाय विचारै, अत सुखदायक सत उचारै ॥१०३५
सुक्षम चक्र छिद्र-जुत सोई, जिह प्रद्युम्न कहत है जोई।
प्रतिमा-रूप चक्र-द्वै पैसै, येक-येक सौ लगे जु ऐसै ॥१०३६
पीठ वडी सकर्पन पेखौ, लायक पुज्ज गृहस्थ न लेखौ।
पीनवरन वृति सोभन पूरे, रूप वही है अनुरध रूरे ॥१०३७
छत्राकार होय प्रति छाया, मिलै पुज्ज-सौं राजहु माया।
पूजै गोल लक्षमी पावत, भेद असुभ जामै कछु भाखत ॥१०३८
हांन लढी आकार जु होवै, सुई लरीया सौ मृतु हुय सोवै।
मुख कराल सौ दारद मेला, भूरी करै हांनकै भेला ॥१०३९
फटे चक्र सौ व्याधी फेरा, घट फूटै तै मरतक घेरा।
वृत अरु तास प्रतिष्टा-विधी, स्राध देव-पूजन की सिधी ॥१०४०
सालग्रांम निकट घर सावन, उत्तम जांनहु-सफल अराधन।
पूजा सालगरांम प्रचारै, स्नांन करयौ मनु तीरथ सारै ॥१०४१
अभिभृत स्नांन करयौ जिग आई, तप वृत तीरथ सजमताई।
वेद करयौ जनु पाठ विचारा, सेवा सालगरांम संभारा ॥१०४२
चरनोदक जन लेत चढाही, जीवन-मुक्ति जांनीयै जाही।
विवध रीत पावत फल वांचा, सपरस सौ तीरथ फल सांचा ॥१०४३
अत अवस्था मोक्ष उपासी, वैकूंठपुर कौ हुवै जु वासी।
हरिकौ दास होय जहां विहरै, ठाहर तंही अचल हुय ठहरै ॥१०४४

गोहिथ्या आदिक अघ गावै, वृम हथ्यादिक दुरत विलावै।
प्रथवी पद-रज होय पुनीता, जग मैं आय जनम जन जीता ।।१०४५
चरनोदिक की सुनै जु चरचा, अनँतदेव कीनी जनु अरचा।
पित्र तरै ताकौ परवारा, प्रभू-पद भेटै वारनपारा ।।१०४६
सपथ करै धर सालगराँमा, वाचा मिथ्या आँन विराँमा।
परै नरक अभिअतर प्राँनी, कहत वेदवित सत्य कहाँनी ।।१०४७
कौल करै पुन कोऊ कैसौ, जाकौं नही निभावै जैसौ।
परै नर्क मै सोऊ प्राँनी, कहत वेद इह सत्य कहाँनी ।।१०४८
सालगराँम चढे दल सोई, करै वियोग भूलकै कोई।
वाँमा कौ तिह होय विछोहा, मिटै नही भ्रम ताही मोहा ।।१०४९
करै विजोग सख दल केरा, फिरै नारकी भीतर फेरा।
हीन भार जासौं पुन होवै, वार-वार तन पाय विगोवै ।।१०५०
सालगराँम सख दल तुलसी, हिल-मिल राखत तिह प्रति हुलसी।
सो ग्यांनी जानहु ससारा, नाँहिन ससय है निरधारा ।।१०५१
सख तुलसीदल सालगराँमा, येक ठौर राखत अभिराँमा।
परपाटी है आद पुनीता, सत वखाँनत ख्यात सुमीता ।।१०५२
इह कहि हरि चाले निर्ज ओका, धरचौ दूर तुलसी उर धोका।
हरिकै लोक गई हरकाती, दिव्य देह कौ रूप दिखाती ।।१०५३
निश्चल हुई च्यार हरि-नारी, पद्मा सरस्वति गगा प्यारी।
ऐसै ही तुलसी अरधगा, प्रीत-रीत जासौ परसगा ।।१०५४
तुलसी है गलका नद तेई, माँही सालगराँम मिलेई।
तट पै पंतेवरन है तनके, घने सरन मै वरन जु घनके ।।१०५५
सालग्राँम तुलसी की सेवा, भल प्रकार भाखत मुनि भेवा।
ध्याँन धारना जिह विध धरीयै, अस्तुत सास्त्र-उकत उच्चारीयै ।।१०५६
वृदा वसत सु वृदावन मै, सुखद मजरी पात सघन मै।
वृदावन की महमा वरनी, कलुष नसावन मगल करनी ।।१०५७

दोहा

सुन तुलसी आख्याँन सव, कालकर्क दै काँन।
कीय नाराँयन कारनै, प्रस्न जोर जुग पाँन ।।१०५८

सावत्री आख्यान सुभ, वरनहु सकल वृतत।
इह कैसी विध अवतरी, माता वेद महत ।।१०५६

छंद पद्धरी

नारांयन नारद प्रति निहार, वरनन सावत्री कीय विचार।
पूजा कीय वृह्मा प्रथम-पोत, उर भयौ ग्यांन तातैं उद्दोत ।।१०६०
पुन वेदन गन पुज्जे सु पाव, पडित समूह पायेऊ पमाव।
पुन भरथ-खड में नृप पुनीत, अस्वापति पूजी मति अधीत ।।१०६१
वारता सुनहु ताकी विसेस, द्रढमती पती सोइ मद्र-देस।
रांनी सु मालती तँही राज, लावन्य पतीव्रत्त लएँ लाज ।।१०६२
विस्नूकै लिछमी जेम वाँम, करता पति के मति सुभग काँम।
सतांन भयौ ताकै न सुद्ध, वासिष्ट वुलायेऊ रिखी प्रवुद्ध ।।१०६३
भाख्यौ सु मर्म की वात भेव, माहाँ रिखी दई मति अवसमेव।
जपनै गायत्री लगी जाप, तन-मन सौ साधन करत ताप ।।१०६४
केतक दिन वीते करत कष्ट, अभिलखत भयौ नही सिद्ध इष्ट।
चँह रानी चाली ग्रेह ऊठ पनकौ तज वनकौं देय पूठ ।।१०६५
दुखत रांनी कौं नृपत देख, विसवास दयौ ताही विसेख।
सुत के हित तप कौं लग्यौ सोय, गायत्री जप कौं हृदय गोय ।।१०६६
पुस्करारण्य पावन पुनीत, जहाँ बैठौ इद्री मोह जीत।
सत वछ्छर वीते तँह समांन, धारचौ गायत्री अचल ध्यांन ।।१०६७
आकास भई तव गिरा ऊद्ध, सुनीयै नृप वाचा ग्यांन सुद्ध।
दस लाख करहु जप जुक्त दाय, मिलहै सावत्री महमाय ।।१०६८
मुन पारासर ताही सुकांम, घर धीरज आये राज-धांम।
पूजा मुनि कीनी नृप तपाय, तत गायत्री पूछ्यौ जु ताहि ।।१०६९
उपदेस दयौ मुनि नृपत येह, साधन गायत्री निसदेह।
जप गायत्री इक जपै जाप, पुद्गल इक दिन के मिटै पाप ।।१०७०
दस वार जपै दिन-रात दोख, मिट जाय जीव के पाय मोख।
सत वार जपै इक मास सुद्ध, इक सहँस वरख गत मिलै उद्ध ।।१०७१
क लक्ष जपै इक जन्म अग, भव-तरै पाप ह्वै जाय भग।
पुन जपै लक्ष दस पाय पोख, दूसरै जम्म के जाय दोख ।।१०७२

सौ लक्ष जपै जौ क्रीया सुद्ध, वहु-जन्म-पाप मेटै प्रवुद्ध।
दस कोट जपै अघ जाय दूर, जाती दुज पावै गति जरूर ॥१०७३
मणी-फटक कमल सित वीजमाल, वसु तीरथ देवालय विचाल।
दल कमल तथा चल दलहु देख, विध-जुक्त मेल तापै विसेख ॥१०७४
लहि गोरोचन तापै लगाय, जप गायत्री हीय मैं जगाय।
लै पचगव्य अरु गगनीर, छिरकै तिह ऊपर तथा छीर ॥१०७५
सोगध पुस्प कर ससकार, माला कौं भेलै कर मभार।
जप गायत्री कौ करै जाप, पुद्गल के तासौं जाय पाप ॥१०७६
माला कौ नांहिन मिलै मेल, भट दक्षन कर कौ उर्ध भेल।
आकार फनी-फन अगुरीय, गाढी मिलाय राखै गरीय ॥१०७७
सावत्री साखा पेढ साज, करनै जप लागै प्रथम काज।
दक्षनावर्त तर्जनी दाय, साधै अनुक्रम सौं जप सुभाय ॥१०७८
जप करै लाख दस वैठ जाग, रुज काँम लोभ मिट जाय राग।
त्रय-जन्म पाप ह्वै दूर जाहि, दरसन सावत्री के दिखाहि ॥१०७९
आराधन करीयै तुमहु येम, नित सध्या-वदन धार नेम।
क्रम ऊप मधदिन सधकाल, ततवेता सोई भाखत त्रकाल ॥१०८०
सध्या नही साधत विप्र सोय, सूद्र सौं नीच जाँनहु सकोय।
सध्या सौं व्रांमन होत सुद्ध, पडता ताहि जाँनहु प्रसिद्ध ॥१०८१
पद-रज सौं होवत धर पवित्र, सव रीत ताहि गँनीयै सपुत्र।
महरिसी ताहि कौ लेहु माँन, मिट जाय अग पातक महाँन ॥१०८२
जीवत हु मुक्ति तिह गनहु जीव, सध्या त्रकाल साधक सदीव।
सध्या त्रकाल नही करत सेव, द्वज पित्र न पूजा लहत देव ॥१०८३
प्रक्रती मूल पूजा न पेम, जोई दुज अजगर सर्प जेम।
विध विस्नु मत्र सध्या विहीन, है इग्यारस के वरत हीन। १०८४
हरि के प्रसाद नही करत हेत, नैइवेद विना ही ग्रास लेत।
हलकारा ह्वै कै करत हेर, सूद्रांन्न खाय जो पाव सेर ॥१०८५
मुरदा लैजावत विच-मसाँन, सूद्रीपति होवत सनिधाँन।
करत जोर सोई सूद्र केर, हित जग्य करावत सूद्र हेर ॥१०८६
लेखनी कमाई करत लाग, खल करत नोकरी वाँध खाग।
कन्या कौ विक्रीय करत कोय, स्त्री विधवा कौ अन खाय सोय ॥१०८७

हीन जो पुत्र कोऊ नार होय, रजसुला जाच लेवत रसोय।
कुट्टन-पन जोई करत काज, वित देकै लेवत फेर व्याज ।।१०८८
विद्या की विक्रीय चरत वैन, सूर्योदय-वेला करत सैन।
देवी विन दीनै वलीदाॅन, मच्छरी पल खावत मोद माॅन ।।१०८९
द्वज वेद-विहत जाॅनहु न देख, पारिंद्र सर्प-रूपी परेख।
राजा पारासर मुनीराज, उपदेस दयौ मेटन अकाज ।।१०९०
सावत्री सुनकै तत्व सार, विध-जुक्त करी सेवा विचार।
वरदाॅन दरस दीय तँही वेर, अग्याॅन मिटचौ राजा अँवेर ।।१०९१
नारद गायत्री सुन्यौ नेम, पूछ्यौ नाराॅयन प्रस्न पेम।
गायत्री पूजा कहहु गूढ, पावै गत जत सौ मति पढ़ूढ ।।१०९२
मिल सुक्ल त्रयोदसी जेष्ट मास, अथवा भूतिष्टा अनायास।
आरभ करै उतपत उचार, पुन वर्ष चतुर्दस लगै पार ।।१०९३
नैवेद चढावै फल निकाय, चवदै प्रकार के चित्त चाह।
पुन करै पुज्ज षोडस प्रचार, सब रीत वेद-विध ससकार ।।१०९४
गनपती पूज गौरी गिरीस, आदीत अगन अरु रमाईस।
आवाहन घटकौ थाप इष्ट, ततवेता धारै ध्याॅन तिष्ट ।।१०९५
इह सावत्री कौ ध्याॅन आद, वरन्यौ प्रवुद्धजन निर्वखाद।
मध्यान्दिन साखा कह्यौ माॅहि, अस्तूत पुज्ज विध मत्र आॅहि ।।१०९६
सावत्री सोवून रग सुद्ध, परकास कोट सूरज प्रसिद्ध।
करता रत्नन के अलकार, मुसकाॅन मंद अधुरन मझार ।।१०९७
सुद्धासुक पहरै सुच सरीर, धारना अनुगृह धरै धीर।
सुखदाता मुक्ती सात स्रूप, अनुमाद सिद्धदायक अनूप ।।१०९८
तत सपत-दायक जत्र-तत्र, वेद की अधिष्टात्री विचत्र।
खटसास्त्र-रूपनी जँही ख्यात, महँमाय अजोनी वेदमात ।।१०९९
धावै इह करकै अचल ध्याॅन, नैइवेद चढावै सनिधाॅन।
धर वीरज सिरपै हाथ धार, मन-वृती लगावै घट मझार ।।११००
पूजा षोडस विध अत पुनीत, रचना तिह वरनी प्रथम रीत।
करकै पुन कीजे नमसकार, सब मूलमत्र-जुत ससकार ।।११०१
करकै स्तोत्र कौ पाठ कृत्त, विप्र कौं दच्छना देय वित्त।
इह मत्र पढै हीय कर उछाह, श्री ह्री क्ली सावत्री सुहाह ।।११०२

अष्टाक्षर जाँनहु जाप येह, निगमागम भाखत निसदेह।
माहादेवी सावंत्री जु मात, गोलोक प्रगट भी जवही गात ।।११०३
श्रीक्रस्न सनातन रूप स्याँम, विध हू की हौवन कह्यौ वाँम।
आई न वृह्म के लोक ऐन, वर्नना क्रस्न कीय विमल-वैन ।।११०४

मूल श्लोक

सच्चदानद रूपे त्व, मूल प्रक्रत रूपिनी।
हिरण्यगर्भ रूपे त्व, प्रसंन्ना भव सुदरी ।।१
तेज स्वरूपे परमे, परमाँनंद रूपिनी।
द्विजातीनां जाति रूपे, प्रसन्ना भव सुदरी ।।२
नित्ये नित्य प्रिये देवि, नित्यानंद स्वरूपिनी।
सर्वमगल रूपे च, प्रसन्ना भव सुदरी ।।३
सर्व्व स्वरूपे विप्राँणा, मत्र सारे परात्परे।
सुखदे मोक्षदे देवि, प्रसन्ना भव सुदरी ।।४
विप्र पापे धमदा हाय, ज्वलदग्नि सिखोपमे।
वृह्मतेज प्रदे देवि, प्रसन्ना भव सुंदरी ।।५
कायेन मनसा वाचा, यत्पाप कुरुते नर।
तत्त्वत्स्मरनं मात्रेन, भस्मी भूत भविस्पती ।।६
—इति मूल स्तोत्र

दोहा

करी स्तुत इह श्रीकिसन, सावत्री सुन स्राँन।
वृह्मलोक वृह्मा विनय, भई सुसोभत भौंन ।।११०५
सावत्री सोइ मात सुभ, अस्वापति अवरेख।
पूजा कर दरसन परस, लीय मन-वचत लेख ।।११०६
याद करहि आख्यॉन कौं, संध्या-काल सदीव।
महा घोर पातिक मिटै, जाय मुक्त कौं जीव ।।११०७

छंद पद्धरी

सावत्री ह्वै कै साँनुकूल, मूरती सनातन प्रक्रत मूल।
दरसन दै परसन करचौ देख, वरदाँन लेहु राजा विसेख ।।११०८

दपत अभिलाखा चहत दोय, हित राँनी कौ मम सुता होय ।
चाहत तुम अगज होय चारु, परवार वस-वृद्धी प्रकारु ।।११०६
सिध कारज ह्वै है उभय साच, वरदाँन इँही मम सत्य-वाच ।
सावत्री कहिकै गिरा सुद्ध, वँह वृह्मलोक कौ गई उद्ध ।।१११०
राजा पुन आयौ राज-थाँन, मिल राँनी सौ हीय-मोद माँन ।
सुख-विलसन लागे उभय सग, राजा अरु राँनी प्रीत रग ।।११११
भई गर्भवती तव राज-भाँम, निज ग्रेह ताहि मालती नाँम ।
ऊपजी प्रथम कन्या अनूप, सुखदायक सावत्री सरूप ।।१११२
लछछन सुभ सावत्रहि लेख, दोय सावत्रीहू नाँम देख ।
दुति वढी चद्रमा जेम दोज, उर कढे जवही उन्नत उरोज ।।१११३
व्याही तिह राजा सत्यवाँन, जिह दुमतसेन कौ पुत्र जाँन ।
लैगयौ आपने ग्रेह लार, पत्नी-पति वाढ्यौ इधक प्यार ।।१११४
इक वर्ष रहे सुख सौ अगार, हित-अहित हुवौ वस होनहार ।
भेज्यौ वन ताही कँवर भूप, अत लावन कौं फल दल अनूप ।।१११५
लै सावत्री कौ गयौ लार, मिल विहरत दपत वन मझार ।
फल लैन चढयौ अथवाक फूल, भुँवरुँह साखा सौ पर्‍यौ भूल ।।१११६
तूटगौ अग ताकौ तँहीज, छूटगौ प्राँन मन गयौ छीज ।
अगुष्ट प्रमाँनै मूर्ति येक, वपु ताही सौ निकसी विसेक ।।१११७
जमराज गयौ लै पुरी जास, तव सावत्री हीय भई त्रास ।
लीनी जमराजा तँही लार, पतिव्रता आप पति-पाय प्यार ।।१११८
सो गई धर्मराजा समीप, दगदगत तेज जनु सिखा दीप ।
जमराजा दीनौ देख जाव, स्वय ग्रेह जाय पहुँचहु सताव ।।१११९
पपु माँनव तुव जौलौं वितै-न, हम लोक-वीच अधकार है-न ।
पति मर्‍यौ तोर इह अवध पाय, पीछौ न मिलै कोऊ उपाय ।।११२०
वस कर्मही के जोग रु विजोग, भोगै सु कर्म सौं जीव भोग ।
अमरत्व कर्म ही के अवार, सरजता कर्म माँनव सँसार ।।११२१
उरवोगत कर्म हो देत आय, अधगती कर्म ही के उपाय ।
तातै भृम त्यागहु हृदय तीय, दरसत उपाय नाँहिन दुतीय ।।११२२
जव सावत्री कर उभय जोर, वोली सुधर्म वाचा वहोर ।
है कर्म कहा कहीयै हजूर, कोउ सोम सुधा है कोऊ करूर ।।११२३

होत है निमत किह लाय हेत, देही है कोनै कोन देन।
करता कर्मन की कही कोन; ग्याँन है कोन इह मिथर गोन ॥११२४
पुन बुद्धि कहा प्रानीन प्राँन, इद्री समूह को देव आँन।
है भोग कोन अरु करन हार, ससार कोन करता सँघार ॥११२५
जगनाथ कोन इह क्षुद्र जीव, सुख-दुख अनुसरना जो सदीव।
सुन सावत्री की प्रस्न स्रॉन, जमराजा उत्तर दयौ जाँन ॥११२६
वेद मैं धर्म जो कह्यौ वेस, है कर्म जिही आस्रत हमेस।
जिह वेद विहत सुभ-कर्म जाँन, है निपध वेद सोइ कार्क हाँन ॥११२७
है देव सेव सकल्पहीन, उत्तम करनी आतम अवीन।
निर्मूल कर्म कौं करत नास, पुन होत भक्ति जासौं प्रकास ॥११२८
भक्ती सौं उपजै वृह्म-भाव, अहमती होय कर्मन अभाव।
निर्लिप्त रूप ह्वै निराकार, प्राँनी भवसागर होय पार ॥११२६
पुन भक्ति सोइ ह्वै द्वै-प्रकार, सरगुन इक निर्गुन तत्व-सार।
चित वैस्नव सरगुन चहत चेत, हरि-रूप प्रदा सौं जाहि हेत ॥११३०
निर्वांन वृह्म-वित चहत नित्त, आतम-विन सवही है अनित्त।
पर्मातम सवही सौं परेह, अर कर्मवीज-रूपी अछेह ॥११३१
फल देत कर्म कौ सोई फेर, हित कर्म-सरूपी जिही हेर।
जव निकस जात पै इही जीव, सो परी रहत वाकी सदीव ॥११३२
द्रग गोचर ताकौं कहत देह, उतपत्त तत्त है पच येह।
रचना स्रष्टी विध सूत्र-रूप, सव भाखत है आप्रत सरूप ॥११३३
करता कर्मन को जीव क्लीव, सुख-दुख कौ भोगत जो सदीव।
जिह अतरजाँमी मध्यजीव, सरवग्य आतमा रूप सीव ॥११३४
भोग कौं करावत सोई भाँन, साखी-सरूप प्रेरक समाँन।
भाखत सु सुभासुभ विभव भोग, जग निस्क्रत मुक्ती कहत जोग ॥११३५
सत-असत कर्म नाना-सरूप, भेद कौ वीज है ग्याँन भूप।
नाना प्रकार विसयन निदाँन, जाही विभाग करता सुजाँन ॥११३६
जिह भेद वीजहू कह्यौ जात, वुद्धी विवेचना सहित वात।
वेद मै कहत है ग्यॉन वीज, करता विचार जाही कहीज ॥११३७
प्राँनी वल-रूपी कहत प्राँन, वायु के भेद मै जिह वखाँन।
इद्रीयाँ माँहि जो प्रवर आद, वर्नत है ईस्वर निर्विषाद ॥११३८

कर्मन प्रेरक कौं मन कहंत, चेसटा रहत ह्वैकै चलत।
चख कर्न नासका तुचा चाहि, जिम्या-जुत पाँचू गनहु जाहि ॥११३९
इद्री प्रैरक है देह येह, लेजावत जित-तित विसय लेह।
कर्म कौं करावत चाह् काँम, मित्रहू रूप सत्रू मुकाँम ॥११४०
सुख-दुख होत है जाहि सग, प्राँनी भुक्ता है निह प्रसंग।
रवि पवन धरा वृहमाद-रूप, इद्रीन देवता इह अनूप ॥११४१
देही रू प्राँनधारक दुतीय, जाही कौ सवही कहत जीय।
व्यापक है निर्गुन-रूप वृह्म, प्रकृत सौं परे परमात्म पर्म ॥११०२
जमराजा दीने इते जाव, सुन सावंत्री प्रस्नन सताव।
तुम ग्रेह जाहु इम कह्यौ ताहि, समवरती पतिवरता सराहि ॥११४२

दोहा

वोले जमराजा वहुर, सावंत्री सुन स्याँन।
पूछे ते जितनै प्रसन, दीय हम उत्तर दाँन ॥११४४
लोट जाहु घर कौं लली, गहहु हीया मे ग्याँन।
मति, मतिवारै माँनुखी, सुकृत करहु सयाँन ॥११०५

छद है-अरखरी

समवरती मुन कथा सयाँनी, वोली पुन सावत्री वानी।
पति-विन सकल सुंन्य परिवारा, राखै कवन मोर रखवारा ॥११४६
तुम जैसे ग्याँनीन त्यागकै, भत्र-विच जाँऊ कहाँ भागकै।
को अक्रत को सुकृत कहीयै, नाना-जोन माहि निरवहीयै ॥११४७
स्वर्ग कोन कर्मन तै मावै, वसै नर्क मै किह क्रम वाधे।
मुक्ति कोन कर्मन कै माँही, गरु-भक्ति किह कर्म गहाँही ॥११४८
रहै कोन कर्मन तन रोगी, जाँनै जुगत कोन क्रम जोगी।
जीव होत किम दीरघजीवी, अल्प-आयु किम होत असीवी ॥११४९
अंध पंगुला अवगुन आदू, प्राँनी कैसै गहत प्रमादू।
हिंसक चोर कोन अघ होवै, सुख मै कवन कर्म सौं सोवै ॥११५०
दुखी होत पुन कोन दोख सौं, मन राचत नही कवहु मोख सौं।
कोन कर्म की उक्त कहाँही, विस्नु-लोक गोलोक वसाँही ॥११५१

पुन वृहमत्व होत किम प्रापत, तप सेवत कैसै तन तापत।
किते प्रकार नारकी कहीयत, सव अघ-जुक्त ताड़ना सहीयत ।।११५२
किते काल जहाँ रहत क्रतघनी, समवरती में चाहत मुनी।
व्याध-अाध कौ कवन वृतता, कहहु जगत हित नाथ क्रतता ।।११५३
कथा सुनी सावत्री केरी, वोले धर्मराज तिह वेरी।
कर्मविपाक कथा सुख-करनी, वेदन मै वेधा सोइ वरनी ११५४
कहत सोय तोही मै कन्या, उपजै जासौ ग्याँन अनन्या।
सनकादिक अादक सुग्याँनी, जैसी मै तेरी मति जाँनी ।।११५५
करी प्रकट सावत्री कला, भव चाहत सावत्री भला।
लिखमी जू विस्नू-उर लागी, सची इद्र ग्रह जेम सभागी ।।११५६
भव अरधग्या जेम भवाँनी, रवि कै ज्यूँ सग्या है राँनी।
चद्र-ग्रेह गेहिन चिव छाई, मदन जेम रति मतो मिलाई ।।११५७
अदिति जेम कस्यप अनुरागी. जैसै स्वाहा सुचि सग जागी।
सुधा पित्र पति जोर सुहाई, गोतम संग अहिल्या गाई ।।११५८
देवसैन का स्वाँमी दो है, वरुनाँनी जिम वरुन विमोहै।
निवसत जग्य दक्षना नारी, प्रथमी ज्यूँ वाराह कौं प्यारी ।।११५९
सत्यवाँन सौं करकै सगा, यैसै ही होवहु अरधगा।
त्रीयन माँहि ह्वै नाँम तुमारौ, ह्वैहै इह वरदाँन हमारौ ।।११६०
इतनै ही पंहै मति अौरं, कहै देहु कहा चित्त सकोरै।
वर कछु चाहत अौर वसेखी, देत तोहि अवचल मत्ति देखी ।।११६१
-समवरती सुन वचन सुधा-सम, जाब दयौ सुनीयै राजा जम।
सावत्री जाँनहु ध्रम सेतू, अभिलाखा नही चहत अहेतू ।।११६२
जातै लाभ होय जग-जीवा, दरसावहु सोइ वात दईवा।
मोहि भलौ ह्वै पाछै माँगत, ताही कौं सुनलेहु कहत तत ।।११६३
सत्यवाँन पति मोहि सहाई, जाही सग वसू मै जाई।
सुत सत ह्वै दीर्घायु समाँना, वढै जगत परवार विधाँना ।।११६४
इक सत भ्राता होय उदारा, पिता अधिक वाढै परवारा।
अघ सुसर कै नेत्र अनूपा, भोम मिलै छूटी सोइ भूपा ।।११६५
पति-सग अत अवस्था पाँऊँ, वास जाय वयकूंठ वसाँऊँ।
लक्ष वरप पाछै इह लीजै, कछू वारता अौर गहीजै ।।११६६

कर्मविपाक कथा सुख-करनी, वेदन मैं जैसी कुछ वरनी।
वरतत है जाही समवरती, ताहि कहहु जग डूवत तरती ॥११६७
जीव सकल ताही गत जाँनै, विस्व अखल संवाद वखाँनै।
सुनी चहत मैं आप सुनावौ, मेरे मनकौ भरम मिटावौ ॥११६८
सुन जमराजा कथा सुहावन, पढनै लगे जगत-हित पावन।
हित अभिलाषा सफल जु ह्वैहै, लाभ सकल सवही विध लैहै ॥११६९
कर्मविपाक कहँत हू करनी, निगम प्रमाँन जीव निस्तरनी।
कर्म सुभासुभ जो कछु करता, भरथ-खड मैं प्राँनी भरता ॥११७०
पुन्य-क्षेत्र है इही पुनीता, भोगत भोग हरख अरु भीता।
सुर आसुर गधर्व निसाचर, कर्मन के अधिकारी किंकर ॥११७१
पसु आदिक नही पुन्य न पापी, थिरा मृजाद विरचन थापी।
माँनव कर्म करत सोई माँनै, जग के करम सुभासुभ जाँनै ॥११७२
लागत कर्म मनुज तन लारै, तेई जीव डुवोवै तारै।
करै सुभासुभ जव नही करनी, वँही भक्ति पावै ऊधरनी ॥११७३
सुभ कर्मन सौ स्वर्ग सिधावै, जीव असुभ सौं नर्क न जावै।
भ्रमत रहै ज्यूँ उपजै भर्मा, करै असुभ-सुभ प्राँनी कर्मा ॥११७४
तातै सकल कर्म कौं त्यागै, येक भक्ति सौं चित अँनुरागै।
दोय भाँत भक्ती गत दैनी, निज पद विस्नूलोक-निसैनी ॥११७५
सगुन-निगुन दोई वृह्म-सरूपा, काढत भर्म मोह सौ कूँपा।
दुखी-सुखी कर्मनकै दावै, निश्चल भक्ती कर्म नसावै ॥११७६
भ्रमत कर्म सौं जे मति भौरै, जगनाथ-पद प्रीत न जोरै।
पगुल अध होत है प्राँनो, जिन हरि-भक्ति हृदय नहि जाँनी ॥११७७
वर्नत ताहि विसेख वृतता, अघ अरु अनघ आद तै अंता।
सुभतै सिद्ध असुभ अनसिद्धा, प्राँनी भोगत भोग प्रसिद्धा ॥११७८
अल्पायू दीर्घायू आपत, पुन्य पाप सौ होवत प्रापत।
वरनत ताकौ भेद विधाँनी, सावत्री सुनलेहु सयाँनी ॥११७९

दोहा

सुमृति कही पुराँन स्रुति, गुप्त रहस सौं गाथ।
भरथ-खड की भूँम विच, सब माँनव लहि साथ ॥११८०

छंद द्वं-ग्रखरी

दुरलभ इहै मॉनुखी देही, जामै जेष्ट-वरन है जेही ।
जेष्ट-वरन मै उत्तॅम जॉनौ, वृह्मनिष्ट धरमिष्ट वखॉनौ ।।११८१
होत विप्र द्वै-भाँत हमेसा, इक सकॉम निस्कॉम ग्रसेसा ।
पूजा-पाठ सकॉम प्रचारत, निस्कॉमी भक्ती निस्तारत ।।११८२
करत भोग क्रम होत सकॉमी, कर्म उपद्रव विन निस्कॉमी ।
देह त्याग जावत हरि-द्वारै, विच जोई गोलोक विहारै ।।११८३
द्वभुज क्रस्न कौ दरस दिखावै, जन्म-मरन जासौं मिट जावै ।
वैस्नव होय सकॉम विसेमा, प्रभू वैकूंठ लहै परवेसा ।।११८४
कर्म छीन ह्वै जवही कलेवर, प्रगटै भरथ-खंड दुज परवर ।
काल पाय निस्कॉम भक्ति कर, होत मुक्ति ग्रनुंकपा हरिहर ।।११८५
जे सकॉम द्वज जग मै जेता, विना भक्ति ह्वै नही ततवेता ।
तीरथ मै दुज करै जु तपकौं, वृह्मलोक जावै तज वपुकौं ।।११८६
धर्म-निरत जे विप्र धुरधर, वसत सत्य लोह ही मै मुनिवर ।
धर्म-जुक्त द्वज सूरज ध्यावै, वास विकर्तन लोक वसावै ।।११८७
मूल प्रक्रत निस्कॉम मनावै, जो निश्चयं मनीदीप ही जावै ।
फिरै नही जग जन्मही फेरा, घलै न ताकौं पातक घेरा ।।११८८
निरत धर्म सिव-भक्त निरतर, ध्यावै सक्ति गनेस ग्रीर-वर ।
वसै जीव सिव-लोक वसेरा, उपजै नही ग्रग्यॉन ग्रंधेरा ।।११८९
ग्रन्य देव द्वज कोऊ ग्राराधै, सवही रीत धर्म निज साधै ।
जिही देवकै लोकही जावै, वँहांतै भरथ-खड मं ग्रावै ।।११९०
करै भक्ती दुज हरि निस्कॉमी, जाहि निवाजै ग्रतरजॉमी ।
ग्रावागमन मिटाय उधारै, वल भक्तीकौ मुजन विचारै ।।११९१
विप्र ग्रापनौ धर्म विसारै, भूतादिक की सेव सँवारै ।
भृष्टाचार उपावै उर भ्रम, कॉमी होय करै जो कुक्रम ।।११९२
तामस भाव भरै वहुतेरा, नर्क परै नही होत निवेरा ।
जेष्टवरन की कथा जनाई, गूढ गिरा वेदन मै गाई ।।११९३
खत्री ग्राद वर्न की ख्याती, सावंत्री सुनलेहु सुहाती ।
ग्रपने वर्न धर्म-ग्रनुकूला, करै कर्म नहि ह्वै प्रतिकूला ।।११९४

सुख के भोगी होत सदाई, न्याय इही है इह निपुनाई।
कन्या देत सुजाती काजे, सोभा-जुक्त अलकृत साजे ॥११९५
वसै जु चद्र-लोक में वासा, पुन्य वहुत दिन होय प्रकासा।
कंन्या जो देवै निस्कांमा, धारै विस्नु-लोक मे धांमा ॥११९६
गो-घृताद चांदी गगेवा, सुक्लांवर दै दुज कर सेवा।
विधु-मडल मै वास वसावै, येक मुनतर सुख उपजावै ॥११९७
सुदर गाय विप्र दै सोई, जावै सूर्ज-लोक कौ जोई।
दस हजार हायन वँह दांनी, पावै सुख दुर्लभ वहु प्रांनी ॥११९८
देत धरा विप्रन कौ दाता, वास देत सित दीप विधाता।
विस्नु रमांपति जहाँ के वासी, पर्ममुक्ति दै ग्यांन-प्रकासी ॥११९९
धांम विप्रकौ दै कोऊ धनी, विवध भांत सामग्री वनी।
रन कनका जेता गृह रेहा, स्वर्ग वसै लग वर्ष सनेहा ॥१२००
देव-अरथ जाही गृह देवै, सोई लोक जाय सुर सेवै।
रज कनकन वरखन की रीती, परम वसै लावै जुत प्रीती ॥१२०१
देव दुजन कौं जो दत देवै, लाभ चौगुनौ तातै लेवै।
भूंम देस सतगुन फल भाख्यौ, देस दांन इह दुगन जु दाख्यौ ॥१२०२
ततवेता दत देत तडागा, जन-जन लोक मिलावत जागा।
भूंम रेनुका जिते भराई, वरख इते सुख वास वसाई ॥१२०३
वापी दीयै इतौ सुख विलसत, हित ताही सौं सुक्रत हुलसत।
कन्या होय सोय सुकुलीना, पती जोय सुकुलीन प्रवीना ॥१२०४
दस गुन फल वापी सौं दीनै, परपरा इह कहत प्रवीनै।
अलकार जुत देत जु यातै, ताकौ फल दूनौ है तातै ॥१२०५
दांन ज्युंही सर-खोदन दाई, तैसै ही वापी कूंप तलाई।
औरहू को लै सम्मत ऐसै, पकोवार करै विच पैसै ॥१२०६
यातै फल इक-इक इधकाई, दांन खुदावन ज्यूं सुखदाई।
पिप्पल तरु लगाय कै पूजै, सत्य-लोक कौ जात सहूजै ॥१२०७
पुस्प-वाटका सव जन परतै, वैठै सुख छाया सौं वरतै।
येक अयुत जुग ध्रुव आगारा, प्रांनी वसै सहित परिवारा ॥१२०८
करै विमांन विस्नु अरपन कौं, जात मिलै वैकुठही जन कौ।
देत पालखी विस्नु दांन मै, वरतै अधफल सोऊ विमांन मै ॥१२०९

मिदर दीयै हीडोरा माँही, वास रमापत लोक वमाँही ।
सौ मन्वतर लग सुख सेवै, दया छिमा श्रीविस्नू देवै ।।१२१०
सडक बनाय करै ध्रमसाला, विवध वृक्ष विस्तार विसाला ।
स्वर्ग जाय सोई सुग्याँनी, वेद पुराँनन कथा वखाँनी ।।१२११
वरतमाँन देही दै वरतै, सो आगै पावत इह मरतै ।
भलौ करै जग देत भलाई, अनभल करै दोप उपजाई ।।१२१२
काहू कौ अनभलौ न करीयै, दोप उपावै तातै डरीयै ।
पुन्य करै सुरलोक पठावै, उतरै भरथ-खड मे आवै ।।१२१३
कर्म-भूँमका भारथ केरी, तप जप सजम विध वहुतेरी ।
कही वेद सुभकरनी कीजै, लाभ जन्म माँनव कौ लीजै ।।१२१४

दोहा

विप्र क्षत्रीयादिक वरन, वैस्य सूद्रहू वर्न ।
अपनी करनी आप तै, अँनुमत गत उवर्न ।।१२१५
तपी जपी आदिक तिते, स्वर्ग वसत पुन साध ।
व्राँमन-पद पावत विरल, अत वलवाँन अगाध ।।१२१६
सावत्री आख्याँन सुन, पूछ्यौ धर्म प्रसग ।
कथादाँन विस्तार कर, अनुक्रम कहहु उमग ।।१२१७

छद भुजगीप्रयात

सावत्रीक हू धर्मराजा सुनाई, कथा दाँन की सुद्ध जामै कमाई ।
जँही साधकै माँनवी स्वर्ग जावै, करै दाँन है जोन रीनी करावै ।।१२१८
सदा अन्न दै विप्र कौ पुन्य-साटै, अनाकेकना जोर सख्या अघाटै ।
वसैहै जिते वर्ष कैलास-वासा, वडे हर्ष सौं भोग भोगै विलासा ।।१२१९
माहाँदाँन है अन्न कौ दाँन माँही, नटै आतिथ देखकै कोय नाँहि ।
सुपात्र-कुपात्र परीक्षा न साधै, अतिथ्थ सदा दाँन अन्न अराधै ।।१२२०
विभूखा लगै दीन कौं जाहि वेरी, सुवेला वँही नित्य सध्या-सवेरी ।
कमी नाँहि कीजै जथा-सक्ति कोई, हितू अन्न के दाँन सौ पुन्य होई ।।१२२१
दीयै आसन देव भूदेवता कौं, सु सध्या ऊपावे मुनी सेव ताकौं ।
वसै विस्नुके लोक मै जीव वासा, परा-ग्याँन कौ तत्व पावै प्रकासा ।।१२२२

दुजन्मा गऊ दूभती दाँन देवैं, सुरो मासमा विस्नु कौ लोक सेवैं ।
दीयै पुन्य दीह लीयै पुन्य दूनौ, गऊ तीर्थ मे देन सौं सप्त-गूनौ ।।१२२३
गऊ-दाँन देवै दुज तीर गगा, प्रमाँन नही पुन्यही के प्रसगा ।
धृवै विप्र कौं दाँन मे ग्रॉन घोरी, सोई चद्र-लोक वसै लोक सौरी ।।१२२४
दीयै विप्र छत्ता सुपेत दकूला, करै वर्न लोक गृही साँनुकूला ।
दुज धोवतीहू अँगोछा जु देवै, सुखी ह्वै सोई वायुकौ लोक सेवै ।।१२२५
सुवस्त्रं दीयै विप्र कौं सालग्रॉमा, धरै विस्नु सालोक मे दिव्य धाँमा ।
जितै चंद्रमा सूर की जोत जागै, इतै पै कहूँ नाहिनै जाय ग्रागै ।।१२२६
समापै कोऊ विप्र कौं दिव्य सैन, वँही चद्र-लोक वसै दिव्य ऐन ।
दसाकर्ष कौं विप्र मेलै दुग्रारा, मिलै ग्रग्न के लोक वासौ मझारा ।।१२२७
करी दाँन देवै कोऊ विप्र काजै, विडोजा ग्रध ग्रासन पै विराजै ।
वृवै विप्र कौं दाँन माँही वछेरा, वसै वर्न के लोक-माँही वसेरा ।।१२२८
प्रनाली इही पुन्य है पालकी तैं, जोई विप्र कौ दाॅन मैं देय जीतै ।
वडी वाटका दाँन जो देय विप्रा, चले वायु के लोक कौ छाय छिप्रा ।।१२२९
वसै येक मन्वंतर सुख वासा, वँहाँ तै कहूँ नाँहि होवै उदासा ।
पसावं करै विप्र कौ चौंर पखा, उपासै सुख वायु-लोक ग्रसखा ।।१२३०
रतन ग्रन लैन ग्रौ दैनवारा, दोऊ जायकै विस्नु सेवै दुवारा ।
प्रभू-नाम लेवै सोई लाय प्रीती, जोई दीर्घ जीवै रहै मृत्यु जीती ।।१२३१
माहाँ पूर्नमा पाछली रात-माँही, जपै ईस कौ नाँम डोलै जहाँही ।
सुखी ह्वै इही लोक मुक्ती मिधावै, प्रभा पायकै वास वैकूंठ पावै ।।१२३२
इकै सप्त-मन्वतर ह्वै ग्रभीता, प्रभू नाँम की जाहि वाढै प्रतीता ।
दएँ उत्तरा फालगुनी लाभ दूनो, इही साधना सौं नही जाय ऊँनौ ।।१२३३
तिला दाँन देवै विप्र कहै विप्र ताँही, महेस वसै मिंदरा जाय माहि ।
कनूंका जिते वर्ष सख्या कराई, ग्रमोघं सुखी भोग भोगै उपाई ।।१२३४
तिला ताम्र के पात मै देत ताकौं, जतायौ जही द्वैगुनौ पुन्य जाकौ ।
ग्रलकार-जुक्ता त्रीया दाँन ग्रापै, वसै स्वर्ग मै वेदना नाँहि व्यापै ।।१२३५
करै ग्रछ्छरी भोग ह्वै दिव्य काया, मिलै गधृवी खेल की फेर माया ।
वितावै घने दीह वासौ वसाई, मिटै ग्रौतरै ग्राप भूलोक माँही ।।१२३६
मिलै सुदरी नार से जन्म मिता, चुरावै नही चित्त कौ कोय चिता ।
विधाॅन तिही सुदरी ग्रौ वखाँन्यौ, जथा सक्त सौ वित्त कौ दैन जाँन्यौ ।।१२३७

करै विप्र जो कोय खोटे कुकर्मा, भृमै नर्क के भौंन मै आँन भर्मा ।
फली दाँन देवै तथाँ विप्र फूल, माहाँ कद मेवा जथाँ मिष्ट मूल ।।१२३८
विथा भूलकै होय सो स्वर्गवासी, रमै सुदरी सग आँनदरासी ।
वहू दीह सौ भर्थ-खड वसावै, सपुत्र सपत्नी सुखी ह्वै समावै ।।१२३९
दुजा उत्तम धाँम कौं दाँन देवै, सतं जोय मन्वतर स्वर्ग सेवै ।
जुतै अन्य साखा जमी देत जोई, सुत्रासा करै वास वैकूंठ सोई ।।१२४०
इला औतरै भर्थहू खंड आई, जमी कौ पती ह्वै किते जन्म जाई ।
जोई ग्राँम कौ दाँन देवै दुजाती, विते लक्ष मन्वतरं ज्यू वसाती ।।१२४१
जितै वास वैकूंठ-माँही जमावै, सुखी होयकै भूँम-माँही समावै ।
माहाराज होवै घने जन्म मेला, इला देम के देम भोगै अकेला ।।१२४२
नदी औ तडागा जुतै कूँप नाली, वसू उर्वरा सीम जोवै ।वचाली ।
तरू वाटका होय सो ग्राँम तेई, दुजन्माक हूँ पुन्य मै दाँन देई ।।१२४३
दस-लाखहू इद्र वीतै दिढाई, वसै वास कैलास सोभा वढाई ।
सत् ग्राँम दै विप्र कौ देस सोई, जमी उर्वरा अन्य की देख जोई ।।१२४४
वसै कोट मन्वतर लोक विस्नू, सुखी होयकै भोग भोगै सहिस्नू ।
घने काल मै भर्थ-खड धिरावै, प्रजा जवु के दीप कौ राज पावै ।।१२४५
वितै जन्महू कोट जौलौं विराजा, धरा कौ जोई होय राजाधिराजा ।
दत जोय सर्बस्य जो विप्र देवै, सुखी होयकै चौगुनौ लाभ सेवै ।।१२४६
दीयै दाँन मै विप्र कौं जंबु-दीपा, मिलै सौगुनौ लाभ जाही महीपा ।
करै जो तपस्या सहै कष्ट काया, माहाँ दाँन देवै दुजा जोर माया ।।१२४७
वनोवास ठाँनै तथा तीर्थ-वासा, इते पुन्य सौ अत होवै उदासा ।
परब्रह्म की भक्ति जौलौ न पावै, सुखी होय निर्वांन नाँही समावै ।।१२४८
परब्रह्म विद्यापरा ओतपोती, जमै थावर-जगम रूप जोती ।
मनीदीप वासौ तथा जोत मेला, इही वास निर्वांन जाँनौ अकेला ।।१२४९
करै जो तुला-दाँन कौ मास काती, थपै सुदर मिंदर वीच थाती ।
परधाँम वासौ हरी-भक्ति पावै, गरू-भक्ति सौ मुक्ति उत्ती गहावै ।।१२५०
नहावै रवौ कै उदै गग नीरा, धसै धार मै धारना धार धीरा ।
जुग साठ हज्जार वीतै जहाँलौ, तजै वास वैकूंठ नाँही तहाँलौ ।।१२५१
करै गग के नीर सौं सुछ्छ काया, मिलै सद्गती जीव व्यापै न माया ।
जितै मीन सौं सूरज कर्क जावै, पिपासा लगै जीव कौ नीर पावै ।।१२५२

मिलै पुन्य सौं वास कैलास-माँही, विधाता वितै दीह जौलौं वसाही ।
गमापै दुजं मास वैसाख सत्तू, नँही मै अनूँ होय जेता इकत्तू ।।१२५३
जिते वर्ष कैलास के वास जाई, वसै मुक्ति मै जीव उक्ती वताई ।
माहाँवृत्त जो क्रस्न जन्माष्टमी कौ, निहारौ ज्यूँही नित्य रामाँनभी कौं ।।१२५४
करै तै मिटै जीव के पाप केता वसै वास वैकूँठ मै तत्तवेता ।
सिवारात कै व्रत्त कौ तत्त पाधै, अनावै सिव वलिपत्र अराधै ।।१२५५
वढै वंस विद्या प्रजा भूँम वित्तं, मिलै अत पै कैलास मित्त ।
मधूमास माँही तथा मास माघा, सपुज्जा करै सिंभु वृत्त सलाघा ।।१२५६
तथा मास माघा अध मास ताँई, इतीहू वनै नांद सदहि आई ।
करै गात कौ मजन सुद्ध काया, मिलै सद्गती सपती राजमाया ।।१२५७
जोई अत कैलास मै जीव जावै, परा-मात गौरी-पती दर्स पावै ।
नवैरात मैक्कार कौ व्रत्त नेवै, सक्कती करै व्रत्त औ पाय सेवै ।।१२५८
वली वस्त वृस्नी सुखंग्दीय वाधै, अहा दसभी रूक कीन अराधै ।
दुजं होय तौ मिष्ट नैवेद्य देई, लुलाई[1] खरेपी[2] पुरी सग लेई ।।१२५९
चढावै करै रीत नाना उछाहा, गवावै सु मागल्य के गीत गाहा ।
वसू-राज वाढै अरु वस-वृद्धी, समो पुज्ज सौं होय नौनिद्ध सिद्धी ।।१२६०
वसै सात मन्वतर स्वर्ग वासा, दया भक्ति सौं सक्ति कौ होय दासा ।
हृदै सुद्ध सुक्लाष्टमी प्राप्त होई, करै पक्ष वौ वृत्त लच्छी सकोई ।।१२६१
प्रपुज्जै रमा मात सौरे प्रचारा, प्रभा सम्पती पाय नाना-प्रकारा ।
वसै होयकै सोय वैकूँठवासी, अजा इदरा मात ह्वै कै उपासी ।।१२६२
गँनै पूर्नमा कातकी गोप-गोपी, जुतै मडल रास मडै सु जोपी ।
परमातमा राधका क्रस्न पूजै, दिखावै नही भावकौ आँन दूजै ।।१२६३
गहै राधका क्रस्न कौ मत्र ग्याता, वितै कल्प के काल औरै विधाता ।
वसै वास गोलोक जौलौं विग्याँनी, पराभक्ति श्रीक्रस्न की पाय प्राँनी ।।१२६४
करै वृत्त येकादसी सुक्ल क्रस्ना, तँही जीव कौं नाँहि व्यापै जु त्रस्ना ।
मिलै भक्ति-जुक्ती असक्ती मिटावै, जरा मृत्यु कौ जीत वैकूँठ जावै ।।१२६५
सुनासीर पालै प्रजा भूँम सद्दा, भजै द्वादसी सुक्ल कौ मास भद्दा ।
करै पुज्ज जासौं मिटै विघ्न केई, जमै इंद्रकै लोक मै वास जेई ।।१२६६

---
१ लपसी । २ खीर ।

रवीवार सक्रांत सप्ता रहाई, सधै सूर आराधना कौ सदाई ।
भखै खीर पूरी हवखॉन्न भातै, जमै सूर के लोक कौ जाय जातै ।।१२६७
ज्युँही क्रस्न चातुर्दसी मास जेष्टा, सावत्री करै पूज कौ भक्ति स्रेष्टा ।
लहै सात मन्वतर वृह्म-लोका, वसै ग्यॉन कौ पाय ह्वै कै विसोका ।।१२६८
माहामास की सुक्ल ही पचमी कौ, भजै पुज्ज लावै सदा भारथी कौं ।
कला-वुद्धि वुद्धी महा है कविदा, चवै उक्त की जुक्त अस्लोक छदा ।।१२६९
सुवर्न तथा गाय देवै सदाई, जई होय पै दीर्घजीवी जदाई ।
अँनू स्वर्न के गाय के रोम येना, जमै वास गोलोक मै वर्ष जेता ।।१२७०
जिमावै दुज नित्य मिष्टांन्न जोई, सरीर दुजं रोम-सख्या समोई ।
धरा-वीच विद्वॉन होवै धनेसा, वढै आयुषा क्रीत वाढै वसेसा ।।१२७१
हरी धाँम मै अत पै वास होई, सुखी होय विस्नू करै सेव सोई ।
जपै क्षेत नारांयन विस्नु जाप, प्रनासै जँही जोव के कोट पाप ।।१२७२
जपै नाँम कोट जही वैठ जागा, रहै है हरी-रूप मै साँनुरागा ।
पराभक्ति सौ मुक्ति साजोत पावै, जरा मृत्यु के दु ख सौं छूट जावै ।।१२७३
प्रचारै सदाँ ईस की पार्थ पूजा, सही रेनुका के अनू का सहूजा ।
समाकै समाँना वसै लोक सीवा, जरा मृत्यु कौ सोक पावै न जीवा ।।१२७४
सिला मालग्राँम करै सेव सोई, धरै सीस पीवै तँही नीर धोई ।
जँही जीउ कौं जीवन मुक्ति जाँनौ, प्रभू धाँम कौ अत पावै प्रयाँनौ ।।१२७५
तपस्या करै वृत्त जो होय त्यागी, वसै जाय वैकूँठ वासी विरागी ।
परै विग ताँहू माहाराज पावै, सुखी होय श्रीमॉन भक्ती समावै ।।१२७६
प्रभू-हेत जो देय प्रथ्वी-प्रकमा, करै तीरथ स्नाँन जो सुद्ध क्रमा ।
भ्रमै नाँहि जन्मातरं भूम भागी, सेदाँ वास स्वर्गीय होवै सभागी ।।१२७७
माहाँजग्य कोऊ करै अस्वमेधा, नही है कहूँ कर्म जामै निसेधा ।
पती भूँम अर्धासन इद्र पावै, रहै नाँम जौलौ सुरालै रहावै ।।१२७८
जिही सौं वडौ राजसू-जिग्य जाँनौ, मिलै चौगुनौ लाभ जातै प्रमाँनौ ।
जँही तै वडौ अवका जग्य जोई, कर्यौ विस्नु विद्वाँन जाँनै सकोई ।।१२७९
त्रपुर्मारने कौं कर्यौ है त्रनेता, जँहो कारना सौं भये सत्रुजेता ।
कर्यौ दक्ष भूल्यौ कछू कारना कौं, धरी ईस नें रीस की धारना कौं ।।१२८०
विधुस्यौ उमा विघ्न सौं ताहि वेरी, करी विप्र-जातीन वाधा करेरी ।
दुराराध नंदीगन श्राप दीनौ, नंदीसाहु तै विप्रहू स्राप लीनौ ।।१२८१

तथापी मिले धर्म श्री कस्प त्याँही, जुरे मेख कर्दम कपिल्ला जहाँही।
स्वयंभूमनू पुत्र ताही समेता, प्रीयावृत्त है नाँम जाही प्रवेता ।।१२८२
सनतकुमार ध्रुव और सभू सुधा-भोग भागीय लाये ससभू।
परा-अवकाकौ करचौ जग्य पूरौ, रह्यौ भूँम-माँही जँही नाँम रूरौ ।।१२८३
सहस इकं राजसू-जग्य सौंनौ, महमाय के जग्य कौ येक माँनौ।
क्रतूकाज कर्ता चिरजीव काया, मिलै ज़ीवन-मुक्ति व्यापै न माया ।।१२८४
पद विस्नु पावै परमात माई, सरीर वढै तेज तातै सवाई।
दिपै देव-जाती मंही विस्नुदेवा, सदाँ नारद वैस्नवी जाँन सेवा ।।१३८५
ज्युँही साख्र मैं वेदवर्न दुजाती, खिती-तीर्थ माँही ज्युँही गग-ख्याती।
पवित्राँ मँही जेम है सूलपाँनो, वृत माँहि येकादसी ज्यूँ वखाँनी ।।१२८६
विचारै तरू फूल मैं फूल-वृ दा, छिपा तारका मै प्रभा जेम चदा।
विहगावली माँहि ज्यूँ वैनतेई, प्रक्रती तीया राधाका ज्यू परेई ।।१२८७
गर्ता ज्यूँ मन इंद्रिया मीघ्रगाँमी, गनौ ज्यू प्रभा के पती हसगाँमी।
खिती-खड वृदावन भर्थ-खडा, पढै पडता भारथी ज्यूँ प्रचडा ।।१२८८
ज्युँही लक्षमी श्रीय सोभाग-जुक्ता, अजा आद दुर्गापती वृत्त-उक्ता।
ज्युँही अवका जग्य मैं जग्य जाँनौ, मुगत्तीप्रदा पुज्य सा पुज्य माँनौ ।।१२८९

दोहा

करे सुक्रत जेते कथा, है फलदायक हेत।
सुख भुगतै खय होत सव, आखर दाव अप्रेत ।।१२९०
परामात-पूजन परम, करत मुक्त कल्याँन।
जन्म-मृतु दुख जीवकौ, जावै निश्चय जाँन ।।१२९१
देवी सम कोऊ देवता, है नही होवन हार।
वडे लघू अरु सस विसम, वपु-माया विस्तार ।।१२९२
सुनहु कथा देवी स्रवन, ध्यावहु देवी-ध्याँन।
देवी सिमरन करहु द्रढ, गावहु देवी-गाँन ।।११९३
कर्मविपाक जु मै कह्यौ, सुर्यौ वछ्छ तैं स्राँन।
सावत्री जावहु सुभग, भरता कौ लै भौंन ।।१२९४
वोली सात्री वहुर, धरम समुख धर धीर।
देवी-सम नही दूसरौ, पाप मिटाँवन पीर ।।१२९५

भजै सक्ति किह भाव सौं, निज उधार कर नेम ।
असुभ-कर्म कोनै अवर, जथा प्रकासहु जेम ।।१२९६

छंद पद्धरी

पुस्करारंण्य पावन पवित्र, माहा करी अरागन धर्म-मित्र ।
समवर्ती पायौ सुत सरूप, भये दक्षन दिस के पाल भूप ।।१२९७
सवके तुम साखी रुप सिद्ध, परभाव समन नॉमी प्रसिद्ध ।
वस करचौ काल प्रॉनीन वीच, मिल कर्म-जोग सौं देत मीच ।।१२९८
पापीन सुद्धि के हेत प्रॉन, परचड डड कौ धरत पॉन ।
विस्व कौ चलावत न्याय वाट, सजॅमनी नगरी समृराट ।।१२९९
माहाँ चड-चड दासन समेत, चितगुपत लेखीयै धरत चेत ।
तपनिष्ट व्रह्म-निष्टा तुमेव, भवजीव कर्म कौ लहन भेव ।।१३००
फल पाय पुन्य नही चरत फेर, जग अतताई कौ करत जेर ।
समवर्ती सव विध सावधॉन, सुख-दु ख पुन्य पातक सुजॉन ।।१३०१
सरवग्य आतमा रमाँ साव, अघ मेट हरत तिनकी उपाध ।
पुन्यातम हू सौं परम प्रीत, नय-रीत प्रकासत धर्म-नीत ।।१३०२
दोपीजन अपनौ पाप दीख, मेलत सुनर्क नही देत मोख ।
पाप की प्रनाली पती प्रेत, सव रीत सु जावहु धर्म सेत ।।१३०३
है नर्क किते अरु कहा हाल, जासौं सव धूजत जीव-जाल ।
सावत्री सुनकै वचन स्रॉन, जुत विनय प्रॉनीयन हेत जॉन ।।१३०४
सावत्री करकै वहु सराह, अवगाह वचन वोले उछाह ।
ये मंत्र कॉन मैं दयौ आप, प्रॉनी कौ हरता सकल पाप ।।१३०५
सावंत्री सुनकै भई सुनाथ, हित अपन्यौ जॉन्यौ जोर हाथ ।
पूछयौ वृतत जाही प्रमॉन, जमराजा कहने लगे जॅन ।।१३०६
सुभ-कर्म करत जो जीव सुद्ध, वँह जावत सोई लोक ऊद्ध ।
वाख्यॉन प्रथम कीनौ विचार, सुन लये सकल विध समाचार ।।१३०७
अव कहत नर्क की कथा और, जावत जे प्रॉनी पाप जौर ।
पूरे सु छयासी कुड पाप, ताड़न वहु जीवन भरत ताप ।।१३०८
धारना सुनहु जिह नॉम धेय, इक अग्नकुड ज्वल अप्रमेय ।
अरु तप्त भयॉनक खारयेम, जुत मूत्रा मल अरु स्लेख्य जेम ।।१३०९

गरँकुड नेत्र मल वसा ग्यात, सुक्रहू कुड लोहू समात ।
मलगात आँसुवा कर्नमैल, निज मज्जा पल लोमकन खंल ।।१३१०
केस के कुड असिताम्र केह, चर्म के कुड अय नही छेह ।
तप्तहू सुरा कटक जु तीख, विपकुड तप्त-तेलहु वसीख ।।१३११
क्रमी कूँत पूय अरु सर्पकुड, मसका रु दस त्याँ गरल मड ।
वज्रा सु द्रष्ट वृश्चक विसेख, सर सूक खडग गोलही असेख ।।१३१२
काका- मथाँन अरु नक्र-कुड, चक्राकृत वज्रा वीज चड ।
पाखाँन तप्त तिछ्छन पखाँन, मसि लाला चूरन कु ड माँन ।।१३१३
कूरम वक्राकृत ज्वाल-कु ड, भस्मक तनदग्धा भरथ-भड ।
सूचका तप्त असिपत्र सोय, मुख सूची क्षुरधारा मिलोय ।।१३१४
गोकामुख नक्रामुख गनत, गजदस गोमुखा विच गृहत ।
कु भीहुपाक अरु सूत्रकाल, कु डा मच्छोदय अत कराल ।।१३१५
क्रमीकु त कवा अरु तु द कु ड, अरु पासुभोज्य जाँनहु अखड ।
पासहु सवेष्ट पुन सूल प्रोत, उल्का रु प्रकपन है उदोत ।।१३१६
करवेधन ताडन अंधकूप, जालध्र देहचूरन सजूप ।
सोखन रु दलन कख सूर्प-संग, धूमाँध ज्वाल आँनन कुढग ।।१३१७
जाँनीयै नाँगनेष्टन जरूर, कु ड है छयासी माहाँ कूर ।
करता सु पार्प प्राँनी कलेस, दूतन रखवारी सहिते देस ।१३१८
जाँनहु दूतन के नाँम जास, तन पापीजन कौ देत त्रास ।
है हस्तदंड अरु पासहस्त, मदमत्त भयकर माहामस्त ।।१३१९
है गदाहस्त पुन सक्त हाथ, करता खड्गाहथ क्रूर काथ ।
जाँनहु अत दारुन तपो-जुक्त, गुन दयाहीन निर्वाय गुप्त ।।१३२०
तेजस निसक जे ताम्रनैन, अत जोग-जुक्त अरु सिद्ध ऐंन ।
जिह दीर्घनीद आवत नजीक, ठाहर की तनकी लहत ठीक ।।१३२१
अन्यथा त्रास नही करत येक, धरता पापीजन देख-धेक ।
सिवसक्ति गजानन दास सूर, द्रग देख वैस्नवन रहत दूर ।।१३२२
पुन्यातम ऊपर करत प्रेम, निस्तारन जोगीजनन नेम ।
अघ गुप्त प्रगट देखत अनेक, प्राँनीन खवर मै अत प्रवेक ।।१३२३
देखत द्रग जैसौ देत दड, कोय करता जातैं नर्क-कुंड ।
वरनन कीय ताके नाँम वीच, मेलत है जीवन लाय मीच ।।१३२४

तिह हेत कहत अवगुन तितेक, अभमांनी मांनी येक येक ।
पापीजन अपने पाय पाप, सदगती छोर भोगत सँताप ।।१३२५

दोहा

जे हरि सेवा करत जन, वात कहत अविरुद्ध ।
नरक भीत पावत नही, मूरा जोगी सिद्ध ।।१३२६

छंद भुजगीप्रयात

कृतघ्नी कुवादी कलेसा करता, भृत भ्रात गोती न भीत भरता ।
वसू वित्त विद्या कहै मांन वांनी, परै वन्हि के कुंड मै सोय प्रांनी ।।१३२७
जरै रोम जेता समा आग ज्वाला, पसू होय छूटै जवै पूछवाला ।
दुखी भूख विप्रा नही अन्य देवै, पिपासा जुतै नांहिनै नीर पेवै ।।१३२८
करै वास प्रांनी सोई तप्त-कुंडा, छुटै नर्क पच्छी हुवै तामृचुंडा ।
अमा स्नाध संक्रात कौ पर्व आवै, रवीवार कौं वस्त्र सावू रचावै ।।१३२९
परै खार के कुंड मै सोय प्रांनी, मिलै पट्टके ततु वर्ष मलांनी ।
जोई होय निर्नेजका सात-जन्मा, पनांली प्रसूता गहै भोग प्रन्मा ।।१३३०
कोऊ वेद निंदा करै सास्त्र केरी, हसै मूल प्रक्रती क्रीया दोस हेरी ।
सिवा सिभु विस्नू नही देव सेवा, भजै भारथी भाव विद्यां न भेवा ।।१३३१
भयकार नर्कै परै होय भीता, रहै वीच कल्पात आनद रीता ।
जेही छूट जावै मिलै सर्प-जोनी, चलै पेट कौ घीसता वीच छोनी ।।१३३२
वृती विप्र की आपनी औ विरांनी, हरै लेत तासौ घनी होय हांनी ।
वसै साठ हज्जार वर्ष विसेखा, माहांकुंडऊ चार नामीन मेखा ।।१३३३
क्रमी होय विष्टा मिलै छूट काया, खपै ऊपजै मैल भोगै-क खाया ।
ताडागा लहै खोसकै मूत्र त्यागै, भिजै रैनुका के कनाके विभागै ।।१-३४
वसै मूत्र के नर्क वर्षं वसेरा, घुलै आसही पास कौं मूत्र घेरा ।
प्रछूटै जबै होयगौ वैल पोठी, खरावी परै पीठ की लाग खोटी ।।१३३५
भखै मिष्ट त्यागै सगा गोत भ्राता, परै कुंड खैखार मांहो पुलाता ।
मिटै पै जमै प्रेत की जोन मांही, भखै मैलही मैल जामै भरांही ।।१३३६
गरू मात भ्राता पिता आप ग्याता, अरू पुत्र कंन्या पती को अनाता ।
करै पालना नांहि गर कुंड पांही, जहां तीक्षन भक्षन पाय जांही ।।१३३७

वितै सत्त वर्ष जहाँहो वसाँही, मिलै छूटकै भूत की जून माँही।
तकै दीन कौं देखकै द्रष्ट तेखी, वसावै नही अन्न पित्र वसेखी ।।१३३८
लगै वृह्म-हथ्यादिक पाप लारै, पुलै दूख का कुंड-माँही पधारै।
जहाँ दु ख भोगै माहाँ क्लेस-जुक्ता, अवो भूत-जोनी भजै भीत उक्ता ।।१३३९
दुज दाँन सकल्प कै नाँहि देवै, सोई जीव पापी वसा कुंड सेवै।
प्रमूकै जवै गिर्गटा-जोन पावै, मनुख्खं भये तै दरिद्रं मिलावै ।।१३४०
कोऊ होय काँमातुरं काँमनीकौ, मुखा छीरकै अग पावै मनीकौ।
परै मुक्र के कुंडमै सोय प्राँनी, छुटै पै कमी जोन पावै छलाँनी ।।१३४१
गरु विप्रकौ मार लोहू गिरावै, परै रक्त के कुंड मै रक्त पावै।
वसै येकसो नर्ष तातै विछूटा, भगै सात-जन्मा लगै व्याघ्र भूटा ।।१३४२
गुनी जुक्त भक्ती हरी-गाँन गावै, भिदै नाँ हृदा तर्क हासी भरावै।
निवेसै सोऊ नीर चक्षू निपाँना, समा सत्त भोगै अपीरा-समाँना ।।१३४३
जहाँ तै छुटै होय चंडाल-जाती, सुपै तीन जन्मात होवै सुजाती।
करै धूर्तता सो परै मैल-कुंडा, भरै सत्य वर्ष लगै भीत- भंडा ।।१३४४
कुकर्मी छुटै होयकै सकुकर्ना, भ्रमै तीन जन्म लहै भार भर्ना।
हलूलै करै येड़ कौं छेड हासी, विटकर्न कुडं सत वर्ष वासी ।।१३४५
हुवै सात जन्म लगै अंग हीना, प्रकासै हृदै-ग्याँन पाछै प्रावीना।
करै जीव-हिंसा हितू पोख काया, मजा-कुंड वासी वसै छीर माया ।।१३४६
वसै लाख वर्ष लगैही वसेरा, फिरै छूटकै जन्म वाराह फेरा।
मुसा येन की मीन की जोन सावै, वहू मास-भक्षी तँही देह वाधै ।।१३४७
करै पालना आपनी सोय कन्या, लीयै वित्त कौ व्याह माथै लगन्या।
जिते रोम कन्या मही होय जागा, इते नारकी-कुंड भोगै अभागा ।।१३४८
लदै माँस ताकी रहै पीठ-लारी, गिरै रक्त तातै करंकै गुजारी।
कहूँ भार सौं पीठ फेरै कुभडा, दीयै दूत मेरे तिही लौह-डडा ।।१३४९
वसेरा तँहाँ साठ हज्जार वर्षा, परयौ सो रहै कन्यका मैल पर्षा।
करै नारकी भोगकै छूटकारा, मिलै जोन जीवतकी के मभारा ।।१३५०
पछा रीत ही सूकरी-जोन पावै, जलोका मही सात ही जन्म जावै।
मिलै सातही जोन सफाल मुर्गा, वसै सातही जन्म लौं काक-वर्गा ।।१३५१
व्रत वा सुर स्राध खीरी वनावै, नखी रोमकी नारकी मै निपावै।
करै भक्ष रोमा नखा त्याग कीना, माहादु ख का भोग भोगै मलीना ।।१३५२

वसै रोम सख्या तँहाँही वसेरा, घटै चित्र के दीह जौलौं वनेरा ।
परै वार तै पार्थिका-लिग पूजै, वँही केस के कुंड-माँही अरुजै ॥१३५३
जिते मृतुका रेनुका वर्ष जाई, विचै नारकी-कुंड वासौ वसाई ।
मिटैतै सोई जोन पावै मलिछ्छा, अधर्मी अघी आपनी होय इछ्छा ॥१३५४
मँडै विस्नुपाद गया धाँम-माँही, नरा पित्र जो पिंड कौ देत नाही ।
सरीर जिते रोम के वर्ष सख्या, खपै अस्थि के कुंडमें पाय खँन्या ॥१३५५
दरिद्री हुवै छूटकै जास दीना, हुवै कै तथाँ लवडा पाच-हीना ।
प्रीया गर्भवती खट मास पाछै रमै सेज ताकी रहै रग राचै ॥१३५६
प्रतप्ता सोई ताम्र के कुंड प्राँनी, सतं वर्ष जोऊ वितावै समाँनी ।
विस्वस्ता अवी नार जो होय वध्या, रसोई करी खायकै अन्न रव्या ॥१३५७
तपाये हुये लोह के कुंड तामै, भरै भीन तापै परै देह आमै ।
मिलै काक की जोन निर्नेज काई, पवित्रं हुवै सात ही जन्म पाई ॥१३७८
छुएं देवता वस्तु कौ चर्म छूई, करै वास जो चर्म की वीच कूई ।
निमता करै सूद्र कौ खाय नाजै, सुरा तप्त के कुंड वासौ समाजै ॥१३५९
हटै तै पुरोधा सोई सूद्र होवै, खवावै खपै सूद्र कौ अंन्न खोवै ।
समा सत्तपै जाहि की होय सुद्धी, कला-ग्याँन वाढै मिटावै कुबुद्धी ॥१३६०
वदै अन्नदाता कहूँ दुष्ट-वाँनी, परै कटका कुंडमें सोय प्राँनी ।
दीयै दूत मेरे तँही चड डडा, पुनर्भूत कै अस्व होहै प्रचडा ॥१३६१
पुलावै तँही ताजना मारपीटी, घले रथ्थ-जोता तथा पै घसीटी ।
विते सात जन्माँत मै भारवाही, सुखी होय जो ईस होवै सहाही ॥१३६२
माहाँपातकी क्ष्वेड दे जीव मारै, सहस समा क्ष्वेड-कुंडा सँवारै ।
करै छेह कौं देह ह्वैजाय कुष्टी, पुनर्सात जन्मात तै पाय पुष्टी ॥१३६३
अनड्वान लादै तथा अन्न डही, थकै पै दीयै डड की मार थूही ।
तपावै तँही तेलकै कुंड तातै, जुग च्यार वासौ करै जीव जातै ॥१३६४
जितै वैल की देहमै रोम जाँनौ, मिलै वैल की जोन ही सत्य माँनौ ।
पसूकै करै दाघ कौं चिन्न प्राँनै, वसेखै तही आपनौ औ विराँनै ॥१३६५
सहसा दस कूंत के कुंड सेवै, दलै कूंत सौ ताडना दूत देवै ।
अधर्मी दुजन्मा भखै मास आहा, करै कॉन नैवेद्य विस्नू कुराहा ॥१३६६
जिते देहमें रोम है विप्रजाती, क्रमी-कुंड मॉही समावै कुपाती ।
मलेछ्छा हुवै छूटकै दुष्ट मोटा, खुदा जाँमनी दै करै काँम खोटा ॥१३६७

करै स्राव औ जग्य सूद्र करावै, द्विज होयकै फूँक मुर्दा दहावै।
परै पीप के कुंडमै उड प्रानी, पिलै दूत के डंड चडा पखाँनी ॥१३६८
रजा छूट कारै हुवै दाद रोगी, भ्रमै दुष्ट-जोनी मँही पाप भोगी।
करै दंड सौं मृत्यु दिकर्न कारा, वडे पंकज सीस पै चिन्नवारा ॥१३६६
जिही हिंसक देहमै रोम जेते, अही-कुंड माँही परै वर्ष येते।
तरै सर्प काटै परै डंड तापै, करै ताडना दूत मेरे कहापै ॥१३७०
निकारै जवै जोन पावै निकाँमी, हुवै साप सौ मृत्यु जाही हराँमी।
मदाभीरु जूँका तथा लीख मारै, उदसा अहा माँनवीकै अधारै ॥१३७१
जोड दसका कुंडमै नर्क जावै, खरावी परै दंसका जूक खावै।
हथै जीव जेता समा दुःख होवै, सुखी होयकै नीद मै नाँहि सोवै ॥१३७२
हुवै छूटकारा जवै अग-हीना, मिलै म्लेछजातीन-माँही मलीना।
मधूमक्षका जो मधू-काज मारै, ववै जीव सख्या समा कौं विचारै ॥१३७३
परै गर्लकै कुंडमै सर्ल पापी, करै भक्ष मक्षी न छूटै कदापी।
अनायास है विप्रजाती अदडा, करै दंड तापै नरेसा कुभडा ॥१३७४
दलै वज्रदंष्टा जँही कुंड द्वेखी, खलै दूत मेरे भरै भीत खेखी।
वसै अंगमै रोम जेता सवर्षा, अली डंक मारै उभारै अमर्पा ॥१३७५
जवै छूट जावै हुवै सूद्र-जाती, रहै व्याध-जुक्त सोई दीह-राती।
जुता सस्त्र विप्रा करै जीवकाई, सधै नाँ त्रसध्या वृती सेवकाई ॥१३७६
धरै सूल पै पाव औ खड्ग-धारा, परयौ-सो रहै कुंडमै वारपारा।
प्रजा गुप्त आगार मै वध पारै, विवेक जुतै न्याव नाँही विचारै ॥१३७७
करै गोल-कुंडा मँही वध क्रूर, भयकार अधार जामै अपूर।
भयंकार ही कोट जामै भराई, डसै तीक्षन द्रष्ट जासौ डराई ॥१३७८
माहाँपातकी कच्छ औ मच्छ मारै, भखै मास ताकौ चखै पेट भारै।
खता नक्र के कुंडमै चक्र खाई, असै मक्र ताकौं तजै वक्रताई ॥१३७९
करै वास वर्ष जिते मच्छ काँटा, वऊ गाहै इते जीवहू ताहि आँटा।
छुटै मैंडका मच्छ को जोन छत्ता, वडे कष्ट सौं नष्ट होवै विपत्ता ॥१३८०
पराई तीया की लखै तुंद पेडू, उरोजा मुखा देखकै ह्वै उचेडू।
करै काक-कुंडा मही वास कासा, तँही आँख कांका कखे लैत मासा ॥१३८१
दयै चाँच की चोट के वीच दोला, रहै आसपासै जिही काकरोला।
वसै रोम-सख्या जहाँही विरुद्धी, सुपै कोट जन्मातर होय सुद्धी ॥१३८२

करै औरकी नार सौं भोग कॉमी, न जॉनै कहा दड दै ईस नॉमी।
दुजा देवता स्वर्न चौरै दगा सौ, सुजाती तथा और भाई सगा सौं ।।१३८३

कमी-कुंड मथाँन का अग काटै, छुधा लाग मै वटिका जीह चाटै।
खुटैपै सरापी करै खाय खोटा, तपावै तथा स्वर्न का भर्न तोटा ।।१३८४

सिलासार रीरी जथा वग सीसा, विदुस्त्नीश ताँवा चुरावै व सीसा।
परै वीजली वज्र के कुंड प्रॉनी, समा अग के रोम वर्पा समाँनी ।।१३८५

रसाँनी चुरावै दुजा घीय-रूपा, करै वास पाखाँन के नर्क कूपा।
घने दीह छूटै जँही नर्क घेरा, फिरै स्वेत कुष्टी भयौ जन्म फेरा ।।१३८६

छली पुस्चली नार होवै चिनाला, लहै अन्न वृत्ती परै कुंड लाला।
ज्युही म्लेछ-सेवा करै वर्नजेष्टा, कमाई करै लेखनीकै कलिष्टा ।।१३८७

मसी-कुंडमै पैठ भोगै मलॉनी, घसीटै पसू कस्न ह्वै तेल घाँनी।
इला होयकै तालकी वृछ्छ ऊगै, पछ्यारी सुजाती मही जीव पूगै ।।१३८८

अनाजा हरै विप्र के आसना कौं, सुवस्त्र भरै मेटकै सासना कौ।
करै वास सौ वर्ष लौ चूर्न-कुंडा, मिलै जोन मीढा महाँ सड-मुडा ।।१३८९

कपी ताम्रचूडा मिलै केक काया, मनुख्ख भये त्याग दै सग माया।
हरै विप्र कौ वित्त जो देत हॉनी, परै चक्र आकार के कुंड प्राँनी ।।१३९०

तऊ तीन जन्म लगै होय तेली, उपावै कहू पावला औ अधेली।
दुजन्मा हनै कूर्म कौं मास दावै, गहै कूर्म के कुंड-माँही गिरावै ।।१३९१

मिलै जोन घोनी पसू पछ्छ मुर्गा, अनारी छुटै पै भखी होय उर्गा।
पीयै तालकै खालमै गाय पाँनी, चरै माल मै चार चौकै अचाँनी ।।१३९२

करै वास सोड मही वक्र-कुंडा, छुटै सत्त वर्ष तँही नर्क चडा।
घट रोग होवै तँही पक्षघाती, छई रोग होवै छिकै जोग छाती ।।१३९३

तिला-तेल भूदेव औ देत ताकै, चुरावै धरावै न देवै छुपाकै।
करै वास ज्वाला तथाँ भस्म-कुंडा, दभै ज्वाल-माला मिलै मार डडा ।।१३९४

छुटै जोन पावै सोई मूस मच्छी, पवित्रं हुवै जोव सौ वर्ष पच्छी।
सँनेहं जु गोसीर्प आद समस्तू, विराँनी कोऊ लेय सोगध वस्तु ।।१३९५

गहै अग मै रोम जेतै द्रुगन्धी, समा छूटकै फेर पावै सुगधी।
धरै येन ह्वै नाभ मे गधधूली, भ्रमै अट्टवी वासमै भर्म भूली ।।१३९६

दोहा

छल बल हिंसा करत छिति, हरन करत मति हाँन ।
बसत तप्त सूत्री विचै, नरक-निवास निदाँन ।।१३९७
भसम होत नही दुख भरत, अरध-दग्ध ह्वै अंग ।
सात मुनंतर लग सोई, बसत न जामैं विंग ।।१३९८
कीट होय छूटत कहूँ, साठ सहस मीयत ।
लहि सु जोन दारद लहत, बहु दिन लग बिचरंत ।।१३९९

छंद पद्धरी

ह्वै दयाहीन लै खड्ग हाथ, आहार हेत पसुवन अनाथ ।
धन हेत तथा मारत धनीन, असिपत्र नर्क भोगत अहीन ।।१४००
इक ब्राह्म-दिवस लग रहत आप, तनमें अरु मनमैं भरत ताप ।
जो करत बृह्महथ्या जरूर, पुन इही नर्कमैं वास पूर ।।१४०१
सत मन्वतर लग रहत सोय, हथ्या-वस दौरत चपल होय ।
मिल दूत डंड की देत मार, कर कूक उठत हाहंतकार ।।१४०२
जब छुटत होत मथाँन जीव, सो जन्म होत स्रंगाल सींव ।
सूकर अरु मुर्गा होत सोय, कूकर की काया लहत कोय ।।१४०३
घंटा अरु झालर सुनत घोर, सनमुख परमातम करत सोर ।
जोनी सुभ पावत जबही जीव, अथवाँक होय भैसा अतीव ।।१४०४
वन ग्राँम जरावत पाप वृद्ध, खुरधार नर्क पावत निखद्ध ।
ह्वै छिन्न-भिन्न खुरधार हूँत, तत सौं लोहू की छुटत तूँत ।।१४०५
बहुवर्ष होत तिह नर्क-वास, तन-मन सौ भोगत माहाँत्रास ।
सोई गलत कुष्ट है जन्म सात, जन्मै पुन पाछै सुद्ध जात ।।१४०६
सुर भूसुर निंदा करत सोय, जो भरत पराये काँन जोय ।
वरनन पर दूखन करत बात, सूची मुख कुंडा विच समात ।।१४०७
जुग च्यार बसत तामैं जरूर, क्रतघनी होत वीछू करूर ।
काकोदर होवत फेर कीट, फिर मनुज व्याव जुत होत फीट ।।१४०८
चोरी की संधी करत चोर, वाछड़ी भैंस भेड़ी वहोर ।
गोमुखा कुंठ मैं करत गाँन, पुन दूत डंड मारत पखाँन ।।१४०९

जुग तीन वसत ताही जगाह, छूटकै भेड होवत छगाह ।
जव मनुज होत कहु कर्म जोग, दारद्र-रोग भारत उद्योग ।।१४१०
माँमाँन वस्तु कौं चोर सोय, जम दूत दंड निह देत जोय ।
गौ वैल करी हय हनत गान, दरखत कौं काटत चुरी दात ।।१४११
गजदस नर्कमै करत गाँन, भर पूरन दुख भोगत भयाँन ।
जुग तीन माँहि निह छुटत जाग, गजदंत लगावत करत गाघ ।।१४१२
गज वैल होय हय म्लेछ ग्यात, फिर सुद्ध जात जोनी फिरात ।
पाँनी न देत प्यासे पसूँन, क्रमी-कुंड गोमुखा रहत क्रूँन ।।१४१३
मनवतर अतर होय मुक्त, जिह मिलत ग्रेह नही गाय-जुक्त ।
दारद्री अतज होय दीन, परहार करत इह पाप पीन ।।१४१४
गो विप्र करत हथ्या गँवाँर, स्त्री तथा भ्रूँनहथ्या सँवाँर ।
जाचक कौं मारत रचत जाल, खेलत सु अगम्या भोग व्याल ।।१४१५
परत सो नरक विच कुंभिपाक, ताडना करत जमदूत ताक ।
क्षन-मात्र अगन मैं तपत खाल, कटक-विच अटकत किते काल ।।१४१६
ताम्र के कुंड-विच तप्ततेल ठहरावत तामैं ठेल-ठेल ।
वीतत जव चवदा इंद्र वार, छूटत सोई ह्वैकैं देह-छार ।।१४१७
ग्रीध की जोन पावत गलार, सँन सट हजार ह्वै काक स्यार ।
सूकर काकोदर जन्म मात, मल क्रमी होत तन कलमलात ।।१४१८
पुन वैल होय तन मनुज पाय, कोढी दरिद्र जुत लहत काय ।
गत ऊरव पावत सुद्ध ग्याँन, पातक मिटाय मत लहत प्राँन ।।१४१९
गायत्री सुनकै पाप-गाथ, हरि सौं पुन वोली जोर हाथ ।
सास्त्रोक्त विप्र-हथ्या समाँन, गोहथ्या भाखहु सकल ग्याँन ।।१४२०
नारी सु अगम्या कोन नेम, जाहीकौं वरनन करहु जेम ।
सध्या विहीन है कोन सेप, वरनीयै अदीक्षत कोन वेप ।।१४२१
लख दीर्थ दाँन के लेन वार, को ग्राँम अयाजी करनकार ।
कोनसे विप्र देवल कहात, सूद्र के रसोईदार स्वात ।।१४२२
परमत्त पती सूद्री पिआर, सव वरनन लक्षन करहु सार ।
जमराजा सुन येते जवाव, सव उत्तर देन लागे सताव ।।१४२३
श्रीक्रस्न क्रस्न की मूर्ति स्याँम, सव लिंग-भेद भव भवा भाँम ।
सुभ देव देव-मूरत समाँन, भाँन की प्रभा भिद विव भाँन ।।१४२४

गनपती देव माता गनेस, पुन इष्ट देव अरु गरु प्रमेस ।
पितु-मात भक्त वैस्नव अप्रीत, अरु विप्रवरन वेदन अधीत ।।१४२५
गलका सिल धोवन नीर गग, विप्र के चरनदक जाँन विंग ।
नइवेद विस्नु सकर नटत, रमत, क्रस्न भेदही रटत ।।१४२६
सक्ति के भक्त अरु सास्त्र सक्त, इनमैं जो ठाँनत दोप उक्त ।
वेद मैं लिखत पित्रन-विधाँन, करता विधाँन सूँ आँन-काँन ।।१४२७
भूतन कौ पूजत देव-भाव, विस्नु के मत्र भेदही विभाव ।
वैस्नवन विस्नु पूजा-विहीन, प्रक्रती वृह्म माया प्रवीन ।।१४२८
जन्माष्टम राँमानवम जोय, सिवरात वरत नही करत सोय ।
भोजन येकादसि दिन भखत, रविवार वरत नाहिन रहत ।।१४२६
आदरा-नखत्त के चरन आद, प्रथमी कौं खोदत वस प्रमाद ।
सोउचाद सलल धर देत सीच, नही गनत वड़ेरन-लाज नीच ।।१४३०
पतिव्रता नार नही करत प्रेम, नही पुत्र सुता पालन सुनेम ।
हरिहर की पूजा नहिन हेत, पुन जीवत देही गनहु प्रेत ।।१४४१
लागत तिह हथ्या व्रह्म लार, वरनत सास्त्रनमैं इह विचार ।
गोहथ्या सुनीयै सास्त्र ग्याँन, सव ग्रंथनमैं वरन्यौ समाँन ।।१४३२
हिंसक जो करत गो-प्राँन-हाँन, नही दड देत रोकत निदाँन ।
गो-विप्र मध्य ह्वै चलत गैल, वपु असवारी गो करत वैल ।।१४३३
देत जो गऊकै विप्र दड, ख्यावत गाय ऊचिष्ट-खड ।
अरोही वैल कौं देत अन्न, अथवा तिह लेवत अपरछिन्न ।।१४३४
ऋतु सूद्रीपति कौं करत काज, अथवा-क लेत तासौं अनाज ।
अगन कौ समेटत पाव ओट, चढ गाय वैल पग देत चोट ।।१४३५
पस्चात सवन धोवै न पाय, जो देवालय मैं चल्यौ जाय ।
भोजन पद ओदे विन भखत, ओदे पग सोवत मोउ असत ।।१४३६
सूर्जोदय भोजन भखत स्वाद, वध्या तीय विधवा जुत विषाद ।
कुटनी सु हाथ भोजन करत, संध्याओपासन नही सरत ।।१४३७
पत्नी पत राखत नहिन प्यार, गिल्ला चिवाद कर देत गार ।
पुत्र जो करत गो-घात पाप, विध नहिन करावत सुद्ध वाप ।।१४३८
पुर के नजीक वैठक पसून, जोतकै अन्न खावत जवूँन ।
भूमी तड़ाग के मध्य भाग, जोतकै खेत कौ करत जाग ।।१४३६

प्राचीन किला किदरा पोल, खेती निपजावत खोल-खोल ।
सुर ऊपद्रव भगहल गऊ सँताप, वामै नही रक्षा करत आप ।।१४४०
प्रांनी कोउ अथवा देव-पिंड, मिल करत न पूजा दम-मड ।
अभ्यागत देखत हुय उदास, वँह पूरन नांहिन करत आस ।।१४४१
देवता गरू सौं करत द्वेख, वदना नही दुजवर विसेख ।
परनांम करत पै दुज प्रवेक, हित आसिक नही देवत हरेक ।।१४४२
दुज विद्यार्रथि नहीं देत दांन, सास्त्रोक्त गऊ-हथ्या समांन ।
जानकै न कीजै इह जरूर, पिंड कौं लगावत पाप पूर ।।१४४३

दोहा

अपनो व्याही असतरी, परने पति तीय प्यार ।
पर व्याही पति पार के, नरहु अगम्या नार ।।१४४४
वरनत तिह दूषन विवध, भिन्न-भिन्न वहु भांत ।
नरक परत जे नार-नर, खेल मेल कर खांत ।।१४४५

छंद द्वै-अरखरी

वरनत ताकी रीत विसेकत; द्रग सौ कछु जैसी हम देखत ।
सावत्री सुनलेहु सयांनी, जमराजा की सत्य जवांनी ।।१४४६
विप्रन कौ सूद्रन की वांमा, सूद्रन विप्रन नार सकांमा ।
अत अगम्य इह रीत अनादू, वरन्यौ सुमृत वेद मे वादू ।।१४४७
विप्र होय सूद्रन कीं वांमा, सुख भोगै रति होय सकांमा ।
सूद्रहू विप्र त्रीया सुख साजै, सौ दुज-हथ्या पाप समाजै ।।१४४८
उमयपक्ष नारी अघ येहू, वहु तन देखत नरक वसेहू ।
कुंभीपाक-कुंड अवकारी, नरहू कहा-कहा कोऊ नारी ।।१४४९
सूद्री भोग करै दुज सोई, कहत नांम वृषली पति कोई ।
सो जांनहु चंडाल-समांना, पिंड लेत नहि पित्र प्रधांना ।।१४५०
कोट जन्म लग तपसा कीनी, होवहि कला जाहि की हीनी ।
सुरा-पांन पीवत दुज सोऊ, मुद्रांकित ह्वै छाप मिलोऊ ।।१५५१
गँनीयै तिह वृषली पति ग्याती, छल अरु छदम भरी तिह छाती ।
कुंभीपाक परत विच-कुंडा, दूत देत ताकौं ज डंडा ।।१४५२

वरनन कीनौ प्रथम विधाँन, मो दुख भुगतै ताहि समाँनां।
वरनत नाँम अगम्या वाँमा, सुख तजीयै नर-नार सकाँमा ।।१४५३
पत्नी गरू पत्नी अधपत की, कन्या कुल होवत पुन कितकी।
माता-मम सौतेली माता, सुत-नारी अरू वहन सुग्याता ।।१४५४
सासू पतिवृत नार सगर्भा, उपजन नहि जाकै कोऊ अर्भा।
भ्राता लघू वडे की भाँमन, काकाहू आजा की काँमन ।।१४५५
माँमी अरु नाँनीहू मौसी, पुन कोउ जाती नार परोसी।
मौसी-सुता सुता माँमी की, सुता ज्युँही है गरु स्वाँमी की ।।१४५६
भुवा-सुता सुता भ्राता को, द्रुज की सुता अन्नदाता की।
सिख की सुता तथा सिखनेई, जाँनहु नार अगम्या जई ।।१४५७
इनसौ रमन करत अग्याँनी, गाँमी मात्र कहत विग्याँनी।
द्रुज सन हथ्या लागत देही, वेदहू कहे निषेद वडेही ।।१४५८
सध्या नाँहन करत साधना, इष्टदेवहू की अराधना।
करत सु विप्र पवित्र कारना, विध निषेदहू कौ विचारना ।।१४५९
सिव देवी विस्नू अरु सूरज, द्वै-मातुर नही लेत मत्र दुज।
जाकौ नाँम अदीक्षत जानहु, महाँअधम ताही कौ माँनहु ।।१४६०
जल गंगाकौ वहत जहाँही, तातै च्यार हाथ तट ताँही।
क्षेत कहत नारायन खितपै, थित मृतु होय जाय हरि थितपै ।।१४६१
वारानसी क्षेत है वदरी, गंगासागर जहाँ गत गुदरी।
पुस्कर हरिहर क्षेत प्रभासा, काँमरूप हरिद्वार प्रकासा ।।१४६२
धाँम जहाँ केदार धरामै, तट सरस्वत के पुर है तामै।
गोदावरी वृंदावन घेरा, कोसकी रोध त्रवैनी केरा ।।१४६३
परवत आद हिमचल पाँही, जाती विप्र वसत है जाँही।
दाँन लेत जजुमाँन-दुवारा, नरक वसत है वास नियारा ।।१४६४
जिग्य करावत सूद्रहि जोई, सेवा करत सूद्र की सोई।
जाँन ग्राँम याजीव तीयूजन, पिंडा देवल करत सु पूजन ।।१४६५
सूद्रपाक जो करत सदाई, सूपकार जाँनहु सरसाई।
सध्या पूजन नाँहिन साधन, उर हरि-रूप भक्ति आराधन ।।१४६६
जाँनहु और मनुज द्रुज जाती, पाँवर पतित-रूप परमाती।
व्रिषली पति गत प्रथम वखाँनी, परत नरक मै ये सव प्राँनी ।।१४६७

करे कर्म कौ नास न कैसै, जिह् भोगे विन छुटै न जैसे।
सुधकर मनतै अकुर सूधा, अकरम-अकुर ऊगत ऊँधा ॥१४६८
सावत्री पतिवरत सयाँनी करहु स्रवन जमराज-कहाँनी।
अन्न पुश्चली खावत येता, जासौं भोग करत नर जेता ॥१४६९
कालसूत्र के परत सुकुंडा, वास वरख सत वसत विभडा।
नारी रीत कहत हूँ नीती, पँहचानहु मन लाय प्रतीती ॥१४७०
पवित्रता इक पति सौं प्रीती, भोगत कुलटा दुई पति भीती।
तीन पती धर्षिन है नीया, पुन पति च्यार पुस्चली प्रोया ॥१४७१
पचम पति षष्टम रति पावत, कलमै वेस्या नार कहावत।
सप्तम अष्टम पती सनेहू, ललना तिह पुगी गन लेहू ॥१४७२
इह गनती सौ पति है आगै, सो तौ महावेस्या है सागै।
कहू जात कै छुवै जु काया, राखत नर्क वीच जमराया ॥१४७३
विप्र जात पुश्चली वाँम कौ, करै धर्षिनी भूल काँम कौ।
पुश्चली पुगी नार अपाँवन, वेस्या महाँवेस्या वतराँवन ॥१४७४
करत वास मत्सोदक कुंडा, भोगत दुख ताहीमैं भडा।
गहै वरख सत कुलटागाँमी, वर्ष च्यारसै धर्षिनी वाँमी ॥१४७५
षटसत वर्ष पुश्चली खेला, अठसत पुगी नार अकेला।
वर्ष हजार सु गाँमी वेस्या, महावेस्या इक अयुत मलेस्या ॥१४७६
जब छूटै ऐसी गत जावै, वरतमाँन के काल वितावै।
कुलटागाँमी तीतर काया, धर्षिनी कागा-देह धराया ॥१४७७
कुलटागाँमी कारा कागा, भिडिया वेस्या रमत अभागा।
महा वेस्यागाँमी फिर मैला, सुपच ग्रेह मैं रहै सकैला ॥१४७८
सात-सात जन्मातर साधै, उत्तम जोनी नीठ अराधै।
चद-सूर विधुतुंद की छाया, गृहन निसा-दिन होय गृहाया ॥१४७९
भोजन करै मनुज कोऊ भूखा, कनका जितनोई बँधै कलूखा।
वरख इते अरितुद वसेरा, तँहा कष्ट भुगतै वहुतेरा ॥१४८०
दुख सौ छुटै मनुज ह्वै देही, गिरै दाँत गठीया हुय ग्रेही।
कन्या दैन कहै येकन कौ, जाहि समर्पै दूसर जन कौं ॥१४८१
धूर-कुंड मै खावत धक्का, फिर-फिर मारत धूरही फक्का।
सत हायन सौं छूटत सोई, करै स्याहि ताकी नही कोई ॥१४८२

द्रव्य लेत कन्या कौं देई, जाय पासुवेष्टन जीय जेई।
सेझ्या वांन ऊपरै सोवत, रात-दिवस समीया सत रोवत ।।१४८३।
पार्थव सिव की करै न पूजन, सूल प्रोत सत-वर्ष सरूभन।
पुन ह्वै कूकर होवत पडा, पूजन कर कछु छूटत पिंडा ।।१४८४
विप्र डरावत भयकर वांनी, परै प्रकपन नर्कही प्रांनी।
कोपवती तीय कलहकारनी, दुख देवत निज पती-दारुनी ।।१४८५
उल्मुख-कुड परत अततांई, मुह फूंकत जमदूत मिलाई।
पुन वैधव्य लहत विघवापन, ताही दुख छूटत बहु दिन तन ।।१४८६
वांमनी होय सूद्र सुख विल-त, पसू-क्रीया हू करत छोर पत।
अधकूप मै वसत अनारनि, जल मलीन पीवत सोई जारनि ।।१४८७
वृह्मं-दिवस लग होत वसेरी, काया मिलत कागली केरी।
सूकरी होवत फेर स्रंगाली, कर-कर वोलत कूक कराली ।।१४८८
वेस्या परत कुड वेधनमै, ताडन दंड पुगिका तनमै।
महांवेस्या जलरध्र मझारा, देह-चून विच कुटला दारा ।।१४८९
स्वैरनी दलन-कुड मै सोवत, धर्षिनी सोखन-कुंड तन धोवत।
पीप मूत्र विप्टा भख पावत, जार नार नर्कन सब जावत ।।१४९०
मनवतर लग रहत मिलाई, क्रमी होय छूटत कठनाई।
विप्र और भोगत विप्रांनी, खत्री अन खेलत खत्रांनी ।।१४९१
वैस्य और वैस्यांनी वांमा, सूद्र और सूद्री जु सकांमा।
अन पतनी अन भोगत येते, जातक खाय कुडमै जेते ।।१४९२
तपत सलल मै देह तपावत, पुन ताही ताती जल पावत।
सत-वर्षनमै छूटत सोई, जावत नीच-गती कौ जोई ।।१४९३
खत्री वयस सूद्र की ख्याती, जो तीय भोगत व्रांमनी जाती।
सूर्प अकार कुडमै सोवत, वपु ताकौ जमदूत विगोवत ।।१४९४
मूत्र तपत पीवत ता मांही, जव लग इद्र चतुर्दस जांही।
सूकर खसी जन्म ले सातू, पुन ता-पाछै होय निपातू ।।१४९५
कर-तुलसी लै सौगन करै, साच प्रतग्या नही अनुसरै।
अथवा जल गगा लै आचन, सालग्रांम मूर्ति विन साचन ।।१४९६
दहिना हाथ हाथ पै देवै, वचन करै ताकौ नही वेवै।
देवालय मै खाय दुहाई, करै तही सौ कुल-पतराई ।।१४९७

ब्रॉमन अगन छूयकै विसरै, करै मित्तताई मैं कमरै।
कृतघनि पाय करै कुटलाई, घात करै विस्वास घनाई ॥१४६८
झूटो साखी दै कोउ झगरै, वस ह्वै लोभ सोड मति विगरै।
ज्वालामुखी नर्क मैं जावै, वार इन्द्र चवदा हि वितावै ॥१४६६
तपै तेज ज्वालानल ताती, छिकै अगारन कनका छाती।
तुलसी सपरस करता तेई, पावत जात चडाल पछेई ॥१५००
गगाजल पन तजै अग्यांनी, सात-जन्म ह्वै म्लेछ समांनी।
सालग्रांम पतित क्रमी सोऊ, जन्म सात भुगतै दुखजोऊ ॥१५०१
मूरत देव छुवै पन मेटै, भवन विप्र क्रमी जोनी भेटै।
दहनै हाथ वचन की देता, सात-जन्म ह्वै सर्प सहेता ॥१५०२
वसत देव कौं मिथ्यावादी, पडा देवल होत प्रमादी।
विप्र अगन छुव मिथ्या वोलत, द्वपीअरि ह्वैकै वनमैं डोलत ॥१५०३
वपु मांनव होवत पै वहरा, गूंगा होय न वोलत गहरा।
भांमन वंस-हीन हुय आता, सात-जन्म मैं पावत साता ॥१५०४
द्रोही मित्रन कुल ह्वै देही, व्याघ्रीनस कृतघनी वडेही।
घाती जो विस्वास दघेरा, डेडर झूटी साख दखेरा ॥१५०५
वरन-वरन की सव विध वरनो, क्रीया-विहीन जिनहुं की करनी।
नरक ज्वालमुख केर निवासी, आतम-आंनद रहत उदासी ॥१५०६
वेद वाक्य मैं नहो विसवासा, अरू नही करत वरत उपवासा।
आपत वचन सुनत अनखावत, जे धूंम्राध नर्क मैं जावत ॥१५०७
धस-धसकै घूटत मुख धुवां, मलिन वेख तन जीवत मुवां।
इकसत वर्ष छूटकै आवत, जल-जतू जोनीमैं जावत ॥१५०८
हरि देवत कर विप्रन हासी, पुरखा नहित गहै जम-पासी।
परत कुड घूम्राध पलाई, वरख च्यारसौ लहि विपुलाई ॥१५०६
जव छूटत होवत क्रमि जाती, पक्षी नाना-जोन पछाती।
जड तरु होय पसू-तन जावत, पाप छुटै मांनव-तन पावत ॥१५१०
जोतसि विप्र चिक्कचक जीवी, लाख लूंण्य उपजावत नीवी।
लोह तेल वेचत रस लाखा, अधिक करत माया अभिलाखा ॥१५११
नर्क नागवेष्टन मे निवसत, रोम प्रमांन वरख दुख विहरत।
पक्षी ह्वै मांनव-तन पावत, जोतसी पिंडत वैद वनजावत ॥१५१२

गोप-चमार होय रगरेजा, वनत कोसटा कोली वेजा।
सुद्ध होत जन्मातर सोई, कही कथा जाँनत सह कोई ।।१५१३
वडे-वडे जो नरक वखाँनै, परमातँम छोटे पहिचाँनै ।
जमराजा मै तऊ न जाँनत, मन सावत्री तूं कहा माँनत ।।१५१४
वच्छ करहु हरीगुन विसवासा, ग्रंक्रम की छाँडहु उर-ग्रासा ।
परपीडा पातिक पहिचाँनौ, जिह ग्रपनी काया सौ जाँनौ ।।१५१५
सुखहू ग्रपनी काया-सगा, पुन्य-पाप कौ लखहु प्रसगा ।
इह सिद्धात सवन कौ येका, विरला जन कोऊ लहत विवेका ।।१५१६
पाप-पुन्य वरनी परपाटी, घिरत-फिरत कर्मन की घाटी ।
ग्रकरम-सुकरम कहे जु येते, जाँन लेहु तत वेता जेते ।।१५१७

दोहा

सुन जमराजा सौं श्रवन, नाना-नरक निवास ।
वोली सावत्री वचन, ग्रत चित होय उदास ।।१५१८
जीवन दीसत जगत मै, करै न येते काँम ।
भरै नरकही नरक-भय, सज मनीपुर स्याँम ।।१५१९
कलि जीवन छेदन करै, ऐसे पातक ग्रग ।
जाँनत हौ तौ कहहु जिह, प्रानी हेत प्रसग ।।१५२०
कुंड न देखै नर्क के, जनम-मरन मिट जाय ।
कुंड वने ग्राकार किह, परत सो कोन पुलाय ।।१५२१
जवही मरन ह्वै जीव कौ, दगध होत इह देह ।
भखत स्वान सृगाल भख, ग्रथवा किरमू येह ।।१५२२
दुख भोगत किह देह सौ, जाही कै सग जीव ।
करम ग्रसुभ कैसे कठन, सगी रहत सदीव ।।१५२३

छद मौतीदाँम

नारायन नारद सौं जुत नीत, उदत कौ भाखत ग्यान ग्रधीत ।
सावत्री ग्रौर क्रतत सवाल, हितेसीय जीवन के सव हाल ।।१५२४
कहे जिह रीत सौं वात कहत, विधोविध मगल के विरतत ।
वखानत वेदनमैं इह वात, पुराँनन सुमृत ग्रौ पचरात ।।१५२५

कहै सत सास्त्रहू केर कथ्थन, जनायेऊ पातक मेट जत्तन।
उपासना देवत पच अनाद, विनासत जीवन पाप विपाद ।।१५२६
जरा मृत्यु जन्म सतापहू जाय, मुगत्तीय मगलदाय मिलाय।
करै तिह कालहू चाल न कोय, जुरै जम जालहू टाल न जोय ।।१५२७
सदाँ फलदायक सिद्ध सरूप, अमगल कर्म कुठार अनूँप।
भगत्तीय-भाव मुगत्त भँडार, अभै अवनासीय सुद्ध अगार ।।१५२८
जँही पचदेव कौ पूजन जोग, रँमापत सिभु हरै मल रोग।
परा महामाय रवी गँनपत्त, विचारहु जेम इग्यारस वृत्त ।।१५२९
करै हरि-वदना तीनहु काल, गहै रिव ईस के मत्र गुपाल।
विनायक मत्र सकत्तीय वाॅम, करै कोऊ भूल प्रमाद कौं काम ।।१५३०
लगै नहि ताही कौं दोस लिगार, सदाॅ पचदेव कौ पूजन सार।
लखै नही सज मनीपुर लाग, रखै पचदेवन सौ अनुराग ।।१५३१
कहै अव देहीय की करतूत, दिवावत मार तँही जमदूत।
इहै पच-तत्त कौ पूतरा येक, दहावत जो कछु आवत देख ।।१५३२
गनौ सोइ क्रत्रम-रूपीय गात, खसोटत स्वाँन स्रँगालहु खात।
जिही तज नीसरकै जीय जाय, रहै पुन सूक्षम सेष रचाय ।।१५३३
पुलावत होय अगुष्ट -प्रमान, मिलावत पापहु पुन्य मिलांन।
जरै नही आग गरै जल जोग, कटै नही सस्त्रन नास कुरोग ।।१५३४
परै सोई नारकी-कुड प्रधाँन, उचारत ताहीय कौ उनमॉन।
वने वृत पूंनम के विधु वेख, डरावत जीव भयकर देख ।।१५३५
कोऊ अधकोस हू कोस के कुड, इती अध-वीच विचारहुँ ऊड।
तपे पथराँन सौं वध तमाँम, जगै ज्वल तामह आठहु जाँम ।।१५३६
विनास न होवत कोनहु वेर, घरे तिह ईस विसंभर घेर।
अघीजन देवन कौं दुख अग, सकीरन धाँम वने जिह सग ।।१५३७
तहा इक कुडहू ज्वाल तपत, अगारन भारन सौं उसरत।
सिखा तिह ऊरध जात समाँन, किनारन देख उठै कदरांन ।।१५३८
जहाँ जमदूत रुखारीय जात, पट्टकत पापिन ताप पिरात।
महाँदुख पाय उठावत मुड, दिवावत ऊपर सौं अय दंड ।।१५३९
तरै जव जावत ताप तपत, भयकर हारव सोय भरत।
खरोदक कुड भरयौ विच-खार, परै विच पापिन कौ परिवार ।।१५४०

तपै तिह वीच अनेकन ताप, अगावहु कीचड वोवत आप।
असंखहु काक करै तहाँ ओट, चलै तव चाँचन मारत चोट ॥१५४१
रुके मुख-स्वास सुके अघुराँन, पुकारत पापीय प्रीडत प्राँन।
मलीनस और जहाँ मल-कुंड, झँझोरत पापिन कौं क्रमी-झुंड ॥१५४२
गहै मल नाक मही दुरगध, धरै तन मैल भरै दुख धध।
जहाँ इक मूत्रकौ कुंड जरूर, भरचौ स्रव कीटन सौ भरपूर ॥१५४३
सलेखम-कुंड सलेखम सग, सलेखम कीट जुतै सरवग।
महागर-कुंड भरचौ गर मध्य, सहै तँह पापीय भोग सनध्य ॥१५४४
भरे विष काटत भीम-भुजग, अघीजन चाटत फाटत अंग।
कली कल कीचर दूप का कुंड, प्रपूरत तापिन पापिन-पिंड ॥१५४५
वमा रस-कुंड वसा रस वात, अघीजन डारत होत उदास।
कसारकै आकत बीरज-कुंड, भखै जहाँ पापीय होवत भंड ॥१५४६
जहाँ फिर लोहुव-कुंड जवूँन, घृवै घर धार कपै सिर धूँन।
जिही विच आँसुन कौ जल जात, अकारहु दीरघका अर वात ॥१५४७
सरीर के धोवन कुंड असुद्ध, रह्यौ सोई पातकी जीवन रुद्ध।
भरचौ क्रमी कीटन सौं भरपूर, कलेमीय जावत जीव करूर ॥१५४८
मिल्यौ कुंड जाही सौं कर्नकौ मैल, गहै अततातईय ताही की गैल।
सुपै अर वात हू अस्थि सनेह, गहै केउ पातकी घातकी गेह ॥१५४९
समीप ही माँस कौ येक सँकेत, परे बहु-पापीय रूप परेत।
भखै बहु माँस ही माँस कौ भोग, जुरै बहु माँस कौं माँस ही जोग ॥१५५०
सुताकँह वेचत ह्वै सोई मग, पती जत हिंसक ही परसग।
नखी-कुंड केसहु कुंड नजीक, सलोमस हाडन कुंड सरीक ॥१५५१
इहै अर वात हू च्यार इकत, वडे लघु येक प्रमाँन वृतत।
प्रतमहु ताम्र कौ कुंड परेख, वनी प्रतिकाय सु ताम्र विसेख ॥१५५२
अघी चपटावत लावत ओघ, महाँदुख पावत ताव्र अमोघ।
अगारन झारन लोह अगार, अकारहु निस्तुल भीत अपार ॥१५५३
घरी प्रतिकाय अनेकन घाट, अघी लपटावत अग उचाट।
भयकर मेरेही किंकर भेट, फलगनं मार लगावत फेट ॥१५५४
सुरा-कुंड चर्महु-कुंड समाँन, वने दोऊ वापीय येक विधाँन।
जिही विच दुख अनेकन जात, घलै अय दडन की जम घात ॥१५५५

निपाँनहू आकृत कटक नर्क, कसै जमदूर अघौ उतकर्ष ।
तपे तरु सैमर कटक तीख, पगोवत पापिन-अग परोख ।।१५५६
खसोटत टेढहु-मेढहु खाल, वहै जम दड तँही विकराल ।
प्रकपत पावन हाथ पसार, कट्टकत कटक लागत लार ।।१५५७
विपोदक-कुड भरचौ विप वार, भगै गर तक्षक-मो विप भार ।
करै तिह पापीय पाँन कितेक, महा कटु बोलत हाय मरेक ।।१५५८
प्रतप्तहु तेल भरचौ उदपाँन, प्रपोटन छोटन मोट उफाँन ।
परै विच पापीय अतर पैठ, उकालतै ऊपर आवत ऐठ ।।१५५६
दएै अय दडन कौ जमदूत, पिता कोऊ मात पुकारत पूत ।
सकु तहु-कुड है जाहि ससीम, भरे तहाँ कूँत सतिछ्छन भीम ।।१५६०
फसै विच खालरी होवत फाँक, उघारत मीच अट्टकत आँख ।
कुसादय-आकृत है कमी-कुड, महाँ विकराल जँही रद मड ।।१५६१
सपाटन काटन जात सरीर, पुकारत पापीय आरत पीर ।
जहाँ अहि-कुड विसालहु जाग, निरतर वीच भयकर नाग ।।१५६२
जरावत पापिन कौ विपज्वाल, खसोटत आँतन दाँतन खाल ।
फनालीय फूँकन की लहि फेट, लगावत वक्र भयाँनक लेट ।।१५६३
मसा-कुड वीच मसाँन समूह, ज्युँही कुड दसक दसन जूह ।
भरी मधुमख्खीय गर्त गँभीर, सँकीरन आकृत कुड सवीर ।।१५६४
विरोधीय डारत हाथन वाँध, समेटकै पावन आँगुरी साँध ।
भयकर सद्द रहे भननाय, गहै रसतेज अघी गँननाय ।।१५६५
खँनै कँहु अंग मरोरकै खाज, सँभारत मारत दूत-सँमाज ।
करै दुई वृश्चक वज्रहु कुड, मँडे जिह आकृत वापीय मड ।।१५६६
जथा जिह नाँम तथा दुख जोग, लहै तहाँ वेदना पातकी लोग ।
मिलै जहाँ वृश्चक डकन मार, असखन लागत जेम अँगार ।।१५६७
छिदै तन छादवी वज्र चलत, घटा जिम भादवी सद्द घुरत ।
अगै सर-कुड सु सूल अगार, धकै खग-कुडहु तिछ्छन धार ।।१५६८
भयकर दीरघका जिह भाँत, परोवत पापीय पाँतन पाँत ।
गभीरह ह्रस्व निपाँन सुगोल, वहू फल तप्त भरचौ जल वोल ।।१५६६
भरचौ अधकार मही भरपूर, करै तहाँ पातकी वास करूर ।
निरालय नीर भरचौ विच नक्र, विरूप ही वापीय आकृत वक्र ।।१५७०

उरावत खावत पातकी दंत, पलोटत पूछ सिखा झर पत ।
करोरन वायस कुंडमैं काग, लगावत-चाँचन चोटन लाग ।।१५७१
खँखारव वक्षर पापीय खात, पिपासत मेहन नीर पिवात ।
लघू अरवात मँथाँनन लाग, मँथाँनहु कीट भरे दुख माग ।।१५७२
महाँलघू च्यारसौ हाथकै मैल, झट्टकत दूत अघी-जन झैल ।
इतौ कुंड बीज वन्यौ अगवार, वसै जहाँ बीज ही कीट विकार ।।१५७३
वडौ कुंड तप्त पखाँन विसेस, दुरतर तीक्ष पखाँनहु देस ।
बड़ौ इक कोस वन्यौ अघवीच, करचौ मुख लारन कौ भर कीच ।।१५७४
मसीकुंड सत्त धनक प्रमाँन, प्रतप्तत पव्वय जेम पखाँन ।
खटी रस पूरन चूरन कुंड, मडी इक कोस मैं जाही की मड ।।१५७५
कुलाल की चाक के आकत कुंड, मही कर पत्रक सोरह मंड ।
भ्रमै जहाँ पातकी होवत भेट, फरावत चाँवरी कौं फरफेट ।।१५७६
वन्यौ जहाँ कुंडहू वक्र स वक्र, निरे सिल जेम खपाटीय नक्र ।
किते विच कूरम कूरमकुंड, झँझोरत पातकी झुडन-झुड ।।१५७७
ज्वलाकुंड कोसमै आग की ज्वाल, विगोवत पापिन कौ विकराल ।
करचौ इक कोसमें भस्म कौ कुंड, भरचौ सोई राख सौं पातकी भड ।।१५७८
वन्यौ इक दग्ध जहाँ अरवात, जरै विच पापीय आवत जात ।
प्रसारन जोजन येक प्रमाँन, महाँ सोई दारुन कारन माँन ।।१५७९
सुचीमुख-कुंड भयाँनक सोय, पलावत सूचीय पाव परोय ।
वन्यौ इक जोजन कै विसतार, धरै असिपत्र सु तिछ्छन धार ।।१५८०
जुरे जहाँ ताड के पत्र जितेक, अकारन तिछ्छन येकतै येक ।
कुमारग कर्कर है अध-कोस, भगावत जावत दूत भरोस ।।१५८१
खसोटत कुंड जँहाँ खुरसाँन, पूरौ सोई येक सौ चाप प्रमाँन ।
गोकामुख कूपकै आकत गोल, परी धँनु वीस जिही विच पोल ।।१५८२
गोकामुख कीट सु काटत गात, विकूँनका चाटत त्याँ विललात ।
नक्रामुख आकत नर्क निकेत, दिखाईय जभक मल्लक देत ।।१५८३
चँहू-दिस सोरह-सोरह चाप, परै जिह जोग करै सोइ पाप ।
जहाँ गजदसक कुंड जु दौज, हजारन दंतस तिछ्छन हौज ।।१५८४
विसालय कुंभीयपाक विसेख, पुरो इक जोजन ज्याँ परवेख ।
ऊँडौ इक लाख सु मुष्ट अछेह, गुफा केऊ वीच सकीरन ग्रेह ।।१५८५

केऊ विच ताम्र के तेल के कुंड, तरै विच लोह की तप्त तरंड ।
भयकर काल के चक्र भ्रमाय, खिसै जिह पापीय टक्कर खाय ॥१५८६

अमूभत केतक वीच अँधेर, भुलावत भल्लन सौ भटभेर ।
जँहाँ क्रमी केक भयंकर जात, खसोटत खालरी खेंचत खात ॥१५८७

मँडै जमदूतहू मूसल-मार, परै सिर मुद्गर-मार अपार ।
पुलं जव मारग पावत पाय, अचेतन होय परै अकुलाय ॥१५८८

कोऊ तिह कालही सूत्र कहत, घँने विच पापीय जीव घिरत ।
पुकारत नर्कमैं नर्क-प्रधाँन, निपाँन सु कुभीयपाक निधाँन ॥१५८९

मच्छोदक छाँनवै हाथ की मड, चहूँ-दिस तप्त भरयौ जल चड ।
तिही कोऊ नाँम कहै अवटोद, करै अघी वास जहाँ चँहु-कोद ॥१५९०

सवै तिह च्यारसै हाथ की सीम, भरे जल-जतु अनतन भीम ।
जरादिक रोग भरे जल जोग, लहै तिह नर्कमैं जावत लोग ॥१५९१

जहाँ क्रमी कतुक कुंड जगाह, वँही अरितु दक है अवगाह ।
सोई रुज-कारक मर्मसथाँन, पिरावत पातकी लोगन प्राँन ॥१५९२

वन्यौ तिह च्यारसै हाथकौ व्यास, अमूंभत्त होवत चित्त उदास ।
कठोर सु पामुव भक्षन-कुंड, इला वसु च्यारसै हाथ की ऊंड ॥१५९३

पूरौ इक कोसकौ वेष्टन पास, फिरावत पातकी तामह फास ।
सतिछ्छन सूलीय प्रोत समाँन, इहै असी हाथही कै अनुमाँन ॥१५९४

प्रकपन कुंड सु ठड प्रधाँन, पूरौ अघकोस कौ जाहि प्रमाँन ।
वँन्यौ उलका-मुख कुंड विरूप, करयौ असी हाथ कौ आक्रत कूँप ॥१५९५

अँधारह कुंड भरयौ अँधीयार, सवै तिह च्यारसै हाथ सुमार ।
जहाँ इक सोखन कुंड जवूँन, कँहै तिह च्यारसौ मर्द की कूँन ॥१५९६

कलीकख कुंडमैं चर्मक खाय, परै विच पातकी जीव पलाय ।
लगै तिह च्यारसौ हाथ की लंव, अपावन वीच भरयौ जिही अंवु ॥१५९७

चँहूँ-दिस अप्ट रु हाथ चलीस, सोई प्रसफोटन रूप सरीर ।
ज्वलामुख कुडमै जागत ज्वाल, वडौ असी हाथकौ ऊँड विचाल ॥१५९८

घुँआध्र हू कुडमै धूँम घुकाय, सोई अर्धवापीय सौं सरसाय ।
विलेसय वेष्टन सौं घनु व्याध, निरतर नारकी-कुंड निवास ॥१५९९

दोहा

कया पाप नर्कन कही, सुन सावत्री स्रॉन।
पांच देव पूजन प्रभा, जाँनी उत्तम जाँन ।।१६००
जँमराजा सौं प्रस्न जब, करचौ उभय कर जोर।
मै तीय जाती अग्य मति, वाला वेम वहोर ।।१६०१
इतनी तौ जाँनत अवस, सकल वात कौ सार।
देही इह पितु-मात दत, उभय-पक्ष उपगार ।।१६०२
पालन हित तऊ मात पख, प्यार अधिक अरु पोख।
भक्ती माता कौ भजन, दरसत है निर्दोख ।।१६०३
प्रथम मात-पूजन प्रथा, सकल कहहु समुझाय।
अवम पुरखहू उद्धरै, जर सौं पातक जाय ।।१६०४
सूक्षम रूपहु ग्यॉन सव, समुझावहु ततसार।
हूँ मेरै निरवाह-हित, वाँचत ग्याँन विचार ।।१६०५
पिता इधक जग-जीव प्रत, पितु तै मात पुनीत।
मात इधक गरू माँनीयै, उत्तँम ग्याँन अधीत ।।१६०६
मोकौं गरू तुमही मिले, समवरती सुग्याँन।
पूजन माता कौ प्रथम, वरनहु सकल विधाँन ।।१६०७

छद पद्धरी

सावत्री सुनकै समाचार, वोले सु धर्मराजा विचार।
वरदाँन प्रथम दीनौ वसेस, अभिलाख पूर्न ह्वैहै असेस ।।१६०८
परतीत सक्ति की भक्ति पाय, सुख-लाभ लहहु सब विध सुभाय।
गुन कीर्तन देवी चहत ग्यात, कल्याँन हेत हित करामात ।।१६०९
वर्नना मात कीर्तन विभाग, नहि कहन सकत जिह सेसनाग।
मुख पाँच सिभु वर्नना मात, कहने की नाँहिन करामात ।।१६१०
वेदहू च्यार मुख सौं विरच, सब देवी गुन नही करत सच।
ससार पालना करत सोय, गुन देवी हरि नही सकै गोय ।।१६११
माया अगाध है चिरत मात, पट-आँनन जाँनत नहिन ख्यात।
गरू जोगिंद्रन के श्रीगँनेस, वाँनी नही जानत गुन विसेस ।।१६१२

नही सनत्कुमार सनातनाद, विरचत देवो को नही विवाद।
रवि कपल मरीचादिक रहस, प्रभुता न मात जाँनत प्रसस ॥१६१३
देवी पद-पकज वद देव, सिव वृह्मा विस्नू करत सेव।
भक्ती कौं लहिकै मक्ति भाव, प्रगटत सहजै ही गुन प्रभाव ॥१६१४
निर्वेद भाव विन भक्ति नेम, पद-पकज मात न भरत पेम।
जगमै सुर-असुर जिते जीव, सवहिन सौ अवके विध सदीव ॥१६१५
ग्यानी गनेस तिनसौं गरीय, कहेयै सिव तिनसौ कारनीय।
श्रीक्रस्न रास-मडल सुथान, गोलोक-वीच सिव कह्यौ ग्यान ॥१६१६
सिव कह्यौ धर्म सौं धर्म सोय, जगचक्षु दयौ सोई धर्म जोय।
हमरे पितु हममौं कह्यौ हाल, वन रह्यौ आद सौं हीय विचाल ॥१६१७
जमपद हम पाछै लयौ जास, वँह ममय हमय विचरत उदास।
गहि रहे आज लौं ग्यान गूढ, परकास करत तुहि मति पढूढ ॥१६१८
भगवतो चरित जाँनै न भेव, देवी अदेव देवाध देव।
आकास प्रमाँनन लहत आप, मुरजाद कहाँ लग कहा माप ॥१५१९
जीवकौं न जाँनत जीव जेम, नरहू सुरहू नही गहत नेम।
माया वसिष्ट पर्मात्म मूल, कारन के कारन साँनुकूल ॥१६२०
सर्वाद्य सर्ववेता सरूप, अनवद्य अखडत मति अनूँप।
निरलिप्त निरजन निराकार, विभु-रूप निरामय निर्विकार ॥१६२१
माया वसिप्ट प्रक्रत मिलाप, उतपन्न आपसौं करत आप।
उपजत जिह प्राक्रत कहत एह, द्रग गोचर जेती होत देह ॥१६२२
परमातम प्रक्रती ओत-प्रोत, ज्वल सक्त न न्यारी ज्वाल-जोत।
माया पर्मातम सक्ति माँन, भाँन की प्रभा जिम सग भाँन ॥१६२३
है सोय अरूपा रूप होय, सुख देत भाव भक्तिन सकोय।
गोपाल सु दरी प्रगट ग्यात, ऊतपन्न रूप कीय अकसमात ॥१६२४
कमनीय मेघसम स्याँम काय, पीतावर आभा तड़त पाय।
मुसकात मनोहर मंद-मद, चिव देत वदन जँनु सरद-चंद ॥१६२५
कदर्प कोट वपु वय किसौर, भ्राजत चख जैसै कमल भौर।
आभूपन नाना पहर अग, सिंघासन राधा वसत सग ॥१६२६

गोपीगन निरखत चिव गुपाल, विरजेसु रास-मडल विचाल।
कस्तूरी कुंकम सम करेह, भाल मै समालभन[1] भरेह ।।१६२७
मालती माल चंमक मिलाय, मजर तुलसी के मिले माहि।
वक्षस्थल कौस्तुकमनि वसत, लरि मुक्ता-माला तर लसत ।।१६२८
कंयूर भुजा ककन कलाच, अभिरॉम मूँदरी साखश्राच।
द्वे-भुजा सुसोभत चप-डार, नूँपर पद वाजत झनकार ।।१६२९
घ्यावत सु क्रस्न कौ भक्त घ्यॉन, श्रीक्रस्न पर्म भक्ती सुजाँन।
सासन सु क्रस्न विध जग स्रजत, श्रीविस्नु पालना अनुसरत ।।१६३०
कालाग्न रुद्र सघार-कार, वस जास सीघ्रगाँमी वयार।
सिव मृत्यु जय भये क्रपा साध, रवि तपत ताप तिन ही अराध ।।१६३१
वरखा वरखावत वृखा वार, छागर्थ[2] पदारथ करत छार।
सीतलता धारत जल सवाद, दिगपाल करत रक्षा दिगाद ।।१६३२
गृह-गमन करत है सीस गोम, भय लाय ओसधी भरत भोम।
कुसरास वायु धारत करंत, कुसहू क्रूरम कौ अनुक्रमत ।।१६३३
क्रूरम अनत की धरत काय, प्रथवी अनत ध्रुव वास पाय।
सागर नग धारत प्रथी सीस, सोइ क्षमा-रूप प्रथवी सरीस ।।१६३४
जन्मत है प्रॉनी वीच जास, वस काल होत तापै विनास।
जुग इक्हतर जव देव जात, निपजाय इद्र होवत निपात ।।१६३५
ऊपजत खपत अठविस इद्र, अह-निसा होत वेधा अतिंद्र।
तीनसै साठ दिन रात तेम, निरनै परिवछ्छर इही नेम ।।१६३६
ऊँमर परिवछ्छर सत्त येक, वृह्मा कौं जाँनत जुत विवेक।
उधरत है हरि की जवही अख, उपजत अज प्रॉनीगन असख ।।१६३७
मीचत चख होवत जगत मीच, विध आद होत लय प्रलय-वीच।
प्राक्रतक प्रलय जगजीव पाय, श्रीक्रस्न नाभ जावत समाय ।।१६३८
विस्नू जो खीर-सागर विचाल, वैकूंठ चतुर्भुज उर विसाल।
श्रीक्रस्न वाँम पारस समाय, ग्यारमो रूप सकर गहाय ।।१६३९
माया हरि दुर्गा महमाय, सक्तियाँ जाय तामै समाय।
विच क्रस्न वुद्धि दुर्गा वसत, उरमै सकध ह्वै विलय अत ।।१६४०

---

[1] तिलक। २ अग्नि।

वाहु मैं गनपती करत वास, अग्रेस्वर गन के अनायास ।
सक्तीयाँ लक्षमी अस सोय हित पाय लक्षमी लीन होय ।।१६४१
लक्षमी राधका होन लीन, पुन गोपीमुर विनना प्रवीन ।
प्राँन को अधीस्वरी क्रस्न प्राँन, मोड होत लीन प्राँनहि सुथाँन ।।१६४२
सावत्री साखहु वेद सोय, हीय वीत्र सरस्वती लीन होय ।
सरस्वती क्रस्न की जहि सग, पुन अस्थिर होवत लहि प्रसग ।।१६४३
गोलोक-निवासी सकल गोप, रोमनमैं आपी रहत रोप ।
प्राँनीन प्राँन श्रीक्रस्न प्राँन, थित होत पवन नव थाँन-थाँन ।।१६४४
उदराग्न क्रस्न मे अगन आय, थित होत सीमट इक रूप थाय ।
जलमाल होत लय अग्र जीह, दरसत नही जोलौं रात-दीह ।।१६४५
वैस्नव पद-पकज सरन वास, नित रहत सुखी अवचल निवास ।
वैराट महाँवैराट वीच, निवसत सत्र दीसत ऊँच-नीच ।।१६४६
वैराट महा निज वपु विचाल, क्रस्नमैं होत लय जीत काल ।
रोमन के छिद्रन क्रस्न-रूप, जहाँ-तहाँ विस्व भर रही जूप ।।१६४७
उनमीलन नैनन क्रस्न आप, सव सृष्ट विलावत लहि सँताप ।
जव नैन उघारत क्रस्न जोय, ससार होत परगट सकोय ।।१६४८
श्रीक्रस्न सँवारत पलक साथ, निज सृष्ट वनावत लोकनाथ ।
वीतत सत वच्छर विध वसेस, इह नेम समय जाँनहु असेस ।।१६४९
विध सृष्ट प्रलय की इही वात, खिती-मडल परगट रही ख्यात ।
श्रीक्रस्न मूल प्रक्रत समाय, सो परासक्ति जाँनहु सुभाय ।।१६५०
पर-पुरख वृह्म मैं ओतपोत, अद्वैत-रूप होवत उदोत ।
तिह मूल प्रक्रत के गुन तितेक, येक सौ अवक पुन गनहु येक ।।१६५१
च्यारहू मुक्ति है नाँम च्यार, वरनत प्रकार च्यारहु विचार ।
सालोकदायनी प्रथम सिद्ध, सारूपदाय दूजी सनिद्ध ।।१६५२
सामीपदाय तीजी सँभार, निर्वानदाय चौथी निहार ।
उर करत भक्त सेवा उछाह, च्यारहू मुक्त नही करत चाह ।।१६५३
सेवना रहित है मुक्त सोय, हित पाव भक्त नही जुक्त होय ।
भक्ती रु मुक्त है इही भेद, वरनत भक्ती कौ इधक वेद ।।१६५४
नि.सेख कहत खडन निदाँन, सो सुन लीजै हुय सावधाँन ।
कोने जो कर्मन जिते काय, जो भोगै विन नही छूट जाय ।।१६५५

विभु ईस्वर सेवा करत बाध, अतपै जीव मेटत उपाध।
गहि सारभूत इह वछ्छ ग्यांन, ध्रुव ईस्वर सेवा धरहु ध्यान ।।१६५६
निर्विघ्न इहै उर गहहु नेम, परमातम सेवा आँन पेम।
निज पति लै जावहु निज निवास, हे वछ्छे हीय धारै हुलास ।।१६५७
सतवांन जीवकै गह्यौ सग, उठ सावत्री चालो उमग।
जव जमराजा इह कह्यौ जास, उठ वछ्छे निज जावहु अवास ।।१६५८
सावत्री पति लै आप संग, अपने गृह आई हीय उमग।
पति पिता माय कै लगी पाय, आसिक लीय अपने ग्रेह आय ।।१६५९
सुख लाख वरख भोग्यौ सु देह, निज पति सौं वाढ्यौ इधक नेह।
सत पुत्र जने पतिवृत्त साध, ईस्वर की भक्ती हीय अराध ।।१६६०
वेदन की माता सोई वखाँन, धारै चरित्र उर पुन्य धाँम।
करमन विपाक की कथा कर्म, धारना वढावत जथा-धर्म ।।१६६१

दोहा

चित सुध सावत्री-चरित, कथा सुनै जो काँन।
धन वाढै वाढै धरम, उर मेटै अग्यांन ।।१६६२
वृत ताकौ चवधा वरख, करै भक्ति जुत कोय।
जेष्ट चतुर्दसी सुक्ल जव, हित क्रम वाटी होय ।।१६६३

छंद द्वै-अख्खरी

सावत्री कौ चिरत सुहावन, नारद सौं भाख्यौ नारायन।
मूल प्रकृत गायत्री माता, दीय उपदेस समन गुन दाता ।।१६६४
सो आख्यांन प्रगट भयौ सारै, अकरम सुकरम मति अनुसारै।
नारांयन पूछ्यौ पुन नारद, विवध लक्ष्मी चिरत विसारद ।।१६६५
किह पूजी जिह प्रथम कारना, ध्यान आकार प्रकार धारना।
कीतर्न गुन ताके सव कहीयै, लाभ सकल जग तासौं लहीयै ।।१६६६
वोले जव नारांयन वाँनी, सुनीयै मुनि नारद सुग्यांनी।
कर्‌यौ रास गोलोक कनाई[1] आद सृष्ट हित जिह अगनाई ।।१६६७

[1] ...कृष्ण।

वाँम ग्रंस सौं उपजी वाँमा, इक देवो जिह वपु ग्रभिराँमा ।
द्वादस वरख तिही वय दीपत, जिह मुख सरद-चद-द्युति जोपत ॥१६६८
चपक वरन जिही प्रतिछाया, नैन कमल मध्याँन निकाया ।
मद-मद मुसकात मनोहर, निरख-निरख मुख क्रस्न निरंतर ॥१६६९
प्रभु की इछ्या जिह पहचाँनी, दोय सरूप रचे सुखदाँनी ।
रमाँ नाँम वपु वाँम रचाई, राधा दक्षन-ग्रग रहाई ॥१६७०
क्रस्न-सरूप दोय जव कीने, भुजा च्यार द्वै-भुज रंग भीने ।
राधा द्वभुज-रूप सग रही, च्यारभुजा लिछमी जव चही ॥१६७१
सवही जग लिछमी दोय सोभा, लखत जिही सुर नर मुन लोभा ।
राधा-हरि गोलोक रहाई, गोपी-गोपन सग गहाई ॥१६७२
च्यारभुजा वैकूँठ गये चल, वहुत पारषद साथ गह्यौ वल ।
द्वभुज च्यारभुज रूप दुनोई, सम ऐंस्वर्ज जाँनीयै सोई ॥१६७३
रमाँ चतुर्भुज की महाँराँनी, पोखत सुख सौं सुर-नर प्राँनी ।
प्रभू चतुर्भुज जग-प्रतपालत, लिछमी ज्युँही जगतमैं लालत ॥१७७४
स्वर्ग माँहि जाही की सपत, ज्युँही पताल नाग जस जंपत ।
राज-लक्षमी पोखत राजा, सुवस वसत ग्रेहीन समाजा ॥१६७५
गऊवर्ग मै सुरभी गावत, ज्याग दक्षना संग जनावत ।
सोभा विधु-मंडलमैं सोई, जोत प्रभा रवि-मंडल जोई ॥१६७६
जल-थल पुस्पवाटका जेते, तार हाटका भूखन तेते ।
रतन ग्रनूँपम द्युति जिह रूरी, प्रभुता जहाँ लक्षमी पूरी ॥१६७७
मेघ नवीन नखत की माला, वसत लक्षमी-रूप विचाला ।
वसत जहाँ नहि लिखमी वासा, वँह थाँनक नित रहत उदासा ॥१६७८
महालक्षमी है हरि-माया, हित कर पूजी जिह हरिराया ।
गृह वयकूँठ खीरसागर गृहि, लिछमी-पूजा आप संग लहि ॥१६७९
विध पूजी निज धाँम विचाला, भावजुक्त पूजी विधुभाला ।
स्वायभू मनु आदक सारे, अपने-अपने गृह अवधारे ॥१६८०
रिखी मुनी पूजत माहाराजा, किन्नर गध्रव पूरन काजा ।
सुर नर जाकी करत जु सेवा, भोगत सुख संपत लहि भेवा ॥१६८१
अष्टमि सुक्ला भाद्रव आवै, पूजन तथा पक्ष प्रति पावै ।
पोस चैत्र भादव जु पुनीता, पूजत लिछमी मात प्रवीता ॥१३८२

वर्ष-अत सक्रात जु वरतै, करै सुमगल पूजा करतै।
नृप केदार जही पूजी नल, वहुर सुबल उत्तानपाद वल ।।१६८३
नील इद्र कस्यप नृप नाँमी, कर्दम प्रीयवृत सूर्ज सकाँमी।
जम कुवेर पूजा जिह जाँनी, महालक्षमी वरुनहु माँनी ।।१६८४
अगन चद तिह करै जु आसा, प्रभा वढै अरु वढै प्रकासा।
देवी जग ऐस्वर्जह्री दाता, महालक्षमी सब जग-माता ।।१६८५
स्रवन सुनहु तिह चिरत सुहावन, परम पवित्र करन जग पावन।
इद्र महावन मै येकतर, करत विहार रहे विच कतर ।।१६८६
विस्नुपुरी सौ मुनि दुरवासा, विच-आये जहाँ इदर-वासा।
जावत थे कैलास जहाँ तै, करी भेट मिल इद्र कहाँ तै ।।१६८७
लाख मडली लिख तिह लारा, मघवा अटके विपन मभारा।
इद्र प्रनाँम करचौ मुनि आगै, लीय आसिख मुनि पायन लागै ।।१६८८
दुरवासा राजी हुय देखा, विस्नु दयौ दीय फूल विसेखा।
पारजात कौ पुस्प पवित्रा, ताकौ इंद्र लयौ कर तत्रा ।।१६८९
इद्र मदोनमत्त अभिमाँनी, प्रभुता प्रभु की नही पिछाँनी।
हार्थी सिर धर दीनौ हाथन, जाकौ भयौ अकारज जातन ।।१६९०
तेज वढचौ हाथी गुन तातै, विस्नु-समाँन भयौ विख्यातै।
तजकै इद्र गयौ भज तेऊ, वीच सघन वनवास वहेऊ ।।१६९१
तेजह सत लख त्रसत भयौ तन, विगत मसत सोई वसत रहे वन।
कोप मुनी दुर्वासा कीनौ, देवपती कौं स्राप जु दीनौ ।।१६९२
मूढमती मघवा अभिमाँनी, जगनाथ प्रभुता नही जाँनी।
हरिप्रसाद तै दीनौ हस्ती, मन-प्रमाद गहि लीनौ मस्ती ।।१६९३
घाली तै अपनी मति घातन, हरि-प्रसाद कौं त्याग्यौ हाथन।
जाँनत नहि महिमाँ तूँ जाकी, वुद्ध गई कछु रही न वाँकी ।।१६९४
हरि-प्रसाद की सुनहु हकीकत, ताकी मै वरनत सवही तत।
गहै नही नइवेद अग्याँनी, होय वृह्म-हथ्या वित-हाँनी ।।१६९५
वुद्धि नष्ट ह्वै जात वहोरी, करै जतन जो रीत करोरी।
लै नैइवेद विस्नुपद लागै, भीत पाप दारिद तिह भागै ।।१६९६
पुरखा सत ताके गत पावै, जाकी सकल वेदना जावै।
जीवन-मुक्ति होय चिरजीवा, सुख पावत धन धाँन सदीवा ।।१६९७

पूजत विस्नु होत तन-पावन, सपरस पावन करत सुहावन ।
धारत तीरथ तिह पद-धूरी, महाँपवित्र जाँन मुख मूरी ॥१६९८
प्रथवी तिह पद होत पुनीता, जावत विस्नुपुरी जन जीता ।
अन्न भखत पुश्चली अनारी, निसतान विधवा गृह-नारी ॥१६९९
कुट्टन वाँम काँमुकी केरा, होवत दूत लगावत हेरा ।
कन्या वेचत अपनी कोई, सूद्रन स्राध करावत सोई ॥१७००
भोग विस्नु विन अन जोई भख्खत, चढयौ लिंग सिव भोजन चख्खत ।
सुद्रन जिग्य करावत सोऊ, कुल दुज अन्न खावत जो कोऊ ॥१७०१
पडा का अन कोऊ पावत, खल क्रतघ्नी कौ अनहू खावत ।
विप्र होयकै लादत वैलन, गृही वेद-विध चलत न गैलन ॥१७०२
वृषली पतकौ अन्न विगोवत भडवाहू कौ अन्न जु भोगत ।
मत्रदाय गरू कौं नही मानै, मित्र सुजन उपगार न माँनै ॥१७०३
गुर्वनी-गमन अगम्यागाँमी, होत सनातन धनी हराँमी ।
मुरदा फूकत विप्र मसाँनन, साखो दै झूंटे अवसाँनन ॥१७०४
इनके अन्न भखत अपवित्रा, सासन वेद अघी सरवत्रा ।
पै हरि कौ नैईवेद जु पावै, विगत पाप हुय ताप विलावै ॥१७०५

दोहा

जाँन अजाँनहु भखत जो, परमेस्वर-परसाद ।
कटत जीव के दुख किते, पातक मिटत प्रमाद ॥१७०६
वोले दुरवासा वचन, इंद्र सुनहु अग्याँन ।
तो कौं तज विस्नू तीया, पदमा करिह प्रयाँन ॥१७०७

छंद मौतीदाँम

कुसारनि वोल उठे कर कोह, दुरतर आँन हृदै-विच द्रोह ।
महाँ मतिमद अहो मघवाँन, करी परसाद महाप्रभु काँन ॥१७०८
वुलायकै लीन विपत्त वलाय, रमाँ रम जावहि ग्रेह रिसाय ।
भ्रमौ तुम लेत दसहु-दिस भीख, इला-विच क्यौ न क्रमौ अतरीख ॥१७०९
हमैं जन जाँनत ना हरिराय, निरतर चालत मारग न्याय ।
करै कोऊ आप मतै करनीन, लहै फलै जैसौइ लीन अलीन ॥१७१०

सुकर्म न देख अकर्मन साच, विचारकै वोलत है सुख वाच ।
लगै हम नाहिन पाप लिगार, अहो उठ जावत रुद्र अगार ॥१७११
सुने मुनिराज के वायक स्रोन, मुखा सुरराज गहो कछु मौन ।
कहे मुनिराज कौ फेर कथन्न, जनावहु मोही कौ येक जतन्न ॥१७१२
कटै विपता इह केतक काल, कछू तत-ग्याँन को देहु कृपाल ।
जहाँ मुनिराज कह्यौ सुन जास, अघो[1] ! मघवाँन न होउ उदास ॥१७१३
गहौ उर-अतर आतम-ग्याँन, विचारहु ताहीकौ साँझ विहाँन ।
जरा मृतु जन्म मिलै क्रम-जोग, भृमै जन जोनीय भोगत भोग ॥१७१४
मिलै जव सपत होत मदध, विखै सुख-सेवन वाँवत वध ।
इही अँधियार गनौ हीय अख, उठावत कल्पना-जाल असख ॥१७१५
जुरै नही मुक्तिकौ मारग जीव, सुखी कहुँ होत दुखी तज सीव ।
विहव्वल होय फिरै विललात, विसारकै तत्त की सत्त की वात ॥१७१६
विखै सुख दोय प्रकार विचार, सुझावत ताहीकौ सार असार ।
पढे तऊ चित्त न ह्वै उपराँम, करै केऊ धधन वधन काँम ॥१७१७
इहै जन राजसी माँनहु अग्य, विवेचना जाँनत है सरवग्य ।
विन सास्त्र न वेद पुराँन, गहै नही सार असारहु ग्याँन ॥१६१८
करै मन माँनत जो कछु काज, सँपेखत नाँहि अकाज सुकाज ।
तमोगुनि जाँनहु ताही कौ तात, विचारहु सत्य हीयै-विच वात ॥१७१९
उभै पट कार मु सास्त्र अनत, प्रवर्त के हेत निवर्त प्रजत ।
गनावत ताहीय की गत गूढ, मिलै विखीया-रस होवत मूढ ॥१७२०
प्रसन्नता प्राँनी अजाँनीया पाहि, चहै मन-माँनीय राह चलाहि ।
अली मकरदकै लोभ असूँझ, गहै मृतु पकज मुदत गूँझ ॥१७२१
प्रवर्त के मारग लोभ कौ पाय, जरा मृतु प्रापत होवत जाय ।
कोऊ जन ऊँचि करै करनीन, लहै सत सगत ह्वै चित-लीन ॥१७२२
निवर्तकौ मारग लेत निहार, पहूँचत जो भवसागर-पार ।
अनेकन माँहि गनौ कोऊ येक, त्रिपै तज पावत तत्त विवेक ॥१७२३
पुरदर ग्याँन गह्यौ मुनि पास, उठे वनवास सौ होय उदास ।
निहाँरीय आय पुरी निज नैन, अमगल भोत भरे सव ऐन ॥१७२४

---

१ अहो, हे ।

सुरालय लूटत दैत सहेव, डरावत भागत जावत देव।
अरण्य के जीव वसे केऊ आय, दिवावक बोलत भीत दिखाय ।।१७२५
पुरदर देख चल्यौ वन-पथ्थ, उदासीय छाय तजी सब अथ्थ।
वसे कैऊ दीह महावन-वास, अँनूपम सपत की तज आस ।।१७२६
तहाँ चल आयेऊ गग की तीर, निहारेऊ बीच खरे गह नीर।
धरै उर-अतर वृह्म कौ ध्याँन, निरतर ग्याँनकै हेत निदाँन ।।१७२७
रह्यौ सुसताय जहाँ सुरराज, करै होय चितना आपने काज।
तजे गरू ध्याँन गये कढ तीर, नहायकै गग के पावन नीर ।।१७२८
पुरदर चित्र सिखडज पाय, गहे पुन वेदना भाव गनाय।
बखाँनेऊ स्राप कुसारनि वात, गई जिम सपत किन्नीय ग्यात ।।१७२९
भयौ अमरावती पत्तँन भग, वखाँनीय जाँनीय जो कछु विग।
वृहस्पती ताहीय जाग विराज, सबोधन दैन लगे सुरराज ।।१७३०
विपत्त मे धीरज कौ विसवास, अहो सुरराज न होउ उदास।
फिरै रथ जेम रथागहु फेर, घिरै तल-ऊपर पूठीय घेर ।।१७३१
ज्युँही सुख-दु ख हु आवत जात, विपत्त मै धीर नही विचलात।
खिती मह उत्तम भारथ-खड, मृतू तन कर्म अकर्मन मड ।।१७३२
सुभासुभ काँम करै सोइ सग, अँनेकहु जन्मन भोगत अग।
कही इह वेद मै वात किसंन, मुनी विध होय जँही सुप्रसन ।।१७३३
चलै जिम देह के साथही छाँहि, निरतर न्यारीय होवत नाँहि।
ज्युही क्रम चालत सगही जीव, सुभासुभ भोगत अग सदीव ।।१७३४
भवतर काल के देसकै भेद, सुपात्रहु सु'ख कुपात्रहु खेद।
प्रतै दिन देवत जो कछु पाय, भजै नित-कर्मन मै भरमाय ।।१७३५
जही फल काल सौं देस सौं जाँन, प्रकासत सास्त्रहु वेद-पुराँन।
कुटवीय[1] नाज निपावत क्यार, कँमाइय आसत लाभ करार ।।१७३६
विचारहु देसकौ भेद वसेस, इहै अभिरूपन कौ उपदेस।
सुपात्रन दाँन कुपात्रन साथ, हितू जिह जाँनहु हाथ कौ हाथ ।।१७३७
जनावत कालकौ भेद जरूर, प्रकासत ताहि प्रसंगन पूर।
दयै सम दीह मै जो कछु दाँन, मिलै सम ताहीय कौ फल माँन ।।१७३८

---

१ किसान।

अमावस पूरनमासीय आद, सक्रतहु पुन्यतिथी सरवाद ।
मिले तिह कोट-गुनौ सनमाँन, गनौ जिम सूरज चद्र ग्रहाँन ।।१७३९
अखे नम तीज अखै अभिराँम, करे पुन होवत पूरन काँम ।
सिनाँनहु दाँन गनौ पख सोय, कहै फल साखीय वेद सकोय ।।१७४०
जिते तन-धारक जीव जनाव, पितामह तिप्टत स्रप्ट पसाव ।
वनावत कर्म सौ काय वसेस, कहै विच वेद-पुरॉन कवेस ।।१७४१
कुलालीय कुभ उतारत केक, वनावत चक्र मौ दड वसेक ।
ज्युही जग जाँनहु जीवन-जाल, कमाईकै कर्मन-आस्रत काल ।।१७४२
सोई वस ईसकै काल सदीव, जुगतर आद उपाजत जीव ।
भजौ हीय-वीच निरतर भाव, इतै पर कीजीयै फेर उपाव ।।१७४३
सँवोधन इद्र करचौ लहि साथ, हले विध-लोक दिसी गृह हाथ ।
सवे सुर आय मिले तिह सग, वखाँनीयै ब्रह्मसभा-विच विग ।।१७४४

दोहा

कर आदर करता कह्यौ, सुनहु वात सुरराज ।
तत पुत्रक मेरे तुमही, रिख वृसपत गुरुराज ।।१७४५
है मातामह दक्ष हितु, अदिति मात साध्वीय ।
परमभक्त कस्यप पिता, जाँनहु अपने जीय ।।१७४६
पिता पितामह मात-पख, अथवा गरु-पख आय ।
गुन-अवगुन वसज गहत, निगम कहत इह न्याय ।।१७४७

छद त्रोटक

परपाटी उभै पख की परतै, सुरराज सुनाय कही सरतै ।
हरि वेमुख होय गये हीयरा, जग-कारन भूल गये जीयरा ।१७४८
जढ-जगम दीसत जीव जिते, इक व्यापक विस्नु अधार इते ।
जिन जोतही सौं सव जागत है, लहिकै क्रम के भ्रम लागत है ।।१७४९
जिह जावतही तन जाचत है, परतीत विना दुख पावत है ।
सव देहीय इद्रीय की समुदा, जिनहू के विखै रस-भाव जुदा ।।१७५०
हम ईस कहै गहि भाव हितू, करता जग जाँन सुभाव क्रतू ।
सव प्राँन सरूपीय सकर है, वँह जीवन के निज अकुर है ।।१७५१

प्रभु विस्नु की आतम है प्रकती, दुरगा वुध न्पीय मक्ति दुती ।
कहीयै तिह नीदहु आदकला, वरतै वहुरै मकला विकला ।।१७५२
परमातम कौ प्रतिविंव परै, जल डूवत जीवन आग जरै ।
भव-भोग सरूप सरीर भरा, विच स्वर्ग पताल धरा विचरा ।।१७५३
परआतम जावत देह परै, क्रम ग्यानहू इद्रीय सग करै ।
प्रतना जिम चालत सग पती, थिर होत जहाँ परवेक थिती ।।१७५४
हम मिभु विराटहु भक्त हरी, कवहूँ न प्रसाद सौं कांन करी ।
मघवा तुम भूल गये मनमै, तम लोचन छाय गयौ तनमै ।।१७५५
हरिकौ परसाद दयौ हसती, मद-मोह कौ पाय गही मसती ।
अहकार करयौ अपराध इतौ, छलकै वल होय अकाज छतौ ।।१७५६
गज ऊपर फूल धरयौ गहिकै, वन-वीच गयौ विमुहा वहिकै ।
पहिलै सुर ताहि कौ पूजहिगे, सविवेक सवै तत सूझहींगे ।।१७५७
लिछमी हरि की अरधग लखौ, पर त्याग करयौ तुम जाहि पखौ ।
वयकूँठ मिवायकै सोय वसी, हरि के चरनावुज मै हुलसी ।।१७५८
गुरहू सुरहू हम संग गहौ, करुनानिध कौ वरतत कहौ ।
कछु होय प्रसन्न सलाह कहै, गन देवन चित्त मिलाय गहै ।।१७५९
करहै हित की सवही करनी, अभलाख फलै वित उवरनी ।
विध वात विचारकै देव वहे, गवने हरि-पत्तन वाट गहे ।।१७६०
मिल विस्नु कह्यौ सव देव मतौ, छल इद्र भयौ सव कीन छतौ ।
जव देख जनार्दन देव जुरें, सुख-सपतहीन भये सगरे ।।१७६१
कहनै हरि लागेउ नीत कथा, जगनाथ की भक्त की रीत जथा ।
सुनीयै सव देवन साथ सही, अवसाँन है हाथकौ हाथ इही ।।१७६२
धुन सखन होवत जाहि-धरा, तुलसीन सपल्लव पेढ तरा ।
गन विप्र जिमावत नाँहि गृही, नित सालगराँम की पुज्ज नही ।।१७६३
हरि-भक्तन निंदत नाँम हरी, विमुहाई गीयारस कौ वृतरी ।
जन्माष्टम राँमनमी न जुरै, भख भोजन सौं सोउ पेट भरै ।।१७६४
जप मोरहु वेचकै लेत जमा, अरु फूकत जो मुर्दा अधमा ।
वित लेवत वेच सुता विपथी, अन आदर देत नही अतिथी ।।१७६५
पति पुस्चली होवत जो पुरखा, करता नही पापिन सौं कुरखा ।
दुज सूद्र करावत साद दसा, नित मादक-चीज कौ लेत नसा ।।१७६६

कहूँ सूद्र रसोईय विप्र करै, वृखपै चढकै मगमै विहरै।
दुज हिसक क्रूर गहै न दया, जिग सूद्र करावत हेत जया ।।१७६७
विधवा अन खावत निंद वृती, नख खोदत भूँम अना निक्रती।
लिप भूँम केऊ पुन लावत है, वपु आपने हाथ वजावत है ।।१७६८
सूर्जोदय-वेलाय सोय रहै, लपकै भरपेट अहार लहै।
कोऊ मैथुन हू पुन दीह् करै, नित साध तथा दुज को निदरै ।।१७६९
कर हासीय व्याज-सौं खेल कला, वपु सोवत नग-धडग बला।
कच तेल लगायन स्नॉन करै, विन मत्र गरू गृहमै विचरै ।।१७७०
कुल हिसक के गृह-सौ कमला, चल जावत ज्यौं तजकै चपला।
विपरीत जिती करनी वरती, तहाँ नाँहि रहै निज मो तरुनी ।।१७७१
जहाँ कीरत कृस्न की होत जथा, क्रतु कारज नीत पुराँन-कथा।
धुन भालर सख रु वेद-धुनी, मुद पावत छावत आय मुनी ।।१७७२
तुलसी-तरु सालगराँम तहाँ, जन पुर्ज्ज प्रचारत ध्याँन जहाँ।
सिवलिंग की पूजन पूज सिवा, दुज आतिथ की जोऊ लेत दवा ।।१७७३
रिद्ध-सिद्ध वढावत बैठ रमाँ, जहाँ सपतहू सुख होत जमा।
हित पायकै देवन साथ हरी, कमला मत की वहु वात करी ।।१७७४
कँमलापति फेर कह्यौ कमला, कछु देवन कौं तुम देहु कला।
सुख सागर खीर की होय सुता, विवुधालय मेट करौ विपता ।।१७७५
हरि की रुच पाय रमाँ हरखी, प्रभु की परतीत अखी परखी।
पुन विस्नु कह्यौ सुरजेष्ट प्रतै, मथ खीर कौ काढहु आप मतै ।।१७७६
ऋभु जात कौ जोरकै देहुँ रमा, सुख पावहि होय सबै ससमा।
हित चाहि चले सुर-सग हरी, करतूत रमा वित पाय करी ।।१७७७
तट सागर खीर गये तवही, समले सुर-कारज कौ सबही।
मथ दड करच्च मदराचल कौ, कलसी कर कच्छप की किलकौं ।।१७७८
रसरी गहि सेस निबध रही, मथनै दध लागेऊ हेत मही।
दिन अतर पाय धनतर' से, निकरे पटु वैद निरतर से ।।१७७९
सुख-रूप सुधा अस ऊँचस्रवा, निकरे केऊ रत्नहु और नवा।
जगस्वेत सुदर्सन चक्र गनौ, सरसाय रमा सुरराय सुनौ ।।१७८०
जलसाई जनार्दन देख जुरे, कमला विमला निज कथ करे।
हरि-सग रमा लखकै हरखे, विवुधावली फूल घने वरखे ।।१७८१

दोहा

दपत मिल देवन दई, सपत सुख सरसाय।
दुरवासा रिखी स्राप दुख, मोचन कीनी माय ।।१७८२
दैतन-सौं लर देवता, सपत पाय समाज।
कछु दिन अतर जुद्ध कर, राज लयौ सुरराज ।।१७८३
पुन षोडस परकार सौं, पूजे देवन पाय।
मात लक्षमो मोदमय, सुरग वसी सुरराय ।।१७८४
ध्याँन कीरतन धारना, मूल मत्र तिह मूल।
ध्यावे तिह वाढै धरम, करमन के अनकूल ।।१७८५

मत्रः—श्री ह्री क्ली मैङ्कमल वासिन्यै स्वाहा—इति।

जप कीनौ दस लक्ष जिह, उदध खीर तट इंद्र।
सपत पाये सुर सकल, ध्याये ध्याँन धनिंद्र ।।१७८६
दक्षप्रजापत भक्त द्रढ, मनु सावर्न महाँन।
नृप मगल प्रीयवृत निपुन, ध्यावत लिछमी ध्याँन ।।१७८७
पदउताँन केदार पुन, रमा-भक्त भये राज।
जगमै वरतत जाहि की, ये परपाटी आज ।।१७८८
इहै रमाँ आख्याँन कौं, पढै गुनै सुख पाय।
दुख दरिद्र सव दूर ह्वै, संपत वढै सिवाय ।।१७८९

छंद द्वै-अखरी

नारायन-सौं सुन मुनि नारद, विवव लक्षमी-चिरत विसारद।
स्वाहा स्वधा दक्षणा सकती, परमातम की कहीयत प्रक्रती ।।१७९०
इनको चिरत वखाँनहु औरै, जासौं भक्ति-भावना जोरै।
वोले जव नारायन वाँनी, मुनीयै नारद वात सयाँनी ।।१७९१
स्रष्ट आद मै वन्यौ जु स्वर्गा, वाढ्यौ वस देवतन-वर्गा।
अवलचत भये हेत अहारा, विध के लोक गये तिह वारा ।।१७९२
वेदगर्भ-सौं करी जु विनती, ग्रसत छुधा दुख की कर गिनती।
विध सोचन लागे तिह वेला, ईस ध्याँन कौं धार अकेला ।।१७९३

पराप्रक्रत कीय ध्यॉन पछारी, निजर परी इक सु दर नारी ।
स्याँम-वरन ताकी दुति सोहै, मंद-हास अधुरन मन मोहै ।।१७९४
जिह ब्रह्मा हित की गत जाँनी, बोली उचत मनोहर-वाँनी ।
कारज होय सुतौ सब कहीयै, लखकै लाभ जथारथ लहीयै ।।१७९५
स्वाहा के सुन वचन सयाँने, जब बोले आतमभू जाँने ।
दमुना सक्ति होहु तुम दाहा, सब दुज जपहि नाँम तुव स्वाहा ।।१७९६
जिग मैं आहुत देहै जेती, अतरभूत करहु तुम येती ।
देवनकों देवहु सुखदाँनी, जिह-जिह नाँम कहै तिह जाँनी ।।१७९६
माँनव देव सबहि मिल माँनहि, विप्र नाँम जिग-थली वखाँनहि ।
मानहु सत्य वचन इह मेरा, तातै अगन करहु पति तेरा ।।१७९८
इह सुन स्वाहा गही उदासी, पर्म प्रीत श्रीक्रस्न प्रकासी ।
क्रस्न विना सर्व जग भ्रम-कूपा, इह तन भरम-रूप अनुरूपा ।।१७९९
सेवा क्रस्न करहुँ सुखदाई, विध नाँहिन करीयै वरीयाई ।
इह कहिकै चाली वन-अतर, वपु तप करन हेत वहुरतर ।।१८००
ध्याँन क्रस्न उर धरी धारना, क्रस्न नाँम जपि भक्ति कारना ।
वन मै लाख वरख जिह बीता, प्रभु दरसन दीय आय पुनीता ।।१८०१
कमल-नयन मुख देख कँनाई, उपज्यौ मोह काँम उर आई ।
स्वाहा देख क्रस्न मुसकाँने, जीय की गूढ भावना जाँने ।।१८०२
विधना कही प्रथम तुम वाचा, सासन करहु सबै विध साचा ।
देवनकौ मेटहु दुख-दारद, वसुधा-कीरत लेहु विसारद ।।१८०३
सक्ति दाहका होय हुतासन, आहूती झेलहु अनुसासन ।
देवनकौं देवन सुखदाई, दुरवलता जावै दुखदाई ।।१८०२
है सुरकारज सोई हमारा, नहि मै देव-जात सौं न्यारा ।
करी रूप सौं काँम-काँमना, वँह मै देहूँ सत्य आँमना ।।१८०५
विच अवतार कल्प वाराहा, सुवप सवार लेहुँ मै स्वाहा ।
नग्न जिती व हुय नारी, करहु काँम-क्रीड़ा सुखकारी ।।१८०६
कला-रूप सौ होय काँमनी, भोग भरहु निज-रूप भाँमनी ।
क्रस्न दयौ वर तिह विच कंतर, अतरध्याँन भये वहुरतर ।।१८०७
आये अष्टस्रवन तिंहि अवसर, वचन कहे स्वाहा वरीयै वर ।
अग्नदेव करीयै पति अपना, काज सबै उर छुटै कलपना ।।१८०८

विध के स्वाहा वचन विचारा, वरयौ अगन कौ ताही वारा।
वेद-विधाँन करयौ उदवाहा, अतकीनौ मिल सुरन उछाहा ।।१८०९
जुरी अगन स्वाहा की जोरी, वढी परसपर प्रीत वहोरी।
भोग-विलास करन्त सुख भीने, नेह परसपर वढत नवीने ।।१८१०
वीते सतवत्सर सुख विलसत, हेतमई दपत चित हुलसत।
स्वाहा गर्भ रह्यौ सरसाई, द्वादस वरख विते सुखदाई ।।१८११
तीन पुत्र कीय उतपत ताही, दक्षनाग्न स्वाभाव दहाही।
दूजौ गारहपत्य दहेऊ, आदहवनीय तीसरौ येउ ।।१८१२
ब्राँमन क्षत्री होम-विधाँना, जपत नाँम स्वाहा जिग जाँना।
सिद्ध मत्र जुत लेत जु स्वाहा, निगम कहत सोई होत निवाहा ।।१८१३
स्वाहाहीन फलत नही सोऊ, कोट उपाव करै जो कोऊ।
जिम विषहीन सर्प की जाती, जैसे वेदही हीन दुजाती ।।१८१४
पति-सेवा विन पत्नी पेखौ, द्रुम-साखा विन जिह विध देखौ।
विन विद्या नर दीसत विगरे, स्वाहा विनाँ मत्र इम सिगरे ।।१०१५
स्वाहा नाँम लेय दुज सवही, जिग्य हवन होवत है जवही।
पोख-दाय अरू मोख-प्रदाँनी, माता सुरन नरन जग-माँनी ।।१८१६
पूजन तही अगन कीय पाँनन, अस्तुत ध्याँन मत्र अवसाँनन।
सब सिद्धीदायक है सोऊ, भलो-भाँत जाँनहु निज भेऊ ।।१८१७

मंत्र —ओ ह्री श्री वँन्हीजायायै देव्यै स्वाहा—इति।

मूल मत्र जप करै महाँना, मिलै अभिष्ट सही मनमाँना।
नाँम तँही षोडस कौ निरनै, कहत विचार जाप कौ करनै ।।१८१८
स्वाहा वन्हि प्रीया है सोई, जाया-वन्हि कहत है जोई।
कहत तिही सतोखकारनी, सक्ती क्रीया-गति ध्रुवा सुधारनी ।।१८१९
कालदात्री परिपाक हू करी, ससार सार रूपा अनुसरी।
दाहिका दहन क्षमा सुखदाई, जीवन-रूपा नाँम जनाई ।।१८२०
घोर ससार तारनी घेरा, विवुध पोख कारनी वहुतेरा।
सोरह नाँम मात है स्वाहा, पढै तँही दुख हटै प्रवाहा ।।१८२१
होवत नाँहि कहूँ अग-हीना, पुन सुभकर मन लहत प्रवीना।
लहत भारजा सुत सुख लाहा, सुमरन करै नेम सौ स्वाहा ।।१८२२

दोहा

स्वाहा कौ आख्याँन सब, वरनन करयौ वसेस ।
कहत सुधा आख्याँन कँह, आद-अंत अवसेस ।।१८२३

छंद द्वं-अख्खरी

आद सृष्ट ब्रह्मा उपजाई, सात पित्र उपजे समुदाई ।
च्यार रूप धारक प्रतिछंदा, पुन तेजोमय तीन प्रवंदा ।।१८२४
तिनके नाँम कहतहू तेते, कव्य वाडनल आदक केते ।
और सोम जम नाँम अरियमा, अगनी ष्वाता जाँन अनुक्रमा ।।१८२५
वही रखत सोमपा बरनत, पित्र गनन की सख्या परिनत ।
ब्रह्मा इन हित स्राध-विधाँना, नित अहार हित कीय निरवाँना ।।१८२६
स्नाँन रू तर्पन स्राध साधना, अरु देवनहु की अराधना ।
तीनहु सध्या अतक तेऊ, आँनकै होत समापत येऊ ।।१८२७
सध उपासन स्राध सदाई, तर्पन वलिहुदाँन तदाई ।
वैस्यदेव धुनि वेद विहूँना, सो अजगर जिम दुजहीय सूना ।।१८२८
सेवा हरि की करै न सोई, जाँनहु दुज सूतक रत जोई ।
पित्र हेत कर स्राध प्रमिष्टी, सिरजन पालन लगे सु सृष्टी ।।१८२९
स्राध करन कौ लागे सवही, त्रप्त पित्रगन भये न तवही ।
जव विधपै पुन गये जु जुरकै, करी वीनतो जोरै करकै ।।१८३०
भाग जथारथ मिलै न भोजन, परकासहु कछु सिद्ध प्रयोजन ।
पित्रन की सुन वात पिछाँनी, वेद-गर्भ सव विध विग्याँनी ।।१८३१
इक कन्याँ माँनसी उपजाई, सुधानाँम सु दर सुखदाई ।
पित्रनकौ दीनी परमेष्टी, पालन काज करनकौ पुष्टी ।।१८३२
जहाँ उपदेस कर्यौ दुज जाती, स्वाहा देवन इष्ट सुग्याती ।
जपत जिग्य मैं नाँम ही जैसै, इहै सुधा हित पित्रन ऐसै ।।१८३३
कारज पित्र करहुगे कोई, जाके मंत्र पठहुहै जोई ।
सुधानाँम उच्चारहु सगा, पाती पावही पित्र प्रसगा ।।१८३४
पिंड जलादिक देवहु पित्रन, सो समाँन मिलहै सरवत्रन ।
विध के वचन सुने जब विप्रन, तव पित्रन हित लगे जु तर्पन ।।१८३५

सुधानाँम जप-जपकै सारे, पिंड देत निज हात पसारे।
पित्र देवता द्रुज परिवारा, मुनि मनु आदक स्रष्ट मभारा ।।१८३६
पूजन सुधा करत अत पावन, निगम साख इह कलुख नसावन।
स्राध-दिनन रितु सरद समाँना, मघा नखत सजोग मिलाँना ।।१८३७
सुधा पूजकै करै सराधा, विगत दरिद्र होय दुख वाधा।
ध्याँन धारना इह विध धारै, विध कन्या वपु रुप विचारै ।।१८३८
सातरूप पित्रन सुखदाई, सुधा-सुधा रूपी सरसाई।
वनै न या विध ध्याँन वसेसा, सालग्राँम करै अवसेसा ।।१८३९
मगल-घट थापै अथवा सिल, जा माँही पूरन भरकै मिल।
मूल-मत्र जाही जप मडै, अनुभव वृत्ती धार अखंडै ।।१८४०

मत्र —ओ ह्री श्री क्ली स्वधा देव्यै स्वाहा—इति।

नमै पाय अस्तुत कर नेहा, वार-वार तनुधा कह वेहा।
पाप छूट जिग कौ फल पावै, विघन अनेकन जाहि विलावै ।।१८४१
जपै त्रसध्या नाँम सु जाही, सदाँ रहै गन पित्र सहाही।
सध्याकाल नाँम सुमरीजै, करग जोर पुन वदन कीजै ।।१८४२

दोहा

सुधा कह्यौ आख्याँन सव, पित्रन हेत पुनीत।
देवी वरनत दक्षना, पुन्यदाय स प्रवीत ।।१८४३

छंद पद्धरी

आख्याँन दक्षना सुनहु येह, द्रुज पूजत है नित निसदेह।
गोलोक-वीच गोपी-गुपाल, सुसीला नाँम नैना-विसाल ।।१८४४
सो सखी राधका रहत संग, अत रूपवती अभिराँम अग।
रासेस क्रस्न तिह प्रीत राच, इक वेला पकरयौ ऐंच-आच ।।१८४५
वैठारी जघा उद्ध वाँम, कछु उपवी वाधा चित्त काँम।
राधका देख वँह छिन रिसाय, अमरख उर नैना वढयौ आय ।।१८४६
हरि भाग चले भयभीत होय, किहु जाय दुरे जाँनै न कोय।
गोपीहु सुसीला आद गात, घूजनकौं लागे घर-धरात ।।१८४७
सव गोपी चलकै येक साथ, हिल मिली-राधका जोर हाथ।
त्रयकोट गोप आये तहीज, पद राधा-वदन कीय पतीज ।।१८४८

राधका उतारी महारीस, सखी गोप नमाये पगन सीस।
चितवन जब लागी क्रस्न चाहि, तहाँ नही लखे प्राँनेस ताहि ।।१८४६
बस विरह भई व्याकुल बसेस, हित करहु करत जैसे हमेस।
कीजीयै आपकी विरद कौन, माँननी राखीयै प्रीया माँन ।।१८५०
प्रीय करत भरन-पोखन प्रीयाहि, जग कहत नाँम भरतार जाहि।
पति-नाँम पालना करत प्यार, स्वामी सरीर रक्षा सुधार ।।१८५१
काँम कौं देत है नाम कंत, सुख देत नाँम वधू स्रजंत।
प्रेम के प्रदाँनी नाँम पीय; तिह रमन नाँम रति देत तीय ।।१८५२
ऐस्वर्ज देत जिह कहत ईस, नायक तुम मेरे सुख-निधीस।
विरहातुर राधा भई वाँम, निज क्रस्न-क्रस्न मुख लेत नाँम ।।१८५३
निकरी सु सुमीला ह्वै निरास, अत क्रस्नचद्र हित लहि उसास।
तब विस्नु चतुरभुज चिते ताहि, सो गई विस्नु ही मै समाहि ।।१८५४
जिग करन लगे इत देवजात, तेऊ सफल होत नही सनहु तात।
विध-लोक गये पूछन विचार, वीनती करी बहु वार-वार ।।१८५५
मेटन देवन कौ दुख महाँन, धारयौ सु पितामह विस्नु-ध्याँन।
विस्नू वर दीनौ विध विसेस, काटहु देवन कौ सब कलेस ।।१८५६
जब विस्नु लक्षमी कछुक जोत, अग सौं करी न्यारी उदोत।
तिह नाँम दक्षना सुभग तीय, जिग हेत दई विध जाँन जीय ।।१८७
विध जिग सौं कीनौ तँहाँ व्याह, उर देवन कै वाडयौ उछाह।
निज कमलमुखी लहि जिग्य नार, वहु करन लगे तासौ विहार ।।१८५८
सुर वछ्छर वीते येक सत्त, दक्षना जिग्य दीय गर्भ दत्त।
द्वादस अनुवछ्छर विते देव, ऊपज्यौ कर्मफल सुत अजेव ।।१८५९
जब कर्म होत परिपूर्न जीव, सम कर्मन फल पावत सदीव।
दीनौ सु कर्मफल जवही देव, सतुष्ट पुष्ट भये कर्म सेव ।।१८६०
दक्षना दुजन कौं देत दाँन, सुख पावत फल कर्मन समाँन।
ततकाल कर्मकै अत ताहि, जजमाँन देत फल इधक जाहि ।।१८६१
द्वै-घटी कर्म पस्चात देत, है दुगनी दैनै माँझ हेत।
दिन रात कवहु करीयै न देर, विप्रन कौ दीजै तँही वेर ।।१८६२
विन दयै दक्षना कर्म वेस, नहि फलत वेदवाँनी निदेस।
वित दैन कहत देत न वहोर, चडाल दुजन्मा गनहु चोर ।।१८६३

अपवित्र दरिद्री होत आप, श्रीमहाँलक्ष्मी देत स्राप।
पित्री नही लेवत सलल पिंड, आँमना स्त्रुती सुमृती अखंड ॥१८६४
जिग आद दक्षना विना जाँन, वलि राजभोग लेवत विधाँन।
वरदाँन दयौ वावन विसेस, है भाग पती दाँनव हमेस ॥१८६५
करीयै न दक्षना विना कर्म, धनवाँन पुरस कौ इही धर्म।
जिग करी दक्षना पुज्ज जाहि, वर्नना ध्याँन प्रीती वसाहि ॥१८६६
वरन्यौ वेदन मैं तिह विधाँन, सव करत सु ग्याता सावधाँन।
जिग मैं सव ताकौ करत जाप, पावत सदगत कौ तिह प्रताप ॥१८६७
राजसूजिग्य जो कोऊ रचत, अरू वाजपेय आदक अनत।
नरमेघ तथा गोमेघ नाम, क्रतु अस्वमेघ है सुभग काँम ॥१८६८
विस्नू-जिग लागल-जिग विधाँन, जिग वैरमर्द जाँनहु सुजाँन।
अन्न-जिग यसस्कर धनँद और, वसूदाँन-जग्य पूरत वहोर ॥१८६९
फलदाँन जग्य गजमेध फेर, क्रतु लोह-जग्य सोवर्न केर।
जिग रत्न तांम्र जाँनहु जरूर, पुन रुद्र-जिग्य सिव-जग्य पूर ॥१८७०
वधूक सक्र-जिग वारुनेय, कँहु कुंड जिग्य है कारनेय।
सुचि-जग्य धर्म-जिग स्रेष्ट सोय, सव पातक मोचन जग्य सोय ॥१८७१
जाँनहु व्रह्माँनी कर्म ज्याग, भद्रक-जिग जोनी-जिग सभाग।
जप-ज्याग सवन सौं इधक जाँन, विच हृदय देस ताकौ विधाँन ॥१८७२
आरभ करत जिग जवही आद, वर्नना दक्षना करत वाद।
जिह ध्याँन तथा इह मंत्र जाप, पापीजन मोचन करत पाप ॥१८७३

ध्याँन

लक्ष्मी दक्षां ससम्भूता न दक्षनाङ्कमला कलाम्।
सर्व कर्मसु दक्षाञ्चः फलदा सर्व कर्म्मनाम् ॥१
विष्णोस्सक्ति रूपाञ्च. पूजिताम्वन्दिता सुभाम्।
सुद्धिदां सुद्धिरूपाञ्च सुमीला सुभदाम्मजे ॥२

मूलमत्र सौं पूजा करै—षोडसोपचार इह मूल मत्र—

ओ श्री-ल्की ह्री दक्षनायै स्वा—इति

धीमत दक्षना करत ध्याँन, पढ मत्र पूज साधन प्रमाँन।
सुत नार लहत परवार सुद्ध, वाढत न वैर कुल सौं विरुद्ध ॥१८६४

चित मैं कोऊ विद्या करत चाह, परवीन-वुद्धि बुद्धी प्रवाह।
धन पावत निर्धन करत ध्याँन, नृप भूँमहीन भूँमी निदाँन ॥१८७५

दोहा

सकट मैं सुमरन करत, पावत आनँद पोख।
सुनै दक्षणा कथ स्रवन, दूर गमावत दोष ॥१८७६
अवषष्ठी आख्याँन कौं, कहत सुनहु दै काँन।
प्रकृत अस षष्टम परा, सिसुन सवँन सुखदाँन ॥१८७७
सोई त्रीया सकध[1] कौ, सिसुन सहायक सोय।
नार सूतका न्हाँन कर, जाही पूजत जोय ॥१८७८

छंद द्वै-अख्खरी

स्वायभू मनु भये सुग्याता, तिह अगज प्रीयवृत नृप ताता।
परने मालिनी नार पुनीती, प्रीत-रीत वाढी परतीती ॥१८७९
बालक भयौ न वहु दिन वीतै, कस्यप आये रिखी कहीतै।
जिग करायकै खीर दई जह, ताकौ राँनी खाय लई तँह ॥१८८०
भई गुर्वनी नृपत भाँमनी, द्रुति वाढी वपु मनहु दाँमनी।
वरख विते द्वादस जिह वेला, उपज्यौ अगज आय अकेला ॥१८८१
प्राँन रहित ताही कौ पिंडा, आँखन देखत होय उछडा।
रोदन करन लगी जव राँनी, महाँ उदासी मन मैं माँनी ॥१८८२
सुनी वारता नरपत सोई, हरि की करनी सोई गत होई।
मृतक पुत्र लै चलौ मसाँना, करत रुदन दिह मुख कुमलाँना ॥१८८३
सुतन मृतक तन भूँम सुआयौ, इतै विमाँन उतर नभ आयौ।
इक देवी तामै अवरेखी, वपु सुंदरता सहित विसेखी ॥१८८४
अस्तुत करी नृपत ह्वै आरत, कह्यौ दीन मुहि करचौ कृतारथ।
पूजा कर लाग्यौ तिह पूछन, तुमही कवन सु कहहु ततछिन ॥१८८५
सुन देवी नृप की कथ स्राँनन, विधवत लागी वात वखाँनन।
कंन्या माँनसी मैं विधकेरी, मति निर्मल है निस-दिन मेरी ॥१८८६
भई सकध-ग्रेह मैं भाँमन, कहत जगत तिनही कौ काँमन।
प्रकृती षष्टम अस प्रमाँनी, नाँम कहत षष्टी निर्वाँनी ॥१८८८

१ कार्तिकेय।

देत अपुत्रन सुत वित दारा, है नित-प्रत इह नेम हमारा।
इह कहि बालक लयौ उठाई, मुख सौं बोली बात मिठाई ॥१८८८
सरजीवत कीनौ सुख साजा, रह्यौ अचभित ह्वै जब राजा।
जिह अस्तुत कीनी करजोरी, बोली देवी वचन बहोरी ॥१८८९
मनु स्वायभू सुत तुम मांनी, धरा त्रलोकपती रजधांनी।
बस बधावहु लै सुत बीरा, परजा की मेटहू पर-पीरा ॥१८९०
इह कहि बालक दयौ अघपती, नृप दुख को सब भई निवृती।
सुन देवी की बात सहू जन, परजाहू नृप लागी पूजन ॥१८९१
ग्रेह सूतका ऊठत गोरी, जिह देवी पूजत कर जोरी।
भूलै दिवस छटै किहु भेवी, दिन इकीस मैं पूजै देवी ॥१८९२
अन्न प्रासना दिन सुभ-अवसर, बालक हित बचत ताही बर।
ध्यांन विधांन धारना बावन, परजा पावन करत अपावन ॥१८९३
चपक वरन तिही प्रतिछदा, आंनन नैन रूप अरविंदा।
पोड़स-विव पूजा तिह पष्टी, स्रष्टी पूजत ताहि समष्टी ॥ १८९४
मूल-मत्र कौ जप तिह मडै, छुटै ताप ताही रुज छंडै।
सुक्ल पष्टमी पूजा सावन, बांझ करै सोई ह्वै निरबाधन ॥१८९५
घट-थापन कर स्रवा घनेरी, वट पूजै अथवा तिह बेरी।
सालगरांम सिला सुखदाई, सेव करै संपत सरसाई ॥१८९६
अथवा चित्र लिखै बिच आलय, कु कम चर्चति पाय क्रपालय।
पढै मत्र सोइ लिखत प्रवीना, होवहि सबै आप दुख हीना ॥१८९७

मंत्र·—ओ ह्री पष्टी देव्यै स्वाहा—

स्तोत्र मूल श्लोक

नमो देव्यै महादेव्यै सिद्धै सात्यै नमोनम·।
सुभायै देवसैना पष्टो देव्यै नमोनम ॥१
वरदायै पुत्रदायै घनदायै नमोनम।
सुखदायै मोक्षदायै षष्टौ देव्यै नमोनम ॥२
स्रष्टौ षष्टास रुपायै सिद्धायै च नमोनम.।
मायायै. सिद्ध योगिन्यै पष्टी देव्यै नमोनम· ॥३

सारायै सारदायै च परादेव्यै नमो नम. ।
ब्रह्माधिष्ठात्रिदेव्यै च षष्ठीदेव्यै नमो नम. ।।४
कल्याणदायै कल्याण्यै फलदायै च कर्मणाम् ।
प्रत्यक्षायै स्वभक्ताना षष्ठीदेव्यै नमो नमः ।।५
पूज्यायै स्कधकान्तायै सर्वेषा सर्वकर्म्मसु ।
देवरक्षणकारिण्यै षष्ठीदेव्यै नमो नम. ।।६
शुद्धसत्वस्वरूपायै वदितायै नृणा सदा ।
हिंसाक्रोधवर्जितायै षष्ठीदेव्यै नमो नम ।।७
धन देहि प्रिया देहि पुत्रन्देहि सुरेश्वरी ।
मानं देहि जयं देहि द्विषो जहि ममेश्वरी ।।८
धर्मं देहि यशो देहि षष्ठीदेव्यै नमो नम. ।
देहि भूमिम्प्रजान्देहि विद्या देहि सुपूजिते ।।९
कल्याणञ्च जय देहि षष्ठीदेव्यै नमो नम. ।
इति देवीञ्च सस्तूय लेभे पुत्रम्प्रियव्रतः ।।१०

छद द्वै-अक्षरी

प्रीयवृत राजा पर्म पुनीता, जिह देवी पूजी जग-जीता ।
पुत्र जीयौ अरु सब सुख पायौ, अभय वसाय आप गृह आयौ ।।१८९८
इह षष्टीदेवी आख्यांना, परगट कीयौ सु वीच पुरांना ।
सुनै येक वत्सर लग सोऊ, करै पाठ प्रीती जुत कोऊ ।।१८९९
असुत लहै सुत गुनी उदारा, पुत ताही वाढै परवारा ।
सुत जो रोगी होय सरीरा, पढै मास-भर छुटै सु पीरा ।।१९००
षष्टीदेवी है सुख-खांनी, विधवत जाकी कथा वखांनी ।
अव मगल चडी आख्यांना, वरनत ताकौ सकल विधांना ।।१९०१
मगल चडी करता मगल, अघ मेटत अरु सकल अमंगल ।
मगल रूप सदां महमाया, कली चपक वरनी जिह काया ।।१९०२
मगल गृह-पूजा जिह मांनी, भव दुख मेटन सोइ भवांनी ।
ईस्वरी दुर्गा प्रक्रत अनादू, मूरत भेद तँही मरजादू ।।१९०३
त्रपुर मारनै हित त्रपुरारी, उदित भये विन ही असवारी ।
संकट आय परचौ रन सूली, हित चित सौ जाही मति हूली ।।१९०४

विध विस्नू उपदेस वतायौ, वँह सुमरन सिभू उर आयौ ।
अस्तुत करी विहृत आराधन, सुभग मत्र पूजा जुत साधन ।।१६०५
दुर्गा भेद-रूप दीय दरसन, पुन सिंभू कीनी वहु परसन ।
वोली तव सिंभू सौं वाँनी, भय त्यागहु मैं कहत भवाँनी ।।१६०६
तुम वाहन ह्वै है हरि तेई, जेर करहु दनुजात अजेई ।
भय कौं त्याग जुद्ध कौं भिरीयैं, लेहु जीत उठकैं अव लरीयैं ।।१६०७
वृषभ-रूप हरि भये सिववाहन, सुर-नर लागे सकल सराहन ।
सक्ती ह्वै सिव-सक्ति समाई, अस्त्र दये विस्नू अविकाई ।।१६०८
सिव दाँनव कौं खेत सँघारे, अत सकट सौं देव उवारे ।
वरखे सुमन हरख उर वाढ्यौ, चदन केसर वहु सिर चाढ्यौ ।।१६०९
सिव कीनी देवी सिवकाई, सोड़स-विध पूजा सरसाई ।
मूल मत्र जप हीय सौं मंड्यौ, खल असुरन छल वल कौ खड्यौ ।।१६१०

मत्र —ओ ह्री क्ली सर्व पूज्यै देवी मंगल चण्डिके हुम्फट स्वाहा—इति ।

वरन इकीस मत्र वरदायक, लाख जपै दस भक्ती लायक ।
सिद्ध होय सपत सरसावै, पाप विलाय अटल पद पावै ।।१६११
ध्यांन करै हीय मैं मतिवीरा, सुस्थिर जोवन सहित सरीरा ।
विद्रुम ओठ लयें मुख वीरा, हसन दसन दमकत जनु हीरा ।।१६१२
चपक स्वेत वरन पतिछ्छदा, आँनन नैंन मनहु अरविंदा ।
अरथ धरम सुख मोक्ष उपावै, मगल चडी मात मनावै ।।१६१३

महादेव उवाच— मूल स्तोत्र

रक्ष-रक्ष जगन्मातर्देवि मगलचण्डिके ।
हारिके विपदा राशेर्हर्षमगलकारिके ।।१
हर्षमगलदक्षे च हर्षमगलदायके ।
शुभे मगलदक्षे च शुभे मगलचण्डिके ।।२
मगले मगलार्हे च सर्वमगलमगले ।
सताम्मगलदे देवि सर्वेषाम्मगलालये ।।३
पूज्ये मगलवारे च मगलाभीष्टदेवते ।
पूज्ये मगलभूपस्य मनुवशस्य सन्ततम् ।।४

मगलाधिष्ठात्रिदेवी मगलानाञ्च मगले ।
ससारमगलाधारे मोक्षमगलदायनि ।।५
सारे च मगलाधारे पारगे सर्वकर्म्मणाम् ।
प्रतिमगलवारे च पूज्ये मगलसुखप्रदे ।।६

प्रैति मगल वासुर कर पूजन, सुख मगल सुभ लहत सहूजन ।
सिव पूजी तिह प्रथम सदाई, मगल गृह पूजी महमाई ।।१६१४
मगल इक राजा तिह माँनी, जग की त्रीया पुज्य कीय जाँनी ।
नर-जाती पुज्जन निरवाही, महंमाय सुखदायक माहो ।।१६१५

दोहा

मगलदेवी मगला, जो पुज्जहि कर जाप ।
जाय अमगल जातना, पुदगल के सब पाप ।।१६१६
नारॉयन नारद कहत, मनसादेवी मंत ।
करता जग ताकी कला, सदाँ वखाँनत सत ।।१६१७

छद उद्धोर

आख्याँन मनसा येह, सब सुनहु आँन सनेह ।
भइ कसप ही के भाँन[1], माँनसी कन्या माँन ।।१६१८
निरवाह मनसा नाँम, तिह हेत कहत तमाँम ।
परमात्म मनसा पेम, निज मनही साधत नेम ।।१६१६
रमतीत आतँम-रूप, सिध जोगनी सद्रूप ।
वैस्नवी सत्य विसेख, सो गनहु भगनी सेख ।।१६२०
जुग तीन क्रस्न ही जाप, तन करयौ ताही ताप ।
दीय जर्तकार दयाल, हीय जाँनकै पति हाल ।।१६२१
कीय प्रथम पूजा क्रस्न, पन पालकै हुय प्रस्न ।
प्रथमी सु स्वर्ग पताल, पूजी सु हित प्रतपाल ।।१६२२
निज जगद गौरी नाँम, कहीयै जु पूरन काँम ।
गहि हीयै सिवकौ ग्याँन, सैवी सु कहत सुजाँन ।।१६२३

---

१ भवन ।

भरपूर विस्नू भक्त, सत नाँम वैस्नवि सक्त।
जन्मेज कीय जप ज्याग, निर्भय उवारे नाग ।।१६२४
नागेस्वरी तिह नाँम, जग कहत आठों जाँम।
मिट जात विख ही हमेस, विखहरी नाँम विसेस ।।१६२५
उपदेस सिध जिह ईस, सिध जोगनी धर सीस।
पुन सरस विद्या पाय, सजीवनी सु वसाय ।।१६२६
नित ग्याँन-जुक्ता नाँम, अघ हरन सोइ अभिराँम।
मुनि आसतीक जु मात, खित प्रगट कीनी ख्यात ।।१६२७
पति जर्तकार प्रीयाह, जग हितू जाँनहु जाह।
नित भजै द्वादस नाँम, कलि सिद्ध ह्वै तिह काँम ।।१६२८

द्वादशनामश्लोका

जरत्कारजरद्गौरी मनसा सिद्धियोगिनी।
वैष्णवी नागभगनी शैवी नागेश्वरी तथा ।।१
जरत्कारप्रियास्तीकमाता विपहरेति च।
महाज्ञानयुता चैव सा देवी विश्वपूजिता ।।२ इति ।।

इह भजै नाँम उमंग, भय तजै भीम भुजग।
नित पठन करत निदाँन, करजात विषधर काँन ।।१६२६
जप लाख दसही जपत, सोइ सिद्ध होवत सत।
विप कोउ न व्यापत भीत, अरु होत ग्याँन अधीत ।।१६३०
धारै सु देवी ध्याँन, वपु स्वेत चपक वाँन।
वहु अलंकृत विस्तार, अवर सु झीन अधार ।।१६३१
उपवीत नाग अनूप, सुभ सात गौर सरूप'।
सव अधिष्टात्री सिद्ध, पावन प्रभाव प्रसिद्ध ।।१६३२
कर ध्याँन मति अनकूल, मिल मत्र साधै मूल।
पूजा करै जुत पेम, नित धारकै उर-नेम ।।१६३३

मत्र:—ओ ह्री श्री क्ली ऐं मनमादेव्यै स्वाहा—इति।

इह मत्र परम उचार, सुमरै सु होत सुधार।
जप पाँच लाख जपत, सिध जोग पावत सत ।।१६३४

सक्रात गर्भित सिद्ध, अह पचमी अविरुद्ध ।
पूजे सु इह तिथ पाय, जन महाँ सकट जाय ।।१९३५
आख्याँन ताकौ येह, सुनीयें जु निस्सदेह ।
वीती सु आगे वात, तिह सुनहु चित दे तात ।।१९३६
इह भूँम तल मै आय, वहु वढी नाग-बलाय ।
सव मनुज जीव सुजात, भयभीत ह्वै भहरात ।।१९३७
गहि कसप सरन गृहीत, निरवाह हीय नयनोत ।
मुनि अत दयाल मिलेह, गवने पितामह ग्रेह ।।१९३८
भाख्यौ पितामह भेव, सविखाद मनुज सहेव ।
जव मत्र विपहर जाँन, दीनौ सु मनुजन दाँन ।।१९३९
पुन प्रगट करीय प्रवेक, माँनसी कंन्या मेक ।
मुनि सुता जग की मात, वसुधा भई विख्यात ।।१९४०
कढ गई सोई किवलास, निज रही सिंभु-निवास ।
सत वरख रहि सविसेस, उर गह्यौ सिव उपदेस ।।१९४१
जप क्रस्नकौ लहि जास, पुन करयौ ग्यान-प्रकास ।
जप अष्ट-अक्षर जाँन, धारयौ सु अवचल ध्याँन ।।१९४२
पुस्करारण्य पवित्र, तहाँ चाल आई तत्र ।
जुग तीन रहि तिह जाग, अत क्रस्न कर अनुराग ।।१९४३
दीय क्रस्न दरसन देख, सुख वढ्यौ उर सविसेख ।
पाई सु क्रस्न पसाव, भल पूजना जुन भाव ।।१९४४
सिव करी मनसा सेव, भज इद्रहू लहि भेव ।
सुर मनुज नाग सवीन, कउमारि पूजा कीन ।।१९४५
पूजा त्रलोकी पाय, सुख पिता दीय सरसाय ।
पितु क्रपा कर-कर प्यार, वर करन करेऊ विचार ।।१९४६
मुनि जरत्कारहि माँन, दीय ताहि कंन्या दाँन ।
पति पायकै परसिद्ध, सिघ जोगनी भई सिद्ध ।।१९४७
पति करत्त सेवा पाय, सुख परसपर सरसाय ।
तप करत कवहुक त्याग, जप करत कवहुक ज्याग ।।१९४८
वीती सु वहुदिन वार, महा विपन रहत मझार ।
तन वढ्यौ आलस ताप, जगदीस करता जाप ।।१९४९

वट छाँह वैठ विचार, मृघचर्म समन मुमार।
तीय जघ घर उतमग, पौढे मु नीद प्रसग ।।१६५०
दिन छेह कीनो देख, वेला सु सघ विसेख।
पति सदा मत कों पाय, जप करन काज जगाय ।।१६५१
मुनि लख्यौ मनसा मत, अकुलाय वोले अंत।
भाँमनी निंद्रा भंग, कीय काँम येह कुढग ।।१६५२
पतिवरत त्याग्यौ पथ, कुसमय जगाय मु कथ।
पति क्रोव जुक्त परेख, द्रुति कह्यौ मनसा देख ।।१६५३
जप करन सध्या जान, हित करी निंद्रा-हाँन।
निज आप पत्नी नाथ, सुभ करत विचरत साथ ।।१६५४
नित आप संध्या-नेम, परिवृह्य सौ उर पेम।
मै सोचकै इह मत, ततकाल साधन तंत ।।१६५५
रिस करहु अथवा राग, भल अनहुभल वस भाग।
करजोर कहत क्रमाल, हित अहित जानत हाल ।।१६५६
भख भूख करता भग, अथवा-क मैथुन अंग।
जिम देत नीद जगाय, जो नर्क प्राँनो जाय ।।१६५७
अपराध कीनौ आप, पुन गनहु अथवा पाप।
सुन रिखी वायक स्रोन, मुख गही कछु दिन मौंन ।।१६५८
मनसा सु मन मुरझाय, रिखी सकी नाँहि रिझाय।
जव करचौ विघ हरि जाप, अरु पिता कस्यप आप ।।१६५६
आये सु तीनहु याद, महि मडता मुरजाद।
समजास कीनी संग, कल वात देख कुढंग ।।१६६०
रिखी मिट्यौ नाँहिन रोख, दुहु ओर वाढयौ दोख।
मत त्याग देख मुनेस, इह करचौ त्रहु उपदेस ।।१६६१
सुत विना त्यागै स्त्रीय, पातकी होवत पीय।
उपजायकै सुत येक, तुम रखहु तुमरी टेक ।।१६६२
विघ कसप हरि की वात, उर घरी मति अवदात।
मनसा सु करकै मेल, झुक लई नाभी झेल ।।१६६३
पढ मंत्र करेऊ प्रीयोग, जम गर्भ उपज्यौ जोग।
तव चले मुनिवर त्याग, उर छोरकै अनुराग ।।१६६४

वन करचौ पुस्कर वास, उर होय पर्म उदास ।
मनसाहु पति मति माँन, गृही सिभु कोनौ गाँन ।।१९६५
कयलास-वास करेहु, निज ग्याँन गरू मुख लेहु ।
सिव-चरन सरन सँभार, वहु लेत ग्याँन विचार ।।१९६६
गौरीहु देवत ग्याँन, जिह सुताकै सम जाँन ।
वेजनन समय विधाँन, जव परचौ गवरी जाँन ।।१९६७
वपु जतन कीन विचार, येकत वीच अगार ।
सुत भयौ परगट सिद्ध, पितु जरत्कार प्रसिद्ध ।।१९६८
गरु-भक्ति मनसा ग्याँन, सिखनी सु कर सनमाँन ।
निज सुता जिम कर नेम, पुन करयौ वहुविध पेम ।।१९६९
सिखनी सु सुत सुविचार, अरु करचौ सुभ आचार ।
निज आसतीक सुनाँम, जहाँ धरचौ मनसा जाँम ।।१९७०
वहुग्याँन दै विसवास, द्रढ जाँन सकर-दास ।
वहुरै पढाये वेद, निज भक्ति जुत निर्वेद ।।१९७१
मुनि आसतीक महाँन, धर पारवृह्म ही ध्याँन ।
गये पिता-पै कर गाँन, पुस्करारण्य प्रधाँन ।।१९७२
त्रयलक्ष हायन ताप, जगदीस कीनौ जाप ।
सिव आयकै सकेत, हीय मात मिल कीय हेत ।।१९७३
सुत मातु दहुँ इक सग, पितु मिलन पाय प्रसग ।
आये सु कस्यप यैन, लख धर्म दरसन लैन ।।१९७४
मिल अदित अरू दिती मात, कस्यप लही कुसलात ।
सुख सुता कीय सनमाँन, जग-पोखनी जीय जाँन ।।१९७५
जनमेज कीनौ ज्याग, पितु वैर हित रिस पाग ।
कुल नाग होमन-काज, रुख द्रोह सौं महाराज ।।१९७६
भय पाय तक्षक भाग, लीय इद्र सरनौ लाग ।
जव इद्रहू जीय जाँन, ग्रह कस्यप कीनौ गाँन ।।१९७७
विष हरी कहेऊ वृतत, सव नाग तेरे सत ।
इह वार करहु उधार, छित होत अहि कुल छार ।।१९७८
जहाँ दयौ मनसा जाँन, सुत दये सग सयाँन ।
जव आसतीकहु जाय, सवभाँत नृप समुझाय ।।१९७९

क्रतु वध कीनौ काज, सुख नाग दीय सुरराज।
जव इद्र पूजी जास, कीय कीत जग-परकास ।।१६८०
तिह मत्र और स्तोत्र, इह कहत जागा अत्र।
जग हेत कारक जीव, सुभ पाठ हेत सदीव ।।१६८१

मत्र —ओ ह्री श्री मनसादेव्यै स्वाहा—इति ।

पुरंदर उवाच— मनसास्तोत्रम्

देवि त्वां स्तोतुमिच्छामि साध्वीनाम्प्रवरां वराम् ।
परात्परा च परमान्न हि स्तोतु क्षमोधुना ।।१
स्तोत्राणा लक्षणवेदे स्वभावाख्यानतत्परा ।
न क्षम प्रकृतेर्वक्तु गुणाना गणनान्तव ।।२
शुद्धसत्वस्वरूपाङ्कोकोपर्हिसाविवर्जिताम् ।
न च शक्तो मुनिस्तेन त्यक्तुंयाञ्चा कृता यत ।।३
त्वम्मया पूजिता साध्वी जननी च यथादिति ।
दयारूपा च भगनी क्षमारूपा यथा प्रसू ।।४
त्वया मे रक्षिता प्राणाः पुत्रदारास्सुरेश्वरी ।
अहङ्करोमि त्वत्पूजाम्प्रीतिति वर्द्धता सदा ।।५
नित्या यद्यपि पूज्या त्व सर्वत्र जगदम्बिके ।
तथापि तव पूजा च वर्द्धयामि सुरेश्वरी ।।६
ये त्वामाषाढसक्रान्त्याम्पूजयिष्यन्ति भक्तित ।
पचम्याम्मनसा रिक्तायाम्मासान्ते वा दिने दिने ।।७
पुत्रपौत्रादयस्तेषा वर्द्धन्ते च धनानि वै ।
यशस्विन कीर्तिमन्तो विद्यावन्तो गुणान्विता ।।८
ये त्वान्न पूजयिष्यन्ति निन्दन्त्यज्ञानतो जना ।
लक्ष्मीहीना भविष्यन्ति तेषा नागभय सदा ।।९
त्वं स्वय सर्वलक्ष्मीश्च वैकुठे कमलालया ।
नारायणांशो भगवान् जरत्कारुर्मुनीश्वर. ।।१०
तपसा तेजसा त्वा च मनसा ससृजे पिता ।
अस्माक रक्षणायैव तेन त्वाम्मनसाभिधा ।।११

मनसादेवी सत्या त्व स्वात्मना सिद्धयोगिनी ।
तेन त्वा मनसा देवी पूजिता वन्दिता भव ॥१२

ये भक्त्या मनसा वाचा पूजयत्न्यहर्निशम् ।
तेन त्वा मनसा देवीम्प्रवदन्ति मनोषिरण ॥१३

सत्यस्वरूपा देवीत्व शस्वत्सत्यनिषेवरणात् ।
यो हि त्वाम्भावयेन्नित्य स त्वाम्प्राप्नोति तत्पर ॥१४ इति ॥

अस्तुति मनसा ग्रेह, गये इंद्र करकै ग्रेह ।
जिह भ्रात मनसा जाँन, द्रढ दई आसिष दाँन ॥१६८२

सुत सहित पितु-गृह सोय, सुख पाय रहीय सकोय ।
गोलोक सुरभी ग्यात, देवी सु जग सुख दात ॥१६८३

तिह दुग्ध पायौ ताय, दीय ग्यांन गूढ दिढाय ।
पूजा सु जग मै पाय, सो गई स्वर्ग सिधाय ॥१६८४

दोहा

इह स्तोत्र उर-धारकै, पाठ करै लख पच ।
विष इमृत सम होत वपु, रहै न अहि भय रच ॥१६८५

नारद प्रति नारांयनहि, गाई मनसा गाथ ।
सोनकादि सुन सूत सौं, सवही भये सुनाथ ॥१६८६

सुरभीकी आख्याँन सुभ, सुनवे लायक सोय ।
नारांयन नारद प्रतै, गुननै लागे गोय ॥१६८७

छंद पद्धरी

वृंदावनहू की सुनहु वात, रम रहे रावका-क्रस्न रात ।
पय-पाँन करन श्रीक्रस्न पेम, निज याद दई खुध्या सु नेम ॥१६८८

वपु वाँम-पार्स सौ तिही वार, परगट कीय सुरभी सहित प्यार ।
जिह वार सुदाँमा गोप जाँन, पय दोहि करायौ क्रस्न पाँन ॥१६८९

दुग्ध कौ पात्र श्रीक्रस्न दैन, लागे सु सुदाँमा लगे लैन ।
गिर गयौ भयौ सोइ ताल गोल, उदपाँन जेम आक्रत अमोल ॥१६९०

सत जोजनकै परमाँन सोय, गोलोक विराजत प्रभा गोय।
तिह खीर-सरोवर नाँम ताल, विचरत नट गोपी गोप-वाल ॥१६६१
सुरभी रोमन सौं गऊ साथ, निज प्रगट करचौ गोलोकनाथ।
गोपन कौं दीनी वाँट गाय, परिपूरन ह्वैगये दुग्ध पाय ॥१६६२
वछरी-वछरन की भई वृद्ध, ससार वढी तासौं समृद्ध।
जग की उपकारक गऊ-जात, खित कोन न जाँनत तँही ख्यात ॥१६६३
जन प्रजा ईस्वरी मात जाँन, दध-दूध और घृत देत दाँन।
पुष्टी सुर पावत जिग पसाव, सम कलपवृक्ष सातुक सुभाव ॥१६६४
कउमार भारवाही करन्न, उपजावत वारह भार अन्न।
दत विप्रन कौं कोऊ गऊ देत, हरिलोक-वास पावत सहेत ॥१६६५
अहलोक तरत परलोक आद, बहु नर्क-ताप मेटत विपाद।
पूजे सुरभी के प्रथम पाय, श्रीक्रस्नचद्र राधा सुभाय ॥१६६६
पूजा कीय सुर नर मुनि पुनीत, करजोर उचारत विवध क्रीत।
क्वार की सुक्ल प्रतिपदा केर, वसुधा सव पूजत प्रात वेर ॥१६६७
भक्ती-जुत सुरभी भजन-भाव, सो मत्र पड़ाक्षर सुभ सुभाव।
इक लक्ष जपै सिध होत आद, मत जुजरवेद वाँधी मृजाद ॥१६६८

मत्रः—ओ सुरभ्यै नम —इति।

ध्याँन

लक्ष्मीस्वरूपाम्परमा राधासहचरीम्पराम्।
गवामधिष्टात्रिदेवीङ्गा, वामाद्याङ्गवा प्रसूम् ॥१

पवित्ररूयाम्पूताञ्च भक्ताना सर्वकामदाम्।
यया पूत सर्वविश्वन्तान्देवी सुरभिम्भजे ॥२ इति ॥

वाराहकल्प की सुनहु वात, वरती सोई जगमैं है विख्यात।
इक वार विस्नु माया अधार, सुरभी हरलीनौ दूध सार ॥१६६६
सुर विकल भयै मघवा समेत, हिल-मिलकै वृहमा कह्यौ हेत।
विध सुरभी की पूजा विधाँन, मघवाहु वतायौ सुर मिलाँन ॥२०००
सुरराज वतायौ सुर-समाज, कीय सुरभी माता सफल काज।
सुरराज पूज कीय सुरन साथ, हित पाय स्तुत इह जोर हाथ ॥२००१

इन्द्र उवाच— सुरभिस्तोत्र : मूल

नमो देव्यै महादेव्यै सुरभ्यै च नमो नम ।
गवाम्वीजस्वरूपायै नमस्ते जगदम्विके ॥१
नमो राधाप्रियायै च पद्मागायै नमो नम. ।
नम कृष्ण प्रियायै च गवाम्मात्रे नमो नम ॥२
कल्पवृक्षस्वरूपायै सर्वेषा सततम्परम् ।
क्षीरदायै धनदायै बुद्धिदायै नमो नम. ॥३
शुभदायै सुभद्रायै गोप्रदायै नमो नम ।
यशोदायै कीर्त्तिदायै धर्मदायै नमो नम ॥४

छंद पद्धरी

सुरभा सुन अस्तुत सुनासीर, खादन स्वादन कीय प्रगट खीर ।
गोलोक सिवाई सुभग गात, मनुजन देवन की आद-मात ॥२००२
स्वर्गीय गये मघवा सिधाय, जुर वसे स्वर्ग सुस्थाँन जाय ।
भूतल मै जितनी गऊ भेस, वढ दूध दैन लागी वसेस ॥२००३
जग करन लगे जिग होम जाप, पुष्टी जन वाढी जिह प्रताप ।
भये सुखी च्यारहू वर्न भोज, उर देवनहू के वढ्यौ ओज ॥२००४
दाँनव खल लागै दैन दंड, अमरन प्रताप वाढ्यौ अखड ।
इह सुरभी की महिमा उपार, मति जाँन तकै राधा मुरार ॥२००५
सुरभी हरी सेवा अनुसरत, राधका हेत साथे रहत ।
आख्याँन सुनै सुरभी उचार, परिवार वढै गो वढै प्यार ॥२००६
धन-धाँन वढै सनमाँन धर्म, क्रतुकाज सफल निस्रेय कर्म ।
धारै सुरभी कौ हृदय ध्याँन, सव तीर्थन मै मनु कर्यौ स्नाँन ॥२००७
नारॉयन भाखत अवर नेम, जुग राधा दुर्गा-रूप जेम ।
ससार करत परगट सकोय, जढ-जगम उतपत आद जोय ॥२००८
अव राधाकी आख्याँन ऊद्ध, सम्वत वेदन की सुनहु सुद्ध ।
जाके मत्रन कौ जपै जाप, ताके मिट जावत तीन ताप ॥२००९

मत्र षडक्षर—श्रीराधायै स्वाहा इति ।

द्वितीय सप्ताक्षर—ह्री श्री राधायै स्वाहा—इति ।

दोऊ मत्र सुखद अरु मुक्तिदाय, भक्तन कौं चितामणी भाय ।
उपदेस मूल देवी अराव, श्रीक्रम्न लयी गोलोक साध ॥२०१०
विस्नु कौं दयी क्रम्न ही वताय, वृह्मा विस्नू सौं लीय वसाय ।
वैराट क्रस्न दीय दुतीय वार, धर्महु विराट सौं लयी धार ॥२०११
धर्म हूँ दयी हमकौं धरोज, उर-धारयौ त्यूँही वढ्यौ ओज ।
जातै हम निसदिन करत जाप, पढ रिखी कहीजत इह प्रताप ॥२०१२
राधका जाप विन क्रस्न-रूप, उर नाँहि प्रकासत गति अनूँप ।
चाहत कोऊ वैस्नव क्रस्न चित्त, निस्चय सौं राधा भजै नित्त ॥२०१३
है प्राँन अधीस्वरी क्रस्न हेत, श्रीराधाक्रम्न ही मुक्ति मेत ।
नवमैं-सकद्ध मैं मंत्र-न्यास, उपदेस वतायौ मुक्ति-आस ॥२०१४
नारायन है रिखी आद नेम, जिह मत्र हैं देवी देव जेम ।
अरु गायत्री है छद-उक्ति, ओ वीज भुवनेस्वरी सक्ति ॥२०१५
सव मंत्रन मैं है इही सार, इक मूल मत्र जाकै अधार ।
पड़अग-न्यास अभ्यास खेल, मत्र है जिही सौं तैंही मेल ॥२०१६
आराधन राधा रीत येह, श्रीक्रस्नचद्र भीनी सनेह ।
धारै ताही कौ हृदय ध्यांन, सित चपक तन आभास मांन ॥२०१७
चिव आँनन लोचन सरद-चद, मुसकावत अधुरन मद-मद ।
दीपत दुत जामैं स्वेत-दंत, परकास मनहु कँनी वज्र-पत ॥२०१८
उर-वीच कठन उंन्नत उरोज, मुकमार खीन-कट पद-सरोज ।
आभूषन रत्नन सभ्भत अग, उद्यत अनूप आभा अनंग ॥२०१९
पवसाक नवीनहु झीन-पाट, जर-तार किनारी जगमगाट ।
वहु गोपी सोहत सग वाल, वैठी सु रास-मडल विचाल ॥२०२०
सरसत रस वरसत मुच सुहास, रासेस क्रस्न की प्रेम-रास ।
वीरी प्रवाल ओठनं विचाल, मालती विराजत कठ-माल ॥२०२१
भक्तन कै ऊपर सात-भाव, परमेप्टी पूजत सिभु-पाव ।
धारीयै इही विध हृदय ध्यांन, मुक्त की निसेनी रूप मांन ॥२०२२
थित अप्टहु दलकौ जत्र थाप, अथवा सिल सालग्रांम आप ।
अथवा घट पूजा करै येम, पोड़स प्रकार सौं लहै खेम ॥२०२३
परवार राधका करै पूज, सनमाँन नाँम लैलै सहूज ।
अगनी इसाँन नैरत्य एम, जाँनीयै दिसा वायव्य जेम ॥२०२४

च्यारहू कून मैं पूज चाहि, मध्य मैं अंग पूजा मिलाहि।
अष्टदल जत्र के भाग अग्र, सुविचार करै देवी समग्र ।।२०२५
दक्षनावर्त की रीत देख, सक्तीयाँ आठ पूजै सवेख।
कल्पना प्रथम राधा करेह, आँनन दिस पच्छम अनुसरेह ।।२०२६
जाही तैं पूजा प्रथम जाँन, आरभ पिच्छम सौं करै आँन।
मालावति पिच्छम दिस मुकाँम, वायव्य मालवी वसत वाँम ।।२०२७
दिस उत्तर रत्नमाला दिपत, ईसाँन सुसीला अनुसरत।
सिसकला दिसा पूरव समाय, आग्नेय पारजाता सु आय ।।२०२८
पारावती दक्षन दिसा पेख, प्रीयकारनी नैरत दीस परेख।
सक्तीयाँ औंर ब्राँह्मी सहेत, सेवै वाहिर कौ पुन्न्य सेत ।।२०२९
दिकपालन पूजै दिसा देख, विध-जुक्त मुक्तिदायक विसेख।
वज्राद सख देवी विचार, पूजना करै आठौ प्रचार ।।२०३०
सावर्न रीत पूजा सभेव, इह विध सौ जाँनहु अवसमेव।
निज पाठ राधका सहँस नाँम, करीयै पूजन सौ सफल काँम ।।२०३१
जप मूल-मत्र करीयै जरूर, दुख पातक जावै सवही दूर।
उच्छ्छव राधा कौ-अनुसरत, कातकी पूर्नमासी कहत ।।२०३२
विस्नु के तुल्य गोलोक-वास, रास की ईस्वरी लखत रास।
गोलोक-वासनी सदा ग्यात, तेऊ सुता भई वृपभाँन तात ।।२०३३
पुहमी वृज-मडल कीय पवित्र, तिह राधा वरनन जत्र-तत्र।
वृपभाँन दुलारी रहत वास, वृंद्रावन-भूँमी हित विलास ।।२०३४

नारांयन उवाच—

श्रीराधा स्तोत्र मूल श्लोक

नमस्ते परमेशानि राजमण्डलवासिनी।
रासेश्वरि नमस्तेस्तु कृष्णप्राणाधिकप्रिये ।।१
नमस्त्रैलोक्यजननि प्रसीद करुणार्णवे।
ब्रह्मविष्ण्वादिभिर्द्देवैर्वन्द्यमानपदाम्वुजे ।।२
नम सरस्वतीरूपे नमस्सावित्रि शाङ्करि।
गगा पद्मावतीरूपे षष्ठी मगलचण्डिके ।।३
मनसे तुलसीरूपे नमो लक्ष्मीस्वरूपिणी।
नमो दुर्गे भगवति नमस्ते ब्रह्मरूपिणी ।।४

मूलप्रकृतिरूपान्त्वाम्भजाम. करुणार्णवाम् ।
ससारसागरादस्मादुद्धराम्ब दया कुरु ।।५
इति श्रीराधास्तोत्रम्

दोहा

करैं राधका याद कोऊ, तवैं स्तोत्र अकाल ।
गोत वढै धन-धाँन गो, बाढै आयु विसाल ।।२०३५
वास वसैं गोलोक-विच, अंत अवस्था आप ।
जग इमृत सम जाँनीयें, जीयननि राधका जाप ।।२०३६
नारांयन निरनय निगम, करकैं भाखत कथ्य ।
श्रवन करत नारद समुझ, सतवादी समरथ्य ।।२०३७
कहत अवैं दुर्गा-कथा, मत्र-विधाँन समेत ।
सुखदायक जाही स्रवन, है जन कारक हेत ।।२०३८

छंद द्वै-अखरी

जग करता दुरगा जगजननी, हर की सक्ती विपता-हननी ।
अधिष्टात्री बुधि अतरयाँमनी, सब जीवन की है नित स्वाँमनी ।।२०३९
वैस्नव सैंव सदाँ कर वंदन, दूर करत पातक दुख दुंदन ।
मूल-प्रक्रत थित स्रष्ट महाँना, मत्र नवक्षर सब जन माँना ।।२०४०

मत्रः—ऐं ह्रीं क्लीं चामुंडायै विच्चे—इति ।

उत्तम मंत्र जाँनीयै येही, ऋषी वृह्मा हरी ईस रहेही ।
गायत्री उष्णिक जुत गावै, छद अनुष्टप तिह छिब छावै ।।२०४१
माहाकाली माहालिछमी माँनौ, सरस्वति महाँ देवता साँनौ ।
रक्तदतका दुरगा रूरी, भ्रामीर बीज जाँन भरपूरी ।।२०४२
भज नदा साकभरि भीमा, सक्ती तीन जाँनीयै ससींमा ।
धर्म-अर्थ हित काँम मुक्ति वर, कर विनयोग विहत साधन कर ।।२०४३
न्यास करैं जाकौं इह निरनैं, सिरमैं ऋमीयन ह्वैकै सरनैं ।
मुख मै छद देव हीय माँही, सून वाँम त्रय-सक्ति समाँही ।।२०४४
दछ्छन स्तन बीज त्रय दीजैं, कल्पना मत्र भाग त्रय कीजै ।
बीज तीन चामुडा विच्चे, स्वाहा पट हुम् पट फट सिच्चे ।।२०४५

षडन्यास गरु-मुख लहि खेलै, मस्तक सिखा नेत्र स्रुत मेलै।
गुदा-द्वार जुत मत्र गढाई, विधजुत वृती ध्याँन वढाई ॥२०४६
रूप वतावत देवी रूरी, प्रति तत्रकन कह्यौ जू पूरी।
मूरत उर देवी की मडे, आयुध येते धार अखडै ॥२०४७
सुभग खड्ग अरु चक्र सवेला, वाँण चाप परिघा अतवला।
सूल भुसडी सिर अरु संख, अग स्याँम अरु त्रय जुत अख ॥२०४८
दस मुख पाव विराजत दसहू, आभूपन धारे उरजसहू।
ध्याँन कालका वृह्मा ध्यावत, विधजुत सोय सरूप वतावत ॥२०४६
मधुकैटभ सघारनि माता, क्लीं सरूपनी मति कुसलाता।
मडत कमल गलै-विच माला, वसत करग मै परसु विसाला ॥२०५०
गदा वज्र सर पद्म चाप गहि, कुडी दड खड्ग सक्ती कहि।
ढाल कमल घटा कर धारै, सुरा-पात्र फिर सूल सँवारै ॥२०५१
पास सुदर्सन है जिह पाही, रक्त कमल आरूढ रहाही।
ह्रीय वीज-रुपणि ह्रीकारी, महिपासुर कौ मारन वारी ॥२०५२
महाँलक्षमी जग की माता, सुमरन ध्याँन करत सुग्याता।
धारै घटा सूल संख-धुन, परतख मुसल सुदर्सन धनु पुन ॥२०५३
वाँन पद्म धारै विधुवदनी, कुद वरन सुभादिक कदनी।
वीज-मंत्र ये रूप वसाता, माहाँ सरसुती जग की माता ॥२०५४
ध्याँन करै नितप्रत उर धारन, सच्चदानदनि रूप सुधारन।
दुर्गा आद प्रक्ती देवी, सुर नर सकल मुननगन सेवी ॥२०५५
जत्र पूज विध ताही जाँनत, विधवत जाकौ भेद वखाँनत।
प्रथम त्रकोन कोन षट पूरत, चतुर्विस दल कमल की सूरत ॥२०५६
अष्ट कमल-दल ध्याँन अराधै, सालग्रॉम तथा सिल साधै।
जत्रराज अथवा घट जाँनौ, महमाय प्रतिमा इम माँनौ ॥२०५७
ककर नदी नर्बदा केरा, सूर्ज-विंव कौ रूप सवेरा।
हित चित सौ अपनी मति हेरी, करै भावना देवी केरी ॥२०५८
पूजा करै होय जन पावन, नितप्रत काया कलुख नसावन।
जया आद सक्ती फिर जैसै, आराधना पीठ पै ऐसै ॥२०५६
देवी अग्र कोन कौ देखै, सरसुती वृह्मा पूज सँपेखै।
नैरत लिछमी-हरी निवासा, वायव सिव-पारवती वासा ॥२०६०

देवी सिंघ दिसा कर दहनै, महपानुर वाँमै कर महनै।
पुन पट-कोन करै इम पूजा, देखै भाव नही कोऊ दूजा ।।२०६१
अँनुक्रम सौं नंदजा अराधै, सक्ती रक्तदतका सावै।
साकभरि दुरगा कर सावन, इम भीमा भ्रामरि आराधन ।।२०६२
आठ-कूँन मै अनुक्रम ऐसौ, जाही कौ वरनत हूँ जैसी।
व्राँह्मी माहेस्वरी कँवारी, वैस्नवी वाराही सु विचारी ।।२०६३
नरसिंघी इद्री निरनीती, पद चामुंडा करीयै प्रीती।
पुन चौइस पत्र परपूरन, उचत पूज कर होवै ऊरन ।।२०६४
विस्नूमाया चेतना वुद्धी, नीद क्षुधा छाया जु निरुद्धी।
घरा तथा त्रस्ना क्षान्ती पुन, जाती लज्या साति स्रधा जन ।।२०६५
काति लक्षमी धृती वृत्ति कहि, स्रुती सुमृती दया तुष्टी सहि।
पुष्टी माता भ्राँति पिछाँनौ, इन सवही की पूजा आँनौ ।।२०६६
वाहर ताहि गँणेस वहोरी, छेत्रपाल हित पूज छहोरी।
वटुक जोगनी पूजा वहुरै, वज्री वज्र लीयै कर विहरै ।।२०६७
पूजा मै दुर्गा प्रीतर्था, अर्पन पोडस-विध सौं अर्था।
अर्पन कर राजो उपहारा, मंत्र नवार्णव जपै मझारा ।।२०६८
अस्तुति सप्तसती पुन उचरै, विजय पाय भूमडल विचरै।
अर्थ धर्म अरु काँम उपावै, जीवन भुगत मुगत पद जावै ।।२०६९
नारायन कहि नार्द निहारा, नवम-सकध कह्यौ निरधारा।
पढै सुनै सोई होय पुनीता, जाँनहु सोय जन्म कौं जीता ।।२०७०
भवतारन श्रीमाँत भवाँनी, व्रह्मा विसन महेस वखाँनी।
दुर्गा आद प्रक्रती देवी, सुर सकट जाही विध सेवो ।।२०७१
मनूँ चतुर्दस सुर-समुदाई, सव जोगोजन कीय सिवकाई।
पच प्रक्रत की वाख्या पूरत, सव अवतार कला कोह सूरत ।।२०७२
गावहि सो पावहि जन ग्याँना, सत्य-सत्य इह सत्य समाँना।
गुनै पढै जो कोऊ इह गाथा, सुखी होय अरु होय सुनाथा ।।२०७३
नवरात्री मै सुनै जु निरनै, श्रीजगजननी जावत सरनै।
जनम-मरन छूटै जंजाला, कलुख नही व्यापै कलिकाला ।।२०७४
सकुन परीक्षा यामै साचो, ऋखी मुनी जामै मति राची।
ताकी रीत कहत हूँ तैसी, जाही वात विचारहु जैसी ।।२०७५

कन्या जो सुच होय कंवारी, अथवा वटुक बुलाय अगारी।
स्नाँन कराय सुवेख सँवारै, पूजा-पुस्तक सुद्धि प्रवारै।।२०७४
स्वर्न देय कर ताहि सिलाका, कहै छोर लहि बुद्धि कलाका।
परै जहाँ अध्याय परेखै, दोहा छद भावकों देखै।।२०७५
सुभ वा असुभ विचारै सोई, जाही मै कारन ह्वै जोई।
नारायन कहि नारद निरनौ, व्यासदेव देख्यौ जिह वरनौ।।२०७६

बुधसिंह चारण रचित

देवीचरित

दशम-स्कंध

दोहा

नारायन नारद कह्यौ, दसम भाग उपदेस।
सूत सोनकादिकन कौं, वरनत कथा विसेस ।।१
जोइ मन्वतर रूप जिह, मिस्रत चरित महाँन।
कहत पूज आकार कौं, जाँनहु देवी जाँन ।।२

छंद पद्धरी

नारांयन वरनत निसदेह, अभिराँम कथा सुनलेहु येह।
हरि नाभ कमल विध प्रगट होय, सवही विसतारी सृष्टि सोय ।।३
आनन[1] स्वायभू मनू आद, परगट जिह कीनौ तज प्रमाद।
सतरूपा राँनी तिही साथ, निज सृष्टि हेत दीय लोकनाथ ।।४
उपदेस दयौ दपत अनूप, भक्ती तुम देवी करहु भूप।
सुन वचन पितामह मनु सयाँन, भारजा सग लै त्याग भाँन[2] ।।५
तेऊ खीर-समुद की जाय तीर, ध्यावन कौं देवी लगे धीर।
मृतका की मूरत सुभग मड, अवसेस करन लागे अखड ।।६
जहाँ मत्र-वागभव करचौ जाप, तन सौ दोऊ लागे करन ताप।
हठ जीत स्वास कौ निराहार, पुन कॉम-क्रोध आमा प्रहार ।।७
इक पाव रहे ठाढे अखड, मूरत देवी की हृदय मड।
धारचौ सत वत्सर लाग ध्याँन, जव देवी दरसन दयौ जाँन ।।८
वर्नना करी राजा विचार, पुन देवी उपज्यौ भक्ति प्यार।
वर माँग कह्यौ राजा विसेस, उरमैं नही राखहु कछु अँदेस ।।९

---

१ मुख । २ भवन=आवास-गृह ।

मुख राजा वोल्यौ सुनहु माय, सतती वढावहु सुख सुभाय।
अतमै मुक्ति कौं देहु आप, तँन सौ मम छूटै त्रहूँ ताप ॥१०
देवी वर दैकै चली देस, विंध्याचल पर्वत पै विसेस।
रोक्यौ सु प्रथम जिह सूर राह, थिर कीय अगस्त मुनि तप अथाह ॥११
सोनकादिकन मिल कह्यौ सूत, आख्यांन सुनावहु इह अभूत।
जव सूत कहन लागे जनाय, गिर विंध्याचल कौ वल गनाय ॥१२
पर्वत विंध्याचल अत पवित्र, तरु जापै सोहत जत्र-तत्र।
जापै मृग खगकौ वास जाँन, अफछरा देव ता रहत आँन ॥१३
आगे मुनि नारद तँही उद्ध, पूजा जिह कीनी गिर प्रवुद्ध।
सतकार पाय वैठे सुथाँन, वोल्यौ विंध्याचल विमल वांन ॥१४
कहाँतै मुनि आये कहहु काज, मम वात सुनावहु माहाराज।
जलवालक दीनौ मुनि जवाव, सुनलेहु वात मेरी सताव ॥१५
आये सुमेर सौं इहाँ ऊठ, पर्वत लख गर्वत फेर पूठ।
पारवती कन्या जन्म पाय, माँनत पवित्र सिवकौ मनाय ॥१६
भये ससुर सिंभु के उग्र-भाग, जहाँ-तहाँ देवन के होत ज्याग।
गिर निखध गधमादन गरिष्ट, अष्टापद जाही नील इष्ट ॥१७
परवार वसत वहु आस-पास, निध करत रत्न जामै निवास।
सूरज नछ्छत्र जाही सुमार, सिर घूँमत जिह वदत सँसार ॥१८
अभिमाँन वढ्यौ ताकौ अखड, महि ऊपर माँडी सथिर मड।
याही तै माँनत स्रेष्ट आप, उर माँन भयौ जातै अमाप ॥१९
माँनी तज हम तौ चले माग, विंध्याचल देखन तुहि विभाग।
इह कहकै केऊ दिन रहे ऊद्ध, पुन वृह्मलोक चाले प्रवुद्ध ॥२०
गवने जव नारद पिता-ग्रेह, छल-वल जलवालक करत छेह।
जलवालक हिमचल इधक जाँन, उपज्यौ अदेसौ हृदय आँन ॥२१
हिमगिर कौं जीतन वढी हाँम, करनै मन-वचत सिद्ध काँम।
विंध्याचल करकै इह विचार, तहाँ हिमगिर जीतन भयौ त्यार ॥२२
घूँमत नछ्छत्र गृह सीस घेर, इन रोक करहु तापै अँधेर।
आकास मग्ग वाढ्यौ अपार, कीय सूर रोककै अधकार ॥२३

सब लोकपाल लौ प्रजा-साथ, उद्यम-विहीन हुयगे अनाथ।
जम वरुन इद्र पोलस्त[1] जाय, सतधृती[2] करी विनती सुभाव ।।२४
विध सग लये सब देव-वृ द, चल गये सिभु-पै छोर छद।
सिव आगै करकै विध समेत, निज विस्नू के पँहुचे निकेत ।।२५
विस्नू कौं भाख्यौ सब वृतंत, उतपात विंध कौ आद अंत।
जब रमाँनाथ हू समय जाँन, सब देवन कीनौ समाधाँन ।।२६
देवन उपोह कर हरी देख, वेदना कहन लागे वसेख।
विंध्याचल रचना कीय विचत्र, मारग कौ रोक्यौ जाहि मित्र[3] ।।२७
सध्याविहीन द्रुज रहत सर्व, सब निर्बल हुय बैठे सुपर्व।
मेटहु सकट कौं माहाराज, वीनती करत इह छोर व्याज ।।२८
सुन विनय हरी वोले सुभाय, निज वात सुनहु तुम सुर निकाय।
पुन मुनि अगस्त के जाहु पास, बस रह्यौ विसाला पुरी[4] वास ।।२६
वँह समय पाय करहै उपाय, भगवती-उपासक भक्ति भाय।
पावन अगस्त मुनिवर प्रवुद्ध, सो करहि तुमारौ काज सिद्ध ।।३०
प्रारथना करहू जाय पास, जीय माँझ भरोसौ राख जास।
सुनकै श्रीविस्नू समाँचार, कासी चल आये जुत करार ।।३१
मुनि सौं प्रनाँम कर कह्यौ मत, विंध्याचल जू कौ छल वृतत।
वातापि पचावन तिहि वेर, उठ चले जगत मेटन अंधेर ।।३२
स्त्री लोपामुद्रा लई साथ, नमकै पद वदे विस्वनाथ।
करकै पुन वदन कालराज[5], सवोध देय मुनिवर समाज ।।३३
साखी गँनेस की पूज्य साध, अरु देवी दुर्गा जप अराध।
दक्षन-दिस चाले लखत देस, भर रह्यौ अँधारौ भीम भेस ।।३४
पुन चलकै ताके गये पास, उत्सेध[6]-स्रग चूंमत अकास।
विंध्याचल देखे मुनि वरिष्ट, उर भयौ नंम्र निज जाँन इष्ट ।।३५
कीनौं सु दडवत तिही काल, कर सीस-धार कुभज कृपाल।
आसिष दे वोले रिखी एम, निरवाह करहु तुम कहत नेम ।।३६
जौलौ फिर आवै इहाँ जाग, मम सुलभ उतारहु समुझ माग।
उठकै नन वाढहु फेर ऊद्ध, पर्वत पुनीत सब विध प्रवुद्ध ।।३७

१ कुवेर। २ ब्रह्मा। ३ सूर्य। ४ काशी। ५ कालभैरव। ६ ऊँचा।

विध्याचल दक्षन करचौ वास, श्रीसैल नगर मैं सावकास।
मलकार्जुन तीरथ महांदेव, सुख पाय सुधारत रहे सेव ॥३८
ध्रुव मलयाचल पै रच्यौ धाँम, कासी आवन कौ तज्यौ कांम।
कीनौ अगस्त इह ऊद्ध काज, सुख दीनौ भूसुर सुर-समाज ॥३९

दोहा

स्वायभू मनु की सकल, उतपत भाखी आद।
मुनि अगस्त पुन विध मत, वरनन कीय सवाद ॥४०
सुनै गुनै सौं होय सुख, पावै ग्यांन प्रतीत।
धन वाढै वाढै धरम, जुद्ध भूप ह्वै जीत ॥४१

छंद पद्धरी

मनु सुतन भये मडन मृजाद, प्रीयवृत्त अवर उत्तांनपाद।
इह उभय पराक्रम अप्रमेव, श्रीदेवी करता पर्म सेव ॥४२
पुन स्वारोचिष मनु भये प्रतिष्ट, उर देवी साध्यौ ध्यांन इष्ट।
जमुना के तट-पै जही जाय, जप करन लगे आसन जमाय ॥४३
वीते सु वर्ष द्वादस वसेस, दुति देह वही वढी मांनहु दिनेस।
तंहां देवी दरसन दयौ ताहि, जव स्तुति करी कर जोर जाहि ॥४४
तारनी[1] सक्ति दीय राज तास, पुहमी प्रसिद्ध वाढ्यौ प्रकास।
भय मन्वतर कौ सोई भूप, रुचि धर्म सुधारत आप्त-रूप ॥४५
भोगे जिह सुख सौं राजभोग, पद-मुक्ति होत करकै प्रीयोग।
वयकुंठ गयौ तज पुंहम-वास, अत-पै जक्त ह्वैकै उदास ॥४६
पुन भये मनूं प्रीयवृत्त पूत, उत्तंम नामा सोइ अत अभूत।
श्रीगगा-तट पै गये सोय, जप करचौ वागभव मत्र जोय ॥४७
त्रय वर्ष विताये करत ताप, अवा दीय दरसन आय आप।
मनु भये वसुमती के महांन, सतती वुद्धि वाढी समांन ॥४८
सुख राज भोगकै गये स्वर्ग, वसुमती त्यागकै वधुवर्ग।
प्रीयवृत्त पुत्र तामस पुनीत, जोई भये मनूं सव सत्रुजीत ॥४९

---

१ तारिणी।

नर्वदा-कूल दक्षन निदाँन, जप वीज-मत्र क्लीं करचौ जाँन ।
कीय सुमरन देवो पुस्पकाल, आराव वृत्त आस्वन उजाल ।।५०
कर स्तुत निकटक राज कीन, दस पुत्र अविका ताहि दीन ।
तिह राज-भोग तन करचो त्याग, भगवती-लोक पँहुच्यौ सभाग ।।५१
प्रीयवृत्त-पुत्र रैवत प्रतिष्ट, यमुना-तट देवी साव इष्ट ।
सो भये मनू वहुरे सधीर, परजा की मेटत रहे पीर ।।५२
स्वर्गकौं गये सोई सिवाय, वसुमती वीच कीरत वसाय ।
मनुवन की भाखी कथा मूल, श्रीदेवी सेवक साँनुकूल ।।५३
खिति षष्टम मनु की सुनहु ख्यात, वर अग[1]सुतन चाक्षुक विख्यात ।
सेवक देवी के सावधाँन, मुनि पुलह करचौ जाही मिलाँन ।।५४
सरनागत ह्वैकै कह्यौ साच, विध-जुक्त विचारहु मोर वाच ।
सव विध सौं पाऊँ राजश्रीय, द्रढ भक्ति वढे देवी दुतीय ।।५५
संतती लहूँ वसुधा सिवाय, परमातम परसूँ मोक्ष पाय ।
सुन पुलह मुनी नृप समाचार, वोले हित चित सौं मति विचार ।।५६
आराधन देवी करहु आप, पैहौ मन-वचत तिह प्रताप ।
जप जिही वागभव[2] लहहु जाँन, सब विध सौं ह्वैकै सावधाँन ।।५७
मुनि करचौ जही उपदेश मत, उठ विरजा[3]-तट चाले इकंत ।
जप करन लगे तप तँही जाग, वीते सु वर्ष द्वादस विराग ।।५८
देवी दीय दरसन ह्वै दयाल, वर माँगहु वोली भुज विसाल ।
सुन चाक्षुक देवी वचन स्राँन, जव वोल्यौ राजा समय जाँन ।।५९
वर दीजै देवी उर-विचार, अतर की जाँमनि जन-अधार ।
अहलोक सवै परलोक आद, महि-मडल विलसूँ जुत मृजाद ।।६०
अभिलाखा उपजी इही आय, तुव जाप जप्यौ मैं तन तपाय ।
जव देवी चाक्षुक भक्त जाँन, दीय मन्वतर लग राज-दाँन ।।६१
मनु सोई भये षष्टम महीप, देसातर जीते सकल दीप ।
कीय राज अडग लहि पुत्र केक, येकतै पराक्रम अधक येक ।।६२
सुख राजभोग करकै सुभाय, परलोक गयौ पद-मुक्ति पाय ।
वैवस्वत मनु सप्तम विख्यात, स्वाँमी मन्वतर भये सुग्यात ।।६३

---

१ राजा अंग । २ वाग्भव । ३ विरजा नदी ।

देवी प्रसाद सौं अत दयाल, करता प्रभाव वरताव काल।
सावर्न[1] होयगे मनू सेख, वरताव काल आदक विसेख।।६४
पति भये मनंतर सोइ प्रसिद्ध, सब राज खोया लैकै समृद्ध।
तिह करनी कीनी तन-तपाय, पुनि देवी सौं वरदान पाय।।६५
सो कहत सबै आख्यान सार, सुनीयै रिखी नारद समाचार।
स्वारोचित मन्वतर मँह सुभाय, ऊपजे येक नृग सुरथ आय।।६६
चैत्रासी[2] जाकी सुद्ध चाल, भये कोलापुर नगरी भुवाल।
दानी सोई पुज्यक विप्र देव, अरु सत्रुन सौ रन मै अजेव।।६७
भावी वलिष्ट तै पलट भाग, पौऊत्र ध्रुव कौ रीस पाग।
नृप नद आय घेरचौ सुनग्र, सग सेना लैकै भट समग्र।।६८
जाजुल्य भयौ केऊ दिवस जुद्ध, वाढचौ सु उभय ओरन विरुद्ध।
नृप भयौ पराजित सुरथ नाम, वदलकै मंत्रि-दल भयौ वाँम।।६९
राजा तव भागौ छोर राज, आपनौ जाँन सव विध अकाज।
वनमै सोइ विचरन लग्यौ वीर, धारी येकाकी नही धीर।।७०
मिल मेधारिख सौं कह्यौ मत, भय सोक-ग्रस्त वन मैं भ्रमत।
छुट गयौ राज नही मिटी चाह, दमुना झल जैसी रहत दाह।।७१
उर मोर सिरावै सोऊ उपाय, विध-जुक्ति उक्ति दीजै वताय।
ऋखीराज कह्यौ सुन सुरथराज, करीयै हित देवी सुकृत काज।।७२
सुभदायक मायक जिह सरूप, भल-रीत सुनहु जिह चिरत भूप।
ससार लीन ह्वै समासुप्त, करता है ताही काल कुप्त।।७३
जगनाथ जनार्दन जगत-जीव, सवहीय समेट सोवत सदीव।
ताँमसी-सक्ति कौ वढत तौर, मिल अंग प्रमीला सुरन-मौर।।७४
सोये नागाधिप पीठ सैन, निर्भय हुय तहवाँ मूंद नैन।
मल काँन गिरचौ तव उदध माँहि, नारांयन ताही लख्यौ नाँहि।।७५
मधुकैटभ उपजे दनु मदध, सविसेख वली मल के समध।
हरि नाभ-कमल मैं प्रगट होय, सत्वक गुन सातुकी लीयै सोय।।७६
जवनीय-वीच दनु फिरत जाय, ऊतमासन विध कौ लखे आय।
भयभीत करे तिन दनुज भेट, हरि नाभ-कमल विध चले हेट।।७७

---

१ सावर्णि। २ चैत्र वंश मे।

हरि लीन प्रमीला नैंन हेर, विस्मय मन वाढ्यौ तँही वेर।
मति उपजी विध के हीय-मझार, मोहि स्याहिक नाँहिन विन मुरार ।।७८
गुन सक्ति ताँमसी पाय गात, तेऊ पौढे आपौ भूल तात।
जव सक्ति ताँमसी करचौ जाप, वँह विस्नू छोर गई दूर आप ।।७९
वर्नना करी विध पाय वद, अत देवी हीय वाढ्यौ अनद।
तहाँ जाग सेषसाई[1] तुरंत, विध कहन लगे अपनौ वृतत ।।८०
सुनकै मधुकैटभ वात स्राँन, गति सीघ्र करचौ जुध-काज गाँन[2]।
इतने-पै दाँनव मिले आय, करनै नियुद्ध लागे कुपाय ।।८१
आई न दनुजकै अग-आँच, परिवित्सर वीते महँस पाँच।
देवी तव हरि की दसा देख, वस मोह करे दाँनव विसेख ।।८२
माँगकै मुखा निज लई मीच, विस्नू दनु मारे जुद्ध-वीच।
निरनै माहाकाली इही नाँम, कल्याँन करन जग जाहि काँम ।।८३

दोहा

माहाकाली महमाय कौ, कह्यौ चरित अरु कीत।
लखहु चरित माहालक्ष्मी, जन रिपु लैहौ जीत ।।८४

छंद द्वै-अक्खरी

मेधामुनि वोले मति महाँन, सुन नृपत-कथा हुय सावधाँन।
महषासुर प्रगटचौ जव महीप, जिह लोकपाल कौं लये जीय ।।८५
सुर वृह्मा के गये सरन संग, पुन जाय सिंभु भाख्यौ प्रसंग।
सिव-वृह्मा मिलकै देव-साथ, निज कथा कही सव रमाँनाथ ।।८६
जव कह्यौ जनार्दन समय जाँन, मेरी इह लीजै वात माँन।
नारी सौं मरहै महिष नीच, विनता नही ऐसी जगत-वीच ।।८७
मिल सवही मनावहु आदमाय, वँह करहि दैत मारन-उपाय।
सुर मुनी रमाँपति की सलाह, उठ चले हिमाचल जुत उछाह ।।८८
जगतवा करनै लगे जाप, तनहू-मनहू सौं भरन ताप।
जव निखसन[3] लागी अंग-जोत, येकठाँ भई मिलकै उदोत ।।८९

---

१ विष्णु। २ गमन। ३ निकलने।

तासौं इक परगट भई तीय, कर जोर स्तुत सब सुरन कीय।
महिषासुर मारहुँ कह्यौ माय, सुखी करहु देव करकै सहाय ।।९०
जब देवी देवन कह्यौ जाँन, पति दनुज महिष-कौ हरहुँ प्राँन।
तब दयौ त्रसीरख सिभु तास, पुन विस्नु चक्र करता प्रकास ।।९१
पासी तिह दीने सखपास[1], जागरव[2] सतघ्नी सक्ति जास।
पवपान[3] दये धनु-वाँन पूर, जमराज दड दीने जरूर ।।९२
ऐरावति घटा वज्र इंद्र, सुच हार वस्त्र दीने समद्र।
दीय परमेष्टी रुद्राक्ष दाँम, लै नीर कमडल अत ललाँम ।।९३
कीय सूर प्रकासक रोमकूँप, रगमगत किरन तै तेज रूप।
करवाल ढाल दीय देव काल, नागाधिप[4] दीनी नाग-माल ।।९४
असवारी कारन सिंघ येक, उदगद्रि दये रत्नन अनेक।
कीय अर्पन मद पात्रहु कुवेर, विस्वक्रत् फरस दीय तही वेर ।।९५
अरु अलकार दीने अनूँप, रमनीय प्रकासन करत रूप।
भुज माँझ अठारह भरयौ भार, सविसेख वलय वजुला सु धार ।।९६
अन सुरन करी पूजा अनेक, कर विनय पदारथ दये केक।
देवी प्रसन्न ह्वै देव देख, धारयौ असुरन सौं महाँ ध्वेख ।।९७
कर सिंघनाद कोपी कराल, थरहरन लगे दनुँ नीर थाल।
महिषास्वर सुनकै धुनँ मदघ, वहु सुभट अनीकनी अनी-वध ।।९८
आयौ सु लरन करकै उमग, जाजुल्य होन कौं लग्यौ जग।
कर कोप तहाँ देवी करूर, चिक्षुर सेनापति करयौ चूर ।।९९
दाँनव दुर्द्धर कौं दयौ दाट, कीय दूर कलेवर सीस काट।
दुरमुख कौं दीनौ प्राँनदड, वास्कल ताँमर कौ तन विहड ।।१००
पुन विडालाख्य सेना प्रवेक, असुरन गन मारे येक-येक।
महिपासुरहू कौं लयौ मार, मूँम कौ उतारयौ सकल भार ।।१०१
भये सुखी देव लहि जग्य भाग, जायकै वसै अप अपुन जाग।
अघ हरन लक्षमी चरित येह, निर्नय कर वर्नय निसदेह ।।१०२
अव महा सरस्वती चरित आद, वपु धारयौ सुर मेटन विखाद।
भये प्रगट सुभ नि.सुभ भूप, आसुर प्रभाव पौरुख अनूप ।।१०३

---

१ वरुण । २ अग्नि । ३ वायु । ४ हिमाचल ।

जिह देवन जाती लये जीत, दिसपाल सोम पावक अदीत।
जुर हिमगिर पै तिह करयौ जाप, आराधन साधन पुन अमाप ॥१०४
जब कोस रूप सौं दिव्य-जोत, इक अवल भई देवी उदोत।
कौसकी नाँम सुर प्रगट कीन, पुन स्तुत करी वहु विध प्रवीन ॥१०५
देवी तव वोली ह्वै दयाल, हित चाहत जो कछु कहहु हाल।
जव देवन ताही समय जाँन, नि:सुभ-सुभ भारयौ निदाँन ॥१०६
कीय पीडत देवन दनुज क्रूर, सपत हर लीनी महाँसूर।
नि:सुभ-सुभ करकै निपात, जन निर्भय करीयै देवजात ॥१०७
देवी देवन सुन वचन दीन, देवी देवन कौं अभय दीन।
उठ चली हिमालय गिर उतंग, इक वाग माँझ करकै उमग ॥१०८
सेनापति दनुपति महाँसूर, जहाँ चड-मुड आये जरूर।
देवी तहाँ सुदर रूप देख, पिक-वैनी मृगनैनी परेख ॥१०९
नृप सुभ आयकै तिह नजीक, ठाहर देवी की दई ठीक।
सुग्रीव दूत कौं भेज सुभ, समजास करी देवी ससुभ ॥११०
देवी तव वोली दूत देख, वातै सुन लीनी मैं विसेख।
सुभ नृप कहहु मेरौ सँदेस, याकौ कछु नाँहिन उर अँदेस ॥१११
पन[1] मैं हूँ कीनौ इक प्रमाँन, जाही सु जाय कहीयै सुजाँन।
पति करहुँ मोर-सम वल परेख, तासौं जुध करहूँ धार तेख ॥११२
जीत है सोय मो-पति जरूर, सुख सयन देहुँगी तँही सूर।
जुध करै आय कहीयौ जनाय, इह कारन ठहरी इहाँ आय ॥११३
प्रति उत्तर सुनकै तुम प्रवाँन, थिरता कर जावहु और थाँन।
देवी सुन वाचा फिरयौ दूत, नृप कह्यौ सँदेसौ आय तूँत ॥११४
नि.सुभ-सुभ सुनकै निदाँन, भेज्यौ सु धूम्रलोचन भयाँन।
सो भयौ भसम हुकार साथ, ह्वै राजा क्रुद्धत पीस हाथ ॥११५
वहु सैनक भेजे वार-वार, रूठी तहाँ देवी रोप रार।
भारथ[2] चढ आये जुगल भ्रात, नि सुभ-सुभ कीने निपात ॥११६
देवी निर्भय सव करे देव, अततार्इ जीते दनु अजेव।
सोई महा सरसुती महमाय, पूजे मिल देवन सुखद पाय ॥११७

---

१ प्रण। २ योद्धा।

उतपति त्रहु देवी कही आद, मडता, च्यार वेदन मृजाद ।
माहाकाली भजहू आद माय, पुन महाँ लक्षमी पुज्ज पाय ।।११८
ज्यूँ ही महा सरसुति लेहु जाँन, इनके सम समृथ नहिन आँन ।
मेधा मुनि सुनके येहु मत, तप करनै चालेऊ नृप तुरत ।।११६
निर्जनवन पहुचे तव नरेस, देख्यौ इक उत्तम महाँ देस ।
जप जपनै लागौ तँही जाग, श्रीदेवी चरनन साँनुराग ।।१२०
देवी नरपति पै ह्वै दयाल, तिह दरसन दीनौ तातकाल ।
वरदाँन लहहु कहि वार-वार, वरवीर मनो वाँचत विचार ।।१२१
जव सुरथ कह्यौ विव करग जोर, महमाया सुनीयै विनय मोर ।
मिट जाय अविद्या जाल मोह, कसमल नहि व्यापै काँम कोह[1] ।।१२२
रेना निस्कटक मिलै राज, सुखदायक मंत्री भट-समाज ।
सुरथ के स्त्रवन सुन इह सवाल, कहि तथाँअस्तु देवी क्रपाल ।।१२३
पुन वोली तासौं पेम-पूर, जन्मात कथा भाखत जरूर ।
भूँम पै होयकै पूत भाँन, सावर्न मनू ह्वै हौ सुजाँन ।।१२४
तति लहहू तुम राज सिद्ध, पुहमी प्रभाव वाढहि प्रसिद्ध ।
अवका पाय वरदाँन येह, सावर्न भये मनु निसदेह ।।१२५
आख्याँन सुरथ नृप कह्यौ आद; मनु फेर भये रचता मृजाद ।
कोऊ पढ़ै सुनै जाकौं कवेस, वसुधा प्रभाव वाढै वसेस ।।१२६

सोरठा

पट मनुवन की ख्यात, कहत सोई विसतार कर ।
जोन जुगतर जात, होनहार वस होयगे ।।१२७

छंद द्वै-अक्षरी

नाराँयन वरनत प्रति नारद, विमल कथा पट मनू विसारद ।
वैवस्वत मनु सुत पट वीरा, धरम-धुरधर भये मति धीरा ।।१२८
नाँम जही कारुख[2] निदाँना, प्रखद[3] और नाभाग प्रमाँना ।
तथा दिष्ट सरजात[4] त्रसंकुव, हितकारी जग महावली हुव ।।१२६

---

१ क्रोध । २ करुष । ३ पृषध्र । ४ शर्याति ।

तट जमना कै पहुँचे तेऊ, करनी करन लगे विध केऊ ।
निज आस्रम कर-करकै न्यारा, मूरत देवी मांड मझारा ।।१३०
सोरह विध पूजा कर साधना, उर महँ लागे मत्र अरावन ।
वायु जीत अरु प्यास विभूखा, द्रढ तप करन लगे निरदूखा ।।१३१
किरन-पाँन अरु धूँम-पान कर, ध्यांवन देवी लगे ध्यांन धर ।
जिन तप सौं मन कौ जीते, वारह वरख तहाँई बीते ।।१३२
देवी आय दयौ तव दरसन, पेखी पट भाई ह्वै परसन ।
करनै लगे वर्नना केती, समुझ-समुझ अपनी मति-मेती ।।१३३
जाँन निरतर जन पट जन कौं, उत्तम वर दीनौ पुन उनकौं ।
सतति वढहि राज-सुख साजा, मन्वतरा अधिप माहाराजा ।।१३४
समय-समय सव होउ मुग्यानी, धरा-वरम वाढहि रजधांनी ।
सुजस लेय परलोक सिधावहु, वैवस्वत कुल नांम वढावहु ।।१३५
देवी भ्रांमरि जग-सुखदाई, सवहिन दै वरदांन सिधाई ।
ये मन्वतर होवहि आई, समय पाय जग कौं सुखदाई ।।१३६
जुदे-जुदे तिह नांम जनावत, गृथति वेद पुरांनन गावत ।
प्रथम दक्षसावर्णहु पावन, नवम मनू भये विरद निभावन ।।१३७
दूसर दसम भये मनु दांनी, सुनहु मेरसावर्न[१] सुग्यांनी ।
सूर्यसावर्ण तीसरे सुनीयै, ग्यारहमे मनु तिनकौ गनीयै ।।१३८
चौथे भये चद्रसावर्णी, वारहमे की कथा जु वरणी ।
रुद्रसावर्ण पाँचमे रहेऊ, तेरहमे मनू भये जु तेहू ।।१३९
भये विस्नूसावर्णि छटे भल, चौंदहमेसे विगत दभ छल ।
भ्रांमरी देवी सुनीयै भासन, निर्मल कथा महाअघ नासन ।।१४०
अधोलोक देवन आराती, जहाँ वसत सब दांनव-जाती ।
जहाँ तै येक दिती कौ जायौ, अरुण नांम भुँव ऊरध आयौ ।।१४१
गगा-तट हिमगिर पै गयौ, ठहर हेत ब्रह्मा तप ठयौ ।
स्वास निरोध करन कीय साधन, अरु गायत्री-जाप अराधन ।।१४२
पत्र भखे केऊ दिन पीय पांनी, वरख सहँस-दस वार वितांनी ।
वरख सहँस-दस पीयौ वयारा, अयुत वरख जिह तज्यौ अहारा ।।१४३

---

१ मेरुसावर्णि ।

तप-ज्वाला वाढी तिह तन की, केऊ उड़नैं लागी तिह कनकी ।
देव लगे सवही वपु दाधन, सरण गये ब्रह्मा हित साधन ।।१४४
अतरव्यॉन करचौ विव ऐंसी, जांन्यौ तप दानव कीय जैसौ ।
गायत्री सग लै तहाँ गयेऊ, भाँव दनुजकौ देखत भयेऊ ।।१४५
वर माँगहु विध कह्यौ विचारी, सत्य कहत मैं सुनहु सुरारी ।
कह्यौ दनुज मेरी इह काया, मरै न मारी हरै न माया ।।१४६
जग मैं अमर होय सुरजेता, जहाँ-तहाँ विचरू जगत-जनेता ।
जव विव कह्यौ दनुज सुन जाही, हमहु काल वल गये हराही ।।१४७
करूँ अमर तेरी इह काया, मिलै न कोउ सामग्री माया ।
जोग लहहु वरदाँन जाँनकैं, मैं हूँ दै हूँ साच माँनकैं ।।१४८
जव वोल्यौ दाँनव कर-जोरी, महाँराज इह विनती मोरी ।
जुध मरू न मैं सस्त्र-जोग सौं, रत ह्वै आधी व्याध रोग सौं ।।१४९
सुर नर-नारी घात न सावै, वपु चौपद द्वीपद नही वाधै ।
इह वर देवहु नाथ उदारा, ह्वै वचत सव काँम हमारा ।।१५०
तथाअस्तु कहि गये विधाता, वर लै दनुज भयौ विख्याता ।
घॉम पताल दनुज सव धाये, इक-इक अरुन पास सव आये ।।१५१
तिलक करचौ नृप ताकौ ताके, थाँन-थाँन देवत सव थाके ।
भयकौ पाय सरन सिव भागे, लारै मारन दाँनव लागे ।।१५२
चिंतातुर ह्वैकै मति चित सौं, हीय सोचन लागे निज हित सौ ।
भई गिरा नभ भजौ भवाँनी, जहाँ-तहाँ सव देवन जाँनी ।।१५३
विवुधन गिरा कही फिर वाचा, सुत दिती इहै भक्त है साँचा ।
जप गायत्री करत है जौलौ, तुमसौ इह मरै नही तौलौ ।।१५४
जव सिद्धात देवन इह जाँन्यौ, पठवन कौ निज गुरू प्रमाँन्यौ ।
गुरू जाँनकै अत गत गहनी, करो सवै देवन इह कहनी ।।१५५
जप भूलै गायत्री जैसौ, तुम उपाय करीयै गुरू तैसौ ।
जव गरू गये अरुन जिह जागा, सुवच कह्यौ दनुविद्र सभागा ।।१५६
गायत्री-जप करचौ गोयकै, जाँन्यौ नही जजमाँन जोयकै ।
आयौ मैं करनै उपदेसा, रह्यौ न राग-द्वेष कौ रेसा ।।१५७

स्वर्ग भोग भोगहु सुखदाई, वसहु होय निर्भय वरदाई।
इह कहि गये वृहसपति आगैं, भृगु सिंख्खन उर ससय भागें ।।१५८
भोग-विलास करन रस भीनौ, द्रढ गायत्री जप तज दीनौ।
कला घटन लागी दनु केरी, घट में वाधा वढी घनेरी ।।१५६
वृसपत आय कह्यौ वरतता, समले सुर देवी के संता।
जग करनै लागे केऊ जपकौं, तन कसनैं लागे वहु तपकौं ।।१६०
कीय अरावन साधन केता, विध-विध सौ देवत ततवेता।
दया देख देवी दीय दरसन, पढ-पढ स्तुत करी सुर परसन ।।१६१
वेख अनूंपम जुतं भवांनी, वपु सुगव फैलत विलगांनी।
आस-पास अली उडत अनंता, जपत मनहु ह्रींकार जयता ।।१६२
सुर विरंच विस्नू कर साखी, भ्रांमरी स्तुति सव[1] मिल भाखी।
मूल स्तुति सोइ लिखत मनोहर, व्यास रचत जांनत जिह दुजवर ।।१६३

स्तोत्र मूल

नमो देवि महाविद्ये सृष्टिस्थित्यन्तकारिणि।
नमः कमलपत्राक्षि सर्वाधारे नमोस्तु ते ।।१
सविश्वतैजसप्राज्ञविराट्सूत्रात्मिके नमः।
नमो व्यागतरूपायै कूटस्थायै नमो नम ।।२
दुर्गे सर्वादिरहिते दुष्टसंरोधनार्गले।
निरर्गलप्रेमगम्ये भर्गे देवि नमोऽस्तु ते ।।३
नमः श्रीकालिके मातर्नमो नमः सरस्वती।
उग्रतारे महोग्रे ते नित्यमेव नमो नम ।।४
नमः पीताम्वरे देवि नमस्त्रिपुरसुंदरि।
नमो भैरवि मातंगि धूमावति नमो नम ।।५
छिन्नमस्ते नमस्तेऽस्तु क्षीरसागरकन्यके।
नमः शाकम्भरि शिवे नमस्ते रक्तदंतिके ।।६
निशुम्भ-शुंम्भ-दलनि रक्तबीजविनासिने।
धूंम्रलोचननिर्न्नासि वृत्रासुरनिर्वर्हिणि ।।७

1 मू. प्र. सवन।

चण्ड मुण्डप्रमाथिनि दानवान्तकरे सिवे ।
नमस्ते विजये गगे सार देवी कचानने ॥८
पृथ्वीरूपे दयारूपे तेजोरूपे नमो नम ।
प्राणरूपे महारूपे भूतरूपे नमोस्तु ते ॥९
विस्वमूर्ते दयामूर्ते धर्म्ममूर्ते नमो नम ।
देवमूर्ते ज्योतिमूर्ते ज्ञानमूर्ते नमो नमः ॥१०
गायत्री वरदे देवि सावित्रि च सरस्वती ।
नमस्स्वाहे स्वधे मातर्दक्षिणे ते नमो नम ॥११
नेति नेतीति वाक्यैर्या बोध्यते सकलागमै ।
सर्वप्रत्यक्स्वरूपान् ताम्भजाम परदेवताम् ॥१२
भ्रमरैर्वेष्टिता यस्माद्भ्रामरीया ततस्स्मृता ।
तस्यै देव्यै नमो नित्यन्तित्यमेव नमो नमः ॥१३
नमस्ते पार्श्वयो पृष्ठे नमस्ते पुरतोम्बके ।
नमः ऊर्ध्वन्नमश्चाधस्सर्वत्रैव नमो नम ॥१४
कृपा कुरु महादेवि मणिद्वीपाधिवासिनि ।
अनन्तकोटिब्रह्माण्डनायिके जगदम्बके ॥१५
जयदे देवी जगन्मातर्जयदेति परात्परे ।
जयश्री भुवनेसानि जय सर्वोत्तमोत्तमे ॥१६
कल्याणगुणरत्नानामाकर भुवनेश्वरी ।
प्रसीद परमेसानि प्रसीद जगतोरणे ॥१७॥इति॥

स्तुति करी देवन समुदाया, माहेश्वरी सुनी महमाया ।
कह्यौ प्रगट करीयैं कछु काजा, सुखी होउ सब देव-समाजा ॥१६४
जब सुर बोले सब कर जोरी, माता सुनहु अरज इह मोरी ।
प्रगट्यौ दनु अरुनाख जु पापी, पीडत देवन करत प्रतापी ॥१६५
तिह मिटायकै हमको तारहु, विहत वेद विध विरद विचारहु ।
सुन देवन की बात सयांनी, भय मेटत भई उदित भवांनी ॥१६६
उर विचार कछु कीन उपोहा, कर मुष्टी खोली कर कोहा ।
छुटे भ्रमर पाँखन छननाते, भई भीर आँखन भननाते ॥१६७

अवनी गगन ऊठ अँधीयारी, काठल मनहु मेघ को कारी।
असुरन लैन लगे सोई आँटा, काढ पूँछके तिछ्छन काँटा ॥१६८
विषधर डसन जेम विष वारे, कटक छेदन लगे करारे।
येक असुर पर गिरत अनेका, सलभा ज्यूँ कृषि खेमे तसका ॥१६९
ताक-ताक असुरन के तनकौं, दीनौ मोद महाँ देवनकौ।
मारे असुर सबै छिन माँही, वपु विदार जहाँ-तहाँ विलगाँही ॥१७०
सुर-जाती सव करे सुखारे, निहसन लागे सख नगारे।
जय-जय सवद पढत कर जोरैं, किन्नर गध्रव मिलै करोरैं ॥१७१
गीत लगी अछ्छर बहु गावन, पढ-पढ देवी कीरत पावन।
देवी नाँम भ्राँमरी दीनौ, निरख येहु अवतार नवीनौ ॥१७२
जुर-जुर पूजा करी जु जाही, आराधान साधन अवगाही।
वेद पढन लोग सव ब्रामन, जग्य करांय बोध जजमाँनन ॥१७३
च्यार व्रनकौ धरम चलाई, श्रीईसाँनी जोत समाँई।
भ्राँमरी देवी चरित जु भाख्यौ, उर देवी भक्ती अभिलाख्यौ ॥१७४
मनुँवनहू की कथा जु मडी, अवन जिनहु परभाव अखडी।
पातक मिटै सुजस सुन पावन, निगँम कहत त्रयताप-नसावन ॥१७५

———

बुधसिह चारण रचित

देवीचरित

एकादश-स्कध

दोहा

कथा जु दसम-स्कध की, सुन नारद मुनि स्रौंन ।
श्रीनारॉयन सौं समुझ, पूँछ्यौ प्रस्न प्रधॉंन ।।१
अव कहीयै आचार वँह, देवी होय दयाल ।
भाव वढै साची भगत, नर सुर होय निहाल ।।२

छंद पद्धरी

वोले नारॉयन विमल-वॉंन, सुन नारद मुनि वातै सयॉंन ।
आचार वेद विध की उदत, सुखदायक सावन परम सत ।।३
जिह अनुष्टॉन कर करै जाप, ताके मिट जावत तीन ताप ।
जोड विप्रन-जाती करन जोग, लख तिह अचार सब करै लोग ।।४
भाखत अव तातै तत्व-भाग, मॉंनव सुर पावै धर्म-माग[1] ।
जग-हेत कहत आचार जोय, सुन होय क्रतारथ सुजन सोय ।।५
इह जीव जॉंनोयै रूप आद, परतत्व घेर लीनौ प्रमाद ।
जोनी सौं जोनी वीच जात, वस कर्म देह उतपत विलात ।।६
पुन धर्म सहायक तिह पिछॉंन, नही मात-पिता पुत्रही निदॉंन ।
तिह धर्म-हेत साधन तितेक, विध-जुत सेई करीयै गहि विवेक ।।७
स्रुति सुंमृति पुरॉंनन लेय साच, विध अरु निपेध के लखै वाच ।
आचार धर्मकौ मूल आद, पथ गहै सुद्ध तजकै प्रमाद ।।८
चाहीयै विप्रकौं इही चाल, आचार रहै नित अतराल ।
वाढै आयुर्वल तिह विसेस, अघ करै नहिन वाधा असेस ।।९

---

१ धर्म का मार्ग ।

गोविन्दचरणाक्रान्ता गुणत्रयविभाविता ।।
गन्धर्व्वी गह्वरी गोत्रा गिरीशा गहनागमी ।
गुहावासा गुणवती गुरुपापप्रणाशिनी ।।
गुर्व्वी गुनवती गुह्या गोप्तिका गुणदायिनी ।
गिरिजा गुह्यमातंगी गरुडध्वजवल्लभा ।।
गोकर्णनिलयासक्ता गुह्यमण्डलवर्तिनी ।

घकारादि १४ नाम—

घर्म्मदा घनदा घंटा घोरदानवमर्द्दिनी ।
घृणीमन्त्रमयी घोषा घनसम्पातदायिनी ।।
घंटारवप्रिया घ्राना घृणिसंतुष्टिकारिणी ।
घनारिमण्डला घूर्णा घृताची घनवेगिनी ।।

ङकारादि एक नाम—

ज्ञानधातुमयी ।

चकारादि ४६ नाम—

× × × चर्च्चा चर्चिता चारुहासिनी
चटुला चण्डिका चित्रा चित्रमाल्यविभूषिता ।
चतुर्भु जा चारुदन्ता चातुरी चरितप्रदा ।।
चूलिका चित्रवस्त्रान्ता चन्दना चूर्णकुण्डला ।
चन्द्रहासा चारुदात्री चकोरी चन्द्रहासिनी ।।
चन्द्रिका चन्द्रधात्री चौरी चोरा च चण्डिका ।
चंचद्वाग्वादिनी चन्द्रचूडा चोरविनाशिनी ।।
चारुचन्दनलिप्तांगी चंचच्चामरवीजिता ।
चारुमध्या चारुगतिः चन्द्रिका चन्द्ररूपिणी ।।
चारुहोमप्रिया चार्व्वी चरिता चक्रबाहुका ।
चन्द्रमण्डलमध्यस्था चन्द्रमण्डलदर्पणा ।।
चक्रवाकस्तनी चेष्टा चित्रा चारुविलासिनी ।
चित्स्वरूपा चन्द्रवती चन्द्रमा चन्दनप्रिया ।।

ककारादि ६६ नाम—

कात्यायनी कालरात्रिः कामाक्षी कामसुन्दरी ।
कमला कामिनी कांता कामदा कलकंठिनी ॥
करिकुम्भस्तनभरा करवीरसुवासिनी ।
कल्याणी कुण्डलवती कुरुक्षेत्रनिवासिनी ॥
कुरुविन्ददलाकारा कुण्डली कुमुदालया ।
कालजिह्वा करालास्या कालिका कालरूपिणी ॥
कमनीयगुणा कांतिः कलाधारा कुमुद्वती ।
कौशिकी कमला चाथ कामचारप्रभंजिनी ॥
केसरी केशवनुता कदम्बकुसुमप्रिया ।
कालिंदी कालिका कांची कलसोद्भवसंस्तुता ॥
काममाता क्रतुमती कामरूपा कृपावती ।
कुमारी कुण्डनिलया किराती कीरवाहना ॥
कैकेयी कोकिलालापा केतकीकुसुमप्रिया ।
कमण्डलुधरा काली कर्म्मनिर्म्मूलकारिणी ॥
कलहंसगतिकख्या कृतकौतुकमण्डला ।
कस्तूरीतिलका कम्रा करीन्द्रगमना कुहूः ॥
कर्प्पूरलेपना कृष्णा कपिला कुहरक्षया ।
कूटस्था कुधराकम्रा कुक्षिस्थाखिलविष्टपा ॥

खकारादि ११ नाम—

खड्गखेटधरा खर्व्वा खेखरी खगवाहना ।
खड्गधारिनी ख्याता खगराजोपरिस्थिता ॥
खलघ्नी खण्डितजरा खण्डखानप्रदायिनी ।
खंडेन्दुतिलका—

गकारादि ३६ नाम —

× × × गंगा गणेश ग्रहपूजिता ।
गायत्री गोमती गीता गान्धारी गानलोलुपा ॥
गौतमी गामिनी गन्धा गन्धर्व्वप्सिरसेविता ।

ठकारादि १ नाम—

ठठशब्दनिनादिनी

डकारादि ८ नाम—

डामरी डाकिनी डिम्भा डुण्डुमारैकनिर्ज्जिता ।
डामरीतन्त्रमार्ग्गस्था डमड्डमरुनादिनी ॥
डिण्डीरवसहा डिम्भालुप्तक्रीडापरायणा ।

ढकारादि ३ नाम—

ढुं ढविघ्नेशजननी ढक्काहस्ता ढिलिप्रजा ।

णकारादि नाम न थे इससे नकारादि ५ नाम कहते हैं

नकारादि ५ नाम—

नित्यज्ञाना निरुपमा निर्गुणा नर्मदा नदी ।

तकारादि ६२ नाम—

त्रिगुणा त्रिपदा तन्त्री तुलसी तरुणा तरि ।
त्रिविक्रमपदाक्रांता तुरीयपदगामिनी ॥
तरुणादित्यसंकासा तामसी तुहिनी तुरा ।
त्रिकालज्ञानसम्पन्ना त्रिवली त्रिलोचना ॥
त्रिशक्तिः त्रिपुरा तुङ्गा तुरङ्गवदना तटी ।
तिमिंगिलगिला तीव्रा त्रिस्रोता तामसादनी ॥
तन्त्रमंत्रविशेषज्ञा तनुमध्या त्रिविष्टपा ।
त्रिसन्ध्या त्रिस्तनी तोषासंस्था तालप्रतापिनी ॥
ताटंकिनी तुषाराभा तुहिनाचलवासिनी ।
तन्तुजालसमायुक्ता तारहारावलिप्रिया ॥
तिलहोमप्रिया तीर्था तमालकुसुमाकृतिः ।
तारका त्रियुता तन्वी त्रिशंकुपरिवारिता ॥
तिलोदरी तिरोभापा ताटङ्कप्रियवादिनी ।
त्रिजटा तित्तरी तृष्णा त्रिविधा तरुणाकृतिः ॥
तप्तकाञ्चनसङ्काशा तप्तकाञ्चनभूषणा ।

चोदयत्री चिरप्रज्ञा चातका चारुहेतुकी ।

छकारादि १४ नाम —

छत्रपात्रा छत्रवरा छाया छन्दःपरिच्छदा ।
छायादेवी छिद्रनखा छिन्नेन्द्रियविसर्पिणी ।।
छन्दोनुष्टुप्प्रतिष्ठाता छिद्रोपद्रवछेदिनी ।
छेदा छत्रेस्वरी छिन्ना छुरिका छेदनप्रिया ।।

जकारादि ४४ नाम—

जननी जन्मरहिता जातिभेदा जगन्मयी ।
जाह्नवी जटिला जेत्री जरामरणवर्जिता ।।
जम्बूद्वीपवती ज्वाला जयन्ती जलक्षालिनी ।
जितेन्द्रिया जितक्रोधा जितामित्रा जगत्प्रिया ।।
जातरूपमयी जिह्वा जानकी जगती जरा ।
जनित्री जन्हुतनया जगत्त्रयहितैषिणी ।।
ज्वालामुखी जयवती ज्वरघ्नी जितविष्टपा ।
जिताक्रान्तमयी ज्वाला जाग्रती ज्वरदेवता ।।
ज्वलन्ती जलदा ज्येष्ठा ज्याघोषास्फोटदिङ्मुखी ।
जम्भिनी जम्भिरा जम्भा ज्वलन्माणिक्यकुण्डला ।।

झकारादि ४ नाम—

झिझिका झणनिर्घोषा झंझामारुतवेगिनी ।
× × × × झल्लकीवाद्यकुशला ।।

ञकारादि २ नाम—

ञरूपा ञभजा

टकारादि ६ नाम—

टंकवाणसमायुक्ता टंकनी टंकभेदिनी ।
टंकीगुणकृताघोषा टंकनीयमहोरसा ।।
× × × टंकारकारिणी देवी ।

नृसिंहिनी नगधरा नृपनागविभूषिता ।।
नरकक्लेशशमनी नारायणपदोद्भवा ।
निरवद्या निराकारा नारदप्रियकारिणी ।।
नानाज्योतिसमाख्याता निधिदा निर्म्मलात्मिका ।
नवसूत्रधरा नीतिर्निरुपद्रवकारिणी ।।
नन्दजा नवरत्नाढ्या नैमिषारण्यवासिनी ।
नवनीतप्रिया नारी नीलजीमूतनिस्वना ।।
निमेषिणी नदीरूपा नीलग्रीवा निशीश्वरी ।
नागवल्ली निशुम्भघ्नी नागलोकनिवासिनी ।।
नवजम्बूनदप्रख्या नागलोकाधिदेवता ।
नूपुराक्रान्तचरणा नरचित्तप्रमोदिनी ।।
निमग्नारक्तनयना निर्यातसमनिस्स्वना ।
नन्दनोद्याननिलया निर्व्यूहापरधारिणी ।।

पकारादि १२५ नाम—

पार्वती परमोदारा परब्रह्मात्मिका परा ।
पञ्चकोशविनिर्म्मुक्ता पञ्चपातकनाशिनी ।।
परचित्तविधानज्ञा पञ्चिका पञ्चरूपिणी ।
पूर्णिमा परमप्रीता परतेज प्रकाशिनीः ।।
पौराणी पौरुषी पुण्या पुण्डरीकनिभेक्षणा ।
पातालतलनिर्म्मग्ना प्रीता प्रीतिविवर्द्धिनी ।।
पावनी पादसहिता पेशली पाकशासिनी ।
प्रजापतिपरित्राता पर्वतस्तनमण्डली ।।
पद्मप्रिया पद्मसंस्था पद्माक्षी पद्मसम्भवा ।
पद्मपत्रा पद्मपदा पद्मिनी प्रियभाषिणी ।।
पशुपाशविनिर्म्मुक्ता पुरन्ध्री पुरवासिनी ।
पुष्कला पुरुषा पर्वा पारिजातसमप्रिया ।।
पतिव्रता पवित्राङ्गी पुष्पहासपरायणा ।
प्रज्ञावतीसुतातौत्रीपुत्रपूज्या पयस्विनी ।।
पीठपाशधरा पंक्तिः पितृलोकप्रदायिनी ।

त्रैयम्बिका त्रिवर्गा च त्रिकालज्ञानदायिनी ॥
तर्पणा तृप्तिदा तृप्ता तामसी तुम्बुरुस्तुता ।
तार्क्ष्यस्था त्रिगुणाकारा त्रिभङ्गी तनुवल्लरी ॥

थकारादि ३ नाम—

थात्कारी थारिणी थान्ता ।

दकारादि २७ नाम—

× × × दोहिनी दीनवत्सला ।
दानवान्तकरी दुर्गा दुर्गासुरनिवर्हिणी ॥
देवप्रीतिर्दिवारात्रिर्द्रौपदी दुन्दुभिस्वना ।
देवयानी दुरावासा दारिद्रयभेदिनी दिवा ॥
दामोदरी दिवोदीप्तादिग्वासा दिग्विमोहिनी ।
दण्डकारण्यनिलया दण्डिनी देवपूजिता ॥
देववंद्या दिविषदा द्वेषिणी दानवाकृतिः ।
दीनानाथस्तुता दीक्षा देवतादिस्वरूपिणी ॥

धकारादि २० नाम—

धात्री धनुर्द्धरा धेनुर्धारिणी धर्म्मचारिणी ।
धाराधरा धराधारा धनदा धान्यदोहिनी ॥
धर्म्मशीला धनाध्यक्षा धनुर्वेदविशारदा ।
धृतिर्धन्या धृतपदा धर्म्मराजप्रिया ध्रुवा ॥
धर्मवती धूमकेशी धर्म्मशास्त्रप्रकाशिनी ।

नकारादि ५५ नाम—

नन्दा नन्दप्रिया निद्रा नृनुता नन्दनात्मिका ।
नर्म्मदा नलिनी नीला नीलकंठसमाश्रया ॥
नारायणप्रिया नित्या निर्म्मला निर्गुणा निधिः ।
निराधारा निरुपमा नित्यशुद्धा निरञ्जना ॥
नादविन्दुकलातीता नादविन्दुकलात्मिका ।

वान्धवी वोधिता वुद्धि वन्धूककुसुमप्रिया ॥
वालभानुप्रभाकारा ब्राह्मी च ब्रह्मदेवता ।
वृहस्पतिस्तुता वृन्दा वृन्दावनविहारिणी ॥
वालाकिनी विलाहारा वलाकाशा वहूदका ।
वहुनेत्रा वहुपदा वहुकर्णावतंसिका ॥
वहुवाहुयुता वीजरूपिणी वहुरूपिणी ।
विन्दुनादकलातीता विन्दुनादस्वरूपिणी ॥
वद्धगोधांगुलित्राणा वदर्य्याश्रमवासिनी ।
विन्दारिका वृहत्स्कन्धा वृहतीवानपातिनी ॥
वृन्दाध्यक्षा वहुनुता वनिता वहुविक्रमा ।
वद्धपद्मासनासीना विल्वपत्रतलस्थिता ॥
वोधिद्रुमनिजावासा वडिस्था विन्दुदर्पणा ।
वाला वाणासनवती वडवानलवेगिनी ॥
ब्रह्माण्डवहिरन्तस्था ब्रह्मकङ्कणसूत्रिणी ।

भकारादि ३९ नाम—

भवानी भीषणवती भाविनी भयहारिणी ।
भद्रकाली भुजङ्गाक्षी भारती भारताशया ॥
भैरवी भीषणाकारा भूतिदा भूतिभासिनी ।
भोमिनी भोगनिरता भद्रदा भूरिविक्रमा ॥
भूतवासा भृगुलता भार्गवी भूसुरार्चिता ।
भागीरथी भोगवती भवनस्था भिषग्वरा ॥
भामिनी भोगिनी भाषा भाविनी भूरिदक्षिणा ।
भर्गात्मिका भीमवती भववन्धविमोचिनी ॥
भजनीया भीमधात्री भूषिता भुवनेश्वरी ।
भुजङ्गवलया भीमा भेरुण्डा भागधेयिनी ॥

मकारादि ५४ नाम—

माता माया मधुमती मधुजिह्वा मधुप्रिया ।
महादेवी महाभागा मालिनी मीनलोचना ॥

पुराणी पुण्यशीला प्रणतार्त्तिविनाशिनी ।
प्रद्युम्नजननी पुष्टा पितामहपरिगृहा ।।
पुण्डरीकपुरावासा पुण्डरीकसमानना ।
पृथुजंघा पृथुभुजा पृथुपादा पृथूदरी ।।
प्रवालशोभा पिङ्गाक्षो पीतवासा प्रचापला ।
प्रसवा पुष्टिदा पुण्या प्रतिष्ठा प्रणवागतिः ।।
पञ्चवर्णा पञ्चवाणी पञ्चिका पञ्चरार्चिता ।
परमाया परज्योतिः परप्रीतिः परागतिः ।।
पराकाष्ठा परेशानी पावनी पावकद्युतिः ।
पुण्यभद्रा परिच्छेदा पुष्पहासा पृथूदराः ।।
पीताङ्गी पीतवसना पीतशय्या पिशाचिनी ।
पीतक्रिया पिशाचघ्नी पाटलाक्षी पटुक्रिया ।।
पञ्चभक्षप्रियाचारा पूतनाप्राणघातिनी ।
पुन्नागवनमध्यस्था पुण्यतीर्थनिषेविता ।।
पञ्चाङ्गी पराशक्तिः परमाल्हादकारिणीः ।
पुष्पकाण्डस्थिता पूषा पोषिताखिलविष्टपा ।।
पानप्रिया पञ्चशिखा पन्नगोपरिशायिनी ।
पञ्चमात्रात्मिका पृथ्वी पार्थिकी पृथुदोहिनी ।।
पुराणन्यायमीमांसा पाटला पुष्पगन्धिनी ।
पुण्यप्रदा पारदात्री परमार्गैकगोचरा ।।
प्रवालशोभा पर्णाभा प्रणवा पल्लवोदरी ।

फकारादि ७ नाम—

फलिनी फलदा फल्गु फूत्कारी फलकाकृतिः ।
फणीन्द्रभोगशयना फणिमण्डलमण्डिता ।।

वकारादि ५३ नाम—

वालवाला वहुमता वालातपनिभांशुका ।
वलभद्रप्रियाचारा वडवा वुद्धिसंस्तुता ।।
वन्दीदेवी विलवती वडिसघ्नी वसिप्रिया ।

रुरुचर्म्मपरीधाना रथिनी रत्नमालिका ।।
राकेशी रोगशमनी रागिनी रोमहर्षिणी ।
रामचन्द्रपदाक्रांता रावणच्छेदकारिणी ।।
रक्तवस्त्रपरिच्छिन्ना रथस्था रुक्मभूषणा ।

लकारादि १३ नाम—

लज्जाधिदेवता लोला ललिता लिङ्गधारिणी ।
लक्ष्मी लीला लुप्तविषा लोकिनी लोकविश्रुता ।।
लज्जा लम्वोदरीदेवी ललना लोकधारिणी ।

वकारादि २७ नाम—

वरदा वन्दिता विद्या वैष्णवी विमलामति ।
वाराही विरजा वर्षा वरलक्ष्मी विलासिनी ।।
विनता व्योममध्यस्था वारिजासनसंस्थिता ।
वारुणी वेणुसम्भूता वीतहोत्रा विरूपिणी ।।
वायुमण्डलमध्यस्था विष्णुरूपा विधिक्रिया ।
विष्णुपत्नी विष्णुमती विशालाक्षी वसुन्धरा ।।
वामदेवप्रिया वेला वज्रिणी वसुदोहिनी ।
वेदाक्षरपरीताङ्गी वाजपेयफलप्रदा ।।
वासवी वामजननी वैकुण्ठनिलयापहा ।
व्यासप्रिया वर्म्मधरा वाल्मीकिपरिसेविता ।।

शकारादि २६ नाम—

शाकम्भरी शिवा शान्ता शारदा शरणागति ।
शान्तोदरी शुभाचारा शुम्भासुरविमर्दिनी ।।
शोभावती शिवाकारा शंकरार्धशरीरिणी ।
शोणा शुभाशया शुभ्रु संहारग्रहकारिणी ।।
शरावती शरानन्दा शरज्योत्स्ना शुभानना ।
शरभा शालिनी शुद्धा शवरी शुकवाहना ।।
श्रीमती श्रीधरानन्दा श्रवणानन्ददायिनी ।
× × × × शर्वानी शर्वरीवन्द्या ।।

मायातीता मधुमती मधुमांसा मधुद्रवा ।
मानवी मधुसम्भूता मिथिलापुर वासिनी ॥
मधुकैटभ संहर्त्री मेदिनी मेघमालिनी ।
मन्दोदरी महामाया मैथिली मरुताशिनी ॥
महालक्ष्मी महाकाली महाकन्या महेश्वरी ।
माहेन्द्री मेरुतनया मन्दारकुसुमार्च्चिता ॥
मञ्जुमञ्जीरचरणा मोक्षदा मञ्जुभाषिनी ।
मधुरद्राविनी मुद्रा मलया-मलयान्विता ॥
मेधा मरकतस्यामा मागधा मेनकात्मजा ।
महामारी महावीरा महास्यामा मनुस्तुता ॥
मातृका मिहिराभासा मुकुन्दपदविक्रमा ।
मूलाधारस्थिता मुग्धा मणिपूरकवासिनी ॥
मृगाक्षी महिषारूढा महिषासुरमर्द्दिनी ।

यकारादि २० नाम—

योगासना योगगम्या योगा यौवनकाश्रया ।
यौवनी युद्धमध्यस्था यमुना युगधारिणी ॥
यक्षिणी योगयुक्ता च यक्षराजप्रसूतिनी ।
यात्रायानविधानज्ञा यदुवंससमुद्भवा ॥
यकारादि-हकारांता याजुषी यज्ञरूपिणी ।
यामिनी योगनिरता यातुधानभयङ्करी ॥

रकारादि २७ नाम —

रुक्मिणी रमणी रामा रेवती रेणुका रति ।
रौद्री रौद्रप्रियाकारा राममाता रतिप्रिया ॥
रोहिणी राज्यदा रेवा रमा राजीवलोचना ।
राकेसी रूपसम्पन्ना रक्तसिंहासनस्थिता ॥
रक्तमाल्याम्बरधरा रक्तगन्धानुलेपना ।
राजहंससमारूढा रम्भा रक्तमलिप्रिया ॥
रमणीययुगाधारा राजिताखिलभूतला ।

छंद पद्धरी

अब दीक्षा काल सु कहत और, तव गायत्री ह्वै सफल तौर।
सिख सिद्ध होत गायत्री साथ, उर मिटै सकल जासौं उपाध ॥१०५
दीक्षत वुलाय सिख आप द्वार, करीयै भक्ती-जुत नमसकार[1]।
जाचै दीक्षा कौं हाथ जोर, निज मात-पिता संजुत निहोर ॥१०६
पुन सासन लै गुरराज पास, काया पवित्र कर सावकास।
सरवर तट नद सौं कर सिनाँन, पाँनीय कमंडल लरै पाँन ॥१०७
वृत धारन कर निज गृह विचाल, कर गमन सु आवै प्रातकाल।
थित दीक्षत पास ही जग्य-थाँन, सासन लै आसन संनिधाँन ॥१०८
वैठकै करै करनी वहोर, आचमन[2] रु प्राँनायाँम और।
पूजै सु कमंडल फट पढाय, चंदन अरु पुस्पादिक चड़ाय ॥१०९
जप सात वार जपीयै जरूर, पुन द्वार सीचीयै नीर पूर।
हित मंत्र गृहन के काज हेर, षोड़स छाँना लै रज खखेर ॥११०
आरंभ करै पूजा इकंत, द्वारपै वारसक येक दंत।
सुरसुती और लच्छी जु संग, पुस्पाद गंध पूजै प्रसंग ॥१११
गंगा कौं पूजै जुत गणेस, दछ्छन के द्वारा जहाँ सुदेस।
पुन वायै वाजू खेत्रपाल, कर जमुना पूजा तातकाल ॥११२
फट मंत्र और फट देव फेर, हद चौखट मै पूजै सु हेर।
चिंतै देवीमय सवही चित्त, पूजा-विधाँन मै देवप्रत्त ॥११३
सुभ मंत्र कहै फट लहै सीख, उदवासै विघ्नन अंतरीख।
पुन याद घात सौं धार पाद, उदवासै विघ्नत धरा आद ॥११४
वायें वाजू कौं पकर वाह, प्रथमै सु दायना चरन पाह।
चौखट उघार धारै सु चाल, विचरै सु फेर मंडप विचाल ॥११५
सुभ कलस थाप जल भर समाँन, पुन अरघा सौं जल गहै पाँन।
नैरत दिस पूजै वास्तुनाथ, हित वृह्मा कौं दोई जोर हाथ ॥११६
तत गव्य वनावे फेर तिष्ट, गस्तोर्ण जग्य थाँभा गरिष्ट।
पींचीयै जाहि करता पवित्र, तव देव जुहारै जत्र-तत्र ॥११७

---

१ मू० प्र० न्मसकार। २ मू० प्र० आचम्न

षकारादि ५ नाम

× × × × × षड्भाषा षड्ऋतुप्रिया।
षडाधारस्थिता देवी षण्मुख प्रियकारिणी।
षडंशरूप शतरूपा च सुरासुरनमस्कृता॥

सकारादि २७ नाम

सरस्वती सदाधारा सर्वमंगलकारिणी।
सामगानप्रिया सूक्ष्मा सावित्री सामसम्भवा॥
सर्ववासा सदानन्दा सुस्तनी सागराम्वरा।
सर्वैश्वर्य्यप्रिया सिद्धिः साधुवन्धुपदाक्रमा॥
सप्तर्षिमण्डलगता सोममण्डलवासिनी।
सर्वज्ञा सान्द्रकरुणा समानाधिकवर्ज्जिता॥
सर्वोत्तुङ्गा सङ्गहीना सङ्गुणा सकलेष्टपा।
सरयू सूर्यतनया सुकेसी सोमसंहिता॥

हकारादि ४ नाम

हिरण्यवर्णा हरिणी ह्रींकारी हंसवाहिनी

क्षकारादि ३ नाम

क्षौमवस्त्रपरीतांगी क्षीराब्धितनया क्षमा

अब आठ 'नाम' क्रमरहित 'कहते हैं।' सहस्र 'तो' होगये—
गायत्री चाथ सावित्री पार्वती च सरस्वती,
वेदगर्भा वरारोहा श्रीगायत्री पराम्बिका।

नारायण महाराज वर्णन करते हैं कि हे नारद! यह गायत्री-सहस्रनाम पुण्यद सर्वपापनाशिक महासम्पत्तिदायक तुमसे कहा। इस प्रकार ये नाम गायत्री के सन्तोष उत्पन्न कराने वाले हैं। इन्हें ब्राह्मणों के साथ अष्टमी को विशेष करके पढ़ना चाहिए। प्रथम जप पूजा होम ध्यानादि करके उच्चारण करना चाहिए। यह सहस्रनाम हर किसी को न देना चाहिए किन्तु सुभक्त सुशिष्य ब्राह्मण ही से कहना चाहिए। भ्रष्ट साधक-वन्धु को न देखना चाहिए। जिसके घर में यह लिखा धरा रहेगा उसके भवन में भय न होगा और चञ्चल भी लक्ष्मीजी हैं पर उस गृह में स्थिर होकर टिकेंगी।

मुख मै अधर्म की न्यास मंड, पारस वाँमौ चितँ सु पिंड।
नम अर्ध माय कहिकै निदाँन, अ वैराग्यं थित नाभि आँन ।।१३३
दक्षन पारस अग्याँन देस, अन ऐंस्वरि आय न्मह उदेस।
करकै सवहित कौं नमस्कार, वरन्यौ सु ऊपरै जिह विचार ।।१३४
पीठ के लखहु धर्मादि-पाद, अरु अधर्मादि अनही ऊपाद।
विस्तर पैं पलका तहाँ विचाल, अंनत की न्यास कर अंतराल ।।१३५
तहाँ है अनंत परपंच त्याँहि, मिल कमल ध्याँन करीयै जु माँहि।
धरीयै जु कमलकै माँहि ध्याँन, जहाँ रवि ससी पावक रूप जाँन ।।१३६
जाँनकै कला इह न्यास जोर, वारहाँ सूर की है वहोर।
सोरह चंदा दस अग्न साच, रहीयै सुमर्ण त्रहु देव राच ।।१३७
तिन ऊपर सत्वागुन तितेक, हित गुनन न्यास करीयै हरेक।
आतमा अनंतरातमा अनाद, परमातमा ग्याँनातमा प्रसाद ।।१३८
निज पूर्वदिसा मैं करै न्यास, अमुकास नाय नन कहिऊ पास।
आसन की पूजा करै और, जगतंव ध्याँन ऊपरै जोर ।।१३९
जिह देव-मंत्र लेवन जरूर, पूजा सु माँनसी करै पूर।
मुद्रा देखावै फिर मिलाय, वरनी सु प्रथम जैसै वनाय ।।१४०
आनंदत देवी होय येम, जाही सै कहीयै क्रीया जेम।
जब दैनै वाले मंत्र जोन, षट-अंग पूजीयै षट ही कोन ।।१४१
अगनाद कोन कौं जाँन आद, माँनहु कोनन कौं जुत मृजाद।
पश्चात संख जो तरै पात्र, पुन हाथ गृहन कर सिख सुपात्र ।।१४२
फट मंत्र वोल पौंचै जु फेर, हित मंडल थापन करै हेर।
मंत्र कौं जपै अक्षर मिलाय, विधिपूर्वक सौं वाँनक वनाय ।।१४३

मंत्र—मं वह्निमंडलाय दशकलात्मने दुर्गा देव्यर्घपात्रस्थापनाय नमः—इति।

थप्पन सुसंख आधार थाँन, जाहि कौ लेहु इह मंत्र जाँन।
आधार दिसा पूर्वाद आँन, क्रमहि सौं कला दसं है क्रसाँन ।।१४४
दसहू कौं पूजै देख-देख, पौछीयै मूल-मंत्र ही परेख।
संख कौं मूल मंत्रहि सुधार, आधार थपैं सुमरन उचार ।।१४५

जाँनै देवीमय सकल जास, उर ध्याँन धरै फट मंत्र ग्रास।
कहि मूल मंत्र प्रोक्षन करंत, फट मंत्र जग्य भूँमी फिरंत ।।११८
ताड़न करै जु ताही तरीय, हूँम्मंत्र उचारण करै हीय।
कर सेक धूप दीपही करंत, येकट साँमग्री करै अंत ।।११६
लावा चंदन सरसौं जु लेह, महराख दूव अक्षत मिलेह।
संग्या जु विकर है इहू सवीन, विथरावै मंडल जिग्यवीन ।।१२०
वढनी कुसकी तै लै वुहार, ईसाँन कोन धरीयै उछार।
उच्चार वाच पुण्याह ग्राद, पूजै दीनन कौं विन प्रमाद ।।१२१
कुसकी वढनी येकत करेह, लावाद ढेर पै धरै लेह।
करकै गरू अपने नम्सकार, वैठै ग्रासन पै सुभ विचार ।।१२२
मुख पूरव हैकै लहै मंत्र, तिह मंत्र देवता गहै तंत्र।
कर ध्याँन भूत-सुद्धी कराय, वरनी सकंध इकदस विचाय ।।१२३
देवै सु सिख्ख ही मंत्र दाँन, जिह रिखी न्यास करीयै सुजाँन।
मंत्र के ऋखी सिर न्यास मंड, ताहि के छंद है वक्रतुंड ।।१२४
व्रिच हृदै देवता गुहा वीज, पाद मै सक्ति जाँनहु पतीज।
ग्ररु ताल वजावन त्रय उदेस, दिग वेधन करीयै येम देस ।।१२५
ग्ररु करीयै प्राँणायाँम ग्रौर, जुत मूल-मंत कौं जोर-जोर।
मात्रका-न्यास करीयै मिलाय, ग्रव कहत जुक्त ताकौ उपाय ।।१२६
निज ग्रंन्नम सिर मैं करै न्यास, याही प्रकार करीयै ग्रभ्यास।
ग्रान्नमह इन्नमह ग्राद एम, जाँनकै विधी करीयै जु जेम ।।१२७
पुन खंडन्यास याँहीं प्रकार, ग्रंगुली मूल-मंत्र ही ग्रधार।
हृद ग्रायन मह सौं करै हेय, स्वाहाय सिखा ग्रादक सुमेय ।।१२८
जिह खंडन्यास है नेम-जुक्त, वँह गुरूमुख लीजै जाँन उक्त।
षट वचन कहै कवचाय संग, पुन हूँ चख त्रय वोही प्रसंग ।।१२६
षट ग्रस्त्राय सु फट सब्द साथ, है क्रीया ग्रंगुरी ग्रौर हाथ।
निज मूल-मंत्र सौं वर्णन्यास, जिह-जिह स्थाँन करीयै जु जास ।।१३०
विध इही न्यास कीं है विचित्र, कर दूखन करीयै जंत्र-कत्र।
ग्रपने सरीर ग्रवगाह ग्राप, थिर ग्रासन की कल्पना थाप ।।१३१
गन धर्म दाहिनै वाँम ज्ञाँन, पुन करै न्यास पूरव प्रमाँन।
वाँमै उरु माँही ज्यू विराग, लखीयै दछ्छन ऐस्वरीय लाग ।।१३२

पूरत कर द्वै वस्त्रन लपेट, मूंदकै धरै संदेह मेट।
सब प्राँन-प्रतष्टा रीत साध, आवाहन करीयै निर उपाध ।।१५९
देवता पूज मुद्रा दिखाय, सोचकै कल्प धर्मही सुभाय।
वाही विधाँन है भक्ती आद, पूजीयै ध्याँन धर अप्रमाद ।।१६०
आई भगवंती लखै ऐन, चित कुसल प्रस्न करीयै सु चैन।
क्रम पादअर्घ आच्मनी कराय, मधुपर्क और लीजै मँगाय ।।१६१
अभिअंग करावै स्नान और, दै पाटंवर द्वै अरुन दौर।
औरै सुमात्रका वर्न येह, संपुटत मंत्र पूजा सरेह ।।१६२
गूगल कपूर संजुक्त गंध, सुच कस्तूरी कुंकम समंध।
लैपन पटीर तनमैं लगाय, [1]कुंदादिक पुस्पावली वसाय ।।१६३
अर्पण देवी कौं करै येह, करपूर अगर धूपत करेह।
चंदन उसीर सर्करा चूर, पुन सोगंधादिक मधू पूर ।।१६४
दीपक जुराय नैईवेद देय, प्रोक्षनी छोर जल मिष्ट पेय।
अरु ता पाछै कल्पोक्त उक्ति, जाँनीयै अंग आवर्न जुक्ति ।।१६५
करीयै सु पूज देवी कृपाल, तिह रिखी मुनी ध्यावत अकाल।
देवी जु साङ्ग अरु वैसदेव, भजीयै सुभाव सौं जाँन भेव ।।१६६
ताही कौ वरनत सकल तत्त, माँनत मृजाद जैसैं महत्त।
मंडल सौं दक्षन देख मंड, थिर करै चौतरा गार थंड ।।१६७
ऊपरै स्थापत करै आग, जाही कै उत्तम वीच जाग।
मूर्तिस्थ देवता तहाँ माँन, पूजै आवाहन कर प्रमाँन ।।१६८
कहिओ उंकार व्याहृति कैक, विध मूल-मंत्र लहिकै विवेक।
पढ आहूती दै मंत्र प्रेर, हूँनै जाऊर पचीस हेर ।।१६९
साकल्य और गंधाद संग, पूजै देवी कौं लहि प्रसंग।
विसर्जन अग्नि कौं कर बहोर, ठहरावै देवी पीठ ठौर ।।१७०
ककरी आदिक वलि देय केय, सब भाँत सुधारै विवध सेय।
देवी के पार्षद जिते देव, भल पूजै पूजन जाँन भेव ।।१७१
जपीयै देवी कै अग्र जोय, सिख ग्रहन करावै मंत्र सोय।
वेला सहस्र ताकौ विधाँन, गुरु करै समर्पन आद ग्याँन ।।१७२

---

१ म. प्र. में कुंदादिक से पहले 'वहु' शब्द और है।

इह मंत्र उचारन करै और, ठहराय ध्याँन कौं हृदय ठौर।

मंत्रः—अं सूर्यमण्डलायद्वादशकलात्मने दुर्गादिव्यर्घपात्राय नमः—इति।

संखाय नमह कहि संख सीस, विध जुत जल सीचै विसावीस ।।१४६
वारहाँ कला पूजन वढाय, पुन रवि मंत्रन संजुत पढाय।
मात्रका उलट अरु मूल-मंत्र, जल करै सु पूरत संख जंत्र ।।१४७
सोरहाँ कला थप्पै सु सोम, विचरंत विवकौं देख व्योम।
इह मंत्र प्रथम करकै उचार, वाँनी कौ नीकै लहि विचार ।।१४८

मंत्रः—ॐ सोममंडलाय षोडशकलात्मने दुर्गादिव्यर्घ्यामृताय हृदयाय नमः—इति।

इह मंत्र तहाँ वाँई इकंत, कुसमुद्रा जल पूजा करंत।
तीरथ आवाहन करै ताँम, कर आठ वार जप पूर्न काँम ।।१४९
निज मूल-मंत्र सौं षड्न्यास, उर-वीच जाप करकै अभ्यास।
पुन हृदा मंत्र जल करै पूज, गहि मूल मंत्र अठवार गूझ ।।१५०
मझ हाथ मत्समुद्रा मिलाय, आछादन करीयै जहाँ उपाय।
प्रोक्षनी संख धर दछन पाँन, साँमग्री पूजा जल समाँन ।।१५१
छिरकीयै आपनौ अंग छाँट, वार सौं पूज साँमग्री वाँट।
ता पाछै वेदी वनी तेह, ऊपर जुक्ती कौं अनुसरेह ।।१५२
सर्वतोभद्र लिख चक्र सोय, जड़हन चाँवल कौं लेय जोय।
कर्नका करै पूरत सकाँम, लैकै चावल कौं कर ललाँम ।।१५३
ताही पै धरकै कुस त्रनाह, सतविंस कूर्च करीयै समाह।
थापकै सक्ति आधार थाँन, मंत्रात पीठ पूजै महाँन ।।१५४
कढ छिद्ररहित सुन्दर करीर, थापै फट मंत्रत धर सथीर।
जल पूरत करकै तँही जाग, तिह लाल तीन लपटाय ताग ।।१५५
नवरत्न कूर्च गंधाद नीर, भन तार मंत्र डारै सभीर।
ऊँकार पढै फिर मंत्र आद, कहि उलट वर्नमाला क्षकाद ।।१५६
पूरै अकार परजंत पाठ, घोखीयै न करीयै वाध घाट।
पुन धरै कुंभ ऊपर सुप्रष्ट, तीरथ जल पूरत करै तिष्ट ।।१५७
पढ मूल-मंत्र सुर इष्ट प्रीत, चरनन मैं ताही धार चीत।
पीपर कटहर अरु आंम्र-पत्र, कोमल-कोमल करीयै इकत्र ।।१५८

अग्नि कुंड मै डारैं ऐसैं, जरैं कहै इह मंत्रही जैसैं ।

श्लोक

अग्निम्प्रज्वलितं वन्दे जातवेदं हुताशनम् ।
सुवर्णवर्णममलं समिद्धं विश्वतोमुखम् ।। इति ।

अगन मंत्र इह करैं उचारन, करैं स्तोत्र अग्नि सुभ-कारन ।।१८६
हेत अग्नि मंत्रही हीय हेरे, करीयै षडन्यास तिह केरे ।
जाके अंग कहत हौं जोई, सहस्रार्चि 'स्वस्ति' पूरन सोई ।।१८७
पुन उतिष्ट पुरख पहिचाँनहु, व्यापी धूम सु फेर वखाँनहु ।
सप्त जीह धनुधार संकेता, षडंग नमह स्वाहाय सहेता ।।१८८
अग्नि सुवर्न रूप अवगाहै, चित्र अनेत्र ध्यांन कौं चाहै ।
पद्मासन जुत धारैं प्रीती, रहँस विचारन कौ इह रीती ।।१८९
कुंड मेखलाँ सीचन करीयै, वगल विछाय दर्भ विसतरीयै ।
पुन त्रकोन षटकोन पवित्रा, परठैं जंत्र अग्नि अठ पत्रा ।।१९०
ता मध अधो लिखे मंत्रहि कौं, जा अग्नि ही पूजै जंत्रही कौं ।
पढै मंत्र इह ताही पाछै, उर मै ध्यांन धारकै आछै ।।१९१

श्लोक मूल

वैस्वानरस्ततो जातवेदपश्चादिहावह ।
लोहिताक्षंसम्प्रोच्य सर्वकर्माणि साधय ।। इति

पुन षटकोन मध्य मै पेखै, लोला सात अगन की लेखै ।
प्रथम हिरण्या जिगना पूरी, सक्ता कृस्न सुप्रभा रूरी ।।१९२
बहुरूपा अति रक्तका वरनी, अग्नि जीह सातू उद्धरनी ।
पूज करैं इनही की पूरी, जाँन-जाँन दल कमल जरूरी ।।१९३
मूरतवंत अग्न कौं माँनै, पूज जहाँई तहाँ प्रमानै ।
जातह वेदा सप्त जीह जुत, हविवाहन कीह पूजै आहुत ।।१९४
अस्वोदर जसज्ञ वैस्वानर, पुन कुमार तेजा संख्या पर ।
मान विस्वमुख जाँन देवमुख, सब विध पूजै अग्नि पाय सुख ।।१९५

पूजा का मंत्र

ॐ अग्नये जातवेदसे नमः—इति ।

ईसाँन कोन घर सरकरीय, पुन दुर्गा थप्पै परकरीय।
पूजा आवाहन करै फेर, विधिपूर्वक सौं सव तँही वेर ।।१७३
कहि रक्ष-रक्ष फट मंत्र काज, वसु सीच देय गुरु रहित व्याज।
सिख संग करै भोजन सुभाय, जहाँइ गरू सोवै थित जमाय ।।१७४
निस तँही वितावै धार नेम, गुरु हितकारी जाँनहु निगेम।
कुंड अरु चौतरा संसकार, वरनत हूँ ताकौ इह विचार ।।१७५

दोहा

मूल-मंत्र उच्चार मुख, देखै कुंड सुदीठ।
जल छिरकै फट मंत्रजुत, पाटै फटकहि पीठ ।।१७६
तीन-तीन वेला तहाँ, जल छिरकै जँह जाग।
निरनय कीनौ नेम कौ, भेद लखै वड़ भाग ।।१७७

छंद द्वै-अक्षरी

ओउंकार कहि पीठ अराधै, सवविव देवी पूजन साधै।
आधार सक्ति ये नमह उचार, अमुक नाँम को रखै अधार ।।१७८
कर देवी पीठाय नमसक्रत, पीठ मैं कुंड की पूजा प्रापत।
पीठ तँही पै सिव-पारवती, आवाहन करीयै निज उकती ।।१७९
गंधाधिक सामग्री गहिकै, रुचर पूज करीयै सुच रहिकै।
काँमातुर सोई सिव की काँमन, दुति दमकत घन मै मनु दाँमन ।।१८०
कीयै न्हाँन रितु वेस किसोरी, चितवत सिव जिम चंद-चिकोरी।
देवी-रूप माहि चित दीजै, कछुक काल इह ध्याँन करीजै ।।१८१
अग्नी-पात्र माँहि फिर आनै, संसकार कर सुद्ध समाँनै।
जप रम्वीजहु ओउंकार जुत, सात वार चैतन्य करत चित ।।१८२
मुद्राधेन दिखाय गरूमत, रक्षा फट मंत्रही सौं राखत।
अवगुंठित हुम् मंत्र उचारत, पुन गंधादिक पूज प्रचारत ।।१८३
अग्नि घुमाय कुंड कै ऊपर, तीन वार जप ओउंकार स्वर।
चितै चित देवी-जोनी छत, सिवकौ वीरज माँहि संचरत ।।१८४
तजै कुंड मै अग्नि तहाँई, रत जुत दंपत रूप रहाँई।
निज लीला सिव-सक्ति निवारै, सिव-सक्ती आचम्न सुधारै ।।१८५
मंत्र—हन हन दह दह पच पच सर्वज्ञाज्ञापय स्वाहा—

हवन करै इम दे-दे आहुत, अगनीदेवी देवी आवृत।
मंत्रन सौं संतुष्ट मनावै, जाके पाछे सिख्ख जनावै ॥२११
कर सिनाँन संध्या सिख कारीय, धौरे वस्त्र अंग मै धारीय।
अरु पहरै सोवर्न-अलंकृत, गहै कमंडल हाथ सुद्धगत ॥२१२
गरु पँह आवै ग्याँन गरिष्टी, देखै गरू ताहि सुभ दिष्टी।
निकट बुलावै कुंड निदाँना, सिख्ख आपनौ जाँन सुजाँना ॥२१३
जिह गुरु पास सभासद जेते, कुल देवन मंडत थित केते।
पाय लाग बैठै तिन पासै, आसन दै सिख गुरु विसवासै ॥२१४
चेतन चाव भाव हित चाढै, गरू सिख लखै येकता गाढै।
सिख सरीर के अध्वा सोधै, विगत ताहि की सब विध बोधै ॥२१५
करकै हवन सुद्धि पुन करीयै, सुद्धातमा करनी अनुसरीयै।
जबही चितै कृतारथ जेही, देव अनुगृह लायक देही ॥२१६
षटअध्वा है तिह इह ख्याती, जाँनत है सब ही द्विज-जाती।
जाँनहु पावक लांध्वा जैसै, तत्वाध्या मेहन मै तैसै ॥२१७
भुवनाध्वा नाभी कै भीतर, तैसै वर्णाध्वा स्तनांतर।
मस्तक माँहि पदाध्वा मंडत, थित मंत्राध्वा मुंडहि थंडत ॥२१८
सिख कौ कूर्चभाग कर सपरस, तहाँ इह मंत्र पढै धारै तस।

मंत्र—ओंमस्य सिष्यस्व कलाध्वाँनं सोधयामि स्वाहा—इति।

इक-इक मंत्र पढै अठवेला, अध्वा लै-लै नाँम अकेला ॥२१९
पुन-पुन अध्वा षष्ट परेखै, लीन वृह्म मै भावत लेखै।
पुन भग स्रिष्टि करै उत्पादन, आतम थित चेत्तंन्न अराधन ॥२२०
सिख तन की गुरु करै जु सुद्धी, क्रिम विचार जाँन अविरुद्धी।
होम करै पूरन आहूती, कलस देव थप्पन करतूती ॥२२१
करै विसरजन सब विध करकै, पट बाँधै सिख नैनन परकै।
पट बाँधत वौषट कौं पढकै, कुंड निकट लेजावै कढकै ॥२२२
थप्पन कलस करयौ ताही थित, पुसपांजली करै देवी-प्रत।
पुन खोलै नेत्रन के पटका, विष्टर दरभ रचै त्रन वटका ॥२२३
बैठावै सिख कौं गृह बाहू, सुद्धी भूत करै सब काहू।
जोई मंत्र दैन कै जोगू, पुद्गल सिख कर न्यास प्रयोगू ॥२२४

वज्रादिक आयुध जुत वाँना, पूजै लोकपाल परधाँना।
संसकार स्रुवआज्य सकोई, होम कीजीयै सव सुध होई ।।१९६
स्रुव सौ घृत लै होमै सोई, जहाँ दक्षन अग्नी चख जोई।
ओं अग्नि स्वाहा इत्यादिक, मंत्र पढै लख-लख मुरजादिक ।।१९७
ओं सोमाय स्वाहा ऊचारै, नेत्र-मध्य घृत सीच निवारै।
फेर भाग दक्षन घृत फेरी, होम करै अग्नी-मुख हेरी ।।१९८
अग्नि स्वष्टि क्रते स्वाहा इम, मंत्र उचारन कह्यौ महाँतम।
ओं-ओं पाँच वार उच्चारै, स्वाहा-स्वाहा सहित सँभारै ।।१९९
भुव स्वाहा इत्यादिक भाखै, आहूती सुधमति अभिलाखै।
तीन वार पूर्वोक्त अग्नि तन, संजुत मंत्र देय आहुत सन ।।२००
आठ प्रनव जप दै फिर आहुत, घोर-घोर साकल्य तथा घृत।
संस्कार हित करै जु साधन, गर्भाधाँन आँन आदिकगन ।।२०१
गर्भाधाँन प्रथम ही गायौ, वहुर पुंसवन वेद वतायौ।
सीमंत रु उपनयन समाँना, जातकर्म क्रम नामही जाँना ।।२०२
निस्कासन अनप्रासन कहीयै, चूड़ाक्रम व्रत वंधन चहीयै।
महानात्मव्रत फेर मनायौ, वर उपनिसद व्रत्त वतरायौ ।।२०३
गऊदाँन अरु दाहकर्म गन, वरने संसकार इह वेदन।
सिव अरु सिवा पूज अनुसरीयै, कर सु-प्रसंन्न विसर्जन करीयै ।।२०४
पाँच समधि-जुत अग्नि प्रजारै, येक-येक आहुत अवधारै।
सौ आवर्ण अरथ सु विचारा, अगन-मंत्र ही के आधारा ।।२०५
पाछै ही दस महागनेस प्रति, मंत्र गनेस उजार महामति।
पूजा पीठ अगन मैं पात्रन, निर्भय करीयै कलुष नसावन ।।२०६
देव जही कौ मंत्र सु दीजै, ध्याँन अगन-मुख माहि धरीजै।
मूलमंत्र पच्चीस मिलावा, दै आहुत साकल्य दहावा ।।२०७
अगनदेव इक मुख अवगाहै, चित सथ आप भावना चाहै।
येकीभूत जाँनकै आपन, जपै षड़ंग देवता जापन ।।२०८
हैनै होम दै आहुत ही कौं, देव अभिष्ट येक तादीकौं।
येक देवता प्रतै ऊ देसा, आहुत दै अगनी अवसेसा ।।२०९
तिल जव सेष रहै जो तातै, जमा येकठे करै जु जातै।
देवी नाँम पाठ सौं दाहै, अष्टोतर सहस्र अवगाहै ।।२१०

सकत भक्ति तज वेद स्रुति, पंथ गहत पाखंड ।
आँनहु देव-उपासना, माँन आँन भ्रम मंड ।।२३८
कहा कारन यामै कहौ, बात विचार बहोर ।
इह संका मेटन अरथ, जाचतहूँ कर जोर ।।२३९
देवी के मणीदीप कौ, वरनन करहु विसेस ।
अद्ध ऊद्ध किह आकृती, देख परत है देस ।।२४०
जनमेजय सौं व्यासजू, भाखी कथा अभूत ।
वरनत सोइ विस्तार सौं, सोनकाद सौं सूत ।।२४१

छंद पद्धरी

इह पूर्वकाल वीती उदंत, समुझाय कहत हूँ स्रुति सिधंत ।
इक दनुज मघोदत नाँम आय, कीय देवन सौं जुध प्रवल काय ।।२४२
सत वरख लरचौ सोई महासूर, केऊ सस्त्र-अस्त्र चाले करूर ।
पुन परासक्ति सुर कृपा पाय, हठ त्याग दनुज भागे हिराय ।।२४३
भूलोक त्याग पाताल भौंन, कर गये सुरन सौं जुद्ध कांन ।
अभिमाँन वढ्यौ देवन असेस, दिगपाल वसे निज देस-देस ।।२४४
कहि-कहि कै आपुन आप कीत, जन-जनहि जनावत जुद्ध जीत ।
भूलकै परासक्ती सु भाव, संमृथ तन माँनत मत सुभाव ।।२४५
अहमत सौं प्रगटचौ अहंकार, उर मोह छाय छायौ अँधार ।
जब तेजोमय इक उपज जोत, आपसौं आप ह्वैकै उदोत ।।२४६
परकास पुंज कोटक पतंग, सीतलता कोटक ससी संग ।
कोटक विजुरी-सम दीप्त काय, पुन नाँहिन कोऊ हाथ पाय ।।२४७
भासंत येक सम साँझ-भौर, अदभूत चरत लख देव और ।
वाढचौ अत विसमय लख विचार, येकठे भये तज-तज अगार ।।२४८
वहु सोचत मिल-मिल विवुध वृंद, चित चकित भये सव सूर चंद ।
अगँन कौं वुलायौ निकट इंद्र, चल जाहु लखौ इह कहा छंद ।।२४९
सुन इंद्र-वचन कौं सावकास, पावक तव पहुच्यौ तेज पास ।
पावक मुख वोल्यौ तेज प्रत्त, तुम साच कहहु हम अगन-तत्त ।।२५०
इह स्रष्ट गनहु मेरै अधार, छिन माँहि खीजकै करू छार ।
कह देहु हमहि कौं तुमहि कौंन, जाँन्यौ तत चाहत रूप जौन ।।२५१

इह मंडल तै मंडल औरै, ठहरावै बैठाय सुठौरै।
पढ-पढ फेर मात्रका पूरी, पल्लव कुंभ गहै भरपूरी ॥२२५
सिख-मसतक पै मेलै सोई, ग्यांनी गुरू क्रीया सुभ गोई।
कलस नीर सौं सिनांन करावै, जलवर्द्धन कौं सीचत जावै ॥२२६
द्वै सुच[1] वस्त्र पहन सिख देही, भस्मि विभूति करै भर तेही।
गुरु समीप जावै सिख ग्याता, सिख की गुरू सवाँरै साता ॥२२७
देवी-जोत हीयै मझ देखै, सोई प्रवेस सिख हृदय सँपेखै।
जिह सिख देव येकता जाँनै, सुगंधाद पूजा सनमाँनै ॥२२८
रक्षन कर गुरु सिख सिर देवै, भरै मंत्र दक्षन स्रुति भेवै।
गहि सिख मंत्र हृदय अवगाहै, अष्टोतरसत जाप उगाहै ॥२२९
करै प्रनाँम गरू सुख-काजा, महाप्रभू जाँनै महाराजा।
मन-तन अर्पन करै जु माया, गुरु हरि भेद न वेदन गाया ॥२३०
रित्वज क्रीया हवन कीय रीती, पूजै देय दक्षना प्रीती।
भोजन स्रजै विप्रकुल भरकै, कंन्या त्रप्त सुवासिन करकै ॥२३१
दीन अनाथन कौं अँन दीजै, लाग पाय जन आसिष लीजै।
दिक्षा लेयै जाही दिन सौं, महाँ क्रतारथ समुझै मन सौं ॥२३२
कर आराधन पावन काया, मंत्र पूज ध्यावै महँमाया।
नाराँयन दीक्षा सिख निरनौ, विध-जुत मुनि नारद सौं वरनौ ॥२३३
वेदक-रीत दुजन वरदाई, गुप्त-रीत कहु तांत्रक गाई।
देवी-सम नाँही कोऊ देवा, भजन करै भक्ती लहि भेवा ॥२३४
व्यास कहत जनमेजय वाचा, सक्ति हेत आराधन साचा।
नारांयन सौं सुनकै नारद, विपन गये तप करन विसारद ॥२३५

दोहा

वेदव्यास सुन वारता, जनमेजय जीय जाँन।
उर-संका मेटन अरथ, इहै प्रस्न कीय आँन ॥२३६
च्यार वरन कौं चाहीये, वेद-रीत सुविचार।
संध्या त्रय भगती सकत, आराधन आचार ॥२३७

---

१ स्वच्छ।

आकासवाँन भइ तवही येह, निरनौ इह सुनीयै निसंदेह।
पुरहूत करहु और न उपाय, जप बीज जपहु सुख होय जाय ।।२६७
इक लाख वरख जहाँ वैठ इंद्र, दोऊ नैन मूंदकै छोर दुंद ।
जपते रहे माया बीज जाप, कीनौ वृत-भंग न जिह कदाप ।।२६८
क्रमपाटी सुकला चैत केर, वरती नवमि जाही सुवेर ।
महाँउत्तँम मंडल वीच माँहि, अवतरयौ कुमारी रूप आँहि ।।२६९
दुति नवजोवन मनु चंद दूत, परभात सूर जिम प्रभा पूज ।
दुपहरीया मरिणवक रंग देह, चमकंत वोजुरी ज्यूँ अछेह ।।२७०
अंगीया ढके उन्नत उरोज, सोभायमाँन आँनन सरोज ।
नासका दीप अरविंद नैन, वनपीह कोकला मधुर वैन ।।२७१
कीय रत्नन नाना अलंकार, मल्लका माल ग्रींवा मझार ।
पवसाक मनोहर झीन पाट, केऊ जरी किनारी भरी काट ।।२७२
जगमगत चहूँ दिस जाहि जोत, आभास चंद पूरन उदोत ।
हित भरे अधुर जुत मंद-हास, पंकती दसन दाड़म प्रकास ।।२७३
वपु सरसत परसत आय वाय, सोगंध वढत ज्याँ-ज्याँ सवाय ।
पग करत धरा कोमल पसाय, जहाँ पद्मराग जनु विखर जाय ।।२७४
भक्तन कै ऊपर रचत भाव, सम कल्प-लता सांता सुभाव ।
सुः प्रभा समालंभन सुहाय, भाल मैं लाल चंदन भराय ।।२७५
दहु हाथ उठावत वोध देत, करुनारस जाको हीय निकेत ।
वर्नना करत जिह च्यार वेद, भुवनेस्वरीय पावत न भेद ।।२७६
निव्याज उमा जिह सिवा नाँम, लेखीयैं त्रनैनी विच ललाँम ।
भुज च्यार अभय अंकुस भरेह, वर पास वीच वासौ वसेह ।।२७७
कीनौ सुरिंद्र तिह नमस्कार, पुन करी स्तुति नाना प्रकार ।
सु प्रसन्न देख देवी स्वरूप, भासन कीय आसा देवभूप ।।२७८
वोल्यौ विचार मुख जवत वीज, प्रेम न नेम सौं हीय पतीज ।
मैं करी तपस्या महाँमाय, जिह कहहु हृदय संदेह जाय ।।२७९
विच मंडल उपज्यौ तेज विंव, इह कहा हतौ कैसौ अचंव ।
विधजुक्ति वखाँनहु तिही वात, किनकी इह कैसी करामात ।।२८०
भगवती कह्यौ सुन इंद्र भूप, सो तेज वृह्म मेरौ स्वरूप ।
कारन कौ कारन जिह कहंत, आतमा अखंडत आद-अंत ।।२८१

जव तेज कह्यौ तुम वली जोर, तिनका इह मेलत येक तोर।
जिह जारहुगे वलवाँन जाँन, कहिहू तत मेरौ सुन कृसाँन ।।२५२
तिनुका इक मेल्यौ विव तेज, महावली अगन के मुहाँमेज।
प्रज्वलत भयौ पावक प्रचंड, खय भयौ न तासौं त्रनाखंड ।।२५३
महालज्जत ह्वै मन पाय मोह, देवन विच आयौ त्याग द्रोह।
निर्वेद भाव सौं कही न्याय, वीती सु वात जैसी वनाय ।।२५४
देख कै अगन कौं रूप दीन, कछु काल इंद्र ठहराव कीन।
वलवाँन जाँनकै देव वाय, पुन तेज परख कारन पठाय ।।२५५
पवमाँन जायकै तेज पास, पारख कौं वोल्यौ वल प्रकास।
मै पवन मातरिस्वा महाँन, प्राँनी मैं व्यापक रहत प्राँन ।।२५६
चीटी गज आदक जे चलंत, वल मोही कौ जाँनहु वृतंत।
हम निकस जात जव ह्वै विहाल, कौलीया होत है जीव काल ।।२५७
मेरे सम औरं न वलीमाँन, जाँन्यौ मै चाहत तोहि जाँन।
तेज नै धरयौ सोई त्रनाह, चख पवन दिखायौ ताहि चाह ।।२५८
याकौं उड़ाय देहौ जु आप, प्रवलता जाँन लेहौ प्रताप।
जव पवन करयौ वहु वेग जोर, ठहरयौ त्रन त्याही तही ठौर ।।२५६
वलहीन चल्यौ तव देव वाय, इह कही हकीकत इंद्र आय।
वोले जु देवगन इंद्र वेख, द्रगनन सौं लीजै तुमही देख ।।२६०
पति देवन के मति अत प्रवीन, छल-वल कौं लैहौ तुरत छीन।
देवन कौ विस्मय टार देहु, आपकै जोग है काँम येहु ।।२६१
वढ इंद्र चल्यौ सुन सुरन वात, कछु तेज पिछाँनन करामात।
आवत जव देख्यौ तेज इंद्र, छिप गयौ कछू पायौ न छंद ।।२६२
विवुधन औरन सौं करी वात, कल-वल दिखायकै करामात।
इंद्र सौं करी नही वात येक, पहिचाँन देवगन कौ प्रवेक ।।२६३
अपमाँन विचारयौ इंद्र आप, पिछतात कहत कहा करयौ पाप।
ढिग अगन पवन कौं तेज ढाव, जिनसौं प्रस्नोतर करे जाव ।।२६४
हम देखत कै सोई विलय होय, जिह परम तेज सक्के न जोय।
अपमाँन भयौ मेरौ अतीव, जग कहा करू इह राख जीव ।।२६५
कहत है विदुष साची कहाँन, माँनकै गयै मुरदा समाँन।
ऐसौ विचार मघवा अचंव, वैठे सुथाँन जहाँ तेज विंव ।।२६६

ह्रींकारी दुज-कुल देख हाल, दीय पूर्न पात्र ह्वैकै दयाल।
ऋषी गोतम जो कछु चहै रिद्ध, सुख पाय लहहु अन त्रन समृद्ध ॥३२३
ओउंकार-रूपनी इह उचार, पाछी सु गई थाँनक पधार।
तिह पूर्ण पात्र[1] सौं अन त्रनाह, अंन्नेक जात निकसे अथाह ॥३२४
परिपूर्ण भये दुज भोज्य पाय, पसु भये त्रप्त त्रन घास पाय।
वस्त्रादि अलंकृत अत विचत्र, अंन्योन भाँत निकसे इकत्र ॥३२५
जे गोतम दीने विप्र जात, करनी दिखायकै करामात।
सौ जोजन आस्रम वढ्यौ सोय, तल ताल तलाई भरे तोय[2] ॥३२६
जिग होम लगे गायत्री जाप, पुन गोतम कौ प्रगट्यौ प्रताप।
इह देव सभा मैं कही इंद्र, महमाँ न कही जावत मुनिंद्र ॥३२७
परताप भये जिह विप्र पुष्ट, स्वर जग्य-भाग लेवत संतुष्ट।
वसु अनावृष्टि मैं इही वार, इक कल्पवृक्ष गोतम अधार ॥३२८
गोतम कौ आस्रम जगत-ख्यात, मंडप विचत्र गायत्री मात।
कऊमारी तरुना वृद्ध काय, देवी प्रतिछाया जहाँ दिखाय ॥३२९
परभात मध्य दिन साँझ प्रत्त, नेम सौं दिखावत रूप नित्त।
जहाँ ऋषीवृंद आस्रम जमाह, सुख पाय रहे द्वादस समाह ॥३३०
जहाँ वैठत मुनि आसन जमाय, औरहु रिखी वैठत आय-आय।
मुनि नारद आये अकस्मात, गोतम की करनी करन ख्यात ॥३३१
नारद कौं गोतम मुनि निहार, कीय वार-वार वहु नमस्कार[3]।
पूजा लै वैठे मुनी पास, पुन सुजस कह्यौ गोतम प्रकास ॥३३२
इंद्र सौं सुनी हम वात येह, दुज-कुल तुम तार्‌यौ निसंदेह।
अंवका-भक्त हौ धंन्य आप, परगट जग जाँन्यौ तप प्रताप ॥३३३
कहि नारद येती गवन कीन, लख मंडप देवी दरस लीन।
गहि वीना सुरपथ कर्‌यौ गौंन, भूदेव रहे निज भौंन-भौंन ॥३३४
उग्रता सुनी गोतम अतीव, जरनै कौं लागे दुजन जीव।
ईरखा पायकै ह्वै उदास, उर भरन लगे मिल-मिल उसास ॥३३५
केऊ दिवस विते पावत कलेस, दुरभिक्ष मिट्यौ दुख देस-देस।
मुनि करन कलंकत कर्‌यौ मंत, अवगुन गुन सोचे नही अंत ॥३३६

---

१ म प्र. पात्र। २ जल। ३ मू. प्र. नम्सकार।

है अधिष्टाँन माया हमेस, भूतन कौ साखी रूप भेस।
पद वेद जिही माँनत प्रवुद्ध, सो निरामई है सदाँ सुद्ध ।।२८२
जपतंत जिही हित तपित पाय, लै वृह्मचरीय आपौ लगाय।
तम पद सै भाखत तिही तत्त, वेदन निरनय है लखहु वृत्त ।।२८३
येकाक्षर कहीयत ओउंकार, है येकाक्षरहू ह्लीयंकार।
ये उभय मंत्र है वीज आद, सुमरन कौं मोहित सुख समाद ।।२८४
इक माया भाग सु वृह्म येक, पहचाँन उभय लीजे प्रवेक।
जातैं उपजावत सकल जीव, संसार रूप नाना सदीव ।।२८५
धुर जाँन लेहु उर मुक्ति धाँम, नित भाग सच्चिदानंद नाँम।
प्रकती आदमाया प्रवाहि, जाँनीयै परासक्ती सुजाहि ।।२८६
मै सक्ति ईस्वरी मतीमाँन, प्रक्रती नँही न्यारी प्रधाँन।
ज्यूँ चंद्र-चंद्रका येक जोत, अवस्था सांम्य है ओतपोत ।।२८७
जव प्रलय-समय सव जक्त जीव, सोइ लीन होत मोमहि सदीव।
परिपाक कर्म प्रानींन पाय, स्त्रष्ट कौ उदय आवत सुभाय ।।२८८
वन जात जवहि नहि लगत वेर, ताही सौं माया कहत टेर।
अंतरमुख मेरी अवस्थाह, थित माया जाकौ नहिन थाह ।।२८९
अवस्था वीहर मुख लखहु येह, तम सव्दही योजत होत तेह।
रचता सु वहिरमुख तमो-रूप, सतगुन कौ परगट ह्वै सरूप ।।२९०
स्त्रष्ट की आद रज गुन सवंध, परकास होत त्रहु गुन प्रवंध।
रजगुन वृह्मा मैं अधिक रेख, विस्नु मै सतोगुन ज्यूँ विसेख ।।२९१
रुद्र मैं तमोगुन इधक राच, तीनहू गुनन की तीन ताच।
जग करता देह सथूल जाँन, विस्नु कौं लिंग देही वखाँन ।।२९२
कारन है देही रुद्र केर, हम चौथी इनसैं भिन्न हेर।
सांम्यावस्था त्रयगुन समाहि, माया है अंतरमुखी माँहि ।।२९३
चौथी जु अवस्था इही चित, तिंह परै हमारो रूप तंत।
परवृह्म कहत जाकौं पुनीत, तिह रूप रेख नही गुनातीत ।।२९४
द्वै-रूप निगुन-सगुन दिखाय, लेखीयै भेद जैसै लखाय।
निर्गुन है माया रहित नित्त, पुन मायाजुत सरगुन प्रवृत्त ।।२९५
जग-उपजावन हम हेत जीव, सव अंतह मैं प्रवसत सदीव।
प्राँनीन सुभासुभ पुंन्य पाप, आप सौं कर्म ही करत आप ।।२९६

हम पाप मिटावन होय हाँम, जपीयै गायत्री अष्ट जाँम ।
कहि येती विप्रन विदा कीन, पथ वेद-धर्म गोतम प्रवीन ।।३५२
कहि व्यास सुनहु कुरविंद्र काँन, अवतरे विप्र वे धरा आन ।
अवतार क्रस्न पाछै अनेक, भये विप्र गहै पाखंड भेख ।।३५३
कापालक केते पंथ कौल, डारन कौं लागे नये डौल ।
कोऊ वोध जैन चार्वाक क्रूर, पथ दुराचार मती पूर-पूर ।।३५४
जाँनत त्रकाल संध्या न जाप, सवही गोतम के दग्ध स्राप ।
स्वाहा रु स्वधा वर्जत सुमर्न, सत कर्मन प्रक्रति मूल सर्न ।।३५५
अगनोत्र वेद कौ धर्म आद, मानत न सुंमृती की मृजाद ।
चित पिंडत हैं तऊ दुराचार, नर्क के कुंड सौं जिह निकार ।।३५६
इछ्या परमेस्वरि है अगाध, ऊपजै धर्म नाना उपाध ।
सक्ति की भक्ति है पर्म स्रेय, गायत्री जप है सदा गेय ।।३५७

दोहा

पूँछ्यौ सो भाख्यौ प्रथम, गायत्री कौ ग्याँन ।
कथा कहत मणीदीप की, थित जहाँ देवी थाँन ।।३५८

छंद द्वै-अक्षरी

प्रथम सुनहु कथ वेद पुराँना, माया वृह्म विचार महाँना ।
जग प्रपंच माया सव जाँनहु, सुनत स्रवन द्रग लखत समानहु ।।३५९
वुद्धि जहाँ लग करै विचारा, सो प्रपंच माया कँह सारा ।
व्यापक वृह्म अद्रस्य वखाँना, ओत-पोत माया अनुमाँना ।।३६०
जँहाँ वृह्म जहाँ माया जाँनहु, इह सिद्धांत भलैं उर आँनहु ।
जाँनहु प्रभा प्रभाकर जैसैं, तोय-तरंग भिन्न नही तैसैं ।।३६१
इह सिद्धांत अनाद अभंगा, सक्तवाँन् नित सक्ती संगा ।
पै कछु कोविद भेद पिछाँनै, इधक न्यूँन गुन तै अनुमाँनै ।।३६२
उभय रूप माया अनुसरनी, विद्या अवर अविद्या वरनी ।
विद्या रचत ईस कहि वरनै, सवही जीव रहै तिह सरनै ।।३६३
ईस सोई चिर देह अनंता, उपजै खपै जीव तन अंता ।
जीव ईस इह भेद जतायौ, गुनन रीत सौं विदुपन गायौ ।।३६४

दुर्बल माया सौं महादीन, कत्रमी गाय इक प्रगट कोन।
होम की वखत मैं करन हाँन, जिग साला प्रेरी तही जाँन ।।३३७
ओउंकार कर्यौ मुनि जाहि हेर, वरजी आवन सौं जँही वेर।
गिर परी गाय सोई धूज गात, उत्पात भयौ इह अकसमात ।।३३८
कतघनी पनौ कर विप्र केक, अत कर्यौ कुलाहल विध अनेक।
होवन कौं लाग्यौ हाय-हाय, गोतम मुनि मारी दीन गाय ।।३३९
कर होम उठे मुनि भये क्रुद्ध, विप्रन सौं वाढ्यौ अत विरुद्ध।
धर इष्टदेव कौ हृदय ध्याँन, जव दिव्य चखन सौं परी जाँन ।।३४०
अंसुया पाय विप्रन अनेक, विघ्न कौं कर्यौ परहर विवेक।
गुन पै अत अवगुन कर्यौ ग्यात, विप्रन नहि सोची नैक वात ।।३४१
ऋषी गोतम दीनौं स्राप रुष्ट, देवी तै वेमुख होहु दुष्ट।
जप गायत्री नही फलै ज्याग, भूदेव भूलकै मंत्र भाग ।।३४२
रत दुराचार पाखंड राच, वेमुख तुम होवहु वेद-वाच।
सुमृती-परांयन धर्म सोय, खलता कर दीनौ आज खोय ।।३४३
नारकी वास ह्वै है निदाँन, मेरे तुम वायक लेहु माँन।
आचम्न कर्यौ मुनि कहत येह, छप्पर जिग-साला करत छेह ।।३४४
जव पँहुचे देवी थाँन जाग, लीय दरसन माता पाय लाग।
वोली गोतम सौं विमल वाँन, सुन लेहु वात मेरी सयाँन ।।३४५
दूध कौं पायकै लेहु देख, विष सर्प वढै जैसै विसेख।
गोतम तुम कहीयत ग्याँन-वाँन, सुविचारहु मन मै समाँधाँन ।।३४६
इह दुजन दोख लख अनाघात, मुख मोर लयौ गायत्री मात।
अचरज मय मूरत सोइ आज, विच रही दिव्य मंदर विराज ।।३४७
जव स्राप-दग्ध हुय विप्रजात, गोतम-ढिग आये धूज गात।
कीय विनती होवहु मुनि क्रपाल, परवार वचावहु विरदपाल ।।३४८
डूवैगौ दुज-कुल आप द्वेख, वात की हाँन तौहू विसेख।
आप तौ महाँग्याँनी अदोख, रिखीराज निवारन करहु रोख ।।३४९
विनती सुन गोतम विप्रवृंद, मन हुय प्रसंन्न वोले जु मंद।
हम स्राप कवहु मिथ्या न होय, करनी तुमही कहा करै कोय ।।३५०
अवतार नही ह्वै क्रस्न आय, जव लौं तुम भोगहु नरक जाय।
अवतार भये पै कलू आद, मिल जन्म लेहु वर्जत मृजाद ।।३५१

गिरत बूँद ऊठत जल गहरै, लाल वदक स्वानी मनु लहरै ।
तट डिंडीर जु छिकेत राजत, रतन-जटत भूषन मनु राजत ।।३७६
कूल-कूल कर्दम अनुकूला, अत कुंकम करुविंद अमूला ।
निकसत जल ताही की नहरै, लाल कमल की तिह पर लहरै ।।३८०
भुय पर्वत तट पै कहु भ्राजत, विद्रुम लाल अनूप विराजत ।
मच्छ कच्छ तन स्वच्छ विमोहै, सुकती खुल्लक विहरत सोहै ।।३८१
विवधरूप सगती गन विहरै, पट अनूप भूषन तन पहरै ।
नाचत गावत राग नवींना, वंसी आद वजावत वींना ।।३८२
विवध रीत की क्रीत भवाँनी, क्रीड़ा विमल अनूंप कहाँनी ।
प्रगट करत देवी जस पावन, भोग जोग दहु रीत सुहावन ।।३८३
सिलासार[1] मंडल जहाँ साला, विमलरूप अत रुचर विसाला ।
दिव्यरूप जिह चँहु दरवाजा, सत-सत द्वारपाल वल साजा ।।३८४
भक्ति-जुक्त गण संग भवाँनी, दिव्य काय देवन सुखदाँनी ।
राजत है जहाँ रंम्य-रूपनी, भक्त दरस हित जक्त[2] भूपनी ।।३८५
दिव्य-रूप आवत सुर द्वारै, वैठ विमाँनन जस विस्तारै ।
अमित वाज गजराज असेसा, विवध रूप के वाँहन वेसा ।।३८६
गन-वाहन रव होत अनत गत, सवही क्रीत गावत जहाँ सुनीयत ।
वापी कूँप विमल भर वारी, फल संजुत फूली फुलवारी ।।३८७
घोष[3] साल उत्तर तिह घेरी, घटा अटा दुति छटा घनेरी ।
सतगुन लोह साल तै सोभित, लखत क्रंत भगतन मन लोभित ।।३८८
दिघ्य अनूप रूप दरवाजा, सव कपाट सुभ घाट समाजा ।
वन उपवन वहु वृक्ष विसाला, रुचर फूल-फल सहित रसाला ।।३८९
कुंजरासन वहु पत्र कदंवा, पर्णसप्त सुरपर्ण प्रलंवा ।
जहाँ श्रीफल असोक वहुजाती, सहकारक जहाँ वकल सुहाती ।।३९०
अरजुन वृक्ष उदंवर येते, कँदली, कुटज विदुल तरु केते ।
साल अरिप्ट पिचुल जहाँ सोहै, माहातरु कंटक रहत विमोहै ।।३९१
नक्तमाल क्रतुमाल निरंतर, तापस तरु तमाल वहुरंतर ।
करनकार पाडल जहाँ केते, तिन त्रड़ीक रथ द्रुम कहु तेते ।।३९२

---

१ लोहा । २ जगत । ३ काँसा ।

ईस भेद इह रूप अनादू, विदुख तजै सब वाद विखादू।
जिनके नाँम सुनत स्त्रुत जातै, इहाँ प्रकास करत हूँ यातैं ।।३६५
ब्रह्मा विसन महेस वखाँनहु, सेस गँणेस दिनेस समाँनहु।
इनकौं जो कोऊ जीव उपासा, वसै ब्रह्मलोक ही सो वासा ।।३६६
उर धर जैसौ रूप अभ्यासै, परम रूप जैसौ परकासै।
ईस रूप भूलँहि जो आदू, विवध भाँत जीय लहै विखादू ।।३६७
माया चक्र अविद्या माँही, भ्रमत रैन-दिन ईस भुलाँही।
ईस अराधन साधन येते, जोग ज्याग जप-तप है जेते ।।३६८
ईस्वर-रूप अँनाद अखंडत, माया दिव्यलोक जिह मंडत।
लोक विरंच विस्नु कौ लोका, अद्‌भुतलोक महेस अदोखा ।।३६९
सेस दिनेस धनेस गनेसा, वरुण इंद्र ध्रमराज विसेसा।
ये सब ब्रह्मलोक मै यैसै, जाँनहु उड़गन अंबर जैसै ।।३७०
सत रज तम गुन तीन समाँना, ब्रह्मा विसन महेस वखानाँ।
माया दिव्य रचत अहुँ मूरत, सबहिन जुदी-जुदी है सूरत ।।३७१
माया रचत जिनहुँ कौं माँनत, जो विग्याँन ग्याँन कौं जाँनत।
जगकारन माया इक जाँनहु, ईस जीव-कारज अनुमानहु ।।३७२
जग प्रपंच कारन जगजननी, हेत भक्त दारुन दुख-हननी।
ब्रह्मलोक मैं तिह कीय वासा, परम दास हित रूप प्रकासा ।।३७३
सरबलोक राच्यौ तिह सुंदर, मनिन-जटत तामै वहु मंदर।
इह कारन मणीदीप उचारत, सरब लोक तिह नाँम सँवाँरत ।।३७४
आद प्रकृत सोइ रचत अधारा, सारधातु[1] मय जाहि सवाँरा।
विमल ऊद्ध सबही ब्रह्मंडा, छाया भूत अभूत प्रचंडा ।।३७५
सब लोकन मैं उत्तम सोहै, मनन-जटत देखत मन मोहै।
वहु जोजन ताकौ विस्तारा, सुधा समुद्र ही वीज सुधारा ।।३७६
हीय धर मात-चरन भ्रम हरहूँ, कछु वरनन ताकौ मै करहूँ।
उत्तम सुवृत लोक है ऐसौ, आवृत तिह पाथोद हैं ऐसौ ।।३७७
रोहित रंग अनूँपम राजत, भँवर तरंग सुधा भर भ्राजत।
कहु-कहु जल-कन ऊठत कोहर, मिलत अरुन जिह प्रभा मनोहर ।।३७८

1 लोहा।

जोजन सप्त ऊद्ध सोई जाँनहु, जिह आक्रत अनूँप वृत जाँनहु।
आरकूट साला तिह ऊनर, छित तहाँ उभय बीच बहु छत्वर ।।४०७
वनी तहाँ संतान वाटका, सब प्रकार सोहत सु घाटका।
पर्न पुस्प द्रुत स्वर्न प्रकासहि, जाँनहु फल अंमृतमय जासहि ।।४०८
सुक्रस्त्रीया सुचिश्रीया सहत है, राजा ग्रीषम जहाँ रहत है।
तपत ताप जन-वृंद तहाँही, रुचर रूप तरु छाँह रहाही ।।४०९
सिद्धदेव जहाँ रहत सुखारी, नानारूप लीयें संग नारी।
पौंन करत लैलै तन पंखा, सीतल मंद सुगंध असंका ।।४१०
सीस साल सम पित्तल साला, वनी अनूपम रूप विसाला।
आर साल पंचलोह कै अंतर, कंमृ जहाँ हरिचंदन कंतर ।।४११
वरखा-रितु राजा तहाँ वासा, जहाँ मेघवाहन है जासा।
विद्रुत लोचन कंकट वादर, सहित वज्र निरघोक जु सादर ।।४१२
इंद्र चाप जुत रूप अपारा, धृवत सोई अगनत जलधारा।
नभश्री और नभस्वहू नारी, स्वर सामालनी संग सुधारी ।।४१३
अंब्रादुला निरंत्नि नाँम इह, मेघपंक्तिका आँमृवती मह।
वरखयंती नारी फिर वेसा, नारि चिवुनका संग नरेसा ।।४१४
वारीधारा नारि विचारहु, संख्या द्वादस नाँम सुधारहु।
नवपल्लव-जुत वृक्ष नवीना, लता नवींन सुखद वन लीना ।।४१५
हरि त्रण वेष्टत पुहम मनोहर, सरसत नदी वार बहु सरवर।
सिद्धदेव जहाँ रहत सुखारी, कसमल रहत देवि क्रमुकारी ।।४१६
दीये कूँप वापी हित देवी, सुद्ध उपासन तैं जिन सेवी।
विवध जहाँ नर करत निवासा, इह देवी उत्तंम इतीहासा ।।४१७
आर साल जिम राजत अंबा, पंचलोह की साल प्रलंबा।
उपवन विच मंदार अनूपा, भ्राजत रितु सारद जिम भूपा ।।४१८
नवपल्लव फल पुस्प निरंतर, विवध भाँत सोहत बहुरंतर।
दूस लक्षमी ताहि दुलहिनी, ऊर्ज लक्षमी येम उलहनी ।।४१९
सिद्धलोक जहाँ वास सुहावन, प्रगट करत देवी जस पावन।
पंचलोह की साल प्रमाँनी, दीपत रूप साल सुखदाँनी ।।४२०
पारजात उपवन तरु पूरत, सुखद सुहावन पावन सूरत।
सरस फूल-फल संजुत सोहै, महकत जिह सुगंध मन मोहै ।।४२१

सिवा अक्ष श्रीपर्ण सुहावत, लखत मनोहर चित ललचावत।
पीतसाल मंदार प्रकासै, नाग रंग तरु जपा निवासै ।।३९३
चंपक जहाँ मालती सुहावन, पीत जुँही वृंदा अत पावन।
वीजपूर जंभल अरु वरना, कपिकछ्छक प्रीयंग तरु करना ।।३९४
वहु अनार कचनार विराजै, नालकेल अरु क्रमुक निपाजै।
कुवली तरु राजत जहाँ कहुवा, माहाकाल कटहर अरु महुवा ।।३९५
नद्यावरत सुखद विघ नाना, थल निकुँज सोहत तरु थाँना।
अवकेसी तरु जहाँ न येका, वनस्पती सुख रूप विसेका ।।३९६
लता सुखद तरु-तरु लपटावत, ललना मनहु पीव उर लावत।
कोमल दल पल्लव नव केते, तरु फल-फूलन संजुत तेते ।।३९७
केकी पिक कोकल जहाँ कुंजत, गहरै स्वर पारावत गुंजत।
कहुँ मराल सुक करत कलोलै, विवध भाँत वाँनी वर वोलै ।।३९८
मृग-गन नाना-रूप मनोहर, विचरत झुंड-झुंड आक्रत वर।
उत्तर कांस्य साल सुख आलही, सोहत ताम्रवनी सोई सालही ।।३९९
समल विमल सोई दिव्य-सरूपा, ऊँची जोजन सप्त अनूपा।
मध्यनीय उपवन जहाँ मंडत, अद्भुत कलवृछ जहाँ अखंडत ।।४००
सघन सुमन अरु परन सहेता, कंचनवरन अनूँपम केता।
वीज रत्न सुघरत द्रुति विलसत, फल-सुगंध जोजन दस फैलत ।।४०१
उभय साल चिब परम अपारा, रितु वसंत ताकँह रखवारा।
पुस्प छत्र धारै सोई धूपर, पुस्प सिंघासन रांजत ऊपर ।।४०२
पुस अलंक्रत संचर पहरै, विवध भाँत आनंदत विहरै।
मधु-माधवि जहाँ उभय मनोहर, सदाँ संग सोई विहरत सुंदर ।।४०३
मंद-मंद मुसकात अमोलै, क्रीड़ा कंदुक करत किलोलै।
पाँन पुस्परस करत संग पति, रहत सदाँ जहाँ प्रीत रीत रति ।।४०४
जिह उपवन की दस-दस जोजन, सुमन विकास सुवास सुहावन।
काँमी पूरन करत काँमना, इह रितुराज सुभाव आँमना ।।४०५
गन गंधर्व जहाँ गुन गावत, वंसी मुरज विपंची वजावत।
ताँम्रसाल कै अग्र तहाँही, साल सुवर्नक[1] अधिक सुहाँही ।।४०६

---

११ अच्छी स्वच्छ पीतल।

नल,कूवड़ जिह सुत कौ नाँमा, धननिधाँन जाकौ ध्रुव-धाँमा ।
सेनापत मणीभद्र समाँना, पूरन भद्र सोऊ परवाँना ।।४३७

मनिकंवर मनिमाँन विमल मति, अरु मणिलावी मनीभूस अति ।
मनि कामुक धारक मति माना, समवरती नित हुकम समाँना ।।४३८

जिह सेवक फिर येते जाँनहु, पुन इनके इह नाँम पिछाँनहु ।
जिक्ष येक दूसरहु पुन्यजन, तीसर राजा लखहू ततछिन ।।४३९

गुह्य कचव थंम नाँम गिनावत, पंचमवट जिह जाँनहु पावत ।
सप्टम किन्नर नाँम सँपेखहु, लहि सप्तग कि पुरख ही लेखहु ।।४४०

अत उत्तँम जाँनहु ईसाँना, वास रुद्र कौ सुखद विधाँना ।
रत्नन रचत विवध रमनीका, तिह जाँनहु सव लोकन टीका ।।४४१

रुद्र जहाँ के स्वाँमो राजत, जटा-जूट मैं गंग विराजत ।
मुंड-माल सोहत गल माँही, सुभग काँन कुंडल सरसाँही ।।४४२

कंधर वाहु व्याल कर कंकन, अमित तेज विच तीनहु अंखन ।
चिता भस्म तर दुपीयर छाला, खंड पर्सु ओढ़न गज-खाला ।।४४३

अट्टहास कर गर्जत ऐसैं, जिह रव भद्द बलाहक जैसैं ।
रुद्राध्याय लिखे जे रुद्रन, जिनतैं सव जाँनहु संख्या जिन ।।४४४

कोऊ दस कर जुत सतहु सहँसा, पावन त्रसिर हु जाँन प्रसंसा ।
पावक चख जाँनहु परसंसा, आद रुद्र के ये सव अंसा ।।४४५

भूचर केऊ खेचर परभावा, सरसत- जिनके सहज सुभावा ।
कोटन रुद्र कोट रुद्राँनी, भद्रकालका आद भवाँनी ।।४४६

नाना सक्त सहेत निरेखहु, डाँमरी आद गनन-जुत देखहु ।
वीरभद्र गन सहित विसेका, विकटरूप तन विध-विध वेखा ।।४४७

परम रंम्य मणिदीप प्रकासा, विदसा दिसा सकल सुर-वासा ।
प्राचीनन ग्रंथन महि पाये, गनदेवन के नाँम गनाये ।।४४८

दोहा

कूँन दिसा वरनन करी, उपवन राज अगार ।
देवी जे मणिदीप की, वरनत सुकव विचार ।।४४९

रितु हेमंत जहाँ के राजा, सहित गमन सुख संग समाजा।
सहश्री और सरस्य सुहागन, भ्राजत उभय नार बड़भागन ।।४२२
अखल करत देवी उपवासा, वसत जहाँ जन सोई कर वासा।
विमल सात जोजन विसतरिन, साला दिव्य विराजत सोवृन ।।४२३
उपवन जहाँ कदंब अनुकूला, फूल अनूँप रूप वहु फूला।
धर कदंव मदरा की धारन, है जहाँ अंमृत-रूप हजारन ।।४२४
सिसर ऋतुराजा जहाँ सोहत, मिल तप श्री तपस्प मन-मोहत।
नाना भोग-विलास नवींना, परम गँनन-जुत सिद्ध प्रवीना ।।४२५
देवी अरथ दाँन जो देवै, सुभग-लोक जन ताकँह सेवै।
स्वर्न साल तैं अग्र सुहावन, पुस्पराग साला अत पावन ।।४२६
जोजन सप्त ऊद्ध सोई जानहु, सोइ कुंकम के वरन समाँनहु।
पुस्पराग रंग-भूँम पुनीता, सघन कुंजवन लता सहीता ।।४२७
पसु-पक्षी जल-कमल पिछाँनहु, जहाँ सव पुस्पराग-रंग जाँनहु।
सवही मंडप सुभग सरूपा, येक-येक तै इधक अनूपा ।।४२८
माया रचत वहुत वृह्ममंडा, अगनत संख्या जास अखंडा।
दिसापाल जावत दस-दिसहू, अग्या देवी लहत अनिसहू ।।४२९
इक-इक मूरत जाँनहु इनकी, जगतंवा हाजर है जिनकी।
पूरव-दिसा पुरी इक पावन, सतगुन अमरावती सुहावन ।।४३०
सतगुन गन अछ्छर जहाँ सोहै, ऐरापत हसती आरोहै।
विहरत जहाँ इंद्र कर वासा, प्रगट जहाँ मणीदीप प्रकासा ।।४३१
वेस्वाँनर दिस अग्न विराजै, स्वाहा स्वधा श्रीया संग साजै।
संजँमनी पुर तछ्छनँ सोहै, इहाँ समवरती वास उपोहै ।।४३२
संग धुर मोणा नार समाजै, द्वारपाल वैड्ध्यत दरवाजै।
लेखक चित्रगुप्त संग लीना, पाप-पुंन्य सव जाँन प्रवींना ।।४३३
चंड और दूसर माहाचंडा, इन दासन जुत रहत अखंडा।
वस नैरत दिस नैरत-वासा, प्रकृत अपुन सहित परकासा ।।४३४
जलकांतार पिछ्छम दिस जाँनहु, प्रकृत सहित जाहि पहिचाँनहु।
वायु कूँन मह वायु विराजत, श्रीय-गन प्रकृत सूहित समाजत ।।४३५
उत्तर अलकापुरी उदारा, नरवाँहन जँहाँ वास निआरा।
जिह विमाँन पुस्पक जग जाँनत, वनहु चेत्ररथ जाहि वखाँनत ।।४३६

सकल भूँम तिह रंग सुहावन, पछ्छि वृछ्छ वापी सर पावन ।
सवही मंदर दीप्त समाँना, वन-उपवन जहाँ विवध विधाना ।।४६४
विवध सक्तिगन तामहि विहरै, पट भूपन वैडूरज पहरै ।
पुज्जत जन जिह लोक पुनीता, ऊद्ध-वुद्ध उरजस्व अभीता ।।४६५
अक्षोहन दस-दस जिह आसत, सदा जुद्ध अभ्यासत सासत ।
घेख धरै दुष्टन मति धूरत, पच-पच चिव-चिघ रव पूरत ।।४६६
पर जहाँ करै सु रोष प्रचंडा, विनसै लाख-लाख वृहमंडा ।
इन सक्तन के साथ असंता, है देवी दुष्टन-गन हंता ।।४६७

दोहा

वैडूरज साला वनी, वसत सु देवी-वास ।,
सुनहु नाँम ताके सकल, करत सोई परकास ।।४६८

छंद हरिगीतका

विद्यात्था ह्री पुष्टी प्रग्यासिनी वाली विरीयजा नँदा प्रभा ।
पुंनपोषनी . नित अंवका रिवदा अजा ।।
नारायणी पुन कहत नारी महिष दाँनव मर्दनी ।
महारात्री सुंभ-निसुंभ मथनी कालरात्री कपर्दनी ।।४६९
कहि प्रभा पुन तिह भद्रकाली संकरार्ध सरीरनी ।
रुद्राँनी पालनी नाँम राजत विक्रती रु त्रसूलनी ।।
अहलादनी पुन इंदुखंडा सुनहु और सिखंडनी ।
कहीयै जु रुद्रा अरु कुहू महमाय दंडनी मंडनी ।।४७०
श्रीभगवती की सक्तीयाँ वृहमंड कोट वनायकै ।
कर कृपा फिर पालन करै सव रीत सुख सरसायकै ।।
कहु कर्मजोग प्रकोप करही संघरै छिन मै सही ।
जयकारनी सोई तारनी जगदारुनी दुष्टन दही ।।४७१
गोमेद साल विसाल आगै साल हीरक सोहनी ।
विसतार दस जोजन वनी मिल प्रभा उज्जिल मोहनी ।।
पुर द्वार वज्र कपाट त्याँ उतरंग आटन उन्नती ।
जंजीर अरर अनूप जाके क्रंत अद्भुत की किती ।।४७२

छंद द्वै-अक्षरी

पुस्पराग साला अंत पावन, सवही वरनन करी सुहावन।
साला पद्मराग अंत सुंदर, महाँप्रलंव सु सोहत मंदर ॥४५०
वर दस जोजन जिह विस्तारा, दिघ्घ विराजत जाकँह द्वारा।
दिव्य-कला चौसट जहाँ देवी, सदाँ आदमाया-पद-सेवी ॥४५१
दिव्य-रूप तन की दुति दरसत, सवही रत्न अलंकत सरसत।
प्रथक-प्रथक तिह ग्रेह पुनीता, आयुध वाँहन आद अमीता ॥४५२
प्रकृत अपुन-अपुन भरपूरी, राजत मणिदीपही विच रूरी।
पिंगलाक्षी अरु विसालाक्षी पुन, इनतै आद गनहु देवी अन ॥४५३
समध्री वृद्धी स्रधा सु स्वाहा, गनहु स्वधा अभिस्या अवगाहा।
माया और सकँध की माता, संग्या त्रदसेस्वरी सुग्याता ॥४५४
स्वयरूपा वहुरूपा सुनीयै, गायत्री सावत्री गनीयै।
वसुंधरा जाँनहु फिर विमला, अरुणी आरुणी सष्टी अमला ॥४५५
कमलासना लंवोष्टी प्रकृती, वहुरूपा माता स्थिती विकृती।
अग्रे भुवनपालका अंन्या, उर्धकेसी वहुसीर्ष अनंन्या ॥३५६
समुखी त्रमुखी अरु सती साँनहु, मर्दका वज्रका हंसी माँनहु।
रथरेखा ससीरेखा राजत, वृकोदरी भगवती विराजत ॥४५७
सुर आसुरहु विमर्दनी सोहत, मदनातुरा अनंगरत मोहत।
अनंग मंथ्यना जाँन उदारा, विस्वरूपासुर आद विचारा ॥४५८
अनंग मेखला नाँम उचारत, पुन अनंग कुसमा परचारत।
गँगन पवन वेगा सम गनीयै, सुचवंता वागीसी सुनीयै ॥४५९
क्षयंकरी संहृती अक्षोभा, संध्या सत्यवादनी सोभा।
देवमाता देवकी धात्रेई, अच्युत प्रीया जाँनीयै येही ॥४६०
इन सक्ती आधीन अनेका, उरजत इधक येक तै येका।
साँमग्री जुध-काज सँवाँरै, धंन्व वाँण अयुध कर धारै ॥४६१
वाँहन आद अनेक विधाँना, सवही उद्दत येक समाँना।
येक-येक मै कला अनेका, वल-पौरुष-जुत समर-विवेका ॥४६२
अरुनोपल साला कै उत्तर, साल वालवायज सुच चत्वर।
जोजन दस विसतरिन जाँनहु, पुन उतंग प्राकार प्रमाँनहु ॥४६३

उर्वरा मंजु निकुंज आगम लता सोहत लहलही।
अद्भूत कंत अनूप आकृत सबही लोक सुहावनी ।।४८०
संकेत देवी अत सुहावन वालवायज[1] मय बने।
बृहमंड की माता वहै घर अंगना राजत घने।।
ब्राह्मी कुमारी वैस्नवी माहेस्वरी जगमातहू।
इंद्राँनी चामुंडा वराही सुभगमति सरसातहू ।।४८१
लखीयै जु तिन मह महालछ्छी स्वच्छअंग सुहावनी।
जिह लोक के महि हर्म जाके पर्म कीरत पावनी।।
जिह द्वार आगै रहत हाजर देवि-वाँहिन देखीयै।
सुखपाल और विवाँन सिदन लाख-लाखन लेखीयै ।।४८२
वक्रांग सुस्कापांग वारण वृषभ गरुड़ विराजहीं।
पारंद्र आदक को पढै सब सस्त्र-अस्त्र समाजहीं।।
वैडूर्ज मणी उत्तर बनी मणि इन्द्र नीलम निर्मता।
प्राकार दस जोजन प्रमाँनहु साल की अत सुभगता ।।४८३
आरण्य उपवन भवन आदक कूप वापी सर किते।
सब इंद्रमणि नीलम सु धारे जुक्त अदभुत के जिते।।
पुन कमल सोरह पाँखरी कौ जहाँ निरमल जानीयै।
अस्थिर सुदर्शन चक्र आकृत पुंज्ज तेज प्रमानियै ।।४८४
पुन सदन खोड़स पंखुरी पै सक्तियाँ षोड़स सुनी।
अभिधा वखाँनत उदत उनकी गुन अनूपम जुत गनौ।।
विकरालि और करालि वरनत श्रुती मेवा श्रुमृंती।
श्रीसरस्वती दुर्गा श्रधा धुर नाम तिहि ऊखाधृती ।।४८५
लखहू जहाँ पुन उमाँ लक्षी कांति मेवामति किती।
सेनान देवी-सक्तियाँ जग-रक्षकारक है जिती।।
कोउ आततताई काम[2] करकै वेद-मग विहीन ह्वै।
कल मंड दुष्ट विहंड करनी पिंड पौरुख पींन ह्वै ।।४८६
जिनकौ पराक्रम जानकैं सतसेशहू वरनण सकै।
वरजोर क्रुद्ध विरुद्ध तै अविनाम सुनत हीं औद्र कै।।

---

१ पन्ना। २ मू० प्र० कार्म।

महि मध्य राजत वज्रमय गृह चौहटा तैसी गली।
तरु आलबाल विचाल त्याँ नद-नाल जीवन की नली ।।
वहु कूँप वापी वाटका सर घाटका वहु संजुरे।
उपमाँ न वरनी जाय उनकी अत सुहावन उज्जरे ।।४७३
कुटहारका कमनीय जहाँ कुटअंबका हित आतुरी।
जोई लक्ष लक्षन दासीयन-जुत चित्त-चंचल चातुरी ।।
गुन रूप जोवन गर्वता मदमत्त सुंदर मोहनी।
नेपथ्थ अंबर झीन निर्मत सुभग संचर सोहनी ।।४७४
स्रंगार रूप अनूँप सरसत कसत कट हट किंकनी।
पदकमल साझ विराज नूपर ध्वनत सिंजतहू ध्वनी ।।
कोऊ मुकर वीणा लीयैं करमैं रोम गुच्छ विराजही।
कोऊ तालवृंतहु छत्र कंकत रत्न भूषत राजही ।।४७५
श्रीखंड रंजन अंग मंजन लीयैं अंजन हू लली।
कोऊ चंद्रकेसर यक्षकर्दम कर प्रसूनन की कली ।।
सिंदूर औ कुरुविंद सिंदल सम चतुस्म सुगंधहू।
तांवूल संपुट मंजुषा तहाँ सेव देवी समंधहू ।।४७६
कोऊ पद पलोटत कमल कर कोऊ अंग राग करावही।
कोऊ स्नाँन निरवेसन करावत समालंभन साजही ।।
कुच पत्रवल्ली रचत केसर सुमन-माल सु धारही।
गुन रूप रंग उमंग गर्बत अंतरंग उदारही ।।४७७
तिह नाम धेय जु कहत तातै तिही जाँनहु ताहि तैं।
जगतंवका की क्रपा जिह पर जक्त पुज्जत जाहि तैं ।।
रमनीय वेस अनंगरूपा अनँगमदना हू अली।
मदनातुरा हू अनँगमेखल भुवन-पालक चिव भली ।।४७८
सरवस्व सिसरा मदनविदना भुवनवेगा भ्राजही।
पुन पेम नेम अखंड पूरत सुखद सेवा सझही ।।
इह वज्रसाल विसाल उत्तरसाल वेडूरज सही।
विसतार दस जोजन विराजत दिघ्घ जाके द्वारही ।।४७९
कासार मनिमय दीर्घका उदपाँन जाँन निपाँनहू।
विथुरी पँनी महि वालुका सव आलवाल समाँनहू ।।

जहाँ दिस प्रतीची आत्मयौंनी जुक्त रति सोइ जानियें।
धनु पास अंकुस वांणधारन पर्म-रूप पिछानियें।।
शृँगार खोड़स धरैं संचर रहै सो सासनरता।
जग माझ व्यापत कला जाकी नार-नर तन निर्मता।।४९५

ईसांन प्रदिक गणेश आलय पुष्टि साथ प्रभाव ज्यां।
कुसपास धारन कियै करमैं दहत विघ्नन दाव ज्यां।।
जेतक विभूती जाहिकी जहाँ रहत हाजर जाहतैं।
गननाथ साथ तहीं गनौ तिहि जक्त पूजत जाहितें।।४९६

माहेस्वरी भगवती माता सकल सुर सेवत सदा।
सोइ लोक कौं वरनन सकैं, समरथ्थ सेश न सारदा।।
मै मंदमति कहा कहूँ महिमा श्रवन जैसी अनुसरी।
प्राचींन ग्रंथन देख कैं पुन कछुक इहाँ वरनन करी।।४९७

इहि साल हूँत विसाल उत्तर प्रगट साल प्रवालका।
वन ताल तरु 'जहाँ आलवाल विचाल लालहु वालका।।
प्राकार सत जोजन प्रमानहु वहुत मन्दिर जहाँ वनै।
रचना अनूपम जाल रंधर सरल सुन्दर सोहनै।।४९८

तिही मद्ध पंचहुभूत की सोई रहत पंचहु स्वामनी।
तन चमक भूषन-वसन की चिव दमक मानहु दामनी।।
आख्या वखानत हूँ इहाँ रक्ताहु आद करालका।
गगनाह लेखा महोचुस्मा पर्स जग-गति पालका।।४९९

पुन पंचभूत सुभाव प्रगटत जहा तैं सह जानीयें।
सोई पास अंकुस लियै सस्त्रन महाँमाया मानीयें।।
गजगाँमनी मद-रूप गर्वत जुत प्रभा नवजोवना।
वँह लोक-वीच विलोकियै वहु सक्तियाँ संख्या विना।।५००

तहाँ हैंम कंदल साल त्याँ नवरत्न साला निर्मही।
अत जानियै विस्तार वाकौ जुक्त अदभुत की जहीं।।
वर अंवका की महाँविद्या तहाँ है अवतारते।
महाँमंत्र समकक कोट मिल ध्रव जहाँ संचर धारते।।५०१

प्राकार मुद्रा तिंहि परै जोइ जाँनियै दस जोजना।
द्रढ अष्ट मंत्रणि रहत देवी खवर स्रष्टहु खोजना ।।४८७
वृहमंड जेतक विस्तरे जिह बीच लोगन नेजनै।
जिह हृदय की मति जाँननी सव पाप-पुंन्य सनै-सनै ।।
सोइ नीत रीत प्रणीत साखी-रूप सवकी स्वामनी।
हित रहत देवी-निकट हाजर द्रगन लख दरसावनी ।।४८८
कहीयै जु संज्ञा अनँग कुसमा अनँग-कुसमा आतुरी।
पुन अनँग-मदना तुरा पुज्जत चित्र लीनै चातुरी ।।
मन मुदित देवी अनँग-मदना गँगँनवेगा हू गनौ।
पुन गगनरेखा भुवनपाला सुभग ससिरेखा सुनौ ।।४८९
सव पास अंकुस आद सस्त्रन कियैं धारन कर्ग में।
सुभ रूप गुन जुत सुन्दरी विख्यात देवी-वर्ग में ।।
प्राकार मुक्ता मुनि महाँ मर्कत मनमई सोई।
सांत जास विसाल सोभा सुभग दस जोजन सई ।।४९०
महाँ रम्य है खट कौंन जामहि विपलदेवं विराजहीं।
सुनियै जु पूरव कौंन संज्ञा सहित सकल समाजहीं ।।
गायत्रिदेवी वेदगर्भ सु वेद-भेद विसेसहू।
सुन सास्त्र औरहु सुमृती व्याहूति मूरत वेसहू ।।४९१
अवतार अंसी जिते इनके जहाँ हाजर जानियै।
सोइ अर्थवाद करैं सदाँ गायत्रि गुन जोई गानियै ।।
महाँविष्णु औ सावित्री-मूरत बसत गैरत बास मैं।
कर संख चक्र गदा कियैं पुन कमल सहित प्रकास मैं ।।४९२
अवतार कूरम मच्छ आदक इहाँ तैं सव अवसरै।
मनिदीप जो निज-लोक तामहि सेव देवी अनुसरै ।।
महाँरुद्र के जे भेद भानत दक्षनासादिकन मैं।
महरुद्र औ सरस्वती-मूरत कहत वायव कौंन मैं ।।४९३
अरु भेद गवरी के इते चवसट्ट आगम जे चितै।
सब मूलभूतैं समान संचर वहाँ हाजर हैं इतै ।।
पुन महालछ्छी श्रीद पावक कूण मैं वासहु करैं।
मनि-गन टिपारी निध महाँ भल रत्न कुंभ लियैं भरैं ।।४९४

जहाँ चतुर्भवन जुदे-जुदे शृंगार-मंडप सोभही।
महामाय की पुन महामंडप ज्ञानमंडप दुति ग्रही ।।५०८
एकांत मंडप सुभग अत कछु ओपमा जात न कहै।
सोगंध गंध पिसाचका गति गंध वह चित कौं गहै ।।
दुति उदंत जाकी दसहु-दिस किधु कोट सूरज की कला।
किधु सरद-चंद प्रकास किरनन चमक कोटक चंचला ।।५०९
वन कासमीर सुकंचका वन मदत्रका वन मानीयै।
सारंगमय मदगंध-संजुत जहाँ विचरत जानियै ।।
वन महापद्म विसाल त्याँ जुत आलवाल नरे जुरे।
सोपाँन रत्न निपाँन सुन्दर भल सुधारस सौं भरे ।।५१०
मदमत्त गुंजत भ्रमर मिल कल हंस कुंजत जँह किते।
वह राजहंस विराजही जुत मोर चातक खग जिते ।।
मिल अमल प्रगटत पर्म पर्मल समिल लोक सुहावही।
सुख सुसन सीत सुगंधहू दस-दिसन मैं दरसावही ।।५११
श्रीराज राजेस्वरी कौ शृंगार-मंडप सोइ सुनौ।
दुत अमित जाकी देखियै सरसात विद्रुत सौं गुनौ ।।
वर वीच सिंहासन विराज मृदंग वाजत मदत्रकी।
वरखात वैनन मैं सुधा हरपात नैनन हल्लकी ।।५१२
शृंगार सज-सज सुन्दरी महमाय मंडप मैं मिलै।
सुरसप्त त्याँ सुरग्राँम सौं गहि मुर्छना गावत गलै ।।
हइत्रीस आदक रास राचत तहाँ नाचत ताल दै।
द्रुत दमक विद्रुत-सी दिपै छित छिनक चक्रत चाल दै ।।५१३
उनमत्त[1] नवरस भाव हाव्रन वृती च्यार विधान मैं।
जिही रूप कहत जुदे-जुदे इहि अंवका आख्याँन मैं ।।
शृंगार करुणा हास सरसत कैसकी वृत्ती कहै।
रस वीर अद्भुत हास-रस वृति भारथी जानहु वहै ।।५१४
अदभूत समरस वीर उन्नत सातुकी वृत्ती सही।
भय रौद्र जहाँ वीभत्स भासत आरभटी वृत्ती वही ।।

१ मू. प्र. उनपत।

दोहा

दिग देवी अरु देवता, विदसहु किय वाख्यान ।
भवनहु जिन भवनेस्वरी[1], अव वरनत आख्याँन ॥५०२

छंद

नवरत्न साला अग्र निर्मत साल चिंतामणि सुनौ ।
महाँमाय कौ जहाँ महामन्दिर गढत सुन्दर के गनौ ॥
प्राकार अचला वलक पूरत क्षौम व्यौम अरे खरे ।
कपि सीर्ष-सीर्ष अनूप आकत जुक्त अद्‌भुत संजुरे ॥५०३
निस्सरत्न गोपुर प्रभा निरखत अक्ष नाहि अघावही ।
भुवनेस्वरी निज भवन भ्राजत प्रगट राजत पावही ॥
जुत रत्न रचत[2] जुदे-जुदे पुन पन्न की अनगन प्रभा ।
स्वच्छन्द द्वार विलंद साखी सुख अनंद जहा सभा ॥५०४
सम चतुर साला चंद्र साला अत विसाला नभ अरी ।
उतरंग सोभा त्याँ उदंवर जाल पाली संजुरी ॥
कमनीय पाट कपाट केत आट थाटन उदत्रही ।
तिहि मद्धनीय विनर्द तँह अवनीय सोह अमुदत्रही ॥५०५
सव थंभ खुंभी नागदंत सु सद्म छंद चिव सोहनी ।
सोपाँन जान समान सुन्दर रुचर वहु अधरोहनी ॥
भंडार गरभा गारभर जहाँ संथला प्रतिहार जे ।
नव निद्ध-रिद्ध समृद्ध निर्मत अद्ध-उद्ध अपार जे ॥५०६
अभराम उद्दत धाम अनगन कोट विद्रत की कला ।
जगमगत आभा सूर सिस जिम जाँन रस्मी प्रतिज्वला ॥
महामाय मंडत महाँमणी ग्रह सम सतंभ सहंस ज्याँ ।
मन रत्न भवन असंख निर्मत सवहु कौ अवतंस ज्याँ ॥५०७
नाना वितानन-जुक्त लालित मिली वन्दन-मालका ।
कर चित्र अंजलका किनी परकासमय पंचालका ॥

---

१ मू. प्र. भवनेश्वरी । २ मू. प्र. रचत्न ।

अत भार सरभर उद्धग्राकृत जुग नितंवन चिव जही।
निर्मल नदी-तट सुभग निस्तुल मद-सी खरी थल मही ॥५२२
कट केहरी नीवी कुसी भुवन मँत चलनी भार सौं।
वर किंकनी तापर वनी झुक रही रव झनकार सौं॥
चिव उदर सोहत पत्र चल दल नाभि ऊपर निर्मई।
सर नदी भँवर करै न समता मनहु श्रामर श्राजई ॥५२३
रचना अनूपम रोमराजी रेख ऊरध राजही।
समवेल रस शृंगार की भुव स्वर्न पै मन श्राजही॥
सुख रूप सोभा संजुरी वर विमल त्रवली चिव वनी।
रुच रंग मंगल मंग राचत तोय गंग तरंगनी ॥५२४
कुच्छ पीन माँनहु कलस कंचन सुभग ऊपर स्याँमता।
दुजराज मै मन देखियै लघु लक्ष-जुत लावंनता॥
ध्रुव कुचन कुंकुम गंध्ध घूली पत्र वदत्री उन्ननी।
लपटी मनहु गिर हैंम लालन सुभलता संजीवनी ॥५२५
अत झींन अंसुक ऊद्धआवृत ओपियत कंचुक अटी।
वन समर विजई शिंभु बैठे कियै छाया पट कुटी॥
सत पत्र सोहत पंच साखा साँख पाँन सुहावनी।
कोमल अनूपम रूप किशलय कर्ज हीरक की कनी ॥५२६
मनिमई सुन्दर मुंदरी गप गोल गुन मानक गची।
तल हाथ लालित लाल निम रमनीय मनु महदी रची॥
मनिवंध गजरा गुलक मरणीमय वलय झलक विराजही।
कमनीय वीच कलांचका लख सूर ससि वसु लाजही ॥५२७
दमकत झलाझल दीप्त के विहू वाँह वजुला वंधकै।
चमकत चलाचल चंचला सरसात जलधर संधकै॥
विहुँ वाँह वगुला वंध की गुल्लाल मुक्ता गुंज्जकी।
पुन पतिन वेला पंसलगु वहु सुकी वहुला झुमकी ॥५२८
लखियै जु अंवुज लोचनी की कंवु कंठ कपोतसी।
लावंन्यग्रेह ललंतका जगमगत जाहर जोतसी॥
मुक्तान मुक्ता मीन मिली उर इंद्र चंद्र अरोहकैं।
दुति जीत लीनी दाँमनी मनुमाँय उड़गन मोहकैं ॥५२९

देवी प्रशंसत देबियाँ गुन गायकैं मधुरी गिरा।
कलकंठ लाजत कंठहू प्रति धुनत सुनत पपीहरा ।।५१५
महामाय कौ पुन महामंडप जाहि बीच विराजकैं।
जहाँ जक्त के बहु भक्तजन कौ नियत मुक्ति निवाजकैं ।।
जगतंवका कौ जाँनियै तहाँ ज्ञाँनमंडप तीसरौ।
उपदेस ग्यान करै वहाँ भक्ति सु इंमृतरस भरौ ।।५१६
थित जहाँ मंडप है चतुर्धाम मंच इक मणि निर्मता।
पुर च्यार विरमा विष्णु ईस्वर पुन पुरंदर पर्मता ।।
सुख बल कथान कहै सदा शिव वही मंच अरोहनी।
ऊमिया अजा सोई ईस्वरी माहेस्वरी जगमोहनी ।।५१७
इहाँ आपकी लीला अरथ द्वै भाग तन दरसात है।
निर्मंत महेस्वर नाम सौ वर विस्व मैं बिख्यात है ।।
कंदर्प कोटक दर्प कौं मति रूप मर्दन विव मिली।
सुर नयन पंकज पंचमुख की अमित सोभा उज्जली ।।५१८
कर-कमल हरिण अभीत की वर फरस फिर आयुध वनै।
मन गनन भूषन रतन मिल तन चंद्र-मनि आभा तनै ।।
परकास कोटक प्रभाकर ससि कोट सोहत सीलता।
वामांग श्रीदेवी बिराजत नित्त जग की निर्मता ।।५१९
पद विमल कमल समानहू प्रद मूल लाली पेखियै।
उदयात तरुन अरुनतामय सरन वा मन लेखियै ।।
कमनीय चंपक की कली पद अंगुली जाकी प्रभा।
दुति नखन की इम देखियै सुख सदन उड़गन की सभा ।।५२०
विछिया सुअनव सुघट्ट वर ध्वन नखदन सिंजत धुनी।
कल हंस वोलत पुंज्ज कुंज्जत गुंज्ज मैं जु सुहावनी ।।
साँमाँन धर्म-निदाँन जुग सोइ पूर्न रूप प्रचंडका।
नीकी अनंग निखंग तैं मति मोहनी गोविंदका ।।५२१
नंथा अरोम अनूप जुग ग्रह मानकै खंभागना।
उपमा न रंभा लहै यातैं लग्यौ सीस अँदोलना ।।

भर करन - भूसन भार सौं रस कूप का जुग रंवरा ।
मधुदीप की जग सीप मंडत कर्न सुसकति किंदरा ।।५३७
ताटंक गोल मयंक आक्रत काम सिदन चक्रवा ।
झलमलत लोल कपोल झाँई नटत कर नदी नक्रवा ।।
सिर उदत आक्रत अमल श्रीफल केश-रचना परकरी ।
ललचाय तमके पटल लपेट घरकै मनु हिमगिरी ।।५३८
मणिजटित सीस किरीट मंडित दुति अखंडित देखियै ।
कर लियै परकर कल्प कौं पूर्वाद्रि ज्यौं रवि पेखियै ।।
इद्रायतन रक्तांक आभा किधू पक्कन किंदुरी ।
जरतार सारी सुही जाकी मिली कंत अमंदरी ।।५३९
मग चाल देख मरालहू नद - नाल तालन निव्वहै ।
गजराजहू मन लाज गहि रज सीस पै झारत रहै ।।
मदमत्त गुंजत माल मधुकर प्रगट परमल पिंड सौं ।
गुलमाल ताक गुलाव सौं सतगुनी सोइ श्रीमंड सौं ।।५४०
सुभ स्वच्छ लच्छ महेस्वरी सुख सांत-रूपा स्वामनी ।
दीपक-सिखा-सी देखियै श्रृंगाररस सरसावनी ।।
तन निष्ट सिष्ट वलिष्ट त्यौं मद महो दुष्टन मोचनी ।
जगदंवका जग-जीव जननी अंवका त्रय - लोचनी ।।५४१
वर पास अंकुस चिव विसाला अस्त्र-सस्त्र अभीत कौं ।
किय करन धारन लियै आयुध कोमलांगी भरन दानव भीत कौं ।।
सहचरी दासी संगमैं सुंदर्यअंग सँवारकैं ।
गुन प्रभारंग अनंग गर्वत शेव देव सुधारकैं ।।५४२
सुभ ग्यॉनसक्ती क्रियासक्ती सक्ति इक्षा जुत सही ।
कीरती लज्या क्षमा कांती तुष्टी-पुष्टी नित तही ।।
सुमृती मेवा लक्ष्मी पुनि अमितवुद्धि अरु दया ।
स्तुति करत देवी सोई सदा महमाय की संजुत मया ।।५४३
अपराजता अरु जया विजया मंगला दुर्गवी महा ।
नित्या विलासनी मंगला नव जॉन अजिता जुत जहा ।।
अवदात मति देवी अवीरा पीठ सक्ति परावका ।
कर जोर नित शेवा करैं आराध विध-विध अंवका ।।५४४

पुन पीठ रंभा पत्र-सी कलधोत पाटी काम की।
पति चित्त सेज्या पौढवे की हेत पूरन हाँम की ॥
चिब धाँम ज्या अभिरांम चिबुक कुसुम अंवुज की कली।
मकरंद पाँन सुगंध मोहित आन वैठ्यौ मिल अली ॥५३०
उपमीय कहुँ अधुरान की उपमान जान असाधकै।
जिहि कारनै तन गही जड़ता हैंम कंदल हारकै ॥
द्रुति वज्रकन-सम दसन दमकत मिली चित्र मुक्तावली।
कली कुंद कैसी भली आकृत किधू दाड़म की कली ॥५३१
चित्र चंद्र कैसी चंद्रका मुख मंद-हासी मोहनी।
अरविंद आनदकंद तै सतगुनी सोभा सोंहनी ॥
मुख वास हास विलास सौं सहुलास बात बसंतसी।
सुखनिलय मानहु कंज सरवर मलयचल महकंतसी ॥५३२
मुख राग लाली अत मनोहर नागबल्ली पर्नता।
माहेस्वरी माहेस कै अनुराग की जनु अर्नता ॥
रसना अनूपम रूप की बाँनी उचारत बीन की।
सारंग कोकल मोर सम झाँई लखै सुर झींन की ॥५३३
वर रक्त तुंड विकूनका विचरही लटकत बालका।
मुख रक्त तुंड गही मनौ मनि-मुक्त की लघु मालका ॥
कहा कहै गोल कपोल की दरसै न उपमा दैन की।
सोहत मधुष्टल कुसम आकृत मनु मुकर है दोइ मैन की ॥५३४
रुच कंज गंजन शिभु रंजन द्रगन मैं अंजन दियै।
खग जान खंजन उभय खेलत काँमजल मंजन कियै ॥
भ्रकुटी कमाँनहु नमन भ्राजत भली द्रुति भ्रूँहावली।
चख खंजकै भ्रम होय चक्रत भ्रमत मनु भ्रमरावली ॥५३५
आनन्द आलय भाल उन्नत बनी बंदन विंदुपै।
तज तरुन अरुनहु अष्टमी तिथि आय वैठ्यौ इंदु पै ॥
झुक चलक मुख रुख स्याँम झलकत अलक द्रुति दुहु ओर सौं।
तमराज ससि बंधन तकैं सिंगार-रस की डोर सौं ॥५३६
मुख सुन्दरी को सोह मंदर कमल आँनद कंद ज्याँ।
निर्मल निसाका निरखियै चिब जान राका चंद ज्याँ ॥

श्रीबेदव्यास विचारकैं सब कही राजा कौं कथा।
नारांयनाय सुनाय नारद जगत- हित भाखी जथा।।५५२
कुरविंद्र सौं पुन व्यास कींनौ इही प्रस्न उचारकै।
तेरे पिता कौं भूप तुम अवगाह चहत उधारकै।।
गायत्रीदेवी मंत्र गृहियैं देतहू सुखदायकैं।
क्रतु कीजीयै सुख कारनैं पुन रात नव हित पायकैं।।५५३
आसोज मास उजाल आयो पक्ष परवा पायकै।
धोम्याद गुरु बुलवाय कैं धुर विहत पाठ बचायकै।।
जिग करचौ फिर तिहि जायगा पूजा कुमारी पुन करी।
दै वटुक भोजन पुन दुजनमा और दखना अनुसरी।।५५४
अवसेख दीन अनाथ कौं पुन दाँन वहु सुख पायकै।
सुरभी सवछ्छा धाँन द्रव सव सुर्न रत्न सुभायकै।।
निश्चित होय नरेसुरा जनमेज करकै ज्याग कौं।
उपजाय अत आनन्दकौं उर अंबका अनुराग कौं।।५५५
भूपती इंद्रक भौंनमै बैठे सभा विस्तारकैं।
नभ पंथ आये मुनी नारद नृपति ढिग निस्तारकैं।।
किय मुनी आदर नमसक्रत कर स्तुति राजा कर सही।
मुनिराज नारद भूप सौं मिल कथा सुरपुर की कही।।५५६
पितु रावेर सुरपुर पधारे मोक्ष हुय विपदा मिटी।
क्रतु अंवका हित करन सौं पुन वात नव इंह परगटी।।
सुन वात राजा सभासद सव पाय आनद पग परे।
मुनिराजहू आसीस दै मिल उद्ध मारग उद्धरे।।५५७
श्री अंवका की सेव कौं राजा लयौ फल सुखरता।
पद-कमल देवी भग्ति उपजी कथा देवी रुच क्रता।।
श्रंवनन कराय सिधायगे श्री व्यास निज सुसथानकौं।
धौम्राद आदक दुज धुरंधर मिलेऊ पूजा मानकौं।।५५८

दोहा

भाषा देवीभागवत, सार लयौ कछु सोध।
चित सुध किय देवीचरित, बुद्ध सुकव हित बोध।।५५९

अपसव्य सव्य परे अरे निध पद्म शंख निहारियै।
नवरत्न सप्तक धातु निर्मत वहै निर्मल वारियैं॥
पीयूष जुत पाथोद मै मणिदीप आवृत मह मिली।
जिह व्यास येक सहस्र-जोजन भवन देवी चित भली॥५४५
माहेस्वरी माहेसकै वाँमांग संग विराजही।
परमेस्वरी परभाव सौं सरबेसता पद साझही॥
दध दुग्ध घ्रत रस दाय दाडमी आम्ररस मधु ईखकै।
जेतक रसाला वस्तु जाकी वापि कूँप विसेखकै॥५४६
नर-नार खग म्रग आद निर्जर भक्त सक्ती भाव सौं।
थिर वसत आप अखंड थाँनक पुन्य कै परभाव सौं॥
लय प्रलय मैं सोइ इहाँ नाहिन सकुर जावत तिही समैं।
आधार नाहिन कोय वाकैं निराधारहि गगन मैं॥५४७
दिन छेह होय अद्रष्ट दिनकर कमल ज्याँ सकुचात मै।
फिर देखकै तिम कमल प्रफुलत प्रभा लख परभात मै॥
जिहि लोक की गति इहीं जानहु स्रष्ट समय सुभाव सौं।
विस्तार वेला होय विस्तर पूर्नता परभाव सौं॥५४८
जहाँ रोग-सोग न जीर्नता उद्वेग नाहिन येकहू।
नर-नार सब आनन्द निबहत वस्तु-भोग विसेखहू॥
पुन मुक्ति चार प्रकार की जिहि जुक्त जाँनहु जीव जे।
राजेस्वरी के राजमें सरसात सुखन सदीव जे॥५४९
सब महाँविद्या मंत्र सप्तक कोट अस्तुत जिहि करै।
द्रगपाल देवी देवता वृहमंड जेतक विसतरै॥
माहेस्वरी अग्या मही प्रग्या विचार प्रभाव सौं।
उतपत्ति पालन प्रलय आदक सबहि सह सुभाव सौं॥५५०
कोटक निसापति तारका सविता न समता कर सकै।
चिव चित्त भाँनहु चंचला परकास पावत जिह पखै॥
सरवग्यता ऐस्वरीय संजुत सर्वउत्तँम गुन सही।
श्रृंगार करुणा दया स्रधा जानियै हाजर जही॥५५१
मुख लोक सिमरन मात्र तैं सब पाप जाय संतापहू।
पीयूख पाँन समाँन प्रद जगतंबका कौ जाँनहू॥

जोधपुरपती जाहिर जगत पुर नरसिंहगढ़ अवपती।
जिहि कृपा बुद्ध सुधरचौ जनम थिर पालन करता थिती ।।५६४

ग्रंथ लिखनेवाले की अर्ज [एवं] पता

दोहा

इंग्रेजी झाँसी जिला, गुड़ा गाँम कौ नाम।
जन्मभूमिका जाँनियै, वँह कदीम[1] सुखधाँम ।।५६५
नाँगनाथ परवत तहाँ, नदी दसाँन पुनीत।
झारखंड मन्दिर तहाँ, सिय रघुवीर सहीत ।।५६६
वृंसिघदेव के वंस के, क्षत्रि बुंदेला वास।
तिन्ह के मंत्री सदाँके, मम वुजुर्ग यह खास ।।५६७
कायस्थस्व श्रीवास्थस्व, अजा विहारीलाल।
पिता नाम मम जानियैं, लाला मौजीलाल ।।५६८
पुत्र सुमित्रा नामकें, वड़े भ्रात है नाँम।
परमाँनंद अनंदमय, राख्यौ मम गुरुनाम ।।५६९
सुद्ध प्रती देखी लिखत, लिख नहि सका विचार।
भुल-चूक सब सोधकें, दीजे सुजन सुधार ।।५७०

इति श्रीदेवीचरित्र ग्रंथ द्वादस स्कंध संपूर्ण समाप्तः

जदीद मुकाम[2]

हस्ताक्षर लाला परमाँनंद कायस्थ श्रीवास्थस्व हलका पटवारा हाल मौजा भाटखेड़ी परगनै तहसील छापीहेड़ा रियासत नरसिंहगढ़।

सी. आई. मालवा

---

१ परम्परागत। २ वर्त्तमान पता।

कवित्त छप्पय

सौनकाद सौं सूत कथा इंहि वरनन किन्नी।
व्यास कही कुरुविंद्र भक्ति देवी रस भिन्नी॥
पौढ रहे वट पाँन विष्णु प्रलयाजल वेला।
आधा जग ईश्वरी अचेतन जान अकेला॥
भागवत दयौ अर्धश्लोक भज मुदत रहे सकुचे न मन।
सोइ पुराँन पुन विस्तरचौ सुन्यौ पितामह सौं सुरन ॥५६०
सोइ पुराँन कौ सार व्यास सुकदेव बचायौ।
वरन्यौ तिहीं पदवंद रुचर सुर वाँनि रचायौ॥
पढै गुनै जुत प्रीत-भाव देवी-उर-भ्यासै।
जोत-रूप जग-जननि परम हिय ज्ञाँन प्रकासै॥
मानवी होय जीवन मुकत आँनँद सत्त चित ऊपजै।
कवि बुद्ध और जानै न कछु भगवंती-चरनन भजै ॥५६१
माधवसिंह महीप अमेठीपती उदारा।
नीलकंठ पंडित निहार टीका निस्तारा॥
वह टीका वारतक महेस्वरदत्त मिलाही।
मुंशी नवलकिशोर जाय मुद्रत किय जाही॥
जयपुर-नरेस श्रीराँम जँह प्रगट हेत कूरमपती।
भुव भारत-खंड इंहि भागवत छाप करी जाहिर छती ॥५६२
सिडायच बुधसिंह बरन चारनकुल कविवर।
व्यास कही मति विमल मनन किय कथा मनोहर॥
छन्दवन्द चित चाह करचौ देवी-जस-कारन।
भक्त-जुत भावना उभय निजलोक उधारन॥
उगनीस संमत पचपन अवद चित सुध कहि देवीचरित।
कायस्थ वेद श्रीवास्थस्व परमाँनन्द लिखी परत ॥५६३
अन्न-जल कौ उपकार उभय राजन कवि ऊपर।
सुभचिंतकपन सदाँ धारना राखत धूपर॥
धंन्य देस राजाधिराज सिरदार सिरोमन।
मालव देस महीप उदित आभा तन अरजुन॥

फब चमर झाट फीलां झंडा फरहरै,
कमध किण ऊपरा दाट[1] वालण करै ॥१

आछजै वाढ खुरसांण तरवारियां,
आखड़ा[2] भीच[3] सिलहां करै त्यारियां।
सोभ पावै भिड़ज[4] पाखरां-सारियां[5],
आज रिण-वावळा[6] कठी असवारियां ॥२

सजो-सज वलो-वल[7] नकीवां सदो-सद,
सिधुओं जांगड़ा[8] हुवै सवदो-सवद।
वजै तासा तवल झूंझरा वदो-वद,
हटी देवा[9] कठी हुवै सज हदो-हद ॥३

जकड़ियां कड़ा धज[10] जड़ाऊ जीण-सा,
नौवती[11] फिरै मृग मन पवन मीन-सा।
विळकुळे[12] सिभ नारद लियां वीण-सा,
देख वळ सवळ दळ हुवै खळ दीन-सा ॥४

टांमका[13] ध्रीह[14] वज लाग तोपों टलां,
भुजां लज साहियां[15] भीच कडछै भलां।
मेलिया चकारा घीट आपह मला,
झोकसी[16] कठी धज आज ऊंची झलां ॥५

तोर सुभटां घसल देख पमगां-तणी[17],
घर गिरंद तजै अर संक मानै घणी।
धारियां खत्रीवट दूठ दूदां-धणी[18],
आजरी क्रोध-झल[19] केण सिर ऊफणी ॥६

जोध आपायता दिपै जड़ियां जरद[20],
गमागम साकुरां खुरां उडै गरद।

---

१ चढ़ाई। २ युद्धोद्यत। ३ वीर। ४ घोड़े। ५ पाखरों से सज्जित। ६ युद्धोन्मत्त। ७ निरन्तर। ८ दमामी। ९ देवीसिंहजी। १० घोड़ा। ११ नगारों से सुसज्जित घोड़े। १२ उत्साहित होते हैं। १३ नगारा। १४ चोट। १५ लिये हुए। १६ चढ़ाना १७ घोड़ों की। १८ दूदावत (मेड़तिया राजपूतों का स्वामी)। १९ ज्वाला (क्रोधाग्नि)। २० केशरिया वस्त्र (युद्ध में क्षत्री धारण करते हैं)।

दो शब्द

मध्यप्रदेश में पंवारवंशीय उमट-क्षत्रियों का राज्य रहा है। इसकी स्थापना दीवान फरसरामजी ने की थी जिन्हें श्री रघुनाथजी का इष्ट था, अतः वे श्री रघुनाथजी को ही राजा मानते थे एवं अपने को उनका दीवान सम्बोधित करते थे। इनकी राजधानी कुछ समय तक पाटन में भी रही थी। नरसिंहगढ़ के इस राजवंश में कई राजा वीर एवं उदारमना हुए जो कवियों और विद्वानों के आश्रयदाता भी थे।

मेरे पूर्वज इसी गौरवशाली वंश के कृपापात्र एवं राज्यकवि रहते आये हैं। हमारे परिवार को इस राज्य के प्रथम श्रेणी के उमराव जागीरदार का कुरब (सम्मान) प्राप्त है। जिस प्रकार क्षत्रियों, सामन्तों एवं चारणों का सनातन सम्बन्ध रहा है, नरसिंहगढ़ के राजाओं की नौ पीढ़ियों की हमारे परिवार की सात पीढ़ियाँ निरन्तर कृपापात्र रही हैं।

हमारे वंश के कवियों ने अपने समकालीन नरेशों की वीरता, उदारता एवं शालीनता की प्रशस्ति में काव्य-रचना की एवं दान, मान, सम्मान से प्रतिष्ठा प्राप्त की।

दीवान राजा अचलसिंहजी की मेरे भाऊजी पर विशेष कृपा रही। मेरे पितामह बुद्धसिंहजी राजा हनवंतसिंहजी के कृपाभाजन होने के साथ-साथ उनके प्रमुख परामर्शदाता भी रहे, जिसका परिचय सुधी पाठकों को इस सङ्कलन की रचनाओं से हो सकेगा। बुद्धसिंहजी के विद्यागुरु श्री दुलेरामजी सांढायच थे जो कि मसूदा के राव श्री देवीसिंहजी के कृपापात्र तथा डिंगल एवं पिङ्गल भाषा के विशिष्ट विद्वान्-कवि थे। पाठकों के रसास्वादनार्थ इनकी कविता की बानगी (नमूना) निम्न रूप में प्रस्तुत की जा रही है जो कि मसूदा के राव देवीसिंह की वीरता की प्रशस्ति का परिचय कराती है—

गीत सावझड़ो

थिये भांमठा[1] थाट वांका गिरंद थरहरै,
घणी जस थाट डाका त्रंवक[2] घरहरै।

---

१ इकट्ठा। २ नक्कारों की गरज।

जो अब वृद्धावस्था के कारण अपनी जागीर के गांव में ही निवास करते हैं। इनके पुत्र व मेरे भतीजे श्री दौलतसिंह जो कि वर्त्तमान महाराजा साहब की निजी सम्पत्ति के प्रबन्धक (कण्ट्रोलर) हैं और अपने दायित्वनिर्वाह के साथ-साथ रियासत में रहते हुए पितृसेवा का लाभ ले रहे हैं—यह महाराजा साहब की विशेष कृपा का शुभ परिणाम है।

इसी काव्यानुरागी राजकुल के संरक्षण में मेरे पितामह कविराजा बुद्धसिंहजी ने २५ हजार पद्यों में आबद्ध 'देवीचरित' नामक काव्य-ग्रन्थ की रचना की। इसकी पाण्डुलिपि लगभग सप्तदशकों तक हमारे पास अप्रकाशित रूप में रही। मैंने कवि उदयराजजी उज्ज्वल की प्रेरणा एवं डॉ॰ मोहनलालजी जिज्ञासु के सत्परामर्श से इस ग्रन्थ की पाण्डुलिपि को भारतीय संस्कृति के पोषक, हिन्दी-संस्कृत के उद्भट विद्वान् एवं ख्यातनामा डॉ॰ फतहसिंहजी, निदेशक, राजस्थान-प्राच्यविद्या-प्रतिष्ठान, जोधपुर की सेवा में अवलोकनार्थ प्रस्तुत किया। प्राचीन-काव्य के पारखी ने इस ग्रन्थ के प्रकाशन की व्यवस्था कर हमारा प्रोत्साहन किया है, इसीसे और उत्साहित होकर मैंने डॉक्टर साहब से निवेदन किया कि यदि "ग्रन्थकर्त्ता की भक्ति-विषयक एवं शौर्यौदार्य विषय की कुछ प्रकीर्ण रचनाएँ हैं जिनका उल्लेख प्रकाशित प्रस्तुत ग्रन्थ के प्रथम भाग में 'कवि-परिचय' में किया गया है; उनका तथा ग्रन्थकर्त्ता द्वारा ही रचित 'महाराजकुमार चैनसिंहजी री वात' नामक वार्त्ता एवं प्रकीर्ण गीत-संग्रह को भी सम्मिलित कर दिया जाय तो अत्युत्तम होगा।"

हर्ष का विषय है कि डॉक्टर साहब ने हमारे निवेदन को तुरन्त स्वीकार कर उक्त कृतियों के सम्पादन का कार्यभार मुझे ही सौंप दिया। इसीके परिणाम-स्वरूप ग्रन्थकर्त्ता की प्रकीर्ण कृतियाँ 'परिशिष्ट' में स्थान पा सकीं।

विषय—परिचय

परिशिष्ट १ में प्रस्तुत 'महाराजकुमार चैनसिंहजी री वार्त्ता' में नरसिंह-गढ़ के राजा श्री सौभाग्यसिंहजी के पुत्र श्री चैनसिंहजी के युद्धकौशल, सुदृढ़ प्रशासक, देशभक्ति एवं प्रजा-प्रिय होने का चरित्र-चित्रण किया गया है।

श्री चैनसिंहजी पर अपने पिता की विद्यमानता में ही राज्य-सञ्चालन का कार्य-भार आपड़ा था। ये उदयपुर के महाराणा भीमसिंहजी के दौहित्र

मेल दळ ऊससै[1] जतुं हेठा मरद,
साबळा[2] ओघ अणमोघ खळ ह्वै सरद ॥७
झालियां[3] सेल भुज आग चसमां झड़ै,
चौगुणो देख छक आव कमधां चड़ै।
ऊछटां सुणे मेवात[4] सोहि ऊजड़ै,
पांण[5] तज आंण मेहरात कदमां पड़ै ॥८
दिपै कर बंदूकां झड़ै तोडां दमंग,
पोह-वगत वांगळा[6] खड़ै खाता पमंग।
भुयण भरम चौळा पड़ै धूजै भमंग[7],
आच[8] खग आपडै[9] कवण तोसूं उमंग ॥९
जोध अववारियां करण[10] प्रजरा जतन[10],
पछट खागां लियण खलां वाळा पतन।
अंगां लावण-पणौ[11] न को पूगै अतन[12],
रजोला[13] विनो नखतेत [14]दूजा रतन[14] ॥१०
भुजां-बळ पांण खाटण सुजस भांमणा,
दूठ अजरेळ[15] उदस खळां दांमणा[16]।
तेग-झळ अखाड़ा जीत भैरव-तणा[17],
मसूदे तपो जुग क्रोड़वे ढीमणा ॥११

मेरे पिता श्री पीरदानजी महाराज अर्जुनसिंहजी के विश्वसनीय कृपापात्र रहे और उनकी नरसिंहगढ़ रियासत की ओर से 'राजपूत हितकारिणी सभा' के सदस्य रहे। उक्त सभा में प्रतिनिधित्व करते समय उन्होंने कई अन्य राजा-महाराजाओं से सम्मान प्राप्त किया।

मेरे अग्रज ठा० नाथूसिंहजी वर्त्तमान नरसिंहगढ़ नरेश महाराजा श्री भानुप्रकाशसिंहजी (केन्द्रीय उप-मन्त्री, भारी उद्योग) के विश्वासभाजन रहे

---

[1] उत्तेजित होते हैं। २ पराक्रमी। ३ लिये हुए। ४ जाति विशेष। ५ पराक्रम। ६ चौकी रखनेवाले सवार। ७ शेषनाग। ८ हाथ। ९ मुकाबले में, पकड़। १०-१० प्रजा की रक्षा। ११ सुन्दरता। १२ कामदेव। १३ वीर धीर। १४-१४ दूसरा रत्नसिंह। १५ स्वाभिमानी। १६ पैर बांधने का रस्सा। १७ भैंरुंसिंह का पुत्र।

किया है। अतः मैं श्री चतुर्वेदीजी एवं श्री लक्ष्मीनारायणजी गोस्वामी (जिन्होंने इस कार्य में अपना अमूल्य योगदान दिया है) साधुवाद देकर अपने को धन्य मानता हूँ। अन्त में मैं कर्मठ एवं विद्याप्रेमी नवयुवक श्री गिरधर-वल्लभजी दाधीच को भी हार्दिक धन्यवाद देता हूँ जिन्होंने इस कार्य में संशोधन मुद्रण आदि में पूर्ण सहयोग दिया है।

संयोग की बात है कि प्रस्तुत वार्त्ता में स्वतन्त्रता-संग्राम की ऐतिहासिक झलक के सम्वन्ध में मेरे ये दो शव्द आज स्वतन्त्रता-दिवस के उपलक्ष्य में दो सुमन वनकर प्रकट हुए हैं, अतः मैं इन्हें मेरे सुहृद्राष्ट्र को समर्पण करता हूँ—जय भारत।

हमारे कुल की नरसिंहगढ़ के नरेशों के शौर्य, औदार्य एवं स्वातन्त्र्य-प्रेम की प्रशस्ति करने की अनुपम परम्परा रही है—यह क्रम निरन्तर वना रहे इस प्रेरणा से मैंने वर्त्तमान महाराजा श्री भानुप्रकाशसिंहजी साहव पर छन्द लिखे हैं जिनमें से कुछ दोहे निम्नलिखित हैं—

थूल लक्ष सुक्षम द्रग सु, पुनि नृप नीति-निधान।
भूपति भानुप्रकास के, वुध-जन करत वखान ।।१

पोख गरीवों पालणा, अभकी पूरण आस।
नरसिंहगढ़ राजे निपुण, भूपति भानुप्रकास ।।२

किण दीठो सुरतरु कठै, जगत कळपना जास।
औ दीपै माळव-इळा, सुरतरु भानुप्रकास ।।३

अरियां थट-गंजण अडर, रंजण प्रजा सुराह।
प्रण द्रढ भानुप्रकाससी, नरसंगढ़ नरनाह ।।४

स्वतन्त्रता-दिवस, सन् १९६९ — माधोसिंह

थे। इन्हें मातृकुल से शिसोदिया राणाओं की देशभक्ति एवं स्वाभिमान विरासत में मिले थे जिसके फलस्वरूप अंग्रेजों के शासन की पराधीनता को ललकारा था एवं स्वातन्त्र्य-ज्योति प्रज्वलित की थी। इनका विवाह झलाय ठा० चैनसिंहजी की सुपुत्री से हुआ था।

वि० संवत् १८८१ में महाराजकुमार श्री चैनसिंहजी २२ वर्ष की युवावस्था में अंग्रेजों से युद्ध करते हुए वीरगति को प्राप्त हुए। इनके श्वसुर भी उसी युद्ध में काम आये।

कविराजा द्वारा रचित इस ऐतिहासिक वार्त्ता का भारतीय स्वतन्त्रता-संग्राम के इतिवृत्त में अपना विशिष्ट स्थान है। वार्त्ता में समकालीन मालवी भाषा का एवं कहीं-कहीं खड़ी बोली का भी प्रयोग हुआ है।

परिशिष्ट २ में नरसिंहगढ़ के राजा-महाराजाओं के रणकौशल्य, औदार्य एवं दानशीलता पर तथा भक्ति विषयक गीतों आदि का बहुत ही प्रभावशाली सङ्कलन है जिससे इनके रचयिता कविराजा वुद्धसिंहजी के बाल्यावस्था की कवित्व-शक्ति का परिचय मिलता है—जैसा कि प्रथम गीत से स्पष्ट है। इस सङ्कलन में गीत, कवित्त, दोहे, छप्पय, सोरठे आदि वीर, रौद्र, करुण आदि रसों में रचित डिङ्गल भाषा के उत्कृष्ट नमूने हैं, इसका तो पाठकों को पढ़ने से ही परिचय मिल सकेगा।

प्रस्तुत दोनों परिशिष्टों में आवश्यक अपरिचित शब्दों के अर्थ भी पादटिप्पणियों में दे दिये गये हैं।

आभारस्वरूप

मेरे पितामह वुधसिंहजी का 'देवीचरित' ग्रन्थ व उनकी अन्य स्फुट रचनाएँ काव्यानुरागियों के लिए प्रकाश में आएँ—यह मेरी व मेरे परिजनों की उत्कट इच्छा थी।

काव्यमर्मज्ञ डॉ० फतहसिंहजी ने कृपा करके इस साहित्य को प्रकाशित करवाने की व्यवस्था कर हम सभी को अनुगृहीत किया है जिसके लिए मैं डॉक्टर साहब का सदैव आभारी रहूँगा। इसके साथ ही इस बृहत्काय ग्रन्थ के सम्पादक श्री हुक्मचन्दजी चतुर्वेदी ने बहुत ही कुशलतापूर्वक सम्पादन-कार्य को सुसम्पन्न

के आयो। तोप की पूजा कर भरके चलाई सो मोरया कुआ के मोरचे तोप का मूंडा में गोळो लागो सो तोप उलट पड़ी चरख टूट गयो अतरे गढी। भीतर सें वारगीर साथ का जवान दोयसै म्यांना मांहे सूं तरवारां ले मार-मार करता दौड़्या। मोरचा वाळां से जाय [1]लोहां मिलिया[1]। कतराक तो मारचा गया और कतराक दुसमण भाग निकल्या, श्री माहाराजकंवार की फतै हुई। फेर दोनु मोरचां पैहली-मुजव राड़ सरु हुई। या खवर राजगढ़ रावत श्री नवलसिंहजी नु लागी के माहाराजकंवार श्री चैनसिंघजी के और आनाभाऊ[2] के अणी तरह राड़ हुई सो पुरांणी वैर याद कियो के कोटड़ा[3] में फौजदार भोपजी दांगी थो जणी वगत में कोटड़ा सूं मीरखां की फौज घेरो दियो। जद दीवांण श्री अचलसिंघजी आगे रहै कोटड़ो तोड़ायो थो सो अवै आंपणे वार आय गयो सो अपणा विहार तोड़ाय देवां सो या बुरी सलाह विचार रामगढ़ का चवांण अमरसिंघजी, सींदल जालमसिंघ, राठौड़ ईसरीसिंघ उगेरे[4] वंदूकों से जवान दोसेक को जावतो देकर भेज्या सो गनीम की फौज में आय दाखिल हुआ। आनाभाऊ से मिलिया, गनीम नु हमगीर[5] कियो निसरण्यां लगाय हल्लो कर गढ़ी में कूद पड़ा, कतरीक वड़ी वात छै। जद आनाभाऊ के भी याही सलाह जची, जद कोटड़ा में परवारी निसरण्यां त्यार कर मंगाई और प्रभात समें वड़ी फजर चारहजार चुणवा जवान ऐकटा किया और जरीपट का निसांण खुल रह्या छै, जुंझाउ वाजा वाजतां गोळ वांध कर हल्लो चाल्यो। जद भीतर गढ़ी में खवर लागी कै हल्लो आवै छै, जद माहाराजकंवार श्री चैनसिंघजी कपतान हरीसिंघनु हुकम कियो के तुमारा जवांन लेके हल्ला के सामने चालो और हम वंदूका तोपां की ऊपर से भरमारी[6] लगावां। जद हरीसिंघ कपतान का औधेदार नट गया के कोट भीतर वंदूकों की राड़ हम करांगा, हल्ला के सामने हम नहीं जावें। जद रतने वागरी हाथ जोड़ अर्ज करी के गरीवनवाज चाकर नु हुकम फरमावै। जद हुकम फरमावतां समा सलाम कर हल्ला के सामने चाल्यो सो गढ़ी के अगाड़ी रतनजोत की झाड़ी में तीनसो वंदूकों जाय जमाई। हल्ले का लोग को गोळ सूधो नजदीक आतो एकसमचे आग पटकी सो जवान चारसै गनीम का टूट पड़्या, जरीपट का को निसांण गिर पड़्यो, ऊपर सूं गढ़ी मांहे सूं तोपों वंदूको की भरमारी हुई सो हल्लो भाग निकल्यो।

१—१ युद्ध किया। २ मरहठों की फौज का अफ़सर। ३ राजगढ़ रियासत का गाँव। ४ इत्यादि। ५ अगुआ। ६ लगातार मार।

परिशिष्ट (१)

-बुधसिंह चारण रचित

महाराजकुमार श्री चैनसिंहजी री वार्त्ता

महाराज श्री सोभागसिंहजी[1] तो कपतान पेमसिंघ नु बुलाय नौकर राख्यो। माहाराजकंवार श्री चैनसिंघजी कपतान हरीसिंघ नु नौकर राख्यो। अकेक पलटण अकेक पायगा चार-चार तोपों, कोई दिनां बाद माहाराजकंवार श्री चैनसिंघजी धामधोर[2] गाम डेरा जाय कीया। सात-आठ दिना बाद [3]विहार की गढ़ी[3] में बखसी वदनजी नु जाय घेरिया। वदनजी के पास गढ़ में जावतो[4] घोड़ा तो सौएक नें प्यादल पांचसे जवान था सो गढ़ी में राड़[5] को जाबतो वांधियो। राड़ चार पहर दिन हुई, निदान वैस्य सूं संग्राम कद करीजें सो रात पड़तों अपणे साथ को जावतो ले ने नरसिंहगढ़ गया ने श्री माहाराज-कंवर चैनसिंहजी गढ़ी :में डेरो कर दियो, पलटण नील-खाड़ी पै उतर गई। फेर दिन पनराक बाद नानणपुर उगेरे वारा गाम तो नरसिंहगढ़, राजगढ़ का लूटचा फेर शुजालपुर इलाके का गांव मेंमदपुर उगेरे लूटिया। मेंहमदपुर का पटेल नु बांध पकड़ लाया। मेंमदपुर का पटेल को छोटो भाई कपड़ा जलाय शुजाल-पुर गयो। सूबा आनाभाऊ से फरियाद करी जद आनाभाउ वीस हजार फौज, वीस तोपों लेर, चढचो सो विहार के घेरो आय दियो। नोल-खाड़ी तीज बरड़ी पै मोरचा लगाया। माहाराजकंवार नें गढ़ी सजी और तोपां की राड़ सरु हुई। दिन पांच त्था सात राड़ हुई। गनीमों को फौज वालों ने विचार वांध्यो के गढी में पाणी बंद करदां तो भीतर वाला कायल हो जायगा। सो गड़ी के भीतर मोत्या कूआ से पाणी पोहचे थो सो मोत्या कुआ पर मोरचो आय लगायो, सो पाणी बंद हुओ, निदान भीतर सारा लोग कायल हुआ। भीतर से तोपों मोत्या-कुआ ऊपर लगाय मेहताब जोई, सो तोप गोळो उगल दियो, वडो विसमय सारों

---

१ नरसिंहगढ़ के राजा। २ नरसिंहगढ़ के पास का एक गाँव। ३—३ गाँव का नाम। ४ सुरक्षार्थ व्यवस्था। ५ युद्ध।

चाल्या। या खवर मुकावलै पर माहाराजकंवर श्री चैनसिहजी नु लागी सो निराताळ[1] का घोड़ा और दीया ने तरवारां, भालां की ऐसी मार दीवी सो अंगरेजी सवार तो भाग गया ने मलारराव की रांणीऐं छोडाय लीवी विलादार[2] छीतर की घोड़ी पै झट वैठाय चाल्या सो लश्कर में हुलकर के पास आय गया। जद मलारराव ने वड़ी शावासी दीवी ने कही कै कंवरसाव मेरी इज्जत आपने बचाई। अणी झगड़ा में महाराजकंवार की वात लसकर में वड़ी वहादुरी के साथ ऊंची दीसी। फेर मीरखां, गफूरखां हुलकर के और अंगरेजां के सलूक[3] हुओ, कौलनामों[4] वांध्यो। जद माहाराजकंवार श्री चैनसिहजी ने पण रूपराम[5] नु कही कै अपणो भी कौलनांमो वांध लेवां। जद रूपराम कही के गरीवनवाज जागीर में मुलक थोड़ो लिखावां सो खीरणी[6] वाजवी ठैरसी। श्री महाराज हुकम फरमायो के अंगरेजीराज तुरत जांणे को है आज ज्यांके नामें लिखां सो फेर छोड़ावणो मुसकल हो जाय जद कही के गरीवनवाज हुं तो जात को ब्राह्मण कुछ दावो करणे सूं रयो; म्हारे नाम पर लिखाव कर दीजै सो पाछी नजर कर देसूं राज में फायदा की अर्ज करूं सो विचारी चायजै, सो था तो वड़ा वुद्धिवान पण अठै सला हार गया।

युद्ध का कारण

गांव चालीस वड़ा-वड़ा भारी वौड़ा उगेरे रूपरामजी के नाम लिख दिया। रूपरामजी मुखत्यार था सो कौलनामो वांध लियो, अंगरेजों में वात सनद होगई। फेर मलारराव हुलकर सूं सीख मांग तीन वरस सूं पीछा नरसंगढ़ पधारिया जद वौरा रूपरामजी को कांम सर्व सोवे हुय गयो ने खुजनेर में रोशनवेग की फौज को घेरो दरायो ने तोहमत[7] कराई, सोई तोहमत श्री माहाराज सोभागसिहजी सूं वौरे करी, या कहवाई कै—आपतो धणी राज का परन्तु आपके नजदीक रैवा वाळा अतरा सगसांहै सीख दे देवी चायजै। वारठ अमरसिहजी, रावळ हठीरामजी, साजी वखतरामजी, गोपालजी, पड़िहार प्रथीराजजी। जद श्री सोभागसिंघजी हुकम फरमायो के ईणै सीख हरगिज नही देउं ऐ रहसी जठेई हूं रहसूं

१ तेजी से, अगणित। २ म० कु० चैनसिहजी का हुजूरी (पदविशेष)। ३ राजीनामा, सुलह। ४ सन्धि-अनुवन्ध। ५ म० कु० चैनसिहजी का कृपापात्र पल्लीवाल ब्राह्मण। ६ अंग्रेजी सरकार का अधीनस्थ राज्यों पर लगने वाला कर। ७. आपत्ति, आरोप।

चहुवांण ग्रमरसिंघजी हल्ला[1] में हरोळ था सो भागतां ही वणी । निदान वीस दिन राड़ हुई सो लाचार हुय ग्रानाभाउ तो कूच कर शुजालपुर गयो ग्रौर ग्रमरसिंघजी पीछा राजगढ़ गया । माहाराजकंवार श्री चैनसिंघजी की फतै हुई । कपतान हरीसिंघ ने राड़ हुई जिण में हल्ला-सांमे[2] जावा को हुकम दीयो सो नहीं मान्यो जीसूं ग्रलवत्तां दिल में कड़वाई ग्राई सो कपतान हरीसिंघ को हिसाव कर रोजगार चुकाय [3]सीख दीवी[3] नें फेर ग्रसवारी खुजनेर पधार गई । एक दिन टौड़ी[4] का ठाकर वैरीसालजी ने सहज में कही के कंवरजी तो फकत सूतली का सांप है । म्हे लोग राज करा रया हां कोई चुगल ग्रादमी ग्ररज श्री माहाराजकंवार नु कर दीवी सो वोहत कड़वाई दिल में ग्राय गई । ग्रांवेराय गनीमऐं शुजालपुर समचो[5] दियो सो फौज खुजनेर ग्राय गई । ठा० वैरीसालजीऐ पकड़ाय शुजालपुर भेजाय कैद करवाय दिया । या वात करी जींके ऊपर साथ वालों को सवको दिल विगड़ गयो सो– सगतावत ग्रमरसिंहजी उगेरे सरदार वदल ने नरसिंहगढ़ चालिया गया.......ग्रतरे केही दिनां का ग्ररसा सूं हुलकर का ग्रजीटण रोसनवेग की फौज खलचीपुर ग्राई जेकी खवर नरसिंहगढ़ माहाराज श्री सोभागसिंघजीहै लागी, सो रोसनवेग सूं मिलावट कर कहवाई के लालजी हमारो कैणों मांने नही मुलक विगाड़े छै, सो इनके पास ग्रादमी है ज्यां है तो कैद करो ने लालजीहै हमारे पास भेज दो सो रोसनवेग फौज लाय खुजनेर घेरो देर कवाई कै ग्राप तो नरसंगढ़ पधारो ग्रौर वौरा रूपराम । वहादुरखांजी राजावत रुगनाथसिंघजी, राठौड़ जालमजी इण सखसां कूं हमें कैदमें सोंप देवो एसो श्रीदरवार साव को हुकम है । जद माराजकंवार श्री चैनसिंघजी पाछी फरमाई कै या तो हमें मंजूर नही हैं, खैर मुलक नही विगाडों, ने हमारा ग्रादमीयों की साथ हम खुद कैदमें चालांगा । जद ग्रजीटण रोशनवेग कही कै हम तो या नहीं कहां, ने ग्राप-की मरजी है तो ग्राप जांणो ग्रौर ग्रापके पास के ग्रादमी तो विलकुल हमको कैद करणे का हुकम है सो छोड़ों नही । जद ग्रापही साथ का साथ लश्कर में चाल्या गया । फेर कोई ग्ररसा सूं संवत १८७५ का साल में ग्रंगरेजी फौजों माळवा में ग्राई सो हुलकर की फौज के ग्रौर ग्रंगरेजी फौज के राड़ हुई सो केही राड़ां हुई । एकराड़ मालकिन साव सूं मलारराव के सीतामऊ की झाड़ी में हुई सो हुलकर की फौज तर-वितर हो गई सो-मलारराव की रांणी ग्रंगरेजी सवारों घेर लीवी, ने ले

---

१ सेना की प्रथम पंक्ति । २ मोर्चे के सामने । ३—३ विदा किया । ४ नरसिंहगढ़ में प्रथम श्रेणी के उमराव खीचियों का ठिकाना । ५ समाचार ।

सीहोर में मिलाप हुओ। जद वीरै रूपराम फेर या ही मांज गढ़ पटकी कै—श्री माराजकंवार नु त्था सायव श्री दरवारसाव सूं कही कै—आप बेटा तो दोनु सरदार राजी-वाजी होय नरसंगढ़ पधारो ने वारठजी, अमरसिंहजी उगेरे पांचु जणाहै तो सीख दीनी चाहिजे। जद श्री दरवारसाव हठ चढ़ गया कै इणै तो हरगिज सीख देऊं नही फेर पीछो उदैपुर त्था तीरथा चल्यो जाणो कवूल है।

अणी तरह वात अड़ी जद श्री माराजकंवार आधी रात के समीये एक दिन साह गोपालजी ने वुलाय हुकम फरमायो कै—वारठजी नु कहो सो हूं ही (भी) डेरां वाहर अकेलो आय जाउं, ने वे भी अकेला आय जावे कुछ समाचार वतलावणा है, तीसरा कोई आदमी नु खवर पड़े न्हीं। जद गोपालजी अमरसिंघजी नु समाचार कया सो घोड़ां की पछाड़ी यां की मेखां गड़ी थी जठै आप भी पधार गया ने अमरसिंघजी, पण आया जद हुकम फरमायो कै वारठजी! वीरो तो कामदार कर थाप्यो थो, पण दाईदार[1] वण गयो। तमें तो कोईएं अणी वात की मेहरम[2] नहीं पण कौलनामो कियो जद अणीने म्हारै सूं, धोको देकर गाम वीड़ा उगेरे चालीस लिखाय लीया। अपणा राज में जीवन था सो और हुं पण सलाह हार गयो सो लिख दिया, पण जद तो कही थी कै आप हुकम फरमाव सो जदेई दस्तावेज निजर कर देसूं। इण दिनां में तोन वार मांग चूको सो पाछी देवा की नियत है नही और तम लोग सवी रयासत का कदोमी हो जिणै राज में ठेरवा देवे नही अणी की कार परवारो[3] मैंने कदम दियो, जणी ही दिन अंगरेजी में मामलो पेश कर गाम विजनस कावू में कर लेसी सो मैंने ही तो सला हार कर रयासत खोई और हुं ई पाछी रयासत की वहाली राख सू जद रहसी, वीरा ने म्हारा सूं जाळसाजी करी छै सो जीवतो वोरा ने हरगिज छोडूं नहीं, फेर भविष्य है ज्यूं हुसी। वीरो थांने जाणे की कहाय रह्यो है सो कारण न्ही तम जाओ, और श्री वाशाहवहे या वात तो मती प्रकासो ज्यूं वणे ज्यूं करै, परंतु अठै रहवो मंजूर करै सो उपाय करो। जद श्री महाराजकंवार साथ लेकर श्री दरवार में गया ने अमरसिंहजी अर्ज करी कै श्रीलालजी साहव अर्ज करै छै कै—आप पाछा पधारवा के हठ चढ़ गया सो हुं आपघात कर आपके ऊपर मरं जावसूं न्ही तो आप नरसगढ़ पधारो ने आप को

---

१ दावेवार = स्वामी। २ मालूम। ३ वाला-वाला = अज्ञातरूप से।

जद श्री दरवारसाव रुसाय कर राज लोगों समेत उदेपुर पधार गया। श्री माहाराजकंवार तो राज-काज की सलतन कर लियो। वौरी रूपराम सरब सौवे मुखत्यार हुय गयो ने वड़ी जुलम पर कमरबंदी करी। सरव रियासत सूं खतरा कर-कर निकालणा सरु किया। भाटखेड़ा[1] का सरव गांव जवत कर लिया। महाराज हणवंतसिहजी रुसाय भोपाल जाता रया और टौड़ी उगेरे जागीरदारां का गांम सांसण गांम सरवेत जवत कर लिया सारी रियासत के नाक में दम अणाय दियो।

जेपे[2] श्री माहाराजकंवार अंतहकरण में विलकुल नाराज हुआ, फेर एक दिन वौरा सूं हुकम फरमायो के अंगरेजां सूं कौलनांमो हुयो जद गांमा की सनद म्हारा सूं लिखाई सो आज तक पाछी दाखल नहीं करी सो अवै दाखल राज में कर देणी चायजै। जद वौरे अरज करी—गरीवनवाज शाजापुर में म्हारो आदो चार है सो कतरीक घरकी रकम भाव उठै रहै छै सो वा भी उठै भेज दीनी सो दन पनराक में मंगाय हाजर [कर दे] सूं, जद पनरा दिन की जगा महीनो भर गुजरवा देने फेर हुकम फरमायो के वो दस्तावेज हाल-तोड़ी[3] मंगाया नहीं, जद फेर भी याही अरज करी। फेर महीना दो महीना सूं योही हुकम फरमायो जद फेर भी उसी तरह अरज करी। जद वौरा के दिल को कपट निजर आय गयो ने या दीख गई के जो अवै कोई तरह रो इण सूं खतरो गैर तजवीज करु तो अंगरेजी में पर कर जादा वढ़ गयो सो सायव लोगोंएं दस्तावेज वताय रयासत वटाय लेसी। या विचार दस्तावेज मंगावणरी वात तो ढीलो मेल दीवी ने चूक कर मारणरीज विचार लीवी, पण[4] श्री दरवारसाव तो उदैपुर माहाराज हणवंतसिंघजी भोपाल ठा० वेरीसाल जी उगेरे मांणहीण हो गया सो कुछ तजवीज हो सकै नहीं, जद रूपराम नु फरमाई कै हुं तो राज करु ने वासाव[5] परदेस में विराज्या सो अणी वात की मोहे पूरी सारी कपूती आय रही है ज्यूं करौ ज्यूं करो, पण नरसंगढ वुलावो जद वौरे कही कै—जो हुकम। वौरे अपणो भांणेज नु खरची दे तयार कियो ने दूसरो चवांण वलूंतसिंघ नु जावतो वांध रवांने किया सो उदैपुर गया। अरजियां कागद ले गया सो दीना ने साहूकारों रो करज चुकावण ने उदैपुर सूं सीहोर आया उण दिनां में श्री माहाराजकंवार भी सीहोर था सो वाप-वेटा दोनु सरदारों के

१ नरसिंहगढ़ की प्रथम जागीरदारी। २ जिस पर। ३ अभी तक। ४ किन्तु। ५ नरसिंहगढ़ के राजा सौभागसिंहजी।

सलाम करी, अतरै छींक हुई जद फरमायो छींक हो तो मत जावो जद फेर बैठ गयो। अणी तरह फेर सीख करी फेर छींक हुई फेर ठव गयो फेर सीख करी अतरे फेर छींक हुई जद आप तो हुकम कै बीराजी ठव जाओ। बीरे अरज करी के गरीबनवाज घर जातां छींक कांई करै। अणी तरह रात पैर[1] गया डोढ जातो रही पीनस[2] में बैठ घोड़ा-घाटी होयतां चालियो, साथै अड़दली का जवांन तो बीसेक ने मसालां दोयके उजाळे विलादार मौवत पीनस की खूंटाट्या पकड़ाय अदबीचै काली के दरखत कने आवतां तींदू[3] के पेड़ों में मोती छावड़ो आसामी पनरा दोय जागा[4] सात-सात आठ-आठ जणा दबने बैठा था सो बीरा के नजर आय गया सो ढोर[5] जांणिया, या कही कै देखो सहर में रात को भी ढोर नहीं बांधे सो कराड़[6] में खड़ा है। या कहतां पीनस थोड़ीक आगे निकळतां धावड़ियां[7] के हाथ का पत्थर पीनस पै वहचा, अतरै बीरो बोल्यो कै देखो श्री कंवरजी साहब ने देवी-देवतां का वलीदान बंध कर दिया सो देवता पत्थर मारे छै। अतरे तो पत्थर बोहतसा वहवा लाग गया। एक तरफ सभी देख रया था अतरै दूसरी तरफ वाळा भी पथर चलावणा सरु किया, पथरों की मार दड़ादड़ लागी। जमादार, मदारी, फाजल, रमजान सारा जवांन भाग गया। मसालची नाथू गोपाल भी मसालां पटक भागा, अतरे धावड़ियां आय पीनस नजदीक लीवी। विलादार मोवत पीनस की खूंट पकड़यां थो। मोवत के तरवार वही सो गिर पड़चो ने भोवां[8] ने पीनस पटक दी। पीनस तीन कुलाटां खाइ ने बीरो निकल भागो धावड़ियों पीनस देखी तो भीतर वीरो नजर नहीं आयो। जद मोती छावड़ी कोलूखेड़ी का दूदा पटेल से कही के भाई हुं तो वीरानुं पिछाणु नहीं, तूं बता। न्ही मिलेगो तो थेट हवेली जाय मार कर आवसूं। अतरेक राड़ में उतरतां-उतरतां उजळी अंगरखी को पळको[9] देखतां मोती छावड़ी की वरछी वही सो मीरां[10] में लाग छाती में फूट निकल गई, वीरो गिर पड़चो। मोती छावड़ी के नौकर खैराती मेवाती रपटकै[11] तरवार मारी सो वीरा कै जनेउ ढाल होगई। वीरो गिर पड़चो, धावड़िया फूटी भुरज नके होता हाडा कुंड पै होता किला की कराड़ उतर भागा।

---

१ पहर। २ पालकी, जो आदमीयों के कन्धों पर ले जाई जाती है। ३ जिसके फल खाने व पत्ते बीड़ी बनाने के काम में आते हैं। ४ जगह। ५ मवेशी। ६ पहाड़ी की तलहठी। ७ घात करने वाले। ८ जाति विशेष, जो भारवाहक होते हैं। ९ चमक, प्रकाश। १० पीठ। ११ दौड़-उछल कर।

राज आप करो और वौरो हम लोगों के सीख की कह रयो है सो हाल पांच दिन अणी को कैतव[1] राख जाणे में ठीक छै फेर सफाई के साथ हम भी आय जावसां, पण आपको फेर पीछा पधारवा में तो श्रीलालजी[2] साव की लोकिक विगड़े नें हम लोगो को भी वदनाम हुवै सो म्हाने तो हाल-घड़ी सीख दीनी चायजे, आप दोनु सरदार विचार सो जदई म्हे हाज़र आवसां, निदान रामधरम बंदोवसत खरच उगेरे को हुकम तो फरमाय दियो ने अमरजी, साजी वखतरामजी, गोपालजी, रावळ हठीरामजी, पंडीया प्रथीरामजी कै तो उदैपुर जाणे की सीख दीनी सो रवांने हुया। वाप-वेटा राजी-वाजी हुय ने नरसंगढ़ पधार गया। असाढ महीने तो या वात हुई। केई दिनां वाद वौरा रूपराम कने भाटी रायसिंघ व मालो रहै, ज्यां सूं रामधरम देकै फरमायो के—वौरा रूपराम नु चूक कर मार नोंखो तो पांचहजार की जागीर हीन हयात देउ, सो वेइमानी कर वौरानु ज्यूं का ज्यूं समाचार कह दिया पण होणहार तावै कुछ खयाल में वौरा के आई नहीं और वांरा नु समाचार कया जेकी मालम श्री माहाराजकंवार नु पण लाग गई। फेर पाछी वौरासूं खातरी दिलासा हँसी-ठट्ठा राजीपा के साथ ऐसी रीत वरती कै विलकुल रंज मिट गयो। रायसिंघ ने वौरे उलटो लाचार कियो के तूं झखमारे छै म्हारो मालिक म्हारे सूं तो राजी पैलासूं[3] सवाय छै। रामगढ़ का चहुवांण अमरसिंघजी राजगढ़ रहे था सो अंगरेजी में रसालदारी सौ घोड़ों की हुय गई ने माळवा में गिराई को काम हुय गयो।

रामगढ़ अमरसिहजी आया तरै नरसंगढ़ वुलायां ने वडी खातरी करी और कही कै तुमारी मारफत वालों से वौरा ने [4]चूक करावो जेका[5] रामधरम[6] हुआ ने अमरसिहजी वात मंजूर करली। जद अमरसिंघजी के इजारे का गांम वांसिया पाटेड़ का गूजर मोती छावड़ी ने वारासो रु० तो पहली जनानी डौढी का कामदार जोशी तेजकरण की मारफत सूं दिया, फेर कही के वौरानुं मारचां वाद इनाम-इकराम जमीदारा उगेरे फेर आछी तरह देसां। असां खातरी पूरी सारी करीनें कुछ लिखावट भी कर दीनी।

संवत १८८० का मिती कुंवार सुदी ५ को वौरो किला पर आयो सो रात पहर भर गई जद श्री माहाराजकंवार सायवां सूं तलेटी जावा की सीख की अरज

---

१ गुप्त। २ महाराजकुमार श्री चैनसिहजी। ३ पहले से। ४-४ छल से मार डालो। ५ जिसका। ६ दोनों ओर से वचन-निर्वाहार्थ समझौता।

नहीं करी। अमरसिंघजी अरज करी के गरीब परवर हमने चौकसी तो वोहतेरी करी, परन्तु आज तक तो कुछ पता नहीं लागा जद सायब ने पीछो हुकम दीयो के अच्छा तुम जाओ सो 'बांसीया पाटेड़'[1] का गूजरां कुं गिरफतार करो जद अमरसिंघजी अरज करी के हमकूं एक इस्तिहार मिला चाहीजे के कोई मुझ कूं रोके नहीं जद सायब ने इस्तिहार लिख दियो सो लेने रवाने हुया, सो कितराक सवार तो अहीरवाड़े की तरफ भेज दिया, कतराक सवार बजार बरखेड़ा की तरफ भेज दिया और सेंगर[2] चमनोजी, अमरसिंहजी रामगढ आया। रात आपके घर रया, सबी घरकां सूं मिल मिलाय पंजाब की तरफ चाल्या गया। तीन बरस सूं लाहोर पूगा की खबर लागी पीछा रामगढ़ तथा माळवा में आया नही। सायब भेलसां सूं बैरसिये आया जद बैरसिये के मुकाम श्री माहाराजकंवार साब मिलण नु पधारिया अतरा सरदार ठावा[3] आसामी साथ था। माहराज श्री हणवंतसिंघजी[4] टौड़ी ठा० बैरीसालजी, जैसींघजी, लसूरड़िया का ठा० गुलाबसिंघजी, बोरखेडा का ठा० सिबसिंघजी, झाड़क्या का ठाकुर सेरसिंवजी, रोसला का ठा० जसवंतसिंघजी, गूवाहेड़ा का ठा० इन्द्रसिंघजी, विजैगढ़ रावजी गोपालसिंघजी माहाराजा बख्तावरसिंघजी, पाडल्या का सगतावत मौकमसिंघजी, हमीरसिंघजी, बेलास का माहाराजा बदनसिंघजी, लछमणसिंघजी, राव दौलतरामजी, स्यामलालजी अमला का मुसदी बखसी बदनजी, केसराजी, उंकारजी उगेरे और कुल आदमी सातसे आठसो को भीड़-भाड़ सूं बौरा रूपराम को भाई सिवलाल साथ थो जिण सायब की फौज में डेरा जाय कीयो जद खातरी कराई, बुलायो पाछो आयो न्ही। श्री माहाराजकंवार सायब के साथे साथ हुया सो सातनवाडी मुकाम पांच रया, खोखरे मुकाम अठारा रया। होळी को तेंवार अणी मुकाम पै हुओ बेराड़ मुकाम तीन रया, शुजालपुर मुकाम वीस रया फेर सीहोर की छावणी दाखिल हुआ।

श्री माहाराजकंवार को डेरो सहर सीहोर सूं पिछम की तरफ हुओ आसटा[5] की सड़क सं उतरादी छावणी बणाय लीवी बाग में सायब

१-१ गाँवों के नाम। २ जाति विशेष। ३ प्रतिष्ठित। ४ ये भाट खेड़ा के और नरसिंहगढ़ के राज-घराने से सम्बन्धित थे कुंवर चैनसिंहजी की युद्ध में वीरगति हो जाने के पश्चात् तथा इनके कोई सन्तान न होने के कारण, हनुवन्तसिंहजी नरसिंहगढ़ की राज-गद्दी पर बैठे। ५ गाँव का नाम।

नाथू मसालची भागो सो श्री माहाराजकंवार की हजूर में अरज गुदराई[1]। सहर में तथा वौराजीरी हवेली में सारे ही चूकरी वात जारी हुई। अतरै श्रीदरवार साहव तथा श्री माहाराजकंवार साहव भी आय देखिया पीनस में लास नांख[2] वौराजी की हवेली पहुंचाई। फजर में भरतगढ़ के वाग में दाग हुओ। देस परगना में सारे ही वात मसहूर हुई, अंगरेजी में भी खवर गई अलवत्तां वाला-वाला तेहकीकात होणी सरु होण लागी सो कुछ पतो सावत[3] लागो नहीं। अणी धावड़ियां में खाखरा को टुंडो मैणो सामल थो जिणी नें मलावर का वौरा सीताराम से हकीकत पता वार कह दीनी सो वौरा का नुकता[4] में नरसिंहगढ़ आयो पण समाचार कोई से कया नही। कई दिना वाद रूपराम का भाई सिव-लाल सूं जोशी तेजकरण की वेटी वाकव थी सो रुपिया दीया उणी मुदा सूं अणोने पण कह दीनी। शिवलाल के पूरी खयाल में तुली नही।

फिर माह महीने [5]डावडी की छावणी[5] चार सायव[6] लोग आया जिणकी साथ में चार कंपनी एक रसाळो केई दिन नरसंगढ़ रया। वौरा ने चूक होयो जणी की तेहकीकात करी। अंगरेजी में तथा लोकिक में सुवो श्री दरवार साहव की तरफ को जांणियो गयो। गुमानजी मेड़तियो, तारेखां कायमखांनी, कालू रुआळो यां तीन जणांएं तो सजा भी विसेस दीनी और पूछ-ताछ इजार तो सभी का लिया पण चूक की सावूती कोई के ऊपर हुई नही। निदान सायव लोग महीनो डोडेक नरसिंहगढ़ रहकर पीछा चाल्या गया। तलेण[7] का वौरा आसाराम नु मलावर वारे वौरे सीताराम तुंड्या मेंणा सूं हकीकत सुणी सो कही-आसाराम सिवलाल सूं कही। सिवलाल पण जोसी की वेटी सूं पैला भी सुणी थी ने फेर आसाराम सूं सुणी जद अखीर जची। आसाराम सिवलाल दोनू जणां कागद में लिख सीवर (सीहोर) भेज दीनी, सीवर सूं सागर पहुंची जद वुंदेलखंड का अजंट मेंडक[8] साव सागर सूं रवाने हुआ जेकी पीछी खवर सीवर लागी, जद रसालदार चहुवाण अमरसिंघजी रसाला समेत भेलसां के अगाड़ी जातां सांमा[9] गया। मेंडक साव सूं मिलिया सलाम करी जद मेंडक साव अमरसिंघजी नु कही कै तुम गिराई[10] का काम पर था सो नरसंगढ में वौरा रूपराम कुं चूक हुआ जिसकी चौकस

१ गुजारी = की गई। २ रखकर। ३ निश्चित। ४ मृत्यु भोज। ५ गाँव का नाम। ६ अंग्रेज। ७ गाँव का नाम। ८ मेटकॉक अंग्रेज। ९ सामने। १० सेना की व्यवस्था।

हो जायगा। जद श्री महाराजकंवार साहब फरमायो के जाओ सायब नु खबर दौ, तोपां पलटणां जल्दी भेजे। श्री महाराजकंवार साहब अतरी कैहकर दिखणाऊ तरफ घोड़ा फेरवा पधार गया सो [1]मुसाल के चांदणे[1] पाछा डेरां पधारचा। आचारज सदारामजी मुरजीदान था ज्यां सूं हंस्या के सदाराम अब तो काशी जी चालांगा, और तमें फूलकुन्ड में पटकांगा, जद डेरां में सबके अगाड़ी बात खुली कै कुछ सायब ने हुकम सुणायो छै जद यो ऊकम फुरमायो छै। रसाला का सवारां जाय ने सायब सूं खबर गुजराइ[2] के श्री कंवरसाहब आज पिछले दिन का छावणी की हद के बाहर घोड़ा फेरवा जावा लागा, जद हमने हुकम सुणायो सो हुकम की तामील नहीं की, घोड़ा फेरवा चले गये। खिसा[3] करने का हुकम नहीं था जिससे हमने खिसा नहीं किया, आइन्दा सायब हुकम करै सो सही। सायब ने सवारां सूं फेर बी कही कै अछा तुम जाओ तुमारे काम की चौकसी राखो फेर हुकम होवे जैसा करना। अणी बात पे सायब लोगां के बिलकुल आय गई कै जोर दियां बिदून[4] हुकम मंजूर करेगा नहीं। जद डाबड़ी[5] की छावणी सूं तो पलटण बुलाई और हुसंगाबाद सूं रसाला का सवार तीनसैक बुलाया। भोपाल सूं कंटनजंटी[6] का सवार चारसैक बुलाया और खुद सीहोर की छावणी की फौज थी। सारी मिल-जुड़ने फौज हजार पांच-छैएक के आसरे[7] इकठी हुई।

संवत १८८१ सावण सुद १३ सनीसर कै दिन पिछली रात डेड पैर[8] रयां आठ मोरचां तुंग[9] जुदा-जुदा कर श्री माहाराजकंवार साहब के छावणी के आसफेर[10] घेरो आय दीयो। छावणी के भीतर नजदीक था सो तो छावणी का छावणी में घेराय गया, कतराक साथ वाळा जागीरदार उगेरे दूर उतर्या था सो दूर का दूर रह गया। दखण तरफ आसटा की सड़क कै जड़ा सूं धूआदू[11] मूंढ़ो कर तोपां को जाड़ो जमायो। गांव की तरफ ऊगूणी-बाजू[12] नजूमी पलटण जमाई और चौफेरां और थोक[13] पलटणां को जम गयो।

श्री माहाराजकंवार साहब डेरां में पौढिया था अतरे पहरायतां[14] देखियो सो डेरां के आस-पास असफेर घेरो लाग गयो। श्री माहाराजकंवारहै जगाया,

१—१ मशाल की रोशनी में। २ अर्ज की। ३ युद्ध। ४ बिना। ५ गाँव का नाम। ६ कन्टनजेन्सी। ७ लगभग। ८ पहर। ९ मार्गों में। १० चौ तरफ (चारों ओर)। ११ उत्तर दिशा में। १२ पूर्व की ओर। १३ समूह। १४ पहरेदारों ने।

अंगरेजी छावणी में दाखिल हुआ, फेर मेंडक साव के और श्री माहाराजकंवार के पड़-उत्तर[1] होता रया। अतरै कई दिनां पहली वांसीया पाटेड़ का गूजरां नु बुलाय लीना उण के कैहवा सूं चूक की साबूती श्री माहाराज कंवार पर होगई। जद पेहली तो सायव ने यो हुकम फरमायो के (पहुँचायो) अब असाढ का महीने वरसात का मौसम आय गया सो आप नरसंगढ़ तसरीफ लेजावै और रइयत की खातरी करै फेर काती महीने दरियाफ़त हो जायगा। जद नरसंगढ़ पधारवा की त्यारी हुई। वौरा रूपराम की वहु ने खबर पड़ी जद सायव कें बंगले अर्ज करी के मेरे खांविद कूं कंवर साहब ने सरवसर मारया जिसका आपने कुछ दरियाफत न्ही किया और नरसंगढ़ की रुखसत दे दीनी तो मेरे कूं किलकत्ते का रवांने का परवांना मिला चाहिये सो लाठसाहबहैं जाय अरजी देउं। सायब लाचार हुया ने मंगल जमादारहैं श्री माहाराजकंवार साव के पास भेज्यो ने कहाई कै किलकत्ते रिपोट गई है सो जबाव पीछा आवै ज्यां तक नरसंगढ़ जावा की मौकूफी करावै। दूसरा हुकम सादर हुवेगा जद आपको जाणा होगा जद पाछी मौकूफी हुय गई फेर किलकत्ते सूं जवाब आयो। जद मेंडक साव ने श्री माहाराजकंवार साहवहै पहर रात गयां बंगले बुलाया मुलाकात करी खुरसी पै विराज्या जद कही कै आप जांनसेन साव की कोठी तसरीफ लेजावै, किलकत्ते सूं हुकम आया सो सुण लीजै। जद जांनसेन साव की कोठी पधारया खुरसी पै मुलाकात हुई वराजीया[2], जद सायव हुकम सुणायो या तो चंद रोज के लिये दिली तसरीफ लेजाओ अथवा कासीजी पधारै जद श्री माहाराजकंवर साब ने फुरमायो कै सदर सूं हुकम आयो सो मांथा ऊपर है, दस ग्यारा रोज में पाछो[3] जवाब देउंगा। अतरी फरमाय कर खुरसी ऊपर सूं ऊठ बंगले बाहर पधारया। घोड़ा पै सवार होय डेरे पधार गया। उणीज वगत डेरांके आसपास सायव गुप्त पैरा[4] भेज दिया।

दिन चारेक बाद श्रीमहाराजकंवार साव घड़ी दो एक [5]दिन पाछळा का[5] घोड़ा फेरवा जाणे लाग्या अतरे रसाला का सवार पचासेक घोड़ा आडा आय फिरीया ने कहीके छावणी के बारे घोड़ा फेरवा जाणे का हुकम नहीं है सो मत जाओ। आप हुकम नहीं मानोगे तो तोपां पलटणां आवेगी ने किस्सा[6]

---

१ प्रश्नोत्तर। २ बैठे। ३ पीछे, पश्चात्। ४ चौकसी रखने वाले (गुप्तचर)।
५—५ अपराह्न में। ६ लड़ाई (युद्ध)।

सीवर[१] को जांनसेन सायव, फेर दोय सायव और इणाहीज मुजव उरदी पहरयां घोड़ा पै सवार और [२]हावड़ी की छावणी[२] को दीवांळ सायव जंगी उरदी पहरयां और प्यादल[३] सायव लोग आया सो तोपां के मोरचै ऊभा रया फेर आथूंणी[४] तरफ चाल्या सो उत्तर-पूरव की तरफ का मोरचा संभाल पोछा तोपां के मोरचे आय खड़ा रया ने मंगळ जमादारहैं श्री माहाराजकंवार के पास भेज्यो सो आप अर्ज करी सायव ने सलाम कवाई[५] है और सदर का हुकम है—आठ सरदार आपके साथ लेकर आप सायव सूं मुलाकात करवा पधारो उमेदवार खड़ा है। श्री माहाराजकंवार साहव ने हुकम फरमायो के जो वंगळा पै सायव मुलाकात करवा वी अकेला है वुलावता तो हम चल्या आवता, परंतु आसफेर घेरो लगाय दवावणी देकर हमैं वुलावै सो हम राजपूत हां आवरू गंवावण ने आवां नहीं। या मुलांकात करवा हम हरगिज आवां नहीं सायव नु करणी हो वेसो करो, और इन्साफ करो तो हमारी दस्तावेजां देखे। जद मंगळ अरज करी गरीवनवाज ऐ तो सायव सूं अरज करबा का मेरा मकदूर[६] न्ही है। आपका वकील भेजावैं सो वो सायव से अरज करै। जद लाला भागीरथजीऐं[७] सायव के पास मंगळी के साथे-साथ भेज्या सो सायव के पास गया अर्ज करी, जद मेंडक साव वोल्या के—अवतो हमारा अखतयार न्ही है कपतान जांनसेन सायव के पास जाजो। जानसेन सायव के पास गया जद सायव कपतान कयो के तीन घंटों का इकरार था सो अव पूरा होणे पर श्री कंवरसाहव को जांन रखणा होवे तो अजंट मेंडक साहव से मुलाकात करे। काशी का हुकम दै तो काशी जाओ, दिली का हुकम दै तो दिली जाओ न्ही तो तोप का फेर[८] होणे की तयारी है।

जद लाला भागीरथ ने पीछा आय अरज करी तद श्री माहाराजकंवार साव [९]उव्या-पगां वहाल हुया[९] और जो-जो सरदार डेरा में था सौ हाजर हुया। सवसूं हुकम फरमायो के—जिण को मन मानै सो हमारे साथ चलो और कोई को दिल न्ही होय सो जाओ। अतरै लेहमभर[१०] हुई ने तोप चाली सो गोळा गोळ[११] में लागा, ऊपरातळी[१२] फेर वारा हुआ जिण सूं अतरा सरदार तो काम आया।

---

१ सीहोर। २ यह गांव नरसिंहगढ़ रियासत में है जहां फौज की छावनी थी। ३ पैदल। ४ पश्चिम दिशा। ५ कहलवाई। ६ साहस। ७ ये महाराजकुमार के विश्वासपात्र थे। ८—८ वार, मार। ९—९ जिस स्थिति में थे उसी स्थिति में युद्धोद्यत हो गये। १० पाव घड़ी (कुछ समय)। ११ सेना का समूह (घेर) १२ एक के वाद एक (लगातार)।

साहबहै जगाया और सारो साथ जाग्या पण यो ही हुकम फरमायो के आप-आपकी जागा जम्या रहो और हाथ-मूंडा धोय लेवो। कतरीक वगत वीतां बाद आप हाथ-मूंडा धोया, दातण कियो अतरै पण दन[1] ऊगवा की त्यारी हुई। राव स्यामलालजी [2]कसूंमल पाग[2] लाय हाजर करी। आप पाग बांधता हुकम फरमायो के बासाव अजबसिंघजी[3] सूं रतनपुर पै झगड़ो हुओ जेको कवित्त तनै याद हवै तो पढ़। जद स्यामलालजी यो कवित्त पढ्यो:—

सवैयौ

आया उजैन सों साह सुजान, महा भर भीर मसंद हकारे।
आवध अंग अभंग सजे, जनु रोप वकत्तर पक्खर सारे।।
देवळ पार-सुपार छता, अजवा खल खग्गन खूंदन वारे।
डार दिये चटके-वटके केउ, ऊमट के झट केनके मारे।।

वार्त्ता—अतरे सोनखेड़ा वाळा ऊमट कोकजी वड़ी अंगरखी पेटी लाय हाजर करी, जद हुकम फरमायो के वड़ी अंगरखी तो मेल दो, छोटी अंगरखो लाव। आज अपणै, अँगरेजां के झटकामार होगी, जद छोटी अंगरखी दोवड़तां लाय हाजर करी सो पहरी। ऊपर सादो कमरबंदो बांध्यो तरवार बांधी, ऊपर चंदेरी को जरदोजी[4] दुमट्टो बांध्यो और ढाल कत्ती हथवांसे[5] धारण कियां डेरा में आय विराज्या और केसराजी ऊमट सोनखेड़ा वाळा सूं हुकम फरमायो के सब साथ वाळा सूं कहदो, आप-आपकी जागा जम्या रहै। [6]अमल की चवटां[6] देदो सो आप आपस में मनवार[7] कर आछी तरह अमल ले लेवें। केसराजी सारा साथ वाळाहै[8] अमल की वटियां वांट दीवी हुकम सुणाय दियो सभी साथ में आछी तरह अमल की मनुहारां ऊई।

अतरे दोय घड़ी दन चढतां मेंडक साव जंगी-पोसाख[9] पैहरयां वडी किलंगी टोपी पर लाग रही किरच लटकती हुई कमर के बंध रही। गरड़ै[10] घोड़े पै सवार कपतान साव इणहीज मुजब जंगी-उरदी पेहरयां। कुमेत घोड़ा पै सवार

---

१ दिन। २—२ केशरिया पगड़ी, जो युद्ध के समय में सिर पर बांधी जाती है। ३ ये महाराजकुमार चैनसिंहजी से चार पीढ़ी पूर्व के नरसिंहगढ़ के राजा थे जिन्होंने नरसिंहगढ़ से १० माइल दूर पार्श्व में रतनपुर में मुग़ल बादशाही फौज के साथ भयङ्कर युद्ध किया था। ४ केशरिया। ५ हाथ में। ६—६ अफीम के टुकड़े। ७ साग्रह सत्कार। ८ वालों को, 'है' विभक्ति का रूप है। ९ युद्ध-समय के वस्त्र। १० कागड़ा रंग के।

चाल्या परन्तु छर्रा गोळियां छाती में निपट मार की लागी सो लोही की छीछां[1] उड़वा लाग गई सो फेर जाफ[2] आय गई सो गोड़ियां टिक गई। फेर बैठ ने खड़ा हुय गया, परंतु देह धूजण लाग गई। जद तीजी वार फेर गोडियां टेक विराज गया। मुठ पै जोर देकर तरवार की अणी जमी ऊपर टेक दीवी ने एक हाथ सूं जमी ऊपर सूं म्रतका[3] का पिंड* वांध ने लोही की धारां छूटै ज्यां सांमी ऊंचो हाथ लेने लोही सू सींचने जमी ऊपर पिंडांण धरता जावै, अैसा पिंडांण छः-सातेक जमी ऊपर धरचा। अतरे सूवेदार कनयांसिंघ नजदीक आय कर संगीन पाग के ऊपर मारी। संगीन पाग के छुआवतां समा[4] सुबेदार की कमर पै कत्तो वही सो कमर मांहे सूं दोय टूक सूवादार क न्यारा-न्यारा टूट पड़चा—कनयासिंघ के जवांन श्री महाराजकंवार के सामी छाती संगीन मारी सो पार निकळ गई। उतरादे मूंडे वराज्या था सो मूंडो ऊगूणी तरफ हो गयो रणखेत में पौढ गया हंसराजा[5] चाल तो रयो। श्री माहाराजकंवार चैनसिंहजी के साथ अतरा ठावा[6] सरदार काम आया ज्यां की विगत:—

गढ गागरोण का सारा खीचीयां का पाटवी, गागरोण छूटां पाचैं नरसंगढ़ आया सो विजैगढ़ गांगाणी बैठक दरीजी[7] थी। माहाराज श्री दीवांण खूमाणसिंघजी रावजी रतनसिंघजीहैं दरीजी ज्यां सूं चौथी पीढ़ी रावजी गोपाळसिंघजी था सो काम आया। माहाराजा वखतावरसिंघजी, सोभागसिंघजी यांका भाईवंद ३ तीन सरदार तो यांका घरांणा का, राजावत ठाकुर सिवनाथसिंघजी झलाय का, माहाराजकंवार श्री चैनसिंघजी का सुसरा, राजावत रुगनाथसिंघजी, खांसाव वहादुरखांजी, हिम्मतखांजी, गौड़ प्रतापसिंघजी, वेळास का माहाराजा ऊमट-खांप[8] सूरतसिंघोत वदनसिंघजी, लक्षमणसिंघजी, ईशरसिंघजी, सगतावत मौकमसिंघजी, हमीरसिंघजी, स्यांमसिंघजी, तापानेरा का सगतावत वखतावरसिंघजी, सोळंखी उमेदसिंघजी, वरणावद का सोळंकी प्यारसिंघजी, सोनखेड़ा का ऊमट केशरीसिंघजी, कोकासिंघजी, वाळी का उमट मोतीसिंघजी, सराणा का सींदल गजसिंघजी, दईया गुमानसिंघजी, जमादार सुभांन, वैरो रुसतम, चोपदार देवो, रावजी गोपालसिंघजी के डेरा का दोय धौळा[9],

---

१ धारा। २ मूर्च्छा। ३ मृतिका = मिट्टी। * युद्ध में अपने खून से मिट्टी का पिण्ड बना कर रणभूमि को पिण्ड देना प्रशस्त माना गया है। ४ छुआते समय। ५ हंसरूपी जीवात्मा। ६ प्रमुख, नामवर। ७ दी गई। ८ क्षत्रियों की ऊमट शाखा। ९ जाति विशेष।

पठांण उजीर खां, गुसांई चिमनगिरजी, जमादार पैंड़ियो, मोहणसिंघ राठोड़, बरखेड़ो का तरवरसिंघजी, बावाजी सुखरामदासजी, नायक लालो, नाई बखतो, गोळी खांसाव बहादुरखांजी के लाग गई। हिमतखां जी हजूर में साथ जाय हाजर हुआ। बंदूकां तोपां चाली जिणसूं धुंआधोर बद गयो। चन्द्रावत अखैसिंघजी के हाथ में गोळी लाग गई। श्री माहाराजकंवार साहब दरीखांना की जाजम पै साथ-समेत ऊभा जणी जागा सूं आगे वह्यौ[1], बोल दियो—कुछ सुणी कुछ नहीं सुणी अतरे सगतावत बखतावरसिंघजी नु फुरमायो के सायब कहां है, धुंआधोर तो हो गयो पण अलबत्ता देखो, देख कर कही कै—गरीबनवाज तोपां पर तो दीखे नहीं; जद फुरमायो के कहां ढूंढांगा। चालो सो सरस का पेड़ तळे पगरखी[2] उतार सीधा तोपां ऊपरै ईश्वररो नाम लेर चलाया; जाय [3]तरवारियां-मिळिया[3]। तोपां ऊपर जवान था सो सारा भाग गया तोपां जाय छोड़ाई, सायब भाग गया श्रोर फौज चौतरफ भागी। कतरीक फौज भागी सो उतरादी तरफ [4]गोळ वांध्यो[4]। बंदूकांरी मार फेर साथ ऊपर दीनी। अतरे फेर दोड़्या सो फेर जाय [5]लोहां मिळीया[5] फेर फौज भागी। अगाड़ी[6] जाय गोल फेर वंधियो, अंगरेजी फौजरी वाड़-झड़ी[7], कतराक[8] श्री माहाराजकंवार का जवान [9]झड़ पड़िया[9] ने फेर अंगरेजी फौज भागी, फेर अगाड़ी जावतां फकत दिवालसाब[10] ने तो गोळियां का वार कर्‌या पण फौज ने पग मांड्या[11] नहीं। अगाड़ी तो अंगरेजी फौज भागी जावै ने पछाड़ी नंगी तरवारां लियां श्री माहाराजकंवार को साथ। अतरै फौजदार खलीलखांजी मोती गज ऊपर चढ्या आया सो हाथी फौज ऊपर हुल्यो[12] सो फौज तर-वितर हुय गई। डेरां सूं कदम चारसो-पांचसै के आसरे [13]साळ का डेरां की पाळ[13] ऊपर अंगरेजी फौज जाय पहुँची। अतरे श्री माहाराज-कंवार जाय मुकावले पहुँच्या ने अंगरेजी फौज नु सायब ललकारी। जद झट गोळ इकट्ठो बंधतो हुओ, हुयो ने गोळीयां की [14]झाड़ झड़ी[14] सो सारा सरदार साथ झड़ पड़्या। श्री माहाराजकंवार के सांमी छाती छररा गोळियां लागी सो [15]गोड़ियां जमी जाय टिकी[15] फेर साहस कर ऊठिया कदम दस-बाराक अगाड़ी

---

१ आगे चले। २ पादरक्षिकाएं=जूतियां। ३—३ मुठभेड़ हुई। ४—४ एकत्रित हुई। ५—५ मुठभेड़ हुई। ६ आगे। ७ शस्त्रों का प्रहार किया। ८ कितने ही। ९—९ वीर गति को प्राप्त हुए। १० अंग्रेज अफ़सर का नाम। ११ ठहरो। १२ रौंधता हुआ गया। १३ चांवल के खेत। १४ झड़ी लगी। १५—१५ जमीन पर घुटने टिक गये।

परिशिष्ट (२)

प्रकीर्ण गीत-संग्रह

गीत—सिढायच बुधसिंहजी री १४ वर्ष री उमर में बणायो, परमात्मा रो

गीत छोटो सांणोर (१)

रसणा[1] तूं निसदिन सुमर रामने, कर ढीलो [2]अनुराग कुटम्ब[2]।
ओछी ऊमर तणे आसते, इतरा केम करे आरम्भ[3] ॥१
काया माया हेक पलक में, विजनस[4] जासी सरव विलाय[5]।
भजन हरी करतां अत भाया, मांठो[6] किम थावै मन मांय ॥२
थूं मत जांण कुटंव औ थारौ, पाळ मती इतरौ चित-प्रेम।
चलतां साथे न को चालसी, जासी जीव वटाऊ[7] जेम ॥३
पिता मात बंधव सुत प्रमुदा[8], लोभी गरज तणा सहलेक।
सांप्रत[9] अंत-वगत रो साथी, अनंत[10] विचार हिया में एक ॥४
जांमण-मरण पाप मिट जावै, तारै जीव हुंत इक तोल।
रटतां नाम मुखां राघव रो, मूरख दाम न लागे मोल ॥५
राजी हुआं थकां नारायण, देवे मुकत-दान[11] दातार।
साचो कर जांणे परमेसर, सपना ज्यूं जांणे संसार ॥६
सकव **बुधो** आखे कत साची, दिल में धारे दीनदयाळ।
प्रभू-भजन कर रे नित प्रांणी, जाय विलाय पापरा जाळ ॥७

गीत—ईश्वर रो बुधजीरै कयोड़ो

वड़ो सांणोर (२)

पड़ी भीड़[1] जळ डूवतां धीर नह धरी पळ,
ररी करुणा ग्रहण ग्राह रीवी।
अहिअरी[2] तजे आयो वडी आतुरी,
करीरी स्याह जद हरी कीधी ॥१

(गीत १)—१ जीभ। २-२ कुटुम्ब का प्रेम। ३ प्रपंच। ४ निश्चय। ५ मिट जावेंगे। ६ शिथिल। ७ राहगीर। ८ स्त्री। ९ प्रत्यक्ष। १० ईश्वर। ११ मुक्तिदान।
(गीत २)—१ विपत्ति। २ गरुड़।

वांणियौ मयाराम, मसरियो उगेरे जवांन डेडसो दोयसेक तो काम आया। गागोर राघोगढ़ राजा धारूजी खीचीं के घरांणे का पाटवी[1] ठा० गोपालसिंघजी, राठोड़ जालमसिंहजी उगेरे सरदार चालीसेक घायल हुआ और आसांमी पचास-साठेक, राव दौलतरामजी स्यामलालजी उगेरे भाग निकल्या झगड़ा की सुरुआत में और जागीरदारों के साथ में ठा० वैरीसालजी टोड़ी उगेरे झगड़ा सूं पेहलीज सभी टालो[2] देने वदलने न्यारा हुय गया था सो कुशले रया। खेत[3] सायब जो आयो घायलां नू अस्पताल भेजिया और दुफेर वाद सिढायच बारठ अमरसिंघजी, बखसी वदनजी, केसराजी उगेरे कैद सूं छोड़्या (इनको रूपराम ने पहले कैद करवा दिया था) फेर किला का फतेहसिंघजी राजगढ का दीवांण शंकरलालजी तथा नरमंगढ़ का जागीरदारां नुं हुकम दियो सो तीजै पहर का दाग-विधि ऊई।

संपूर्णम्।

---

१ पट्टायत, मुख्य उत्तराधिकारी। २ टाल कर। ३ रणक्षेत्र।

ग्रह कै ग्रीध गूंद लेवे गळ, सरतारत[७] चालै सरस।
हिचै जुधों अणभंग हठाळा, [८]रजवट धर दूजा परस[८] ॥४
धसकै धरण लचक धरणीधर, संगत किलक [९]हंस खिलेरिपीस[९] ।
ओपे कटक रोळतो[१०] ऊमट, सीह-रूप अरियांणों-सीस ॥५
[११]वाजै भीख ससतरा[११] वेखम, वीर विक्राळ ताळ जंग वाग।
तोड़ै घणां गयंदां तेगां, भाला हथां सुतन सोभाग ॥६
वर अपचर सुरपुर-विच वसियो, दारुण कंपनी-दळां दह।
कंवर कळह अचळा-हर[१२] कटियो, सुज खटियो संसार सह ॥७

गीत– महारान हणवंतसिहजी रै बाईजी रो विवाह जोधपुर माहाराजा जसवंतसिहजी सूं कियो जिणरो–

गीत सपंखरो (४)

इसो करतां विवाह आव[१] धरांणे चढ़ाय ऊभो,
दांन लखां देर ऊभो कविदां दीवांण।
भांमीकरां[२] अगंजीत कीरती कहाड़ ऊभो,
माठों[३] मांण गाळ ऊभो विजाई खूमांण ॥१
आंटीला[४] देसोत छोलां इन्द्र वाळी देर ऊभो,
लाखां मुखां प्रभा लेर ऊभो गुणां लोड।
आकारीठ[५] सोभाग सुजाव माठी वेर ऊभो,
वाढ खेर ऊभो पातां दळद्रो वितोड़ ॥२
उजाळा वंसरी रीझां ताकवां[६] समाप ऊभो,
गाल ऊभो अदत्तारों सान गाढेंराव[७]।
अनमी ऊमटों-नाथ नीर पखां चाढ ऊभो,
महावीर लाखों दांन दे ऊभो अमाव ॥३

(गीत ३)—७ खून की नदी। ८ क्षात्रधर्म धारण करने में द्वितीय परशुराम (इनके पूर्वज)। ९-९ नारद हँसते हैं। १० विध्वंस करता हुआ। ११-११ शस्त्रों के प्रहार। १२ अचलसिंह का पौत्र।

(गीत ४)—१ शोभा। २ दानी। ३ कृपण। ४ स्वाभिमानी। ५ पराक्रमी। ६ चारणों को। ७ धीर, गंभीर।

हरणाकस्यप दनुज[3] कोपियो पुत्र हरणण[4],
[5]फाड़ पाहण[5] असह पाड़ फीको ।
राखीयो बाळ प्रहलाद तारण तरण,
नरहरी चरण रो सरण नीको[6] ॥२

वीर पांचूं[7] वचन हारतां सभा-विच,
हुई तकरीर पांणप हटायो ।
द्रोपदी चीर गह खांचतां दुसासण,
अरज सुणतां समो भीड़[8] आयो ॥३

भरोसो राख दिल तेण भगवंत रो,
जबर बळवंत खळ जेण जीता ।
विमळ जस गाव गुण ग्रंथ निस-दिन बुधा,
संत-जन सहायक [9]कंथ सीता[9] ॥४

गीत—तीजो कुंवर चैनसिंहजी रो ।

दोहा

अरिदळ साझण ऊससे, कर ग्रह तेग कराळ ।
चढै जुधां रिण चैनसी, वज बंबाल विकराळ ॥१

गीत जात वेळियो (३)

कर ग्रह किरमाळ[1] चढै रिण काहुल, बाज त्रंबाळ[2] विषम जिण वार ।
अड़ अंगरेज विध्रूसण[3] आयो, जग जेठी चैनो जोधार ॥१
पाड़े कितां पछाड़े इळ पर, घेंसा हरां रमाड़े घेर ।
ढूला[4] गजों विहंडण[5] ढूको, सादूळा ज्यूंही समसेर ॥२
गोळा तोप वहै नभ गाजै, कायर-उर थरके कहर ।
भूरो सिंघ अघायो भारथ, भूरो भड़ धुबियो[6] समर ॥३

(गीत २)—३ राक्षस । ४ मारने को । ५-५ पत्थर फाड़कर । ६ उत्तम । ७ पाण्डव । ८ सहायता । ९ सीतापति ।

(गीत ३)—१ तलवार । २ नक्कारा । ३ विध्वंस करने । ४ समूह । ५ बरबाद । ६ उत्तेजित ।

गीत—नरसिंहगढ महाराजा हणवंतसिंहजी री वीरता रो

गीत सावझड़ो (६)

मरद भीड़ अंग जरद थट[1], अघट सुभटों मिळे।
चळ कटक खुर वजट, त्रंबट[2] सिर अहि चळे ।।
[3]पाज लोपे समंद हले[3], करवा प्रळे।
कलोधर[4] फरस इम, कठी जुड़सी कळे[5] ।।१
झळळ सावळ भुजां, तड़ळ कळ झवझवै।
पाकड़े वजर सक्र, परां छेदण पवै[6] ।।
धीठ नर अडर वय, आग चसमां[7] धुवै।
फजर वागां नजर इसी, किण सिर फवै ।।२
गुमर घोड़ों भड़ां नांवतां घरहरै।
वीर भरियो गुमर त्रजड़[8] झळ वरवरै ।।
जहर रो पियालो अचळ-हर[9] कुण जरै।
काळ-दळ केवियां क्रोध किण पर करै ।।३
ख्याल देखे तरण[10] रथां अछरां खड़ै।
जोध भीना मगज नाग धू नग जड़ै ।।
कीत पूगी विहद अडप समदां कड़ै।
ऊमटांनाथ समराथ कैसूं अड़ै ।।४
अकारा चखां झड़ अंगारा आगरा।
गहर घण सिंधुवा[11] हका पड़ रागरा ।।
निपट हल्ल चल धरण मचरका नागरा।
राजरा कठीने धका वज रागरा ।।५
घरर वज[12] टामकां मांण अरियां घटै।
डरर सुण सीहरी दसूं-दिसरा दटै ।।
रिधू चहुं देसरा सुजस वीदग[13] रटै।
कंवारीघड़ारा[14] वींद झोके कटै ।।६

(गीत ६)—१ समूह। २ नगारा। ३-३ समुद्र मर्यादा छोड़ कर। ४ पुत्र। ५ युद्ध। ६ पर्वत। ७ नेत्रों में। ८ तलवार। ९ अचलसिंहजी का पौत्र। १० सूर्य। ११ सिन्धुराग में वीररस को उत्तेजित करने वाले गीत, वड़ी राग। १२ नगारों की आवाज। १३ कवि। १४ जो सेना हारी हुई न हो।

आचार जीतरा खत्री ढोलड़ा वजाय ऊभो,
करै ऊभो अखी[८] वसू ढोलड़ा कंठीर।
अचळेस-हरा रोर[९] रूप मनो तोड़ ऊभो,
हरणुतेस झोका-झोका हेळांरा हमीर ॥४

गीत—नरसिंहगढ़ माहाराज हरणवन्तसिंहजी रो

गीत सपंखरो (५)

चाचै वाखांण प्रथमी भूप सवाई खूमांण वीर,
जांण भेद कायवां[१] सुदत्तो भोज जेम।
मांणरा द्रुजोध गिरव्वाण[२] पती जेम गुणां,
ओढी चाळ धारियों दीवांण जूंझ एम ॥१
खेळणा अनमी खत्री वाटरा अखेला खेल,
गजों भार ठेळणा[३] संग्राम गाढेराव।
रैणांह का उवेळणा[४] प्रभती वसाउ राजा,
अनोखा विरद्दों लीधां क्रोधंगी अभाव ॥२
चरीसरण[५] रैणवां भिड़ जों गजों माठी वार,
काटणा केवियों-दलों[६] [७]सँग्रहे केवांण[७]।
जाळणा[८] सूमड़ां छाती दांनरा करन्न ज्यूंही,
तेज-अंसी[९] झोका झोका उंची तांण ॥३
सुजाव सोभाग वसू सीस वातां रखै साजा,
रूपगां खरीछै जाझा अभीड़ा दातार।
हरणुता निवाजां[१०] पातां आजा अचळेस-हरा,
साहियां[११] ऊधरा आछां सिरे दांन सार ॥४

दोहा

डंड अडंडा नित दियण, खंडण खळां खतंग।
मंडण कुळ हणवंतसी, सुभटां लियां सुचंग ॥१

(गीत ४)—८ अमिट कीर्त्ति। ९ दुख, विपत्ति।

(गीत ५)—१ काव्य, कविता। २ हिमालय। ३ हटाना। ४ चरितार्थ करना। ५ देना। ६ शत्रुओं की फौज। ७-७ तलवार लेकर। ८ जलाना। ९ अग्निवंशी। १० परवरिश, प्रतिपालन करना। ११ लिये हुए।

पग-पग फतै करै खग पांणां, जुडै अथांणां खेत जद।
राजो क्रोड जुगां रंग-रसिया, हणवंत भूरा वाघ हद ॥५

गीत—माहाराज हणवंतसिंहजी रो

गीत सुद्ध सांणोर (८)

वसव रखण जस वात धण आथ समपण कवां,
सुज [1]वरण कीत कुळ[1] तरण साजा।
व्रद धरण भुजांमत महण [2]मोती विया[2],
रिण वहण सघण अरि-दहण राजा ॥१
ताकवों पाळगर मछर[3] धर अमर तर,
कमर कस समर जीपण[4] कराळा।
अडर भूपत सघर वीरवर अड़ाकी,
[5]विभाडण अरी[5] सोभाग वाळा ॥२
दियण दत कविन्द जसअकल[6] अनमुख दखै,
वडम तन नृपत वीरत वडाळा।
पाळगर कवां-हित वगत माठी प्रवळ,
[7]अरिंद तोड़ण[7] नरिंदकुळ-उजाळा ॥३
चहोड़ण[8] पखों जळ अमळ दूजा अचळ,
जैत जळहळ कमळ विमळ घण जांण।
अघळ[9] जसअकळ लेवण मयंद पटाळां,
दळ खळों मुड़ावण भोक[10] दीवांण[11] ॥४
ऊमटांनाथ गुण गाथ परखण अखर,
रखण प्रभुता रिधू प्रथी रिम[12] राह।
नखत[13] हणवंत विन वैरियां-नवावण,
महाभड़ फतै पावण जंगां मांह ॥५

(गीत ८)—१-१ कुल की कीर्त्ति को रखने वाले। २-२ दूसरा मोतीसिंह। ३ वीर। ४ जीतने में। ५-५ शत्रुओं को मिटाने में। ६ निर्मल यश। ७-७ बड़े-बड़े शत्रुओं के समूह को खंडित करने वाले। ८ चढ़ाना। ९ अधिक। १० प्रशंसनीय। ११ नरसिंहगढ़ के राजा पहले अपने आराध्य देव रघुनाथजी के दीवान कहलाते थे। १२ युद्ध। १३ ओजस्वी।

करी झंडा फरक थरक उर कायरां।
सुभट साथे लियां भीच[15] रिण साहरां।।
विलाला वाहरे-वाह खग वाहरा।
दुझल अस मेलसी खळ समर दाहरा।।७
घाल अरियों घरे घाय चक लियां घण।
ताहरी जोड़ नह हुओ सोभाग तण।।
जगत जाहर करै सुजस कव जणो-जण।
केहरी[16] डांखियां(थारी) भाट झेले कवण।।८
[17]वीया खूमांण[17] तन पूर छिलते वरै।
राग-रंग हवोळा जांगीयां[18] नद घुरै।।
फतै कर अडर आथांण दिसने फुरै।
सदन उजवाळ हणवंत सारां सिरै।।९
भांण कुळ ताहरी हुआ नावे भती।
करण वैरी हरां जुवां अणभंग जती।।
रजीला[19] प्रगट मुख विमळ जळहळ रती।
तपो जुग क्रोड़ नरसिंघगढ़ नरपती।।१०

गीत—महाराज हणवन्तसिंहजी रो

गीत खुड्द सांणोर (७)

फौजां वोह डमर[1] चकारा फावै, पारंभ अंग अणभंग प्रवळ।
खड़सी केण दिसा अस खातां[2], खाग वजासी केण खळ।।१
रुड़ै त्रमाट[3] हका पड़रागां, तकै ख्याल[4] रथ रूक तरण।
हाले कठी जोध अचळा-हर, रिमां प्रहारण खेतरण।।२
घेंसा हरां लड़ंग देखे घण, प्रसण[5] मरै माथा पटक।
किण रुख चालै आज कराळो, कोमंखी वाळो कटक।।३
भुजडंड अणी छड़ालो[6] भळकै, ऊंसस डारण क्रोध अंग।
चेढक आज अनम[7] वीरतरत, जुड़सी सुत सोभाग जंग।।४

(गीत ६)—१५ वीर। १६ सिंह। १७-१७ दूसरा खुमानसिंह। १८ दमामी। १९ वीर, पराक्रमी।
(गीत ७)—१ समूह। २ तेज। ३ नगारे। ४ युद्ध। ५ शत्रु। ६ सैल। ७ जो नत मस्तक न हो।

आथ करां समपण अलंबलिया, सूंवों [४]चक गाळण समराथ[४]।
फौजां डमर समर अरि-फाड़ण, [५]परस दुवा रूपी[५] पाराथ ॥२
रजवट वट अणघट घटराजै, साभै दान कवांण सदा।
रिम हर खागां वहण रसीला, जुड़ै अचळ-हर खेत जदा ॥३
सुत सोभाग आघ[६] कर सकव्यां, देवण त्याग अथाग दुवांह।
भिड़ भाराथ अरियणां-भंजण, [७]मनरंजण दुनियों[७] इळ मांह ॥४
हणवंत करण हुमायू-हाथां, संक धरै दसदिस-सीमाड़।
जंगों वीर खगों भळ जीपण, भूठा सीह अरिंदां भाड़ ॥५

गीत—महाराज हणवंतसिहजी रै बाइजी रो विवाह आछो कियो जिणरो। (ये बाईजी जोधपुर महाराज श्री जसवंतसिहजी को ब्याही थीं)

गीत (११)

तें कीधो जाग[१] इसो हणवंतसी, कीरत बोल कहाया।
थट रेंणव[२] दस-दिसरा थटिया, (ज्यांने) लाखों दिरव लुटाया ॥१
सोभांणी[३] राचंतां सारै, जस खटियो जग जारों।
आया सुकव सुमौ जस वाका, वित दीधो वड वारों ॥२
ऊमट अचळ-हरा अड़पायत[४], राखण प्रभत अकारां।
जिगन सुणे मिळया कव जाभा, ध्रवै चौळ हिमधारां ॥३
पातां द्रव लाखों लग पाया, पात घणां दत पासी।
आंटीला वातों अखियातों, जाता जुगांन जासी ॥४

गीत—महाराजा हणवंतसिहजीरो

गीत छोटो सांणोर (१२)

मिणधर अजरैल[१] अडर कुळमंडण देवण सदा अडंडां दंड।
सुभड़ो डमर लियों मन सरसै खतम क्रीत सरसै[२] नवखंड ॥१

(गीत १०)—४-४ कंजूसों का मान मिटाने में समर्थ। ५-५ दूसरा फरसराम। ६ आदर, सत्कार। ७-७ प्रजा का मन प्रसन्न करना।

(गीत ११)—१ विवाह-यज्ञ। २ कवियों, चारणों का समूह। ३ सोभागसिहजी का पुत्र। ४ उदार।

(गीत १२)—१ वीर। २ शोभायमान होती है।

दोहा*

तोड़ण थट अरियां तणा, मोड़ण अदवां माण ।
सूर छत्री-ध्रम साहियां[1], खग हथ हरा खुमांण ।।

गीत—महाराजा हणवंतसिंहजी नरसिंहगढ़रो

गीत वड़ो सांणोर (६)

अनड उथाळा दियण रिण गजों काळा अंगा, अतुल वळ उजाळा[1] विरद ओपै ।
पाथ असरा नचळ भोक सिंघ पातळा, रिधु[2] हर-अचळ इळ प्रभत ओपै ।।१
अंसपरमेस रवि-वंस आपायता, समर अर-दहण[3] नित पखां सप्रवीत ।
[4]पेख छौलों सुदत अदन उर प्राजळे[4], वीर राखण धरण क्रीत वेभीत[5] ।।२
करण धक त्राळ किरमाळ[6] जुध काहुळा, सवळ भड़ आंवळा[7] भूळ सरसैत ।
गळै सूंवां दरप[8] देख चक गमागम, नाम उवरै अवन प्रभा नखतैत ।।३
सुतन सोभाग रा हणु सुदती तसो, उरवरां करण-जस सुरांपत ओड़ ।
पती नरसिंघगढ़ पंवारों क्षत्रपती, आज सिरताज जग-मांभ आरोड़[9] ।।४

सोरठा

घरर जांगियां घाव, कायर उर थरहर करै ।
देवण अरियां दाव, हणवंत अस किण दिस हकै ।।

गीत—महाराज हणवंतसिंघजी रो

गीत वेलियो (१०)

आचां आघाट[1] करण दत ऊमट, प्रभता-माणण सिंघ पटैत ।
दोयण[2] घड़ खंडां-भळ डोहण, आंटीला कळहां[3] अखड़ैत ।।१

---

* १ लिये हुए ।

(गीत ६)—१ उज्ज्वल । २ उदार । ३ शत्रुओं को जलाने वाला । ४-४ श्रेष्ठ दान की हिलोरें देखकर कृपणों के हृदय जलते हैं । ५ निडर । ६ तलवार । ७ सज्जित ।
८ घमण्ड । ९ वीर का विशेषण, पराक्रमी ।

(गीत १०)—१ दान दी जाने वाली भूमि । २ शत्रुओं की फौज । ३ युद्ध में ।

दांन केवाण वीरांण पांणां दिपै, जांण रंग मांण गिरवांण पत जेम ।
करण घमसांण[2] अरियांण-तोड़ण कमळ[3], आंण अप्रमाण आथांण अंब एम ॥२
अदेवां जाह उरदाह देवण अनम, करण गजगाह रिण माह काळा ।
गुण कवां चाह नरनाह लीधां गुमर, तवै दोय राह जव्र वाह ताळा ॥३
उपासक जटाधर पटाळा जोरवर, घटां सुभटां थटां जंगों धासैं ।
मांण हठ मंठा दत छटा देखे अमिट, भूप विकटा अंगों तेज भासैं ॥४
तणै सोभाग पातां कुरंद[4] ताहतो, भमर जय पायतो समर-भांमी[5] ।
भीच[6] हणवंतसी खळां अणभायतो, निडर आपायतो[7] आप नांमी ॥५

गीत—नरसिंहगढ़ माहाराज हणवन्तसिंहजी रो

गीत सुद्ध सांणोर (१५)

विमळ अंगों वडवेस नर समंद ताळा विलंद, [1]मुड़ावण अरियणों खेत मजबूत[1] ।
सुतन सोभागरा वडम[2] तन साहियां,धारियों विरद भुज अघट नर धूत ॥१
पटाळा सिंघ भड़ हठाळा नरपती, अरी-भांजण[3] गढों सुदृढ़ आचों ।
जंगां काळा उवर खळों-साळा[4] जवर, विलाला कठालग कीत वाचों ॥२
सरतपत चीतमस अपत अतदत सकत, संहसकर-वंस[5] राजेस साजे ।
दूसरा अचळ तो झोक खग दावरा, भूमंडल अरिंदां-मांण[6] भाजे ॥३
जोध हणवंत मुखक्रांत सोभंत रज[7], सुजळ-कुळ चढ़ावण लियों दत सार ।
वधावण कवंदों कुरब नित महाबळ, ऊमटां-नाथ पटवरण-आधार ॥४

दोहा*

नर नाहर सोभाग नृप, तवां[1] अचळ वड तोल ।
राजै जिण गादी रिधू[2], हणवंत गुणां-हरोळ[3] ॥

(गीत १४)—२ युद्ध । ३ मस्तक । ४ दरिद्री । ५ युद्धविशारद । ६ वीर । ७ स्वावलम्बी ।

गीत १५—१-१ रणक्षेत्र में शत्रुओं को धकेलने में प्रबल । २ बड़प्पन । ३ शत्रुओं को मिटाने वाला । ४ दुष्टों को खटकने वाला । ५ वंश-प्रतापी । ६ शत्रुओं का मान । ७ तेज ।

* १ कवि कहता है । २ वीर । ३ गुणों में श्रेष्ठ ।

लहरी समंद झोक लंकाळा धर वाळा दीरघ धंधीग[3] ।
महपत अरी खगां झळ मेटण सुजस करण कळ हणवंतसींघ ।।२
वेलां छौळकरण अतुळी वळ वीरारस भरियो वेभीत[4] ।
सीखण अर समहरो सदोसा जग-जाहर प्रभतो इळ-जीत ।।३
झळहळ रती कमळ झालाहळ उजवाळा परियां आथांण ।
अचळ-हरा चळचळ अरियोंणा जोध अनम-वंको घण जांण ।।४
वित्त दध नाहर धर छौगा धासण दोयण थाट घणा ।
इळा अथाग लियां कर ऊमट त्याग खाग सोभाग तणा ।।५

गीत—माहाराज हणवंतसिंहजी नरसिंहगढ़ रो

गीत छोटो सांणोर (१३)

असमर[1] इळ-जीत सकळ अवनाड़ा किरणाला ग्रहियां किरमाळ ।
महिप सुजस संसार मझाळा राखण अकळ सकळ विरदाळ[2] ।।१
वीर अचळ-हर जोस वडाळा समर खळां सीखण झळ सार ।
भड़जो सेल रसीला भूपत सुरपत जिम सुपहों[3] सिणगार ।।२
आगाहट गज भिड़ज अरोड़ा वीर भलोड़ा कवों-वरीस ।
घट असहां छड़ियाळ घमोड़ा सुत सोभाग विकट अवनीस ।।३
ऊमट राव हणुंता आछां भूमंडल जीपण[4] भाराथ ।
तंडण गजों विहंडण तेगां अकळ कवों वगसण नित आथ ।।४
[5]धूजै अर थरहर[5] पड़धाकां लीधों सुभड़ सिराकां लार ।
पाज समंद नरियंद पराका जस वाकां प्रगटै जोधार ।।५

गीत—माहाराजा हणवंतसिंहजी रो

गीत वडो सांणोर (१४)

विरद साहियां[1] भुजांवळ अडग भड़ बाघला, सचाळा वसावण क्रीत सारी ।
अचळ-हर वीत वड क्रीत नित ऊधमण, वरपती आसदो कळावारी ।।१

(गीत १२)—३ शत्रुओं को शंकित करने वाला । ४ निडर ।

(गीत १३)—१ तलवार । २ विरदों को धारण करने वाले(क्षात्र-धर्मरत)। ३ राजाओं का । ४ जीतने वाला । ५-५ शत्रु कंपायमान होते हैं ।

(गीत १४)—१-१ श्रेष्ठता लिये हुए ।

गीत—माहाराज श्री हणवंतसिंहजी रो

गीत सपंखरो (१८)

करां ऊवरां उपट्ट मींजां आहंसीक वारू श्रीत,
प्रथी जीत आराण[1] कविंदां प्रीतपाल ।
वंसरा आदीत पखां प्रवीत वांनैत वीर,
ऊचैचित्त वित्त ब्रवै[2] प्रवाड़ां[3] उजाळ ॥१

जंपे तो प्रभत्ती इळा धणु मोतीसींघ वाळा,
रैणां-जीत सत्रां-गाळ सचाला राजांन ।
जीपणां[4] कराळा जंगा विरद्दाला महाजोध,
दूठ अंगां रैणवां हमेस देण दांन ॥२

वजावंदी[5] तोडणा अरिंदा खगां महावीठ,
विरदां अगंजो पांणों-साहियां वेवाह ।
नांमी आय वरीसणां[6] ताकवां उमटांनाथ,
इन्द्र-रूपी सुद्रवों अनमी नरांनाह ॥३

सुजाव सोभाग धिनो नृपत्ती पटाला सेर,
कळां चाळा ताळाधारी आंटीळा कोवार ।
सम्मरां अपाळा सूर घाव थाला सत्रां-साळा,
आथ जुवां काळो कवों समापै अपार ॥४

हेळारा हंमीर हणुतेस झोका भाला-हथां,
केवियां मनाई संक आरांण सकाज ।
सक्र जेम छोळां देण हनोज पातवां साजा,
[7]ओड़े न को आंन राजा वसू सीस आज[7] ॥५

गीत—माहाराज हणवंतसिंहजीरो

गीत वडो सांणोर (१९)

थरर थिये दस देस अर मछर[1] देखे सथर, समर भर कहर भुज लियों साजै ।
घरर अंवटां[2] वजै फजर वागां सघण, रूप इण फरस-हर अडर राजै ॥१

(गीत १८)—१ युद्ध । २ देते हैं । ३ विरद । ४ जीतना । ५ राजा । ६ देना ।
७—७ पृथ्वी पर दूसरा राजा बराबरी करनेवाला कोई नहीं ।
(गीत १९)—१ योद्धा । २ नगारा ।

गीत—महाराजा हणवतसिंहजी रो

गीत वडो सांणोर (१६)

कळह-जीत[1] सप्रवीत विन रीत जांणण सकळ, अडग कुळ-मीत धडचीत आचे ।
[2]कहाड़ण कीत[2] घण वीत छौळां करण, रैण सिर वीर-गुण गीत राचै ।।१
दान कन भोज विध उदध मन लियां दृढ़, नीर चढ़ वंस अर गहण गढ़ नांम ।
दांम वरदान सोभाग तण विलाला, सहायक कवियणां ऊमटां स्यांम ।।२
अगंजी[3] धजाबंद जांण कव-वांण अंग, मांन भंग अदेवां[4] तणा मन मांह ।
रिण फतै ऊवारु अरी थाटां रहच, सधर भड़ करण नित सुपातां स्याह ।।३
हाहुलीसमंद[5] हणवंत अचला-हरा[6], धरा गहरा विरद भुजां धारा ।
अनम घण जांण अप्रमांण दूजा अजब, [7]थिरु धर थिय वाखांण थारा[7] ।।४

गीत—माहाराज श्री हणवंतसिंहजी रो

गीत सुद्ध साणोर (१७)

अमर अंस रिव-वंस नरियंद आपाय़तो[1], इन्द-सम नंद सोभाग इळ-जीत ।
ग्रहण अरियंद सामंद लहरी गहर, विंद कीरत कवां समापण वीत[2] ।।१
वदै संसार आचार धर वाहरै, रिमा उर दाहरै दियण राजेस ।
गजव रिण खाग वळ करण गज-गाहरे[3], दखै दोय राहरै सुजस दस देस ।।२
अथग अणछेह अपहड़ अनम आजरो, प्रसण-दळ[4] साभरो सार पाखे ।
कहर व्रद धरण दुज कवां वडकाजरो, दसूं-दिस राजरो सुजस दाखे ।।३
पंवारण चढावण आव दूजा परस, सरस-जस वात खाटण सकाजा ।
अरी-भांजण[5] थटों भटों चाढे उरस, उमटों राव खग दाव आजा ।।४
पजांवण-दोयणां[6] प्रथी भोका पुणें, कवी धिन-धिन मुखां वांण कहसी ।
वीर हणवंत नृप बार[7] वह जावसी, रिधू जुग चार लग वात रहसी ।।५

(गीत १६)—१ युद्ध विजेता । २-२ कीर्त्तिप्रिय । ३ अजेय । ४ कृपण । ५ गुण के समुद्र । ६ अचलसिंह के पौत्र । ७ पृथ्वी पर आपकी स्थिर प्रसंशा होती है ।

(गीत १७)—१ स्वाभिमानी । २ वित्त, धन । ३ हाथियों को मारने वाला । ४ शत्रु-दल । ५ शत्रुओं को विध्वंस करने वाला । ६ शत्रुओं को जीतने वाला । ७ समय ।

मांणण आथ दूसरा मोती, तांणण दान कवांण तस ।
[3]हांणण रोर[3] सुकवियां हाथां, जांणण गुण अर लियण जस ॥३

सुतन सोभ खूमांण सवाई, सुजस धरण चाई समराथ ।
विरदाई[4] हणवंत महाबळ, हदकुळ आव चढाई हाथ ॥४

गीत—महा० हणवंतसिंहजी रो

गीत सपंखरो (२२)

अखां मांणरा सधीर विनो अगंजी माहेस अंसी,
[1]पांण रा करन्न[1] पाथ वांणरा महीप ।
आंनाड़ा केवांण झलै रिमां थेल आरांण रा,
दाखै गुणों वांण रा वाखांण जंबूदीप ॥१

पटाळा मयंद कवां कुरंद[2] गाळवै पांणां,
वाळवै उधारा वैर अंगां महावीर ।
सत्रों खेत[3] राळवै कराळ तेगां ग्रहे सूर,
हणुतेस झोका करां हेळरा हमीर ॥२

मिणधारी खळां मोड़ों अरोड़ा मारका माझी,
कवां वित्त अवै[4] माठी वारका सकाज ।
दैसोत सारका कोट असार का आन दळां,
गुणे क्रीत संचाळका पात इळा माज ॥३

सुजाव सोभाग नाथ ऊमटों आंटीला साजै,
[5]भांजे मांण अरिदां[5] तराजै वंस भांण ।
समाजै सुभट्टां संग निंवाजै कविदां सदा,
तवै रैणा प्रभती घरांणे ऊंची तांण ॥४

सत्रां वू खेरियां वाढ़ कईवार महासूर,
मोड़ियां सुपातां हाथां दळद्रां अमाप ।
जंगां काळा अदतारां साला अंगां प्रथी जीप,
जपै ताळा धारी धणा कवी प्रभा जाप ॥५

(गीत २१)—३-३ विपत्ति मिटाने वाला । ४ विरद (श्रेष्ठता) धारण करने वाला ।
(गीत २२)—१-१ कर्ण जैसे दानी । २ दरिद्री । ३ युद्ध भूमि । ४ देते हैं । ५-५ शत्रुओं का मान-मर्दन करते हैं ।

हसत[3] घूमें मसत चाल अस[4] हुंकलै, दसत्त मांनें अरी देख चक दौर।
जांगीयां घोर घण रोर[5] पातां तजै, इम रमें फतै कर सधर चहुं ओर ।।२
भूप खळहळ लंगर लाज तप भळहळ, चळचळै प्रवळ खळ पांण नचळा।
सजै घोड़ो कळळ अकळ भरता धसळ, इसी विध समाजै दिया अचळा ।।३
रहै पासे तुरंग फलंग भरता कुरंग, अभंग अंग सुतन सोभाग वाळा।
हुवै नित राग-रंग उमंग मन हवोळा, संग सुचंग सुभंग सोहै सचाळा ।।४
आव हणवंत-कुळ चढावण ऊमटां, लियां सुभटां थटां संग लाखां।
हटाला वीर दत करण आगाहटां[6], सजो अरिदळां[7] उजवाळ साखां ।।५

गीत—महाराज हणवंतसिंहजी रो

गीत छोटो सांणोर (२०)

अणभंग वडचीत धिनो अड़पायत[1], वंस-चढावण नीर विसेस।
तेज-अंसी तांणण दळ तूभी, आंटीला व्रद लिया असेस ।।१
अरियां तणा थटा अवगाहण[2], उजवाळण परियों अप्रमांण।
काळा जंग दियण दत क्रोड़ों, [3]खाटण जस[3] दूजा खूमांण ।।२
जग जेठी ऊमट घण जांणग, घेटी चळण धारियां धूत।
सुत सोभाग अभावण सत्रवां, इळा सुजस खाटण अदभूत ।।३
अदवां[4] दाह दियण अजरायल[5], प्रथवी प्रभत[6] वसायल पूर।
धरपत्त हणवंत झोक धुरंधर[7], प्रतपो जोस अंगा भरपूर ।।४

गीत—महाराज हणवंतसिंहजी रो

गीत छोटो सांणोर (२१)

वीरत वरियाम झोक भड़ वंका, सुज जीपण[1] संग्राम सुचंग।
अस गज गांम दियण कवियांणों, इळ अमाप व्रद ळियां अभंग ।।१
गाढापत नरपत्त गाढीला, सुरपत भत[2] प्रथमी साधार।
अतवर कीरत तोड़ण अरियां, वप सूरत दत धर वडवार ।।२

(गीत १९)—३ हाथी। ४ अश्व, घोड़े। ५ विपत्ति। ६ दान स्वरूप प्रदत्त गांव। ७ शत्रुओं की सेना।
(गीत २०)—१ धीर। २ वरवाद करने वाला। ३—३ यश को बढ़ावा देने वाला। ४ कृपण। ५ वीर, हठी। ६ शोभा। ७ क्षात्र धर्म की धुर को धारण करने वाला।
(गीत २१)—१ जीतने वाला। २ भांति, तरह।

गाढापत[2] रूपग जांगीगर, मांगीगर रंगां माहाराज।
चाढण वंस आवकर चंगा, दांन उमंगां जोमद्राज ॥२
काळा जंगां केवियां[3] कटकां, भड़ लागों झटकों भांजेस।
अनमी आथ दियण अणथागों, वागों फजर कवां वड़वेस ॥३
सुपह हणुत झोक सोभांणी, वीदग[4] धर वाचैं वाखांण।
ए दोय वात घरांणे आछी, खागत्याग[5] दूजा ब्रूमांण ॥४

गीत—महाराज हणवन्तजी रो

गीत वेळियो (२५)

परगट निज भाल तेज नर पूरा, [1]चूरा अर[1] तेगों मुंह चाढ़।
भाला हथां केहरी भूरा, अहियां अंग [2]रजवट रा गाढ[2] ॥१
जग पाळग भड़ सिरण जोधारां, अर सारां तोड़ण अप्रमांण ॥
धूना विरद[3] लियां धेंधीगर[4], प्रभता धर धारण आपांण ॥२
चाक गुणों अणभंग नित चकिया, अदवांरा[5] थकिया मन अंग।
आठू-पहर सुजस धर अखिया, रोर[6] कवां मुकीया इकरंग ॥३
पालण कुरंद कवां अणपारां, सालण खळां सुतन सोभाग।
उथालण जंगां गज अणचळ, भल चालण कुळ-ध्रम वडभाग ॥४
भांजण मद सूंवां भिन-भिनरा, सहियां करदकरां समसेर।
तोर दोर हणवंत अत तनरा, गाढापत [7]मनरा गिरमेर[7] ॥५

भोपाल रियासत में सोलंकियों का एक मेंगलगढ़ ठिकाना है, वहाँ के ठा० शत्रुशालसिंहजी ने वि० सं० १९५३ में एक बहुत बड़े डाकुओं का गिरोह जो अंग्रेज गव्हर्नमेंट के छावड इलाके में डकेती करके आये थे और रास्ते में मेंगलगढ़ के पहाड़ों में पार्वती नदी पर ठहरे थे—जब शत्रुशालसिंहजी को मालूम हुआ तो अपने सुभटों के साथ गये। कुछ वीर ठा० साहब की तरफ के वीरगति को प्राप्त हुए और ठा० साहब घायल हुए। उधर डाकुओं का मुखिया मय साथी डाकूओं के मारा गया और डकेती का माल छुड़ा लिया गया—जिस

(गीत २४)—२ गंभीर, धीर। ३ शत्रुओं। ४ कवि, चारण। ५ वीरता, उदारता।
(गीत २५)—१-१ शत्रुओं को चूर्णित करने वाला। २-२ क्षात्रधर्म में प्रबल। ३ श्रेष्ठता। ४ प्रभावशाली। ५ कजूस। ६ दुख, विपत्ति। ७-७ सुमेरु गिरि जैसे ऊंचे चित्त वाले।

उवारु कीरती हका वीर वंका दिलां ओपै,
दाखै सोभा अमाप प्रथमी दसूं-देस।
गज्जवी उवेड़ जाडा अरी हरां गाढेराव,
उजाळा प्रवाड़ा भुजां दूजा अचळेस ॥६

गीत – महाराजा हणवंतसिंहजी रो

गीत सपंखरो (२३)

प्रथी साधार विरदां भारा नरिंदां सिंघाळां[1] फाबै,
समंद्रां-प्रमांण रीझां करंदां सधीर।
अरंदां गिरंदां घाव घालणा मरदां ओप,
कुरंदां[2] विभाड़ै पातां नौ-हत्या कंठीर ॥१
छौळां देण हमेस अदेवां अंगां मांण छूटै,
रूठै दळां केवियां[3] विछूटै तेगां रोड़।
ऊठे जंगां सैसोन सेरसों क्रोधवंत इखां,
आप नांमी भुटै गजां अगंजी अरोड़ ॥२
दूसरा खूमांण गाढ़ औनाड़ साहियां दिलां,
चाढ नीर प्रवाड़ा सुदत्ती गुणां चाव।
वाढ खगां जमदाढ़ दोयणां[4] विरोळे वीर,
सूर धीर दीपै खत्रीपणै रा सभाव ॥३
नंद सोभाग रा भोका हणुतेस आप नांमी,
भांमी भुजां पैळां दळां भांजै करै भूक।
चौळ चखी चांमीकरां[5] हीरां रीझ देण चंगी,
रोस अंगो अभंगी साहियां दांन रूक[6] ॥४

गीत—महाराज हणवन्तजी रो

गीत वेळियो (२४)

अद कुळ उजवाळ[1] ऊभरा वाहें, पड़दाहों नूंवां अणपार।
नांम करण ऊपर नरनाहां, अण थाहां गुणधर आधार ॥१

(गीत २३)—१ सिंह। २ दरिद्री। ३ शत्रु। ४ वैरियों को। ५ सुवर्ण। ६ तलवार।
(गीत २४)—१ प्रकाश।

दौड़ ठाकर गया और देखा-दिखी, हिये घेका धकी नमाई हीड़।
बोधमतिया[५] मुलक छांड विमुहा[६] वहै, ठौड़ तिण रहै [७]पग मांड[७] राठोड़ ॥४
भरोसो भडां परताप रै भाग रो, डरै नृप [८]दुश्रां ज्यूं[८] नहीं डरसी।
फरकता भडाला संग फिरंगांण रै, फतै करसी जदे पीठ फिरसी ॥५

गीत—सलूंमर-रावजी श्री केसरसिंहजी रो (जो नरसिंहगढ़ के महाराज हनुवन्तसिंहजी की छोटी पुत्री व्याहे थे)

गीत वेलियो (२८)

दीपक-कुळ[१] सबळ भोक वरदाई, विमळ चित्त वडहथ[२] इण वार।
माठा नरां साल मिणधारी, दिल अरणव[३] भोका दातार ॥१
गेंवर द्रब हेंवर गढ़वाड़ा, दत पातां देवण निस-दीह।
पदम-सुतन[४] खटव्रन रा पाळग, सुपहां-मुगट[५] पटाळा सीह ॥२
रैणों सिरै समापण रीभां, लाखों मुखा सुजस लेवाळ।
[६]करगां भोज करन ज्यूं केहर[६], रजधारी[७] पातां रिछपाळ[८] ॥३
माठी समै ऊधमण[९] मांजों, भालम लियों अभनमा भांन।
खाटी प्रभत पढचौ खूमांण, वीरत पाटी तणै विधान ॥४

नरसिंहगढ़ रियासत के प्रथम श्रेणी के ठिकाणा रोंसला के जागीरदार ठा० वर्नेसिंहजी के सवारी की एक घोड़ी बहुत अच्छी थी, उसकी बुधजी ने प्रशंसा की—जिस पर वह घोड़ी उदारमना ठा० ने बुधसिंहजी को प्रदान की, और सविनय कहलवाया कि यह घोड़ी आपके भेंट है। जिसका गीत इस प्रकार है—

गीत सपंखरो (२९)

[१]चौड़ी उराटां वाजोट[१] चंगी वाटां कुरंगां ज्यूं वहै,
[२]वंटा नटां जेम[२] लेतो उडांणां विहंग।

(गीत २७)—५ बौद्धमत वाले, चीनी। ६ विरुद्ध। ७-७ पैर जमाकर। ८-८ दूसरों की तरह।

(गीत २८)—१ वंश के प्रकाश। २ दानी। ३ समुद्र। ४ पद्मसिंहजी के पुत्र। ५ राजाओं के मुकुट। ६-६ दान देने में केशरीसिंहजी, कर्ण एवं भोज जैसे हाथों वाले। ७ रजोगुणी। ८ रक्षा करने वाले। ९ उमंग से दान देना।

(गीत २९)—१-१ चौड़ी छाती वाजोट जैसी। २-२ नट के छोकरे जैसे (उच्छृंखल)।

पर भारत सरकार की तरफ से ठा० शत्रुशालसिंहजी को राव वहादुर का खिताव व खिल्लत मिली। भोपाल रियासत में यह सबसे मुख्य ठिकाणा है। इस पर यह गीत सिढायच बुधसिंहजी ने कहा—

गीत छोटो सांणोर (२६)

छावड़ ने लूट डकेती छाया, मेंगलगढ़ आया निज मेर।
आडां फिरिया राड़ अघाया, सोळंकी लोधां समसेर ।।१
भारत करण परसपर भिड़िया, अड़िया भुज ज्यांरा असमांण।
खळ छल छोड़ खेत तज खड़िया, पड़िया धरण विछूटा प्रांण ।।२
केहर[1] लारे लगे कुंजरों, सत्रुसल लीना लार सही।
दांतां नखां ग्रास जिम डसणों, वैरियां ऊपर खाग वुहीं ।।३
लेले ओट लड़णनु लागा, परमोखी देखी हित प्रांण।
तूटा ज्यां ऊपर खिताळां, काढ-काढ खापां केवांण ।।४
गोळी तीर गेंण गणणांया, धुआधारां ज्वाळ धुकी।
चोर लाग चोटां चळ-चळिया, मिळिया सांमा आय मुखी ।।५
रवि तिण वार तमासो रीधो[2] देखण वीरां खेल दिसी।
पराघाती रो सोक पखारां, तरवारांरी धार तिसी ।।६
धुके कितां धड़ लाग धमोका, हाकां फाटै वाक हिया।
काढ़-काढ़ क्रिरमाळ[3] कजाकां लोह सजाकों मार लिया ।।७

गीत—महाराज सरप्रतापसिंहजी रो चीण रो पैलाँ युद्ध कर फतै करी जिण रो—

गीत सुद्ध सांणोर (२७)

करी मूंम कावल कितों हेमगिर किनारे, धरा पूरव दिखण चढी धाड़ा।
वारनिध लोप पेकन[1] अजव विलायत, मुहिम चढिया गजव मारवाड़ा ।।१
सांमठा सोहड़ां[2] हले चढ़ साकुरा, भाल खग त्रभागा[3] आग भड़ता।
चीणरा देस ऊपर दलों चलाया, भुजा ब्रहमंड रै माग[4] भिड़ता ।।२
करे घण थाट ले साथ सुभटो कटों, राह खत्रवाट री अंग रोधी।
दाट अंगरेज रा दोयणां दियणनु, लाठ रे हुकम दध-वाट लीधी ।।३

(गीत २६)—१ सिंह। २ रुका। ३ तलवार।
(गीत २७)—१ पेकिंग, चीन की राजधानी। २ वीर। ३ त्रिशूल रूपी भाला। ४ मार्ग।

कोमंखी[१०] कराळ जंगां मिले वड़ी प्रळे-काळ,
किरमाळों[११] निराताळ वाजिया करूर ॥२
उभै ओड़ा[१२] घाव वहै हकै चमूं[१३] उभै ओड़ा,
घमोड़ां सावळां[१४] घोड़ां भड़ां दाव घाव ।
झटक्का हजारों वहै सरीरों वटक्का झड़ै,
रटक्का कटक्कां रिमां करै गाढेराव ॥३
ईख्रै भांण आरांण तमासो तुरीतांण ऊभो,
वारंगा[१५] विमांणां मिले मगां व्योम ।
फीलो[१६] झंडा फरक्कै भभक्कै घाव तनां फावै,
[१७]धधक्कै लोयणां क्रोध[१७] जुड़ै रूपीधोम ॥४
कटै गजां अ्रसुंडां[१८] प्रचंडां झड़ै तुंडा केही,
उभै फौजां थंडा[१९] वीर घुमंडा आपांण ।
लेवे मुंडा माहेस जोगणी भुंडा छाक[२०] लेवे,
जुड़ै आडाखंडा जोम छाकीया जोधार ॥५
मुके सेल धुकेधरा दड़कै धड़ां सूं माथा,
मुड़क्कै[२१] कायरां सूरां वकै मार-मार ।
फड़क्कै फींफरा रैणां धड़क्कै केवियां फौजां,
धकै चाढ भांजै उरां घणा सार-धार ॥६
रुठो दळां केवियों क छूटो सांकलां सूं सरे,
उलक्कापात रौ तारो तूटो आसमांण ।
जो सेल कंवारीवड़ा छैल खेल माते जूटो,
खंडाळों निराळों एम दूसरो खूमांण[२२] ॥७
वेढो जुवां अरिदां ठालवै खेत वेढीगारो[२३],
चालवै ससत्रां पंजां वरूथां संचाळ ।
लूथ वथां अंग्रेज सूं सूर काळ-रूपी लड़ै,
उनागांखड़गां[२४] सीह विरद्दां उजाळ ॥८

(गीत ३०)—१० कोधित । ११ तलवारें । १२ वरावरी-से । १३ सेना । १४ लोहे की सांग (छड़) । १५ अप्सराएं । १६ हाथी । १७-१७ नेत्रों से क्रोध की ज्वालाएं प्रज्वलित होती हैं । १८ हाथी की सूंड का ऊपरी भाग । १९ समूह । २० रक्तपान । २१ पीछे हटते हैं । २२ द्वितीय खुमानसिंह (जो इनके पूर्वज थे) । २३ युद्धप्रिय । २४ नग्न तलवारें लिये हुए ।

काच सीसी सरीसी पसम्मां जाडे कंध वाळी,
पदमेस[3] तणौ इसीं वरीसी पमंग ।।१
नळी जंत्र ढळो थंभ प्रसाद चंद्रसी नखां[4],
ताळी छेक जावै न को अंताली तरास ।
जांणो दसूं-दिसां कीत न जावै जावतां जुगां,
हाथां जसूतेस-हरै[5] सामापी व्रहास ।।२
चागरै इसारों लागां चक्री चक्री चाल वाळी,
[6]सिरै वाल वाळी[6] धरै पेंतरा संभाळ ।
राखी रीत ऊमटां घरांणे वाली कीत रीधां,
गुणां साटे दीधी पीळी[7] [8]विजाई गोपाळ[8]।।३
करां रांसला रो धणी सदा ऊंच कारणा रो,
[9]धारणा रो दांनी जेहो भारांणी वेधींग[9] ।
मौजमें वछेरी देतां अणायो सुपातां मोद,
साचो हेत हियारो जणायो वनेसींग ।।४

गीत—महाराज कुमार श्री चैनसिंहजी जो वि० सं० १८८१ में अंग्रेजों से, मुकाम सीहोर में युद्ध करते हुए वीरगति को प्राप्त हुए जिसका—

गीत सपंखरो (३०)

चले आवतां फिरंगी फौजां ऊससे[1] क्रोधार चैनों,
चोळ[2] चखी सारधारां[3] ढाहणा[4] चंचाळ ।
[5]ऊवकै आरावां आग[5] [6]हूवकै जोधारे[6] अंगां,
(जठै)ताता जंगां पमंगां[7] मेलिया निराताळ[8]।।१
वगे वीर हाक जगे[9] ज्वाळ तोपां जेण वार,
ससत्रां संभाळ ठाळ करे महासूर ।

(गीत २९)—३ पद्मसिंहजी । ४ सूंभ (पैर) । ५ जसवन्तसिंह के पौत्र ने । ६-६ अच्छी नश्ल की । ७ पीले रंग वाली घोड़ी । ८-८ गोपालसिंहजी के वंशज । ९-९ दान देने में मारमल के पुत्र जैसा ।

(गीत ३०)—१ उत्तेजित हुआ । २ लाल । ३ तलवारों की धार से । ४ विध्वंस करना । ५-५ छोटी तोपें आग उगलती हैं । ६-६ वीरों में वीररस का संचार होता है । ७ घोड़े । ८ वेगपूर्वक । ९ जागृत होती है ।

फौजां लख पाछो नह फिरियो, गजवी वीर जंगां गेहरियो ।
विमळ उछाह अपछरां वरियो, इळ विच नाम अमर ऊवरियो ।।६

गीत—चंडावल ठा० श्री सगतसिंहजी रो सिढायच बुधजी रो कयोड़ो

गीत सोहणो (३२)

कमधज सगतेस करंतां व्यावर[1], कंवर मांड है हरक कर ।
सोभ कना उपकंठ मानसर, पात मुराळ उजाळ पर ।।१
चित्त उजाळ दीध वित छौलां, भुयण उधारण वात भली ।
खित जाहर पंगी[2] खैड़ेचा, हिमगिर हुंता गंग हली ।।२
धणी चंडावल विया गोरधन, करवा दत नह कीध कुमी ।
महि ऊपर प्रभता[3] राव मारू, सरदचंद चाँदणी तणी ।।३
आदू-रीत सभाव ऊजळा सोह, चढावण प्रसिध सुंणी ।
इळ-कीरत ऊघड़ी अमोलक, कनक[4] जड़ी जिम हीर-कणी ।।४

गीत—रावत श्री बळबहादुरसिंहजी रियासत राजगढ़ का, बुधसिंहजी रो कयोड़ो ।

गीत छोटा सांणोर (३३)

ओपम की कहुं ताहरी ऊदा, धजबंधी[1] बैठौ छत्र धार ।
सिंघासण वीरत दरसाई, सरसाई[2] कीरत संसार ।।१
[3]तण वखतेस-वंस[3] निज तारण, वसुधा सीस उबारण बोल[4] ।
मोहण नवळ नखत मुरजादा[5], तें जादा कीधी नभ तोल ।।२
माळवपत ऊमट-कुळ-मंडण[6], चढ़ी प्रभा ढुळतां चमर ।
आदूरीत[7] घरांणे वाळी, उजवाळी बीजा अमर ।।३
बळीवहाद्र[8] विनो अतुळीवळ, जसमुख दाखै[9] जणो-जणो ।
जग सारै कीधो घर जाहर, पाट विराज सपूतपणो ।।४

(गीत ३२)—१ विवाह । २ कीर्त्ति ३ शोभा । ४ स्वर्ण में ।

(गीत ३३)—१ राजा । २ शोभायमान हुई । ३—३ बखतसिंह के वंशज । ४ बात-रखना । ५ मर्यादा । ६ ऊमट-कुल की शोभा बढ़ाने वाले । ७ परम्परागत रीति । ८ बल बहादुरसिंह । ९ उच्चारण करते हैं ।

केता धजां[२५] पछाड़े रचाड़े खेत नरां केतां,
अखाड़ मचाड़ै वीर विहंडे उदार।
नीवड़ै झटक्कां झड़े लड़े तीन जांम अभे[२६]
[२७]सुजाव सोभाग[२७] पडे कंवरा श्रंगार ॥९
अच्छरां वधावै राग-रंगां गावैं मोद अंगां,
अढंगा उवारे हका प्रभत्ती असेस।
पांचसै सुभट्टां साथ करे इन्द्रलोक पूगो,
[२८]ऊमटां चढ़ावं आव वियो अचळेस[२८] ॥१०

गीत दूजो—कंवर चैनसिंहजी रे युद्ध रो

गीत पालवेणी (३१)

चख वाधै साज सेन चतुरंगी, [१]सांमण कांठळ[१] जेम सुचंगी।
जळहळ[२] सेळ घरहरे जंगी, फजर वगां आवियो फिरंगी ॥१
आगे चैन पाथ ज्यूं अणचळ[३], विढण[४] काज ऊठै दाखे वळ।
चग असमर[५] समहर विच वळवळ, दुसह जोस आहुड़ै उभै दळ ॥२
चप कायर थरहर जिण वारां, पळचर गहर वाज पंखारां।
अखर अछर[६] अंबर अणपारां, करकर वळ भड़ लड़ै करारां ॥३
धमचक मचक धरा हुय धड़धड़, हंसे मुनिंद्र देख जुध,हड़हड़।
फावै वरण फींफरा फड़हड़, झटकों सीस पड़ै धड़ झड़झड़ ॥४
उड वरंग तूट रुंकां[७] अत, मुरड़ै धड़ा वीर दुरधों मत।
भंवर अणी [८]जमराज तणी भत[८], वाहै खाग जठै वर वीरत ॥५
वरै वरण जुंझार वडाळा, खळहळ रुधिर इळा पर खाळा।
क्रोध चखां भटकै कळ चाळा, कंवर तणा भड़ लड़ै कराळा ॥६
लाखों फिरंग तोड़ घण लाडो, गुमर[९] धार रुपियो गुण गाढो।
जुध सीहोर खेत कर जाडो, अणखीलो[१०] पडियो नर आडो ॥७
सुतन सोभ कंवरों मिणसारों, परम अंस उजवाळ पवारों।
[११]धड़ चेरितां कितां खग धारो[११],जडलग[१२] हथ पौढे रिण जारों ॥८

(गीत ३०)—२५ घोड़े। २६ निर्भय। २७–२७ सोभागसिंह जी के पुत्र। २८–२८ द्वितीय अचलसिंह, ऊमट-वंश की शोभा बढ़ाने वाले।
(गीत ३१)—१–१. श्रावण की घटा। २ चमकता हुआ। ३ स्थिर। ४ युद्ध। ५ तलवार। ६ अप्सराओं का समूह। ७ तलवारों से। ८–८ यमराज की भांति। ९ हठ करके। १० घायल। ११–११ तलवारों की धारों से टुकड़े-टुकड़े कर दिये। १२ तलवार।

अधारण अरस खटतीस[1] सु ऊधरा, चुरसधक पंकरा धाव चावा।
सुरस गजघड़ा[2] काढण धजर सूसरा, दूसरा फरस तस सिरै दावा ।।२
उजागर पाट खत्रवाट रा आभरण, नाट भगवाट रा धारियां नेम।
ऊगतां भांण दीवांण जग ऊपरा, ताहरा पांण खूमाण रा तेम ।।३
वरंग अरि करण उचरंग धरै वहादुर, तरंग गत तणा परवाह तेहा।
आस्तिक छौल दत दियण आगाहटां, ऊमटांनाथ रा हाथ ऐहा ।।४

गीत तीजो—मोतीसिंहजी नरसंगढ़-महाराज रो, भाऊजी रो कयोड़ो

गीत (३७)

[1]धड़चण अरि थाट[1] खुरां खग धारा, कमलागढ़ दावण कसवार।
पुड़वै हु न धरै चित पाछी, असकाछी ऊमट असवार ।।१
धाव[2] विहंग जिम अभंग धारणा, रिमां डंड देणा फिरै वार।
रिण जंग फतै उतंग हुय रूकां[3], पमंग[4] निहंग जा चढै पंवार ।।२
ओपे पाव धाव रिण अणचळ, गढां पाड़ रिण पाड़ गयंद।
अरिदळ वहण हुयण की इचरज, मोरखंध हय चढै मयंद ।।।।३
तिण दळ साह गढां जड़ तोड़ा, नरवहिया जोड़ा ध्रम नूत।
मोती तूज तणा खळ मोड़ा, प्रथमी सिर घोड़ा रजपूत ।।४

गीत—दीवांण (राजा) मोतीसिंहजी रो, भाऊजी रो कयोड़ो

गीत (३८)

सझै काछियों[1] ऊडणां भड़ां कजाकां भीड़ियों,
सिले[2] धमाधमें मेदनी ओदका पड़ै धाम।
गाजतां त्रंबाटों[3] डाकां पातसाहां सोभाग में,
रमें सूरां नाहरां सिकारां मोतोराम ।।१
गाहटै है-खुरां धरां नगारां वाजतां गिरां,
भगारां[4] आसियां धरा पड़ै ऊगै भांण।
घाट आसुरांणे[5] तणा खाग झाटों वाह ठेले,
डाढ़ाळों लंकाळों[6] खेळे आखेटां दीवांण ।।२

(गीत ३६)—१ छत्तीस। २ समूह।
(गीत ३७)—१-१ शत्रुओं के समूह को काटने वाले। २ दौड़। ३ तलवारें। ४ घोड़ा।
(गीत ३८)—१ घोड़े। २ बख्तर। ३ नगारा। ४ भगदड़। ५ मुसलमान। ६ सिंह।

गीत—सिकारपुरै ठा० वभूर्तसिहजी रो मरसियो

गीत (३४)

तूटा नह फूल वाढ़ तरवारां सात्रव[1] खेत न सूता।
मनड़ो नह मांनै राव मारू [2]वीसम गयो[2] वभूता ॥१
गोळी वांण नही गड़वड़िया तड़फड़िया नह ताई।
मोच अभंग भीच[3] मुरधररा अणचीती किम आई ॥२
हेंवर[4] वेढन को हड़वड़िया अरी न भिड़िया आडा।
पोहव कवन्ध सिकारपुरा रा जोखमियो[5] किम जाड़ा ॥३
पड़िया चळ दळ[6] नहीं पागती जेर करण खल जांनै।
करणो जिकूं विधाता कीधी (पण) मरणो हियो न मांनै ॥४

गीत—राजा अचळसिहजी नरसंगढ़ रो, सिढायच भाउजीरो कयोड़ो (बुधसिहजी के पितामह)

गीत (३५)

अवतारों इन्द्र माळवै अचळो, वीत[1] समापण क्रीत[2] वरै।
लाखां कुरव क्रोड़रा लेखा, कौडी हुंत लांखरा करै ॥१
गाढेराव[3] तपै नरसिहगढ़, आसत इती धारियां आज।
गिर जितरा राई कर गेरे, राई हुंत करै गिरराज[4] ॥२
नाम[5] प्रमांण करै जग-नांमा, नंद खूमा दातार निगेम।
सुद्रस दीये निहारे सांमा, जैता थये सदामा जेम ॥३
विक्रम भोज सवर इण वारे, धारे अंजस उजीणी धार।
परसा-हरो हुमांयू पारस, सुरतरु अचळो प्रथी साधार ॥४

गीत दूजो वडो सांणोर (३६)

कंदळ विभाड़ण क्रोधरा पाथ कर, अकळ खग त्याग विरदां उजाळा।
सकळ कुळ छळां हिदवांण रा स्याय कर, अचळ भुजवळ प्रवळ तूझ वाळा ॥१

(गीत ३४)—१ शत्रु। २ मृत्यु को प्राप्त हुए। ३ वीर। ४ घोड़े। ५ अवसान, मृत्यु। ६ सेना।

(गीत ३५)—१ द्रव्य। २ कीर्त्ति के लिये। ३ गंभीर। ४ हिमालय। ५ अचल।

परी-सी निरंतां[५] सोहै वाटका उलटा पौड़ां,
हावां-भावां दपट्टा झपट्टां देण हार।
सुभावां सुचंगा पंगी[६] धिगारां लगावा सारु,
दूथियां[७] पमंगी[८] एही वरीसी दातार ॥२

हलंवी काच-सी अंगा पसमा [९]समीर हाळी[९],
अंजळी पियांण नीर वेवरी अमाव।
अमीर सोभाग वाळे कायवां[१०] वासते अखां,
हाथां हणुतेस वीर उबारी[११] है राव ॥३

निरक्खे वखांणी दसू-देसरा दूसरां नरां,
जांणी सिंधां-तटां[१२] तांई प्रभत्ती जरुर।
[१३]हांणी रोर पातवां[१३] ऊमटांनाथ मोती-हर,
समापी वडाळी काठीयांणी[१४] महासूर ॥४

अदत्तारां[१५] मांण मोड़ी निखोड़ी सुभावां ओपै,
पातां-रोर तोड़ी अंगां भळोड़ी अपार।
घणा झोका झोका दाखां वाहरे पीलोड़ी घोड़ी,
हाथां झोका झोका एही घोड़ी देण हार ॥५

छप्पय—श्री महादेवरा सिढायच बुधजी रा कयोड़ा

छप्पय

संकर गुरु सहज में श्रवण शिव नांम सुणायो।
जग झूठो जंजाळ दिव्य नयणों दरसायो॥
त्याग ग्रहण दुज तणो विगत सूं ग्यांन वतायो।
मतमतांत्र मरजाद वाद अविवेक वहायो॥
हुं महिमा कर कितियक कहुं हृदय मोह-माया हरी।
अघ हरण मंत्र उपदेस उर करुणानिध किरपा करी ॥१

पातक दहण प्रचंड भीर संतां भव-भंजण।
अलख विस्वपत ईस-रमण गिरजा मनरंजण॥

(गीत ४०)—५ नृत्य करने में। ६ कीर्त्ति। ७ चारणों को। ८ घोड़ी। ९-९ पवन जैसी वेग वाली। १० कवियों। ११ प्रदान की। १२ समुद्र के किनारे। १३-१३ चारणों के दुख को मिटाने वाली। १४ काठियावाड़ देश की। १५ कंजूसों का।

केकांण पाखरों कसै केवांणां[७] धारियां करां,
सूरां मार लीजिये लीजिये मार सीह।
भळाड़ों मेळिया थाटां वंबाळां[८] घुरंतो भूरो[९],
अडाड़ों सभाड़ों रमें दलारो[१०] अवीह ॥३
मारे मांण पातसाहां केकांण वरीसे मौजां,
प्रतपै ऊमटांनाथ [११]फरसरै पाट[११]।
थाहां सूरां ओदकै ओदका पड़ै खळां-थाट,
नाहरां ओदका[१२] पड़ै थाहरां निराट ॥४

गीत मरसियो—प्राडल्ये ठा० कोकसिंहजी रो, बुधसिंहजी कह्यो

गीत (३९)

जग में कर नाम सरग[१] दिस जातां, दुवा जैतसी खांच दिल।
इण तन हूंता कियो आंतरो[२], पड़ै पांतरो नहीं पळ ॥१
सुतन गुमांन सुजस कर संगी, अमरापुर[३] कीनो आवाद।
समता मन ममता न समावै, आवै घड़ी-घड़ी में याद ॥२
गजन-हरा[४] थारो गरवापण, दीठो जिसो न दीठो दीठ।
चित हित मत मुरजाद चलण में, पाछी फेर मिलणने पीठ ॥३
धर विचहरतां तथा और घर, जावन देस-विदेस जदें।
सोक[५] दियो सो हियो सांसवै, कोकसींग भूलै न कदे ॥४

गीत—महाराज हणुतसिंहजी घोड़ी बख्शी जिणरो, बुधजी रो कयोड़ो

गीत (४०)

थोका अरिंदां[१] पाल री काठी वाड़री नीपनी थेट,
विसाल री उरां तुच्छी[२] पड़च्छी वखांण।
सुचाल चालरी [३]हिय दरार घालरी सूवां[३],
कविंदां समापी सिरेवालरी[४] केकांण ॥१

(गीत ३८)—७ तलवार। ८ नगारा। ९ वीर। १० दलेलसिंह का। ११-११ परसरामजी की राजगद्दी पर।

(गीत ३९)—१ स्वर्ग। २ अन्तर, दूरी, वियोग। ३ स्वर्ग। ४ गजसिंह का पौत्र। ५ दुःख।

(गीत ४०)—१ शत्रुओं। २ छोटी। ३-३ कृपणों के हृदय को विदीर्ण करने वाली। ४ श्रेष्ठ नस्ल की।

अजोनी नाथ तारण-तरण मेटण दुख जामण-मरण ।
विच हृदय धार सिमरे बुधा सिवसंकर असरण-सरण ।।६

भव व्यापक भगवान ध्यान-धुन धरण जोग-धुन ।
करण ज्ञान परकास महा अघ-हरण वंद मुन ।।
तेज तत्व तम त्रसण वसण किवलास गवरवर ।
रसण सुजस जग रटण दुसह दुख ग्रसण दिगंबर ।।
निध दियण दास साहिक निकट सुरसुरि ध्रुव-धारण सुधा ।
गहि सरण मिटै आवागमण विमळ चरण श्रीहर बुधा ।।७

इच्छा हूंत उदार प्रथम जग आप उपायो ।
तिमर-हरण तत तेज नेत्र रवि-रूप निपायो ।।
जीव अज्ञानी जिको कारणै ज्ञान करी कथ ।
सिव-सक्ती-संवाद सुणत आणंद होय श्रुत ।।
जग-जणणि उमा अघ जारिणी जगत-पिता जग जांणिये ।
करुणानिधान कल्यांण क्रत विसद[1] सुजस वाखांणिये ।।८

कहत वेद उंकार एक निज रूप अवचल ।
सासत्र-मत[2] अनुसार वतावत विगत सु विमल ।।
आगम सुजस उदार विसद अत प्रसिद्ध वतावै ।
सारद नारद सेस पढत व्रद पार न पावै ।।
कव बुधो कीत कितियक कहै तिमिर मिटावण ताह रो ।
कहि रसण थाह पावै कवण गुण संकर अवगाह रो ।।९

करी उपाय कितीक जिती निज आश्रय जांणी ।
पूछी सत पुरसांह कही ज्यां सार कहांणी ।।
सुणी पुरांणां साख कथी सद कथा कविंदां ।
आतम-ज्ञानी अवर जोय साखी जोगिंदां ।।
मत देस काल प्रक्रत मुदै जुदा-जुदा दीसै जंहीं ।
सिव नाम सरव व्यापक समज सत्य एक भ्यासे सही ।।१०

१ पवित्र । २ शास्त्र सम्मत ।

अंग-भसम अवधरण[1] तरण-तारण जग-त्राता।
धिन जोगी अवधूत सेव कीधां सुखदाता ।।
नर नाग देव आगम निगम गहर मुनी जस गाइये।
हर सदा तूझ आरत हरण बुधा न चित विसराइये ।।२

दै तूं संपत देव विपत पण तूझ विडारै।
तूं सुख दियै तमाम निपट दुख तुंहिज निवारै ।।
वड़ा पुन्न तूं स्रवै[2] पाप मोटा परजाळै।
मुगती दियै मानवां गहर भव-बंधन गाळै ।।
सिमरियां संभू असरण-सरण मिटै नरां आखर मठा।
तूंहिज तूं नाथ तारण-तरण जगकारण धारण जटा ।।३

अंग-वभूत अवधूत सिवा अरधंग सु राजै।
मुख प्रसन्न तन विमळ विहद कर डमरू विराजै ।।
हार व्याल हिडुलै गरल कंठ रजै गहव्वर।
भाल-चंद्र भळहळै सीस खळहळै सुरसुर[3] ।।
चख अरुण करण-कुडल छजै उतमंग मुगट अनूपरा।
पिनांकी जटाधारी परम(हुं) वारी इण छिव ऊपरा ।।४

दिख प्रजेस जिग दलण[4] महा त्रिपुरासुर मारण।
पियण हळाहळ प्रथक अखिल त्रहुंलोक उवारण ।।
जाळंधर जोखमण[5] इन्द्र मन गरव-उतारण।
मदन-दहन खिण मात धिनो चरितों जटधारण ।।
कैविलास गिरंद वासो करण जग उदार जस जगिये।
समरथ न को संकर सरिस (बुधा) इसो धणी ओलगिये[6] ।।५

सिवसंकर सिमरियां सकळ संपत सरसावै।
सिवसंकर सिमरियां निकट त्रयताप न आवै ।।
सिवसंकर सिमरियां परम आणंद प्रकासै।
सिवसंकर सिमरियां विकट अघ ओघ विणासै ।।

१ धारण करने वाले २ देते हैं। ३ गङ्गा। ४ नाश करनेवाले। ५ मारने वाले।
६ पहिचानिये।

छप्पय

पाटण जिण दिन फरस[1] रांण संग्राम[2] उदैपुर।
रामपुरे रतनेस[3] बुंदी बुधपत[4] हाडां घर।।
रावत [5]मोहन अमर धीर[6] खीचीयां धुरंधर।
छतो[7] बुंदेला छात राज गजसीह[8] नरव्वर।।
उण वार इता अब तूं अचळ उजवाळण कुळ ऊमटां।
सांसणां गजां लख साकुरां[9] सुरयंद समापण जस-सटां[10] ।।

श्री गंगाजी री स्तुति रा दोहा, सोरठा बुधजी रे कयोड़ा

दोहा

सुखम लखैं कोइ सुखमणा, धार अनूपम ध्यांन।
इण कारण इळ अवतरी, सुरसरि नदी समांन।।१

सोरठा

जोग करण हठ जंग, प्रथा दिखावण प्रांणियां।
गरवो जायो गंग, भीसम सुत भागीरथी।।२
[11]वेद उलांघे वाट[11], विषय फलर भूला वहै।
कळंक जिकां रा काट, जीव उधारै जान्हवी।।३
गंग न भीनो गात, निरमळ जळ पावन नदी।
प्रांणी सूकरपात[12], जे किण दिस उड़ जावसी।।४
प्रांणी रेळापेळ, सांपड़वा[13] आवै सुजळ।
झटत वहै अघ झेळ, समंद डुबोवण सुरसरी।।५
ब्रह्मलोक रो वास, सूनो लख धर-संचरी[14]।
सुरसरि कियो सुवास, भरथ-खंड मानव भरै।।६
सुरसुरि समंद समाय, रहै निराळी रूप सूं।
ब्रह्म गुणां विलगाय, मिलै न ज्यूं जीवां मही।।७

१ परसराम। २ महाराणा संग्रामसिंह। ३ रतनसिंह चन्द्रवंशी शिशोदिया। ४ बूंदी के राजा राव बुधसिंह। ५ राजगढ़ के मोहनसिंहजी। ६ धीरजसिंह खिलचीपुर के। ७ बुंदेला शत्रुशाल। ८ गजसिंह नरवर नरेश। ९ श्रेष्ठ। १० यश के लिए। ११-११ वेद-मार्ग का उल्लङ्घन। १२ सूखे पत्ते की तरह। १३ स्नान करने। १४ पृथ्वी पर अवतरित हुई।

मतमतान्त रो मूळ जगत रो कारण जांणो।
सत पुरसां रो साच निगम प्रत तणों निसांणों।।
साहिब संतों तणो……रौ प्रांण प्रचै पद।*
जांण सकल रो जांण सरब ध्रम तणो सार सद।।
भव-समंद तरण मेटण भरम परम तत्व परमांणियै।
गुर तणौ ज्ञान-दीपक गिणौ जिको नाम सिव जाणीयै।।११

करै रतन काकरा जिकण खायां तन जोखो।
रुच आभूषण रुचै धरै मन तसकर धोखो।।
संचिया चलै न साथ पलक में हुवै पराया।
मनसा अटकै मुआं कहै अहि[1] पावै काया।।
सतगरु दुकांन सूंगो सुलभ मिले जिकां मन मीज सूं।
अमोलक रतन सिव-नाम उर चित सुध लिये न चोज सूं।।१२

गिण-गिण बांधी गांठ हरख माया मन हूंता।
धरी रही विच धांम सेज[2] जद आखर सूंता।।
वस ठगणी[3] वे काम रह्या जे चहिया रीता।
विध सुकृत वापरी जिके जमवारो जीता।।
माया जंजाळ अळुझे मुआं वलियो कागद वांचियो।
………………………………………………………… ।।१३*

नरसिंहगढ़ के दीवान (राजा) अचलसिंहजी जिस दिन क्रोध में होते, चाहे इजलास में होते अथवा महल में होते, सिर पर पघड़ी उलटी फिराकर रखते थे। उस वक्त उनके पास बगैर उनकी मर्जी के कोई नहीं जाता था। अगर कोई चला जाता तो उसे पिटवा देते थे अथवा भारी दण्ड देते। एक दिन सिंढायच भाउजी किसी समय उनकी पगड़ी फिरी हुई थी, चोपदार के आगाह करने पर भी महल में चले गये और अग्रिम पृष्ठाङ्कित छप्पय बनाकर वहीं सुनाया। राजा जी बहुत प्रसन्न हुए तब से भाउजी विशेष कृपापात्र हुए।

---

१ सर्प। २ मृत्यु शय्या। ३ ठगनी माया।
*११ वें व १३ वें छप्पय के रिक्त स्थान वाले अंश मूल प्रति में धुल चुके हैं।

शाप वशिष्ट समेट, वन-वन में फिरता वसू ।
पाप पचायो पेट, देवधुनी[1] करने दया ॥२०
गया न थारी गैल, मैल उतारण मांनवी ।
वहिया ज्यूंहिज वैल, भार भरण भागीरथी ॥२१
असमंजस नृप आद, सफल फली तप साधना ।
वडकों[2] टली विषाद, भागीरथ भागीरथी ॥२२
निज घर छायो नाहि, व्रह्मलोक कैलास विच ।
मिळी न सागर मांहि, मानव हित मंदाकिनी ॥२३
सुरसुति जमना संग, कीनो तोसूं हेतकर ।
रज[3] तूं मेट्यो रंग, सतगुण भीनी सुरसरी ॥२४
दियो न हिमगिर दाव, गाहटती वाका गिरां ।
भागीरथ रो भाव, आई गंग उतावळी ॥२५
पाप करै परचंड, जम डंडां लायक जिके ।
तारै जीव अभंड, भेट हुआं भागीरथी ॥२६
सुर मुनि चारण सिद्ध,सिद्धकरण कारण सकल ।
पुहमी धार प्रसिद्ध, भरथ-खंड भागीरथी ॥२७
मत प्रकृति सर मंग, करण उदै थारी कळा ।
ऊजळ निरमळ अंग, जाहर दीठो जान्हवी ॥२८
हरी सतोगुण होय, तमगुण रंगभीना तिके ।
हुई न गंगा होय, रंग आपसूं और रंग ॥२९
धर पर थारी धार, हिमगिर सूं नह हालती ।
सारा नर संसार, जमपुर-मारग जावतां ॥३०
[4]मही समांणी[4] मात, भागीरथ रै भाव सूं ।
जमपुर-मारग जात, भीड़ मिटी भागीरथी ॥३१
सीतळ पवन सुवास, गंगारै धोरे ग्रहै ।
तन छूटै जम-त्रास, वास वसै किवलास विच ॥३२
ऊगां सूर अंधार, गिरवर डड जावै गुफा ।
धसियां गंगा-धार, दुरै पाप नर देह रा ॥३३

---

१ गंगा । २ वड़े वूढ़ों की । ३ रजोगुण । ४-४ पृथ्वीपर आई ।

पुनवांनां प्रतपाळ, करै जिको इचरज किसो ।
[1]पापी पिन्ड पखाळ[1], सुरग सिधावै सुरसरी ॥८
सुत पितु मात सकोय, हाड न्हांक न्यारा हुवै ।
जिको उधारे जोय, गंगा गम थारी गहण ॥६

दोहा

पाप रचायो पिंजरो, तूं गंगा निसतार ।
थारे की म्हारै थिये, भरिये गाडे भार ॥१०

सोरठा

कोस चारसै कोय, नीर नहावै नांम ले ।
हिये कतारत[2] होय, भजन कियां भागीरथी ॥११
देह [3]पड़ै जिण देस[3], हाड़ पड़ै हरद्वार में ।
कै पड़ जावै केस, भव[4] तारै भागीरथी ॥१२
केस दिये जो काय, नीर न्हाय गंगा नदी ।
वे भवसागर आय, अमें नही भागीरथी ॥१३
घड़िया मांनव घाट, पापों हंदा पूतळा ।
वहतां गंगा-वाट, मोख[5] किया मंदाकिनी ॥१४
उर भीना अनुराग, तन भीना जळ गंग-तट ।
पग-पग माग प्रयाग, जिग-जिग फल पावै जको ॥१५
अघ भरिया जग अंग, जीव पखाळै[6] जायने ।
गरवापण रो गंग, नहीं छेह देवे नरां ॥१६
हाड पखाळण हाल, जावै गंगा जातरू[7] ।
नर सोई हुआ निहाल, भव तरिया भागीरथी ॥१७
देही नरक-दवार, मैल उतारे तो मही ।
त्यां जीवां निसतार, मुगत करै मंदाकिनी ॥१८
आया अंग अन्हाय, गोता खांह रू गंगजळ ।
जे जम किंकर जाय, भेटे नह भागीरथी ॥१६

१-१ पापियों के शरीर धोकर । २ कृतार्थ । ३ जिस देश में गिरे । ४ संसार से । ५ मोक्ष । ६ स्नान करने । ७ यात्री ।

निगम-पदी जिण नाम, विस्नु-पदी पद विस्नु दै ।
क्यूं रे मनवे कांम, ध्यांन न धारे धारणा ।।४८

जिण गंगा-तट जाय, पित्रां नह पांणी[१] दियो ।
इळ अवतरिया आय, मळ कीड़ा ज्यूं मांनवी ।।४९

चंद दिखावै छौत, ताप दिये आतप तरण ।
साचांणी-सा जोत, गंगारो पांणी गिणो ।।५०

मळ धोवण नु माय, इळ में धारा ऊतरी ।
निरमळ करी निकाय, मांनवियां मंदाकिनी ।।५१

क्रमीन कीट कुरंग, जीवतड़ा मांनव जिके ।
गया न मारग गंग, सांपड़वा[२] निरमळ सुजळ ।।५२

समदर गई सकोय, विण गंगा संगम वहै ।
खार मिळी गुण खोय, आपो छोड़े आपरो ।।५३

कादै[३] विच कळियाह,जळिया केई सिसु तेल जळ ।
गंगा अघ गिलियाह, पाछा नह चलिया पगां ।।५४

ब्रह्मद्वार री वाट, देख लखौ हरद्वार में ।
घट-घट मांहे घाट, जांणो सो नर जांणियो ।।५५

घेरा दे-दे घाट, काट-काट हिमगिर किया ।
विधना काढी वाट, सुरग वसावण सुरसरी ।।५६

समजळ समतळ संग, कठण पहाड़ों काटवा ।
गती तु हाली गंग, अदभुत दीठी आंखियां ।।५७

अवगुण छूटो अंग, तमगुण रंग हूंतां तिको ।
गुण थारा लख गंग, सिव उतमंग[४] राखै सदा ।।५८

तीर-तीर तासीर, वरत रही वसुधा विचै ।
सोखे पाप सरीर, सहज सुभावां सुरसुरी ।।५९

मिटी त्रास जम मार, परसंतां सीतल पवन ।
[५]अघ बुझ गया[५] अंगार, भीना जळ भागीरथी ।।६०

माता सुत धण मोय, चोय-चोय मुख चूमियो ।
हुवै तो ऊरण होय, गंगा हाड गळावियां ।।६१

---

१ जल । २ स्नान करने । ३ कीचड़ । ४ मस्तक । ५-५ पाप नष्ट हुए ।

सागर कीनो संग, संहस धार हुय संचरी ।
रळीन लीनो रंग, कड़वी हुय मंदाकिनी ।।३४
तिण गंगा री तीर, वासो नारायण वसै ।
सीतल परस सरीर, मुगत लिये केई मांनवी ।।३५
थरहर गंगाधार, जटी जटा सूं झरहरी ।
ब्रह्म कमंडल वार, भुवमंडल आयां भलां ।।३६
जावै भागा जेम, कुंजर दीठां केहरी ।
तट जावंतां तेम, भागा अघ भागीरथी ।।३७
साधू साधन संग, पावै गति परमेस्वरी ।
गति सोई देवे गंग, [1]पांणी रो कणको[1] पियां ।।३८
विध पाती वैकुंठ, सूनी होती सिवपुरी ।
घोट पाप जल घूंट, मांनव गंग न मेलतो ।।३९
जीव हुवै केई जोत, चार भुजा केई तीन चख ।
और भाव उद्योत, भव दीठां भागीरथी ।।४०
जागा-जागा[2] जीव, फिर-फिर क्यूं भागा फिरै ।
सरणैं राख सदीव, देवी गंगा देहळी ।।४१
[3]हाल हिया[3] हरद्वार, जिण गंगा तन जीवतो ।
पड़िया हाथ पसार, मुंआंई देसी मुकत ।।४२
प्रांणी करवा पाप, अवतरियो जणणी उदर ।
टलियो चाहै ताप, गंगारो अवलंब गुणी ।।४३
जणणी घणी जमात, पोखण हित परिवार नूं ।
मुगत करण नु मात, सुखमण दूजी सुरसुरी ।।४४
आ थारी अखियात, वात वमेक विचार तो ।
मीठी गंगा मात, खपने समंदर-खार में ।।४५
चतुरानन ग्रह चाल, जाय समांणी सिव जटा ।
हिमगिर ऊपर हाल[4], गंगा तूं सागर गई ।।४६
गंगा कीधी गैल, समजै कोई जिणरी सता ।
जीवन सो तज वैल, आप मिलायां आयगा ।।४७

१-१ जल की बूंद । २ स्थान-स्थान पर । ३-३ हे हृदय चल । ४ चलो ।

सोरठा मरसिया—नरसिंहगढ़ माहाराज महतावसिंहजी रा बुधसिंहजी रै कयोड़ा

सोरठा

मरण तूझ महताव, असह[1] अचांणक आवियो।
खांवंद कियो खराव, मोनू[2] बूढ़ावै मही ॥७४
सजन न दीसै साथ, ऊमर दिन ओछा करूं।
नरसिंहगढ़ रा नाथ, [3]मेल गयो[3] महतावसी ॥७५
हियो फटै दुख हेर[4], कटै विपत रा दिवस किम।
वीसरगो इण वेर, माळवपत महतावसी ॥७६
हणवंत नृप रो हेत, ज्यूंहिज थारो जांणियो।
आखर कियो अहेत, माठै[5] दिल महतावसिंह ॥७७
हरि घर नांहि हिसाव, जाहर मन में जांणियो।
माळवपत महताव, जोखमिये[6] की जांणेन ॥७८
दीन दया द्विज देव, पूजा संकर में निपुण।
अहियो अलक अभेव, निग्रहियो महताव नृप ॥७९
औ नरसिंहगढ़ आज, विरंगो दीसै तो विना।
रोर[7] मिटावण राज, घणो आव मेहताव वर ॥८०
निज़रां आवो नांहि, गढ़ महलां रे गोखड़ां।
मन मुरझावै मांहि, नित तो विण महताव नृप ॥८१
हाथी हलकां हूंत, असवारी करवा अवस।
हित कर सुतन हणंत, भूप आव महताव भव ॥८२
मिंदर संकर मांझ, वातां करण विवेक री।
संकर सेवा सांझ, क्यूं भूलो महताव कह ॥८३
खांवंद आवै ख्वाव[8], निस-दिन सूतां नींद में।
मिळसो कद महताव, जग मांहै मानव जनम ॥८४
वासण गयो विलाय, वांसै[9] रहोज वासना।
जोवां किण दिस जाय, माळवपत महताव ने ॥८५

---

१ असह्य। २ मुझको। ३-३ छोड़ गये। ४ देखकर। ५ निर्मोही। ६ मृत्यु।
७ विपत्ति। ८ स्वप्न। ९ पीछे।

पित्र पती कर प्रेम, पित्र वसावरा पित्रपुर ।
नरां उधाररा नेम, भलो कियो भागीरथी ।।६२

निगमपदी रै नाम, पावै प्रांणी अगमपद ।
जिणरो आठुंहि जाम, सिमरण कर वुधिया संकव ।।६३

हेठो वैठो हार, गहरी करतो गरजना ।
खार समंदर खार, भीनी नह भागीरथी ।।६४

संगी रह्या समाय, रोम-रोम रग-रग रता ।
गंगा दिया गमाय, तें म्हारा पातक तिके ।।६५

सुघड़ां-सुघड़ां ईह, [1]दुरै न[1] ज्यूं परदेस में ।
गंगा गरवाईह[2], आगे वध पाई इधका ।।६६

संहस धार हुय संग, सागर मांहे संचरी[3] ।
आगे एकरण अंग, सो न मिलाया सुरसुरी ।।६७

फुटकर सोरठा भक्ति दृष्टान्त रा बुधजीरै कयोड़ा—

सजन वाळा सोह, वेळा अंत विसारने ।
माया छोड़े मोह, अलवत[4] जाणो एकलो ।।६८

भलपण राखे भाव, हर जिण सूं हक बोलणो ।
साचो औहिज साव, मिनख जनम रो माढवा ।।६९

पड़पण सारू पेख, खाणो पीणो खरचणो ।
हलै न कवडी हेक, मरतां साथे माढवा ।।७०

धन ऊपर चित धार, नांणो[5] जे खरचै नही ।
ले जासी की[6] लार, मरतां साथे माढवा ।।७१

बुधिया मत वीसार, पलक हेक त्रिभुवनपती ।
है ऊ[7] राखण हार, पड़ियां संकट प्रांणनें ।।७२

पावै संकट प्रांण, आवै नह साहिक[8] अवर[9] ।
जिण पुळ [10]आरत जांण[10], धावे वेगो चक्रधर ।।७३

१-१ छिपते नहीं । २ वड़प्पन । ३ प्रवेश हुई । ४ अन्ततोगत्वा । ५ द्रव्य । ६ क्या । ७ वह (ईश्वर) । ८ सहायक । ९ और (अन्य) । १०-१० दया समझ कर ।

कवित्त—महाराज अर्जुनसिंहजी रा बुधजी रै कयोड़ा

विद्या ओ विवेक ओज[1] चातुरता चित्त की त्यों,
नीति की निकाई[2] नृपताई तेसी मन में।
क्षत्री-कुल खेल-ख्यात[3] वीरता विसेस वात,
उर में उदारताई तेज पुंज तन में॥
परजा सों प्रीत रीत मंत्रीगन मोद मान,
गुन की पिछान जान गौरमिन्ट गन में।
अर्जुन नरेस तेरी कहां लों सराह करां,
प्रभुता कों पाय राज पायो वालपन में॥४

केसर के रंग वारो वागो अंग सोहत है,
तैसो ही लपेटो[4] उतमंग[5] जरीतारो है।
भूपन वसन जगमगत जवार-जोत[6],
मानहु नछत्र मान प्रभा को पसारो है॥
वानक किसोरवय [7]रांनक में रूप रूरो[7],
मालव सुदेस प्रजा परम पियारो है।
आनंद के कंद जैसो राजत मुखारविंद,
अर्जुन नरेन्द्र किधों नंद को दुलारो है॥ ५

कवित्त मरसिया—प्रतापगढ़ दीवान (राजा) श्री उदैसिंहजी रो बुधजी रो कयोड़ो

वंस मेदपाटेश्वर ताको अवतंस[8] भूप,
गंगा कैसो नीर मनो सागर में वहिगो।
सज्जन चकोर वृन्द आनंद को कंद अहो,
राका चन्द मन्दमति राहू कैसे गहिगो॥
कठिन करेजा वेजा वात सुन एसी श्रोन,
आरा दुख धारा तें वरारा क्यों न लहिगो।
उद्दल[9] पतन भयो जतन न लागे जस,
रतन अमोल कवि-कंठन में रहिगो॥६

---

१ पराक्रम। २ वहुलता। ३ युद्ध में ख्याति प्राप्त। ४ साफा (पगड़ी)। ५ मस्तक। ६ रत्न-ज्योति। ७-७ सुन्दरता में श्रेष्ठ। ८ श्रेष्ठ। ९ उदयसिंह।

कवित्त मरसीया—खेतड़ी माहाराज अजीतसिंहजी रो बुधसिंहजी रो कयोड़ो

असरन-सरन नाम तेरो जग उच्चरत[1],
बाल प्रहलाद को मिटायो दुख भीत[2] को।
तारन-तरन गजराजहू को तारयो तेंने,
तंतव को तारें चक्र पायो व्रद जीत को ।।
रन तज भागो तातें पायो रनछोर पद,
द्वेष ना दिखायो जग नातो राजनीत को।
अकरन-करन नाम तेरो जान्यो ईस अब,
ऐंरे तें सुनायो कान मरन अजीत[3] को ।।१

कवित्त—नरसिंहगढ़ रा राजां री पीढ़ियाँ रो सिठायच बुधजीरो कयोड़ो

दूदाजू दिवान भये डूगरेस रावत को,
पायो पद दुहुं ठौर रान सुरतान में।
हठेसिंह अजबसिंह ताके सुत फरसराम,
दळा मोतीसिंह क्षत्री धर्म खुमान में ।।
ऊमट अचळसिंह तनय सोभागसिंह,
राजा हनवन्त नीत रीत के निधान में।
नृपत प्रताप महतावसिंह, ताके सुत,
अर्जुन उदार जस जाहर जहान में ।।२

कवित्त—महाराज मेहतावसिंहजी रो

आसतिक पक्ष प्रजापालन प्रतक्ष दक्ष,
सेना पक्ष ज्यूंही कोसाध्यक्ष राजधानी को।
नीति में निपुण पृथु नृपति युधिष्टर सो,
रामचन्द्र रीति मरयाद आद मानी को ।।
मेधावी महान मन पंकज को जैसे रवि,
[4]न्याय को निवेरो करै हंस पय-पानी को[4]।
भूप महतावसिंह प्रवल प्रतापी तुम्हें,
सुयस सराहुं के सराहुं सावधानी को ।।३

---

१ कहता है। २ भय। ३ अजीतसिंह। ४-४ न्याय करने में हंस के समान (जो दूध व पानी को अलग-अलग करने की क्षमता रखता है)।

अर्जुन उदार भूप नृपता तिलक तेरे,
परजा निहाल भई भाल में निहारकै ॥९

कवित्त—महाराज प्रतापसिंहजी नरसिंहगढ़ का वलायत सूं पधारचा जोंको बुधजी रो कयोडो

हिम्मत बहादुर की किम्मत कहां लों कहुं,
नरसंगढ-नाथ परताप[1] नरइन्द को।
साहन के साह कों जुहारचो उरमोद मान,
व्है गयो अचंभो ग्रेटबिट[2] अरु हिन्द को॥
सज्जन चकोर वृंद[3] हेर-हेर चंदमुख,
देर-देर दीह द्रग पावत अनंद को।
दीपान्तर जाय नीके कुरब बढाय आयो,
मोतिन बधायो निज थान मालविंद को॥१०

कवित्त दूजो

ऊजळ अवास[4] खास बदर बिराजमान,
घन की गरज रव[5] दुन्दभी को छायो है।
चात्रक[6] की सोर त्यांही गावत गुनीजन है,
बटत बधाई नीके दांन झर लायो है॥
जरत जवासा[7] जैसे सत्रूगन दाहत है,
सज्जन रहत तरु मोद सरसायो है।
जायके विलायत कों पायके महान पद,
इन्द्र के प्रताप[8] माळवेन्द्र[9] घर आयो है॥११

कवित्त—नरसंगढ महाराज मेहतावसिंहजी रा, बुधसिंहजी रा कयोडा

साख[10] पंचतीसहु को राजा महतावसिंह,
सरद-जुनाई जैसी लागी कुल लाज है।

---

१ नरसिंहगढ़ के राजा प्रतापसिंह। २ ग्रेट ब्रिटेन। ३ समूह। ४ महल। ५ ध्वनि, शोर। ६ पपीहा। ७ पौधा विशेष, जो वर्षा के पानी से जल जाता है। ८ प्रतापसिंह। ९ मालव देश के स्वामी। १० पंवारों की पैंतीस शाखाएँ।

कवित्त—खिलचीपुर राजा अमरसिंहजी को

समय सुभाव तें अभाव भयो दानिन को,
ज्ञानिन की वातें सुनि [1]हियो हहरात है[1]।
दोरे एन असना को रसना न भीजे नीर,
ऊसर में वोऐ कही तूसरहु[2] पात है॥
उद्दल नरिंद वलवंत हनवंत जात,
मालव उदास भयो ताकी सुध आत है।
खिच्चिय नरेस अमरेसहू[3] के हातन तें,
पातन सनातन की तान कछु आत है॥७

कवित्त—नरसिंहगढ़ दरबार श्री अरजनसिंहजी रो, बुधसिंहजी रै कयोड़ो

संपत सुधारक त्यां धारक धरम धीर,
उतरा प्रगलभ विस्व भरता विभूती[4] को।
परम प्रसंस अवतंस[5] वंस ऊमट के,
करता कुसंळ काज राज करतूती को॥
सूरता उदार ताके गुन में गरिष्ट गात,
प्रगट प्रकास पुंज रोस रजपूती को।
अर्जुन नरेस सारग्राही मत सावधांन,
नीत को निदान सांचो अंकुर सपूती को॥८

कवित्त—नरसिंहगढ़ महाराज अर्जुनसिंहजी का राजतिलक-समय को बुधजी रो कयोड़ो

सज्जन समागम को आगम भो आनंद को,
गावत वधाई गुनी गुन को उचारकें।
वाजन अवाजन सों गाजत है गोम गिर,
भूसुर[6] भनत स्वस्तिवाचन सुधारकें॥
मंत्रीगन नजर निछावर करत मिल,
कीरत कहत कवि कोविद अपारकें।

१-१ विदीर्ण होता है। २ घास। ३ अमरसिंह। ४ ऐश्वर्य। ५ शिरोमणि। ६ ब्राह्मण।

संवत गुनीस साल चौवन को पौस सुदी,
तीज बुधवार [1]सुभ सकुन सुभाय कै[1]।
महारानी भारत अधीश्वरी की कृपा भई,
देस-देस दीपन लों प्रभा दरसाय कै।।
गौरमिन्टहू सों गौर करके निहार गुन,
अर्जुन नरेस काज नरसिंहगढ़ आय कै।
वार रजीडेंट मींट साहब अजंट आय,
सदर नसीनी कीनी कुरब सवाय कै।।१५

कवित्त मरसइया—नरसिंहगढ़ महाराज श्री महतावसिंहजी रा, बुधसिंहजी रो कयोड़ो

उजरे अवास में अवाज वीन वाजन की,
गहर अवाज तहां गोम गहरात है।
प्रजापाल नीतहू की रीत निरवाह नीक,
फैली वसूधायै कीत धुजा फहरात है।।
सज्जन-सभा को तज गयो वैकुंठ ऊठ,
विरह वियोग दुख छायो अह-रात[2] है।
भूप महतावसिंह दीठ चहुँ ओर फेरू,
हेरूं पै मिलत नांहि हियो हहरात[3] है।।१६

अगहन मास कृष्ण पंचमी कुं वार कवि[4],
समत गुनीस साल तेपन तपायगो।
कितव अरिष्ट[5] काल निष्ट दिन वेला वीच,
जगत असार को विसार विच लायगो।।
हाय कोन दिसा हेरूं हियो हहरात मेरो,
परम प्रतापी सोइ पर्मपद पायगो।
मालव के देस को नरेस महतावसिंह,
संकर उपासी लोक[6] संकर सिधायगो[7]।।१७

१-१ अच्छे शकुन मनाकर। २ दिन-रात। ३ हृदय विदीर्ण होता है। ४ शुक्र। ५ क्रूर। ६ शिवलोक। ७ गये।

सज्जन चकोर वृंद वाढत अनंद उर,
रहे अरविंद[1] खल मंद छल व्याज है ॥
वटत वधाई त्यां मयूख[2] मग मालव में,
पियुष[3] प्रवाह प्रजा पावत समाज है।
छत्रिन में छत्रधर राजत विचित्र रूप,
मंडल नछत्रन में राका दुजराज है ॥१२

कवित्त दूजो

दूदा जैसो दुधमति[4] [5]हठी हठैसिंह जैसो[5],
सूर अजवेस[6] जैसो छत्रिन-समाजा को।
[7]पन को फरसराम[7] [8]मोती सो विसाल भाल[8],
[9]अचल उदार[9] [10]किरवान चैन[10] काजा को ॥
[11]साख पंचतीसहु को मुगट महीसन को[11],
टीको जसहू को नीको नरसंगढ़ राजा को।
भूप महतावसिंह तेरे भुज भार सोहे,
नंद हनमंत हनवंत कुल लाजा को ॥१३

कवित्त—महाराज अर्जुनसिंहजी गद्दी-विराज्या जींका

धन्यवाद वार-वार कीन हिन्द केसर को,
पारलियामेंट सभा प्रभा[12] के प्रचारक।
धन्यवाद कलकत्ताधीस लाठसाहव कों,
भारत की रीत नीत विविध विचार की ॥
धन्यवाद मालव मुकीम वार साहव कों,
मींटहु अजंट दीठ राखत सुधार की।
अर्जन कों भूप कीनो रोसन[13] को काम दीनो,
नरसंगढ़ क्रीत लीनी सरस सुधार की ॥१४

---

१ कमल। २ किरण। ३ अमृत। ४ दूदाजी जैसा श्रेष्ठ बुद्धिमान। ५-५ हठ करने में हठीसिंह जैसा। ६ शूरता में अजवसिंह जैसा। ७-७ प्रण-निर्वाह में परसराम जैसा। ८-८ मोतीसिंह जैसा भाग्यशाली। ९-९ उदारता में अचलसिंह जैसा। १०-१० तलवार चलाने में चैनसिंह जैसा। ११-११ पंवारवंशी राजाओं में श्रेष्ठ। १२ शोभा। १३ रोशनलाल।

कः स्विद् वृक्षो विष्ठितो मध्ये अर्णसो यं तौग्र्यो नाधितः पर्यषस्वजत ।
पर्णा मृगस्य पतरोरिवारभ उदश्विना ऊहथुः श्रोमताय कम् ॥
तद् वां नरा नासत्यावनु ष्याद् यद् वां मानस उचथमवोचन् ।

[ऋग्वेद-मण्डल-१, सूक्त १८२, ७-८]

☞ स्पष्टीकरण के लिये देखिये त्रैमासिक **'स्वाहा'** दिसम्बर १९६९ का अङ्क ।

☞ सिन्धुलिपि एवं संस्कृति का रहस्य जानने के लिये नियमित रूप से पढ़िये, **राजस्थान प्राच्यविद्या-प्रतिष्ठान,** जोधपुर की त्रैमासिक मुखपत्रिका **'स्वाहा'**

कवित्त—नरसिंहगढ़ माहाराज अर्जुनसिंहजी रा

दक्षता उदार ताको राजत[1] अथाह सिंधु,
धीर ध्रुव[2] धरम धरा को रखवारो है।
गाहिक गुनी को त्युंही साहिक[3] दुनी की नीको,
महत मनी को मोद मांन मतवारो है॥
माळव धरा को ईस मित्र अवनीसन को,
सीस को मुगट न्याय नीत निरधारो है।
भूप अर्जनेस आज पोरस[4] प्रचंड पुंज,
साख़ पंचतीस को अखंड उजियारो है॥१८

गुनन को आगर[5] उजागर जहान वीच,
धीरज को सागर प्रकास जस जाई को।
विहित विचार निज-धर्म अनुरत्त सदा,
चित्त पै न दर्प[6] है प्रभुत्व जग पाही को॥
साख पंचतीस को श्रंगार भुज भार सार,
उदित उदार नीत रीत निपुनाई को।
हेर आन नृपत सराहुं कहा वेर-वेर,
भूप अर्जनेस गिरमेर[7] गरवाइ को॥१६

सवइया—नरसिंहगढ़ माहाराज मेहतावसिंहजी रो, बुधसिंहजी रो कह्यो

सूरज चंद रु बुध कवी भृगु[8] भोम सनातन रीत सों जीके।
राहु रु केत अहेत असम्मत वक्रत[9] छांड सहेत सनीके॥
क्रूर स्वभाव तें सोम भये महताव मया अनुकूल मही के।
पीयट साहव मींट अनुग्रह[10] हो गये सीधे नवग्रह नीके॥२०

---

१ शोभायमान। २ निश्चय। ३ सहायक। ४ पौरुष, पराक्रम। ५ भण्डार। ६ घमण्ड। ७ सुमेरु गिरि। ८ शुक्राचार्य। ९ टेढापन। १० कृपा।

आथ करां समपण अलंबलिया, सूंवों [४]चक गाळण समराथ[४]।
फौजां डमर समर अरि-फाड़ण, [५]परस दुवा रूपी[५] पाराथ ॥२
रजवट वट अणघट घटराजै, साझै दान कवांण सदा।
रिम हर खागां वहण रसीला, जुड़ै अचळ-हर खेत जदा ॥३
सुत सोभाग आघ[६] कर सकव्यां, देवण त्याग अथाग दुवांह।
भिड़ भाराथ अरियणां-भंजण, [७]मनरंजण दुनियों[७] इळ मांह ॥४
हणवंत करण हुमायू-हाथां, संक धरै दसदिस-सीमाड़।
जंगों वीर खगों झळ जीपण, झूठा सीह अरिंदां झाड़ ॥५

गीत—महाराज हणवंतसिंहजी रै बाइजी रो विवाह आछो कियो जिणरो।
(ये बाईजी जोधपुर महाराज श्री जसवंतसिंहजी को ब्याही थीं)

गीत (११)

तें कीधो जाग[१] इसो हणवंतसी, कीरत बोल कहाया।
थट रेंणव[२] दस-दिसरा थटिया, (ज्यांने) लाखों दिरव लुटाया ॥१
सोभांणी[३] राचंतां सारै, जस खटियो जग जारों।
आया सुकव सुमौ जस वाका, वित दीधो वड वारों ॥२
ऊमट अचळ-हरा अड़पायत[४], राखण प्रभत अकारां।
जिगन सुणे मिळया कव जाझा, ध्रवै चौळ हिमधारां ॥३
पातां द्रव लाखों लग पाया, पात घणां दत पासी।
आंटीला वातों अखियातों, जाता जुगांन जासी ॥४

गीत—महाराजा हणवंतसिंहजीरो

गीत छोटो सांणोर (१२)

मिणधर अजरैल[१] अडर कुळमंडण देवण सदा अडंडां दंड।
सुभड़ो डमर लियों मन सरसै खतम कीत सरसै[२] नवखंड ॥१

(गीत १०)—४-४ कंजूसों का मान मिटाने में समर्थ। ५-५ दूसरा फरसराम। ६ आदर, सत्कार। ७-७ प्रजा का मन प्रसन्न करना।

(गीत ११)—१ विवाह-यज्ञ। २ कवियों, चारणों का समूह। ३ सोभागसिंहजी का पुत्र। ४ उदार।

(गीत १२)—१ वीर। २ शोभायमान होती है।

लहरी समंद झोक लंकाळा धर वाळा दीरघ धैधींग[3] ।
महपत अरी खगां झळ मेटण सुजस करण कळ हणवंतसींघ ॥२
वेलां छौळकरण अतुळी वळ वीरारस भरियो वेभीत[4] ।
सोखण अर समहरों सदोसा जग-जाहर प्रभता इळ-जीत ॥३
भळहळ रती कमळ भालाहळ उजवाळा परियां आथांण ।
अचळ-हरा चळचळ अरियोंणा जोध अनम-वंका घण जांण ॥४
चित्त दध नाहर धर छौगा धासण दोयण थाट धणा ।
इळा अथाग लियां कर ऊमट त्याग खाग सोभाग तणा ॥५

गीत—माहाराज हणवंतसिहजी नरसिहगढ़ रो

गीत छोटो सांणोर (१३)

असमर[1] इळ-जीत सकळ अवनाड़ा किरणाला ग्रहियां किरमाळ ।
महिप सुजस संसार मझाळा राखण अकळ सकळ विरदाळ[2] ॥१
वीर अचळ-हर जोस वडाळा समर खळां सोखण झळ सार ।
भड़जो सेल रसीला भूपत सुरपत जिम सुपहों[3] सिणगार ॥२
आगाहट गज भिड़ज अरोड़ा वीर भलोड़ा कवों-वरीस ।
घट असहां छड़ियाळ घमोड़ा सुत सोभाग विकट अवनीस ॥३
ऊमट राव हणुंता आछां भूमंडल जीपण[4] भाराथ ।
तंडण गजों विहंडण तेगां अकळ कवों वगसण नित आथ ॥४
[5]धूजै अर थरहर[5] पड़धाकां लीधों सुभड़ सिराकां लार ।
पाज समंद नरियंद पराका जस वाकां प्रगटै जोधार ॥५

गीत—माहाराजा हणवंतसिहजी रो

गीत वडो सांणोर (१४)

विरद साहियां[1] भुजांवळ अडग भड़ बाघलां, सचाळा वसावण क्रीत सारी ।
अचळ-हर वीत वड क्रीत नित ऊधमण, धरपती आसदी कळाधारी ॥१

(गीत १२)—३ शत्रुओं को शंकित करने वाला । ४ निडर ।

(गीत १३)—१ तलवार । २ विरदों को धारण करने वाले(क्षात्र-धर्मरत)। ३ राजाओं का । ४ जीतने वाला । ५-५ शत्रु कंपायमान होते हैं ।

(गीत १४)—१-१ श्रेष्ठता लिये हुए ।

दांन केवाण वीरांण पांणां दिपै, जांण रंग मांण गिरवांण पत जेम।
करण घमसांण[2] अरियांण-तोड़ण कमळ[3], आंण अप्रमाण आथांण अंब्र एम ॥२
अदेवां जाह उरदाह देवण अनम, करण गजगाह रिण माह काळा।
गुण कवां चाह नरनाह लोधां गुमर, तवै दोय राह जब्र वाह ताळा ॥३
उपासक जटाधर पटाळा जोरवर, घटां सुभटां थटां जंगों घासैं।
मांण हठ मंठा दत छटा देखे अमिट, भूप विकटा अंगों तेज भासैं ॥४
तणै सोभाग पातां कुरंद[4] ताहतो, भमर जय पायतो समर-भांमी[5]।
भीच[6] हणवंतसी खळां अणभायतो, निडर आपायतो[7] आप नांमी ॥५

गीत—नरसिंहगढ़ माहाराज हणवन्तसिंहजी रो

गीत सुद्ध सांणोर (१५)

विमळ अंगों वडवेस नर समंद ताळा विलंद, [1]मुड़ावण अरियणों खेत मजवूत[1]।
सुतन सोभागरा वडम[2] तन साहियां,धारियों विरद भुज अघट नर धूत ॥१
पटाळा सिंघ भड़ हठाळा नरपती, अरी-भांजण[3] गढों सुदृढ़ आचों।
जंगां काळा उवर खळों-साळा[4] जवर, विलाला कठालग कीत वाचों ॥२
सरतपत चीतमस त्रपत अतदत सकत, संहसकर-वंस[5] राजेस साजे।
दूसरा अचळ तो भोक खग दावरा, भूमंडल अरिंदां-मांण[6] भाजे ॥३
जोध हणवंत मुखकंत सोभंत रज[7], सुजळ-कुळ चढ़ावण लियों दत सार।
वधावण कवंदों कुरब नित महावळ, ऊमटां-नाथ षटवरण-आधार ॥४

दोहा*

नर नाहर सोभाग नृप, तवां[1] अचळ वड तोल।
राजै जिण गादी रिधू[2], हणवंत गुणां-हरोळ[3]॥

(गीत १४)—२ युद्ध। ३ मस्तक। ४ दरिद्री। ५ युद्धविशारद। ६ वीर। ७ स्वावलम्बी।

गीत १५—१-१ रणक्षेत्र में शत्रुओं को धकेलने में प्रबल। २ वड़प्पन। ३ शत्रुओं को मिटाने वाला। ४ दुष्टों को खटकने वाला। ५ वंश-प्रतापी। ६ शत्रुओं का मान। ७ तेज।

* १ कवि कहता है। २ वीर। ३ गुणों में श्रेष्ठ।

गीत—महाराजा हणवतसिंहजी रो

गीत वडे सांणोर (१६)

कळह-जीत[1] सप्रवीत ध्रिन रीत जांणण सकळ, अडग कुळ-मीत वडचीत आचे ।
[2]कहाड़ण कीत[2] घण वीत छौळां करण, रैण सिर वीर-गुण गीत राचे ।।१

दान अन भोज विध उदध मन लियां दृढ़, नीर चढ़ वंस अर गहण गढ़ नांम ।
दांम वरदान सोभाग तण विलाला, सहायक कवियणां ऊमटां स्यांम ।।२

अगंजी[3] धजावंद जांण कव वांण अंग, मांन भंग अदेवां[4] तणा मन मांह ।
रिण फतै ऊवारु अरी थाटां रहच, सधर भड़ करण नित सुपातां स्याह ।।३

हाहुलीसमंद[5] हणवंत अचला-हरा[6], धरा गहरा विरद भुजां धारा ।
अनम घण जांण अप्रमांण दूजा अजव, [7]थिरु धर थिय वाखांण थारा[7] ।।४

गीत—माहाराज श्री हणवंतसिंहजी रो

गीत सुद्ध साणोर (१७)

अमर अंस रवि-वंस नरिंयंद आपायतो[1], इन्द-सम नंद सोभाग इळ-जीत ।
ग्रहण अरियंद सामंद लहरी गहर, विंद कीरत कवां समापण वीत[2] ।।१

वदै संसार आचार घर वाहरै, रिमा उर दाहरै दियण राजेस ।
गजव रिण खाग वळ करण गज-गाहरे[3], दखै दोय राहरै सुजस दस देस ।।२

अथग अणछेह अपहड़ अनम आजरो, प्रसण-दळ[4] साभरो सार पाखे ।
कहर व्रद धरण दुज कवां वडकाजरो, दसूं-दिस राजरो सुजस दाखे ।।३

पंवारण चढावण आव दूजा परस, सरस-जस वात खाटण सकाजा ।
अरी-भांजण[5] थटों भटों चाढे उरस, उमटों राव खग दाव आजा ।।४

पजांवण-दोयणां[6] प्रथी भोका पुणें, कवी ध्रिन-ध्रिन मुखां वांण कहसी ।
वीर हणवंत नृप बार[7] वह जावसी, रिधू जुग चार लग वात रहसी ।।५

(गीत १६)—१ युद्ध विजेता । २-२ कीर्त्तिप्रिय । ३ अजेय । ४ कृपण । ५ गुण के समुद्र । ६ अचलसिंह के पौत्र । ७ पृथ्वी पर आपकी स्थिर प्रसंशा होती है ।

(गीत १७)—१ स्वाभिमानी । २ वित्त, धन । ३ हाथियों को मारने वाला । ४ शत्रु-दल । ५ शत्रुओं को विध्वंस करने वाला । ६ शत्रुओं को जीतने वाला । ७ समय ।

गीत—माहाराज श्री हणवंतसिंहजी रो

गीत सपंखरो (१८)

करां ऊवरां उपट्टं मीजां आहंसीक वारू क्रीत,
प्रथी जीत आराण[1] कविदां प्रीतपाल ।
वंसरा आदीत पखां प्रवीत वानेत वीर,
ऊचैचित्त वित्त ग्रवै[2] प्रवाड़ां[3] उजाळ ॥१
जंपे तो प्रभत्ती इळा घणु मोतीसींघ वाळा,
रेणां-जीत सत्रां-गाळ सचाला राजांन ।
जीपणां[4] कराळा जंगा विरद्दाला महाजोध,
दूठ अंगां रैणवां हमेस देण दांन ॥२
वजावंदी[5] तोडणा अरिदां खगां महावीठ,
विरदां अगंजो पांणों-साहियां वेवाह ।
नांमी आय वरीसणां[6] ताकवां उमटांनाथ,
इन्द्र-रूपी सुद्रवों अनमी नरांनाह ॥३
सुजाव सोभाग धिनो नृपत्ती पटाला सेर,
कळां चाळा ताळाधारी आंटीळा क्रोधार ।
सम्मरां अपाळा सूर धाव थाला सत्रां-साळा,
आथ जुधां काळो कवों समापै अपार ॥४
हेळारा हंमीर हणुतेस झोका भाला-हथां,
केवियां मनाई संक आरांण सकाज ।
सक्र जेम छौळां देण हनोज पातवां साजा,
[7]ओड़े न को आंन राजा वसू सीस आज[7] ॥५

गीत—माहाराज हणवंतसिहजीरो

गीत वडो सांणोर (१९)

थरर थिये दस देस अर मछर[1] देखे सथर, समर भर कहर भुज लियों साजै ।
धरर अंवटां[2] वजै फजर वागां सघण, रूप इण फरस-हर अडर राजै ॥१

(गीत १८)—१ युद्ध । २ देते हैं । ३ विरद । ४ जीतना । ५ राजा । ६ देना ।
७—७ पृथ्वी पर दूसरा राजा बराबरी करनेवाला कोई नहीं ।
(गीत १९)—१ योद्धा । २ नगारा ।

हसत[3] घूमें मसत चाल अस[4] हुंकलै, दसत्त मानें अरी देख चक दौर।
जांगीयां घोर घरा रोर[5] पातां तजै, इम रमें फतै कर सघर चहुं ओर ॥२
भूप खळहळ लंगर लाज तप भळहळ, चळचळै प्रवळ खळ पांण नचळा।
सजै घोड़ो कळळ अकळ भरता धसळ, इसी विध समाजै विया अचळा ॥३
रहै पासे तुरंग फलंग भरता कुरंग, अभंग अंग सुतन सोभाग वाळा।
हुवै नित राग-रंग उमंग मन हवोळा, संग सुचंग सुभंग सोहै सचाळा ॥४
आव हणवंत-कुळ चढावरा ऊमटां, लियां सुभटां थटां संग लाखां।
हटाला वीर दत्त करण आगाहटां[6], सजो अरिदळां[7] उजवाळ साखां ॥५

गीत—महाराज हणवंतसिंहजी रो

गीत छोटो सांणोर (२०)

अणभंग वडचीत धिनो अड़पायत[1], वंस-चढावण नीर विसेस।
तेज-अंसी तांणण दळ तूभी, ओटीला व्रद लिया असेस ॥१
अरियां तणा थटा अवगाहण[2], उजवाळण परियों अप्रमांण।
काळा जंग दियण दत क्रोड़ों, [3]खाटण जस[3] दूजा खूमांण ॥२
जग जेठी ऊमट वण जांणग, घेटी चळण धारियां धूत।
सुत सोभाग अभावण सत्रवां, इळा सुजस खाटण अदभूत ॥३
अदवां[4] दाह दियण अजरायल[5], प्रथवी प्रभत[6] वसायल पूर।
धरपत्त हणवंत झोक धुरंधर[7], प्रतपो जोस अंगा भरपूर ॥४

गीत—महाराज हणवंतसिंहजी रो

गीत छोटो सांणोर (२१)

वीरत वरियाम झोक भड़ वंका, सुज जीपण[1] संग्राम सुचंग।
अस गज गांम दियण कवियांणों, इळ अमाप व्रद ळियां अभंग ॥१
गाढापत्त नरपत्त गाढीला, सुरपत भत्त[2] प्रथमी साधार।
अतवर कीरत तोड़ण अरियां, वप सूरत्त दत धर वडवार ॥२

(गीत १९)—३ हाथी। ४ अश्व, घोड़े। ५ विपत्ति। ६ दान स्वरूप प्रदत्त गांव। ७ शत्रुओं की सेना।
(गीत २०)—१ धीर। २ वरवाद करने वाला। ३—३ यश को बढ़ावा देने वाला। ४ कृपण। ५ वीर, हठी। ६ शोभा। ७ क्षात्र धर्म की धुर को धारण करने वाला।
(गीत २१)—१ जीतने वाला। २ भांति, तरह।

माणण आथ दूसरा मोती, तांणण दान कवांण तस।
[3]हांणण रोर[3] सुकवियां हाथां, जांणण गुण अर लियण जस ।।३
सुतन सोभ खूमांण सवाई, सुजस धरण चाई समराथ।
विरदाई[4] हणवंत महावळ, हदकुळ आव चढाई हाथ ।।४

गीत—महा० हणवंतसिंहजी रो

गीत सपंखरो (२२)

अखां मांणरा सधीर विनो अगंजी माहेस अंसी,
[1]पांण रा करन्न[1] पाथ वांणरा महीप।
आंनाड़ा केवांण झलै रिमां थेल आरांण रा,
दाखै गुणों वांण रा वाखांण जंबूदीप ।।१
पटाळा मर्यंद कवां कुरंद[2] गाळवै पांणां,
वाळवै उवारा वैर अंगां महावीर।
सत्रों खेत[3] राळवै कराळ तेगां ग्रहे सूर,
हणुतेस झोका करां हेळरा हमीर ।।२
मिणधारी खळां मोड़ों अरोड़ा मारका माझी,
कवां वित्त व्रवै[4] माठी वारका सकाज।
दैसोत सारका कोट असार का आन दळां,
गुणे क्रीत संचाळका पात इळा माज ।।३
सुजाव सोभाग नाथ ऊमटों आंटीला साजै,
[5]भांजै मांण अरिदां[5] तराजै वंस भांण।
समाजै सुभट्टां संग निंवाजै कविंदां सदा,
तवै रैणा प्रभती घरांणे ऊंछो तांण ।।४
सत्रां ब्रू खेरियां वाढ़ कईवार महासूर,
मोड़ियां सुपातां हाथां दळद्रां अमाप।
जंगां काळा अदतारां साला अंगां प्रथी जीप,
जपै ताळां धारी घणा कवी प्रभा जाप ।।५

(गीत २१)—३-३ विपत्ति मिटाने वाला। ४ विरद (श्रेष्ठता) धारण करने वाला।
(गीत २२)—१-१ कर्ण जैसे दानी। २ दरिद्री। ३ युद्ध भूमि। ४ देते हैं। ५-५ शत्रुओं का मान-मर्दन करते हैं।

उवारु कीरती हका वीर वंका दिलां ओपै,
दाखै सोभा अमाप प्रथमी दसूं-देस ।
गज्जवी उवेड़ जाडा अरी हरां गाढेराव,
उजाळा प्रवाड़ा भुजां दूजा अचळेस ।।६

गीत – महाराजा हणवंतसिहजी रो

गीत सपंखरो (२३)

प्रथी साधार विरदां भारा नरिंदां सिंघाळां[1] फाबै,
समंद्रां-प्रमांण रीझां करंदां सधीर ।
अरंदां गिरंदां घाव घालणा मरदां ओप,
कुरंदां[2] विभाड़ै पातां नौ-हत्था कंठीर ।।१
छौळां देण हमेस अदेवां अंगां मांण छूटै,
रूठै दळां केवियां[3] विछूटै तेगां रोड़ ।
ऊठे जंगां सैसोन सेरसों क्रोधवंत इखां,
आप नांमी भुटै गजां अगंजी अरोड़ ।।२
दूसरा खूमांण गाढ़ औनाड़ साहियां दिलां,
चाढ नीर प्रवाड़ा सुदत्ती गुणां चाव ।
वाढ खगां जमदाढ़ दोयणां[4] विरोळे वीर,
सूर धीर दीपै खत्रीपणै रा सभाव ।।३
नंद सोभाग रा झोका हणुतेस आप नांमी,
भांमी भुजां पैळां दळां भांजै करै भूक ।
चौळ चखी चांमीकरां[5] हीरां रीझ देण चंगी,
रोस अंगो अभंगी साहियां दांन रूक[6] ।।४

गीत—महाराज हणवन्तजी रो

गीत वेलियो (२४)

नंद कुळ उजवाळ[1] ऊभरा वाहें, पड़दाहों नूंवां अणपार ।
नांम करण ऊपर नरनाहां, अण थाहां गुणधर आधार ।।१

(गीत २३)—१ सिंह । २ दरिद्री । ३ शत्रु । ४ वैरियों को । ५ सुवर्ण । ६ तलवार ।
(गीत २४)—१ प्रकाश ।

गाढापत[2] रूपग जांणीगर, मांणीगर रंगां . माहाराज।
चाढण वंस आवकर चंगा, दांन उमंगां जोमदराज ॥२
काळा जंगां केवियां[3] कटकां, भड़ लागों झटकों भांजेस।
अनमी आथ दियण अणथागों, वागों फजर कवां वड़वेस ॥३
सुपह हणुत झोक सोभांणी, वीदग[4] धर वाचै वाखांण।
ए दोय वात घरांणे आछी, खागत्याग[5] दूजा खूमांण ॥४

गीत—महाराज हणवन्तजी रो

गीत वेळियो (२५)

परगट निज भाल तेज नर पूरा, [1]चूरा अर[1] तेगों मुंह चाढ़।
भाला हथां केहरी भूरा, अहियां अंग [2]रजवट रा गाढ[2] ॥१
जग पाळग भड़ मिण जोधारां, अर सारां तोड़ण अप्रमांण॥
धूना विरद[3] लियां धेंधीगर[4], प्रभता धर धारण आपांण ॥२
चाक गुणों अणभंग नित चकिया, अदवांरा[5] थकिया मन अंग।
आठू-पहर सुजस धर अखिया, रोर[6] कवां मुकीया इकरंग ॥३
पालण कुरंद कवां अणपारां, सालण खळां सुतन सोभाग।
उथालण जंगां गज अणचळ, भल चालण कुळ-ध्रम वडभाग ॥४
भांजण मद सूंबां भिन-भिनरा, सहियां करदकरां समसेर।
तोर दोर हणवंत अत तनरा, गाढापत [7]मनरा गिरमेर[7] ॥५

भोपाल रियासत में सोलंकियों का एक मेंगलगढ़ ठिकाना है, वहाँ के ठा० शत्रुशालसिंहजी ने वि० सं० १९५३ में एक बहुत बड़े डाकुओं का गिरोह जो अंग्रेज गव्हर्नमेंट के छावड इलाके में डकेती करके आये थे और रास्ते में मेंगलगढ़ के पहाड़ों में पार्वती नदी पर ठहरे थे—जब शत्रुशालसिंहजी को मालूम हुआ तो अपने सुभटों के साथ गये। कुछ वीर ठा० साहब की तरफ के वीरगति को प्राप्त हुए और ठा० साहब घायल हुए। उधर डाकुओं का मुखिया मय साथी डाकुओं के मारा गया और डकेती का माल छुड़ा लिया गया—जिस

(गीत २४)—२ गंभीर, धीर। ३ शत्रुओं। ४ कवि, चारण। ५ वीरता, उदारता।
(गीत २५)—१-१ शत्रुओं को चूर्णित करने वाला। २-२ क्षात्रधर्म में प्रबल। ३ श्रेष्ठता। ४ प्रभावशाली। ५ कजूंस। ६ दुख, विपत्ति। ७-७ सुमेरु गिरि जैसे ऊंचे चित्त वाले।

पर भारत सरकार की तरफ से ठा० शत्रुशालसिंहजी को राव बहादुर का खिताब व खिल्लत मिली। भोपाल रियासत में यह सबसे मुख्य ठिकाणा है। इस पर यह गीत सिढायच बुधसिंहजी ने कहा—

गीत छोटो सांणोर (२६)

छावड़ ने लूट डकेती छाया, मेंगलगढ़ आया निज मेर।
आडा फिरिया राड़ अघाया, सोळंकी लोधां समसेर ॥१
भारत करण परसपर भिड़िया, अड़िया भुज ज्यांरा असमांण।
खळ छल छोड़ खेत तज खड़िया, पड़िया धरण विछूटा प्रांण ॥२
केहर[1] लारे लगे कुंजरों, सत्रुसल लीना लार सही।
दांतां नखां ग्रास जिम डसणों, वैरियां ऊपर खाग वुहीं ॥३
लेले ओट लड़णनु लागा, परमोखी देखी हित प्रांण।
तूटा ज्यां ऊपर खिताळां, काढ-काढ खापां केवांण ॥४
गोळी तीर गेंण गणणांया, धुआधारां ज्वाळ धुकी।
चोर लाग चोटां चळ-चळिया, मिळिया सांमा आय मुखी ॥५
रवि तिण वार तमासो रीधो[2] देखण वीरां खेल दिसी।
पराघाती रो सोक पखारां, तरवारांरी धार तिसी ॥६
धुके कितां धड़ लाग धमोका, हाकां फाटै वाक हिया।
काढ़-काढ़ क्रिरमाळ[3] कजाकां लोह सजाकां मार लिया ॥७

गीत—महाराज सरप्रतापसिंहजी रो चीण रो पैलाँ युद्ध कर फतै करी जिण रो—

गीत शुद्ध सांणोर (२७)

करी मूंम कावल कितों हेमगिर किनारे, धरा पूरब दिखण चढी धाड़ा।
वारनिध लोप पेकन[1] अजब विलायत, मुहिम चढिया गजब मारवाड़ा ॥१
सांमठा सोहड़ां[2] हले चढ़ साकुरा, भाल खग त्रभागा[3] आग झड़ता।
चीणरा देस ऊपर दलों चलाया, भुजा ब्रहमंड रै माग[4] भिड़ता ॥२
करे घण थाट ले साथ सुभटो कटों, राह खत्रवाट री अंग रीधी।
दाट अंगरेज रा दोयणां दिग्रणनु, लाठ रे हुकम दध-वाट लीधी ॥३

(गीत २६)—१ सिंह। २ रुका। ३ तलवार।

(गीत २७)—१ पेकिंग, चीन की राजधानी। २ वीर। ३ त्रिशूल रूपी भाला। ४ मार्ग।

दौड़ ठाकर गया और देखा-दिखी, हिये थेका धकी नमाई हौड़।
बोधमतिया[5] मुलक छांड विमुहा[6] वहै, ठौड़ तिरण रहै [7]पग मांड[7] राठोड़ ।।४
भरोसो भडां परताप रै भाग रो, डरै नृप [8]दुआं ज्यूं[8] नहीं डरसी।
फरकता भडाला संग फिरंगांण रै, फतै करसी जदे पीठ फिरसी ।।५

गीत—सलूंमर-रावजी श्री केसरसिंहजी रो (जो नरसिंहगढ़ के महाराज हनुवन्तसिंहजी की छोटी पुत्री व्याहे थे)

गीत वेळियो (२८)

दीपक-कुळ[1] सबळ झोक वरदाई, विमळ चित्त वडहथ[2] इरण वार।
माठा नरां साल मिरणधारी, दिल अरणव[3] झोका दातार ।।१
गेंवर द्रब हेंवर गढ़वाड़ा, दत पातां देवरण निस-दीह।
पदम-सुतन[4] खटब्रन रा पाळग, सुपहां-मुगट[5] पटाळा सीह ।।२
रैगों सिरै समापरण रीझां, लाखों मुखा सुजस लेवाळ।
[6]करगां भोज करन ज्यूं केहर[6], रजधारी[7] पातां रिछपाळ[8] ।।३
माठी समै ऊधमरण[9] मांजों, भालम लियों अभनमा भांन।
खाटी प्रभत पढचौ खूमांण, वीरत पाटी तरणै विधान ।।४

नरसिंहगढ़ रियासत के प्रथम श्रेणी के ठिकाणा रोंसला के जागीरदार ठा० बनैसिंहजी के सवारी की एक घोड़ी बहुत अच्छी थी, उसकी बुधजी ने प्रशंसा की—जिस पर वह घोड़ी उदारमना ठा० ने बुधसिंहजी को प्रदान की, और सविनय कहलवाया कि यह घोड़ी आपके भेंट है। जिसका गीत इस प्रकार है—

गीत सपंखरो (२९)

[1]चौड़ी उराटां वाजोट[1] चंगी वाटां कुरंगा ज्यूं वहै,
[2]वंटा नटां जेम[2] लेतो उडांणां विहंग।

(गीत २७)—५ बौद्धमत वाले, चीनी। ६ विरुद्ध। ७-७ पैर जमाकर। ८-८ दूसरों की तरह।

(गीत २८)—१ वंश के प्रकाश। २ दानी। ३ समुद्र। ४ पद्मसिंहजी के पुत्र। ५ राजाओं के मुकुट। ६-६ दान देने में केशरीसिंहजी, कर्ण एवं भोज जैसे हाथों वाले। ७ रजोगुणी। ८ रक्षा करने वाले। ९ उमंग से दान देना।

(गीत २९)—१-१ चौड़ी छाती वाजोट जैसी। २-२ नट के छोकरे जैसे (उच्छृंखल)।

काच सीसो सरीसी पसम्मां जाडे कंध वाळी,
पदमेस[3] तणौ इसी वरीसी पमंग ।।१
नळी जंत्र ढळी थंभ प्रसाद चंद्रसी नखां[4],
ताळी छेक जावै न को अंतालो तरास ।
जांणी दसूं-दिसां क्रीत न जावै जावतां जुगां,
हाथां जसूतेस-हरै[5] सामापी व्रहास ।।२
वागरै इसारों लागां वक्री चक्री चाल वाळी,
[6]सिरै वाल वाळी[6] धरै पेंतरा संभाळ ।
राखी रीत ऊमटां घरांणे वाली क्रीत रीधां,
गुणां साटे दीधी पीळी[7] [8]विजाई गोपाळ[8]।।३
करां रांसला रो धणी सदा ऊंच कारणा रो,
[9]धारणा रो दांनी जेहो भारांणी वेधींग[9] ।
मौजमें वछेरी देतां अणायो सुपातां मोद,
साचो हेत हियारो जणायो वनेसींग ।।४

गीत—महाराज कुमार श्री चैनसिंहजी जो वि० सं० १८८१ में अंग्रेजों से, मुकाम सीहोर में युद्ध करते हुए वीरगति को प्राप्त हुए जिसका—

गीत सपंखरो (३०)

चले आवतां फिरंगी फौजां ऊससे[1] क्रोधार चैनों,
चोळ[2] चखी सारधारां[3] ढाहणा[4] चंचाळ ।
[5]ऊवकै आरावां आग[5] [6]हूवकै जोधारे[6] अंगां,
(जठै)ताता जंगां पमंगां[7] मेलिया निराताळ[8]।।१
वगे वीर हाक जगे[9] ज्वाळ तोपां जेण वार,
ससत्रां संभाळ ठाळ करे महासूर ।

(गीत २९)—३ पद्मसिंहजी । ४ सूंभ (पैर) । ५ जसवन्तसिंह के पौत्र ने । ६-६ अच्छी नश्ल की । ७ पीले रंग वाली घोड़ी । ८-८ गोपालसिंहजी के वंशज । ९-९ दान देने में मारमल के पुत्र जैसा ।

(गीत ३०)—१ उत्तेजित हुआ । २ लाल । ३ तलवारों की धार से । ४ विध्वंस करना । ५-५ छोटी तोपें आग उगलती हैं । ६-६ वीरों में वीररस का संचार होता है । ७ घोड़े । ८ वेगपूर्वक । ९ जागृत होती है ।

कोमंखी[१०] कराळ जंगां मिलें वड़ी प्रळे-काळ,
किरमाळों[११] निराताळ वाजिया करूर ॥२
उभै ओड़ा[१२] घाव वहै हकै चमूं[१३] उभै ओड़ा,
घमोडां सावळां[१४] घोड़ां भड़ां दाव घाव ।
झटक्का हजारों वहै सरीरों वटक्का झड़ै,
रटक्का कटक्कां रिमां करै गाढेराव ॥३
ईखे भांण आरांण तमासो तुरीतांण ऊभो,
वारंगा[१५] विमांणां मिले मगां व्योम ।
फीलो[१६] झंडा फरक्कै भभक्कै घाव तनां फावै,
[१७]धवक्कै लोयणां क्रोध[१७] जुड़ै रूपीधोम ॥४
कटै गजां असुंडां[१८] प्रचंडां झड़ै तुंडा केही,
उभै फौजां थंडा[१९] वीर घुमंडा आपांण ।
लेवे मुंडा माहेस जोगणी झुंडा छाक[२०] लेवे,
जुड़ै आडाखंडा जोम छाकीया जोधार ॥५
मुके सेल भ्रुकेधरा दड़कै घड़ां सूं माथा,
मुड़क्कै[२१] कायरां सूरां वकै मार-मार ।
फड़क्कै फींफरा रैणां धड़क्कै केवियां फौजां,
धकै चाड भांजै उरां धणा सार-धार ॥६
रुठो दळां केवियों क छूटो सांकलां सूं सरे,
उलक्कापात रौ तारो तूटो आसमांण ।
जो सेल कंवारीवड़ा छैल खेल माते जूटो,
खंडाळों निराळों एम दूसरो खूमांण[२२] ॥७
वेढो जुवां अरिदां ठालवे खेत वेढीगारो[२३],
चालवै ससत्रां पंजां वरुथां संचाळ ।
लूथ वथां अंग्रेज सूं सूर काळ-रूपी लड़ै,
उनागांखड़गां[२४] सीह विरद्दां उजाळ ॥८

(गीत २०)—१० क्रोधित । ११ तलवारें । १२ बराबरी-से । १३ सेना । १४ लोहे की सांग (छड़) । १५ अप्सराएं । १६ हाथी । १७-१७ नेत्रों से क्रोध की ज्वालाएं प्रज्वलित होती हैं । १८ हाथी की सूंड का ऊपरी भाग । १९ समूह । २० रक्तपान । २१ पीछे हटते हैं । २२ द्वितीय खुमानसिंह (जो इनके पूर्वज थे) । २३ युद्धप्रिय । २४ नग्न तलवारें लिये हुए ।

केता धजां[25] पछाड़े रचाड़े खेत नरां केतां,
अखाड़ मचाड़ै वीर विहंडे उदार।
नीवड़ै झटक्कां झड़े लड़े तीन जांम त्रभे[26]
[27]सुजाव सोभाग[27] पडे कंवरा श्रंगार ॥९

अच्छरां वधावै राग-रंगां गावै मोद अंगां,
अढंगा उबारे हका प्रभत्ती असेस।
पांचसै सुभट्टां साथ करे इन्द्रलोक पूगो,
[28]ऊमटां चढ़ाव आव वियो अचळेस[28] ॥१०

गीत दूजो—कंवर चैनसिहजी रे युद्ध रो

गीत पालवेणी (३१)

चख वाघै साज सेन चतुरंगी, [1]सांमण कांठळ[1] जेम सुचंगी।
जळहळ[2] सेळ घरहरे जंगी, फजर वगां आवियो फिरंगी ॥१
आगे चैन पाथ ज्यूं अणाचळ[3], विढण[4] काज ऊठै दाखे वळ।
वग असमर[5] समहर विच वळवळ, दुसह जोस आहुड़ै उभै दळ ॥२
चप कायर थरहर जिण वारां, पळचर गहर वाज पंखारां।
अखर अछर[6] अंबर अणपारां, करकर वळ भड़ लड़ै करारां ॥३
चमचक मचक धरा हुय धड़धड़, हंसे मुनिंद्र देख जुध हड़हड़।
फावै धरण फींफरा फड़हड़, झटकों सीस पड़ै धड़ झड़झड़ ॥४
उड वरंग तूट रुंकां[7] अत, मुरड़ै धड़ा वीर दुरवों मत।
भंवर अणी [8]जमराज तणी भत[8], वाहै खाग जठै वर वीरत ॥५
वरै वरण जुंझार वडाळा, खळहळ रुधिर इळा पर खाळा।
कोय चखां भटकै कळ चाळा, कंवर तणा भड़ लड़ै कराळा ॥६
लाखों फिरंग तोड़ घण लाडो, गुमर[9] धार रुपियो गुण गाढो।
जुध सीहोर खेत कर जाडो, अणखीलो[10] पडियो नर आडो ॥७
सुतन सोभ कंवरों मिणसारों, परम अंस उजवाळ पवारों।
[11]घड़ चेरितां कितां खग धारो[11],जडलग[12] हथ पौढे रिण जारों ॥८

(गीत ३०)—२५ घोड़े। २६ निर्भय। २७–२७ सोभागसिह जी के पुत्र। २८–२८ द्वितीय अचलसिह, ऊमट-वंश की शोभा बढ़ाने वाले।

(गीत ३१)—१–१. श्रावण की घटा। २ चमकता हुआ। ३ स्थिर। ४ युद्ध। ५ तलवार। ६ अप्सराओं का समूह। ७ तलवारों से। ८–८ यमराज की भांति। ९ हट करके। १० घायल। ११–११ तलवारों की धारों से टुकड़े-टुकड़े कर दिये। १२ तलवार।

फौजां लख पाछो नह फिरियो, गजवी वीर जंगां गेहरियो ।
विमळ उछाह अपछरां वरियो, इळ विंच नाम अमर ऊवरियो ।।६

गीत—चंडावल ठा० श्री सगतसिंहजी रो सिढायच बुधजी रो कयोड़ो

गीत सोहणो (३२)

कमधज सगतेस करंतां क्यावर[1], कंवर मांड हैं हरक कर ।
सोभ कना उपकंठ मानसर, पात मुराळ उजाळ पर ।।१
चित्त उजाळ दीध वित छौलां, भुयण उधारण वात भली ।
खित जाहर पंगी[2] खैड़ेचा, हिमगिर हुंता गंग हली ।।२
धणी चंडावल विया गोरधन, करवा दत नह कीध कुमी ।
महि ऊपर प्रभता[3] राव मारू, सरदचंद चाँदणी तणी ।।३
आदू-रीत सभाव ऊजळा सोह, चढावण प्रसिध सुणी ।
इळ-कीरत ऊधड़ी अमोलक, कनक[4] जड़ी जिम हीर-कणी ।।४

गीत—रावत श्री बळबहादुरसिंहजी रियासत राजगढ़ का, बुधसिंहजी रो कयोड़ो।

गीत छोटा सांणोर (३३)

ओपम की कहुं ताहरी ऊदा, धजबंधी[1] बैठो छत्र धार ।
सिंघासण वीरत दरसाई, सरसाई[2] कीरत संसार ।।१
[3]तण वखतेस-वंस[3] निज तारण, वसुधा सीस उबारण बोल[4] ।
मोहण नवळ नखत मुरजादा[5], तें जादा कीधी नभ तोल ।।२
माळवपत ऊमट-कुळ-मंडण[6], चढ़ी प्रभा ढुळतां चमर ।
आदूरीत[7] घरांणे वाळी, उजवाळी बीजा अमर ।।३
वळीवहाद्र[8] धिनो अतुळीवळ, जसमुख दाखै[9] जणो-जणो ।
जग सारै कीधो धर जाहर, पाट विराज सपूतपणो ।।४

(गीत ३२)—१ विवाह। २ कीर्त्ति ३ शोभा। ४ स्वर्ण में।

(गीत ३३)—१ राजा। २ शोभायमान हुई। ३–३ वखतसिंह के वंशज। ४ बात-रखना। ५ मर्यादा। ६ ऊमट-कुल की शोभा बढ़ाने वाले। ७ परम्परागत रीति। ८ वल वहादुरसिंह। ९ उच्चारण करते हैं।

गीत—सिकारपुरै ठा० वभूतसिंहजी रो मरसियो

गीत (३४)

तूटा नह फूल वाढ़ तरवारां सात्रव[1] खेत न सूता।
मनड़ो नह मांने राव मारू [2]वीसम गयो[2] वभूता ॥१
गोळी वांण नही गड़वड़िया तड़फड़िया नह ताई।
मोच अभंग भीच[3] मुरधररा अणचीती किम आई ॥२
हेंवर[4] वेढन को हड़वड़िया अरी न भिड़िया आडा।
पोहव कवन्ध सिकारपुरा रा जोखमियो[5] किम जाड़ा ॥३
पड़िया चळ दळ[6] नहीं पागती जेर करण खल जांने।
करणो जिकूं विधाता कीधी (पण) मरणो हियो न मांने ॥४

गीत—राजा अचळसिंहजी नरसंगढ़ रो, सिढायच भाउजीरो कयोड़ो (बुधसिंहजी के पितामह)

गीत (३५)

अवतारां इन्द्र माळवै अचळो, वीत[1] समापण क्रीत[2] वरै।
लाखां कुरव क्रोड़रा लेखा, कौडी हुंत लांखरा करै ॥१
गाढेराव[3] तपै नरसिंहगढ़, आसत इती धारियां आज।
गिर जितरा राई कर गेरे, राई हुंत करै गिरराज[4] ॥२
नाम[5] प्रमांण करै जग-नांमा, नंद खूमा दातार निगेम।
सुद्रस दीये निहारे सांमा, जैता थये सदामा जेम ॥३
विक्रम भोज सवर इण वारे, वारे अंजस उजीणी धार।
परसा-ह्रो हुमांयू पारस, सुरतरु अचळो प्रथी साधार ॥४

गीत दूजो वडो सांणोर (३६)

कंदळ विभाड़ण क्रोधरा पाथ कर, अकळ खग त्याग विरदां उजाळा।
सकळ कुळ छळां हिंदवांण रा स्याय कर, अचळ भुजवळ प्रवळ तूझ वाळा ॥१

(गीत ३४)—१ शत्रु। २ मृत्यु को प्राप्त हुए। ३ वीर। ४ घोड़े। ५ अवसान, मृत्यु। ६ सेना।

(गीत ३५)—१ द्रव्य। २ कीर्त्ति के लिये। ३ गंभीर। ४ हिमालय। ५ अचल।

अधारण अरस खटतीस[1] सु ऊधरा, चुरसधक पंकरा धाव चावां।
सुरस गजघड़ा[2] काढण धजर सूसरा, दूसरा फरस तस सिरै दावा ।।२
उजागर पाट खत्रवाट रा आभरण, नाट भगवाट रा धारियां नेम।
ऊगतां भांण दीवांण जग ऊपरा, ताहरा पांण खूमाण रा तेम ।।३
वरंग अरि करण उचरंग धरै वहादुर, तरंग गत तणा परवाह तेहा।
आस्तिक छौल दत दियण आगाहटां, ऊमटांनाथ रा हाथ ऐहा ।।४

गीत तीजो—मोतीसिंहजी नरसंगढ़-महाराज रो, भाऊजी रो कयोड़ो

गीत (३७)

'धड़चण अरि थाट'[1] खुरां खग धारा, कमलागढ़ दावण कसवार।
पुड़बै हु न धरै चित पाछी, असकाछी ऊमट असवार ।।१
धाव[2] विहंग जिम अभंग धारणा, रिमां डंड देणा फिरै वार।
रिण जंग फतै उतंग हुय रूकां[3], पमंग[4] निहंग जा चढै पंवार ।।२
ओपे पाव धाव रिण अणचळ, गढां पाड़ रिण पाड़ गयंद।
अरिदळ वहण हुयण की इचरज, मोरखंध हय चढै मयंद ।।।।३
तिण दळ साह गढां जड़ तोड़ा, नरवहिया जोड़ा भ्रम नूत।
मोती तूज तणा खळ मोड़ा, प्रथमी सिर घोड़ा रजपूत ।।४

गीत—दीवांण (राजा) मोतीसिंहजी रो, भाऊजी रो कयोड़ो

गीत (३८)

सभे काछियों[1] ऊडणां भड़ां कजाकां भीड़ियों,
सिले[2] धमाधमें मेदनी ओदका पड़ै धाम।
गाजतां त्रंबाटों[3] डाकां पातसाहां सोभाग में,
रमें सूरां नाहरां सिकारां मोतोराम ।।१
गाहटै है-खुरां धरां नगारां वाजतां गिरां,
भगारां[4] आसियां धरा पड़ै ऊगै भांण।
घाट आसुरांणे[5] तणा खाग भाटों वाह ठेले,
डाढ़ाळों लंकाळों[6] खेले आखेटां दीवांण ।।२

(गीत ३६)—१ छत्तीस। २ समूह।
(गीत ३७)—१-१ शत्रुओं के समूह को काटने वाले। २ दौड़। ३ तलवारें। ४ घोड़ा।
(गीत ३८)—१ घोड़े। २ बखतर। ३ नगारा। ४ भगदड़। ५ मुसलमान। ६ सिंह।

केकांण पाखरों कसै केवांणां[७] धारियां करां,
सूरां मार लीजिये लीजिये मार सीह।
भळाड़ों मेळिया थाटां वंबाळां[८] घुरंतो भूरो[९];
अडाड़ों सभाड़ों रमें दलारो[१०] अबीह ॥३
मारे मांण पातसाहां केकांण वरीसे मौजां,
प्रतपै ऊमटांनाथ [११]फरसरै पाट[११]।
थाहां सूरां ओदकै ओदका पड़ै खळां-थाट,
नाहरां ओदका[१२] पड़ै थाहरां निराट ॥४

गीत मरसियो—ग्राडल्ये ठा० कोकसिहजी रो, बुधसिहजी कह्यो

गीत (३९)

जग में कर नाम सरग[१] दिस जातां, दुवा जैतसी खांच दिल।
इण तन हूंता कियो आंतरो[२], पड़ै पांतरो नहीं पळ ॥१
सुतन गुमांन सुजस कर संगी, अमरापुर[३] कीनो आवाद।
समता मन ममता न समावै, आवै घड़ी-घड़ी में याद ॥२
गजन-हरा[४] थारो गरवापण, दीठो जिसो न दीठो दीठ।
चित हित मत मुरजाद चलण में, पाछी फेर मिलणने पीठ ॥३
धर विचहरतां तथा और घर, जावन देस-विदेस जदें।
सोक[५] दियो सो हियो सांसवै, कोकसींग भूलै न कदे ॥४

गीत—महाराज हणुतसिहजी घोड़ी बख्शी जिणरो, बुधजी रो कयोड़ो

गीत (४०)

थोका अरिदां[१] पाल री काठी वाड़री नीपनी थेट,
विसाल री उरां तुच्छी[२] पड़च्छी वखांण।
सुचाल चालरी [३]हिय दरार घालरी सूवां[३],
कविदां समापी सिरेवालरी[४] केकांण ॥१

(गीत ३८)—७ तलवार। ८ नगारा। ९ वीर। १० दलेलसिंह का। ११-११ परसरामजी की राजगद्दी पर।

(गीत ३९)—१स्वर्ग। २ अन्तर, दूरी, वियोग। ३ स्वर्ग। ४ गजसिंह का पौत्र। ५ दुःख।

(गीत ४०)—१ शत्रुओं। २ छोटी। ३-३ कृपणों के हृदय को विदीर्ण करने वाली। ४ श्रेष्ठ नस्ल की।

परी-सी निरंतां[५] सोहै वाटका उलटा पौड़ां,
हावां-भावां दपट्टा झपट्टां देण हार।
सुभावां सुचंगा पंगी[६] धिगारां लगावा सारु,
दूथियां[७] पमंगीं[८] एही वरीसी दातार ॥२
हलंवी काच-सी अंगा पसमा [९]समीर हाळी[९],
अंजळी पियांण नीर वेवरी अमाव।
अमीर सोभाग वाळे कायवां[१०] वासते अखां,
हाथां हणुतेस वीर उबारी[११] है राव ॥३
निरक्खे वखांणी दसू-देसरा दूसरां नरां,
जांणी सिधां-तटां[१२] तांई प्रभत्ती जरुर।
[१३]हांणी रोर पातवां[१३] ऊमटांनाथ मोती-हर,
समापी वडाळी काठीयांणी[१४] महासूर ॥४
अदत्तारां[१५] मांण मोड़ी निखोड़ी सुभावां ओपै,
पातां-रोर तोड़ी अंगां भळोड़ी अपार।
घणा झोका झोका दाखां वाहरे पीलोड़ी घोड़ी,
हाथां झोका झोका एही घोड़ी देण हार ॥५

छप्पय—श्री महादेवरां सिढायच बुधजी रा कयोड़ा

छप्पय

संकर गुरु सहज में श्रवण शिव नांम सुणायो।
जग झूठो जंजाळ दिव्य नयणों दरसायो॥
त्याग ग्रहण दुज तणो विगत सूं ग्यांन वतायो।
मतमतांत्र मरजाद वाद अविवेक वहायो॥
हुं महिमा कर कितियक कहुं हृदय मोह-माया हरी।
अघ हरण मंत्र उपदेस उर करुणानिध किरपा करी ॥१

पातक दहण प्रचंड भीर संतां भव-भंजण।
अलख विस्वपत ईस-रमण गिरजा मनरंजण॥

(गीत ४०)—५ नृत्य करने में। ६ कीर्त्ति। ७ चारणों को। ८ घोड़ी। ९-९ पवन जैसी वेग वाली। १० कवियों। ११ प्रदान की। १२ समुद्र के किनारे। १३-१३ चारणों के दुख को मिटाने वाली। १४ काठियावाड़ देश की। १५ कंजूसों का।

अंग-भसम अवधरण[1] तरण-तारण जग-त्राता।
धिन जोगी अवधूत सेव कीधां सुखदाता ।।
नर नाग देव आगम निगम गहर मुनी जस गाइये।
हर सदा तूझ आरत हरण बुधा न चित विसराइये ।।२

दै तूं संपत देव विपत परण तूझ विडारै।
तूं सुख दियै तमाम निपट दुख तुंहिज निवारै ।।
वड़ा पुन्न तूं स्रवै[2] पाप मोटा परजाळै।
मुगती दियै मांनवां गहर भव-बंधन गाळै ।।
सिमरियां संभु असरण-सरण मिटै नरां आखर मठा।
तूंहिज तूं नाथ तारण-तरण जगकारण धारण जटा ।।३

अंग-वभूत अवधूत सिवा अरधंग सु राजै।
मुख प्रसन्न तन विमळ विहद कर डमरू विराजै ।।
हार व्याल हिंडुलै गरल कंठ रजै गहव्वर।
भाल-चंद्र झळहळै सीस खळहळै सुरसुर[3] ।।
चख अरुण करण-कुडल छजै उतमंग मुगट अनूपरा।
पिनाकी जटाधारी परम(हुं) वारी इण छिव ऊपरा ।।४

दिख प्रजेस जिग दलण[4] महा त्रिपुरासुर मारण।
पियण हळाहळ प्रथक अखिल त्रहुंलोक उवारण ।।
जाळंधर जोखमण[5] इन्द्र मन गरव-उतारण।
मदन-दहन खिण मात धिनो चरितों जटधारण ।।
कैविलास गिरंद वासो करण जग उदार जस जगिये।
समरथ न को संकर सरिस (बुधा) इसो धणी ओलगिये[6] ।।५

सिवसंकर सिमरियां सकळ संपत सरसावै।
सिवसंकर सिमरियां निकट त्रयताप न आवै ।।
सिवसंकर सिमरियां परम आणंद प्रकासै।
सिवसंकर सिमरियां विकट अघ ओघ विणासै ।।

---

१ धारण करने वाले २ देते हैं। ३ गङ्गा। ४ नाश करनेवाले। ५ मारने वाले।
६ पहिचानिये।

अजोनी नाथ तारण-तरण मेटण दुख जामण-मरण ।
विच हृदय धार सिमरे बुधा सिवसंकर असरण-सरण ।।६

भव व्यापक भगवान ध्यान-धुन धरण जोग-धुन ।
करण ज्ञान परकास महा अघ-हरण वंद मुन ।।
तेज तत्व तम त्रसण वसण किवलास गवरवर ।
रसण सुजस जग रटण दुसह दुख ग्रसण दिगंबर ।।
निध दियण दास साहिक निकट सुरसुरि ध्रुव-धारण सुधा ।
गहि सरण मिटै आवागमण विमळ चरण श्रीहर बुधा ।।७

इच्छा हूंत उदार प्रथम जग आप उपायो ।
तिमर-हरण तत तेज नेत्र रवि-रूप निपायो ।।
जीव अज्ञानी जिको कारणै ज्ञान करी कथ ।
सिव-सक्ती-संवाद सुणत आणंद होय श्रुत ।।
जग-जणणि उमा अघ जारिणी जगत-पिता जग जांणिये ।
करुणानिधान कल्यांण कृत विसद[1] सुजस वाखांणिये ।।८

कहत वेद उंकार एक निज रूप अवचल ।
सासत्र-मत[2] अनुसार वतावत विगत सु विमल ।।
आगम सुजस उदार विसद स्रत प्रसिद्ध वतावै ।
सारद नारद सेस पढत व्रद पार न पावै ।।
कव बुधो कीत कितियक कहै तिमिर मिटावण ताह रो ।
कहि रसण थाह पावै कवण गुण संकर अवगाह रो ।।९

करी उपाय कितीक जिती निज आश्रय जांणी ।
पूछी सत पुरुसांह कही ज्यां सार कहांणी ।।
सुणी पुराणां साख कथी सद कथा कविंदां ।
आतम-ज्ञानी अवर जोय साखी जोगिंदां ।।
मत देस काल प्रकृत मुदै जुदा-जुदा दीसै जंहीं ।
सिव नाम सरव व्यापक समज सत्य एक म्यासे सही ।।१०

१ पवित्र । २ शास्त्र सम्मत ।

मतमतान्त रो मूळ जगत रो कारण जांणो ।
सत पुरुसां रो साच निगम प्रत तणों निसांणों ।।
साहिब संतों तणो ......रौ प्रांण प्रचै पद । *
जांण सकल रो जांण सरब भ्रम तणो सार सद ।।
भव-समंद तरण मेटण भरम परम तत्व परमांणियै ।
गुर तणौ ज्ञान-दीपक गिणै जिको नाम सिव जाणीयै ।।११

करै रतन काकरा जिकण खायां तन जोखो ।
रुच आभूषण रुचै धरै मन तसकर धोखो ।।
संचिया चलै न साथ पलक में हुवै पराया ।
मनसा अटकै मुआं कहै अहि[1] पावै काया ।।
सतगरु दुकांन सूंगो सुलभ मिले जिकां मन मौज सूं ।
अमोलक रतन सिव-नाम उर चित सुध लिये न चोज सूं ।।१२

गिण-गिण बांधी गांठ हरख माया मन हूंता ।
धरी रही बिच धांम सेज[2] जद आखर सूंता ।।
वस ठगणी[3] वे काम रह्या जे चहिया रीता ।
विध सुकृत वापरी जिके जमवारो जीता ।।
माया जंजाळ अळुझे मुआं वलियो कागद वांचियो ।
.... ।।१३*

नरसिंहगढ़ के दीवान (राजा) अचलसिंहजी जिस दिन क्रोध में होते, चाहे इजलास में होते अथवा महल में होते, सिर पर पघड़ी उलटी फिराकर रखते थे। उस वक्त उनके पास वगैर उनकी मर्जी के कोई नहीं जाता था। अगर कोई चला जाता तो उसे पिटवा देते थे अथवा भारी दण्ड देते। एक दिन सिंढायच भाउजी किसी समय उनकी पगड़ी फिरी हुई थी, चोपदार के आगाह करने पर भी महल में चले गये और अग्रिम पृष्ठाङ्कित छप्पय बनाकर वहीं सुनाया। राजा जी बहुत प्रसन्न हुए तब से भाउजी विशेष कृपापात्र हुए।

---

१ सर्प। २ मृत्यु शय्या। ३ ठगनी माया।

*११ वें व १३ वें छप्पय के रिक्त स्थान वाले अंश मूल प्रति में धुल चुके हैं।

छप्पय

पाटण जिण दिन फरस[1] रांण संग्राम[2] उदैपुर ।
रामपुरे रतनेस[3] बूंदी बुधपत[4] हाडां घर ।।
रावत [5]मोहन अमर धीर[6] खीचीयां घुरंधर ।
छतो[7] बुंदेला छात राज गजसीह[8] नरव्वर ।।
उण वार इता अब तूं अचळ उजवाळण कुळ ऊमटां ।
सांसणां गजां लख साकुरां[9] सुरयंद समापण जस-सटां[10] ।।

श्री गंगाजी री स्तुति रा दोहा, सोरठा बुधजी रे कयोड़ा

दोहा

सुखम लखैं कोइ सुखमणा, धार अनूपम ध्यांन ।
इण कारण इळ अवतरी, सुरसरि नदी समांन ।।१

सोरठा

जोग करण हठ जंग, प्रथा दिखावण प्रांणियां ।
गरवो जायो गंग, भीसम सुत भागीरथी ।।२
[11]वेद उलांघे वाट[11], विषय फलर भूला वहै ।
कळंक जिकां रा काट, जीव उधारै जान्हवी ।।३
गंग न भीनो गात, निरमळ जळ पावन नदी ।
प्रांणी सूकरपात[12], जे किण दिस उड़ जावसी ।।४
प्रांणी रेळापेळ, सांपड़वा[13] आवै सुजळ ।
झटत वहै अघ झेळ, समंद डुबोवण सुरसरी ।।५
ब्रह्मलोक रो वास, सूनो लख धर-संचरी[14] ।
सुरसरि कियो सुवास, भरथ-खंड मानव भरै ।।६
सुरसुरि समंद समाय, रहै निराळी रूप सूं ।
ब्रह्म गुणां विलगाय, मिलै न ज्यूं जीवां मही ।।७

---

१ परसराम । २ महाराणा संग्रामसिंह । ३ रतनसिंह चन्द्रवंशी शिशोदिया । ४ बूंदी के राजा राव बुधसिंह । ५ राजगढ़ के मोहनसिंहजी । ६ धीरजसिंह खिलचीपुर के । ७ बुंदेला शत्रुशाल । ८ गजसिंह नरवर नरेश । ९ श्रेष्ठ । १० यश के लिए । ११-११ वेद-मार्ग का उल्लङ्घन । १२ सूखे पत्ते की तरह । १३ स्नान करने । १४ पृथ्वी पर अवतरित हुई ।

पुनवांनां प्रतपाळ, करै जिको इचरज किसो।
[1]पापी पिन्ड पखाळ[1], सुरग सिधावै सुरसरी ।।८
सुत पितु मात सकोय, हाड न्हांक न्यारा हुवै।
जिको उधारे जोय, गंगा गम थारी गहण ।।९

दोहा

पाप रचायो पिंजरो, तूं गंगा निसतार।
थारे की म्हारै थिये, भरिये गाडे भार ।।१०

सोरठा

कोस चारसै कोय, नीर नहावै नांम ले।
हिये कतारत[2] होय, भजन कियां भागीरथी ।।११
देह [3]पड़ै जिण देस[3], हाड़ पड़ै हरद्वार में।
कै पड़ जावै केस, भव[4] तारै भागीरथी ।।१२
केस दिये जो काय, नीर न्हाय गंगा नदी।
वे भवसागर आय, भ्रमें नही भागीरथी ।।१३
घड़िया मांनव घाट, पापों हंदा पूतळा।
वहतां गंगा-वाट, मोख[5] किया मंदाकिनी ।।१४
उर भीना अनुराग, तन भीना जळ गंग-तट।
पग-पग माग प्रयाग, जिग-जिग फल पावै जको ।।१५
अघ भरिया जग अंग, जीव पखाळै[6] जायने।
गरवापण रो गंग, नही छेह देवे नरां ।।१६
हाड पखाळण हाल, जावै गंगा जातरू[7]।
नर सोई हुआ निहाल, भव तरिया भागीरथी ।।१७
देही नरक-दवार, मैल उतारे तो मही।
त्यां जीवां निसतार, मुगत करै मंदाकिनी ।।१८
आया अंग अन्हाय, गोता खांह रू गंगजळ।
जे जम किंकर जाय, भेटे नह भागीरथी ।।१९

१-१ पापियों के शरीर धोकर। २ कृतार्थ। ३ जिस देश में गिरे। ४ संसार से। ५ मोक्ष।
६ स्नान करने। ७ यात्री।

शाप वशिष्ट समेट, वन-वन में फिरता वसू ।
पाप पचायो पेट, देवधुनी[1] करने दया ।।२०
गया न थारी गैल, मैल उतारण मानवी ।
वहिया ज्यूंहिज वैल, भार भरण भागीरथी ।।२१
असमंजस नृप आद, सफल फली तप साधना ।
वडकों[2] टली विषाद, भागीरथ भागीरथी ।।२२
निज धर छायो नाहि, ब्रह्मलोक कैलास बिच ।
मिळी न सागर मांहि, मानव हित मंदाकिनी ।।२३
सुरसुति जमना संग, कीनो तोसूं हेतकर ।
रज[3] तूं मेळ्यो रंग, सतगुण भीनी सुरसरी ।।२४
दियो न हिमगिर दाव, गाहटती वाका गिरां ।
भागीरथ रो भाव, आई गंग उतावळी ।।२५
पाप करै परचंड, जम डंडां लायक जिके ।
तारै जीव अभंड, भेट हुआं भागीरथी ।।२६
सुर मुनि चारण सिद्ध, सिद्धकरण कारण सकल ।
पुहमी धार प्रसिद्ध, भरथ-खंड भागीरथी ।।२७
मत प्रकृति सर मंग, करण उदै थारी कळा ।
ऊजळ निरमळ अंग, जाहर दीठो जान्हवी ।।२८
हरी सतोगुण होय, तमगुण रंगभीना तिके ।
हुई न गंगा होय, रंग आपसूं और रंग ।।२९
धर पर थारी धार, हिमगिर सूं नह हालती ।
सारा नर संसार, जमपुर-मारग जावतां ।।३०
[4]मही समांणी[4] मात, भागीरथ रै भाव सूं ।
जमपुर-मारग जात, भीड़ मिटी भागीरथी ।।३१
सीतळ पवन सुवास, गंगारै धोरे ग्रहै ।
तन छूटै जम-त्रास, वास वसै किवलास विच ।।३२
ऊगां सूर अंधार, गिरवर उड जावै गुफा ।
घसियां गंगा-धार, दुरै पाप नर देह रा ।।३३

१ गंगा । २ बड़े बूढ़ों की । ३ रजोगुण । ४-४ पृथ्वीपर आई ।

सागर कीनो संग, संहस धार हुय संचरी ।
रळीन लीनो रंग, कड़वी हुय मंदाकिनी ।।३४
तिण गंगा री तीर, वासो नारायण वसै ।
सीतल परस सरीर, मुगत लिये केई मांनवी ।।३५
थरहर गंगाधार, जटी जटा सूं झरहरी ।
ब्रह्म कमंडल वार, भुवमंडल आयां भलां ।।३६
जावै भागा जेम, कुंजर दीठां केहरी ।
तट जावंतां तेम, भागा अघ भागीरथी ।।३७
साधू साधन संग, पावै गति परमेस्वरी ।
गति सोई देवे गंग, [1]पांणी रो कणको[1] पियां ।।३८
विघ पाती वैकुंठ, सूनी होती सिवपुरी ।
घोट पाप जल घूंट, मांनव गंग न मेलतो ।।३९
जीव हुवै केई जोत, चार भुजा केई तीन चख ।
और भाव उद्योत, भव दीठां भागीरथी ।।४०
जागा-जागा[2] जीव, फिर-फिर क्यूं भागा फिरै ।
सरणै राख सदीव, देवी गंगा देहळी ।।४१
[3]हाल हिया[3] हरद्वार, जिण गंगा तन जीवतो ।
पड़िया हाथ पसार, मुंआंई देसी मुकत ।।४२
प्रांणी करवा पाप, अवतरियो जणणी उदर ।
टलियो चाहै ताप, गंगारो अवलंब गुणी ।।४३
जणणी घणी जमात, पोखण हित परिवार नूं ।
मुगत करण नु मात, सुखमण दूजी सुरसुरी ।।४४
आ थारी अखियात, वात वमेक विचार तो ।
मीठी गंगा मात, खपने समंदर-खार में ।।४५
चतुरानन ग्रह चाल, जाय समांणी सिव जटा ।
हिमगिर ऊपर हाल[4], गंगा तूं सागर गई ।।४६
गंगा कीधी गैल, समजै कोई जिणरी सता ।
जीवन सो तज वैल, आप मिलायां आयगा ।।४७

१-१ जल की बूंद । २ स्थान-स्थान पर । ३-३ हे हृदय चल । ४ चलो ।

निगम-पदी जिण नाम, विस्नु-पदी पद विस्नु दै ।
क्यूं रे मनवे कांम, ध्यांन न धारे धारणा ।।४८
जिण गंगा-तट जाय, पित्रां नह पांणी[1] दियो ।
इळ अवतरिया आय, मळ कीड़ा ज्यूं मांनवी ।।४६
चंद दिखावै छौत, ताप दिये आतप तरण ।
साचांणी-सा जोत, गंगारो पांणी गिणो ।।५०
मळ धोवण नु माय, इळ में धारा ऊतरी ।
निरमळ करी निकाय, मांनवियां मंदाकिनी ।।५१
ऋमीन कीट कुरंग, जीवतड़ा मांनव जिके ।
गया न मारग गंग, सांपड़वा[2] निरमळ सुजळ ।।५२
समदर गई सकोय, विण गंगा संगम वहै ।
खार मिळी गुण खोय, आपो छोड़े आपरो ।।५३
कादै[3] विच कळियाह,जळिया केई सिसु तेल जळ ।
गंगा अघ गिलियाह, पाछा नह चलिया पगां ।।५४
ब्रह्मद्वार री वाट, देख लखौ हरद्वार में ।
घट-घट मांहे घाट, जांणो सो नर जांणियो ।।५५
घेरा दे-दे घाट, काट-काट हिमगिर किया ।
विधना काढी वाट, सुरग वसावण सुरसरी ।।५६
समजळ समतळ संग, कठण पहाड़ों काटवा ।
गती तु हाली गंग, अदभुत दीठी आंखियां ।।५७
अवगुण छूटो अंग, तमगुण रंग हूंतां तिको ।
गुण थारा लख गंग, सिव उतमंग[4] राखै सदा ।।५८
तीर-तीर तासीर, वरत रही वसुधा विचै ।
सोखे पाप सरीर, सहज सुभावां सुरसुरी ।।५६
मिटी त्रास जम मार, परसंतां सीतल पवन ।
[5]अघ बुझ गया[5] अंगार, भीना जळ भागीरथी ।।६०
माता सुत धण मोय, चोय-चोय मुख चूंमियो ।
हुवै तो ऊरण होय, गंगा हाड गळावियां ।।६१

१ जल । २ स्नान करने । ३ कीचड़ । ४ मस्तक । ५-५ पाप नष्ट हुए ।

पित्र पती कर प्रेम, पित्र वसावरण पित्रपुर ।
नरां उधारण नेम, भलो कियो भागीरथी ।।६२
निगमपदी रै नाम, पावै प्रांणी अगमपद ।
जिणरो आठुंहि जाम, सिमरण कर वुधिया संकव ।।६३
हेठो वैठो हार, गहरी करतो गरजना ।
खार समंदर खार, भीनी नह भागीरथी ।।६४
संगी रह्या समाय, रोम-रोम रग-रग रता ।
गंगा दिया गमाय, तें म्हारा पातक तिके ।।६५
सुघड़ां-सुघड़ां ईह, [1]दुरै न[1] ज्यूं परदेस में ।
गंगा गरवाईह[2], आगे वध पाई इधका ।।६६
संहस धार हुय संग, सागर मांहे संचरी[3] ।
आगे एकण अंग, सो न मिलायग सुरसुरी ।।६७

फुटकर सोरठा भक्ति दृष्टान्त रा वुधजीरै कयोड़ा—

सजन वाळा सोह, वेळा अंत विसारने ।
माया छोड़े मोह, अलवत[4] जाणो एकलो ।।६८
भलपण राखे भाव, हर जिण सूं हक बोलणो ।
साचो औहिज साव, मिनख जनम रो माढवा ।।६९
पड़पण सारू पेख, खाणो पीणो खरचणो ।
हलै न कवडी हेक, मरतां साथे माढवा ।।७०
धन ऊपर चित धार, नांणो[5] जे खरचै नही ।
ले जासी की[6] लार, मरतां साथे माढवा ।।७१
बुधिया मत वीसार, पलक हेक त्रिभुवनपती ।
है ऊ[7] राखण हार, पड़ियां संकट प्रांणनें ।।७२
पावै संकट प्रांण, आवै नह साहिक[8] अवर[9] ।
जिण पुळ [10]आरत जांण[10], धावे वेगो चक्रधर ।।७३

१-१ छिपते नहीं । २ वड़प्पन । ३ प्रवेश हुई । ४ अन्ततोगत्वा । ५ द्रव्य । ६ क्या । ७ वह (ईश्वर) । ८ सहायक । ९ और (अन्य) । १०-१० दया समझ कर ।

सोरठा मरसिया—नरसिंहगढ़ माहाराज महतावसिंहजी रा वुधसिंहजी रै कयोड़ा

सोरठा

मरण तूझ महताव, असह[१] अचांणक आवियो।
खांवंद कियो खराव, मोनू[२] वूडावै मही ।।७४

सजन न दीसै साथ, ऊमर दिन ओछा करूं।
नरसिंहगढ़ रा नाथ, [३]मेल गयो[३] महतावसी ।।७५

हियो फटै दुख हेर[४], कटै विपत रा दिवस किम।
वीसरगो इण वेर, माळवपत महतावसी ।।७६

हणवंत नृप रो हेत, ज्यूंहिज थारो जांणियो।
आखर कियो अहेत, माठै[५] दिल महतावसिंह ।।७७

हरि घर नांहि हिसाव, जाहर मन में जांणियो।
माळवपत महताव, जोखमियै[६] की जांणेन ।।७८

दीन दया द्विज देव, पूजा संकर में निपुण।
अहियो अलक अभेव, निग्रहियो महताव नृप ।।७९

औ नरसिंहगढ़ आज, विरंगो दीसै तो विना।
रोर[७] मिटावण राज, घणी आव मेहताव वर ।।८०

निजरां आवो नांहि, गढ़ महलां रे गोखड़ां।
मन मुरझावै मांहि, नित तो विण महताव नृप ।।८१

हाथी हलकां हूंत, असवारी करवा अवस।
हित कर सुतन हणंत, भूप आव महताव भव ।।८२

मिंदर संकर मांझ, वातां करण विवेक री।
संकर सेवा सांझ, क्यूं भूलो महताव कह ।।८३

खांवंद आवै ख्वाव[८], निस-दिन सूतां नींद में।
मिळसो कद महताव, जग मांहै मानव जनम ।।८४

वासण गयो विलाय, वांसै[९] रहोज वासना।
जोवां किण दिस जाय, माळवपत महताव ने ।।८५

---

१ असह्य। २ मुझको। ३-३ छोड़ गये। ४ देखकर। ५ निर्मोही। ६ मृत्यु। ७ विपत्ति। ८ स्वप्न। ९ पीछे।

कवित्त मरसीया—खेतड़ी माहाराज अजीतसिंहजी रो बुधसिंहजी रो कयोड़ो

असरन-सरन नाम तेरो जग उच्चरत[1],
बाल प्रहलाद को मिटायो दुख भीत[2] को।
तारन-तरन गजराजहू को तारचो तेंने,
तंतव को तारें चक्र पायो व्रद जीत को॥
रन तज भागो तातें पायो रनछोर पद,
द्वेष ना दिखायो जग नातो राजनीत को।
अकरन-करन नाम तेरो जान्यो ईस अब,
ऐरे तें सुनायो कान मरन अजीत[3] को॥१

कवित्त—नरसिंहगढ़ रा राजां री पीढ़ियाँ रो सिंठायच बुधजोरो कयोड़ो

दूदाजू दिवान भये डूगरेस रावत को,
पायो पद दुहुं ठौर रान सुरतान में।
हठेसिंह अजबसिंह ताके सुत फरसराम,
दळा मोतीसिंह क्षत्री धर्म खुमान में॥
ऊमट अचळसिंह तनय सोभागसिंह,
राजा हनवन्त नीत रीत के निधान में।
नृपत प्रताप महतावसिंह, ताके सुत,
अर्जुन उदार जस जाहर जहान में॥२

कवित्त—महाराज मेहतावसिंहजी रो

आसतिक पक्ष प्रजापालन प्रतक्ष दक्ष,
सेना पक्ष ज्यूंही कोसाध्यक्ष राजधानी को।
नीति में निपुण पृथु नृपति युधिष्टर सो,
रामचन्द्र रीति मरयाद आद मानी को॥
मेधावी महान मन पंकज को जैसे रवि,
[4]न्याय को निवेरो करै हंस पय-पानी को[4]।
भूप महतावसिंह प्रवल प्रतापी तुम्हें,
सुयस सराहुं के सराहुं सावधानी को॥३

---

१ कहता है। २ भय। ३ अजीतसिंह। ४-४ न्याय करने में हंस के समान (जो दूध व पानी को अलग-अलग करने की क्षमता रखता है)।

कवित्त—महाराज अर्जुनसिंहजी रा बुधजी रै कयोड़ा

विद्या ओ विवेक ओज[1] चातुरता चित्त की त्यों,
नीति की निकाई[2] नृपताई तेसी मन में।
क्षत्री-कुल खेल-ख्यात[3] वीरता विसेस वात,
उर में उदारताई तेज पुंज तन में ॥
परजा सों प्रीत रीत मंत्रीगन मोद मान,
गुन की पिछान जान गौरमिन्ट गन में।
अर्जुन नरेस तेरी कहां लों सराह करां,
प्रभुता कों पाय राज पायो वालपन में ॥४

केसर के रंग वारो वागो अंग सोहत है,
तैसो ही लपेटो[4] उतमंग[5] जरीतारो है।
भूपन वसन जगमगत जवार-जोत[6],
मानहु नछत्र मान प्रभा को पसारो है॥
वानक किसोरवय [7]रांनक में रूप रूरो[7],
मालव सुदेस प्रजा परम पियारो है।
आनंद के कंद जैसो राजत मुखारविंद,
अर्जुन नरेन्द्र किधों नंद को दुलारो है॥ ५

कवित्त मरसिया—प्रतापगढ़ दीवान (राजा) श्री उदैसिंहजी रो बुधजी रो कयोड़ो

वंस मेदपाटेश्वर ताको अवतंस[8] भूप,
गंगा कैसो नीर मनो सागर में वहिगो।
सज्जन चकोर वृन्द आनंद को कंद अहो,
राका चन्द मन्दमति राहू कैसे गहिगो॥
कठिन करेजा वेजा वात सुन एसी श्रोन,
आरा दुख धारा तें वरारा क्यों न लहिगो।
उद्दल[9] पतन भयो जतन न लागे जस,
रतन अमोल कवि-कंठन में रहिगो॥६

---

१ पराक्रम। २ वहुलता। ३ युद्ध में ख्याति प्राप्त। ४ साफा (पगड़ी)। ५ मस्तक। ६ रत्न-ज्योति। ७-७ सुन्दरता में श्रेष्ठ। ८ श्रेष्ठ। ९ उदयसिंह।

कवित्त—खिलचीपुर राजा अमरसिंहजी को

समय सुभाव तें अभाव भयो दानिन को,
ज्ञानिन की वातें सुनि [1]हियो हहरात है[1]।
दोरे एन त्रसना को रसना न भीजे नीर,
ऊसर में वोऐ कही तूसरहु[2] पात है ॥
उद्दल नरिंद वलवंत हनवंत जात,
मालव उदास भयो ताकी सुध आत है।
खिच्चिय नरेस अमरेसहू[3] के हातन तें,
पातन सनातन की तान कछु आत है ॥७

कवित्त—नरसिंहगढ़ दरबार श्री अरजनसिंहजी रो, बुधसिंहजी रै कयोड़ो

संपत सुधारक त्यां धारक धरम धीर,
उतरा प्रगलभ विस्व भरता विभूती[4] को।
परम प्रसंस अवतंस[5] वंस ऊमट के,
करता कुसंळ काज राज करतूती को ॥
सूरता उदार ताके गुन में गरिष्ट गात,
प्रगट प्रकास पुंज रोस रजपूती को।
अर्जुन नरेस सारग्राही मत सावधांन,
नीत को निदान सांचो अंकुर सपूती को ॥८

कवित्त—नरसिंहगढ़ महाराज अर्जुनसिंहजी का राजतिलक-समय को बुधजी रो कयोड़ो

सज्जन समागम को आगम भो आनंद को,
गावत वधाई गुनी गुन को उचारकै।
वाजन अवाजन सों गाजत है गोम गिर,
भूसुर[6] भनत स्वस्तिवाचन सुधारकै ॥
मंत्रीगन नजर निछावर करत मिल,
कीरत कहत कवि कोविद अपारकै।

१-१ विदीर्ण होता है। २ घास। ३ अमरसिंह। ४ ऐश्वर्य। ५ शिरोमणि। ६ ब्राह्मण।

अर्जुन उदार भूप नृपता तिलक तेरे,
परजा निहाल भई भाल में निहारकै ॥६

कवित्त—महाराज प्रतापसिंहजी नरसिंहगढ़ का वलायत सूं पधारचा जोंको बुधजी रो कयोड़ो

हिम्मत वहादुर की किम्मत कहां लों कहुं,
नरसंगढ-नाथ परताप[1] नरइन्द को।
साहन के साह कों जुहारचो उरमोद मान,
व्हें गयो अचंभो ग्रेटविट[2] अरु हिन्द को॥
सज्जन चकोर वृंद[3] हेर-हेर चंदमुख,
देर-देर दीह दृग पावत अनंद को।
दीपान्तर जाय नीके कुरव वढाय आयो,
मोतिन वधायो निज थान मालविंद को॥१०

कवित्त दूजो

ऊजळ अवास[4] खास वदर विराजमान,
घन की गरज रव[5] दुन्दभी को छायो है।
चात्रक[6] की सोर त्यांहीं गावत गुनीजन है,
वटत वधाई नीके दांन भर लायो है॥
जरत जवासा[7] जैसे सत्रूगन दाहत है,
सज्जन रहत तरु मोद सरसायो है।
जायके विलायत कों पायके महान पद,
इन्द्र के प्रताप[8] माळवेन्द्र[9] घर आयो है॥११

कवित्त—नरसंगढ महाराज मेहतावसिंहजी रा, वुधसिंहजी रा कयोडा

साख[10] पंचतीसहु को राजा महतावसिंह,
सरद-जुनाई जैसी लागी कुल लाज है।

---

१ नरसिंहगढ़ के राजा प्रतापसिंह। २ ग्रेट ब्रिटेन। ३ समूह। ४ महल। ५ ध्वनि, शोर। ६ पपीहा। ७ पौधा विशेष, जो वर्षा के पानी से जल जाता है। ८ प्रतापसिंह। ९ मालव देश के स्वामी। १० पंवारों की पैंतीस शाखाएँ।

सज्जन चकोर वृंद बाढ़त अनंद उर,
रहे अरविंद[1] खल मंद छल व्याज है ।।
वटत वधाई त्यां मयूख[2] मग मालव में,
पियुष[3] प्रवाह प्रजा पावत समाज है ।
छत्रिन में छत्रधर राजत विचित्र रूप,
मंडल नछत्रन में राका दुजराज है ।।१२

कवित्त दूजो

दूदा जैसो दुग्धमति[4] [5]हठी हठैसिंह जैसो[5],
सूर अजवेस[6] जैसो छत्रिन-समाजा को ।
[7]पन को फरसराम[7] [8]मोती सो विसाल भाल[8],
[9]अचल उदार[9] [10]किरवान चैन[10] काजा को ।।
[11]साख पंचतीसहु को मुगट महीसन को[11],
टीको जसहू को नीको नरसंगढ़ राजा को ।
भूप महतावसिंह तेरे भुज भार सोहे,
नंद हनमंत हनवंत कुल लाजा को ।।१३

कवित्त—महाराज अर्जुनसिंहजी गद्दी-विराज्या जींका

धन्यवाद वार-वार कीन हिन्द केसर को,
पारलियामेंट सभा प्रभा[12] के प्रचारक ।
धन्यवाद कलकत्ताधीस लाठसाहव कों,
भारत की रीत नीत विविध विचार की ।।
धन्यवाद मालव मुकीम वार साहव कों,
मींटहु अजंट दीठ राखत सुधार की ।
अर्जन कों भूप कीनो रोसन[13] को काम दीनो,
नरसंगढ़ कीत लीनी सरस सुधार की ।।१४

---

१ कमल । २ किरण । ३ अमृत । ४ दूदाजी जैसा श्रेष्ठ बुद्धिमान । ५-५ हठ करने में हठीसिंह जैसा । ६ शूरता में अजवसिंह जैसा । ७-७ प्रण-निर्वाह में परसराम जैसा । ८-८ मोतीसिंह जैसा भाग्यशाली । ९-९ उदारता में अचलसिंह जैसा । १०-१० तलवार चलाने में चैनसिंह जैसा । ११-११ पंवारवंशी राजाओं में श्रेष्ठ । १२ शोभा । १३ रोशनलाल ।

संवत गुनीस साल चौवन को पौस सुदी,
तीज बुधवार [1]सुभ सकुन सुभाय कै[1] ।
महारानी भारत अधीश्वरी की कृपा भई,
देस-देस दीपन लों प्रभा दरसाय कै ॥
गौरमिन्टहू सों गौर करके निहार गुन,
अर्जुन नरेस काज नरसिंहगढ़ आय कै ।
वार रजीडेंट मींट साहब अजंट आय,
सदर नसीनी कीनी कुरव सवाय कै ॥१५

कवित्त मरसइया—नरसिंहगढ़ महाराज श्री महताबसिंहजी रा, बुधसिंहजी रो कयोड़ो

उजरे अवास में अवाज वीन वाजन की,
गहर अवाज तहां गोम गहरात है ।
प्रजापाल नीतहू की रीत निरवाह नीक,
फैली वसूधायै कीत धुजा फहरात है ॥
सज्जन-सभा को तज गयो वैकुंठ ऊठ,
विरह वियोग दुख छायो अह-रात[2] है ।
भूप महतावसिंह दीठ चहुँ ओर फेरू,
हेरूं पै मिलत नांहि हियो हहरात[3] है ॥१६

अगहन मास कृष्ण पंचमी कुं वार कवि[4],
समत गुनीस साल तेपन तपायगो ।
कितव अरिष्ट[5] काल निष्ट दिन वेला वीच,
जगत असार को विसार विच लायगो ॥
हाय कोन दिसा हेरूं हियो हहरात मेरो,
परम प्रतापी सोइ पर्मपद पायगो ।
मालव के देस को नरेस महतावसिंह,
संकर उपासी लोक[6] संकर सिधायगो[7] ॥१७

१-१ अच्छे शकुन मनाकर । २ दिन-रात । ३ हृदय विदीर्ण होता है । ४ शुक्र । ५ क्रूर । ६ शिवलोक । ७ गये ।

कवित्त—नरसिंहगढ़ माहाराज अर्जुनसिंहजी रा

दक्षता उदार ताको राजत[1] अथाह सिंधु,
धीर ध्रुव[2] धरम धरा को रखवारो है।
गाहिक गुनी को त्युंही साहिक[3] दुनी को नीको,
महत मनी को मोद मांन मतवारो है।।
माळव धरा को ईस मित्र अवनीसन को,
सीस को मुगट न्याय नीत निरधारो है।
भूप अर्जनेस आज पोरस[4] प्रचंड पुंज,
साख पंचतीस को अखंड उजियारो है।।१८

गुनन को आगर[5] उजागर जहान वीच,
धीरज को सागर प्रकास जस जाई को।
विहित विचार निज-धर्म अनुरक्त सदा,
चित्त पै न दर्प[6] है प्रभुत्व जग पाही को।।
साख पंचतीस को अंगार भुज भार सार,
उदित उदार नीत रीत निपुनाई को।
हेर आन नृपत सराहुं कहा वेर-वेर,
भूप अर्जनेस गिरमेर[7] गरवाइ को।।१९

सवइया—नरसिंहगढ़ माहाराज मेहताबसिंहजी रो, बुधसिंहजी रो कह्यो

सूरज चंद रु बुध कवी भृगु[8] भोम सनातन रीत सों जीके।
राहु रु केत अहेत असम्मत वक्रत[9] छांड सहेत सनीके।।
क्रूर स्वभाव तें सोम भये महताव मया अनुकूल मही के।
पीयट साहब मींट अनुग्रह[10] हो गये सीधे नवग्रह नीके।।२०

---

१ शोभायमान। २ निश्चय। ३ सहायक। ४ पौरुष, पराक्रम। ५ भण्डार। ६ घमण्ड। ७ सुमेरु गिरि। ८ शुक्राचार्य। ९ टेढापन। १० कृपा।

कः स्विद् वृक्षो विष्ठितो मध्ये अर्णसो यं तौग्रचो नाधितः पर्यषस्वजत ।
पर्णा मृगस्य पतरोरिवारभ उदश्विना ऊहथुः श्रोमताय कम् ॥
तद् वां नरा नासत्यावनु ष्याद् यद् वां मानस उचथमवोचन् ।
[ऋग्वेद-मण्डल-१, सूक्त १८२, ७-८]

स्पष्टीकरण के लिये देखिये त्रैमासिक **'स्वाहा'** दिसम्बर १९६९ का अङ्क

सिन्धुलिपि एवं संस्कृति का रहस्य जानने के लिये नियमित रूप से पढ़िये

राजस्थान प्राच्यविद्या-प्रतिष्ठान, जोधपुर की त्रैमासिक मुखपत्रिका **'स्वाह**